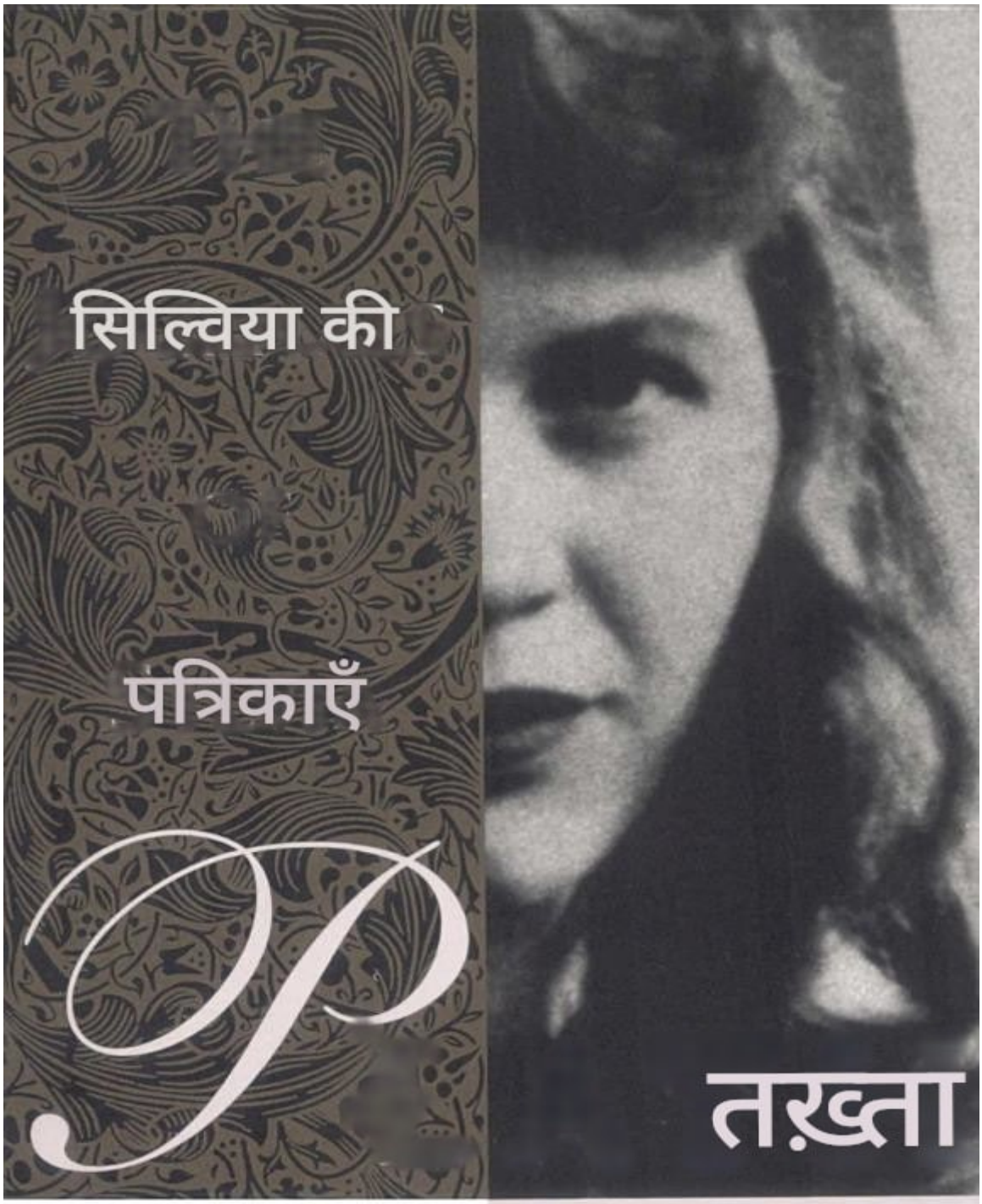

प्रस्तावना

टेड ह्यूजेस

कॉपीराइट सामग्री

सिल्विया प्लाथ द्वारा

कविता
द कोलोसस एंड अदर पोएम्स एरियल
क्रॉसिंग द वाटर
विंटर ट्रीज
कलेक्टेड पोएम्स
गद्य
द बेल जार
लेटर्स होम
जॉनी पैनिक और सपनों की बाइबिल बच्चों के लिए
बिस्तर पुस्तक

ज़िंदगी में खुशी। आगे अंधे रास्तों की एक बड़ी लाइन है। आप आधे-जानबूझकर, आधे-बेताब होकर, क्रिएटिव ज़िंदगी पर अपनी पकड़ काट रहे हैं। आप एक बेकार मशीन बनते जा रहे हैं। आप प्यार नहीं कर सकते, भले ही आपको पता हो कि प्यार कैसे शुरू करना है। हर सोच एक शैतान है, एक हॉल - अगर आप उनसे बहुत कुछ कर सकते! आप घर आप कितने अलग तरीके से करते। जाना चाहते हैं, वापस गर्भ में। आप देखते हैं कि दुनिया आपके चेहरे पर, धीरे-धीरे, चिल्लाते हुए, दरवाज़े पर दरवाज़ा खटखटा रही है। आपने वह राज़ भूल गए हैं जो आप जानते थे, एक बार, आह, एक बार खुश रहने का, हँसने का, दरवाज़े खोलने का। फिर से, श,

/157/

10 जनवरी, 1953: उस बदसूरत मरे हुए मास्क को देखो और उसे भूलो मत। यह एक चॉक मास्क जिसके पीछे मरा हुआ सूखा ज़हर है, जैसे मौत का फरिश्ता। मैं इस पतझड़ में यही था, और मैं फिर कभी यहीं नहीं बनना चाहता। उदास मुँह, सपाट, ऊबी हुई, गुमसुम, भावहीन आँखें: अंदर की गंदी सड़न के लक्षण। एडी ने मुझे मेरे आखिरी ईमानदार खत के बाद लिखा था, जिसमें कहा गया था कि मुझे अपनी भयानक समस्याओं की जड़ की जड़ से खत्म करने के लिए साइकेट्रिक ट्रीटमेंट लेना चाहिए। मैं अब मुस्कराता हूँ, यह सोचकर कि हम सभी को ऐसा सोचना पसंद है।

स्मिथ कॉलेज लाइब्रेरी रेयर बुक रूम की अनुमति से दोबारा बनाया गया।

एंकर बुक्स का पहला ट्रेड पेपरबैक संस्करण, मई 1998 पत्रिकाओं का मूल पाठ 1982 में टेड ह्यूजेस द्वारा, सिल्विया प्लाथ की संपत्ति के निष्पादक के रूप में, कॉपीराइट किया गया है। प्रस्तावना 1982 में टेड ह्यूजेस द्वारा कॉपीराइट की गई है। अतिरिक्त पाठ 1982 में फ्रांसिस मैककुलॉ द्वारा कॉपीराइट किया गया है।
अंतर्राष्ट्रीय और पैन-अमेरिकन कॉपीराइट समझौतों के तहत सभी अधिकार सुरक्षित हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में एंकर बुक्स, रैंडम हाउस, इंक., न्यूयॉर्क की एक शाखा द्वारा और साथ ही कनाडा में रैंडम हाउस ऑफ कनाडा लिमिटेड, टोरंटो द्वारा प्रकाशित। मूल रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में द डायल प्रेस द्वारा 1982 में हार्डकवर में प्रकाशित।
ANCHOR BOOKS और colophon, Random House, Inc. के पंजीकृत ट्रेडमार्क हैं।
“औबेड” को लुई मैकनीस की कविताओं के संग्रह से फेबर एंड फेबर लिमिटेड की अनुमति से पुनर्मुद्रित किया गया है, कॉपीराइट © 1966 लुई मैकनीस की संपत्ति द्वारा। • विलियम बटलर येट्स की कविताओं के संग्रह से “द सेकंड कमिंग” का अंश, कॉपीराइट © 1924 मैकमिलन पब्लिशिंग कंपनी, इंक. द्वारा, 1952 में बर्था जॉर्जी येट्स द्वारा नवीनीकृत, मैकमिलन पब्लिशिंग कंपनी, इंक. और ए. पी. वाट लिमिटेड की अनुमति से पुनर्मुद्रित किया गया है। • सिल्विया प्लाथ की रचना जॉनी पैनिक एंड द बाइबल ऑफ ड्रीम्स से “कैम्ब्रिज नोट्स” (1956), कॉपीराइट © 1979 टेड ह्यूजेस द्वारा, हार्पर एंड रो पब्लिशर्स, इंक. की अनुमति से पुनर्मुद्रित किया गया है। • वाइकिंग पेंगुइन, इंक. द्वारा प्रकाशित द पोर्टेबल जेम्स जॉयस से जेम्स जॉयस की “चैंबर

म्यूजिक XXXVI” का अंश, द सोसाइटी ऑफ ऑथर्स की अनुमति से पुनर्मुद्रित किया गया है। • पीटर ओवेन लिमिटेड और यूनिवर्सिटी ऑफ मियामी प्रेस द्वारा प्रकाशित जियोर्जियो डी चिरिको के संस्मरणों के अंश। • ट्राउगॉट के. ओस्टर्रेच द्वारा लिखित पुस्तक "पोज़ेशन: डेमोनियाकल एंड अदर" के अंश, कॉपीराइट © 1966 यूनिवर्सिटी बुक्स, इंक. द्वारा, लायल स्टुअर्ट, इंक. के साथ समझौते के तहत प्रकाशित किए गए हैं। • सिल्विया प्लाथ द्वारा लिखित पुस्तक "लेटर्स होम" का अंश, कॉपीराइट © 1975 ऑरेलिया प्लाथ द्वारा, हार्पर एंड रो, पब्लिशर्स, इंक. की अनुमति से पुनर्मुद्रित किया गया है। "स्मिथ कॉलेज, 1957-1958" खंड का एक भाग पहली बार ग्रैंड शीट के शीतकालीन 1982 अंक में प्रकाशित हुआ था। • "लेटर्स होम" से ली गई तस्वीरें ऑरेलिया प्लाथ की अनुमति से उपयोग की गई हैं। इस पृष्ठ और इस पृष्ठ पर फोटोग्राफिक पुनरुत्पादन स्टीफन पेटेगोर्स्की द्वारा किए गए हैं।
लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

प्लैथ, सिल्विया।
सिल्विया प्लैथ की डायरी / टेड ह्यूजेस द्वारा प्रस्तावना; टेड ह्यूजेस, परामर्शदाता संपादक; और फ्रांसेस मैककुलॉ, संपादक। — पहला एंकर बुक्स ट्रेड पेपरबैक संस्करण।
पृष्ठ सेमी।
1. प्लैथ, सिल्विया—डायरी। 2. महिला कवि, अमेरिकी—20 वीं सदी — डायरी। I. ह्यूजेस, टेड, 1930—1998। II. मैककुलॉ, फ्रांसेस मोनसन, 1939—। III. शीर्षक.
PS3566.L27Z469 1998

818’.5403—dc21
[b] 98-15790
□□□□□□□□□: 978-0-307-83039-5
www.anchorbooks.com
v3.1

□□□□□□□□□□□□
□□□□
□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□
□□□ □□□□□□
□□□□□□□□□
□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□□□□□□□
□□□ I:
□□□□□ □□□□□ 1950–1955
□□□ II: □□□□□□□□□□ 1955-1957 □□□□□ □□□□□ 1957-1958
□□□ III: □□□□□□ 1958-1959, □□□□□□□□□ 1960-1962
□□□□□□□□

संपादक का नोट
सिल्विया प्लाथ ने बचपन से ही डायरी लिखना शुरू कर दिया था। उन्होंने अपनी मृत्यु तक इसे जारी रखा और उनकी कविताओं के बाद, यह उनकी सबसे महत्वपूर्ण रचना है। डायरी के वे सभी सामान्य कार्य थे जो ऐसे दस्तावेजों के होते हैं—जीवन का लेखा-जोखा रखना, स्मृतियों को जगाना, आंतरिक जीवन की पुष्टि करना और शायद इस संदेह को दूर करना कि व्यक्ति का अस्तित्व भी है या नहीं— लेकिन यह उससे कहीं अधिक थी। प्लाथ ने एक बार इसे "सपनों, निर्देशों और आदेशों की एक सूची" कहा था, और अधिक सटीक रूप से, इसे अपना "सरगासो" कहा था, जिसका अर्थ था कल्पना का भंडार, अवचेतन से उन महत्वपूर्ण विचारों का उद्भव जो पहली बार इन्हीं पन्नों में प्रकाशित हुए थे। इसलिए यहाँ न केवल उनका जीवन है— जिसे हमेशा बेहद छोटा माना जाता था ("टिक टॉक... एक जीवन बीत रहा है। मेरा जीवन...")—बल्कि उनकी अधिकांश रचनाओं के बीज भी हैं। एक ऐसी लेखिका के संदर्भ में यह अंतर्संबंध विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिनका काम पूरी तरह से उनके जीवनी संबंधी विवरणों पर केंद्रित था। हालांकि, यह समझना आवश्यक है कि प्लाथ में आत्मकथा उस तरह से प्रभावी नहीं होती जिस तरह से अन्य "स्वीकारोक्तिपूर्ण" लेखकों में होती है, बल्कि एक पौराणिक अर्थ में—जैसा कि जूडिथ क्रोल के आलोचनात्मक अध्ययन 'चैप्टर्स इन अ माइथोलॉजी' में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। एक अच्छी जीवनी के अभाव में, यह डायरी कुछ ऐसा प्रस्तुत करती है जो कोई जीवनी नहीं कर सकती—इसके सर्वश्रेष्ठ अंशों में इन पृष्ठों के माध्यम से व्यक्त की गई आवाज़ उतनी ही सच्ची और अनूठी है जितनी कि कविताओं में प्लाथ की।

[redacted]

[redacted]

प्रस्तावना
अभिलेखों के रूप में, सिल्विया प्लाथ की डायरियाँ उनकी कहानियों, कविताओं, निबंधों और पत्रों से भिन्न प्रकार की हैं, और यह आशा की जाती है कि उनका प्रकाशन एक उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति करेगा।
उनकी लगभग सभी प्रारंभिक रचनाएँ (और निश्चित रूप से प्रकाशन के लिए लिखी गई उनकी सभी गद्य रचनाएँ) विशिष्ट पत्रिकाओं में अपने काम को प्रकाशित करवाने की उनकी महत्वाकांक्षा और बाज़ार की मांग के अनुरूप रचना करने के उनके प्रयासों से प्रभावित थीं। विभिन्न गुरुओं से प्रशिक्षण लेने और अपनी लेखन क्षमता को व्यावहारिक, लाभदायक उपयोग में लाने की उनकी प्रवृत्ति लगभग स्वाभाविक थी। जैसा कि इन पत्रिकाओं से पता चलता है, उन्होंने इसे अथक लगन से, फिर भी अनिश्चितता और आत्मसंदेह के आवेश में रहते हुए किया। आदर्शों के इस हतोत्साहन भरे अभियान ने उनके काम में वह सब कुछ उत्पन्न किया जो कृत्रिम प्रतीत होता है। फिर भी, इन पृष्ठों का एक सहानुभूतिपूर्ण पाठक यह समझ पाएगा कि यह शायद उस प्रेरणा का केवल एक पहलू था - और वह भी सबसे बाहरी पहलू - जो लगातार एक बिल्कुल अलग दिशा में आगे बढ़ रही थी।
उसके भीतर जो कुछ चल रहा था, उसकी तुलना रसायन विद्या की प्रक्रिया से की जा सकती है। उसकी प्रारंभिक रचनाएँ आंतरिक रूपांतरण के विभिन्न चरणों से निकली अशुद्धियों के समान थीं, आंतरिक कार्य के उप-उत्पाद थीं। उसके संदर्भ में इन शब्दों का प्रयोग सचमुच किया जा सकता है। अपने लेखन में वह चाहे कितनी भी सावधानी बरते, जैसे ही वह पूरा हो जाता, वह उसे तिरस्कार, कभी- कभी क्रोध के साथ त्याग देती थी। ऐसी चीजें वह बिल्कुल नहीं चाहती थी। लेकिन आखिर वह क्या चाहती थी? किसी दूसरी संस्कृति

में शायद वह अधिक खुश होती। उसमें कुछ ऐसा था जो इस्लामी कट्टर ईश्वर प्रेमियों की याद दिलाता था—किसी परम तीव्रता, आत्मा से, या वास्तविकता से, या केवल तीव्रता से ही मिलन की लालसा। इसमें उसने कुछ हिंसक, कुछ बहुत ही आदिम, शायद बहुत ही स्त्रीत्वपूर्ण, नए जन्म के लिए सब कुछ बलिदान करने की तत्परता, यहाँ तक कि एक आवश्यकता भी दिखाई। उसके साथ, यह उसके अस्तित्व के हर स्तर पर स्पष्ट रूप से व्यक्त हुआ। तार्किक रूप से, इसका नकारात्मक पहलू आत्महत्या है। लेकिन सकारात्मक चरण (धार्मिक संदर्भ में अधिक परिचित) पुराने झूठे स्व का अंत और नए वास्तविक स्व का जन्म है। और यही वह लक्ष्य था जिसे उन्होंने अंततः एक लंबे और कष्टदायक प्रसव के बाद प्राप्त किया।
एरियल और उससे जुड़ी बाद की कविताएँ हमें उस आत्म की आवाज़ देती हैं। वे इस बात का प्रमाण हैं कि वह आत्म अस्तित्व में आ गया। इन डायरियों को छोड़कर उनकी बाकी सभी रचनाएँ उस आत्म के विकास की परित्यक्त उपज हैं।
सिल्विया प्लाथ अपने निजी जीवन और लेखन दोनों में अनेक मुखौटे पहनने वाली शख्सियत थीं। कुछ मुखौटे दिखावटी, घिसे-पिटे मुखौटे थे, आत्मरक्षा के तंत्र थे, अनैच्छिक थे। और कुछ जानबूझकर किए गए दिखावे थे, किसी न किसी शैली की कुंजी खोजने के प्रयास थे। ये उनके कमज़ोर व्यक्तित्वों के दृश्य थे, उनके झूठे या अस्थायी व्यक्तित्व थे, उनके आंतरिक नाटक की छोटी भूमिकाएँ थीं। हालाँकि मैंने छह साल तक हर दिन उनके साथ बिताया, और शायद ही कभी दो-तीन घंटे से ज़्यादा उनसे अलग रहा, मैंने उन्हें कभी किसी के सामने अपना असली रूप दिखाते हुए नहीं देखा—शायद उनके जीवन के अंतिम तीन महीनों को छोड़कर।

बेतहाशा कल्पनाओं को जन्म देती है। हम उस वाणी पर प्रतिक्रिया करते हैं, उस आकर्षक तत्व पर, जो हर जगह पूर्ण रूप से स्वयं है, कहीं भी क्षीण या साधारण नहीं—लेकिन हम उस पर चर्चा केवल बाहरी तत्वों, उसके मनोवैज्ञानिक स्वरूप के नाटक, उसके जीवन की आकस्मिक घटनाओं के संदर्भ में ही कर सकते हैं, या उसके बारे में अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं।
यहीं पर उनकी डायरीज़ उनकी अन्य सभी रचनाओं से अपनी विशिष्टता प्रदर्शित करती हैं। यहाँ उन्होंने अपने अंतर्विरोधों से जूझते हुए अपने दैनिक जीवन का वर्णन किया है, केवल अपने लिए। यह उनकी आत्मकथा है, जो अपूर्ण होते हुए भी जटिल और सटीक है, जिसमें उन्होंने स्वयं को ईमानदारी से देखने का प्रयास किया और अपने पुनर्निर्माण और विघटन की प्रक्रिया से गुज़रीं। और यहाँ हम जिस सिल्विया प्लाथ को देख पाते हैं, वह उनके दैनिक जीवन में वास्तविक व्यक्तित्व के सबसे करीब है।
ये डायरियाँ कई नोटबुकों और पन्ने के अलग-अलग बंडलों में मौजूद हैं। इस संग्रह में शायद पूरे संग्रह का एक तिहाई हिस्सा शामिल है, जो अब स्मिथ कॉलेज के नीलसन पुस्तकालय में है। दो और नोटबुक कुछ समय तक सुरक्षित रहीं, मैरून रंग की जिल्द वाली, ठीक 1957-1959 वाली नोटबुक की तरह, और इनमें 1959 के अंत से लेकर उनकी मृत्यु से तीन दिन पहले तक का रिकॉर्ड था। इनमें से आखिरी नोटबुक में कई महीनों की प्रविष्टियाँ थीं, और मैंने इसे नष्ट कर दिया क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उनके बच्चे इसे पढ़ें (उन दिनों मैं भूलने को जीवन का एक अनिवार्य हिस्सा मानता था)। दूसरी नोटबुक गुम हो गई।
टेड ह्यूजेस

भाग I

स्मिथ कॉलेज 1950–1955

जीवन को एक तीखे सेब की तरह चखने के बाद
या फिर, मछली की तरह खेलते हुए, खुश रहना।

उंगलियों से स्पर्श करके यह महसूस करना कि आकाश नीला है,
उसके बाद हमें किस बात की उम्मीद करनी चाहिए?

देवताओं का गोधूलि नहीं, बल्कि एक सटीक भोर।
पीली और धूसर ईंटों का, और अखबार बेचने वाले लड़कों के युद्ध का नारा लगाने का।
— लुई मैकनीस
“औबाडे”
हम जीवन को त्रासदी के रूप में देखना शुरू करने पर ही जीना शुरू करते हैं...
— डब्ल्यू. बी. येट्स
वर्तमान क्षण को थामे रहो, यहीं के क्षण को थामे रहो, जिसके माध्यम से सारा भविष्य अतीत में विलीन हो जाता है...
— जेम्स जॉयस
ये प्लाथ की मूल नोटबुक में लिखे गए उद्धरण थे।

शरद ऋतु में स्मिथ कॉलेज में दाखिला लेने से पहले, प्लाथ ने गर्मियों में मैसाचुसेट्स के ग्रामीण इलाके में स्थित लुकआउट फार्म में खेतों में काम किया था।
लुकआउट फार्म
जुलाई 1950। मैं शायद कभी खुश न रहूँ, पर आज रात मैं संतुष्ट हूँ। बस एक खाली घर, दिनभर धूप में स्ट्रॉबेरी की कलियाँ सुखाने की थकान, एक गिलास ठंडा मीठा दूध और मलाई में डूबी ब्लूबेरी की एक छोटी कटोरी। अब मुझे समझ आया कि लोग किताबों के बिना, कॉलेज के बिना कैसे जी सकते हैं। जब दिन के अंत में इतनी थकान हो जाती है कि सोना ही पड़ता है, और अगली सुबह स्ट्रॉबेरी की कलियाँ सुखाने के लिए तैयार होती हैं, और इस तरह जीवन चलता रहता है, धरती के करीब। ऐसे समय में, और कुछ माँगना मूर्खता होगी…
आज स्ट्रॉबेरी के खेत में इलो ने मुझसे पूछा, “क्या तुम्हें पुनर्जागरण काल के चित्रकार पसंद हैं? राफेल और माइकल एंजेलो? मैंने एक बार माइकल एंजेलो की कुछ पेंटिंग्स की नकल की थी। और पिकासो के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?… ये चित्रकार जो एक गोला बनाते हैं और एक छोटी सी तख्ती को पैर की तरह नीचे की ओर झुका देते हैं?” हम पंक्तियों में साथ-साथ काम कर रहे थे, और वह थोड़ी देर चुप रहता, फिर अचानक अपने गाढ़े जर्मन लहजे में बातें करने लगता। वह सीधा खड़ा हुआ, उसका सांवला, बुद्धिमान चेहरा हंसी से खिल उठा। उसका गठीला, मांसल शरीर कांस्य रंग का था, और उसके सुनहरे बाल सिर पर बंधे एक सफेद रूमाल के नीचे दबे हुए थे। उसने कहा, “तुम्हें फ्रैंक सिनात्रा पसंद है? कितना भावुक, कितना रोमांटिक, कितना चांदनी रात जैसा, है ना?”

एक खाली कमरे के फर्श पर अचानक नीली रोशनी की एक तिरछी किरण पड़ी। और मैं जानती थी कि यह सड़क की बत्ती नहीं, बल्कि चाँद था। ऐसी रात में कुंवारी, पवित्र, स्वस्थ और युवा होने से बढ़कर और क्या अद्भुत हो सकता है?… (बलात्कार किया जा रहा है।)

*

आज रात बहुत भयानक थी। सब कुछ का मिलाजुला असर था। नाटक 'गुड-बाय माय फैंसी' की याद, बचकाने अंदाज़ में नायिका की तरह मोर्चे पर रिपोर्टर बनने की चाहत, एक ऐसे आदमी से प्यार पाने की चाहत जो मेरी तारीफ़ करे, जो मुझे उतना ही समझे जितना मैं खुद को समझती हूँ। और फिर जैक था, जिसने अच्छा बनने की बहुत कोशिश की, उसे तब बुरा लगा जब मैंने कहा कि वह बस मेरे साथ रोमांस करना चाहता है। कंट्री क्लब में डिनर था, हर जगह पैसों की भरमार थी। और फिर वो रिकॉर्ड... वो जो डांस के लिए बहुत अच्छा था। मैं भूल ही गई थी कि ये वही रिकॉर्ड है, जब तक लुई आर्मस्ट्रांग ने पछतावे से भरी भारी आवाज़ में गाना शुरू नहीं किया ["आई कांट गेट स्टार्टेड"]... जैक ने कहा: "क्या तुमने इसे पहले कभी सुना है?" तो मैं मुस्कुराई। "ओह, हाँ।" ये बॉब [एक और बॉयफ्रेंड] के साथ था। इसने मेरे लिए सब कुछ तय कर दिया... एक अजीब सा रिकॉर्ड, और हमारी लंबी बातें, उसका सुनना और समझना। और मुझे पता था कि मैं उससे प्यार करती हूँ।
आज अगस्त का पहला दिन है। गर्मी है, उमस है और बारिश हो रही है। मेरा मन कविता लिखने का कर रहा है। लेकिन मुझे एक अस्वीकृति पत्र पर लिखी बात याद आ रही है: भारी बारिश के बाद, पूरे देश से "बारिश" शीर्षक वाली कविताएँ आने लगती हैं।
मेरे लिए वर्तमान शाश्वत है, और शाश्वत हमेशा बदलता, बहता, पिघलता रहता है। यही पल जीवन है। और जब यह बीत जाता है, तो यह मर जाता है। लेकिन आप हर नए पल के साथ फिर से शुरुआत नहीं कर सकते,

आई थी, और जैसे ही वह अपनी साइकिल पर बैठी, उसने आवाज़ लगाई, "देखो, इलो आ रही है।"
मैंने देखा, और वाकई, वह वहीं था, अपनी पुरानी खाकी कमीज़ पहने और सिर पर अपना जाना-पहचाना सफेद रुमाल बांधे सड़क पर आ रहा था। स्ट्रॉबेरी के खेत में साथ काम करने के बाद से ही हमारी उससे बातचीत होती थी। उसने मुझे खेत का एक रेखाचित्र दिया था, जो उसने बड़ी बारीकी और आत्मविश्वास से बनाया था। अब वह लड़कों में से एक का रेखाचित्र बना रहा था।
तो मैंने पूछा, “क्या तुमने जॉन की तस्वीर पूरी कर ली?” “ओह, जी हाँ।” वह मुस्कुराया। “आओ और देख लो। तुम्हारा आखिरी मौका है।” उसने वादा किया था कि पूरा होने पर वह मुझे दिखाएगा, इसलिए मैं दौड़कर बाहर गया और उसके साथ खलिहान की ओर चल पड़ा। वह वहीं रहता है।
रास्ते में हमारी मुलाकात मैरी कॉफ़ी से हुई। मुझे लगा जैसे वो मुझे अजीब नज़रों से देख रही हो। मैं किसी तरह उसकी आँखों में आँखें नहीं मिला पा रही थी। "हैलो, मैरी," इलो ने कहा। "हैलो, इलो," मैरी ने एक अजीब सी भावहीन आवाज़ में कहा।
हम जिनी, सैली और ट्रैक्टर शेड में बारिश से बचने के लिए खड़े बच्चों के झुंड के पास से गुज़रे। हमारे गुज़रते ही ज़ोरदार आवाज़ गूंजी। सबने मधुर स्वर में कहा, "ओह, सिल्विया।" मेरे गाल लाल हो गए। मैंने पूछा, "ये मुझे क्यों चिढ़ाते हैं?" इलो बस हंस पड़ा। वह बहुत तेज़ी से चल रहा था। मिल्टन ने वॉशरूम से चिल्लाकर कहा, "हम थोड़ी देर में घर जा रहे हैं।"
मैंने सिर हिलाया और ज़मीन की ओर देखते हुए चलता रहा। फिर हम खलिहान के पास पहुँचे, एक विशाल जगह, ऊँची छत वाला एक बड़ा कमरा जिसमें घोड़ों और गीली घास की गंध आ रही थी। अंदर मंद रोशनी थी;

मुझे लगा कि अस्तबल के दूसरी तरफ किसी व्यक्ति की आकृति दिखाई दी, लेकिन मैं निश्चित नहीं था। बिना कुछ कहे, इलो लकड़ी की संकरी सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। “तुम ऊपर रहते हो? इतनी सारी सीढ़ियाँ?” वह ऊपर चढ़ता रहा, इसलिए मैं भी उसके पीछे-पीछे गया, ऊपर पहुँचकर थोड़ा रुका। “अंदर आओ, अंदर आओ,” उसने एक दरवाज़ा खोलते हुए कहा। तस्वीर उसके कमरे में थी। मैं दहलीज पार कर गया। यह एक संकरी जगह थी जिसमें दो खिड़कियाँ थीं, ड्राइंग के सामान से भरी एक मेज और एक पलंग, जो एक गहरे रंग के कंबल से ढका हुआ था। एक मेज पर संतरे और दूध रखे थे, साथ में एक रेडियो भी था। “लो।” उसने तस्वीर आगे बढ़ाई। यह जॉन के सिर का एक सुंदर पेंसिल स्केच था। “अरे वाह, यह कैसे बनाते हो? पेंसिल के किनारे से?”
तब तो यह मामूली बात लग रही थी, लेकिन अब मुझे याद है कि इलो ने कैसे दरवाजा बंद किया था, रेडियो चालू किया था ताकि संगीत बज सके। वह बहुत तेज़ी से बात कर रहा था और मुझे एक पेंसिल दिखा रहा था। “देखो, यहाँ से नोक निकलती है, किसी भी साइज़ की।” मुझे उसकी नज़दीकी का एहसास हो रहा था। उसकी नीली आँखें चौंकाने वाली हद तक मेरे करीब थीं, मुझे निडरता से देख रही थीं, जिनमें हँसी की झलक थी। “मुझे सच में जाना होगा। वे इंतज़ार कर रहे होंगे। तस्वीर बहुत प्यारी थी।”
मुस्कुराते हुए, वह मेरे और दरवाजे के बीच खड़ा था। एक हरकत। उसका हाथ मेरी बांह पर कस गया। और अचानक उसका मुंह मेरे मुंह पर था, कठोर, जोशीला, उसकी जीभ मेरे होठों के बीच दौड़ रही थी, उसकी बाहें लोहे की तरह मुझे जकड़े हुए थीं। “इलो, इलो!” मुझे नहीं पता कि मैं चीखी या फुसफुसाई, खुद को छुड़ाने के लिए संघर्ष कर रही थी, मेरे हाथ उसकी ताकत के आगे बेतहाशा, व्यर्थ ही प्रहार कर रहे थे। आखिरकार उसने मुझे छोड़ दिया और पीछे हट गया। मैंने

अपना हाथ अपने मुंह पर रखा, जो उसके चुंबन से गर्म और चोटिल था। उसने मुझे हैरानी और थोड़ी मस्ती भरी नजरों से देखा, जैसे कि मैं रो रही थी, डरी हुई थी। इससे पहले किसी ने मुझे इस तरह से नहीं चूमा था, और मैं वहां खड़ी थी, तड़प से भरी हुई, बिजली सी दौड़ रही थी, कांप रही थी। “क्यों, क्यों?” उसने सहानुभूति भरे, लेकिन हल्के से कुछ शब्द कहे। “मैं तुम्हारे लिए पानी लाता हूँ।” उसने मुझे एक गिलास पानी दिया, और मैंने उसे पी लिया। उसने दरवाजा खोला, और मैं लड़खड़ाते हुए, अंधे होकर सीढ़ियों से नीचे उतर गया, मेबेल और रॉबर्ट, उन छोटे अश्वेत बच्चों के पास से गुजरा, जो मेरा नाम बच्चों के उच्चारण के विकृत तरीके से पुकार रहे थे। उनकी माँ, मैरी लू के पास से गुजरा, जो वहाँ एक खामोश, रहस्यमयी उपस्थिति की तरह खड़ी थी।
मैं बाहर थी। एक ट्रक गुजर रहा था। खलिहान के पीछे से आ रहा था। उसमें बर्नी था... वही भयानक, छोटा, हट्टा-कट्टा लड़का जो वॉशरूम में मिला था। उसकी आँखों में शरारती खुशी की चमक थी, और वह इतनी तेज़ी से गाड़ी चला रहा था कि मैं उसे पकड़ नहीं पाई। क्या वह खलिहान में था? क्या उसने इलो को दरवाजा बंद करते देखा था, मुझे बाहर आते देखा था? मुझे लगता है उसने ज़रूर देखा होगा। मैं वॉशरूम के पास से गाड़ियों की तरफ चली गई। बर्नी चिल्लाया, "तुम क्यों रो रही हो?" मैं रो नहीं रही थी। केनी और फ्रेडी ट्रैक्टर पर आए। घर जा रहे लड़कों के एक समूह ने मुझे देखा, उनकी आँखों में कहीं एक चमक थी। "क्या उसने तुम्हें चूमा?" एक ने शरारती मुस्कान के साथ पूछा।
मुझे बहुत अस्वस्थ महसूस हो रहा था। अगर कोई मुझसे बात भी करता तो मैं बोल नहीं पाती। मेरी आवाज गले में अटक गई थी, मोटी और कर्कश।

मिस्टर टॉम्पकिंस केनी और फ्रेडी को पुरानी स्टॉक कार चलाते देखने के लिए पंप के पास आए। वे अच्छे लोग थे, लेकिन वे जानते थे। वे सभी जानते होंगे।
“ये रही प्यारी बच्ची,” केनी ने कहा।
"प्यारी और मासूम चेहरे वाली," फ्रेडी ने कहा।
इसलिए मैं वहां हाथ बांधकर खड़ा रहा, घूमते हुए इंजन को घूरता रहा, ऐसे मुस्कुराता रहा जैसे मैं बिल्कुल ठीक हूं, जैसे कुछ हुआ ही न हो।
घर जाते समय मिल्टन मेरे साथ पीछे वाली सीट पर बैठा था। डेविड गाड़ी चला रहा था और एंडी आगे बैठा था। वे सब मुझे एक चमकती हुई नज़रों से देख रहे थे। डेविड ने सख्त और तनाव भरी आवाज़ में कहा, "बाथरूम में सब लोग तुम्हें खलिहान में जाते हुए देख रहे थे और मज़ाक उड़ा रहे थे।"
मिल्टन ने तस्वीर के बारे में पूछा। हमने कला और चित्रकारी के बारे में थोड़ी बातचीत की। वे सभी बहुत अच्छे थे। मुझे लगता है कि वे मेरे बाल-बाल बचने पर राहत महसूस कर रहे होंगे; शायद उन्हें उम्मीद थी कि मैं रोऊँगी। लेकिन वे जानते थे, वे जानते थे।
तो मैं घर आ गई हूँ। और कल मुझे पूरे फार्म का सामना करना पड़ेगा। हे भगवान, ये सब सपने में ही हुआ होगा। अब तो मुझे लगभग यकीन हो रहा है कि सच में हुआ है। लेकिन कल मेरा नाम हर किसी की ज़बान पर होगा। काश मैं समझदार होती, या कुछ कह देती, लेकिन मैं बहुत डरी हुई हूँ। काश उसने मुझे चूमा न होता। मुझे झूठ बोलना पड़ेगा और कहना पड़ेगा कि उसने नहीं चूमा। लेकिन उन्हें पता है। सबको पता है। और इतने सारे लोगों के सामने मैं क्या करूँगी...?

दंत चिकित्सक के यहाँ गैस भरवाने का यह वर्णन बहुत बाद के काल की लेखन शैली की झलक देता है।
वेलेस्ली
आज सुबह मेरे बाएं तरफ के दो अक्ल के दांत निकाले गए। सुबह 9:00 बजे मैं डेंटिस्ट के क्लिनिक में दाखिल हुआ। जल्दी से, मन में किसी अनहोनी के डर के साथ, मैंने कमरे में इधर-उधर जल्दी से नज़र घुमाई, कहीं कोई यातना देने वाला उपकरण तो नहीं है, जैसे कि न्यूमेटिक ड्रिल या गैस मास्क। ऐसा कुछ नहीं था। डॉक्टर ने मेरे गले में बिब बांध दिया; मैं लगभग तैयार था कि वो मेरे मुंह में सेब ठूंस देंगे और मेरे सिर पर अजमोद की पत्तियां बिखेर देंगे। लेकिन नहीं। उन्होंने बस इतना पूछा, "गैस या नोवोकेन?" (गैस या नोवोकेन। हा हा! मैडम, क्या आप देखना चाहेंगी कि हमारे पास क्या-क्या उपलब्ध है? आग या पानी से मौत, गोली या फांसी से। ग्राहक को खुश करने के लिए कुछ भी।) "गैस," मैंने दृढ़ता से कहा। नर्स चुपके से मेरे पीछे आई, मेरी नाक पर एक रबर का अंडाकार टुकड़ा रख दिया, जिसकी नलियां मेरे गाल में चुभ रही थीं। "आराम से सांस लें।" गैस अंदर जाने लगी, अजीब और घिनौनी मीठी। मैंने इसका विरोध न करने की कोशिश की। दंत चिकित्सक ने मेरे मुँह में कुछ डाला, और गैस बड़े-बड़े घूँटों में अंदर आने लगी। मैं उस रोशनी को घूर रहा था। वह काँप रही थी, हिल रही थी, छोटे-छोटे टुकड़ों में टूट रही थी। इंद्रधनुषी रंग के छोटे-छोटे टुकड़ों का पूरा समूह एक लयबद्ध चाप में झूलने लगा, पहले धीरे, फिर तेज़, और तेज़। अब मुझे साँस लेने के लिए ज़ोर नहीं लगाना पड़ रहा था; कुछ मेरे फेफड़ों में पंप कर रहा था, जिससे साँस छोड़ते समय एक अजीब सी, साँस फूलने जैसी आवाज़ आ रही थी। मुझे लगा जैसे मेरे मुँह पर मुस्कान आ गई हो। तो बात ऐसी थी... इतनी सरल, और किसी ने

मुझे बताया भी नहीं था। मुझे इसे लिखना था, यह वर्णन करना था कि यह कैसा था, बेहोश होने से पहले। मुझे लगा जैसे मेरा दाहिना हाथ चाप का सिरा था, मैंने उसे ऊपर की ओर मोड़ा, लेकिन जैसे ही मेरा हाथ सही जगह पर पहुँचा, चाप दूसरी तरफ घूम गया, और गति पकड़ ली। कितनी चालाकी से उन्होंने यह किया, मैंने सोचा। उन्होंने इस एहसास को पूरी तरह गुप्त रखा; वे आपको इसे लिखने तक नहीं देते थे। और फिर मैं एक समुद्री डाकू के जहाज पर था, कप्तान का चेहरा स्टीयरिंग व्हील के पीछे से मेरी ओर देख रहा था, जैसे ही वह स्टीयरिंग घुमा रहा था। चारों ओर काले और हरे पत्तों के ढेर थे, और वह ज़ोर से कह रहा था, "ठीक है, धीरे से बंद करो, धीरे से।" तभी वेनेशियन ब्लाइंड्स से सूरज की रोशनी कमरे में फूट पड़ी; मैंने ज़ोर से साँस ली, फेफड़ों में हवा भरी। मैं अपने पैर, अपनी बाहें देख सकता था; मैं वहीं था। मैंने अपने शरीर में वापस आने की बहुत कोशिश की... अपने पैरों तक पहुँचना बहुत दूर की बात थी। मैंने अपने हाथ सिर तक उठाए; वे काँप रहे थे। सब खत्म हो गया... अगले शनिवार तक।
एमिल। यही है उसका नाम। और मैं क्या कहूँ? मैं कह सकती हूँ कि उसने शनिवार रात नौ बजे मुझे बुलाया, कि उस सुबह मेरे दो अक्ल दाँत निकलवाए थे, इसलिए मैं अभी भी कमज़ोर थी। मैं कह सकती हूँ कि हम टेन एकर्स में डबल डेट पर डांस करने गए, कि मैंने शाम के दौरान पाँच गिलास स्पार्कलिंग टॉनी जिंजर एले पी ली, जबकि बाकी लोग बीयर पी रहे थे। लेकिन बात यहीं खत्म नहीं होती। बिलकुल नहीं। असल में हुआ ये था। मैंने धीरे-धीरे कपड़े पहने, मेकअप किया, परफ्यूम लगाया, पाउडर लगाया। मैं ऊपर नम, धुंधली शाम में बैठी थी, बाहर हल्की बारिश हो रही थी, जबकि परिवार वाले नीचे बरामदे में बातें कर रहे थे और हँस रहे थे। मैंने सोचा, ये मैं

हूँ, अमेरिकी कुंवारी, लुभाने के लिए सजी हुई। मुझे पता है कि आज शाम मुझे यौन सुख मिलने वाला है। हम डेट पर जाते हैं, मस्ती करते हैं, और अगर हम अच्छी लड़कियाँ हैं, तो एक समय पर हम शर्मीली हो जाती हैं। और ऐसा ही चलता रहता है। हम बार में गए और दो-दो करके बैठ गए। एमिल और मेरे बीच की शुरुआती झिझक धीरे-धीरे दूर होने लगी। हमने बातें शुरू कीं... उस अंतिम संस्कार के बारे में जिसमें वह आज सुबह गया था, उसके बीस साल के चचेरे भाई के बारे में जिसकी रीढ़ की हड्डी टूट गई और वह जीवन भर के लिए लकवाग्रस्त हो गया, उसकी बहन के बारे में जिसकी बारह साल की उम्र में निमोनिया से मृत्यु हो गई। "हे भगवान, आज रात हम कितने उदास हैं!" वह कांप उठा। और फिर, "जानते हो, मुझे हमेशा से क्या पसंद रहा है... मतलब पसंद करना चाहता था? काली आँखें और सुनहरे बाल।" तो हमने छोटी-छोटी बातों पर चर्चा की, कैसे शब्द बार-बार दोहराने पर अपना अर्थ खो देते हैं; कैसे अश्वेत जाति के सभी लोग तब तक एक जैसे दिखते हैं जब तक आप उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं जान लेते; कैसे हमें हमेशा अपनी उम्र ही सबसे अच्छी लगती थी। "मुझे वार्री पर तरस आता है," उसने दूसरे लड़के की ओर इशारा करते हुए कहा। "वह बाईस साल का है, एमहर्स्ट से निकला है, और उसे बाकी जीवन काम करना है। जब मैं सोचता हूँ... कॉलेज के केवल दो साल और बचे हैं।" "मुझे पता है, मुझे हमेशा से जन्मदिन से डर लगता रहा है।" "तुम अपनी उम्र के हिसाब से इतने जवान नहीं दिखते।" मैंने कहा, “मुझे समझ नहीं आता कि लोग बुढ़ापा कैसे सहन कर पाते हैं। अंदर से सब सूख जाता है। जवानी में तो सब आत्मनिर्भर होते हैं। धर्म की भी ज्यादा जरूरत नहीं होती।” उन्होंने ऐसे पूछा जैसे यह बहुत ही असंभव हो, “कहीं आप कैथोलिक तो नहीं हैं?” “नहीं, आप?” “हाँ।” उन्होंने बहुत धीमी आवाज़ में कहा।

हल्की-फुल्की बातें, हंसी-मजाक, तिरछी निगाहें, और वो अनकही शारीरिक हलचल जो हर नई जीत को इतना आनंददायक बना देती है, और भी बढ़ गईं। हवा में मर्दानगी की तेज़ महक थी, जो मेरे लिए एक आदर्श माहौल बना रही थी। आज रात एमिल में कुछ खास था, थोड़ी गंभीरता, एक ऐसा आकर्षण, जो मेरे मूड से ऐसे मेल खा रहा था जैसे किसी बच्चे की पहेली के दो टुकड़े आपस में जुड़ जाते हैं। उसका चेहरा सुंदर था, काले बाल, और बड़ी-बड़ी काली पुतलियाँ; सीधी नाक, एक तरफा चमकती मुस्कान, साफ-सुथरी ठुड्डी। उसका शरीर सुगठित था, छोटे, कोमल हाथ। मुझे पता था कि ऐसा ही होगा। डांस फ्लोर पर उसने मुझे अपने करीब खींच लिया... मेरे स्तन उसकी छाती से कसकर चिपक गए। और ऐसा लगा जैसे गर्म शराब मेरे अंदर बह रही हो, एक नींद भरी, बिजली जैसी सुस्ती। उसने अपना चेहरा मेरे बालों में सटाया, मेरे गाल पर चुंबन किया। "मेरी तरफ मत देखो," उसने कहा। "मैं अभी-अभी स्विमिंग पूल से निकला हूँ, गर्मी से भीगा हुआ।" (हे भगवान, मुझे पता था ऐसा ही होगा।) वह मुझे ध्यान से, खोज भरी निगाहों से देख रहा था, और हमारी आँखें मिलीं। मैं दो बार डूब गई; मैं डूब रही थी; और उसने अपनी नज़रें हटा लीं। आधी रात को वार्री के घर जाते समय, एमिल ने कार में मुझे चूमा, उसका मुँह मेरे मुँह पर नम और कोमल था। वार्री के घर पर और जिंजर एले, और बीयर, और बरामदे की हल्की रोशनी में नाचते हुए, एमिल का शरीर मेरे शरीर से गर्म और मज़बूती से लगा हुआ था, कोमल, कामुक संगीत पर आगे-पीछे झूलते हुए। (नाचना संभोग की सामान्य भूमिका होती है। जब हम इतने छोटे होते हैं कि समझ नहीं पाते, तब हम नाचने की क्लास लेते हैं, और फिर यह।) "जानती हो"—एमिल ने मेरी तरफ देखा — "हमें बैठ जाना चाहिए।" मैंने अपना सिर हिलाया। "नहीं?" उसने कहा। "तो फिर थोड़ा पानी पी लो। ठीक लग रही हो?" (ठीक लग रही हूँ।

ओह, हाँ। हाँ, धन्यवाद।) वह मुझे रसोई में ले गया, ठंडी, लिनोलियम की महक से भरी हुई, बाहर बारिश की आवाज़ आ रही थी। मैं बैठ गई और उसके लाए पानी की चुस्की लेने लगी, जबकि वह नीचे देख रहा था, मंद रोशनी में उसके चेहरे के भाव अजीब लग रहे थे। मैंने गिलास नीचे रख दिया। "यह तो बहुत जल्दी हो गया," उसने कहा। "क्या मुझे और समय लेना चाहिए था?" मैं खड़ी हो गई, और उसका चेहरा मेरे करीब आया, उसकी बाहें मेरे चारों ओर थीं। थोड़ी देर बाद मैंने उसे दूर धकेल दिया। "बारिश बहुत अच्छी है। इसे सुनकर अंदर से अच्छा लगता है, प्रकृति का एहसास होता है, बस इसे सुनने से ही।" मैं सिंक के सहारे खड़ी थी; एमिल मेरे करीब था, गर्मजोशी से भरा, उसकी आँखें चमक रही थीं, उसका होंठ मोहक और प्यारा था। "तुम," मैंने जानबूझकर कहा, "मुझे शारीरिक रूप से छोड़कर किसी और चीज़ की परवाह नहीं करते।" कोई भी लड़का, कोई भी बहादुर लड़का, कोई भी बहादुर झूठा, इस बात से इनकार कर देगा। लेकिन एमिल ने मुझे झकझोर दिया, उसकी आवाज़ में बेचैनी थी। "जानती हो, तुम्हें ऐसा नहीं कहना चाहिए था। जानती हो? जानती हो?" "सच हमेशा चुभता है।" (यहाँ तक कि घिसे-पिटे मुहावरे भी काम आ सकते हैं।) वह मुस्कुराया। "कड़वाहट मत करो; मैं नहीं कर रहा हूँ। सिंक से दूर आओ, और देखो।" वह पीछे हट गया, मुझे अपनी ओर खींचते हुए, मेरे पेट पर थपकी दी; उसने मुझे देर तक प्यार से चूमा। अंत में उसने मुझे छोड़ दिया। "लो," उसने शांत मुस्कान के साथ कहा। "सच हमेशा चुभता नहीं है, है ना?" और इस तरह हम चले गए। मूसलाधार बारिश हो रही थी। कार में उसने अपना हाथ मेरे कंधे पर रखा, अपना सिर मेरे सिर से सटाया, और हम सड़क की बत्तियों को देखते रहे जो धुंधली और बहती हुई सी अंधेरे में हमारी ओर आ रही थीं। जैसे ही हम बारिश में दौड़ते हुए फुटपाथ पर चढ़े, जैसे ही वह अंदर आया और पानी पिया,

जैसे ही उसने मुझे शुभ रात्रि का चुंबन दिया, मुझे पता था कि मेरे अंदर कुछ उसे चाहता था, किस लिए, मुझे यकीन नहीं है: वह शराब पीता है, सिगरेट पीता है, वह कैथोलिक है, वह एक के बाद एक लड़कियों के साथ घूमता रहता है, और फिर भी... मैं उसे चाहती थी। "मुझे आपको यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि यह अच्छा रहा," मैंने दरवाजे पर कहा। "यह अद्भुत रहा।" वह मुस्कुराया। "मैं तुम्हें कॉल करूंगा। अपना ख्याल रखना।" और वह चला गया। मेरे कमरे के बाहर ज़ोरदार बारिश हो रही थी, और एडी कोहेन की तरह, मैंने कहा, "...पंद्रह हज़ार साल...किसके? हम तो अब भी जानवरों से ज़्यादा कुछ नहीं हैं।" कहीं, अपने कमरे में, एमिल लेटा हुआ था, सोने ही वाला था, बारिश की आवाज़ सुन रहा था। भगवान ही जाने वह क्या सोच रहा होगा।
कई बार मेरे मन में एक उम्मीद का भाव आता है, मानो मेरी समझ की सतह के नीचे कुछ छिपा हो, जो मेरे उसे समझने का इंतज़ार कर रहा हो। यह ठीक वैसा ही मोहक एहसास है जब आप किसी नाम को लगभग याद कर लेते हैं, लेकिन पूरी तरह से याद नहीं कर पाते। मैं इसे तब महसूस कर सकता हूँ जब मैं मनुष्यों के बारे में सोचता हूँ, विकास के उन संकेतों के बारे में जो अक्ल दाढ़ के निकाले जाने से मिलते हैं, जबड़े के सिकुड़ने से, क्योंकि अब उसे पहले की तरह मोटे दाने चबाने की ज़रूरत नहीं है; मानव शरीर से बालों का धीरे-धीरे गायब होना; मानव आँख का बारीक अक्षरों के अनुकूल होना, बीसवीं सदी की तेज़, रंगीन गति। यह भाव अस्पष्ट और धुंधला सा तब आता है जब मैं अपनी प्रजाति के लंबे किशोरावस्था काल के बारे में सोचता हूँ; जन्म, विवाह और मृत्यु के रीति-रिवाजों के बारे में; उन सभी आदिम, बर्बर समारोहों के बारे में जो आधुनिक समय के अनुरूप ढल गए हैं। लगभग, मुझे लगता है, वह तर्कहीन, पशुवत पवित्रता ही सबसे

ऊपर, बाथरूम के चमकदार, सफेद, कीटाणुरहित छोटे से कमरे में, जहाँ गर्म मांस और टूथपेस्ट की महक थी, मैं बिना सोचे-समझे रस्म अदा करते हुए वॉशबेसिन पर झुक गया, वर्जित हिस्सों को धो रहा था, चमकते क्रोमियम की पूजा कर रहा था, नलों से आती हुई खड़खड़ाती, क्षीण, चकाचौंध कर देने वाली रोशनी की। गर्म और ठंडा, चिकनी सुगंधित हरी पट्टियों में आती सफाई; सफेद एनामेल पर पतली, पेंसिल से खींची गई रेखाओं में मुड़े हुए बाल; रंगीन दवाइयाँ, कांच के सख्त जार, वो बोतलें जो सर्दी के लक्षणों को ठीक कर सकती हैं या आपको एक घंटे के भीतर सुला सकती हैं। और फिर बिस्तर पर, उसी संभावित उपजाऊ हवा में, लैवेंडर, लेस के पर्दों और कस्तूरी जैसी गर्म बिल्ली की गंध से महकती हुई, आपको आत्मसात करने के लिए इंतजार कर रही थी... हर जगह पीला इंतजार। और आप इन सबका गतिशील प्रतीक हैं। आपके द्वारा, आपके लिए, आपके बारे में। हे भगवान, क्या बस यही है, हँसी और आँसुओं के गलियारे में गूंजना? आत्म-पूजा और आत्म-घृणा के बारे में? गौरव और घृणा के बारे में? एडी कोहेन को लिखे एक पत्र से
अभी-अभी आपका पत्र आया... शहर में आपकी सैर और युद्ध के बारे में। आप नहीं जानते कि इसने मुझ पर क्या असर डाला। मेरा मानसिक भय, जिसे मैं कभी-कभी दबा देता हूँ, अचानक उभर आया और मेरे पेट में अजीब सी बेचैनी पैदा कर दी; यह एक शारीरिक मतली में बदल गया जिसने मुझे नाश्ता भी नहीं करने दिया।
सच कहूँ तो: मैं डरी हुई हूँ, बहुत डरी हुई और स्तब्ध हूँ। सबसे पहले, मुझे लगता है, मैं खुद के लिए डरी हुई हूँ... जीने की वो पुरानी, आदिम इच्छा। ये इतनी हावी हो गई है कि मैं हर पल को भयानक तीव्रता से जी रही हूँ। कल रात, बोस्टन से लौटते समय, मैं कार में लेट गई और रंगीन रोशनी, रेडियो का संगीत, गाड़ी चला रहे

ड्राइवर का प्रतिबिंब, सब कुछ मुझ पर छा गया। ये सब मुझ पर एक चीखती हुई पीड़ा की तरह छा गया... याद रखो, याद रखो, यही पल है, और यही पल है, और यही पल है। इसे जियो, इसे महसूस करो, इससे जुड़े रहो। मैं उन सभी चीजों के प्रति पूरी तरह से जागरूक होना चाहती हूँ जिन्हें मैंने हल्के में लिया है। जब आपको लगता है कि शायद ये आखिरी बार है, ये आखिरी विदाई है, तो ये आपको और भी ज्यादा चोट पहुँचाती है।
मुझे कुछ तो करना ही होगा। मैं इस पूरे भयानक, घिनौने मज़ाक को रोकना चाहती हूँ, इससे पहले कि बहुत देर हो जाए। लेकिन कविताएँ और पत्र लिखने से कुछ खास फायदा नहीं हो रहा। बड़े-बड़े लोग बहरे हैं; वे सड़क पार करते समय ऊँची एड़ी के जूतों में मेरी छोटी-छोटी आवाज़ें सुनना नहीं चाहते। एड, मुझे लगता है कि यह सब कुछ थोड़ा बेचैनी भरा लग रहा है। शायद मैं हूँ भी। जब आप अपनी माँ को, जो बचपन में सुरक्षा और सच्चाई का प्रतीक होती हैं, रसोई में फूट-फूटकर रोते हुए देखते हैं; जब आप अपने लंबे, सपनों में खोए छोटे भाई को देखते हैं और सोचते हैं कि विज्ञान के क्षेत्र में उसकी सारी क्षमताएँ उसे मौका मिलने से पहले ही खत्म हो जाएँगी... तो यह बात आपको अंदर तक झकझोर देती है।
मैं यहाँ गहरे गद्दीदार कुर्सी पर बैठी हूँ [शायद किसी बच्चे की देखभाल कर रही हूँ], बाहर झींगुर भिनभिना रहे हैं। यह पुस्तकालय है, मेरा पसंदीदा कमरा, जिसका फर्श चौकोर पत्थरों से बना मध्ययुगीन मोज़ेक जैसा है। पुरानी किताबों की जिल्दों का रंग... जंग, तांबा, भूरा नारंगी, काली मिर्च जैसा भूरा, गहरा लाल। और यहाँ गहरे लाल रंग की आरामदायक चमड़े की कुर्सियाँ हैं, जिनका चमड़ा उखड़ रहा है, जिससे गुलाबी रंग का संगमरमरी पैटर्न दिखाई दे रहा है। किताबें, जिनसे आप अपने बरसात के दिन भर सकते हैं,

अलमारियों में सजी हैं; दोस्ताना, उंगलियों से छूने लायक किताबें। तो मैं यहाँ बैठी मुस्कुरा रही हूँ और अपने अधूरे विचारों में सोच रही हूँ: स्त्री परमानंद का इंजन है, अपने घुंघराले बालों से लेकर लाल रंग से रंगे नाखूनों तक, धरती की नकल है। फिर मैं सोचती हूँ, ऊपर सो रहे सुंदर बच्चों के परिवार को याद करते हुए: क्या प्रजनन के सुखद चक्रों में डूब जाना, घर में पुरुष की सहज, सुकून भरी उपस्थिति में खो जाना बेहतर नहीं है? मुझे लिज़ याद है, उसका चेहरा सफ़ेद, हवा में उड़ती राख की तरह नाज़ुक; उसके लाल होंठ सिगरेट को रंग रहे थे; उसकी कसी हुई काली जर्सी के नीचे उसके भरे हुए स्तन। उसने मुझसे कहा, "लेकिन सोचो, तुम एक दिन किसी पुरुष को कितना खुश कर सकती हो।" हाँ, मैं सोच रही हूँ, और अभी तक सब ठीक है। लेकिन फिर मैं पलट जाती हूँ और अपने मन में ई. [एमिल] की ओर पहुँच जाती हूँ, उसे बेसबॉल का खेल देखते हुए, शायद, टीवी देखते हुए, या दोस्तों के साथ किसी गंदे चुटकुले पर बेपरवाह होकर हँसते हुए, बीयर के डिब्बे हरे और सुनहरे रंग में बिखरे पड़े हों, और ऐशट्रे हों। मैं वापस अपने आप में लौट आती हूँ, यहाँ बैठी हुई, तैरती हुई, डूबती हुई, तड़प से बीमार। मेरे अंदर इतना ज़मीर भरा हुआ है कि रीति-रिवाजों को तोड़ने पर भयानक परिणाम भुगतने पड़ते हैं; मैं केवल ईर्ष्या से सीमा के सहारे खड़ी हो सकती हूँ और उन लड़कों से नफ़रत करती हूँ, नफ़रत करती हूँ, नफ़रत करती हूँ जो बिना किसी झिझक के अपनी यौन भूख को खुलकर मिटा सकते हैं और संतुष्ट रह सकते हैं, जबकि मैं एक डेट से दूसरी डेट तक भीगी हुई इच्छा में घिसटती रहती हूँ, हमेशा अधूरी। यह सब मुझे बीमार कर देता है।
हाँ, मैं तुम पर (शायद एमिल पर) मोहित थी; और अब भी हूँ। किसी ने भी मुझमें शारीरिक संवेदना की इतनी तीव्र क्षमता नहीं जगाई।

मैंने तुम्हें अपनी ज़िंदगी से निकाल दिया क्योंकि मैं एक क्षणिक आकर्षण बनकर नहीं रह सकती थी... शरीर देने से पहले मुझे अपने विचार, मन, सपने देने पड़ते हैं। और तुम इनमें से कुछ भी नहीं चाहते थे।
जीवनसाथी की तलाश, परख और कोशिश के इस खेल में बहुत दर्द छिपा है। और अचानक आपको एहसास होता है कि आप भूल गए थे कि यह एक खेल है, और आप आंसू बहाते हुए मुंह फेर लेते हैं।
अगर मैं सोचती नहीं, तो मैं कहीं ज्यादा खुश होती; अगर मेरे पास कोई यौन अंग नहीं होते, तो मैं हर समय घबराहट भरी भावनाओं और आंसुओं के कगार पर नहीं डगमगाती रहती।
कुछ समय बाद, मुझे लगता है कि मैं शादी और बच्चों के विचार की आदी हो जाऊंगी। बस, यह मेरी आत्म-अभिव्यक्ति की इच्छा को आत्मसंतुष्ट, कामुक धुंध में न डुबो दे। बेशक, शादी आत्म-अभिव्यक्ति का एक रूप है, लेकिन काश, मेरी कला, मेरा लेखन, मेरी यौन इच्छाओं का मात्र दमन न बन जाए, जो शादी के बाद सूख जाएंगी। काश, मुझे वह मिल जाए... वह पुरुष जो बुद्धिमान होने के साथ-साथ शारीरिक रूप से आकर्षक और मिलनसार भी हो। अगर मैं ये गुण दे सकती हूं, तो एक पुरुष में इसकी अपेक्षा क्यों न करूं? तंत्रिका तंत्र की कार्यप्रणाली कितनी जटिल और पेचीदा है! फोन की बिजली जैसी तीखी आवाज गर्भाशय की दीवारों में उम्मीद की एक झनझनाहट पैदा कर देती है; तार के पार उसकी कर्कश, तीखी और अंतरंग आवाज आंतों को सिकोड़ देती है। अगर लोकप्रिय गीतों में "प्रेम" शब्द की जगह "वासना" शब्द का प्रयोग किया जाए तो यह सच्चाई के ज़्यादा करीब होगा।
एडी, मैंने सोचा। कितनी विडंबना है। तुम एक सपने जैसे हो; काश मैं तुमसे कभी न मिलूँ। लेकिन तुम्हारा कंगन मेरे संयम का

प्रतीक है... शाम से मेरा अलगाव। मैं तुमसे प्यार करती हूँ क्योंकि तुम मैं ही हो... मेरा लेखन, कई जीवन जीने की मेरी इच्छा। मैं अपने छोटे से तरीके से एक छोटी सी देवी बनूँगी। घर पर मेरी मेज पर मेरी लिखी सबसे अच्छी कहानी है। मैं बॉब को कैसे बताऊँ कि मेरी खुशी मेरे जीवन के एक टुकड़े, दर्द और सुंदरता के एक अंश को निकालकर, कागज पर टाइप किए हुए शब्दों में बदलने से उत्पन्न होती है? वह कैसे जानेगा कि मैं अपने जीवन, अपनी तीव्र भावनाओं, अपने अहसास को छापकर न्यायसंगत ठहरा रही हूँ?
आज रात मैं बदसूरत लग रही हूँ। पुरुषों को आकर्षित करने की अपनी क्षमता पर से मेरा सारा विश्वास उठ चुका है, और स्त्रीत्व के लिहाज़ से यह एक बेहद दयनीय स्थिति है। मेरा सामाजिक संपर्क बिल्कुल ठप्प हो गया है। शनिवार रात की मौज-मस्ती से मेरा एकमात्र जुड़ाव भी टूट गया है, और अब मेरे पास कोई नहीं बचा। बिलकुल कोई नहीं। मुझे किसी की परवाह नहीं है, और यह भावना स्पष्ट रूप से दोनों तरफ से है। आखिर ऐसी क्या बात है जो किसी को दूसरों की ओर आकर्षित करती है? पिछले साल कई लड़के अलग-अलग कारणों से मुझे चाहते थे। मुझे अपने रूप-रंग पर पूरा भरोसा था, अपने आकर्षण पर पूरा भरोसा था, और मेरा अहंकार संतुष्ट था। अब, अपनी तीन ब्लाइंड डेट्स के बाद—जिनमें से दो पूरी तरह से असफल रहीं, तीसरी भी निराशाजनक रही—मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने कभी खुद को आकर्षक कैसे समझा था। लेकिन अंदर से, मैं जानती हूँ। मुझमें कभी चमक थी, आत्मविश्वास था। मैं शुरू में पीली नहीं पड़ती थी, गंभीर और उदास नहीं होती थी। अब मुझे समझ में आता है कि सेलिया एम्बरली की उस लड़की का क्या मतलब था जब उसने कहा था: "अगर वह मुझे चूम लेगा, तो सब ठीक हो जाएगा; मैं फिर से सुंदर हो जाऊँगी।" सबसे पहले मुझे कोई लड़का चाहिए, कोई भी लड़का, जो मेरी

खूबसूरती पर मोहित हो जाए—एमिल जैसा कोई लड़का। फिर मुझे कोई सच्चा साथी चाहिए, जो मेरे लिए अभी, यहीं और जल्द ही सही हो। तब तक मैं खोई हुई हूँ। कभी-कभी मुझे लगता है कि मैं पागल हो रही हूँ।
सितंबर 1950 में प्लाथ ने कई छात्रवृत्तियों के साथ स्मिथ कॉलेज में प्रथम वर्ष में प्रवेश लिया। इस अवधि की डायरी में लिखी गई प्रविष्टियों पर तिथि अंकित नहीं है, और वैसे भी पाठ में इतने अंश काट-छांट किए गए हैं कि पाठक को इन अंशों को एक कथात्मक शैली में पढ़ने के बजाय विषयगत रूप से पढ़ना चाहिए। प्लाथ पर शैक्षणिक रूप से उत्कृष्ट प्रदर्शन करने का अत्यधिक दबाव था, ताकि वह अपनी छात्रवृत्तियों को बरकरार रख सकें और अपने उच्च शैक्षणिक मानकों को बनाए रख सकें। साथ ही, उन पर सामाजिक रूप से, विशेषकर पुरुषों के बीच, स्वीकार्यता प्राप्त करने का भी उतना ही दबाव था, और उन्हें अपनी रचनात्मक रचनाओं - कविताओं और कहानियों - के प्रति गहरा लगाव था।
इस समय उनकी मां वेलेस्ली में घर पर पढ़ा रही थीं और प्लाथ के नाना-नानी के साथ घर साझा कर रही थीं - प्लाथ के पिता का निधन तब हो गया था जब वह आठ साल की थीं। उनके छोटे भाई, वॉरेन, भी छात्रवृत्ति पर एक्सेटर विश्वविद्यालय में पढ़ रहे थे। नॉर्थम्प्टन
हे भगवान, मैं कौन हूँ? आज रात मैं पुस्तकालय में बैठी हूँ, ऊपर तेज़ रोशनी पड़ रही है, पंखा ज़ोर से चल रहा है। हर तरफ़ लड़कियाँ ही लड़कियाँ, किताबें पढ़ रही हैं। गंभीर चेहरे, गुलाबी, सफ़ेद, पीली त्वचा। और मैं यहाँ बिना पहचान के बैठी हूँ: बेजान। मेरा सिर दुख रहा है। पढ़ने के लिए इतिहास है... सोने से पहले सदियों का ज्ञान है, कल सुबह नाश्ते से पहले लाखों

जिंदगियों को आत्मसात करना है। फिर भी मुझे पता है कि घर पर मेरा कमरा है, मेरी मौजूदगी से भरा हुआ। इस सप्ताहांत मेरी मुलाकात है: कोई तो है जो मुझे इंसान मानता है, महज़ एक नाम नहीं। और यही एकमात्र संकेत हैं कि मैं एक संपूर्ण व्यक्ति हूँ, महज़ नसों का एक गुच्छा नहीं, बिना पहचान के। मैं खो गई हूँ। हक्सले हँसते। यह कैसा प्रशिक्षण केंद्र है! सैकड़ों चेहरे, किताबों पर झुके हुए, पंखे चल रहे हैं, विचारों की सीमा पर ताल बजा रहे हैं। यह एक बुरा सपना है। सूरज नहीं है। बस निरंतर गति है। अगर मैं आराम करती हूँ, अगर मैं मन ही मन सोचती हूँ, तो मैं पागल हो जाती हूँ। बहुत कुछ है, और मैं अलग-अलग दिशाओं में खिंचा चला जा रहा हूँ, दूर क्षितिजों के सामने दुबका हुआ, तनावग्रस्त। जर्मन कबीलों के साथ रुककर कुछ देर आराम करना चाहता हूँ: लेकिन नहीं! आगे बढ़ते रहो, बढ़ते रहो, बढ़ते रहो। साम्राज्यों के युगों से, पतन और विनाश के युगों से। तीव्र, निरंतर गति। क्या मैं फिर कभी धूप में आराम नहीं कर पाऊँगा—धीमे, सुस्त और शांति से भरे सुनहरे पलों में?
अब मुझे पता चल गया है कि अकेलापन क्या होता है, मुझे लगता है। क्षणिक अकेलापन, वैसे भी। यह आत्म के एक अस्पष्ट मूल से आता है— जैसे रक्त का कोई रोग, जो पूरे शरीर में इस तरह फैला होता है कि उसका स्रोत, संक्रमण का स्थान, पता लगाना मुश्किल होता है। थैंक्सगिविंग की छुट्टियों के बाद मैं हेवन हाउस में अपने कमरे में वापस आ गई हूँ। घर की याद उस बेचैनी को कहते हैं जो अब मुझ पर हावी है। मैं अपने कमरे में अकेली हूँ, दो दुनियाओं के बीच। नीचे कुछ लड़कियाँ आई हैं—कोई फ्रेशमैन नहीं, कोई ऐसा नहीं जिसे मैं जानती हूँ। मैं नीचे चिट्ठी लेकर अपनी मौजूदगी का बहाना बना सकती थी, लेकिन अभी नहीं—अभी नहीं। नहीं, मैं बनावटी

बातों में उलझकर खुद से भागने की कोशिश नहीं करूँगी: "क्या तुम्हारी छुट्टियाँ अच्छी रहीं?" "ओह, हाँ, और तुम्हारी?" मैं यहीं रहूँगी और उस अकेलेपन को समझने की कोशिश करूँगी। मुझे थैंक्सगिविंग के वे चार दिन मुश्किल से याद हैं—घर की धुंधली सी छवि, जब मैं गई थी उससे भी छोटा, गहरे पीले वॉलपेपर पर धब्बे और भी ज़्यादा दिखाई दे रहे थे; मेरा पुराना कमरा, अब सचमुच मेरा नहीं रहा, मेरा सारा सामान चला गया; मैं इस कड़वी सच्चाई से खुद को धोखा नहीं दे सकता कि चाहे आप कितने भी उत्साहित हों, चाहे आपको कितना भी यकीन हो कि आपका चरित्र ही आपका भाग्य है, जब आप अपने कमरे में अकेले होते हैं और बिजली की झूठी खुशनुमा रोशनी में घड़ी की टिक-टिक तेज़ आवाज़ सुनाई देती है, तो कुछ भी वास्तविक नहीं होता, न अतीत, न भविष्य। और अगर आपका कोई अतीत या भविष्य नहीं है, जो आखिरकार वर्तमान का आधार है, तो बेहतर है कि आप वर्तमान के खोखले खोल को त्याग दें और आत्महत्या कर लें। लेकिन मेरे दिमाग में बैठा ठंडा, तर्कशील दिमाग, जो बार-बार दोहराता है, "मैं सोचता हूँ, इसलिए मैं हूँ," फुसफुसाता है कि हमेशा एक मोड़ होता है, एक उन्नति होती है, एक नया दृष्टिकोण होता है। और इसलिए मैं प्रतीक्षा करता हूँ। अच्छे दिखने का क्या फायदा? क्षणिक सुरक्षा पाने के लिए? बुद्धि का क्या फायदा? केवल यह कहने के लिए कि "मैंने देखा है; मैंने समझा है"? आह, हाँ, मैं खुद से नफरत करता हूँ कि मैं स्वाभाविक रूप से नीचे जाकर संख्याओं में सुकून नहीं पा सकता। मैं खुद से नफरत करता हूँ कि मुझे यहाँ बैठकर अपने भीतर की अनजानी उलझनों से जूझना पड़ रहा है। मैं यहाँ हूँ, अतीत की यादों और भविष्य के सपनों का एक गठ्ठा, मांस के एक आकर्षक बंडल में लिपटा हुआ। मुझे याद है कि इस शरीर ने क्या-क्या झेला है; मैं उन चीज़ों के सपने देखता हूँ

इस किताब में इतने लंबे समय से न लिखने का कारण आंशिक रूप से यह है कि मेरे पास लिखने के लिए कोई एक अच्छा, सुसंगत विचार ही नहीं था। मेरा दिमाग, एक घिनौनी उपमा का प्रयोग करूं तो, कूड़ेदान की तरह है जो कागज़, बालों के टुकड़ों और सड़े हुए सेब के छिलकों से भरा है। इतने सारे जीवन, जिनमें से कई रोमांचक और मेरे अनुभव के दायरे में नए थे, के संपर्क में आने से मैं उदास महसूस कर रहा हूँ। मैं लोगों के पास से गुज़रता हूँ, उन्हें बस छूता हुआ, और यह मुझे परेशान करता है। किसी को दिल से पसंद करने के लिए, उन्हें दोस्त के रूप में महत्व देने के लिए, मुझे उनकी प्रशंसा करनी पड़ती है। ऐन के साथ भी ऐसा ही था: मैं उसकी बुद्धिमत्ता, उसकी घुड़सवारी, उसकी जीवंत कल्पनाशीलता—उन सभी चीजों की प्रशंसा करता था जो उसे वह बनाती थीं जो वह थीं। मैं उस पर सहारा ले सकता था जैसे वह मुझ पर। हम दोनों मिलकर किसी भी चीज़ का सामना कर सकते थे—लेकिन पूरी तरह से नहीं, वरना वह वापस आ जाती। और इसलिए वह चली गई है, और मैं कुछ समय के लिए अकेला महसूस कर रहा हूँ। लेकिन मैं दुख को क्या जानता हूँ? मेरे प्रियजनों में से किसी की भी मृत्यु नहीं हुई है और न ही उन्हें कभी यातना दी गई है। मुझे कभी खाने की कमी नहीं हुई, न ही सोने की जगह की। मुझे पाँचों इंद्रियाँ और एक आकर्षक रूप मिला है। इसलिए मैं अपने आरामदायक गद्देदार आसन पर बैठकर दर्शनशास्त्र पर विचार कर सकती हूँ। मैं अमेरिका के सबसे उत्कृष्ट कॉलेजों में से एक में पढ़ रही हूँ; मैं संयुक्त राज्य अमेरिका की दो हज़ार सबसे उत्कृष्ट लड़कियों के साथ रह रही हूँ; मुझे शिकायत करने की क्या ज़रूरत है? कुछ खास नहीं। मैं अपने आत्मसम्मान को केवल इतना ही बढ़ा सकती हूँ कि मुझे छात्रवृत्ति मिली है, और अगर मैंने अपनी स्वतंत्र इच्छा का प्रयोग न किया होता और हाई स्कूल की पढ़ाई न

देखता हूँ उसे शब्दों में उतारने की कोशिश कर सकता हूँ। कितना मूर्ख हूँ मैं!
बचपन से ही मैं जादुई, मनमोहक जादुई दुनिया, परियों की रानियों और कुंवारी कन्याओं, छोटे राजकुमारों और उनके गुलाब के पौधों, मार्मिक भालुओं और ईयोर जैसे गधों, व्यक्तिगत जीवन (जैसा कि मूर्तिपूजकों को प्रिय था), जादुई छड़ी और त्रुटिहीन चित्रों से घिरी हुई थी—सुंदर काले बालों वाली बच्ची (जो आप थीं) अपनी माँ के रील के डिब्बे में तारों भरे रास्ते पर आधी रात के आकाश में उड़ती हुई—ग्रिसेल्डा अपने पंखों वाले लबादे में, लालटेन की रोशनी में लहराते संतरे की दुनिया में कोयल के साथ नंगे पैर चलती हुई, डिलाइट अपने फूलों के बगीचे में पतले अंगों वाली फूलों की परियों के साथ, हॉबिट और बौने, नीले और बैंगनी हुडों के साथ सोने की बेल्ट पहने, घाटी की गुफाओं में बीयर पीते और ड्रैगन के गीत गाते हुए—यह सब मैं जानती थी, महसूस करती थी और मानती थी। बचपन में यही सब मेरा जीवन था। इससे निकलकर "वयस्क" वास्तविकता की दुनिया में आना। बच्चों की कोमल, संवेदनशील उंगलियों की त्वचा को धीरे-धीरे मोटा होते हुए महसूस करना, यौन इच्छाओं को महसूस करना... यौन अंगों को विकसित होते और शरीर को पुकारते हुए महसूस करना; स्कूल, परीक्षा (ये शब्द उतने ही अप्रिय हैं जितनी ब्लैकबोर्ड पर चॉक की कर्कश आवाज), रोजी-रोटी, शादी, यौन संबंध, अनुकूलता, युद्ध, अर्थव्यवस्था, मृत्यु और स्वयं के बारे में जागरूक होना। बचपन की सुंदरता और वास्तविकता का कितना दुखद विनाश! मैं भावुक नहीं होना चाहता, जैसा कि लग रहा है, लेकिन आखिर क्यों हमें मदर गूज़ की मीठी-मीठी दुनिया, एलिस इन वंडरलैंड की कहानियों में ढाल दिया जाता है, और फिर बड़े होते ही, जब हम खुद को एक नीरस जीवन की जिम्मेदारी वाले व्यक्ति

के रूप में पहचानते हैं, तो हमारी वास्तविकता टूट जाती है? उन शब्दों के घिनौने और अश्लील अर्थ सीखना जिन्हें आप कभी प्यार करते थे, जैसे "परी"। कॉलेज की पार्टियों में जाना जहाँ कोई लड़का आपकी गर्दन में अपना चेहरा दबा देता है या अगर वह आपकी छाती में उंगलियां डालने से संतुष्ट नहीं होता है तो आपका बलात्कार करने की कोशिश करता है। यह जानना कि लाखों लड़कियाँ खूबसूरत हैं और हर दिन और भी लड़कियाँ किशोरावस्था की उस असहज अवस्था को पीछे छोड़ते हुए, जैसा कि कभी आपने किया था, प्यार और दुलार पाने के रोमांच में कदम रखती हैं। यह जानना कि आपको किसी न किसी तरह प्रतिस्पर्धा करनी ही होगी, फिर भी धन और सुंदरता आपके बस की बात नहीं है। यह जानना कि एक लड़का अपने पिता की नवीनतम क्रोम-प्लेटेड कन्वर्टिबल कार में आपको किसी रेस्टोरेंट तक ले जाते समय "आपके इलाके" के बारे में लापरवाही से टिप्पणी कर देगा। यह जानना कि यदि आप धनी बुद्धिजीवियों के परिवार में पैदा हुई होतीं, तो शायद आप आज की तुलना में कहीं अधिक प्रतिभाशाली कलाकार होतीं। यह जानना कि आप कभी भी सत्य के रूप में कुछ भी नहीं सीख सकतीं, केवल क्षणिक, अस्थायी बातें जो आपके क्षण, आपके स्थान और आपकी वर्तमान मनस्थिति पर लागू होती हैं। यह जानना कि प्यार कभी सच्चा नहीं हो सकता, क्योंकि जिन लोगों की आप प्रशंसा करती हैं, जैसे पेरी, वे अप्राप्य हैं क्योंकि वे पी.के. जैसी किसी को चाहते हैं। यह जानना कि आप उन्हें केवल इसलिए चाहती हैं क्योंकि आप उन्हें पा नहीं सकतीं। विपरीत लिंग के किसी प्राणी से अपने विचारों और सहज प्रवृत्ति को समझने और उसे बढ़ाने की लालसा रखना, और यह महसूस करना कि अधिकांश अमेरिकी पुरुष महिलाओं को गोल स्तनों और योनि में सुविधाजनक छेद वाली एक सेक्स मशीन के रूप में पूजते हैं, एक

चित्रित गुड़िया के रूप में जिसके सुंदर सिर में स्टेक डिनर पकाने और एक नियमित 9-5 व्यावसायिक नौकरी के कठिन दिन के बाद बिस्तर पर उसे आराम देने के अलावा कोई विचार नहीं होना चाहिए। कभी-कभी ऐसा समय आता है जब आप भूला हुआ पत्र लेने नीचे जाते हैं, और बैठक में बैठी लड़कियों के छोटे समूह की धीमी, दबी हुई आवाज़ें अचानक अस्पष्ट बड़बड़ाहट में बदल जाती हैं, और उनकी निगाहें घिनौनी ढंग से आप पर, आपके चारों ओर, आपसे दूर सरकती हैं, मानो आपकी आँखों में थरथराते डर से नज़रें न मिलाने की कोशिश कर रही हों। और आपको अपने ऊपर और अपने आस-पास की गई बातचीत के कई घिनौने अंश याद आते हैं, जो आपको इशारों के अदृश्य फंदे में जकड़कर गला घोंटने के लिए थे। आप जानते हैं कि ये आपके लिए थे; और वे भी जो आपको छुरा घोंप रहे हैं। लेकिन खेल यह है कि आप दोनों दिखावा करें कि आप नहीं जानते, आपका वास्तव में कोई इरादा नहीं था, आप नहीं समझते। कभी-कभी आपको भी उसी तरह का जवाब मिल जाता है, और आप और आपका विरोधी एक-दूसरे से बहादुरी भरी मुस्कान के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं, जबकि ज़हर के तीर आपके आपसी घावों में दुर्भावना से कांपते रहते हैं। अक्सर आप इतना घबरा जाते हैं कि पलटवार करने की हिम्मत ही नहीं होती, क्योंकि आप जानते हैं कि डर और हीनता आपके शब्दों में झलक जाएगी और हवा में झूठी सी गूंज उठेगी। तो आप उसे यह कहते हुए सुनते हैं, "हम स्कूल में फेल होना और मिलनसार बनना ज़्यादा पसंद करेंगे बजाय हर समय अपने कमरों में बंद रहने के," और बड़ी मीठी आवाज़ में, "मैं तुम्हें कभी देखती ही नहीं। तुम तो हमेशा अपने कमरे में पढ़ाई करते रहते हो!" और आप चुप रहते हैं। और ओह, आप कितना मुस्कुराते हैं!

लिंडा उस तरह की लड़की है जिसे आप दूसरी बार मिलने पर भूल जाते हैं। वह काफी साधारण और बेजान सी है, जैसे किसी आर्ट ग्लू इरेज़र की तरह। उसकी आँखें किसी सनकी सुनहरी मछली की तरह घबराई हुई और चमकीली हैं। उसकी त्वचा मैली है; शायद उसे मुहांसे हैं। बाल सीधे, भूरे और तैलीय हैं। लेकिन उसने अपनी कुछ कहानियाँ आपके साथ साझा की हैं। और वह लिख सकती है। जितना आपने कभी लिखने का सपना भी नहीं देखा होगा, उससे कहीं बेहतर। उसकी बातचीत में प्यार, कामुकता, डर और दीवानगी झलकती थी, फिर भी वह तीखे, संक्षिप्त वाक्यों की एक श्रृंखला मात्र थी। आपने अपनी कहानी निकाली—वही कहानी जिसने सेवेंटीन पत्रिका में तीसरा पुरस्कार जीता था। कुछ महीने पहले जो भावुकता के पैराग्राफ इतने वास्तविक और सच्चे लग रहे थे, उन्हें दोबारा पढ़ते हुए आपको घिन आ रही थी। आप यह भी नहीं कह सकते थे कि वह बेजान और संयमित थी: वह बेहद स्पष्ट थी। इसलिए आपने इस बात पर हैरानी छोड़ दी कि कोई आपसे कहीं अधिक प्रभावशाली ढंग से लिख सकता है। आपने अपने अकेलेपन और अपने नाजुक से छोटे से दिल से अलग होने की भावना को संजोना छोड़ दिया। आपने कहा: वह इतनी अच्छी है कि उसे भुलाया नहीं जा सकता। क्यों न उसे दोस्त और प्रतिद्वंदी बना लिया जाए— उससे बहुत कुछ सीखने को मिल सकता है। तो कोशिश करो। शायद वो तुम्हारा मज़ाक उड़ाए। शायद आखिर में तुम्हें बुरी तरह हरा दे। खैर, कोशिश तो करो, और शायद, मुमकिन है कि वो तुम्हें बर्दाश्त कर ले।
हताश? हाँ। क्यों? क्योंकि मेरे लिए ईश्वर बनना—या सार्वभौमिक स्त्री-पुरुष बनना—या कुछ भी होना असंभव है। मैं वही हूँ जो मैं महसूस करता हूँ, सोचता हूँ और करता हूँ। मैं अपने अस्तित्व को पूरी तरह से व्यक्त करना चाहता हूँ क्योंकि कहीं न कहीं

मैंने यह विचार ग्रहण कर लिया है कि इस तरह मैं अपने जीवन को उचित ठहरा सकता हूँ। लेकिन अगर मुझे अपने आप को व्यक्त करना है, तो मेरे पास जीवन का एक मानक होना चाहिए, एक शुरुआती बिंदु, एक तकनीक—जिससे मैं अपने व्यक्तिगत और दयनीय छोटे से अव्यवस्था को मनमाने ढंग से और अस्थायी रूप से व्यवस्थित कर सकूँ। मुझे अब धीरे-धीरे एहसास हो रहा है कि वह मानक, या शुरुआती बिंदु, कितना झूठा और संकीर्ण है। यही वह बात है जिसका सामना करना मेरे लिए बहुत कठिन है।
पेरी ने आज कहा कि उसकी माँ ने कहा था, “लड़कियाँ असीम सुरक्षा चाहती हैं; लड़के जीवनसाथी की तलाश करते हैं। दोनों की तलाश अलग-अलग होती है।” मैं इस बात से सहमत नहीं हूँ। मुझे लड़की होना पसंद नहीं है, क्योंकि इस नाते मुझे यह समझना होगा कि मैं पुरुष नहीं बन सकती। दूसरे शब्दों में, मुझे अपनी सारी ऊर्जा अपने जीवनसाथी के मार्गदर्शन और मार्गदर्शन में लगानी होगी। मेरा एकमात्र स्वतंत्र कार्य उस जीवनसाथी को चुनना या अस्वीकार करना है। और फिर भी, जैसा मुझे डर था, वैसा ही हो रहा है: मैं इस विचार के साथ तालमेल बिठा रही हूँ और अभ्यस्त हो रही हूँ…
मैं आधा पुरुष हूँ, और मैं स्त्रियों के स्तनों और जांघों को उसी तरह देखता हूँ जैसे कोई पुरुष रखैल चुनता है... लेकिन यह कलाकार का, स्त्री शरीर के प्रति विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण है... क्योंकि मैं ज़्यादा स्त्री हूँ; भले ही मैं भरे हुए स्तनों और सुंदर शरीर की लालसा रखता हूँ, वैसे ही मैं उनसे उत्पन्न होने वाली कामुकता से घृणा करता हूँ... मैं उन चीज़ों की इच्छा रखता हूँ जो अंततः मुझे नष्ट कर देंगी... मैं सोचता हूँ कि क्या सामान्य और पारंपरिक जीवन से अलग कला उतनी ही महत्वपूर्ण है

जितनी जीवन के साथ जुड़ी कला: दूसरे शब्दों में, क्या विवाह मेरी रचनात्मक ऊर्जा को कम कर देगा और लिखित और चित्रात्मक अभिव्यक्ति की मेरी इच्छा को नष्ट कर देगा, जो इस असंतुष्ट भावना की गहराई के साथ बढ़ती जाती है... या क्या मैं [यदि विवाह करूँ] कला में और साथ ही संतानोत्पत्ति में भी पूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त कर पाऊँगा?... क्या मैं दोनों को अच्छी तरह से करने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम हूँ?... यही मूल मुद्दा है, और मैं इस परीक्षा के लिए खुद को तैयार करने की आशा करता हूँ... चाहे मैं कितना भी डरा हुआ क्यों न हूँ...
बॉबी पिन देखकर मुझे हमेशा घिन आती थी। मैं उन्हें छूती भी नहीं थी। एक बार, जिस दिन मैं टॉन्सिल निकलवाने के बाद अस्पताल से घर जा रही थी, मेरे वार्ड में एक महिला ने मुझसे कहा कि मैं बगल वाले बिस्तर पर लेटी महिला के लिए कुछ बॉबी पिन ले जाऊं। घृणा से भरी हुई, मैंने अपना हाथ बेमन से आगे बढ़ाया, और जैसे ही ठंडी, चिपचिपी छोटी पिनें मेरी त्वचा को छूईं, मैं सिहर उठी। वे ठंडी और चमकदार थीं, जैसे उन पर ग्रीस लगा हो, और उनसे घिनौनी गर्माहट और गंदे बालों के साथ घिनौने, अंतरंग संपर्क का आभास हो रहा था। इस प्रविष्टि से जर्नल में उनके सबसे करीबी लोगों के उन व्यंग्य चित्रों की पहली झलक मिलती है, जो बाद में प्लाथ के लिए लगभग नियमित हो गए थे। वास्तव में, वह अपनी दादी से बहुत प्यार करती थीं।
भविष्य के संदर्भ के लिए:
एक मोटी, तैलीय और अपूर्ण दादी के बारे में एक व्यंग्यात्मक कविता में शामिल करने के लिए:

हंसते हुए अपनी आंखें आकाश की ओर उठाओ और उसकी मोटी गुलाबी आत्मा के बारे में सोचो जो तार्किक पांच-नुकीले तारों के बीच भटक रही है।
मेरे पास दो विकल्प हैं: या तो मैं निरंतर सक्रिय और प्रसन्न रहूँ, या आत्मनिरीक्षण में डूबी हुई निष्क्रिय और दुखी रहूँ। या फिर इन दोनों के बीच झूलते-झूलते पागल हो जाऊँ।
कहते हैं कि बिल्लियों की नौ जिंदगियां होती हैं। आपकी एक ही है; और आपके अस्तित्व के पतले, नाजुक धागे में कहीं न कहीं वो काला गाँठ, वो खून का थक्का, वो रुकी हुई धड़कन है जो इस खास शख्सियत के अंत का संकेत देती है, जिसे "मैं", "तुम" और "सिल्विया" कहा जाता है। तो आप सोचती हैं कि कैसे व्यवहार करें, कैसे जिएं—और आप मूल्यों और दृष्टिकोणों के बारे में सोचती हैं। सापेक्षवाद और निराशा में, बमों के गिरने का इंतज़ार करते हुए, अपनी आँखों के सामने खून (जो अब कोरिया, जर्मनी, रूस में बह रहा है) के बहने और टपकने का इंतज़ार करते हुए, आप एक तीव्र, बीमार भय के साथ सोचती हैं कि कैसे धरती से, घास के बीजों से और जीवन से जुड़ी रहें। आप अपने अठारह वर्षों के बारे में सोचती हैं, एक तरफ इस दृढ़ निश्चय के बीच कि आपने अपनी क्षमताओं और अवसरों के हिसाब से अच्छा किया है... कि अब आप पूरे अमेरिका की लड़कियों से प्रतिस्पर्धा कर रही हैं, न कि सिर्फ अपने शहर की, और दूसरी तरफ इस डर के बीच कि आपने पर्याप्त अच्छा नहीं किया है। आप सोचते हैं कि क्या आपमें इतनी हिम्मत है कि आप अपने लिए लगातार मुश्किलों का रास्ता बनाते रहें और मोच आए टखने के बावजूद उन्हें पार करते रहें। वही सवाल, अठारह साल में आपने क्या हासिल किया? और आप जानते हैं कि आपके पास जो भी भौतिक चीज़ें हैं, उन्हें आप पकड़ नहीं सकते, बल्कि वे भी सड़कर आपकी

खुरदरी त्वचा और कठोर उंगलियों से फिसल जाएंगी। तो आप ज़मीन में सड़ जाएंगे, और इसलिए आप कहते हैं, क्या फर्क पड़ता है? किसे परवाह है? लेकिन आपको परवाह है, और किसी तरह आप सिर्फ एक ही ज़िंदगी नहीं जीना चाहते, जिसे टाइप किया जा सके, जिसे एक संक्षिप्त विवरण में समेटा जा सके: "वह इस तरह की लड़की थी..." और 25 शब्दों या उससे कम में समाप्त हो जाए। आप जितनी चाहें उतनी जिंदगियां जीना चाहते हैं... आप बचपन से ही पूंजीवादी हैं... और क्योंकि आप अठारह साल के हैं, क्योंकि आप अभी भी संवेदनशील हैं, क्योंकि आपको अभी भी खुद पर भरोसा नहीं है, आप थोड़ी बेपरवाही से, थोड़ी ज्यादा समझदारी से बात करते हैं, ताकि आप पर भावुकता, संवेग या स्त्रीवादी चालबाज़ी का आरोप न लगे। आप खुद को छिपाते हैं, ताकि जब तक समय है, आप खुद पर हंस सकें। और फिर आप अपने जानने वाले लोगों के बारे में सोचते हैं, और अपराधबोध से सोचते हैं कि आत्मविश्वास की यह छोटी सी बाढ़ आपको कहां ले जा रही है। (यह व्यावहारिक दृष्टिकोण है... आप कहां पहुंच रहे हैं? आपको क्या मिल रहा है? अपने सिद्धांतों और उनके मूल्यों को उनके उपयोग से मिलने वाले ठोस लाभ से मापें।) अब दादा-दादी को ही ले लीजिए। आप उनके बारे में क्या जानते हैं? हां, वे ऑस्ट्रिया में पैदा हुए थे, वे "जॉली" के लिए "चॉली" और "व्हेन" के लिए "वेन" कहते हैं। दादाजी के बाल सफेद हो चुके हैं, वे बेहद शांत स्वभाव के हैं, बेहद बूढ़े हैं, और आपकी हर बात को चुपचाप और बेमन से सराहते हैं, जो बेहद प्यारा लगता है। (आपको इस बात पर थोड़ा घमंड और गर्व है कि वे एक कंट्री क्लब में प्रबंधक हैं।) दादीजी फुर्तीली हैं, उनका सीना बड़ा और उभरा हुआ है, और उनकी टांगें गठिया से कमजोर और पतली हैं। वे खट्टी क्रीम की बढ़िया चटनी बनाती हैं और अपनी खुद की रेसिपी बनाती हैं। वे सूप को बड़े चाव

से पीती हैं और प्लेट से खाने के टुकड़े अपनी ड्रेस के आगे गिरा देती हैं। उन्हें अब कम सुनाई देने लगा है और उनके बाल भी सफेद होने लगे हैं। आपके दिवंगत पिता कहीं न कहीं आपके भीतर मौजूद हैं, आपके लंबे शरीर की कोशिकाओं में समाए हुए हैं, जो आपकी माँ के गर्भाशय में उनके एक शुक्राणु और एक अंडाणु के मिलन से विकसित हुआ था। आपको याद है कि बचपन में आप उनके सबसे प्यारे थे, और रात के खाने के बाद जब वे लिविंग रूम के सोफे पर लेटे होते थे, तो आप उनके लिए नाच-गाना बनाया करते थे। आप सोचती हैं कि घर में किसी बुजुर्ग पुरुष की अनुपस्थिति का आपकी पुरुष संगति की तीव्र लालसा और लड़कों के समूह की शांत, धीमी आवाज़ में बातचीत और हँसी की आवाज़ से मिलने वाले आनंद से कोई संबंध है या नहीं। आप चाहती हैं कि बचपन में आपको वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान और विज्ञान पढ़ाया गया होता। लेकिन पिता की मृत्यु के बाद, आप अपनी माँ के "मानविकी" व्यक्तित्व की ओर असामान्य रूप से झुक गईं। और जब आपने खुद को बोलते-बोलते रुकते हुए सुना और उनकी आवाज़ की गूँज महसूस की, तो आप भयभीत हो गईं, मानो उन्होंने आपमें बोल दिया हो, मानो आप पूरी तरह से आप नहीं थीं, बल्कि उनके प्रभाव में बढ़ रही थीं और आगे बढ़ रही थीं, और मानो उनके भाव आपके चेहरे से उभर रहे थे। (यहाँ आप विचार करती हैं, और सोचती हैं कि क्या वृद्ध लोगों के साथ ऐसा ही होता है जब वे संतुष्ट होकर मरते हैं... कि वे महसूस करते हैं कि उन्होंने किसी तरह उस शरीर की दीवार को पार कर लिया है जो उनके चारों ओर घातक रूप से और हमेशा के लिए ढह रही है और उनकी अग्नि, प्रोटोप्लाज्म और स्पंदन सीमाओं को पार कर गए हैं और संतानों में जीवित रहेंगे, जीवन की श्रृंखला को जारी रखेंगे...) फिर आपका भाई है—छह फीट चार इंच लंबा, प्यारा और बुद्धिमान। बचपन में तुम उससे लड़ते

थे, उसके सिर पर टिन के पुतले फेंकते थे, अपनी आइस स्केट की एक बेपरवाह हरकत से उसकी गर्दन पर खरोंच लगा देते थे... और फिर पिछली गर्मियों में, जब तुम खेत में काम कर रहे थे, तो तुम्हें उससे प्यार हो गया, तुम उससे दिल की बातें करने लगे और उसे एक इंसान के रूप में जानने लगे... और तुम्हें याद है उस दिन उसके चेहरे पर डर का वो सफेद धब्बा जब सबने तुम्हें टब में फेंकने की योजना बनाई थी—और कैसे उसने तुम्हारा बचाव किया। हाँ, तुम इन अठारह सालों में जिन लोगों के साथ रहे हो, उनका कुछ ही वाक्यों में वर्णन कर सकते हो... फिर भी क्या तुम उनके जीवन, उनकी आशाओं, उनके सपनों का ब्यौरा दे सकते हो? शायद तुम कोशिश कर सकते हो, लेकिन वे काफी हद तक तुम्हारे जैसे ही होंगे... क्योंकि तुम सब एक अवर्णनीय एकता हो—यह पारिवारिक समूह, अपने उलझे हुए तनावों, अतार्किक प्रेम और खून से जन्मी और पली-बढ़ी एकजुटता और वफादारी के साथ। ये लोग ही मूल रूप से तुम्हारे व्यक्तित्व के लिए जिम्मेदार हैं।
और लड़के... जिमी बील, जिसने पाँचवीं कक्षा में तुम्हें सुंदर लड़कियों की तस्वीरें बनाकर दिखाई थीं, और जो समुद्र तट पर रोलर स्केटिंग करता था और एक छोटे से सफेद घर में, जिसके चारों ओर गुलाब के फूल लगे हों, शादी करने की योजना बना रहा था। (तुम्हें अब अजीब तरह से याद है कि कैसे उसकी छोटी बहन बर्फ पर चलते हुए समुद्र तट पर डूब गई थी, और जब तुमने उसे स्कूल में वापस देखा तो उसके पीले, मुरझाए चेहरे को देखकर तुम्हें समझ नहीं आया कि कैसे प्रतिक्रिया दें। तुम उससे अच्छी बातें कहना चाहती थी और अपना दुख जताना चाहती थी, लेकिन फिर अचानक उसके प्रति तुम्हारे अंदर एक कठोरता और अजीब गुस्सा उमड़ आया, उसकी कमजोरी के लिए, जिसने तुम्हारे गुस्से को और बढ़ा दिया। इसलिए तुमने उसे जीभ चिढ़ाकर

मुंह बनाया। और फिर कभी उसके साथ नहीं खेली।) वहाँ लंबा-पतला जॉन स्टेनबर्ग था, जिसने अपनी प्रिंटिंग प्रेस पर "सिल्विया जॉन से प्यार करती है" छापा और छोटी-छोटी पर्चियाँ गलियों में और स्कूल की हर डेस्क पर बिखेर दीं। शर्मिंदा होते हुए भी, इस तरह के ध्यान से तुम अंदर ही अंदर उत्साहित थी, तुमने उसके खरगोश के पैर के उपहार और मेले में जाने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। (बाद के वर्षों में आप उनकी किसी भी प्रकार की कृपा के लिए असीम रूप से आभारी होते।)
1951 की गर्मियों में, अपने दूसरे वर्ष की पढ़ाई शुरू होने से पहले, सिल्विया मैसाचुसेट्स के स्वैम्पस्कॉट में एक परिवार के छोटे बच्चों की देखभाल करने और रसोई में मदद करने का काम करती थी; उसकी दोस्त मार्सिया भी उसी तरह का काम करती थी। इसी अनुभव से प्रेरित होकर उसने बाद में अपनी कविता "द बेबीसिटर्स" लिखी। स्वैम्पस्कॉट
गर्म, सपाट चट्टान पर पेट के बल लेटी हुई, मैंने अपना हाथ किनारे से लटका दिया और हाथ से धूप से तपती हुई पत्थर की गोल आकृतियों को सहलाया और उसकी चिकनी लहरों को महसूस किया। चट्टान में इतनी गर्मी थी, इतनी खुरदरी और आरामदायक गर्माहट, कि मुझे लगा जैसे वह किसी इंसान का शरीर हो। मेरे स्विमसूट के कपड़े को भेदते हुए, तीव्र गर्मी मेरे शरीर में फैल गई और मेरे स्तन कठोर, सपाट पत्थर से रगड़ खाकर दर्द करने लगे। नमकीन और नम हवा मेरे बालों में धीरे से बह रही थी; मेरे बालों के विशाल, चमकते गुच्छे के बीच से मुझे समुद्र की नीली टिमटिमाहट दिखाई दे रही थी। सूरज की किरणें मेरे हर रोम में समा गईं, मेरे हर चिड़चिड़े रेशे को एक महान सुनहरी शांति में तृप्त कर दिया। चट्टान पर लेटकर, शरीर को तना हुआ, फिर ढीला छोड़ते हुए, जैसे मैं किसी वेदी पर हूँ, मुझे

सच्चाई और सुंदरता है जिसे खुलेपन में, हवा और धूप में, उसी मूलभूत सिद्धांतों में विश्वास रखने वाले साथी मनुष्य के साथ साझा किया जा सकता है।
फिर भी, जब किसी दूसरे व्यक्ति पर ऐसा अटूट विश्वास रखा जाता है, तो यह जानकर सचमुच दिल टूट जाता है कि जीवन की जिस समृद्ध, जटिल और संपूर्ण अवधारणा को आप इतना महत्व देते थे, उसका एक हिस्सा लापरवाही से, हल्के में त्याग दिया गया है—तब एक स्तब्ध, अवाक सुन्नता शब्दों को पंगु बना देती है, और बाद में एक गहरे दर्द में बदल जाती है।

a मेरे लिए कागज़ पर वह कहना कठिन है जो मेरे
विचार से स्पष्ट मौखिक चर्चा के लिए सबसे उपयुक्त होगा। लेकिन किसी तरह मैं चाहता था कि आप थोड़ा सा जान लें कि कल आपकी आश्चर्यजनक और शायद अनुचित रूप से गोपनीय जानकारी ने मुझ पर क्या प्रभाव डाला। एक एहसास कि निंदा करने का कोई अधिकार नहीं था, लेकिन फिर भी किसी तरह विश्वास और भरोसे का चूर-चूर होना तय था। एक एहसास कि तर्कसंगत बनाने, क्षमा करने का एक तरीका था, भले ही एक साथी इंसान को अद्वितीय से सामान्य की श्रेणी में रखकर ही सही।
तो बस यही बात है। चट्टान और सूरज अगले दिन की छुट्टी और सुकून का इंतजार कर रहे हैं।
अब मुझे अपने भेजे उस पत्र पर बिल्कुल भी यकीन नहीं है। क्या मैं ही वह नहीं थी जिसने चुपचाप सहमति दी, मौन प्रतिक्रिया दी और ग्रहणशील रही? क्या मैं उस लड़के को आत्म-घृणा की ओर धकेलने की दोषी नहीं थी? और फिर भी क्या यह सब फिर से इस तथ्य पर नहीं आ जाता कि यह पुरुषों की दुनिया है? क्योंकि यदि कोई पुरुष व्यभिचारी होना चुनता है, तो भी वह सौंदर्यबोध के लिहाज़ से व्यभिचार को अस्वीकार कर सकता है। वह अभी भी किसी स्त्री से

अपने प्रति वफादार रहने, अपनी वासना से उसे बचाने की अपेक्षा कर सकता है। लेकिन स्त्रियों में भी वासना होती है। उन्हें भावनाओं की संरक्षक, शिशुओं की रखवाली करने वाली, पुरुष की आत्मा, शरीर और स्वाभिमान को पोषित करने वाली की भूमिका तक ही सीमित क्यों रखा जाए? स्त्री के रूप में जन्म लेना मेरी एक भयानक त्रासदी है। गर्भ में आने के क्षण से ही मुझे लिंग और अंडकोष के बजाय स्तन और अंडाशय विकसित करने के लिए अभिशप्त होना पड़ा; मेरे संपूर्ण कर्म, विचार और भावना का दायरा मेरी अपरिहार्य स्त्रीत्व द्वारा कठोरता से सीमित होना तय था। हाँ, सड़क निर्माण दल के सदस्यों, नाविकों और सैनिकों, बार में नियमित रूप से आने वाले लोगों के साथ घुलने-मिलने की मेरी तीव्र इच्छा—एक गुमनाम माहौल का हिस्सा बनने की, सुनने की, रिकॉर्ड करने की—यह सब इस तथ्य से बाधित हो जाता है कि मैं एक लड़की हूँ, एक स्त्री हूँ जो हमेशा हमले और मारपीट के खतरे में रहती है। पुरुषों और उनके जीवन में मेरी गहरी रुचि को अक्सर उन्हें बहकाने की इच्छा या अंतरंगता के निमंत्रण के रूप में गलत समझा जाता है। हाँ, हे भगवान, मैं हर किसी से जितना हो सके, गहराई से बात करना चाहती हूँ। मैं खुले मैदान में सोना चाहती हूँ, पश्चिम की ओर यात्रा करना चाहती हूँ, रात में आज़ादी से घूमना चाहती हूँ।
एक समय ऐसा आता है जब आपके सारे रास्ते मोम की तरह बंद हो जाते हैं। आप अपने कमरे में बैठे रहते हैं, शरीर में चुभने वाले दर्द को महसूस करते हैं जो आपके गले को जकड़ लेता है, आँखों के पीछे आँसुओं की छोटी-छोटी पोटलियों में खतरनाक रूप से कस जाता है। एक शब्द, एक इशारा, और आपके भीतर दबा हुआ सब कुछ—जड़े हुए गुस्से, सड़ी हुई ईर्ष्या, अधूरी इच्छाएँ—गुस्से भरे, बेबस आँसुओं के

रूप में, शर्मिंदगी भरे सिसकियों और अकेले में फूट-फूट कर रोने के रूप में बाहर निकल आएगा। कोई आपको गले नहीं लगाएगा, कोई आवाज़ नहीं कहेगी, "शांत हो जाओ, सो जाओ और भूल जाओ।" नहीं, अपनी इस नई और भयानक आज़ादी में आप कम नींद और तनावग्रस्त नसों से उपजे खतरनाक पूर्वसूचक दर्द को महसूस करते हैं, और यह एहसास होता है कि इस बार आपके खिलाफ़ हालात बहुत खराब हो गए हैं, और वे अभी भी बढ़ते जा रहे हैं। आपको जिस रास्ते की ज़रूरत है, वह बंद है। आप दिन-रात उस अंधेरी, तंग जेल में जीते हैं जो आपने खुद बनाई है। और इसलिए आज के दिन, आपको ऐसा लगता है कि आप फट पड़ेंगे, बिखर जाएंगे, अगर आप अपने भीतर उबल रहे उस विशाल भंडार को मुक्त नहीं होने देंगे, जो किसी बांध में दरार से फूटकर बाहर निकल रहा है। तो आप नीचे जाते हैं और पियानो पर बैठ जाते हैं। सभी बच्चे बाहर हैं; घर शांत है। कीबोर्ड पर बजते तीखे सुरों की एक ध्वनि से आपको अपने कंधों पर पड़े भारी बोझ से कुछ राहत महसूस होने लगती है।
तहखाने की सीढ़ियों पर तेज़ कदमों की आहट। रेलिंग के पीछे एक तीखा, पतला, नाराज़ चेहरा। "सिल्विया, कृपया दोपहर में दफ्तर के समय पियानो मत बजाओ। इसकी आवाज़ नीचे तक गूंजती है।"
स्तब्ध, सुन्न, उसकी ठंडी आवाज से झुलसे हुए, तुम झूठ बोलते हो: "माफ़ करना। मुझे पता ही नहीं था कि तुम सुन सकते हो।"
तो वो भी चला गया। और तुम दाँत पीसते हो, अपनी कांपती संवेदनशीलता के लिए खुद से घृणा करते हो, और सोचते हो कि मनुष्य कैसे जीवन भर किसी यंत्रवत तानाशाही, चाहे वो उद्योग की हो, राज्य की हो या संगठन की, के नीचे अपनी वैयक्तिकता को बेरहमी से कुचले जाने को सहन कर सकते हैं। और यहाँ तुम अपने जीवन के मात्र

दस सप्ताह व्यथा सहते हो, जबकि तुम्हारे पास जीने के लिए केवल चार सप्ताह ही बचे हैं।
स्वतंत्रता, आत्म-समृद्धि, कैलेंडर के कोने पर प्रतीक्षा कर रही है। जीवन का सब कुछ खोया नहीं है, बस अठारहवीं ग्रीष्म ऋतु समाप्त हुई है। और शायद इस छोटे से अंधकार में इतने समय से कुछ अच्छा पनप रहा था।
हवा ने एक गर्म पीले रंग के चंद्रमा को समुद्र के ऊपर उठा दिया है; एक गोल-मटोल चंद्रमा, जो मैले नीले आकाश में उगता है, और कांपते हुए काले पानी पर प्रकाश की चमकीली टिमटिमाती पंखुड़ियाँ बिखेरता है।
मैं अतार्किक, भावपूर्ण वर्णन करने में माहिर हूँ। ऊपर दिए गए अंश को ही देख लीजिए। हवा चाँद को समुद्र के ऊपर नहीं उड़ा सकती। अचेतन रूप से, बिना शब्दों के, मेरे मन में चाँद की छवि एक गुब्बारे से जुड़ गई है, जो पीला, हल्का और हवा में इधर-उधर हिलता रहता है।
मेरे मन के अनुसार, चंद्रमा पतला, निर्मल और चांदी जैसा नहीं, बल्कि मोटा, पीला, मांसल और गर्भवती है। अप्रैल और अगस्त के बीच यही अंतर है, मेरी वर्तमान शारीरिक अवस्था और भविष्य में होने वाली शारीरिक अवस्था के बीच। अब चंद्रमा में एक तीव्र परिवर्तन आया है, जो पहली पंक्ति में अस्पष्ट और अनिश्चित संकेतों के कारण संभव हुआ है, और वह ट्यूलिप, क्रोकस या एस्टर के बल्ब जैसा बन गया है, जिसके बाद रूपक आता है: चंद्रमा "बल्बस" है, जो एक विशेषण है जिसका अर्थ मोटा है, लेकिन "बल्ब" का सुझाव देता है, क्योंकि दृश्य छवि एक जटिल चीज है। क्रिया "अंकुरित होता है" चंद्रमा के वनस्पति गुण के पहले संकेत को तीव्र करती है। "गंदा नीला आकाश" वाक्यांश द्वारा एक तनाव उत्पन्न होता है, जो शब्दों

विचारों को एक काल्पनिक वास्तविकता में ढालना है। (आवश्यकतानुसार "काल्पनिक") चूंकि मेरी नारीवादी दुनिया को भावनाओं और इंद्रियों के माध्यम से ही समझा जाता है, इसलिए मैं अपने लेखन में भी इसे इसी तरह प्रस्तुत करती हूँ और अक्सर गहन वर्णनात्मक अंशों और उपमाओं के बहुरंगी प्रयोग से इसे भर देती हूँ।
मुझे लगता है कि मैं एमी लोवेल के सबसे करीब हूँ। मुझे एलिनोर वाइली की गीतात्मक स्पष्टता और शुद्धता, ई. ई. कमिंग्स की मनमोहक, गीतात्मक और विलक्षण शैली वाली कविताएँ पसंद हैं, और मैं टी. एस. एलियट, आर्चीबाल्ड मैकलिश, कॉनराड ऐकेन की ओर आकर्षित हूँ...
और जब मैं पढ़ता हूँ, हे भगवान, जब मैं लुई अनटरमेयर के सधे हुए, संक्षिप्त और स्पष्ट गद्य को पढ़ता हूँ, और एक के बाद एक कवियों की गहन भावनाओं को महसूस करता हूँ, तो मैं घुटन, कमजोरी, पीलापन, अस्पष्टता और पूर्णतः बेतुकेपन का अनुभव करता हूँ। मेरे भीतर संवेदनशीलता की एक फीकी, रंगहीन लौ सी बची है। हे भगवान, क्या मुझे इसे किसी पुरुष के लिए तले हुए अंडे पकाते हुए खो देना चाहिए... जीवन के बारे में दूसरों से सुनकर, अपने शरीर को पोषण देकर और अपनी बोध शक्ति और उसके बाद अभिव्यक्ति की क्षमता को निष्क्रियता के कारण मोटा और सुस्त होने देना चाहिए?
थोड़ा संशोधन: "और हवा ने एक गर्म पीले चाँद को समुद्र के ऊपर उड़ा दिया है: एक गोल चाँद जो मैले नीले आकाश में उगता है और समुद्र के कांपते काले मैदानों पर प्रकाश की टिमटिमाती सफेद पंखुड़ियाँ बिखेरता है।"
मैं उन सभी अनछुए रास्तों के बारे में सोचता हूँ और फ्रॉस्ट की कविता उद्धृत करने का मन करता है... लेकिन नहीं करूँगा। केवल

दूसरे कवियों की कविताएँ दोहरा पाना दुखद है। मैं चाहता हूँ कि कोई मेरी कविता दोहराए।
मैं पांडुलिपियाँ प्रकाशित करवाकर खुद को सही ठहराने के विचार से इतनी ग्रस्त क्यों हूँ? क्या यह एक पलायन है—किसी भी सामाजिक असफलता का बहाना—ताकि मैं कह सकूँ, “नहीं, मैं बहुत सारी पाठ्येतर गतिविधियों में भाग नहीं लेती, लेकिन मैं लिखने में बहुत समय बिताती हूँ।” या यह अकेले रहने और ध्यान करने की इच्छा का बहाना है, ताकि मुझे महिलाओं के समूह का सामना न करना पड़े? (महिलाओं की अधिक संख्या ने मुझे हमेशा असहज किया है।) क्या मुझे लिखना पसंद है? क्यों? किस बारे में? क्या मैं हार मानकर कह दूँगी, “जीवन जीना, पुरुषों की अतृप्त इच्छाओं को पूरा करना और बच्चे पैदा करना ही मेरा पूरा जीवन है। लिखने का समय नहीं है”? या मैं इस काम में लगी रहूँगी और अभ्यास करूँगी? पढ़ूँगी, सोचूँगी और अभ्यास करूँगी? मुझे सोचने की चिंता है। मानसिक रूप से मैंने इस गर्मी में एक निष्क्रिय जीवन व्यतीत किया है।
1 सितंबर। यह मेरी पहली सॉनेट है, जिसे मैंने शनिवार की रात 9 से 1 बजे के बीच लिखा था, जब मैं गर्भ धारण करने की खुशी में डूबी हुई थी। शब्दों के भाव और संगीत में डूबी हुई, मैंने बार-बार चयन किया, अपनी इच्छानुसार रंग, स्वर-साम्य और संगीतमय प्रभाव चुने — सुगम 'ल' और मधुर लंबे 'ए' और 'ओ' के उच्चारणों से खुद को शांत किया। हे भगवान, मैं कितनी खुश हूँ—यह पिछले एक साल में लिखी गई मेरी पहली रचना है जो मेरी आँखों, कानों और बुद्धि को पूरी तरह से भा गई है।
सॉनेट: वसंत ऋतु में?

तुम हमें नन्हे-मुन्ने तारों की झुर्रीदार हरी छटाओं से धोखा देते हो, और मेपल क्रीम के फीके वेनिला चाँद से हमें बहलाते हो: एक बार फिर तुम हमें अपने अप्रैल के मिथक से वश में कर लेते हो। पिछले साल तुमने हमें अपनी झिलमिलाती बारिश की बचकानी झंकार से धोखा दिया था; फिर से तुम कोशिश करते हो, और हमें एक बार फिर भोला पाते हो। एक अकेली शैतानी बौछार, और हम रोते हैं शहद के स्वाद वाली सुबह को पानी से जगमगाते लॉन पर साफ रोशनी फैलाते हुए देखने के लिए। हालाँकि हमारा एक और साल लालची धरती पर बीत गया है, तुम हमें लुभाते हो: फिर से हम भ्रमित हो जाते हैं और अनुमान लगाते हैं कि किसी तरह हम पहले से छोटे हैं।
नॉर्थम्प्टन
सितंबर 1951। अब मुझे सब कुछ समझ आ रहा है। या कम से कम धीरे- धीरे समझ आने लगा है। उस लड़के में, जो मजबूरीवश (अन्य संपर्कों की कमी के कारण) मेरी ज़रूरत का एकमात्र समाधान बन गया है, मुझे उन सभी चीज़ों के बीज दिखाई देते हैं जिनसे मैं डरता हूँ और जिनसे बचना चाहता हूँ। मुझे वर्तमान में जो सबसे अच्छा है उसे अपना लेने की उतनी ही गंभीर आवश्यकता भी दिखाई देती है, कहीं ऐसा न हो कि भविष्य में ऐसा मौका न मिले।
दूसरों की खुशियों और सहजता को देखकर मैं इतना परेशान क्यों हो जाता हूँ? मैं इतना जुनूनी क्यों हूँ; मैं जिस चीज़ की ओर इतनी बेहिचक खिंचा चला जा रहा हूँ, उससे मुझे इतनी नफ़रत क्यों है? क्यों, रात को सोते समय सुहावने, कामुक अंधेरे में लेटकर, मन ही मन मुस्कुराते हुए यह कहने के बजाय कि "अगर मैं सही रास्ते पर चलूँ तो एक दिन मैं शारीरिक और मानसिक रूप से तृप्त हो जाऊँगा..." मैं देर रात तक जागकर, जब तक शरीर की ऊर्जा ठंडी न हो जाए, अपने

दिमाग को ठंडे दिमाग से हिसाब-किताब करने में क्यों उलझाए रखता हूँ?
मैं प्रेम नहीं करती; मैं स्वयं के सिवा किसी से प्रेम नहीं करती। यह स्वीकार करना काफी चौंकाने वाला है। मुझमें मेरी माँ जैसा निस्वार्थ प्रेम नहीं है। मुझमें उनके जैसा व्यावहारिक प्रेम भी नहीं है… सीधे और स्पष्ट शब्दों में कहूँ तो, मैं केवल स्वयं से प्रेम करती हूँ, अपने तुच्छ अस्तित्व से, अपनी छोटी- छोटी अपर्याप्त छातियों और निष्कलंक प्रतिभाओं से। मैं उन लोगों के प्रति स्नेह रख सकती हूँ जो मेरी ही दुनिया को दर्शाते हैं। अन्य मनुष्यों के प्रति मेरी चिंता कितनी सच्ची और ईमानदार है, और कितनी समाज द्वारा गढ़ा गया बनावटी आवरण है, यह मैं नहीं जानती। मुझे स्वयं का सामना करने से डर लगता है। आज रात मैं ऐसा करने की कोशिश कर रही हूँ। मेरी हार्दिक इच्छा है कि कोई परम ज्ञान हो, कोई ऐसा व्यक्ति हो जिस पर मैं भरोसा कर सकूँ, जो मेरा मूल्यांकन करे और मुझे सत्य बताए।
मेरी सबसे बड़ी समस्या, जो मेरे बुनियादी और अहंकारी आत्म-प्रेम से उत्पन्न होती है, ईर्ष्या है। मैं पुरुषों से ईर्ष्या करती हूँ—एक खतरनाक और सूक्ष्म ईर्ष्या जो, मेरे विचार से, किसी भी रिश्ते को नष्ट कर सकती है। यह सक्रिय और कर्मठ होने की इच्छा से उत्पन्न ईर्ष्या है, निष्क्रिय और श्रवण शक्ति से नहीं। मैं पुरुष की दोहरी जिंदगी जीने की शारीरिक स्वतंत्रता से ईर्ष्या करती हूँ—उसका करियर, और उसका यौन और पारिवारिक जीवन। मैं अपनी ईर्ष्या को भूलने का नाटक कर सकती हूँ; कोई बात नहीं, यह मौजूद है, कपटी, घातक, गुप्त।
मेरे दुश्मन वो लोग हैं जो मेरी सबसे ज़्यादा परवाह करते हैं। सबसे पहले: मेरी माँ। उनकी दयनीय इच्छा है कि मैं "खुश रहूँ।"

खुश! खुशी एक ऐसी भावना है जिसे परिभाषित करना असंभव है। या शायद आप इसे एडी की तरह सरल शब्दों में कह सकते हैं कि इसका मतलब है अपने वर्तमान जीवन और अपने इच्छित जीवन के बीच सामंजस्य स्थापित करना (अक्सर, मुझे लगता है, इसका अर्थ उल्टा होता है)। बहरहाल, मैं मानती हूँ कि मैं अपने आदर्श मानकों पर खरी उतरने के लिए उतनी मजबूत, उतनी अमीर या उतनी आत्मनिर्भर नहीं हूँ। आप पूछेंगे, वे आदर्श मानक क्या हैं? बहुत खूब। मेरी नज़र में इस वर्तमान स्थिति से बचने का एकमात्र रास्ता (क्या मैं फ्रायडियन लग रही हूँ?) यही है कि मैं अपने भावी जीवनसाथी और उन सभी पुरुषों से अलग, एक स्वतंत्र और अक्षुण्ण जीवन जीऊँ जिनके साथ मैं रह सकती हूँ। मैं न केवल ईर्ष्यालु हूँ, बल्कि अभिमानी और घमंडी भी हूँ। मैं अपने पति द्वारा अपने जीवन पर नियंत्रण रखने, उसकी गतिविधियों के दायरे में सिमटने और उसके कारनामों की कहानियों से परोक्ष रूप से पोषित होने को स्वीकार नहीं करूँगी। मुझे उससे अलग, अपना एक वैध क्षेत्र चाहिए, जिसका उसे सम्मान करना ही होगा।
तो मेरे सामने एक-दो विकल्प हैं! क्या मैं लिख सकती हूँ? क्या पर्याप्त अभ्यास करने पर मैं लिख पाऊँगी? मुझे यह जानने से पहले कि मैं लिखने में कितनी अच्छी हूँ, लेखन के लिए कितना त्याग करना चाहिए? सबसे बढ़कर, क्या एक स्वार्थी, आत्ममुग्ध, ईर्ष्यालु और कल्पनाहीन महिला कुछ सार्थक लिख सकती है? क्या मुझे दूसरों की सेवा में—सामाजिक या ऐसे ही किसी काम के ज़रिए — अपनी स्वार्थपरता को दबा देना चाहिए? क्या इससे मैं दूसरों और उनकी समस्याओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाऊँगी? क्या तब मैं एक लंबी, अंतर्मुखी किशोरी के अलावा अन्य प्राणियों के बारे में ईमानदारी से लिख पाऊँगी? मुझे विभिन्न प्रकार के जीवन

से जुड़ना होगा, तभी मैं अपने आर्थिक स्तर और वर्ग की दिनचर्या में डूब जाऊँगी। मैं अपने परिचितों का दायरा अपने साथी के पेशे तक सीमित नहीं रखूँगी। फिर भी मुझे लगता है कि अगर मुझे कोई रास्ता नहीं मिला तो ऐसा ही होगा।
पिछले कुछ वर्षों में, मैंने स्वयं का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला है कि मुझे किसी के साथ भावुक शारीरिक संबंध बनाना चाहिए—या फिर अपने भीतर की तीव्र यौन इच्छा को संयमी उपायों से नियंत्रित करना चाहिए। मैंने पहला विकल्प चुना। मैंने यह भी स्वीकार किया कि मैं अपने परिवार और समाज (वैसे भी, समाज को धिक्कार है) के प्रति एक प्रकार से बाध्य हूँ कि कुछ बेतुके और पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करूँ—वे कहते हैं कि यह मेरी अपनी सुरक्षा के लिए है। इसलिए मुझे अपने जीवन का अधिकांश भाग विपरीत लिंग के एक ही व्यक्ति के साथ बिताना चाहिए… यह एक आवश्यकता है क्योंकि:
(1) मैं पशुवत शारीरिक संबंध को जीवन के हिस्से के रूप में चुनता हूँ।
(2) मैं व्यभिचारी रूप से खुद को संतुष्ट नहीं कर सकती और समाज का सम्मान और समर्थन बनाए रख सकती हूँ (जो मेरा पालतू शैतान है) — और क्योंकि मैं एक महिला हूँ: इसलिए: पुरुष स्वतंत्रता के लिए ईर्ष्या का एक मूल कारण।
(3) स्त्री होने के नाते, मुझे चतुराई से काम लेना होगा और बढ़ती उम्र के लिए पर्याप्त सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी, क्योंकि उस उम्र में मुझे नया साथी मिलने की संभावना बहुत कम होगी। इसलिए, मैंने निश्चय किया है कि मैं प्रथागत प्रक्रिया यानी विवाह के माध्यम से ही अपना साथी प्राप्त करूंगी।

इससे अनगिनत समस्याएं खड़ी हो जाती हैं। चूंकि अब मैं शादी करने लायक समझदार हो गई हूं, इसलिए मुझे बहुत सावधान रहना होगा। मुझे आत्म-प्रेम, ईर्ष्या और अहंकार के उपरोक्त दागों से यथासंभव बुद्धिमानी से लड़ना होगा। (नहीं, मैं खुद को धोखा नहीं दे सकती।)
मैं अपने अंदर के आत्मप्रेम को बाइबल के इस सिद्धांत के अनुसार छिपा या पुनर्जीवित कर सकती हूँ कि "स्वयं को खोकर स्वयं को पा लेना चाहिए।" उदाहरण के लिए, मैं अपनी नाक बंद करके, आँखें बांधकर, किसी पुरुष के अंतर्मन के जल में अंधाधुंध छलांग लगा सकती हूँ, और तब तक डूबती रहूँगी जब तक कि उसका उद्देश्य मेरा उद्देश्य, उसका जीवन, मेरा जीवन, और इसी तरह चलता न रह जाए। एक दिन मैं पूरी तरह डूबी हुई, सतह पर तैरती हुई आऊँगी, और अपने इस नए निस्वार्थ स्वरूप से अत्यंत प्रसन्न होऊँगी। या मैं स्वयं को किसी उद्देश्य के लिए समर्पित कर सकती हूँ। (मुझे लगता है कि इसीलिए इतने सारे महिला क्लब और संगठन हैं। उन्हें किसी न किसी तरह से मुक्त और आत्म-महत्वपूर्ण महसूस करना होता है। भगवान न करे कि मैं एक धर्मयुद्ध करने वाली बन जाऊं। लेकिन शायद मैं खुद को आश्चर्यचकित कर दूं, और दूसरी ल्यूक्रेटिया मोट या उनके जैसी कोई बन जाऊं।) खैर, स्वार्थ से छुटकारा पाने के दो अस्थायी उपाय हैं—दोनों में ही उस पतली, नाजुक, छोटी पहचान को धैर्यपूर्वक त्यागना शामिल है जिसे मैं बहुत प्यार करती हूं और संजोती हूं—और यह विश्वास रखना कि, एक बार दूसरी तरफ पहुँचने के बाद, मैं अपने अहंकारी स्व के लिए अपनी छोटी-छोटी महत्वाकांक्षाओं को कभी याद नहीं करूंगी, बल्कि अपने साथी, या किसी समाज, या किसी उद्देश्य की महत्वाकांक्षाओं की सेवा करने में संतुष्ट रहूंगी। (लेकिन मैं इनमें से कोई भी समाधान

स्वीकार नहीं करूँगा, मैं स्वीकार नहीं कर सकता। क्यों? हठी स्वार्थी अभिमान। मैं उस अपरिहार्य चीज़ को अपने लिए आसान नहीं बनाऊँगा जो अज्ञानता में आनंद है, यानी "खोना और पाना" के अंधा कर देने वाले सिद्धांत से। बिलकुल नहीं! मैं आँखें खोलकर अपनी यातना में जाऊँगा, और पूरी तरह सचेत रहूँगा, बिना पलक झपकाए, जब तक वे मेरे प्रिय घातक अंगों को काटते, सिलते और अलग नहीं कर देते।)
आत्म-प्रेम की तो बात ही छोड़िए: मैं इसे अपने साथ एक प्रिय कैंसरग्रस्त रिश्तेदार की तरह ढोती हूँ—जिसे केवल हताशा हावी होने पर ही त्यागा जाता है।
अब ईर्ष्या की बात करते हैं। मैं इससे आसानी से बच सकती हूँ: किसी ऐसे क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल करके जिसमें मेरा साथी सक्रिय रूप से भाग नहीं ले सकता, बल्कि केवल पीछे खड़े होकर प्रशंसा कर सकता है। यहीं लेखन का महत्व है। यह मेरे अहंकारी विवेक के अस्तित्व के लिए उतना ही आवश्यक है जितना मेरे शरीर के लिए रोटी। मैं शिक्षित, स्वतंत्र महिला होने का दंड भुगतती हूँ: मैं आलोचनात्मक, विशिष्ट, अभिजात्य रुचियों वाली हूँ: शायद लिखने की मेरी इच्छा को प्रशंसा और सम्मान की कमी के बुनियादी डर के रूप में सरलीकृत किया जा सकता है। अचानक, मैं सोचती हूँ: क्या मुझे डर है कि विवाह का मोहक प्रभाव लिखने की इच्छा को मार देगा? बिल्कुल—पिछले पन्नों में मैंने इस डर को बार-बार दोहराया है। अब मुझे समझ में आने लगा है कि क्यों! मुझे डर है कि विवाह का शारीरिक मोहक प्रभाव मेरे साथी के दायरे से बाहर काम करने की मेरी इच्छा को निष्क्रिय सुस्ती में डाल देगा—मुझे "उसमें खो जाने" पर मजबूर कर देगा, जैसा कि मैंने पहले कहा था, और

इस प्रकार लिखने की आवश्यकता खो जाएगी जैसे मैं भागने की आवश्यकता खो देती हूँ। बहुत सरल।
अगर मेरा सारा लेखन (जो कभी, मुझे लगता है, एक अधूरी संवेदनशीलता की अभिव्यक्ति थी—अलोकप्रियता के खिलाफ एक प्रतिक्रिया थी) इतना क्षणभंगुर है, तो यह कितनी डरावनी बात है!
चलिए, अब गर्व करते हैं। गर्व, आत्मप्रेम और ईर्ष्या से मिश्रित है। मुझे लगता है कि ये सब मेरे भीतर के एक ही अव्यक्त केंद्र में निहित हैं। मैं गर्व के भोजन से अपना पोषण करता हूँ। मैं शारीरिक सुंदरता को संवारता हूँ—यह गर्व का ही गुण है। मैं उत्कृष्टता प्राप्त करने की लालसा रखता हूँ—किसी एक क्षेत्र में, किसी एक भाग में, चाहे वह कितना भी छोटा क्यों न हो, विशेषज्ञता हासिल करने की, बस इतना चाहता हूँ कि मैं वहाँ विशेषज्ञ बन सकूँ। गर्व, महत्वाकांक्षा—कितने तुच्छ और स्वार्थी शब्द हैं!
अब फिर से वर्तमान पर आते हैं—जीवन साथी चुनने की समस्या। सबसे अच्छा क्या है? चुनाव डरावना है। मुझे नहीं पता: यही तो मैं चाहती हूँ। मैं जिन बेचारे लोगों से मिलती हूँ, उनके बारे में बस इतना ही कह सकती हूँ, "यह तो मैं नहीं चाहती।" अगर मैं पुरुष होती, तो कौन सा पेशा चुनती? क्या यह कोई मापदंड है? यह चुनना कि अगर मैं पुरुष होती, तो मैं कैसी होती? बहुत जोखिम भरा है। पेशा? शिक्षक का पेशा सबसे करीब लगता है—इतना आरामदेह कि मुझे पागल न कर दे, और बुद्धिमान भी—अरे, मुझे नहीं पता! मैं अलग-अलग जीवन क्यों नहीं जी सकती, जैसे कपड़े, यह देखने के लिए कि कौन सा सबसे अच्छा लगता है और सबसे शोभा देता है?
सच तो यह है कि मेरे पास योग्य लोगों से मिलने के लिए ज़्यादा से ज़्यादा तीन साल हैं। कुछ ही लोग मेरे अब तक के परिचित व्यक्ति

के इतने करीब आते हैं। मैं किसी निश्चित सफलता पर नहीं, बल्कि अप्रत्याशित सफलता पर दांव लगा रहा हूँ। फिर भी, इस निश्चित सफलता को लेकर मैं बहुत परेशान हूँ। मैं इस बात को लेकर ग्रस्त हूँ कि या तो यही होगा या कुछ नहीं, और अगर मैं इसे नहीं लेता, तो कुछ नहीं होगा, लेकिन अगर मैं इसे लेता हूँ, तो मैं एक बहुत ही सख्त दिनचर्या में बंध जाऊँगा, जिसकी कठोरता मुझे पसंद नहीं है। क्यों नहीं? आह, मैं आपको उन कुछ बातों के बारे में बताता हूँ जो मेरे भीतर पनपेंगी और भविष्य में खतरनाक रूप से बढ़ जाएँगी:
(1) वह आकर्षक महिलाओं की ओर आकर्षित होता है—भले ही वह जीवनसाथी की तलाश में न हो: जीवन भर मैं अन्य आकर्षक महिलाओं के प्रति शारीरिक, अतः पशुवत ईर्ष्या से ग्रस्त रहूंगी—हमेशा इस बात से डरी रहूंगी कि मुझसे छोटी, मुझसे बेहतर स्तनों, पैरों या बालों वाली कोई लड़की उसकी वासना या प्रेम का पात्र न बन जाए— और मैं हमेशा इस बात से दुखी रहूंगी कि मुझे उसकी अपेक्षाओं पर खरा उतरना होगा, अन्यथा कोई और उतर जाएगी। घर में बंद एक महिला को आकर्षक पुरुषों के साथ अपने अहंकार को संतुष्ट करने का अवसर नहीं मिलता।
(2) वह पत्नी को एक भौतिक संपत्ति मानता है, जिस पर उसे गर्व होता है, जैसे "एक नई कार"। वाह! वह घमंडी और अभिमानी भी है। पहली गलती! वह चाहता है कि दूसरे लोग उसकी इस कीमती संपत्ति के प्रति सचेत रहें। क्या? आप कहेंगे, "यह तो सामान्य बात है"? शायद यह सामान्य ही हो, लेकिन मुझे इसमें छिपी इस भावना से आपत्ति है— किस बात की? भौतिकवादी रवैये की। ठीक है, तो मैं आध्यात्मिकता में विश्वास नहीं करता। मैं लोगों को "अपना बनाने" में भी विश्वास नहीं करता—जैसे कोई अच्छी वेश्या या पालतू चिड़िया।

(3) वह चाहता है कि उसकी मृत्यु के बाद, एक समुदाय उसे याद रखे— उस जीवन के लिए उसकी प्रशंसा करे जिसे उसने बचाया, जिसे उसने दिया। निस्संदेह इसीलिए वह एक छोटे शहर में सामान्य चिकित्सक बनना चाहता है—वह गर्व से और उचित रूप से खुद को मनुष्यों के एक बड़े समूह के जीवन, मृत्यु और सुख का संरक्षक मान सकता है। (पेरी एक सर्जन होता—इसलिए, मैं डिक को भी सर्जन बनाना चाहता हूँ। मैं पेरी जैसा हूँ। डिक मिलनसार है; वह सामूहिक जीवन से प्रेम करता है। पेरी एकाकी है; वह जीवन को एकवचन में प्रेम करता है, बहुवचन में नहीं।) मैं उसे किसी विशेष क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए कहता। जब वह ग्रामीण चिकित्सक बनना चाहता है तो वह निस्वार्थ नहीं है—वह अहंकारी है, आत्मसम्मान और महत्व की लालसा से भरा हुआ है। उस वातावरण में ढलने के लिए उसे निश्चित रूप से एक पत्नी की आवश्यकता होगी (भले ही केवल शारीरिक और मानसिक संतुष्टि के लिए, खाना पकाने और बच्चों की परवरिश के लिए—ये सभी विशुद्ध रूप से व्यावहारिक आवश्यकताएँ हैं, सिवाय मानसिक आवश्यकता के, जो अभी भी व्यावहारिक है क्योंकि इसमें फिर से गर्व शामिल है… और उसकी संतुष्टि)। मैं छोटे शहर में रहने में कितना अच्छा होता? मैं स्कूल में लोकप्रिय साबित नहीं हुआ हूँ। मेरे दोस्त बहुत कम हैं। भला मैं भला शहर में रहने वाले, बहिर्मुखी स्वभाव के देहाती डॉक्टर की पत्नी कैसे बन सकती हूँ! भगवान जाने। मैं तो नहीं बन सकती। उन्हें एक अच्छी, स्थिर और गृहस्थ महिला चाहिए—जिसमें थोड़ी कम उग्रता हो, और अपने पति के प्रति थोड़ी अधिक व्यावहारिक निष्ठा हो…
… सबसे दुखद बात यह स्वीकार करना है कि मैं प्रेम में नहीं हूँ। मैं प्रेम तभी कर सकती हूँ (क्या इसका अर्थ आत्म-त्याग है—या आत्म-पूर्ति? या दोनों?) जब मैं स्वयं से प्रेम और अपनी

महत्वाकांक्षाओं का त्याग कर दूँ। क्यों, क्यों, क्यों मैं स्वयं और किसी दूसरे के लिए महत्वाकांक्षा को एक साथ नहीं रख सकती? मुझे लगता है कि मैं ऐसा कर सकती हूँ, यदि मैं ऐसे जीवनसाथी का चुनाव करूँ जिसका करियर शहर और सामाजिक जिम्मेदारियों के मामले में पत्नी से कम अपेक्षा रखता हो। लेकिन हे भगवान, कौन कह सकता है? हे भगवान, जिनका मैं बिना विश्वास के आह्वान करती हूँ, केवल मैं ही चुन सकती हूँ, और केवल मैं ही जिम्मेदार हूँ। (अरे, नास्तिकता की भयावहता!) …
साइनस का दौरा लगभग हमेशा ही प्लाथ को अवसाद में धकेल देता था— या शायद मामला उल्टा था।
बुधवार, 17 अक्टूबर, शाम 7:30 बजे। पता नहीं मैं इतनी उदास क्यों हूँ, पर मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई मुझसे प्यार नहीं करता। मैं डेढ़ दिन से यहाँ अस्पताल में हूँ, और सच में मेरा सिर पहले से काफी ठीक है, उतना भारी नहीं है। लेकिन फिर भी मुझे बहुत कमजोरी महसूस हो रही है, खासकर उठते समय, शायद उन गोलियों की वजह से जो उन्होंने मुझे दी हैं। कल मेरी पहली लिखित परीक्षा है, जिसकी तैयारी मैंने बेवकूफी से पुरानी न्यू यॉर्कर पत्रिकाएँ पढ़कर टाल दी है। साथ ही, मैडमोजेल पत्रिका की किसी महिला से मेरा लंच का प्लान है, जो कॉलेज बोर्ड प्रतियोगिता में भाग लेने की इच्छुक हजारों लड़कियों से मिल रही है। मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या पहनूँ। मेरे सारे कपड़े भूरे, नेवी ब्लू या मखमली हैं। कोई मैचिंग एक्सेसरीज भी नहीं हैं। धिक्कार है, मैंने कैसे बेमेल चीजों पर एक-एक पैसा बर्बाद कर दिया है। मैं देश की सबसे मशहूर फैशन पत्रिका की आलोचना करने की उम्मीद कैसे कर सकती हूँ, जब मैं खुद ठीक से कपड़े पहनना ही नहीं जानती? ऊपर से, मैंने अभी-अभी माँ से फोन पर बात की और उन्हें, डिक को, खुद को नाराज़

कर दिया। शुक्रवार को किसी शानदार वीकेंड के लिए निकलने के बजाय... मैं सुस्त पड़ी हूँ। यहाँ तक कि मैं सच में बीमार भी नहीं हूँ, जो मैं बर्दाश्त कर सकती थी। नहीं। अगर मैं चाहती तो घर जा सकती थी। लेकिन इससे मेरी सेहत और मेरी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ेगा। अभी तो मैं कांप रही हूँ। मुझे दो हफ़्ते का पिछला काम पूरा करना है। समझदारी के हिसाब से तो यही सबसे अच्छा है कि शनिवार रात को जल्दी सो जाऊँ और पूरे वीकेंड काम करूँ। लेकिन यार, मैं बार-बार डिक के साथ अपने काले मखमली गाउन में नाचने और उसके दिलचस्प दोस्तों से मिलने के बारे में सोच रही हूँ... खैर छोड़ो। हिम्मत जुटाओ। अपने शरीर को मज़बूत बनाओ और अगली पार्टी, अगले लड़के, अगले वीकेंड के लिए नई ऊर्जा के साथ तैयार हो जाओ। अभी तो मैं इतनी ठीक हूँ कि सच में बीमार होने और लाड़- प्यार पाने का मन ही नहीं करता, इतनी सुस्त हूँ कि जागना भी बेकार लगता है। साइनसाइटिस मुझे भयानक अवसाद में धकेल देता है। लेकिन कम से कम जितना नीचे मैं जाता हूँ, उतनी ही जल्दी मैं सबसे निचले स्तर पर पहुँच जाऊँगा और फिर से ऊपर उठने की कोशिश शुरू कर दूँगा।
मई, 1952… मैं वो लड़की नहीं हूँ जो एक साल पहले थी। समय का शुक्रिया। नहीं, अब मैं स्मिथ कॉलेज में द्वितीय वर्ष की छात्रा हूँ, और यहीं सारा बदलाव है। सारा? हाँ, इसका मतलब यही है: मानसिक रूप से मैं पहले की तरह ही सक्रिय हूँ, शायद ज़्यादा यथार्थवादी। (अरे, "यथार्थवादी" से आपका क्या मतलब है?) खैर, मैं अपनी सीमाओं के प्रति रचनात्मक रूप से ज़्यादा जागरूक हूँ। मैं अब भी खुद को आगे और ऊपर की ओर धकेलती रहूँगी (इस घूमती दुनिया में, कौन जानता है कि ऊपर कौन सा है?) फुलब्राइट छात्रवृत्ति, पुरस्कार, यूरोप, प्रकाशन, पुरुषों की ओर। मूर्त, हाँ, एक तरह से,

क्योंकि ये सब मेरे शारीरिक अनुभव में बुने हुए हैं—जाना, देखना, करना, सोचना, महसूस करना, इच्छा करना। आँखों से, दिमाग से, आंतों से, योनि से। पिछले साल की निष्क्रिय (कॉलेज के लिहाज़ से), डरपोक, अंतर्मुखी स्वभाव वाली लड़की से मैं पूरी तरह बदल गई हूँ। मैंने प्रसिद्धि के लिए नौकरी की तलाश न करके अपनी ईमानदारी बनाए रखी है, फिर भी मैंने अपनी ऊर्जा उन क्षेत्रों में लगाई है जो सार्वजनिक होने के साथ-साथ मेरी कई रचनात्मक इच्छाओं और जरूरतों को भी पूरा करते हैं। उदाहरण के लिए, इस वसंत में मुझे ऑनर बोर्ड का सचिव चुना गया—मुझे गुलाब और फूल भेजे गए। और मैं क्या करती हूँ? मैं शिक्षकों के एक प्रेरणादायक समूह के साथ काम करती हूँ। डीन रैंडल, आदि। मैं अकादमिक उल्लंघनों के बारे में अंदरूनी बातें सीखती हूँ—और साथ ही चरित्र चित्रण के लिए सामग्री भी प्राप्त करती हूँ। फिर, मैं प्रेस बोर्ड पर स्प्रिंगफील्ड डेली न्यूज की संवाददाता हूँ—जिससे न केवल मुझे लगभग 10 डॉलर प्रति माह मिलते हैं, बल्कि मुझे टाइपराइटर की कुंजियों की खड़खड़ाहट का एक अनोखा रोमांच भी मिलता है, दैनिक नॉर्थम्प्टन कॉलम में कुछ इंचों में अपने लेख छपते देखने का, और इस महान कॉलेज रूपी गतिशील मशीन में चल रही हर चीज के बारे में जानने का। साथ ही, मैं अगले साल स्मिथ रिव्यू में शामिल होने जा रही हूँ, और आशा करती हूँ कि मैं इसे इस वर्ष की मंदी से बाहर निकाल सकूँगी। ये सभी कार्य समय का सदुपयोग हैं। और अगले साल, अगले साल मैं अंग्रेजी में ऑनर्स करूंगी—रचनात्मक लेखन पर ध्यान केंद्रित करते हुए। आखिरकार मैं छोटी कक्षाओं में पढ़ूंगी, स्वतंत्र शोध करूंगी, और अपने शिक्षकों से अच्छी तरह परिचित हो जाऊंगी! इस गर्मी में— बेलमोंट होटल में सातों दिन वेट्रेस का काम करने का मेरा पूरा

प्रयास रहेगा। हजारों लोग आवेदन करते हैं, और उनमें से—मेरा चयन हुआ है! साथ ही, चाहे मैं इस प्रयास में कितनी भी मेहनत करूं, मैं भौतिक विज्ञान की अपनी अनिवार्य परीक्षा स्वयं ही पास कर लूंगी (अगले साल मैं इसे कभी नहीं लूंगी!)। और गर्मी की छुट्टियों से पहले, मैं अपनी प्यारी गणितज्ञ एलिसन के साथ न्यूयॉर्क में कुछ दिन बिताऊंगी।
सब कुछ लाभदायक हो जाता है। शिक्षा सबसे संतोषजनक और सुलभ है। मैं स्मिथ विश्वविद्यालय में हूँ! जो दो साल पहले एक अनिश्चित सपना था—और सपने के वास्तविकता में बदलने के उस सुखद संयोग ने मुझे और अधिक पाने की इच्छा जगाई है, और मुझे आगे, आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया है। मैंने न्यूयॉर्क का सपना देखा था, मैं वहाँ जा रहा हूँ। मैं यूरोप का सपना देखता हूँ—शायद… शायद। अब आता है शारीरिक पहलू—और यहीं समस्या है। मानव जाति कामुकता की शिकार है। जानवर, सौभाग्यशाली निम्न प्राणी, कामुकता की अवस्था में आते हैं। फिर उनका काम पूरा हो जाता है, जबकि हम बेचारे कामुक मनुष्य, रीति-रिवाजों के पिंजरे में जकड़े हुए, परिस्थितियों की बेड़ियों में जकड़े हुए, उस भयानक और कष्टदायक आग से तड़पते और व्याकुल होते रहते हैं जो हमेशा हमारे शरीर को सुलगती रहती है।
मुझे एक ठंडी नदी का किनारा और मई की वो रात याद है, जब दूर बादलों में बारिश छाई हुई थी, चाँद की चिंगारियाँ पानी पर चमक रही थीं, और हरी-भरी वनस्पतियों की घनी, नम, भारी नमी थी। पानी मेरे नंगे पैरों को ठंडा लग रहा था, और कीचड़ मेरी उंगलियों के बीच से रिस रहा था। फिर वो रेत पर दौड़ा, और मैं उसके पीछे दौड़ी, मेरे लंबे और गीले बाल मेरे मुँह पर उड़ रहे थे। मैं अपने बीच अपरिहार्य चुंबकीय ध्रुवीय शक्तियों को महसूस कर सकती थी, और

ज्वारीय रक्त मेरे कानों में ज़ोर से, गर्जना करते हुए, धीमा और लयबद्ध होकर धड़क रहा था। फिर वो रुका, मैं उसके पीछे, उसकी मज़बूत पसलियों के चारों ओर बाहों से जकड़ी हुई, उंगलियाँ उसे सहला रही थीं। उसके साथ लेटना, उसके साथ लेटना, उस स्वादिष्ट पशुवत आग में विस्मृति की आग में जलना। पहले सीधे खड़े होकर, जांघें आपस में रगड़ी हुई, मुँह से मुँह, छाती से छाती कांपते हुए, टांगें एक-दूसरे में उलझी हुई, फिर पूरी लंबाई में लेटना, शरीर के भारी वजन के साथ, झुकते हुए, लहराते हुए, अंधा, एक साथ बढ़ते हुए, बल बल से लड़ रहा था: मारना? विस्मृति के जलते अंधेरे में धकेलना? पहचान खोना? यह पूरी तरह से प्रेम नहीं है। बल्कि कुछ और ही है। एक परिष्कृत सुखवाद। सुखवाद: क्योंकि शारीरिक संतुष्टि की अंधी खोज में चूसना, मुंह से छूना, उंगलियों से सहलाना शामिल है। परिष्कृत: क्योंकि बदले में दूसरे को उत्तेजित करने की इच्छा होती है, केवल स्वयं के लिए ही नहीं, बल्कि ज्यादातर स्वयं के लिए ही। मुंह पर होने वाले झगड़ों का आसान अंत: मुंह का गर्मजोशी भरा मिलन, जीभ कांपती, चाटती, स्वाद लेती। गुस्से से भरे, नफरत भरे दांतों, नाखूनों और आवाज से किए जाने वाले बुरे वार का आसान विकल्प: स्तनों के नीचे उठते हाथों की अजीब संगीतमय लय, गले, कंधों, घुटनों, जांघों को सहलाना। और आपसी अनिवार्य विनाश के संक्षारक काले भंवर में डूब जाना। एक बार पहला चुंबन हो जाए, तो चक्र अपरिहार्य हो जाता है। प्रशिक्षण, कंडीशनिंग स्तनों में भूख की आग जलाते हैं और योनि में तरल पदार्थ स्रावित करते हैं, अंधाधुंध विनाश की ओर ले जाते हैं। यह विनाश के सिवा और क्या है? कामुक विनाश तक पहुंचने की कोई रहस्यमयी इच्छा—दूसरे की पहचान पर अपनी पहचान मिटा देना— पहचानों का मिश्रण और क्षत-विक्षत होना? एक की मृत्यु? या दोनों

की? भक्षण और अधीनता? नहीं, नहीं। बल्कि ध्रुवीकरण—दो अखंडताओं का संतुलन, विद्युत रूप से एक दूसरे को आवेशित करते हुए, फिर भी शीतलता के केंद्रों के साथ, तारों की तरह।
(डी. एच. लॉरेंस की बात में कुछ सच्चाई तो थी ही।) और यही बात है: जब मुझसे पूछा जाता है कि मैं कौन सी भूमिका निभाना चाहती हूँ, तो मैं कहती हूँ, “भूमिका से आपका क्या मतलब है? शादी के बाद मैं कोई नई भूमिका नहीं निभाना चाहती—बल्कि एक बुद्धिमान, परिपक्व इंसान के रूप में जीना जारी रखना चाहती हूँ, हमेशा की तरह आगे बढ़ना और सीखना चाहती हूँ। जीवन की आदतों में कोई बदलाव नहीं, कोई आमूल-चूल परिवर्तन नहीं।” कभी भी ऐसा कोई दायरा नहीं होगा जो मुझे और मेरे कार्यों को केवल घर, अन्य महिलाओं और सामुदायिक सेवा तक सीमित रखे, मेरे जीवनसाथी के व्यापक सांसारिक दायरे में सिमटा हुआ, जो दुनिया से अपने संपर्क के परिधि से केवल अप्रत्यक्ष अनुभवों की कहानियाँ मेरे लिए लाता है, जैसे: नहीं, बल्कि, दो अतिव्यापी वृत्त होंगे, जिनके बीच एक मजबूत, जुड़ा हुआ साझा आधार होगा, लेकिन दोनों के अलग-अलग चाप दुनिया में बाहर की ओर निकले होंगे। एक संतुलित तनाव, परिस्थितियों के अनुकूल, जिसमें खिंचाव और तनाव का लचीलापन है, फिर भी दृढ़ एकता है। दो ध्रुवीकृत तारे: जैसे। ऐसे क्षणों में जब संवाद पूर्ण हो जाता है, लगभग ऐसा लगता है जैसे कोई एक हो गया हो। लेकिन यह विलय एक अवांछनीय असंभवता है—और बिल्कुल भी टिकाऊ नहीं है। इसलिए इसका कोई भ्रम नहीं होगा।
तो [डिक] मुझ पर "वर्चस्व के लिए संघर्ष" करने का आरोप लगाता है? माफ़ कीजिए, यह गलत बात है। हाँ, मुझे थोड़ा डर लगता है किसी के अधीन होने से। (किसे नहीं लगता? सिर्फ़ विनम्र, शांत और दब्बू किस्म के लोगों को, और वो ऐसा नहीं है, न ही मैं।) लेकिन इसका

मतलब यह नहीं है कि मैं स्वाभाविक रूप से वर्चस्व चाहती हूँ। नहीं, यह कोई सीधा-सादा विकल्प नहीं है जैसे: "या तो मैं विजयी होऊँगी या तुम।" मैं तो सिर्फ़ संतुलन चाहती हूँ। मैं नहीं चाहती कि एक व्यक्ति की इच्छाओं और हितों को लगातार दूसरे की उन्नति के लिए दबा दिया जाए! यह तो घोर अन्याय होगा।
चलिए, उसके सवाल की तह तक पहुँचते हैं: वह मेरे मजबूत और आत्मविश्वासी होने से इतना क्यों डरता है? उसे अपनी योजनाओं और कार्यों व घटनाओं को निर्देशित करने में इतना आक्रामक और सकारात्मक होना क्यों जरूरी लगता है? क्या इसका कारण उसका "मदर कॉम्प्लेक्स" हो सकता है? आखिर उसकी अपनी माँ के साथ क्या रिश्ता है? वह घर की मुखिया बन चुकी है—एक प्यारी, सौम्य मुखिया, बेशक, लेकिन फिर भी, एक "माँ" (फिलिप वाइली, जेनरेशन ऑफ वाइपर्स देखें)। वह वित्त की शासक, घर की प्रबंधक, अपने पति की "माँ" बन चुकी है, जो मेरी अनुभवहीन नज़र में भी, एक छोटे, बचकाने, गैर-जिम्मेदार लड़के के कई लक्षण दिखाता है—जो रूठ सकता है, सेवा, ध्यान, प्रोत्साहन के लिए गिड़गिड़ा सकता है और उसे पा भी सकता है। (सुंदर, थोड़ा घमंडी, लेकिन फिर भी अक्सर एक स्कूली बच्चे की तरह।) वास्तविकता का सामना करने की जिम्मेदारी उसी पर है। ऐसा नहीं है कि यह रिश्ता भी इतना सीधा-सादा है, बल्कि इसमें कुछ ऐसे तत्व हैं जो मेरे तर्क को स्पष्ट करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। इसलिए, मैं उन पर ज़ोर देता हूँ। उनका अपने बेटों पर गहरा प्रभाव रहा है। जिस बेटे की मैं बात कर रहा हूँ, वह मानता है कि उसने अपने पिता के दृढ़ और दकियानूसी प्रभाव के खिलाफ विद्रोह किया और एक वेट्रेस, वासर कॉलेज की किसी लड़की या किसी और को बहला-फुसलाकर एक ठोस अलगाव किया। तो क्या उसमें एक तरह का दोहरापन नहीं है—बचपन से जन्मी एक इच्छा, माँ का प्यार

पाने की, एक बच्चे की तरह माँ का दूध पीने की (कामुकता का माँ से प्रेमिका की ओर स्थानांतरण)—और फिर भी स्त्री के सूक्ष्म जाल से बच निकलने और उस कपटी स्त्री प्रभुत्व से मुक्त होने की, जिसे उसने इतने वर्षों से अपने घर में महसूस किया है: अपनी स्वतंत्र, अनासक्त, मर्दाना शक्ति को प्रदर्शित करने की (और अपने करियर को चरम सीमा तक ले जाने की)? वह अपने पिता के विशेष रूप से करीब या प्रशंसक नहीं लगता। क्या वह अवचेतन और सचेतन रूप से एक साथ उस परंपरा को तोड़ने की कोशिश कर रहा है जो उसके पिता के नक्शेकदम पर चलने का संकेत देती है—और अपनी पत्नी पर अपनी खुद की परंपरा थोपकर बिल्कुल विपरीत दिशा में जा रहा है? "मैंने अपना करियर पूरी तरह से तय कर लिया है," वह कुछ हद तक बचाव करते हुए कहता है। ऐसा लगता है। ऐसा लगता है कि वह अपने चारों ओर एक सुरक्षात्मक दीवार बना रहा है ताकि वह उस मातृसत्तात्मक प्रभुत्व से खुद को बचा सके जिससे वह शायद बचने की कोशिश कर रहा है।
तब वह स्वार्थी साबित होगा—यह स्वीकार करते हुए कि उसने कभी किसी से प्रेम नहीं किया। क्यों? क्या वह भी मेरी तरह ही खुद को समर्पित करने, समझौता करने और त्याग करने से डरता है? शायद। वह भी, मेरी ही तरह कुछ हद तक, श्रेष्ठता की भावना से ग्रस्त है... जिससे अक्सर ऐसे तिरस्कारपूर्ण और संरक्षणवादी रवैये उत्पन्न होते हैं जो मुझे बेहद अपमानजनक लगते हैं। इसके अलावा, इस तथ्य के बावजूद कि उसने कला के प्रति मेरी सराहना और लेखन में मेरी रुचि को बढ़ाने के लिए पूरी कोशिश की है—वास्तव में कुछ करने की, न कि केवल सराहना करने की (क्या यह इस बात का संकेत है कि वह मुझसे प्रतिस्पर्धा करना चाहता है और मुझ पर हावी होना चाहता है—क्या यह प्रतीकात्मक है?)—उसने हाल ही में कहा कि कविता

"महत्वहीन धूल के समान है।" इस रवैये के साथ, वह इतना पाखंडी कैसे हो सकता है कि यह दिखावा करे कि उसे कविता पसंद है? यहाँ तक कि कुछ प्रकार की कविताएँ भी? सच्चाई यह है कि लेखन मेरे लिए जीवन का एक तरीका है: और लेखन केवल व्यावहारिक, धन कमाने के दृष्टिकोण से ही नहीं है। यह सच है कि मैं प्रकाशन को मूल्य का प्रतीक और क्षमता की पुष्टि मानता हूँ—लेकिन लेखन के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है, निरंतर अभ्यास की। और अगर प्रकाशन तुरंत साकार नहीं होता, अगर "सफलता" नहीं मिलती, तो क्या वह मुझे मेरे जुनून भरे शौक के प्रति रक्षात्मक रवैया अपनाने पर मजबूर कर देगा? क्या मुझे इसे छोड़ना पड़ेगा, इससे नाता तोड़ना पड़ेगा? निःसंदेह, एक ऐसे चिकित्सक की पत्नी होने के नाते, जैसा कि वह बनना चाहता है, मुझे ऐसा करना ही पड़ेगा। मैं यह नहीं मानती, जैसा कि वह और उसके मित्र मानते हैं, कि कलात्मक रचनात्मकता को वैवाहिक सहयोग के बजाय एकाग्रता में ही सबसे अच्छे से निखारा जा सकता है। मेरा मानना है कि एक सफल संबंध दोनों व्यक्तियों की क्षमताओं को बढ़ाता है। और इसलिए जब वह कहता है, "मुझे डर है कि पत्नी और माँ होने की जिम्मेदारियाँ आपको इतना व्यस्त कर देंगी कि आप अपनी मनचाही पेंटिंग और लेखन नहीं कर पाएंगी..." तो डर और उम्मीद मन में घर कर जाती है। और इसलिए मैं सोचने लगती हूँ, शायद वह सही है। शायद वे सभी डरे हुए और चंचल भावों से भरे पत्र बार-बार मेरे मन में उठने वाले संदेह और पूर्वाभास को ही छू रहे थे। वर्तमान स्थिति यह है कि वह कभी मुझे नकारता है तो कभी स्वीकार करता है, और मैं भी चुपचाप उसे नकारती हूँ। कभी-कभी नकारात्मक भय, घृणा और पीछे हटने की तीव्र, विनाशकारी लहर उठती है: "मैं नहीं कर सकता, मैं नहीं करूँगा।" और फिर लंबी बातचीत होती है, धैर्यपूर्वक, सवाल-जवाब के साथ,

शारीरिक आकर्षण फिर से सुकून देता है, शांत करता है, लोरी सुनाता है। "मैं तुमसे प्यार करता हूँ।" "ऐसा मत कहो। तुम सच में नहीं करते। याद है हमने 'प्यार' शब्द के बारे में क्या कहा था?" "मुझे पता है, लेकिन मैं इस लड़की से प्यार करता हूँ, अभी और यहीं, मैं नहीं जानता कि वह कौन है, लेकिन मैं उससे प्यार करता हूँ।" फिर वही बेचैनी भरी भावना बार-बार लौट आती है: सच में, क्या होगा अगर मैं इसे नकार दूँ और कभी किसी ऐसे व्यक्ति से न मिलूँ जो इतना संतोषजनक हो या (जैसा कि मैं उम्मीद कर रहा हूँ) बेहतर हो? एक पसंदीदा उपमा का प्रयोग करें तो: ऐसा लगता है जैसे हम दोनों, इतने समृद्ध, शक्तिशाली और साथ ही पाचन के लिए खतरनाक सीपियों से सावधान रहते हुए, एक-एक सीप (हमारा भावी साथी) निगलने के लिए सहमत हो जाएँ जो एक धागे (खुद को प्रतिबद्ध करने के बारे में हमारी झिझक) से बंधी हो। फिर, अगर हम दोनों में से किसी एक या दोनों को सीप अपने-अपने पाचन तंत्र के अनुकूल न लगे, तो हम उसे समय रहते निकाल सकते हैं, इससे पहले कि वह पूरी तरह से अपने विनाशकारी प्रभाव (विवाह के साथ) में समा जाए। हाँ, थोड़ी मतली, थोड़ा पछतावा हो सकता है, लेकिन ज़हर, संक्षारक, अंतिम, विनाशकारी प्रभाव को अपना असर दिखाने का मौका ही नहीं मिलेगा। और बस, हम हैं: दो डरे हुए, आकर्षक, बुद्धिमान, खतरनाक, सुखवादी, "चतुर" लोग।
इसलिए खतरे का आकलन करते हुए, मुझे लगता है कि यही संतुलन बनाए रखता है। (शायद वह भी ऐसा ही करेगा।) इसलिए मैं कहती हूँ: “मैं उससे कभी शादी नहीं करूँगी! कभी नहीं, कभी नहीं!” और यहाँ भी संदेह शुरू हो जाते हैं अगर आपको कोई और उतना संपूर्ण, उतना संतोषजनक न मिले। अगर आप अपना बाकी जीवन अपने इस चुनाव पर पछताते हुए बिता दें? यह एक ऐसा चुनाव है जो आपको करना ही होगा।

और जल्द ही। कौन पहले यह साहस दिखाएगा? अगर मुझे कोई ऐसा मिल जाए जिससे मैं प्यार कर सकूँ, तो यह कितना आसान होगा। लेकिन मुझे संदेह है कि मैं दोबारा इतनी भाग्यशाली हो पाऊँगी। क्या मैं अपना रवैया बदल सकती हूँ और खुशी-खुशी उसके जीवन को स्वीकार कर सकती हूँ? हजारों महिलाएं ऐसा करेंगी! यह कुंवारी रहने के डर और यौन इच्छा के प्रबल होने पर निर्भर करेगा। उन्नीस साल की उम्र में ऐसा नहीं होता (हालाँकि बाद वाली इच्छा काफी प्रबल होती है)। तो मैं यहीं हूँ—काश मैं विश्वास के साथ कह पाती: कहीं न कहीं कोई ऐसा पुरुष है जिससे मैं प्यार कर सकती हूँ और बिना किसी डर के, विश्वास के साथ खुद को उसे सौंप सकती हूँ। काश! तब मैं इस खूबसूरत, बुद्धिमान, कामुक इंसान साथी से इतनी बेताबी और अजीब तरह से नहीं चिपकी रहती, जितना मैं चिपकी रहती हूँ। और न ही वह मुझसे। लेकिन इंसानी शरीर, साथ की चाहत—हमें उस सुरक्षा की कितनी ज़रूरत है! “हमें किसी और आत्मा की कितनी ज़रूरत है जिससे हम लिपट सकें। किसी और शरीर की जो हमें गर्माहट दे! आराम करे और भरोसा करे।” मैंने ये बात बॉब के लिए कही थी। मैं अब फिर कह रही हूँ। कितने पुरुष बचे हैं? मुझे और कितने मौके मिलेंगे? मुझे नहीं पता। लेकिन उन्नीस साल की उम्र में मैं जोखिम उठाऊँगी और उम्मीद करूँगी कि मुझे एक-दो और मौके मिलेंगे!
1952 में, स्मिथ विश्वविद्यालय में अपने दूसरे वर्ष की पढ़ाई पूरी करने के बाद, प्लाथ ने गर्मियों में केप कॉड के बेलमोंट होटल में वेट्रेस का काम किया। उन्होंने सामाजिक रूप से खूब आनंद उठाया, लेकिन ज़रूरत से ज़्यादा काम करने के कारण वे फिर से बीमार पड़ गईं, इतनी बीमार कि उन्हें घर लौटकर नौकरी छोड़नी पड़ी - एक ऐसा कदम जिसका उन्हें बाद में पछतावा हुआ।
गरदनी फली

मिल हिल क्लब बड़ा, व्यावसायिक था, जिसमें एक बैंड, डांस फ्लोर और लगातार आक्रामक मनोरंजन चलता रहता था। इसलिए हम एक खुली खिड़की के पास चमड़े के बूथ में अगल-बगल बैठे थे, जहाँ से चीड़ के पेड़ और नींबू जैसे रंग के चाँद की एक झलक दिखाई दे रही थी। हम एक पक्षी जैसे दिखने वाले आदमी को बैंजो बजाते हुए, एक बेहतरीन गायिका को और एक शानदार मिमिक्री कलाकार को सुन रहे थे। गाते, पीते, नाचते, हँसते (मैं उसकी बाहों में, करीब, गर्म, लोगों से टकराती हुई, एक-दूसरे से चिपकी हुई, किसी की एड़ी पिंडली में चुभती हुई, मेरी कोहनी किसी अजनबी की पसलियों में... उसका चेहरा भी रोशनी में अजीब सा लग रहा था, नीचे देख रहा था, हँस रहा था, मेरी आँखों में मुस्कुरा रहा था, होंठ चूमने को तड़प रहे थे, हँसी हमेशा बनी रहती थी, और मुझे पता था कि उसे मेरा जैसा रूप पसंद था, खुशमिजाज, तनी हुई और दमकती हुई...), हमने कई घंटे बिताए। अगले दिन (मैंने सोचा, मूर्खतापूर्ण तरीके से) मैंने दोपहर में टेनिस खेलने का समय तय कर लिया।
पूरी रात, खांसते-खांसते, बुखार से तड़पते हुए, मैं सो नहीं पाई, बस उस संकरे पलंग पर लेटी रही, जिस पर रेत के हल्के-हल्के कण जमे हुए थे जो चादर से पूरी तरह हट नहीं पा रहे थे, और लड़कों के छात्रावास की छत के ऊपर टिमटिमाते तारों के समूह को देखती रही। वे खिड़की पर सूखने के लिए लटके पतले नायलॉन के मोजों के बीच से शांत और चिढ़ाते हुए चमक रहे थे। सारे फायदे-नुकसान, और घिनौने, अस्पष्ट डर और आशंकाएं मेरे उबलते, उग्र मस्तिष्क में उमड़ रही थीं। मेरी बीमारी चरम पर पहुंच गई थी; यह मेरी उम्मीद के मुताबिक कम नहीं हो रही थी, बल्कि लगातार बढ़ती जा रही थी। क्या करूं? किससे मदद मांगूं? कहां जाऊं? आज फिल को क्या बताऊं? और फिर सुबह हुई, और उसके साथ ही एक विचार का जन्म हुआ जो वेलेस्ली

में रहने वाले प्रिंसटन के छात्र को देखकर मेरे अवचेतन मन में पनप रहा था। क्यों न, क्यों न—उसके साथ घर जाऊं और वहीं आराम करूं? शांति और सुकून में!
रविवार की सुबह बेलमोंट ट्रक में डॉक्टर के पास जाने का सफर, मेरे साथ लंबे, पतले, सुनहरे बालों वाले जैक हैरिस थे, जिनकी त्वचा हमेशा गुलाबी और छिलती रहती थी, और साथ में मजाकिया, बड़े- बड़े पैट मुट्री थे, जो सिर्फ एक शब्द या एक नज़र से ही आपको हंसा सकते थे। केप के देहाती रास्तों पर हिचकोले खाते हुए, गर्मी और बेचैनी महसूस करते हुए, आखिरकार डॉक्टर के क्लिनिक पहुंचे… डॉक्टर उछलते-कूदते हुए मेरी नाक और गले में झांकते हुए बोले, “खैर, प्यारी, यह सुनकर तुम्हारा दिल टूट सकता है, लेकिन मुझे लगता है कि तुम्हें कुछ दिनों के लिए घर जाकर आराम करना चाहिए।” अपनी योजना की उनकी रणनीतिक और आधिकारिक पुष्टि से खुश होकर, मैं वापस बेलमोंट ट्रक में गई और अपने छोटे काले सूटकेस में तरह-तरह के कपड़े भर लिए—स्विमसूट, गंदे पजामे, टेनिस शॉर्ट्स, और यहाँ तक कि एक डेट ड्रेस और मोती भी, इस उम्मीद में कि मैं जल्दी ठीक हो जाऊं… और फिल मुझे डेट पर जाने के लिए पूछ ले!
“अह… फिल…” मैंने खिड़की पर झुकते हुए और अंदर फिल और उसके बगल में खड़े सुंदर, दुबले-पतले सुनहरे बालों वाले लड़के को देखते हुए उत्साह से कहा, दोनों ने टेनिस शॉर्ट्स पहने हुए थे। “आह… फिल, घर जाते समय किसी का साथ कैसा रहेगा?”
उसके चेहरे पर एक अजीब सा भाव आता है, और दूसरा लड़का (रॉजर) हंसने लगता है। "क्या हुआ?" फिल पूछता है। "क्या तुम्हें नौकरी से निकाल दिया गया?"

“नहीं। मुझे बस घर जाकर पेनिसिलिन के इंजेक्शन लगवाने हैं।
डॉक्टर ने आदेश दिया है।” यह बात आधिकारिक लगती है।
“हाँ, बिल्कुल,” वह कहता है।
“क्या मैं अब अंदर जा सकता हूँ? मेरे पास सारा सामान है।” तो मैं दौड़कर ऊपर गया और अपना छोटा सा काला सूटकेस और, न जाने क्यों, अपना टेनिस रैकेट ले आया। सौभाग्य से बारिश शुरू हो रही थी। शुक्र है, टेनिस नहीं खेलना पड़ेगा।
मैं दोनों लड़कों के बीच में बैठ गई और हम गाड़ी लेकर निकल पड़े। अचानक सब कुछ बहुत मज़ेदार, बहुत अजीब सा हो गया। हम सब हंस रहे थे, और रॉजर अपने चश्मे के ऊपर से अपनी प्यारी सी नाक को देख रहा था, मेरे बाल खींच रहा था, और कुल मिलाकर एक शरारती बच्चे की तरह बर्ताव कर रहा था।
“हम नेवला पकड़ने जा रहे हैं,” वह कहता है।
“वीज़ल?” मैंने पूछा। मैं डरा हुआ लग रहा था। वह हँस पड़ा। फिर हम एक बड़े सफेद घर के सामने वाली सड़क पर गाड़ी लेकर अंदर गए, जिसमें बहुत सारे खंभे थे। “यहाँ तो बस खंभे ही खंभे हैं,” मैंने उत्साह से कहा। लगता है, यही उस जगह का नाम है: द पिलर्स। और ऐसा भी लगता है कि यहीं पर करोड़पति रहता है। आर्ट क्रेमर का करोड़पति। (बाद में पता चला कि वीज़ल उस करोड़पति का प्रिंसटन से पढ़ा हुआ ड्राइवर है।)
तो आर्ट सूट पहने, अपने प्यारे बंदर जैसे अंदाज़ में मुस्कुराते हुए, कार से टिककर बाहर आता है। दुनिया कितनी छोटी है! फिर वीज़ल बाहर आता है, सुनहरे बालों वाला, नीली आँखों वाला और पूरी आस्तीन वाली शर्ट पहने। बुरा नहीं, लेकिन उसमें भी धूर्तता की झलक साफ दिखती है। वह तोहफे लेकर आया है: बीयर के

डिब्बे। वो भी भरे हुए। वो पिछली सीट पर कूद जाता है और हम चल पड़ते हैं।
इस बार खूब हंसी-मजाक हो रहा है, और रॉज वीज़ल को समझाने की कोशिश कर रहा है कि "ये लड़की अब तक की सबसे शानदार चीज़ है जो मैंने देखी है; ये एक छोटा सा कागज़ का टुकड़ा लहराते हुए आती है, जिस पर किसी डॉक्टर का लिखा है कि उसे घर जाना चाहिए, और ये ऐसे घर जाती है जैसे उसे छुट्टी की ज़रूरत हो!" हम बर्फ़ लेने के लिए रुकते हैं, और एक समुद्र तट पर जाते हैं जहाँ रेत के टीलों के पास एक पार्किंग है, और चुड़ैल घास का नज़ारा दिखता है, और गंदे, भीगे हुए, धूसर-हरे समुद्र पर तेज़ बारिश हो रही है।
ठंडी और कड़वी बीयर मेरे गले को अच्छी लग रही है, और तीनों लड़के, बीयर और उस अजीबोगरीब माहौल की आज़ादी मुझे हमेशा हंसने पर मजबूर कर रही है। तो मैं हंसती हूं, और मेरी लिपस्टिक का लाल धब्बा बीयर के कैन के ऊपर खूनी अर्धचंद्र की तरह लग जाता है। मैं बहुत तरोताज़ा, चमकीली आंखों वाली दिख रही हूं, मेरा रंग भी अच्छा है और मुझे ज़बरदस्त बुखार भी है।
फिर हम बाकी दोनों लड़कों को छोड़कर मूसलाधार बारिश में वेलेस्ली के लिए तीन घंटे की वापसी यात्रा शुरू करते हैं। फिल के साथ रहना आरामदायक है और बात करने के लिए बहुत कुछ है। बस एक ही दिक्कत है कि मेरी आवाज़ खराब होने लगी है। शायद नमी की वजह से, लेकिन आवाज़ की पिच एक सप्तक नीचे चली गई है। इसलिए मैंने दार्शनिक अंदाज़ में फैसला किया कि मैं इसका पूरा फायदा उठाऊं और दिखावा करूं कि मेरी आवाज़ स्वाभाविक रूप से ही बहुत भारी, आकर्षक और धीमी है। मेरी आवाज़ इतनी अच्छी पहले कभी नहीं थी। हम फिल के कुत्ते को साथ ले लेते हैं, एक लाड़ला, बड़ी-बड़ी आँखों वाला काला कॉकर स्पैनियल जो हमारे साथ आगे की सीट पर बैठा

है, बहुत उदास और बहुत प्यार से भरा हुआ लग रहा है। फिल उसे थपथपाता है, और मैं भी। हमारे हाथ मिलते हैं, और वह अनजाने में मेरे हाथ को थपथपाता है। मुझे अचानक लगता है कि शायद मैं भी इस प्यारे कुत्ते को पसंद करने लगूँ।
लगभग तीन हफ़्तों से जिस छोटे से सफ़ेद घर को मैंने नहीं देखा था, उसके सामने गाड़ी रुकते ही मैं उससे उतर गई। अचानक मुझे बहुत थकान और भूख लगने लगी। मैंने फिल को अलविदा कहा, जिसने पूछा कि क्या मैं उस रात बाहर जाना चाहती हूँ। "नहीं, फिल, धन्यवाद।" वह समझ नहीं पाया। मैं बहुत बीमार होने वाली थी। "कल टेनिस?" नहीं, फिर से।
मेरे अंदर आते ही माँ और वॉरेन चौंककर ऊपर देखने लगे। मैंने खुशी से धीमी आवाज़ में कहा, "हैलो! मैं घर घूमने आई हूँ।" माँ मुस्कुराईं और बोलीं, "देखो दादी को! उन्होंने कल रात सपना देखा था कि तुम घर आ रही हो!" (जैसा कि फ्रॉस्ट ने कहा था, घर वह जगह है जहाँ पहुँचने पर लोग तुम्हें स्वीकार करते हैं!)
वेलेस्ली
11 जुलाई, शुक्रवार। पेनिसिलिन के इंजेक्शनों के साथ एक थका देने वाला स्वास्थ्य लाभ का दौर चला, और अब एक सप्ताह से मेरी साँसें काफ़ी अच्छी चल रही हैं। बेलमोंट से एक सुबह जल्दी फ़ोन आया, और माँ ने जवाब दिया। वे यह जानना चाहते थे कि मैं कब वापस आऊँगी ताकि वे इस बीच किसी और लड़की को काम पर रख सकें। (मेरी पर्सनैलिटी का कोई शैतानी हिस्सा पूरे हफ्ते अवचेतन रूप से मुझसे फुसफुसा रहा था: “वापस क्यों जा रही हो? तुम थकी हुई हो, परेशान हो, और काम भी मुश्किल होता जा रहा है—छुट्टी नहीं मिलती, तनख्वाह भी खास अच्छी नहीं है। ऊपर से, तुम्हें पसंद करने वाले भी कुछ ही लोग हैं। गर्मियों में घर पर ही क्यों न रहो

— आराम करो, अपनी साइंस की पढ़ाई पूरी करो, लिखो, फिल [ब्रॉनर, प्रिंसटन का छात्र] के साथ बाहर जाओ, टेनिस खेलो। तुम आराम कर सकती हो। तुम इसकी हकदार हो, क्योंकि तुमने मैडमोजेल कॉलेज फिक्शन प्रतियोगिता में ‘संडे एट द मिंटन्स’ के लिए दो बड़े पुरस्कारों में से एक जीता है, तो एक बार तो छुट्टी ले लो। साइनसाइटिस कितना बढ़िया बहाना है।”) तो शैतान मेरे गले में घुस गया और मैंने माँ को उकसाना शुरू कर दिया—“कह दो कि आपको नहीं पता कि मैं कब ठीक हो जाऊँगी… कि मैं अभी भी दुखी हूँ… कि मुझे वहाँ बहुत अच्छा लगा, लेकिन शायद किसी और को रखना ज़्यादा सुविधाजनक होगा।” तो माँ ने ऐसा ही कहा, और उन्होंने कहा कि उन्हें अफ़सोस है, क्योंकि मुझे सब पसंद करते थे, लेकिन वे किसी और को रख लेंगे। हमने एक-दूसरे को संदेह भरी जीत के भाव से देखा। चौबीस घंटे बाद मुझे पॉली और पैट एम. का पत्र मिला (उन्होंने बताया कि वे मुझे कितना याद कर रही थीं), आर्ट क्रेमर का पत्र मिला (उन्होंने बताया कि उस दिन मुझे देखकर उन्हें मुझसे मिलने का मन हुआ और उन्होंने मुझे डेट पर जाने के लिए पूछ लिया), और अल्फ्रेड ए. नॉफ पब्लिशर्स के एडिटर-इन-चीफ का पत्र मिला (उन्होंने बताया कि उन्हें मेरी कहानी "संडे एट द मिंटन्स" के एडवांस प्रूफ बहुत पसंद आए, जो एमएलएलई में प्रकाशित हो रही है, और वे भविष्य में कभी मेरा उपन्यास प्रकाशित करना चाहेंगे)। वह छोटा सा पैकेट ही काफी था: मुझे फिर से जीने की प्रेरणा देने के लिए बस यही चाहिए था। उस थोड़े से अंतराल में मैंने बेलमोंट की नौकरी छोड़ने की मूर्खता पर खुद को कोसा—रे, आर्ट, पॉली, ग्लोरिया को खोने पर—और उन सभी बातों पर जो हो सकती थीं: उन अद्भुत लोगों से जिनसे मैं मिल सकती थी लेकिन नहीं मिली। और दिन में चार घंटे समुद्र तट पर बिताने और तैरने पर। और धूप से

सुनहरे हुए बालों पर। मैं उदास और निराश था, सोच रहा था: मैंने उन्हें यह क्यों नहीं बताया कि मैं दो सप्ताह में वापस आऊंगा: तब मैं पूरी तरह से आराम कर सकता था और साथ ही थोड़ा सामाजिक अवकाश भी ले सकता था। (बेवकूफ। बेवकूफ। सरासर बेवकूफ!)
और फिर मुझे जीवन में मृत्यु या बीमारी और जीवन के बीच का अंतर समझ में आने लगा। जब मैं बीमार थी (शारीरिक रूप से, जैसा कि लक्षणों से पता चलता था, और मानसिक रूप से, जैसा कि मैं किसी चीज़ से भागने की कोशिश कर रही थी), तो मैं जीवन शक्ति की सभी पीड़ादायक यादों से दूर रहना चाहती थी—एक शांत, स्थिर तालाब में अकेले छिप जाना चाहती थी, न कि उस अपंग लकड़ी की तरह जो उफनती नदी के किनारे फंसी हो और शोरगुल भरी धारा से लगातार कटती जा रही हो। इसलिए मैं घर चली गई, यह जानते हुए कि अगर मैंने ऐसा किया तो वापस आना मुश्किल होगा। खुद को वापस धारा में धकेलने का भयानक प्रयास मेरे निराशाजनक साइनस संक्रमण के सबसे बुरे दिनों में भी जारी रहा—और पुकार 24 घंटे पहले ही आ गई। फिर मेरे दृष्टिकोण में बदलाव आया: सभी तर्क-वितर्क, सभी बौद्धिक लाभ-हानि के संतुलन के बाद, बात इस तथ्य पर आकर रुकती है कि जब आप जीवित और ऊर्जावान होते हैं, तो लोगों के साथ और उनके बीच प्रतिस्पर्धा और संघर्ष बाकी सब चीजों पर हावी हो जाता है। मैंने चाहे कितनी ही तर्कसंगतता से बेलमोंट को अपने स्वास्थ्य के लिए खतरनाक, किए गए काम के अनुपात में कम लाभकारी और विज्ञान की पढ़ाई के लिहाज से असंभव मान लिया हो—फिर भी उन दुबली-पतली, प्यारी युवा लड़कियों का चुंबकीय आकर्षण मुझे बार-बार अपनी ओर खींचता रहा। जीवन का मतलब अपने पिछवाड़े में आराम से बैठकर, मनमर्जी से लिखना या न लिखना नहीं था। बल्कि, यह व्यस्त लोगों के बीच एक व्यस्त दिनचर्या में पागलों की तरह भागदौड़ करना था।

काम करना, जीना, नाचना, सपने देखना, बातें करना, चुंबन करना, गाना, हंसना, सीखना। 10 हफ्तों तक प्रतिदिन 12 घंटे (लाभदायक ढंग से) प्रबंधित करने की जिम्मेदारी, वह भयानक जिम्मेदारी, तब और भी भारी पड़ जाती है जब समय के विशाल, असीमित क्षेत्र में एक निश्चित दिनचर्या स्थापित करने के लिए कोई न हो—जिसे सुस्ती भरी निष्क्रियता और विलासितापूर्ण आराम में यूं ही बीतने देना कितना आसान है। यह ऐसा है मानो किसी सुचारू रूप से चलने वाले समुदाय से एक बेल जार को उठा लिया गया हो, और फिर देखा जाए कि सारे व्यस्त लोग रुक जाते हैं, हांफते हैं, भड़क उठते हैं और उस सीमित, निर्धारित वातावरण के प्रवाह (या बल्कि बहिर्प्रवाह) में बह जाते हैं—बेचारे डरे हुए लोग, लक्ष्यहीन हवा में बेबस हाथ-पैर मारते हुए। ऐसा ही महसूस होता है: दिनचर्या से छुटकारा पाना। भले ही किसी ने इसके खिलाफ़ ज़बरदस्त विद्रोह किया हो, फिर भी दोहराव वाली दिनचर्या से बाहर निकलने पर बेचैनी महसूस होती है। और मेरे साथ भी ऐसा ही है। क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? क्या बंधन हैं, क्या जड़ें हैं? जब मैं अपने घर की अजीब सी पतली हवा में अधर में लटका हुआ हूँ?
बाकी गर्मियों के लिए प्लाथ ने मैसाचुसेट्स के चैथम में कैंटर्स नामक एक ईसाई वैज्ञानिक परिवार के यहाँ सहायक के रूप में काम किया। कैंटर्स परिवार उन्हें बहुत पसंद करता था और उन्हें बेटी की तरह मानता था, हालाँकि वह भी बहुत मेहनत करती थीं।
चैथम
8 अगस्त, शुक्रवार—रात 9:45 बजे। बिस्तर पर, नहाकर, और फिर से अच्छी बारिश हो रही है—मेरी खिड़की के बाहर टाइल वाली छत पर पानी टपक रहा है। आज सारा दिन बारिश होती रही है, अपनी उमस भरी

तीन साल पहले, अगस्त की उमस भरी, चिपचिपी बारिश ज़ोरों से बरस रही थी और मैं घर के बरामदे में उदास बैठी थी, इस बात पर रो रही थी कि गर्मी का मौसम फिर कभी नहीं आएगा—कभी पहले जैसा नहीं होगा। छपी हुई पहली कहानी उसी "फिर कभी नहीं" के स्वर से निकली, जो बारिश की आवाज़ में गूंज रहा था। अगस्त की बारिश: गर्मी का सबसे अच्छा समय बीत गया, और नई पतझड़ अभी शुरू नहीं हुई। अजीब, असमान समय।
9 अगस्त… मैंने बच्चों को जोनी के पास छोड़ दिया और बीच वैगन में बैठकर चैथम शहर के लिए निकल पड़ी। बारिश से भीगी संकरी गलियों से होते हुए, चमचमाती हरी गाड़ी को धीरे-धीरे शहर के पार्किंग स्थल तक ले जाते हुए, मुझे जीत और आज़ादी का एक अजीब सा एहसास हुआ। मैं बुकमोबाइल में वैल जेंड्रोन से मिलने जा रही थी, और मैं गई भी।
मैं लोरानिया की बुकमोबाइल के पिछले दरवाजे से अंदर गई, और जैसे ही मैंने सिर झुकाकर किताबों के शीर्षक देखे, मेरे लाल रेनकोट से पानी की बूँदें फर्श पर गिरने लगीं, जबकि वैल आगे लोगों से बात कर रही थी। फिर मैं फर्श पर बैठ गई, कविता की किताबें और चमकीले कवर वाली, साफ छपाई वाली मॉडर्न लाइब्रेरी की किताबें देखने लगी। वह तब अकेली थी, और उसने मुझे पहचान लिया।
तो मैंने उनसे कई बातें पूछीं—उन्होंने लिखना कैसे शुरू किया, उनकी रचनाएँ कहाँ प्रकाशित हुईं और उन्होंने कहाँ काम किया। उन्होंने मुझसे बड़े प्यार से बात की—व्यंग्यपूर्ण, कठोर, व्यंग्य भरी मुस्कान के साथ, फिर एक पल के लिए मेरी ओर देखा, हल्की सी मुस्कान, मानो कह रही हों कि वह समझती हैं कि मैं अपनी कहानी की आलोचना कर रहा हूँ, अब मुझे वह उतनी पसंद नहीं आ रही है, और असल में लेखन की असली खूबी उसकी प्रक्रिया है, न कि परिणाम।

फिर उन्होंने मुझे प्रतिदिन चार पृष्ठ (1000 शब्द) लिखने के बारे में बताया। कोई समय सीमा नहीं—यही तो असली बात है। कोई समय सीमा नहीं है, मायने तो परिणाम रखता है। एक साल में 365,000 शब्द लिखना बहुत बड़ी बात है। मैं इस पतझड़ से शुरू करूँगा। प्रतिदिन चार पृष्ठ।
वह छोटी, दुबली-पतली, पीली-सी है, उसके काले बाल पीछे जूड़े और चोटी में बंधे हैं, और वह खाकी टोपी पहने रहती है। नुकीला चेहरा, चश्मा और रूखी, व्यंग्यात्मक आवाज़। उसकी झोपड़ी में बिल्लियाँ हैं, जो लाल रंग से रंगी है (जैसा कि वह कहती है) और उसके पास फोन नहीं है। क्या ये अकेलेपन के लक्षण हैं? क्या वैल जेंड्रोन के साथ बहुत लंबे समय तक रहने का असर है? किससे बात करूँ? किससे? मैं पता लगाऊँगी। मैं वैल जेंड्रोन नहीं बनूँगी। लेकिन मैं वैल जेंड्रोन के अच्छे गुणों को अपने भीतर समाहित कर लूँगी—किसी दिन। और कॉफी के बचे हुए हिस्से को हमेशा के लिए छोड़ दिया जा सकता है। उसने कहा है कि मैं उससे मिलने आ सकती हूँ: एक तीर्थयात्रा—मेरी पहली लेखिका के पास।
19 अगस्त—रात 1 बजे। सच कहूँ तो, बेटा, तुम्हें बहुत सारे अच्छे मौके मिले हैं। शायद एलिजाबेथ टेलर जैसी नहीं हो। हेमिंग्वे जैसी भी नहीं, लेकिन भगवान, तुम बड़े हो रहे हो। दूसरे शब्दों में, तुम उस बदसूरत अंतर्मुखी लड़के से बहुत आगे निकल आए हो जो तुम सिर्फ पाँच साल पहले थे। शाबाशी दो? ठीक है, सांवला, लंबा, सुनहरे बालों वाला, बुरा नहीं है। और दिमाग भी, कम से कम एक दिशा में तो "अंतर्ज्ञान" है। तुम बहुत से अलग-अलग तरह के लोगों के साथ घुलमिल जाते हो। एक ही छत के नीचे, पास-पास रहते हो, यहाँ तक कि। तुम्हें घमंड, अहंकार या अहंकार की कोई खास चिंता नहीं है। तुम काम करने को तैयार हो। और मेहनत भी करते हो।

तुम्हारे पास दृढ़ इच्छाशक्ति है और तुम जीवन के प्रति व्यावहारिक हो रहे हो—और तुम्हारी रचनाएँ प्रकाशित भी हो रही हैं। इसलिए तुम्हें जो चाहे लिखने का पूरा अधिकार है। तीन महीनों में चार स्वीकृति—$500 Mlle, $25, $10 Seventeen, $3.50 Christian Science Monitor (कैवियार से लेकर मूंगफली तक, मुझे सब कुछ पसंद है)।
वैल के बाद। हे भगवान, ये बातचीत! पहले, उसका "झोपड़ीनुमा घर," लाल रंग का आधा घर, सफेद किनारी वाला, और वो दरवाज़े पर झुकी हुई, दुबली-पतली और मैली-कुचैली सी, मुस्कुराती हुई खड़ी थी। चेकदार शर्ट, पेंट से सने लेविस जींस। मैं अंदर गया, खुद को बड़ा, नया और बहुत साफ-सुथरा महसूस करते हुए। वो एक बेसिन में कपड़े धो रही थी। गंदे पुराने कपड़े। चूल्हे पर रखी केतली से गर्म पानी लिया हुआ था।
मैं छोटी सी रसोई में बैठ जाती हूँ। दीवारों पर भूरे रंग का वॉलपेपर लगा है, जिस पर पेंसिल्वेनिया-डच शैली का पैटर्न दिखता है। फर्श पर गंदे बर्तन पड़े हैं। दो बिल्लियाँ हैं: प्रूडेंस, एक नखरीली काली, मोहक हरी आँखों वाली फ़ारसी नस्ल की बिल्ली, और ओ'हारा। सिगरेट से भरी ऐशट्रे हैं। वह हफ्ते में विंग्स सिगरेट के 2 डिब्बे (सस्ते, बिना विज्ञापन वाले) पी जाती है। उसे स्वाद नहीं आता, उसकी स्वाद इंद्रियाँ ही खत्म हो गई हैं।
तो मैंने चारों ओर देखा। उसे खाना बनाना पसंद है—खासकर स्टू और रगुट। वाइन वाली चीज़ें। फ्रिज के ऊपर खाना बनाने की किताबों की एक शेल्फ है। मसालों की भी एक शेल्फ है। वह उन्हें खोलती है और मैं हर एक को सूंघता हूँ, और वह कहती है, “थाइम, बेसिल, मार्जोरम…” वगैरह। वहाँ एक प्रिजर्विंग अलमारी भी है—जैम,

जेली, एप्पल बटर, बीच प्लम। वह इन्हें तोड़कर डिब्बों में बंद करती है। जंगली, मीठे, खट्टे, साफ रंग के।
बाहर बगीचा है। चीड़ के जंगल से पुनः प्राप्त की गई साफ-सुथरी घास का मैदान। फूल - कुछ फ्लॉक्स, ज़िनिया। बुकमोबाइल के काम में लगने वाले समय के कारण सब्जियों में खरपतवार उग आए हैं। स्ट्रॉबेरी, रसभरी, मिर्च, बीन्स, टमाटर, सभी क्यारियों में करीने से कटे-फटे लगे हैं।
हम फ्रिज से वो केक और ढेर सारे हरे अंगूर निकालते हैं जो वो खरीदकर लाई थी। वो कॉफी पीसती है, खुशबू बहुत अच्छी है, और हम बर्तन में पानी उबलने का इंतज़ार करते हैं। इसी बीच प्रूडेंस केक पर लगी थोड़ी सी आइसिंग चाट लेती है। वैल उस हिस्से को काटकर ओ'हारा के लिए रख देती है। कॉफी तैयार हो जाने पर हम केप कॉड की खड़ी सीढ़ियाँ चढ़कर उस वर्कशॉप में जाते हैं जिसे उसने खुद बनाया है।
दीवारों पर चारों ओर किताबों की अलमारियां हैं, विलियम्सबर्ग ब्लू-ग्रे और क्रीम पीले रंग की। फर्श पर एक गलीचा बिछा है जिसे वह बुन रही है, और एक टोकरी में ऊन के गोले रखे हैं। एक स्टूडियो सोफा, एक टाइपराइटर। पांडुलिपियों के ढेर लगे हैं, बक्सों में, उसकी मेज पर। हम फर्श पर पालथी मारकर बैठ जाते हैं और एक के बाद एक कप कॉफी पीने लगते हैं। मैं पेटू हूँ और केक के तीन टुकड़े खा लेता हूँ। प्रू जिन चार काली बिल्लियों को पाल रही है, वे अंदर आती हैं और चंचल रोएँदार काली खरोंचों की तरह इधर-उधर भागती हैं। वे जिज्ञासु हैं, मेरे कॉफी कप में झाँकती हैं, गर्म और कड़क कॉफी पर छींकती हैं और फर्श पर इधर-उधर भागने लगती हैं। एक बिल्ली मेरी स्कर्ट के किनारे के अंदर सो जाती है जहाँ वह फर्श पर एक आरामदायक तह बना लेती है।

मैंने एजेंटों के बारे में सुना है—ऐन एल्मो, समथिंग-एंड-ओटिस। मैंने “मिस हेंडरसन की शादी” पढ़ी। मुझे इसकी गति और लय पसंद आई। मुझे लगता है कि यह थोड़ी नीरस है, पात्र मानवीय नहीं लगते— ओह, एक अजीब सी बात। लेकिन इसकी रचना में संतुलन और गरिमा है। इस स्तर पर तो मैं इसकी कायल हूँ। मैंने उसके और एजेंटों के बीच हुए पत्राचार की फाइलें भी देखीं। उसके दिमाग में “हैतियन हॉलिडे” चल रही है। नाजायज बेटी पर एक लघु उपन्यास भी है। कितनी सारी कहानियाँ! कितना कुछ प्रकाशित हो चुका है…
रेचल कार्सन को जानती है। वुड्स होल। उसे लॉटरी लग गई है, लेकिन वैल की तरह ही घूमती है, पुरानी खटारा गाड़ी, पुराने कपड़े। उसे यहाँ सफलता मिली है, लेकिन समझ नहीं आ रहा कि इसका क्या करे। लोग उसे लिखने का तरीका बता रहे हैं, लेकिन वो अब कुछ लिख रही है... एक अच्छी लेखिका की तरह, वर्तमान समस्या में उलझी हुई है। अपनी सफलता पर निर्भर नहीं रहती।
आधी रात को वापसी की सवारी, एविटा पेरोन के बारे में बात करते हैं। (वेश्या हो या दरबारी, उसने एक शानदार छोटा सा शो किया। वैल को रॉकेट पसंद हैं। सुंदर, प्यारी।)
लेखन का काम। लेखक आम आदमी के लिए एक भ्रम का ताना-बाना बुनता है: रहस्य का आवरण—कोई भी यह नहीं सोचना चाहता कि साहित्यिक कौशल और इरादे से उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया जा सकता है, उन्हें भड़काया जा सकता है। कोई भी यह नहीं सोचना चाहता कि यह आदमी मेरे दिल को छू सकता है, सिर्फ इसलिए कि वह अपना काम चलाता रहे। इसलिए जब लोग पूछते हैं कि लेखक को अपने विचार कहाँ से मिलते हैं, तो वह कहता है, "मैं अपने सोफे पर लेटा रहता हूँ; ईश्वर मुझसे बात करता है। प्रेरणा।" यह बात लोगों को संतुष्ट कर देती है।

खस्ताहाल गाड़ी के इंजन की आवाज़ के ऊपर चिल्लाते हुए। घर, कॉफी के नशे में चूर। बेहद खुश। (मैं यह सोचना बंद नहीं कर पा रही कि मैं अभी शुरुआत कर रही हूँ। 10 साल में मैं 30 साल की हो जाऊँगी, बूढ़ी नहीं और शायद अच्छी भी। उम्मीद। संभावनाएं। काम, और मुझे यह बहुत पसंद है। बच्चों को जन्म दिलाना। शायद दोनों तरह के। वैल हल्की रोशनी में मेरी तरफ मुस्कुरा रही है, चेहरा छाया में है, सख्त बातें करती है, लेकिन मेरे साथ अच्छा व्यवहार करती है। मैं उसे स्मिथ से पत्र लिखूँगी। मैं काम करूँगी, शायद सर्दियों में गाड़ी चलाकर उससे मिलने जाऊँगी। शायद डिक को भी साथ ले जाऊँ। भगवान, वह मेरे लिए कितनी अच्छी रही है। आज रात सबसे अच्छी रही। सारे लड़के, सारी तड़प, फिर यह परिपूर्णता। परिपूर्ण प्रेम, संपूर्ण जीवन।)
दीवार में एक झिंगुर था, जो चरमराहट और चहचहाहट कर रहा था। उसने कहा, एक अच्छा जीवन बनाओ। मुझे आश्चर्य होता है। मैं उसे पसंद करती हूँ, लेकिन उतनी अंधाधुंध नहीं जितनी होनी चाहिए—मैं आलोचनात्मक भी हो सकती हूँ। लेकिन उसने जीवन जिया है, बेचा है, उत्पादन किया है। और उसने मुझे कितना कुछ सिखाना शुरू कर दिया है।
अरे, तुम तो 'द लेडीज़ होम जर्नल' में छपने से कहीं ज़्यादा की हकदार हो। काश, मैं तुम्हें 'द अटलांटिक' में "द किड कोलोसस" के रूप में जगह दिला पाती। मैं भी सबसे ऊँचा लक्ष्य रखूँगी। एक कथानक। "नाइफ-लाइक, फ्लावर-लाइक" जैसा, बस थोड़ा अलग। क्या साबित करना है? कहाँ से शुरू होकर कहाँ खत्म होना है—किस नज़रिए से? ओह, मैं इस साल इस विषयवस्तु के लिए सही प्रारूप खोजने में जी-जान से लगी रहूँगी।

वैल ने कहा: पहले कल्पना करो, फिर भावनाओं को उसमें उतारो। शुरुआती लेखक इंद्रिय अनुभवों से लिखते हैं, ठंडे, यथार्थवादी संगठन को भूल जाओ। पहले ठंडे, वस्तुनिष्ठ कथानक और दृश्य को तैयार करो। एकदम स्थिर। फिर सोफे पर लेटकर कल्पना करते हुए, उसे पूरी ऊर्जा से भरते हुए, कला के जीवन में, रूप में, फिर से जीवंत करते हुए, निराकार, संदर्भ के बिना, उस रचना को लिखो।
20 सितंबर—21 सितंबर की सुबह की ओर। ("कभी-कभी," उस युवक ने मुझसे धीरे से कहा, "जब एक आदमी चाहता है कि कोई औरत वेश्या होती।") एक घिनौनी, नीरस शाम। एक भयानक फिल्म, हम दोनों को घिन आ रही थी, बारिश से बचने के लिए अंदर ही रहे, नींद आ रही थी, आलोचनात्मक। रोडस्टर में गाड़ी चलाते हुए, मस्ती में, ऊबते हुए, बोस्टन की सड़कों से गुज़र रहे थे, फिल्म के बाद भीड़ क्रॉसिंग पर उमड़ रही थी, और गुलाबी, हरे, नीले, पीले रंग की नियॉन बत्तियाँ सड़कों पर धुंधली सी चमक रही थीं, गीली, चिकनी, काली सी। ऊब, चिड़चिड़ाहट, सब कुछ गलत। मैं ऊँची एड़ी के जूते क्यों नहीं पहनती... क्योंकि मैं सपाट जूतों में बिल्कुल बचकानी लगती हूँ? मैं जवान हूँ, भोली हूँ, बचकानी हूँ, भावनात्मक रूप से सोलह साल की हूँ। मेरी प्रतिक्रियाएँ बहुत स्पष्ट हैं, बहुत जल्दी उत्तेजित हो जाती हैं। मैं छोटी-छोटी बातों पर भावुक हो जाती हूँ, केवल ठंडे तथ्यात्मक घटनाओं को समस्याग्रस्त ढंग से बढ़ा- चढ़ाकर पेश करती हूँ। मैं उसकी बहुत प्रशंसा करती हूँ ("ओह, सच में, हाँ, हाँ, आगे बोलो...")। और एक स्पर्श से ही मैं जम जाती हूँ। आह, मैं भी दो बार तारीफें बटोरने की कोशिश कर रही हूँ, और मैं इसे पूरी तरह से नकार देती, लेकिन मैं फँस गई हूँ—भले ही मेरी बात अचेतन हो, और वो, धिक्कार है उसे, बिल्कुल सही है। लगता है, बस यही गड़बड़ है कि "हम साथ में शराब नहीं पी पाए।" एक दीवार

है। हमारे बीच संकोच है। और मैं अपने बेतुके, अतिउत्साह से उसे कुछ करने पर मजबूर कर रही हूँ। ये बेतुके हैं, और मैं नाटक कर रही हूँ—क्योंकि मैं खुद को अजीब महसूस कर रही हूँ। वो अजनबी है, पराया है, फिर भी हमारी अलग-अलग सांस्कृतिक और नैतिक पृष्ठभूमियाँ ज़्यादा मायने नहीं रखतीं। शायद मैं बचाव की मुद्रा में हूँ, कौन जाने। झूठी उमंग से स्थिति पर ज़रूरत से ज़्यादा प्रतिक्रिया दे रही हूँ। क्योंकि मैं देहाती लड़के के पास लौटने से पहले उस शहरी अजनबी को जीतना चाहती हूँ। (स्त्री का घमंड?) क्या उत्साह का मेरा पहला बेताब उफान (जिस पर डिक ने पहले टिप्पणी की थी) लोगों के भाग जाने, मुझे छोड़कर चले जाने, मुझे अकेला छोड़ देने के मेरे पुराने डर का अवशेष नहीं है? क्या यह अवचेतन रूप से मेरे साथी, चाहे वह पुरुष हो या महिला, को आकर्षित करने, बांधे रखने और अपने साथ बनाए रखने का एक तरीका नहीं है? (मुझे याद है जब नैन्सी कोल्सन एक और लड़की के साथ मुझे विनथ्रोप में स्काउट्स से घर छोड़ने आई थीं। जब भी मैं उन्हें कोई कहानी सुनाना शुरू करती, वे हमेशा हंसते हुए भाग जाती थीं। मुझे समझ नहीं आता था। मैं हैरान, हांफती हुई उनके पीछे भागती थी। और फिर मुझे पता चला कि उन्होंने भागने का नाटक किया था ताकि उन्हें मेरी लंबी, उबाऊ बातें न सुननी पड़ें।) मैं संयम बरतना सीखूंगी। मैं उस बड़बोले पिल्ले की तरह लोगों को आकर्षित करने के लिए उन पर गिरने की कोशिश करना बंद कर दूंगी। मैं बहुत चाहती हूं कि लोग मुझे पसंद करें। मैं लंबे समय तक असहज, आत्म-सचेत और अलोकप्रिय रही हूं। हालांकि अब मुझे बहिर्मुखी कहा जा सकता है, फिर भी मेरे पुराने हीनबोध के लक्षण बार-बार दिखाई देते हैं। मैं नए लोगों को बहुत सम्मान देती हूं, उनकी मेरे प्रति आश्चर्यजनक दयालुता और उनके स्नेहपूर्ण ध्यान के लिए

उनकी पूजा करती हूं। मैंने चांदी की परत चढ़ी कितनी मूर्तियाँ खड़ी की हैं, केवल इसलिए कि जैसे-जैसे मुझे उनकी कमजोरियों का पता चलता गया, मैं उन्हें मानवीय रूप दे सकूँ?
आज का दिन अच्छा रहा। दोपहर में श्री क्रॉकेट के साथ ढाई घंटे बिताए, और उनके हरे-भरे चीड़ के बगीचे में शेरी पीते हुए लंबी बातचीत के बाद मुझे अचानक एक विचार आया, कॉलेज के बाद का लक्ष्य। यह एक रोमांचक और अद्भुत बात है: इंग्लैंड में स्नातकोत्तर अध्ययन का एक वर्ष। कैम्ब्रिज या ऑक्सफोर्ड। यह अभी तक एक अनिश्चित कदम है: पैसा ही सबसे बड़ी समस्या है। लेकिन मेरे पास इसके लिए दो साल हैं; छात्रवृत्तियां और फैलोशिप उपलब्ध हैं; मैं युवा, ऊर्जावान और मेहनत करने के लिए उत्सुक हूं।
इससे जुड़े कुछ मुद्दे जो हल होते हैं और कुछ नए मुद्दे जो सामने आते हैं: मैं छुट्टियों में पेरिस और ऑस्ट्रिया जाऊँगी। इंग्लैंड मेरी यात्रा की शुरुआत होगी। मैं सप्ताहांत में पूरे इंग्लैंड में साइकिल चलाऊँगी। गर्मियों में हॉस्टल में ठहरने की नीरस, थका देने वाली यात्रा, थकान और जीवन के सुखों का आनंद लेने में असमर्थता नहीं होगी—लेकिन शायद शहर में किसी सस्ते होटल में रुकूँगी, किसी दोस्त के साथ यात्रा करूँगी। फिर वापस इंग्लैंड आ जाऊँगी। मैं लिखूँगी; कहानियाँ, शायद एक उपन्यास भी। मुझे लगता है कि मैं दर्शनशास्त्र में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करूँगी। मैं यह करके रहूँगी।
सबसे बड़ा डर, जो मुझे अंदर ही अंदर सताता रहता है: पुरुष। मैं दो भाइयों से प्यार करती हूँ, हद से ज़्यादा। मैं चली जाऊँगी। अगर मेरी किस्मत अच्छी नहीं रही, तो हो सकता है कि मेरे जाने के बाद दोनों शादी कर लें, और जब मैं वापस आऊँगी तो मुझे एक बड़ा

खालीपन मिलेगा। दूसरी तरफ, हो सकता है कि मुझे प्यार हो जाए, या मैं किसी के साथ संबंध बना लूँ। मुझे एक साल चाहिए ताकि मैं सही नज़रिया पा सकूँ, खुद को आज़ाद कर सकूँ, इससे पहले कि मैं "मानव बंधन" में बंधने का फैसला करूँ। और खतरा यह है कि नए क्षितिज और दूर दिशाओं की ओर इस कदम में मैं वह सब कुछ खो सकती हूँ जो मेरे पास अभी है, और मुझे अकेलेपन के सिवा कुछ नहीं मिलेगा। मैं विदेश में अपनी मनचाही चीज़ का आनंद लेना चाहती हूँ और घर आकर उसे अपने दरवाज़े पर सुरक्षित पाना चाहती हूँ, अगर मैं फिर भी उसे जीवन भर के लिए स्वीकार करने का फैसला करती हूँ। मैं जुआ खेल रही हूँ। आने वाले वर्षों में मेरी किस्मत का खेल सामने आएगा।
आज एक सपना बोया गया: एक नाम: इंग्लैंड। एक इच्छा: विदेश में पढ़ाई। और इसी लक्ष्य की ओर निर्देशित एक कार्य योजना। नॉर्टन्स में रात का खाना, गर्म, जगमगाती नीली मोमबत्तियाँ, चमकीले गुलाबी पंखुड़ियों वाले पीले केंद्र वाले एस्टर फूल। स्वोर्डफ़िश और खट्टी क्रीम को ग्रिल किया गया (पेरी गुलाबी चेहरे के साथ झुककर स्वाद चख रहा था)। हॉलैंडाइज़ सॉस और ब्रोकली। अंगूर पाई और आइसक्रीम, भरपूर, गरमागरम। और पोर्ट वाइन, तीखी, मीठी, चौंका देने वाली, आँखों के पीछे अचानक एक अच्छी चुभन के साथ गटक ली गई और सहज हंसी में बदल गई। बढ़िया कड़क काली कॉफ़ी। और डिक और मैं पूरी शाम घर पर, एक-दूसरे के साथ गर्मजोशी, सुकून और शांति से सराबोर। बर्तन धोते समय और मोमबत्ती की रोशनी में नींद में आराम करते समय अक्सर "ला मेर" (समुद्री संगीत) सुनते रहे। संगीत, लगातार बजता रहा, बेचैन करने वाला, दिल को छू लेने वाला, अकथनीय रूप से अजीब और गहराई से

भावुक कर देने वाला, समुद्र की विशाल, अंधी लहरों और ध्वनि, प्रकाश और अंतर्दृष्टि की पतली चमक के साथ।
धुंधले से धुंधले से कमरे में बैठी, मोमबत्ती की रोशनी अंदर आ रही थी, उसकी बाहों में सुकून से, शांत, संतुष्ट, नींद में डूबी हुई, फिर भी सचेत और जागृत। तभी दिन की महानता और समय का महत्व मुझ पर खुशी और डर के साथ उमड़ पड़ा। मैं कुछ साबित करने के लिए उस सुरक्षित और आरामदायक माहौल से निकलकर इंग्लैंड जा रही थी। जाना होगा और लौटना होगा, और लौटने पर जो भी मेरा स्वागत करेगा, मैं उसे धैर्य से स्वीकार करूंगी, अपनी इच्छा की जिम्मेदारी लेते हुए, चाहे वह स्वतंत्र हो या मेरे स्वभाव और परिस्थितियों द्वारा पूर्वनिर्धारित।
खिड़की के बाहर अंधेरा था, और रसोई से आती रोशनी पेड़ की पत्तियों के निचले हिस्से पर पड़ रही थी। सब कुछ एकदम शांत और स्थिर था, काला, रोशनी से घिरा हुआ। पेड़ लंबा था और खिड़की के विशाल अंधेरे हिस्से को भर रहा था। मैंने उस तरह से कभी इतनी खुशी महसूस नहीं की थी। मैं भाग रही थी, दूर जा रही थी; किससे? मेरा एक अर्ध-गुप्त उद्देश्य था, और मैं बंजरपन और सृजन के चक्र को आगे बढ़ाऊंगी। कलात्मक छलांग के लिए अपनी शक्तियों को एक तंग, तनावपूर्ण गोले में समेट रही थी। किसमें? अटलांटिक महासागर में? एक उपन्यास में? सपनों में, निजी सपनों में। लेकिन अगर मैं काम करती रहूँ? और हमेशा सोचने, जानने और तकनीक का अभ्यास करने के लिए काम करती रहूँ?
यह गंभीर अवसाद, जिसमें आत्महत्या को एकमात्र उपाय बताया गया था, अगले वर्ष की गर्मियों में होने वाले उस मानसिक आघात का पूर्वाभास कराता है जो 'द बेल जार' का विषय है। बहुत कम लोग इस स्थिति से अवगत थे, और उन्हें भी प्लाथ की हताशा की गहराई देखने

की अनुमति नहीं थी। उनकी आमतौर पर जल्दी ठीक हो जाने की तीव्र प्रतिक्रिया अब चिंताजनक प्रतीत होती है, लेकिन प्लाथ के करीबी लोग उनके मनोदशा में होने वाले व्यापक उतार-चढ़ाव के आदी थे। नॉर्थम्प्टन
3 नवंबर। हे भगवान! अगर कभी मेरा मन आत्महत्या करने के करीब आया है, तो वो अब है, नींद की कमी से बेहाल खून मेरी नसों में घिसट रहा है, हवा बारिश से घनी और धुंधली है, और गली के उस पार वो बदमाश छोटे आदमी कुल्हाड़ी, फावड़े और छेनी से छत पर हथौड़ा मार रहे हैं, और तारकोल की तीखी, नरक जैसी बदबू आ रही है। आज सुबह मैं फिर से बिस्तर पर लेट गया, नींद के लिए गिड़गिड़ा रहा था, अंधेरे, गर्म, दुर्गंधयुक्त माहौल में भागकर काम और ज़िम्मेदारी से दूर भाग रहा था। कोई फायदा नहीं। मेल की घंटी बजी और मैं झटके से उठकर जवाब देने गया। डिक का पत्र था। ईर्ष्या से बीमार होकर मैंने उसे पढ़ा, उसके बारे में सोचते हुए कि वो ऊपर आराम से लेटा है, उसे खाना मिल रहा है, उसकी देखभाल हो रही है, वह जब चाहे किताबें पढ़ सकता है और अपने विचारों में खो सकता है। मैंने उन अनगिनत शारीरिक कर्तव्यों के बारे में सोचा जो मुझे निभाने थे: प्राउटी को लिखना; लाइफ को वापस कैल भेजना; प्रेस बोर्ड के लिए लिखना; मार्सिया को फोन करना। सूची में एक के बाद एक भयानक बाधाएँ जुड़ती गईं; वे आपस में टकराए, घूरे, अराजकता में बिखर गए, और घृणा, वस्तुओं, चीजों, कार्यों के इस निरर्थक चक्र को समाप्त करने की तीव्र इच्छा बढ़ती गई। स्वयं का विनाश करके संसार का नाश करना हताश अहंकार की पराकाष्ठा है। उन सभी छोटी-छोटी ईंटों जैसी बंद गलियों से निकलने का यही सरल रास्ता है जिन पर हम अपने नाखून रगड़ते हैं। विडंबना यह है कि डिक को अपने शरीर की देखभाल के अलावा किसी भी चीज के प्रति गैर-

जिम्मेदारी की चरम सीमा तक उठते हुए देखना—उसके मन को उड़ान भरते, पहुँचते हुए महसूस करना, और मेरा मन पिंजरे में बंद, रोता हुआ, शक्तिहीन, आत्म-निंदा करता हुआ और ढोंगी बना हुआ है। मैं अपने आप को, अपने साहसी, निडर मानवतावादी विश्वास को कैसे उचित ठहराऊँ? मेरी दुनिया बिखर जाती है, टूट जाती है, "केंद्र टिक नहीं सकता।" कोई एकीकृत शक्ति नहीं है, केवल नग्न भय है, आत्म-संरक्षण की तीव्र इच्छा है।
मैं भयभीत हूँ। मैं ठोस नहीं, खोखला हूँ। मेरी आँखों के पीछे एक सुन्न, लकवाग्रस्त गुफा, नरक का गड्ढा, एक अनुकरणशील शून्यता महसूस होती है। मैंने कभी सोचा नहीं। मैंने कभी लिखा नहीं, मैंने कभी पीड़ा नहीं झेली। मैं खुद को मारना चाहता हूँ, ज़िम्मेदारी से भागना चाहता हूँ, दयनीय रूप से वापस गर्भ में जाना चाहता हूँ। मुझे नहीं पता कि मैं कौन हूँ, मैं कहाँ जा रहा हूँ—और इन भयानक सवालों के जवाब मुझे ही तय करने हैं। मैं स्वतंत्रता से एक महान मुक्ति की लालसा रखता हूँ—मैं कमज़ोर हूँ, थका हुआ हूँ, उस सशक्त रचनात्मक मानवतावादी विश्वास के विरुद्ध विद्रोह कर रहा हूँ जो एक स्वस्थ, सक्रिय बुद्धि और इच्छाशक्ति की अपेक्षा रखता है। मेरे पास जाने के लिए कोई जगह नहीं है—न घर, जहाँ मैं अपनी माँ की गोद में सिर रखकर एक मूर्ख की तरह सिसकियाँ भरती और रोती—न पुरुषों के पास, जहाँ मुझे अब पहले से कहीं अधिक उनके कठोर, अंतिम, पितृवत निर्देश की आवश्यकता है—न चर्च, जो उदार और स्वतंत्र है—नहीं, मैं थकी हुई सी उस अधिनायकवादी तानाशाही की ओर मुड़ती हूँ जहाँ मुझे सभी व्यक्तिगत उत्तरदायित्वों से मुक्त कर दिया जाता है और मैं अपने आप को एक बड़े अक्षर 'C' वाले उद्देश्य की वेदी पर "परोपकार की भव्यता" में बलिदान कर सकती हूँ।

अब मैं यहाँ बैठा हूँ, लगभग रो रहा हूँ, डरा हुआ हूँ, दीवार पर अपनी खोखली निरर्थकता को लिखती हुई उंगली को देख रहा हूँ, जो मुझे शाप दे रही है—हे भगवान, वह एकजुट करने वाली शक्ति कहाँ से आएगी? अब तक मेरा जीवन अस्त-व्यस्त, अनिश्चित, अव्यवस्थित लगता है: मैंने अपने रास्ते गलत चुने, बिना किसी नियम के अपनी रणनीति बनाई—अपनी क्षमताओं पर उत्साहित हुआ, फिर भी दूसरों की सेवा के लिए कुछ क्षमताओं को त्याग दिया। मैं नकारात्मकता, आत्म-घृणा, संदेह, पागलपन में डूब रहा हूँ—और मुझमें भी इतनी शक्ति नहीं है कि मैं इस दिनचर्या, इस रटे-रटाए तरीके को नकार सकूँ, इसे सरल बना सकूँ। नहीं, मैं बस आगे बढ़ता जा रहा हूँ, इस डर से कि मेरी आँखों के पीछे का खाली नरक फूट पड़ेगा, एक अंधेरी महामारी की तरह फैल जाएगा, इस डर से कि वह बीमारी जो मेरे शरीर के सार को निर्दयता से खा रही है, स्पष्ट घावों और मस्सों के रूप में फूट पड़ेगी, चिल्लाते हुए "गद्दार, पापी, धोखेबाज।"
मुझे अब आदि पाप स्वीकार करने, हिटलर की पूजा करने और अफीम लेने की विवशता समझ में आने लगी है। मैं लंबे समय से दर्शन, मनोविज्ञान, राष्ट्रीय, धार्मिक और आदिम चेतना के सिद्धांतों को पढ़ना और समझना चाहता था, लेकिन अब लगता है कि बहुत देर हो चुकी है—मैं बिखरे हुए कामों का एक ढेर हूँ—स्वार्थी, डरा हुआ, अपने शेष जीवन को किसी उद्देश्य के लिए समर्पित करने का विचार कर रहा हूँ—जरूरतमंदों को कपड़े भेजने के लिए नग्न होना, किसी मठ में भाग जाना, मानसिक बीमारी के डर में डूब जाना, धार्मिक रहस्यवाद में खो जाना, लहरों में खो जाना—कहीं भी, कहीं भी, जहाँ आत्म-जिम्मेदारी और आत्म-निर्णय का बोझ, भयानक नरक जैसा भार हट जाए। मुझे आगे केवल अंधेरी, गंदी गलियाँ दिखाई देती हैं, जहाँ मेरे जीवन का मैल, कीचड़, गंदगी पड़ी है, महिमाहीन,

अपरिवर्तित—किसी भी चीज से रूपांतरित नहीं: न कोई बड़प्पन, न ही सपने का भ्रम।
हकीकत वही है जो मैं बनाता हूँ। यही मेरा मानना रहा है। फिर मैं उस नरक को देखता हूँ जिसमें मैं डूबा हुआ हूँ, मेरी नसें सुन्न पड़ गई हैं, मेरी सारी क्रियाएं रुक गई हैं—डर, ईर्ष्या, नफरत: असुरक्षा की ये सारी जहरीली भावनाएँ मेरे कोमल मन को कुतर रही हैं। समय, अनुभव: एक विशाल लहर की तरह मुझ पर टूट पड़ते हैं, मैं डूबता जा रहा हूँ, डूबता जा रहा हूँ। मैं उस स्थायित्व को, अतीत और भविष्य के साथ उस निरंतरता को, दूसरे इंसानों के साथ उस संवाद को कैसे पा सकता हूँ जिसकी मुझे चाह है? क्या मैं कभी ईमानदारी से किसी कृत्रिम थोपे गए समाधान को स्वीकार कर सकता हूँ? मैं अपने बाकी जीवन को कैसे जायज़ ठहरा सकता हूँ, कैसे उसका औचित्य बता सकता हूँ?
सबसे डरावनी बात यह है कि दुनिया भर में लाखों लोग मेरी जगह होना चाहते हैं: मैं बदसूरत नहीं हूँ, मंदबुद्धि नहीं हूँ, गरीब नहीं हूँ, अपाहिज नहीं हूँ—वास्तव में, मैं अमेरिका जैसे आज़ाद, समृद्ध और आरामदेह देश में रह रही हूँ और बहुत कम पैसों में सबसे अच्छे कॉलेजों में से एक में पढ़ रही हूँ। मैंने पिछले तीन सालों में लिखकर सिर्फ 1000 डॉलर कमाए हैं। सैकड़ों महत्वाकांक्षी लड़कियाँ मेरी जगह होना चाहती हैं। वे मुझे पत्र लिखती हैं, मुझसे पत्राचार करने की अनुमति मांगती हैं। पाँच साल पहले, अगर मैं खुद को आज के रूप में देख पाती: स्मिथ कॉलेज में (वेलेस्ली की जगह), सेवेंटीन कॉलेज से सात और मैडम कॉलेज से एक स्वीकृति पत्र के साथ, कुछ सुंदर कपड़ों के साथ, और एक बुद्धिमान, सुंदर लड़के के साथ—तो मैं कहती: बस यही तो मैं चाहती हूँ!

और यही अस्तित्व का भ्रम है: यह विचार कि कोई व्यक्ति किसी विशेष परिस्थिति या उपलब्धियों की श्रृंखला के साथ हमेशा खुश रहेगा और बूढ़ा होता जाएगा। वर्जीनिया वुल्फ ने आत्महत्या क्यों की? या सारा टीस्डेल ने या अन्य प्रतिभाशाली महिलाओं ने? क्या वे मानसिक रूप से विक्षिप्त थीं? क्या उनका लेखन गहरी, मूलभूत इच्छाओं का उदात्तीकरण (ओह, कितना भयानक शब्द है) था? काश मुझे पता होता। काश मुझे पता होता कि मैं अपने जीवन के लिए अपने लक्ष्य, अपनी अपेक्षाएँ कितनी ऊँची रख सकती हूँ! मैं मूल्यों के पैमाने पर एक अंधी लड़की की तरह हूँ। मैं अब अपनी गणना करने की क्षमताओं के सबसे निचले स्तर पर हूँ।
भविष्य? हे भगवान—क्या हालात और भी बदतर होते जाएंगे? क्या मैं कभी यात्रा नहीं कर पाऊंगी, कभी अपने जीवन को व्यवस्थित नहीं कर पाऊंगी, कभी जीवन का कोई उद्देश्य या अर्थ नहीं पा सकूंगी? क्या मुझे कभी विचारों, दर्शनशास्त्र पर चिंतन करने और अपने भीतर दबी अस्पष्ट इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए समय नहीं मिलेगा? क्या मैं एक सचिव बनकर रह जाऊंगी—एक आत्म-संतोषी, प्रेरणाहीन गृहिणी, जो अपने पति की बौद्धिक और पेशेवर प्रगति से ईर्ष्या करती रहेगी, जबकि मेरी प्रगति रुकी रहेगी? क्या मैं अपनी शर्मनाक इच्छाओं और आकांक्षाओं को दबा दूंगी, खुद का सामना करने से इनकार कर दूंगी और या तो पागल हो जाऊंगी या मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाऊंगी?
मैं किससे बात करूँ? किससे सलाह लूँ? किसी से नहीं। मनोचिकित्सक हमारे ज़माने का भगवान है। लेकिन वे पैसे लेते हैं। और मैं सलाह नहीं लूँगी, चाहे मुझे कितनी भी ज़रूरत हो। मैं खुद को मार डालूँगी। मेरी मदद नहीं हो सकती। यहाँ किसी के पास इतना समय नहीं है कि वह मेरी गहराई में जाए, मुझे खुद को

समझने में मदद करे... मुझसे भी बदतर हालत में बहुत से लोग हैं। मैं स्वार्थवश मदद, सांत्वना, मार्गदर्शन कैसे माँग सकती हूँ? नहीं, यह मेरी अपनी समस्या है, और भले ही अब मैंने अपना नज़रिया खो दिया है, और इस तरह अपनी हास्य-वृत्ति भी, मैं खुद को बीमार नहीं होने दूँगी, पागल नहीं होने दूँगी, या किसी बच्चे की तरह किसी और के कंधे पर सिर रखकर रोने नहीं दूँगी। मुखौटा पहनना ही आजकल का चलन है—और कम से कम मैं इतना तो कर ही सकती हूँ कि यह भ्रम पाल लूँ कि मैं खुश हूँ, शांत हूँ, खोखली और डरी हुई नहीं। कभी न कभी, भगवान जाने कब, मैं इस बेतुके, आत्म-दया से भरे, बेकार, व्यर्थ निराशा को छोड़ दूँगी। मैं फिर से सोचना शुरू करूँगी, और अपने विचारों के अनुसार काम करूँगी। विश्वास का आधार दृष्टिकोण एक दयनीय रूप से सापेक्ष और अस्थिर गुण है। कहावत के अनुसार, यह रेत की तरह फिसलती है, डूबती है, और मुझे नरक में खींच ले जाती है।
फिलहाल, मेरे लिए वस्तुनिष्ठ, आत्म-आलोचनात्मक या विश्लेषणात्मक होना लगभग असंभव है—लेकिन मैं इतना अवश्य जानता हूँ कि मेरा दर्शन इतना व्यक्तिपरक, सापेक्षिक और निजी है कि हर परिस्थिति में सशक्त और रचनात्मक नहीं हो सकता। यह अनुकूल परिस्थितियों में तो ठीक है, लेकिन चालीस दिनों की बारिश आते ही क्षीण हो जाता है। मुझे इसे किसी वृहत्तर, सर्वोपरि लक्ष्य या शिल्प के समक्ष समर्पित करना होगा; वह क्या होगा, इसकी मैं अभी कल्पना भी नहीं कर सकता।
इन्फर्मरी ब्लूज़

आप बटन दबाते हैं और दीवार से आवाज़ आती है।
स्वच्छतापूर्ण और प्रभावी रूप से निष्पक्ष

हम आपके लिए क्या कर सकते हैं? हम क्या कर सकते हैं?
और आप
दीवार के भीतर प्रतीक्षा कर रही आवाज से कहो:
मुझे नहीं लगता कि मुझे रात का खाना चाहिए।
मेरे पेट में अजीब सी बेचैनी हो रही है और मुझे बिल्कुल भी खाने की इच्छा नहीं हो रही है।"
दूर से एक क्लिक की आवाज आती है और जल्द ही नरम तलवों वाले कदमों की आहट गलियारे में सुनाई देती है;
और वह आपको सफेद दवा का एक गिलास देती है।
इसका स्वाद पुदीने जैसा है, ठंडा और दूध की तरह पतला।
वह कहती हैं: "थोड़ी देर में आपके लिए टोस्ट और चाय होगी और फिर आप घूमने जाएंगे।"
और आप ठीक है कहते हैं और अपना चेहरा दूसरी तरफ मोड़ लेते हैं क्योंकि आप रोने वाले होते हैं।
खिड़की के बाहर ज़मीन पर मूसलाधार बारिश हो रही है।
और तुमने जो भी गलतियाँ की हैं या करोगे, वे सब बिना किसी आवाज़ के ढह रही हैं।
कल के आकाश से
जहां कल के सारे नन्हे-मुन्ने मृत पैदा हुए मूर्ख पड़े होंगे। 14 नवंबर। ठीक है, बस यही है। डिक के बारे में सुनने के बाद पहली बार मैं टूट कर रोई, बातें कीं, फिर रोई और फिर बातें कीं। मुझे लगा जैसे मुखौटा टूट गया हो, मेरे अंदर जमा ज़हरीली राख का विशाल भंडार मेरे मुँह से बाहर निकलने लगा हो। मुझे सबसे ज़्यादा ज़रूरत किसी से बात करने की थी, अपने अंदर के सारे तनाव, ईर्ष्या, जलन, आशंका और मानसिक उलझनों को बाहर निकालने की थी:

विदेश न जा पाने का गुस्सा, एक नियमित विज्ञान पाठ्यक्रम से बचने का मौका गँवाने का पछतावा; उन पाठ्यक्रमों के बारे में ख्वाब जो मैं इसके बजाय ले सकती थी—इस साल, पिछले साल, उससे पहले वाले साल; मार्सिया और डिक, मेरे दो मुख्य सहारे, दूर, गायब हो जाने का अकेलापन; ईर्ष्या, जीवन के प्रति मेरे रचनात्मक दृष्टिकोण का टूटना, खालीपन, जो उस अनाम व्यक्ति के दयनीय, कमज़ोर, नाक से बोलने वाले, नकारात्मक, आलोचनात्मक, अस्पष्ट, लड़खड़ाते रवैये—लगभग विकृत—से और भी बढ़ गया था।
ठीक है, आज रात, बढ़िया पिज़्ज़ा, चियांटी वाइन, गरमा गरम कॉफ़ी और हँसी-मज़ाक के बाद, मैं ऊपर हरे, सफ़ेद और लाल रंग के उस कमरे में गई जो रोशनी, जीवंतता और मार्सिया की यादों से भरा था। वहाँ, बिस्तर पर, उसने मेरे भीतर के कठोर, जमे हुए, तीखे छोटे से हिस्से में मौजूद कोमल जगह को छुआ, और मैं रो पड़ी। हे भगवान, कितना अच्छा लगा जब मैंने सब कुछ छोड़ दिया, अपने ऊपर से कसा हुआ मुखौटा उतार दिया, और उलझन भरे, अस्त-व्यस्त टुकड़े बाहर निकल आए। यह एक तरह से शुद्धि थी, एक तरह का भावनात्मक मुक्ति, मैंने बातें कीं, और मुझे याद आने लगा कि मैं पहले कैसी थी, कितनी संतुलित, कितनी सकारात्मक, कितनी समृद्ध—पिछले साल मार्सिया के साथ रहना मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण अनुभवों में से एक था। मैं उन जोशीली चर्चाओं, उन स्पष्ट और सधे हुए तर्कों को कभी नहीं भूलूँगी; उस चीखती, कराहती, लड़खड़ाती आवाज़ के मुकाबले क्या आनंद था जो लेटी हुई है, जिसके स्तन भरे हुए और लटके हुए हैं, आँखें झुकी हुई हैं, मुँह झुका हुआ है। हे भगवान!
मैं लेटकर रोई, और फिर से महसूस करने लगी, यह स्वीकार करने लगी कि मैं इंसान हूँ, कमज़ोर हूँ, संवेदनशील हूँ। मुझे याद आने लगा कि पहले कैसा था; कैसे सकारात्मक रचनात्मकता का वो बीज मौजूद

था। चरित्र ही भाग्य है; और सच में, मुझे अपने चरित्र पर काम करना चाहिए। मैं सुन्नता की खाई में सिमटती जा रही थी: महसूस न करना, दुनिया को खुद को छूने न देना कहीं ज़्यादा सुरक्षित है। लेकिन मेरा सच्चा मन इससे विद्रोह कर रहा था, ऐसा करने के लिए मुझसे नफ़रत कर रहा था। संघर्ष से बीमार, विनाशकारी नकारात्मक भावनाओं से घिरी, बिखरी हुई सी मैं थी, इन भावनाओं को व्यक्त करने से, इन्हें बाहर निकालने से इनकार कर रही थी—ये मेरे अंदर रिसती रहीं, बड़ी होती गईं, विकृत होती गईं, जैसे मवाद से भरे घाव। छोटी-छोटी समस्याएँ, किसी और की खुशियों का ज़िक्र, किसी और की प्रतिभा के सबूत मुझे डरा देते थे, जिससे मैं खोखली प्रतिक्रियाएँ देती थी, ईर्ष्या, जलन और नफ़रत से लड़ती थी। खुद को बिखरते, सड़ते, गलते हुए महसूस कर रही थी, और सारी उपलब्धियाँ मुरझाकर गिर रही थीं, और मेरे अतीत के पाप और चूक मुझे पूरी सज़ा और महत्व के साथ लग रहे थे। यह सब, यह घिनौना, सड़न पैदा करने वाला कीचड़ मेरे अंदरूनी अंगों को खा रहा था। चुपचाप, कपटपूर्ण तरीके से।
आज रात तक। मुझे छूते हुए, मुझे निर्भीक होकर रोने देते हुए, वह बातें करती और सुनती रही, और मेरे पसलियों को जकड़ने वाली, मेरे पेट को जकड़ने वाली जकड़न ढीली पड़ गई। मैं पलायनवादी, धोखेबाज था, एक विश्वासघात कर रहा था, जीवन, नरक और स्वर्ग, मिट्टी और संगमरमर को स्वीकार करने की एक रचनात्मक प्रतिज्ञा तोड़ रहा था।
थकान या संतुलन की कमी ही शायद मुझे विज्ञान के पाठ्यक्रम को टालने और उससे डरने पर मजबूर करती है। धिक्कार है, मैं इसमें पिछड़ने से बच नहीं सकता और इसे अच्छे से समझ सकता हूँ। हो सकता है इसमें बारीकियों पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर दिया जाता हो,

मैं समाजशास्त्र, शेक्सपियर या जर्मन पढ़ रहा हूँ, लेकिन खैर, यह मेरी गलती थी, और मुझे इस बारे में बिगड़े हुए बच्चे की तरह व्यवहार करना बंद करना होगा। कोई माँ नहीं है जो मेरे बोझ को कम कर सके, इसलिए मैं निरर्थक कामों में उलझकर एक सुन्न गर्भ में सिमट जाता हूँ, जहाँ कुछ भी सार्थक नहीं है।
आज रात 11:30 बजे मैं घर लौटा, ठंडी हवा के बड़े-बड़े घूंट भरते हुए, काले, सूखे पेड़ों के पीछे आसमान में तारों को निहारता रहा और ओरियन को देखकर मेरी सांसें थम गईं। कितने लंबे समय से मैंने तारों को नहीं देखा था; अब वे सस्ते कपड़े से ढके आसमान में महज़ छोटे-छोटे बिंदु मात्र नहीं रह गए थे—बल्कि प्रतीक बन गए थे, प्रकाश के द्वीप, कोमल, रहस्यमय, कठोर, ठंडे—हर वो चीज़, जो मैंने उन्हें बना दिया था।
और डिक भी खुद को दोषी ठहरा रहा है, खुद को फिर से समायोजित कर रहा है, आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा है। और वह उस आलीशान, कामुक स्वर्ग में भी नहीं रह रहा है जिसकी मैंने कल्पना की थी।
और इसलिए मैंने खुद को संभाला—शुक्रवार की रात जल्दी सोने का वादा करने के बावजूद देर तक जागता रहा, क्योंकि ऐसे क्षणों को, मनोदशा में आए तीव्र बदलावों को, दिशा के अचानक मोड़ को, नींद में खो देने से कहीं ज़्यादा ज़रूरी है। मैंने अपना सारा नज़रिया खो दिया था; मैं एक निराशाजनक नरक में भटक रहा था (एक धूसर नाव में एक धूसर नदी पर एक धूसर आदमी के साथ: एक उदासीन कैरन एक भावहीन, शांत स्टिक्स नदी पर धीरे-धीरे चल रहा था... और एक चिड़चिड़ा बाल यीशु ट्रेन में रो रहा था...)। नारंगी सूरज धुएँदार, तीखे आकाश पर एक सपाट चिपकी हुई डिस्क जैसा लग रहा था। रविवार की सुबह ग्रैंड सेंट्रल सबवे मेरे लिए नरक था। और मैं

बर्फ में जलने के लिए अभिशप्त था, सुन्न, ठंडा, क्रिस्टल जैसे, तटस्थ, निष्क्रिय निर्वात में घूम रहा था, संवेदना से रहित।
कल मैं अपना विज्ञान का काम खत्म कर लूंगी, फिर अपनी रचनात्मक लेखन की कहानी शुरू करूंगी। मुझे लगता है, यह एक कमज़ोर, तनावग्रस्त, घबराई हुई लड़की के बारे में होगी जो एक स्वार्थी आदमी के प्यार का शिकार हो जाती है, जो अपनी माँ का लाडला है। शायद इसमें आग में जलते हुए पतंगे की उपमा या प्रतीक होगा। पता नहीं, कुछ तो होगा। मैं धीरे-धीरे शुरू करूंगी, क्योंकि मुझे नींद चाहिए, काम चाहिए, और फिर से ऊँची मीनारों को बनाने के लिए और नींद चाहिए। याद रखना: "लोग अभी भी घरों में रहते हैं।" यह शब्द, कितना प्यारा है, "अंतरिम"। और इस गर्मी में मुझे जो किताबें पढ़नी हैं, उनका ख्याल: भाग्य, चरित्र, नियति, स्वतंत्र इच्छा का विचार।
तुम बीस साल की हो। तुम मरी नहीं हो, हालाँकि तुम मर चुकी थी। वह लड़की जो मर गई थी। और फिर से जीवित हो उठी। बच्चे। चुड़ैलें। जादू। प्रतीक। कल्पना की अतार्किकता को याद रखो। बाथरूम के पीछे कोठरी में अजीबोगरीब दृश्य: दावत, जानवर और जेली बीन। याद करो, याद रखो: कृपया फिर से मत मरो: कम से कम निरंतरता तो बनी रहे — एक स्थिरता का मूल तत्व—भले ही तुम्हारा दर्शन हमेशा एक गतिशील द्वंद्वात्मक प्रक्रिया ही क्यों न हो। सिद्धांत आसान समय है, सुखद समय है। प्रतिवाद विनाश का खतरा पैदा करता है। संश्लेषण पूर्ण समस्या है।
कितने भविष्य—(मैं कितनी अलग-अलग तरह से मर सकती हूँ?) मैं एक बच्ची कैसे हूँ? एक वयस्क कैसे हूँ? एक औरत कैसे हूँ? मेरे डर, मेरे प्यार, मेरी वासनाएँ—अस्पष्ट, धुंधली। और फिर भी, सोचो, सोचो, सोचो—और आज रात की इस पवित्र, चमत्कारिक पुनर्जीवन को

संजोए रखो, उस रचनात्मक, एकीकृत, अंध आशावाद को जो मृत, जम गया था, पूरी तरह से गायब हो गया था।
प्रेम करना, प्रेम पाना। किसी एक से; मानवता से। मुझे प्रेम से डर लगता है, वेदी पर बलिदान से। मैं सोचूंगा, विकसित होऊंगा, आगे बढ़ूंगा, निडर होकर। आज रात, आधी रात के समय घर लौटते हुए, खुद से बातें करते हुए, समय और जाल का एहसास, जड़ता के पत्थर को कब्र से हटा दिया।
कल मैं भोर को कोसूँगा, लेकिन अभी और भी जल्दी रातें होंगी, और भोरें अब अलार्म, कर्कश घंटियों और सायरनों से भरी नरक जैसी नहीं होंगी। अब मेरे भीतर एक प्रेम, एक विश्वास, एक दृढ़ संकल्प भ्रूण की तरह पनप रहा है। गर्भ धारण होने में भले ही थोड़ा समय लगे, लेकिन निषेचन हो चुका है।
शुभ रात्रि, हे महान प्यारी किताब।

* * *

मंगलवार, 18 नवंबर। आप अपनी ही सीमाओं के बोझ तले दबे हुए हैं। आपके अंधाधुंध फैसले अब बदले नहीं जा सकते; वे अब अटल हैं। आपको मौके मिले थे; आपने उनका लाभ नहीं उठाया, आप अपने मूल पाप में डूबे हुए हैं; अपनी सीमाओं में। आप ग्रामीण इलाकों में टहलने का भी फैसला नहीं कर सकते: आपको यकीन नहीं है कि यह दिन भर कमरे में बंद रहने से मुक्ति है या ताजगी भरा इलाज। आपने जीवन का सारा आनंद खो दिया है। आगे अंतहीन गलियाँ हैं। आप जानबूझकर और हताशा में रचनात्मक जीवन से अपनी पकड़ तोड़ रहे हैं। आप एक नपुंसक मशीन बनते जा रहे हैं। आप प्रेम नहीं कर सकते, भले ही आपको प्रेम करना आता हो। हर विचार एक शैतान है, एक नरक है—अगर आपको बहुत सी चीजें दोबारा करने का मौका मिले, तो आप उन्हें कितना अलग तरीके से करेंगे! आप घर जाना चाहते हैं, गर्भ में वापस जाना चाहते हैं।

आप दुनिया को अपने चेहरे पर एक के बाद एक दरवाजे बंद करते हुए देखते हैं, बेसुध, कड़वाहट से। आप उस रहस्य को भूल गए हैं जो आप कभी जानते थे, आह, कभी, आनंदित होने का, हंसने का, दरवाजे खोलने का।
10 जनवरी, 1953। इस बदसूरत, बेजान मुखौटे को देखो और इसे मत भूलना। यह एक चॉक का मुखौटा है जिसके पीछे सूखा, बेजान ज़हर छिपा है, मानो मौत का फरिश्ता हो। यही मैं इस पतझड़ में थी, और मैं फिर कभी ऐसी नहीं बनना चाहती। उदास, मुंह फुलाए, बेजान, सुस्त, भावहीन आंखें: ये सब मेरे भीतर के भयानक क्षय के लक्षण हैं। मेरे आखिरी ईमानदार पत्र के बाद एडी ने मुझे लिखा कि मुझे अपनी भयानक समस्याओं की जड़ तक पहुंचने के लिए मनोरोग उपचार करवाना चाहिए। अब मैं मुस्कुराती हूँ, यह सोचकर: हम सभी को लगता है कि हम इतने महत्वपूर्ण हैं कि हमें मनोचिकित्सकों की ज़रूरत है। लेकिन मुझे बस नींद, सकारात्मक सोच और थोड़ी सी अच्छी किस्मत चाहिए। जब से मैंने आखिरी बार यहाँ लिखा था, तब से कितना कुछ घटित हो चुका है:

थैंक्सगिविंग पर मेरी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जिससे मैं बार-बार मिलना चाहूँगी। मैंने उसके साथ यहाँ हाउस डांस में तीन दिन बिताए। मुझे एक हफ्ते तक साइनस का संक्रमण रहा। मैंने डिक को देखा, उसके साथ सारनाक गई और स्कीइंग करते समय मेरा पैर टूट

मेरे अंदर अब वैसी इच्छा जागृत नहीं हुई। मैं नहीं चाहती थी कि वह मुझे छुए। एक तो इसलिए कि वह मुझे चूम नहीं सकता, मुझे यह एहसास होता है (पूरी तरह से मानसिक) कि उसका मुँह टीबी के ज़हरीले कीटाणुओं का स्रोत है, और इसलिए अपवित्र है। इसलिए मैं शारीरिक रूप से उससे दूरी बनाए रखती हूँ। साथ ही, मुझे उसके प्रति कोई भावना नहीं है—वह तीव्र, बेचैन, तनावपूर्ण, यौन-प्रेरित भूख नहीं जो मुझे पता है कि पारस्परिक थी। मैं उससे प्यार नहीं करती। मैंने कभी नहीं किया। मुझे नहीं लगता कि मैंने खुद को धोखा दिया, सिवाय उस प्यारे से कॉलेज के वसंत के दौरान जब मैंने उसे शारीरिक, नैतिक और मानसिक रूप से एक स्वर्णिम देवता बना दिया था। एक बार फिर, मैं अपने पहले आकर्षण को भोले-भाले आदर्शवाद का परिणाम मानती हूँ। और अब, इस नए आदमी को जानने की संभावना को लेकर मेरे अंदर एक नई उत्सुकता है: एक अलग, अधिक समझदार, तर्कसंगत, यथार्थवादी उत्सुकता जो निंदक नहीं, बल्कि रचनात्मक है। मुझे लगता है कि मैं उसे एक इंसान के रूप में, एक गलती करने वाले प्राणी के रूप में तुरंत स्वीकार करने के लिए तैयार हूं।

* * *

12 जनवरी। एक बार फिर, मैं व्यक्ति की अपनी ही सीमाओं की कैद पर विचार करने से खुद को रोक नहीं पा रही हूँ। अब जब मैं लगातार एक सीमित दायरे में ही सीमित हूँ—मुख्यतः अपने कमरे तक ही—तो मुझे पहले से कहीं अधिक इस बात का एहसास है कि मैं इस कमरे की किसी भी लड़की को नहीं जानती। हाँ, मैं उन्हें ऊपरी तौर पर देखती हूँ, कभी-कभार गपशप करती हूँ और दोस्ताना व्यवहार करती हूँ, लेकिन फिर भी, मैं उनमें से किसी को भी वास्तव में नहीं जानती—न ही उनके विचारों को, उनके पीछे की प्रेरणाओं को। मैं

कैसे बिखरे हुए ध्वनि के टुकड़े अचानक संगीत की एकता में समाहित हो गए हैं। और परमानंद की यह अचानक वृद्धि क्यों? मैं कल पहले से कहीं अधिक खुश था, इसलिए ऐसा नहीं है कि किसी एक घटना ने मुझे इस उत्थान की ओर अग्रसर किया हो। लेकिन इसने निश्चित रूप से इस प्रक्रिया को गति देने के लिए एक सकारात्मक उत्प्रेरक का काम किया। पहले मैं आपको अपने जीवन में आए इस बदलाव की शुरुआत के बारे में बताता हूँ। पिछली बार जब मैंने आपसे बात की थी, तब "उम्मीद की हल्की सी किरणें टिमटिमा रही थीं।" अब उनमें से कुछ सच हो गई हैं। मेरे जीवन के हर क्षेत्र में, मेरे भीतर के हर खाली, बंजर कोने में, चाहे वो शैक्षणिक हो, सामाजिक हो, कलात्मक हो, पारस्परिक हो (और इसी तरह आगे भी कई उप-विभागों में), रचनात्मक जीवन का पुनरुत्थान हो रहा है, एक नया मोड़ आ रहा है, एक नया अंकुर फूट रहा है। मैंने अपने शीतकालीन संक्रांति को पार कर लिया है, और जीवन और उर्वरता का मरता हुआ देवता पुनर्जन्म ले चुका है। वास्तव में, इस वर्ष मेरा व्यक्तिगत मौसमी जीवन वसंत विषुव से दो महीने आगे है!
तो ये तो बस शुरुआत है। मुझे खुशी है कि मैंने यहाँ अपने साथ घटी उस भयानक, नग्न और नर्क जैसी पीड़ा का कुछ हिस्सा लिख दिया। वरना, अपनी वर्तमान स्थिति से, मुझे इस पर विश्वास करना मुश्किल होता!
मैं लंबी दोपहरों में बिस्तर पर जाकर लेट जाती हूँ, पर्दे गिरा देती हूँ और रोशनी को रोक देती हूँ, नरम रजाई के नीचे गर्म, कोमल और कामुक अवस्था में लेटकर उसके [मायरॉन लोट्ज़] के सपने देखती हूँ और उससे बातें करती हूँ। ठीक है, मैं ज़्यादातर समय अच्छा और मेहनत से काम करती हूँ; शायद मैं अपनी यौन इच्छा के चरम पर हूँ, और मुझे अपनी इस दबी हुई चाहत पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

तो फिर क्यों नहीं? क्योंकि, मूर्ख, उसे इस बात का एहसास नहीं है कि तुम उसे अपने मन में एक ऐसे शक्तिशाली, प्रतिभाशाली पुरुष में बदल रही हो जो तुम्हें मानसिक और शारीरिक रूप से चाहता है। और चूंकि वह तुम्हारे मन में अपनी भूमिका से पूरी तरह अनजान रहेगा, इसलिए तुम उससे जीवन में उस भूमिका को निभाने की उम्मीद नहीं कर सकती। तुम्हें खुद को निराश नहीं होने देना चाहिए। याद रखो, तुम "प्रेम" को एक बहुत ही पेचीदा शब्द मानती हो; और इसके अनेक अर्थों में से एक है साझा कमजोरियों से उत्पन्न होने वाली भेद्यता। हर चीज़ का एक समय होता है; और तुम्हें हरे सेबों के प्रति अपने लगाव से सावधान रहना चाहिए। वे मीठे, खट्टे, ताज़े और कच्चे हो सकते हैं, लेकिन अब समय आ गया है कि तुम कटाई के मौसम का इंतज़ार करना सीख लो। कृपया धीरे-धीरे आगे बढ़ें। वह आपकी परमानंद की अनुभूति का कारण नहीं बनना चाहिए। कम से कम अभी तो नहीं।
छोटी-छोटी खुशियों की बात करें तो: मुझे लगता है कि यह किताब उस स्त्रीत्वपूर्ण बड़बड़ाहट के बीच झूलती रहती है जिससे मुझे नफरत है और उस बनावटी व्यंग्य के बीच जिससे मैं बचना चाहूंगी। एक बात, मैं ईमानदार रहने की कोशिश करती हूं। और जो सामने आता है वह अक्सर बेहद अप्रिय होता है। मैं स्पष्ट रूप से, बेहद बेसब्री से प्यार पाना चाहती हूं, और प्यार करने में सक्षम होना चाहती हूं। मैं अब भी बहुत भोली हूं; मुझे पता है कि मुझे क्या पसंद है और क्या नापसंद; लेकिन कृपया, मुझसे यह मत पूछिए कि मैं कौन हूं। शायद, "एक भावुक, अधूरी लड़की"?
छोटी-छोटी खुशियों की बात करें तो, जैसा कि मैं कह रहा था: क्या आपको पता है कि नाक कुरेदने से मुझे कितना गुप्त कामुक आनंद मिलता है? मुझे हमेशा से, बचपन से ही यह आनंद मिलता रहा है।

संवेदना के कितने सूक्ष्म रूप होते हैं! एक कोमल, नुकीले नाखूनों वाली पाँचवीं उंगली नाक के नथुने में सूखे पपड़ी और बलगम के टुकड़ों के नीचे फंस जाती है और उन्हें बाहर निकाल कर देखने, उंगलियों के बीच मसलने और छोटे-छोटे टुकड़ों के रूप में फर्श पर फेंकने का काम करती है। या एक भारी, दृढ़ तर्जनी उंगली ऊपर पहुँचकर नरम, लचीले, मुलायम हरे-पीले रंग के छोटे-छोटे बलगम के टुकड़ों को नीचे की ओर मलती है, उन्हें अंगूठे और तर्जनी के बीच गोल-गोल घुमाकर जेली की तरह बना देती है और उन्हें किसी डेस्क या कुर्सी की निचली सतह पर फैला देती है जहाँ वे सख्त होकर जैविक पपड़ी बन जाते हैं। बचपन से लेकर अब तक मैंने इस तरह चुपके से कितनी डेस्क और कुर्सियों को गंदा किया है? या कभी-कभी बलगम में खून मिला होता है: सूखे भूरे पपड़ी में, या उस उंगली पर अचानक चमकीला गीला लाल रंग जो नाक की झिल्ली को बहुत जोर से खरोंचती है। हे भगवान, क्या कामुक संतुष्टि है! पुरानी घिसी- पिटी आदतों को नए नजरिए से देखना बेहद दिलचस्प है: अचानक एक आलीशान और रोगजनक "नाक की गंदगी जैसे हरे सागर" को देखना और पहचान के सदमे से कांप उठना।
आज सुबह हमेशा की तरह बिस्तर पर लेटे हुए, बड़े, हल्के, लचीले पंखों वाले तकिये के नीचे, मैं सोचने लगी कि मुझे यहाँ अलग-अलग कोर्स क्यों नहीं करने चाहिए थे… हे भगवान, मुझे बेचैनी होने लगी, या यूँ कहूँ कि बेचैनी होने लगी। ज़िंदगी एक ही बार मिलती है, एक ही मौका! यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसे कैसे व्यवस्थित और समन्वित करते हैं ताकि जब अवसर दस्तक दे, तो आप दरवाज़े की कुंडी पकड़े उसका इंतज़ार कर रहे हों। अगर मुझे तब पता होता जो मुझे अब पता है (यानी, कि मैं स्नातकोत्तर की पढ़ाई करना चाहती हूँ), तो मैंने अंग्रेज़ी और कला पर इतना ध्यान

मैं सीधे इंग्लैंड और यूरोप की ओर ही क्यों न जाऊँ—या फिर पूर्व में ही रहूँ, जहाँ शिक्षा का कोई मुकाबला नहीं है। सच कहूँ तो, जीवन शुरू करने से पहले मुझे कम से कम एक साल और पढ़ाई करनी है। एक बार स्कूल जीवन से नाता टूट गया तो छात्रवृत्ति पर भी वापस लौटना मुश्किल हो जाएगा…
मैं उच्च शिक्षा को ज़िम्मेदारी से बचने का ज़रिया नहीं बनाना चाहती, लेकिन मुझे लगता है कि युद्ध के मैदान में उतरने से पहले मुझे और भी बहुत कुछ जानना चाहिए। इस गर्मी में मुझे मनोविज्ञान, दर्शनशास्त्र और अंग्रेज़ी में बहुत कुछ पढ़ना है: मेरे पास किताबों की एक बहुत बड़ी सूची है। आखिर क्यों, उन सभी शिविरों और सामाजिक गर्मियों में, मैंने युवा लड़कियों के उपन्यासों की बजाय कुछ उद्देश्यपूर्ण और स्थायी किताबें नहीं पढ़ीं? हालांकि, मुझे लगता है कि खेतिहर मजदूरों और ईसाई वैज्ञानिकों के साथ तालमेल बिठाना सीखना, कांट के श्रेणीबद्ध आदेश के बारे में सीखने से कम से कम उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि शायद उससे भी ज़्यादा। फिर भी, मैं आदेश के बारे में भी जागरूक होना चाहूंगी!
अब जब मैं अपने आप से ये बातें करती हूँ, तो अतीत इतना विकृत नहीं लगता, न ही भविष्य इतना अंधकारमय। अब मुझमें मेरी मैरी वेंचुरा से कहीं अधिक आशा है (और किसी भी साधारण चमकते करोड़पति की तुलना में घूमने-फिरने की आज़ादी की कितनी कम आशा है!)। एक दार्शनिक दृष्टिकोण: जीवन को पूरी तरह से जीना और उसका आनंद लेना: कृपया मुझे सोचना बंद न करने दें और अंधाधुंध भयभीत होकर स्वीकार करना शुरू न करने दें! मैं हर दिन का स्वाद लेना और उसमें आनंद लेना चाहती हूँ, और दर्द का अनुभव करने से कभी नहीं डरना चाहती; और कभी भी खुद को भावनाओं के सुन्न घेरे में बंद

नहीं करना चाहती, न ही जीवन पर सवाल उठाना और उसकी आलोचना करना बंद करके आसान रास्ता अपनाना चाहती हूँ। सीखना और सोचना: सोचना और जीना; जीना और सीखना: यह हमेशा, नई अंतर्दृष्टि, नई समझ और नए प्रेम के साथ।
सुबह 11 बजे। अभी भी वही सब चल रहा है, विज्ञान को नज़रअंदाज़ करते हुए, खिड़की से चिट्ठियों का इंतज़ार कर रही हूँ। आज सुबह भी बिस्तर पर ही मैंने अपने अवचेतन मन के शांत, स्थिर, सड़े हुए और साथ ही गहरे सागर को समेटना शुरू कर दिया। मैं अपने बचपन की जटिल यादों को समेटने की कोशिश करना चाहती हूँ: यादों के धुंधले और उथल-पुथल भरे सागर से भावनाओं और अनुभवों को पकड़ने का अभ्यास करना चाहती हूँ और उन्हें टाइपराइटर पर काले-सफेद अक्षरों में उतारना चाहती हूँ। जैसे मेरी रचना "द टू गॉड्स ऑफ एलिस डेनवे" में है।
याद है वो सामने वाली गली में रहने वाली फ्लोरेंस, जिसके बगीचे में नारंगी रंग की जापानी लालटेनें थीं, जो उंगलियों में छूते ही एक अजीब सी खड़खड़ाहट की आवाज़ करती थीं? याद है कैसे तुम बाथरूम का दरवाज़ा बंद कर लेते थे (वे मना करते थे कि ऐसा मत करो, कहीं अटक न जाए, और फिर फायर ब्रिगेड को खिड़की से अंदर आकर तुम्हें निकालना पड़े) और फर्श पर रखे छोटे शीशे के ऊपर बैठकर शौच करते थे? हे भगवान, सारी बातें याद करना शुरू करो; सारी छोटी-छोटी बातें!
ऑडेन की गीतात्मक जटिलताएँ मेरे कानों की गोलाकार नलिकाओं में रहस्यमय ढंग से गूंजती हैं और यह बर्फ़ की तरह दिखने लगती है। वह अच्छी, धूसर, रूढ़िवादी, मिटा देने वाली बर्फ़। एक के बाद एक सफ़ेद, कोमल शब्दों में, इस उजाड़, बंजर दुनिया की सारी काली, उजाड़, कोणीय, अस्वाभाविक, घिनौनी कुरूपता को मिटाते हुए: सूखी

कलियाँ, सिकुड़े हुए पत्थर के घर, मृत, ऊर्ध्वाधर गतिमान लोग - सब कुछ उस महान, सफ़ेद, मोहक लहर के नीचे समा जाता है। और रूपांतरित होकर बाहर आते हैं। क्रिस्टल की एक सुन्न, मूक, बर्फ़ से ढकी जाली में खो जाओ और उस सफ़ेद, पवित्र आवरण के साथ शुद्ध होकर बाहर आओ जो तुम्हारे पास कभी नहीं था। हे भगवान, ठंड के गीत के सांकेतिक भ्रम: अगर सर्दी आती है तो क्या बसंत आ सकता है... हम सितंबर की तुलना में बसंत के करीब हैं, मैंने दिसंबर, जनवरी, फरवरी, अप्रैल, खुबानी के अंधेरे में एक पक्षी को गाते सुना, डाल के नीचे। और तुम, हमेशा से, अनिवार्य रूप से और हमेशा के लिए एक तुम हो। अन्यथा मेरा कोई अस्तित्व नहीं है, क्योंकि मैं वही हूँ जो दूसरे लोग मुझे समझते हैं, और यदि मनुष्य न होते तो मैं कुछ भी नहीं होता। (जैसे किसी घिसे-पिटे पेड़ के जंगल में पुरानी आरी से कटकर गिरने की आवाज़।)
यहां प्लाथ ने मायरोन लोट्ज़ के साथ अपने रिश्ते को एक कठोर नजरिए से देखा है।
शक्ति: वह मुझे शक्ति प्रदान करता है। मैं मजबूत हूँ, भले ही कभी-कभी बचकानी और कमजोर हो जाती हूँ। लेकिन मैं मजबूत, स्वतंत्र और विचारशील हूँ। मुझे एक मजबूत साथी चाहिए: मैं उसे गलती से स्टीमरोलर की तरह कुचलना या दबाना नहीं चाहती, जैसा कि मैं बॉब के साथ करती। मुझे एक मजबूत, संभावित रूप से शक्तिशाली साथी खोजना होगा जो मेरे जीवंत, गतिशील व्यक्तित्व का मुकाबला कर सके: यौन और बौद्धिक रूप से, और सौहार्दपूर्ण होते हुए भी, मुझे उसकी प्रशंसा करनी चाहिए: सम्मान और प्रशंसा मेरे प्रेम के पात्र के अनुरूप होनी चाहिए (यहीं से मेरे भीतर पिता तुल्य, ईश्वर तुल्य गुणों के अंश आते हैं)। मैं मुख्य रूप से माँ नहीं बनना चाहती: मेरा प्रेम दया और क्षमा करने वाला, बिगड़े हुए

बच्चे जैसा नहीं हो सकता: इसलिए उस युवा, सुंदर पिल्ले वाली छवि को छोड़ दें। मानसिक रूप से: उसकी स्मृति बहुत तेज है, व्यावहारिक रूप से—पूरी तरह से वैज्ञानिक—एक अच्छा संतुलन— फिर भी वह सबसे आदर्शवादी कविता की सराहना और समझ रखता है—और साहित्यिक सौंदर्य के प्रति अद्वितीय रूप से संवेदनशील है। (मैंने तय कर लिया है कि मैं किसी लेखक या कलाकार से शादी नहीं कर सकती—गॉर्डन के बाद, मुझे समझ आ गया है कि अहम का टकराव कितना खतरनाक हो सकता है—खासकर अगर पत्नी को सारी स्वीकृति मिल जाए!) तो यहाँ हमारे पास एक वैज्ञानिक हैं, जो रचनात्मक कलाओं की सराहना करते हैं: बहुत बढ़िया। अगर मेरा लेखन आगे बढ़ता है, तो ऐसे गैर-प्रतिस्पर्धी और सौहार्दपूर्ण माहौल में यह अच्छी तरह से आगे बढ़ सकता है। इसके विपरीत, मुझे लगता है कि उनके लिए मुझे घर-गृहस्थी संभालना और उनके खाने-पीने की पसंद को संतुष्ट करना अच्छा लगेगा—साथ ही साथ एक जीवन शक्ति के रूप में काम करते रहना—शारीरिक और मानसिक रूप से उत्तेजित और पोषण प्रदान करना।
18 फरवरी। “ओह, मैं कार में बैठकर पहाड़ों में, तेज़ हवाओं वाली पहाड़ी पर बने एक केबिन में जाना चाहूँगी और वहाँ किसी गुफा में रहने वाली स्त्री की तरह, ज़बरदस्त कामुकता में डूबी हुई, संघर्ष करती, चीखती, काटती हुई, चरम सुख की प्रचंड अवस्था में, मेरा बलात्कार हो…” यह सुनने में अच्छा लगता है, है ना? सचमुच कोमल और स्त्रीत्वपूर्ण… क्या आपको लगता है कि भावुक लोग अवचेतन रूप से शारीरिक अक्षमता को यौन शक्ति पर हमले के रूप में देखते हैं? पिछले महीने दिवास्वप्नों के प्रति मेरे इस विकृत जुनून पर मुझे आश्चर्य होता है।

20 फरवरी। आज सारा दिन येट्स पर आलोचनात्मक किताबें पढ़ना, बिस्तर पर खाना खाना, और स्वादिष्ट मक्के से गाढ़ा किया हुआ सूप और टूना सलाद, मेयोनेज़ और गुलाबी रसीले मांस के टुकड़ों से भरपूर, उबले अंडे के कटे हुए टुकड़े, चिकने, रबर जैसे सफेद अर्धचंद्राकार टुकड़े जिनमें चमकीला पीला पीला भाग था, ठंडे दूध के लंबे घूंट, जिंजरब्रेड का स्वादिष्ट भूरा लचीलापन—और आज रात गरमा गरम चिपचिपी पनीर से बनी मैकरोनी, जीभ पर स्वादिष्ट लगने वाली हरी लिमा बीन्स, और आड़ू के टुकड़ों का मीठा सिरप जैसा पेस्ट। पता नहीं क्यों मुझे हमेशा बहुत प्यास लगती है, और पैर अजीब सा लगता है। कल डॉ. क्रिसमैन ने इसे प्लास्टर से निकाला और सफेद प्लास्टर का ढक्कन ऐसे उठाया जैसे कोई कब्र खोदने वाला सीलबंद ताबूत खोल रहा हो। मेरे पैर का शव वहाँ पड़ा था, भयानक, काले बालों के गुच्छों से भरा हुआ, पीला पड़ा हुआ, दो महीने के दफन के कारण आकारहीन हो चुका था। मुझे बहुत ठंड लग रही थी, मैं असुरक्षित और कमजोर महसूस कर रही थी, और एक्स-रे में दिखा कि "यह पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ है।" अस्पताल में व्हर्लपूल बाथ लिया, और त्वचा कच्ची, सफेद और दर्दनाक होकर पपड़ी बनकर उतर रही थी। घर आकर दांत पीसते हुए रेजर से उसे खुजलाया: मैं उसे स्वीकार नहीं करना चाहती थी। सीढ़ियों पर लगभग गिर पड़ी, पैर में चोट लगी, तेज झनझनाहट वाला दर्द हुआ। पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ। क्या इसका मतलब है कि मैं अगले एक महीने तक इस पर नहीं चल सकती? या क्या मैं इस बेचारे अनाथ अधमरे पैर को एक और प्लास्टर में दफना दूँ? आज इस पर पैर रख दिया। बिजली नहीं गिरी; मैं फर्श पर नहीं गिरी। अजीब है: अस्थायी और पुनर्वास सबसे बुरा है, अनिश्चितता भी। क्लास छूट गईं, मायरोन का फोन आया (जब मैं उससे अचानक फोन पर बात करती हूँ तो मेरी आवाज

और होश दोनों चले जाते हैं), शायद कल कार न आए, टावरों का एक और गिरना और इमारतों का ढहना। मुझे घुटन महसूस हो रही है, जैसे सांस लेने के लिए पर्याप्त हवा न हो—गर्म और बेचैन। दो महीने तक व्यायाम न करने से मैं मानसिक और शारीरिक रूप से कमजोर और सुस्त हो गई हूँ। यहां से पुस्तकालय तक की छोटी सी पैदल यात्रा में, मैं ठंडी, शुद्ध रात्रि वायु और अविश्वसनीय रूप से कोमल अर्धचंद्राकार चांदनी को लालची श्रद्धा से पीता हूँ। दिन ग्रीनहाउस जैसी सुस्ती, रहस्यमय और मार्मिक कामुक उद्धरणों का विचित्र संग्रह हैं ("तेरी सफेद चमड़ी, लाल चमड़ी, और तेरे क्वारोन्स नाज़ुक हैं..." शब्दों की गहरी, तरल सुंदरता जिसे आधा- अधूरा समझा जा सकता है)। आज और कल पहली विलानेले लिखी; समय के बीतने का एक और दृष्टिकोण: क्षणभंगुर नश्वर सौंदर्य और समय के शाश्वत प्रवाह के शाश्वत विरोधाभास को एक साथ रखने की कोशिश की
- कुछ शब्द-खेल: "प्लॉट" (चाल और चालाकी दोनों) और "स्कीम्स" (पैटर्न और विश्वासघात दोनों)। मैं इतने समय से जो कहना चाह रहा हूँ वह यह है: येट्स की किताबों से कुछ उद्धृत करना चाहता हूँ जिसने मुझे ड्राइडन के ल्यूक्रेटियस के अनुवाद के बारे में प्रभावित किया: "यौन संबंध की त्रासदी आत्मा की शाश्वत कुंवारीपन है।" “यौन संबंध शाश्वत विरोधाभास को सुलझाने का एक प्रयास है, जो विफलता के लिए अभिशप्त है क्योंकि यह खाई के केवल एक ही तरफ घटित होता है।” स्वीडनबर्ग: “देवदूतों का यौन संबंध संपूर्ण अस्तित्व की प्रज्वलन है…”
रविवार, 1 मार्च। कल ही बड़ी खुशी और उत्साह में खरीदी गई नई फॉर्मल ड्रेस के सफेद नेट से छनकर आती धूप की किरणें चमक रही थीं। चांदी की ऊंची हील वाली सैंडल मेरी अगली खरीदारी है—जो ज़मीन पर बेढंगे चलने से मेरी मुक्ति का प्रतीक है।

स्ट्रैपलेस, फ्लोटिंग नेट गाउन का चांदी के पंखों वाला ऊपरी हिस्सा। यकीन नहीं होता कि यह इतना सही हो सकता है! इस साल के जूनियर प्रॉम की तुलना दो साल पहले के जूनियर प्रॉम से करना सरासर अन्याय होगा—उस समय के भोले-भाले, सीधे-सादे चुंबन का सफेद रंग और आदर्शवाद का उत्साह (जो छह महीने बाद टूट जाएगा), और इस आशाजनक आयोजन की तर्कसंगत, बेहद परिपक्व मानसिक और शारीरिक ऊंचाइयां अतुलनीय हैं। मैं उसके लिए चांदी की तरह खूबसूरत दिखना चाहती हूं: एक वन देवी। सच कहूं तो, मेरे लिए जीवन एक चक्कर है, जो ऊपर की ओर घूमता है, अतीत को समझता और समाहित करता है, उससे लाभ उठाता है, फिर भी उससे आगे बढ़ता है! मैं यह सुनिश्चित करने का पक्का इरादा कर लूंगी कि मैं कभी भी ठहराव के एक ही चक्र में न फंस जाऊं। खैर, भगवान ही जानता है कि मैंने कब इस आनंदमय, इस अटूट उल्लास का अनुभव किया है! मैं उत्साह से भरी हुई हूं: मेरे अंदर कई छोटी-छोटी खुशियां पल रही हैं: मायरोन, भविष्य की यात्राएं, आधुनिक कविता, येट्स, सिटवेल, टी. एस. एलियट, डब्ल्यू. एच. ऑडन, विलेनेल्स, शायद मैडम, शायद द न्यू यॉर्कर या द अटलांटिक (भेजी गई कविताएं अंधी आशा को अमर कर देती हैं - भले ही अस्वीकृति निश्चित हो), बसंत ऋतु: साइकिल चलाना, सांस लेना, धूप सेंकना, टैनिंग करना। सब कुछ कितना प्यारा और संभावनाओं से भरा है।
27 अप्रैल। सुनो और चुप रहो, हे अल्पविश्वासी लोगो! 1953 के एक खास साल की एक खास शाम को, तीव्र तनाव, शारीरिक इच्छाओं और मानसिक उथल-पुथल के एक जटिल मिश्रण ने एक नश्वर, अपूर्ण ईव को उस प्रचंड सत्यता, शक्ति और दृढ़ संकल्प से भर दिया, जो रेगिस्तान में भूखे संत द्वारा अनुभव किए गए परमानंद के समान था, जब वह अपनी जीभ पर ईश्वर की ठंडी बूंदों की चटकती अनुभूति करता है और

सिंहपर्णी के पत्तों की तरह हरे-भरे स्वर्गदूतों को उगते हुए देखता है, प्रचुर मात्रा में और असीम रूप से अप्रत्याशित। कारण: कुछ तो हुआ। हार्पर के रसेल लाइन्स ने मेरी तीन कविताएँ ("डूम्सडे," "गो गेट द गुडली स्क्वाब" और "टू ईवा डिसेंडिंग द स्टेयर") 100 डॉलर में खरीदीं। इसका क्या अर्थ है? पहली वास्तविक पेशेवर स्वीकृति, ईश्वर और सभी संभावनाएँ। अपने दिमाग और शब्दावली को लगातार खोलते रहना, समझ के व्यापक और उदार क्षेत्रों में विस्तार करना। चीजें पटाखों की एक श्रृंखला की तरह घट रही हैं, लेकिन हर शानदार विस्फोटक घटना का एक वैध कारण और परिणाम होना चाहिए। आज सुबह स्मिथ रिव्यू के संपादक: कैंपस में वह एक पद जिसकी मुझे बहुत चाह थी; मनोविज्ञान के बारे में संतुलन बनाना; हार्वर्ड समर स्कूल की संभावना - पेड़ों के नीचे छुट्टियों की मेजें। इस सप्ताहांत न्यूयॉर्क और रे [बेलमोंट होटल में काम करने वाला एक दोस्त] (और न्यूरोलॉजी और प्रतिभा)। अगले सप्ताहांत न्यू हेवन और माइक [लॉट्ज़] (धूप, समुद्र तट, सच्चा प्यार)।
आज रात, वसंत ऋतु, बहुल, उपजाऊ, कोमल बादलों से ढके चाँद को हरे- भरे पत्तों के गुच्छे भेंट कर रही है। और हे भगवान, एलिजाबेथ ड्रू के सामने वाले बैठक कक्ष में ऑडेन को पढ़ते हुए सुनना, और विंड के प्रश्नवाचक, तीक्ष्ण बुद्धि से भरे वाक्पटुता भरे विचार। हे मेरे प्लेटो! मैं तो साधारण हूँ! और ड्रू (उत्साही, अत्यंत कोमल, बुद्धिमान एलिजाबेथ) कह रही हैं: "यह तो सचमुच कठिन है।"
ऑडेन अपने बड़े सिर को पीछे की ओर झुकाते हुए, चौड़ी, बदसूरत मुस्कान वाले होंठों को मरोड़ते हुए, अपने सुनहरे बालों, खुरदरी भूरी जैकेट, जूट जैसी बनावट वाली आवाज़ और तीखे,

प्रतिभाशाली शब्दों से लथपथ—वह शरारती, चंचल बालक जैसा प्रतिभाशाली, और उसकी टांगों की असमान सफेद, बिना बालों वाली त्वचा, और छोटी, फूली हुई, ठूंठदार उंगलियां—और कालीन की चप्पलें—वह बीयर पीता था, और काले होल्डर में लकी स्ट्राइक्स सिगरेट पीता था, हाथों में माचिस लिए एक नई सफेद सिगरेट से इशारे करते हुए, कर्कश और तीखे स्वर में बात करता था कि कैलिबन कैसे स्वाभाविक पशुवत प्रक्षेपण है, एरियल रचनात्मक कल्पनाशील है, और उनके प्रेम और अलगाव, कला और जीवन, दर्पण और समुद्र की सभी जटिल गीतात्मक गूढ़ताओं के बारे में। हे भगवान, हे भगवान, उस आदमी का कद! और अगले हफ्ते, कांपते हुए साहस के साथ, मैं कविताओं का एक गट्ठा लेकर उसके पास जाता हूँ। हे भगवान, अगर यही जीवन है, आधा सुना हुआ, झलका हुआ, सूंघा हुआ, बीयर और चीज़ सैंडविच के साथ और ईश्वर जैसी दृष्टि वाले ऊंचे दिमाग वाले लोगों के साथ, तो मुझे कभी अंधा न होने दें, या सीखने की पीड़ा से, समझने की कोशिश के भयानक दर्द से कभी वंचित न होने दें।
कल हम फिर से उस घिनौने, घड़ी की कल से चलने वाले गिरगिट के पीछे भागना शुरू करेंगे जो परियों की कहानियों के राजकुमार या राजकुमारी जैसा दिखता है, लेकिन इंसानी हाथों के स्पर्श से मस्सेदार मेंढक या चिमटेदार तिलचट्टे में बदल जाता है। वह गुण कहाँ मिलेगा जिसकी मुझे इतनी चाह है, जो पचास वर्षों तक सुंदर और हरा-भरा बना रहे—क्या वह मन है? फिर रे के पास मन है, लेकिन शरीर कमज़ोर है: पतला, कद छोटा, और आप सपाट जूतों के बारे में सोचते हैं, जीवन भर खुद को बड़ा और फूला हुआ महसूस करते हैं, धरती माता की तरह पीठ के बल लेटे हुए, एक गुनगुनाते हुए सम्मोहित कीड़े द्वारा बलात्कार किए जाने और बजरी के गड्ढे में हज़ारों छोटे सफेद अंडे देने के बारे में सोचते हैं, और आप

फ्लोरिडा और सूरज के बारे में सोचते हैं, उसके समाज की बंदिशें, भड़कीले कपड़े, सब कुछ मन के सामने सिकुड़ता, फीका पड़ता है, और शायद वह चंचल रूप से कीड़ों जैसी नाज़ुक तितली जैसी महिलाओं से प्यार करता है, लेकिन उसके हाथों, सिर और जीभ की निपुण गति थी और यह आश्चर्यजनक ज्ञान था कि बिजली की तरह तेज़ मन की उपस्थिति में सच्चा प्यार पदार्थ की कमियों और विसंगतियों को नज़रअंदाज़ कर सकता है। एक समय मुझे भी लगा था कि मैं उसके साथ रह सकती हूँ। हे भगवान! मैं यकीनों और शंकाओं के बीच कैसे झूलता रहता हूँ। अतीत के विश्वासों पर संदेह वर्तमान आश्वासनों पर लांछन लगाते हैं और द्वेषपूर्ण ढंग से यह सुझाव देते हैं कि वे भी शून्य और व्यर्थ हो जाएँगे—और फिर आज रात उस कवि का दर्शन, वह चाहत… क्या? जीतना? बात करना? यह पहली बार… मेरे कानों में गूंजते “जब तुम मुझसे प्रेम करो तो मुझे मत मारो…” के बाद। इन सभी लड़कों से मुझे थोड़ा-थोड़ा प्यार है, और तीन साल पहले तक यह ठीक था, लेकिन अब, मैं उनमें से किसी को भी इतना अच्छी तरह से नहीं जानती कि अगर कोई पूछे तो मैं कह सकूँ: “ठीक है, यह रहा एक प्रमाण पत्र जो इस बात की गारंटी देता है कि एक भावी स्मिथ फाई-बेटे, (शायद) संभावित छोटी कवयित्री और कहानीकार, कभी शौकिया कलाकार रही, काफी स्वस्थ और आकर्षक, जीवित, समझदार, लंबी, कामुक, शक्तिशाली, रंगीन गोरी महिला, उम्र 21, आपको 50 साल सौंप रही है जिसके दौरान वह आपकी कमियों से प्यार करेगी, आपकी क्रूरता का सम्मान करेगी, आपकी सनक का पालन करेगी, आपकी रखेलों को नजरअंदाज करेगी, आपकी संतानों की देखभाल करेगी, आपके घर की दीवारों को फूलों से सजाएगी, और आपको अपने मरते हुए नश्वर देवता के रूप में पूजेगी, प्रसव पीड़ा में बच्चे और नए व्यंजन बनाएगी, और तब तक आपके प्रति वफादार रहेगी जब तक आप दोनों सड़ न जाएँ और मृत्यु

का अपरिहार्य सम्मोहन शुरू न हो जाए।” मुझे इस बात का बहुत पक्का यकीन होना चाहिए कि यह (विवाह) न तो कोई आकर्षक जुआ है और न ही क्षणिक पलायन। मैं इन तीनों लड़कों में से किसी को भी इतना अच्छी तरह से नहीं जानती कि उनके जीवन के बारे में कोई राय दे सकूँ, यहाँ तक कि एक सामान्य सी भी। मुझे उनके व्यक्तित्व को लगातार संपर्क में रहकर समझना होगा... मैं जिस एक लड़के को सच में अच्छी तरह जानती हूँ, उसे इतना तो जानती हूँ कि उससे कभी शादी नहीं कर सकती और न ही उससे प्यार कर सकती हूँ—ओह, एक प्यार, एक बढ़ता हुआ रिश्ता कितना अच्छा, कितना सरल होता! और आज के इस तेज़ और जटिल दौर में, जहाँ हर तरफ़ गति, मनोदशा और मनोविज्ञान का बोलबाला है, किसी को "जानना" लगभग नामुमकिन है, जैसे खुद को "जानना" नामुमकिन है। अचानक बाकी सब लोग शादीशुदा और खुश हैं, और मैं बहुत अकेली हूँ, और हर सुबह अकेले उबला हुआ बेस्वाद अंडा खाने और दुनिया को मीठी मुस्कान देने के लिए होंठों पर लाल रंग लगाने से कड़वाहट महसूस करती हूँ।
कुछ लोग ऐसे प्रतीकों पर इतना भरोसा करते हैं जो कथित तौर पर बड़ी-बड़ी धारणाओं का पूर्वाभास देते हैं। वे बैले देखने जाते हैं, इसलिए वे संवेदनशील और कलात्मक होंगे। वे कविताएँ उद्धृत करते हैं, इसलिए वे समभाव वाले होंगे। वे जॉयस को पढ़ते हैं, इसलिए वे प्रतिभाशाली होंगे।
सच कहूँ तो, मैं अपने लिए एक आदर्श पुरुष की कल्पना करने के खतरे में हूँ, और क्योंकि ऐसे लोग बहुत कम हैं, इसलिए मैं अक्सर अनजाने में ही अपना आदर्श गढ़ लेती हूँ। फिर, मैं एकांत में जाकर कविता और साहित्य में मग्न हो जाती हूँ, जहाँ मुझे एक ठोस और स्वीकार्य संतुष्टि मिलती है। मैं वास्तव में गहराई से नहीं सोचती। मुझे एक काल्पनिक, काल्पनिक रोमांटिक नायक चाहिए।

14 मई। आज रात "रिंग अराउंड द मून" में प्रस्तुति देने के बाद मैं अकेले ही घर की ओर चल पड़ा। बारिश अभी-अभी रुकी थी; मैं सीढ़ियों पर आधा ही चढ़ा था कि मुझे ख्याल आया कि घर में आते ही मैं अकेला नहीं होऊंगा, और मैं मुड़कर भीगी हुई पगडंडी पर, टूटी हुई पक्की सड़क के गड्ढों में पानी भरा हुआ था, और हवा में डॉगवुड और फूलों की मीठी खुशबू फैली हुई थी, और रोशनी अनोखी और कोमल थी, और भीगी हुई सड़कें उन्हें प्रतिबिंबित कर रही थीं। गुमनाम होकर चलना और खुद से फिर से बातें करना अच्छा लगा, यह पूछना कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, मैं कौन हूँ, और यह महसूस करना कि मुझे खुद भी कुछ पता नहीं है, कि मैं आपको सिर्फ अपना नाम बता सकता हूँ, अपनी विरासत नहीं; अगले हफ्ते का अपना दैनिक कार्यक्रम नहीं, उसका कारण नहीं; गर्मियों की योजनाएँ नहीं, बल्कि जीवन का वह उद्देश्य नहीं जो मैंने अपने लिए गढ़ा था। मैं भाग्यशाली हूँ: मैं स्मिथ पत्रिका में इसलिए हूँ क्योंकि मैं यहाँ आना चाहती थी और इसके लिए मैंने कड़ी मेहनत की। जून में मैं मैडम के लिए गेस्ट एडिटर बनने जा रही हूँ क्योंकि मैं यहाँ आना चाहती थी और इसके लिए मैंने कड़ी मेहनत की। हार्पर पत्रिका में मेरा लेख प्रकाशित हो रहा है क्योंकि मैं यहाँ आना चाहती थी और इसके लिए मैंने कड़ी मेहनत की। सौभाग्य से, मैं अपनी इच्छा को काम के ज़रिए हकीकत में बदल सकी।
लेकिन अब, हालांकि मैं दिल से एक व्यावहारिक मैकियावेलीवादी हूँ, मुझे अपने जीवन के तीनों पुरुष दूर लगते हैं क्योंकि मैंने पहले काम किया और बाद में उसका विश्लेषण किया। मैंने स्पष्ट रूप से नहीं सोचा: “मुझे यह चाहिए; इसे पाने के लिए मुझे ऐसा करना होगा। इसलिए मैं ऐसा करूँगी। अतः मुझे वह मिल जाएगा जो मैं चाहती हूँ।” मूर्ख लड़की, तुम दया दिखाकर कभी किसी का दिल नहीं

जीत पाओगी। तुम्हें सही तरह का सपना बुनना होगा, एक समझदार वयस्क की तरह का जादू: मोहभंग से जन्मा भ्रम।
क्या कोई कहीं खुश है? नहीं, जब तक कि वे किसी सपने में या किसी बनावटीपन में न जी रहे हों, जिसे उन्होंने या किसी और ने बनाया हो। एक समय मैं शैम्पेन से भरे स्तनों और कैवियार से बने निपल्स वाले अंधे आशावाद के आलिंगन में खो गया था। मैंने सोचा कि वह सच्ची है, और सच्चा ही सुंदर है। लेकिन सच्चा तो हर जगह मिला हुआ कुरूप है, जैसे जीवन में बिखरी हुई धूल का एक कण। सच्चा यह है कि कोई सुरक्षा नहीं है, कोई बनावटीपन नहीं है जो अप्रिय बदलावों, चूहा-दौड़, मृत्यु की अनिच्छा—पंखों वाले रथ, सींग और मोटर, घड़ी में छिपे शैतान—को रोक सके। प्रेम उन दो सच्चे माता-पिता की जगह लेने की एक बेताब बनावटी कोशिश है, जो सर्वज्ञता से सही देवता तो नहीं निकले, लेकिन उपनगरीय जीवन के कुछ साधारण और उलझे हुए लोग निकले, जो चाहे कितनी भी कोशिश कर लें, कभी यह नहीं समझ पाए कि आप 21 वें जन्मदिन तक कैसे और क्यों पहुंचे। प्रेम यह नहीं है अगर आप इसे कुछ और ही बना दें। लेकिन आपमें से ज्यादातर लोग चीजें बनाने में अच्छे नहीं हैं। “सुंदरता देखने वाले की नज़र में होती है।” कितना घिसा-पिटा कथन है। मेरी देखी हुई सुंदरियाँ दोबारा देखते ही क्यों गायब हो जाती हैं और विकृत हो जाती हैं?
मैं किसी से प्यार करना चाहती हूँ क्योंकि मैं प्यार पाना चाहती हूँ। खरगोश की तरह डर के मारे मैं खुद को कार के पहियों के नीचे फेंक सकती हूँ क्योंकि रोशनी मुझे डराती है, और पहियों की अंधेरी मौत के नीचे मैं सुरक्षित रहूँगी। मैं बहुत थकी हुई हूँ, बहुत नीरस हूँ, बहुत उलझन में हूँ। मुझे नहीं पता कि आज रात मैं कौन हूँ। मैं तब तक चलना चाहती थी जब तक मैं गिर न जाऊँ और घर

लौटने के इस अपरिहार्य चक्र को पूरा न करूँ। मैं उन लड़कियों के ऊपर, नीचे और गलियारे में बक्सों में रही हूँ जो गहराई से सोचती हैं, मेरे जैसी ही भावनाएँ रखती हैं और साथ की चाह रखती हैं, और मैंने उनसे संबंध बनाने की कोशिश नहीं की क्योंकि मैं समय का त्याग नहीं करना चाहती थी, कर नहीं सकती थी। लोग मुझे जानते हैं, और जितना अधिक मैं उन्हें जानने की कोशिश करती हूँ, उतना ही मैं उनके नाम भूल जाती हूँ—मैं अकेला रहना चाहती हूँ, और फिर भी कभी-कभी एक छोटे बंदर की नम आँखें और सचेत मुस्कान मुझे भाईचारे के प्यार में रुला देती हैं। मैं अकेले काम करती हूँ और सोचती हूँ। मैं लोगों के साथ रहती हूँ और व्यवहार करती हूँ। मैं दोनों से प्यार करती हूँ और उन्हें संजोती हूँ। अगर मुझे अभी पता होता कि मैं क्या चाहती हूँ, तो मैं उसे देखते ही पहचान जाती कि वह कौन है।
मैं लिखना चाहता हूँ क्योंकि जीवन के अनुवाद और अभिव्यक्ति के एक माध्यम में उत्कृष्टता प्राप्त करने की तीव्र इच्छा है। मैं केवल जीने के विशाल कार्य से संतुष्ट नहीं हो सकता। नहीं, मुझे जीवन को सॉनेट और सेस्टिना में व्यवस्थित करना है और अपने 60-वॉट की रोशनी से जगमगाते दिमाग के लिए एक शब्द प्रतिबिंब प्रदान करना है। प्रेम एक भ्रम है, लेकिन अगर मैं इस पर विश्वास कर पाता तो मैं खुशी-खुशी इसके जाल में फंस जाता। अब सब कुछ या तो दूर, उदास और ठंडा लगता है, जैसे किसी घाटी की तलहटी में पड़ा हुआ सीसे का टुकड़ा—या फिर गर्म, पास और बिना सोचे-समझे, जैसे गुलाबी डॉगवुड का पेड़। हे भगवान, मुझे स्पष्ट और उज्ज्वल रूप से सोचने दो; मुझे जीने दो, प्रेम करने दो और इसे अच्छे वाक्यों में व्यक्त करने दो, मुझे कभी यह देखने दो कि मैं कौन हूँ और मैं चार साल तक भोजन, आश्रय, परीक्षा और शोध पत्रों को बिना अधिक

प्रश्न किए क्यों स्वीकार करता हूँ। मैं थका हुआ, नीरस हूँ और अब मैं न केवल एक-शब्दों में बोल रहा हूँ बल्कि पुनरावृत्ति भी कर रहा हूँ। कल मृत्यु की ओर एक और दिन है (जो मेरे साथ कभी नहीं हो सकता क्योंकि मैं मैं हूँ, जिसका अर्थ है अजेय)। संतरे के रस और कॉफी के साथ, आत्महत्या की दहलीज पर खड़ी भावना भी स्पष्ट रूप से उज्ज्वल हो जाती है।
मैडमोजेल में अतिथि संपादक के रूप में बिताए अनुभव से संबंधित केवल निम्नलिखित प्रविष्टि ही बची है। इसके बाद की प्रविष्टियाँ ही 24 अगस्त, 1953 को प्लाथ द्वारा आत्महत्या के प्रयास से पहले की हैं।
न्यूयॉर्क
19 जून, 1953। ठीक है, तो अखबारों की सुर्खियों में यही खबर छाई हुई है कि उन दोनों [रोसेनबर्ग] को आज रात ग्यारह बजे मौत की सजा दी जाएगी। मेरा दिल बैठ गया। मुझे पत्रकार की वह घिनौनी रिपोर्ट याद है, जिसमें एक मौत की सजा पाए व्यक्ति को बिजली के झटके से मौत की सजा दिए जाने का तथ्यात्मक वर्णन था, देखने वालों के चेहरों पर साफ नजर आ रही हैरानी, मौत से जुड़े विवरण, चौंकाने वाले शारीरिक तथ्य, चीख, धुआं, और वह सीधी-सादी, भावहीन रिपोर्टिंग जिसने अनकही बातों की वजह से मेरे दिल को झकझोर दिया।
लंबी, खूबसूरत, बिल्ली जैसी दिखने वाली वह लड़की, जो हर रोज काम पर एक अनोखी टोपी पहनकर आती थी, कॉन्फ्रेंस रूम में सोफे पर झपकी ले रही थी, तभी वह एक कोहनी के बल उठी, जम्हाई ली और बड़ी ही खूबसूरत, ऊबा हुआ और चिड़चिड़े अंदाज में बोली: "मुझे बहुत खुशी है कि वे मरने वाले हैं।" उसने कमरे में चारों ओर बेफिक्री से और

बड़े ही आत्मसंतुष्ट भाव से देखा, अपनी विशाल हरी आँखें बंद कीं और फिर से सो गई।
फोन हमेशा की तरह बज रहे हैं, और लोग लंबे सप्ताहांत में देश से बाहर जाने की योजना बना रहे हैं, और हर कोई लापरवाह और काफी खुश है और कोई भी इस बारे में ज्यादा नहीं सोचता कि मानव जीवन कितना विशाल है, जिसमें सभी नसें, स्नायु, प्रतिक्रियाएं और क्रियाएं शामिल हैं जिन्हें विकसित होने में सदियों लग गए।
वे परमाणु रहस्यों से लोगों को मारने वाले थे। उनका मरना अच्छा है। ताकि हमें उन परमाणु रहस्यों से लोगों को मारने की प्राथमिकता मिल सके, जो अत्यंत ईर्ष्यापूर्वक, विशेष रूप से और अमानवीय रूप से हमारे हैं।
न चीख-पुकार है, न दहशत, न कोई बड़ा विद्रोह। यही सबसे भयावह बात है। फांसी आज रात होगी; अफसोस की बात है कि इसका टीवी पर प्रसारण नहीं हो सका... यह आम अपराध कार्यक्रमों से कहीं अधिक यथार्थवादी और फायदेमंद होता। दो असली लोगों को फांसी दी जा रही है। कोई बात नहीं। अमेरिका में सबसे बड़ी भावनात्मक प्रतिक्रिया एक बड़ी, लोकतांत्रिक, बेहद ऊबाऊ, लापरवाह और आत्मसंतुष्ट उबासी होगी।
वेलेस्ली
एक अतिविकसित, अति-सुरक्षित, डरे हुए और बिगड़े हुए बच्चे को पत्र:
अब फैसला लेने का सही समय है: हार्वर्ड समर स्कूल में जाना है या नहीं। यह उत्साह खोने, खालीपन महसूस करने या दुनिया के हर व्यक्ति से ईर्ष्या करने का समय नहीं है, क्योंकि वे सौभाग्य से अपने भीतर ही प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुके हैं, न कि आपमें।

वर्ष में इतना लंबा समय बिताने का यह एकमात्र मौका है। यह वह गर्मी है जिसमें मेरे पास बहुत सारा काम जमा हो जाता है। ठीक है, तो मुझे समर स्कूल की स्कॉलरशिप छोड़नी पड़ेगी, जिसका मतलब है कि मुझे एक कोर्स के लिए उतनी ही फीस देनी पड़ेगी, जिसकी मुझे शायद लंबे समय में कोई परवाह न हो, या फिर हर बार जब मैं उस पैसे (लगभग 250 डॉलर) के बारे में सोचूँ तो मुझे बहुत दुख हो। मेरे सीनियर ईयर के अंत में मेरे पास मुश्किल से 100 से 200 डॉलर ही बचेंगे... बिलकुल मामूली रकम।
अगर मैं समर स्कूल जाती, तो नए लोगों से मिलती, बेशक समलैंगिक और अच्छे लोगों से; मेरे पास लाइब्रेरी, गतिविधियाँ और कैम्ब्रिज का आनंद लेने का मौका होता। यह एक बहुत ही सुखद विलासिता हो सकती थी। फिर भी, मैं सैली और जेन से मिलती, उनके दिलचस्प कामों के बारे में सुनती, और खुद पर काबू न रख पाने के बावजूद, मुझे बहुत बुरा लगता: और 250 डॉलर बेमन से खर्च करना मुझे बिलकुल भी पसंद नहीं है। मैं जो भी विकल्प चुनूँ, उसके लिए मुझे एक सुनियोजित कार्यक्रम, एक रचनात्मक और बहुत ही अनुशासित दृष्टिकोण अपनाना होगा, वरना मैं इस लेख के लायक भी नहीं हूँ। अगर मैं घर पर रहूँगी, तो गर्मियों में अकेले ही रहूँगी, जब तक कि मैं पड़ोसियों से मिलने न जाऊँ। मैं न तो पैसे कमाऊँगी और न ही खर्च करूँगी। मुझे खुशमिजाज और रचनात्मक रहना होगा, और हार्वर्ड में रहने की तुलना में अपने दिन का शेड्यूल बहुत सख्ती से बनाना होगा। मैं खरीदारी और खाना बनाना सीखूँगी, और माँ की छुट्टियों को खुशहाल और यादगार बनाने की कोशिश करूँगी। यही अपने आप में सार्थक होगा। मैं रोज़ दो घंटे शॉर्टहैंड का अभ्यास करूँगी और टाइपिंग में सुधार करूँगी। मैं हर दिन तीन या चार घंटे लिखूँगी, और उतनी ही देर तक एक सावधानीपूर्वक बनाई गई

पठन सूची से किताबें पढूँगी, ताकि मैं बिना सोचे-समझे कोई किताब न पढ़ लूँ।
मैं यह सोचना नहीं चाहती कि मैं डर के मारे घर पर बैठी हूँ: मार्सिया और माइक से, सैली और जेन से, जो आराम से घर पर रहकर काम कर रही हैं। मुझे व्यस्त रहना, मेहनत करना पसंद है, और इसके विपरीत, जैसा कि मैंने कहा, मुझे आलसी और दोषी महसूस होगा। जो एक तरह से मेरी कमजोरी को दर्शाता है।
इस बात को हकीकत में स्वीकार करो। अगर मैं हार्वर्ड जाती हूँ तो मुझे अपनी छात्रवृत्ति छोड़नी पड़ेगी… फैसला मेरा अपना है। मुझे रचनात्मक रूप से “अस्तित्ववादी” बनना होगा। यह बहुत मुश्किल है, क्योंकि मेरा मन बार-बार गर्भ में वापस जाने का करता है…
गर्मी के बीच में, मैं जॉयस को पढ़ना शुरू करूँगा, ताकि पतझड़ की शुरुआत में ही मेरे पास अपने शोध प्रबंध के अध्यायों के लेखन के बारे में सोचने के लिए पर्याप्त पठन सामग्री हो। मैं निष्क्रिय नहीं रहूँगा और न ही आलसी बनूँगा। और घर पर, मैं अपने मन में उठने वाले उस छोटे से सवाल को हावी नहीं होने दूँगा: क्या यह सब करना उचित है, क्या यह करना उचित है, क्या यह 250 डॉलर का कोर्स करना उचित है, जबकि तुम्हारी माँ घर का सारा काम करती है?
मुझे स्पष्ट और ईमानदारी से निर्णय लेने होंगे, बिना बीमार हुए ताकि मैं खाना न खा सकूं, जो अपने आप में एक रक्षा तंत्र है जो सहानुभूति पाने और जिम्मेदारी से बचने के लिए बचपन की रणनीति अपनाने की कोशिश करता है।
घर पर, मुझे समर स्कूल की आदर्शवादी तस्वीरें भी नहीं गढ़नी चाहिए, मार्सिया से ईर्ष्या नहीं करनी चाहिए, जिसके पास

आखिरकार अपनी समृद्ध गर्मियों को सही ठहराने के लिए एक नौकरी है (और जिसने पिछली गर्मियों में बहुत अच्छा समय बिताया था)। और हाँ, अगर आपमें आगे बढ़ने का साहस और कल्पनाशीलता है, तो जीवन में हर चीज़ के बारे में लिखा जा सकता है। रचनात्मकता का सबसे बड़ा दुश्मन आत्मसंदेह है। और आप अपनी आने वाली आत्मनिर्भरता की ज़रूरत, इस विशाल, निर्मम दुनिया का सामना करने की चिंता में इतने डूबे हुए हैं कि आप पंगु हो गए हैं: आपका पूरा शरीर और आत्मा एक विशेष भूमिका, एक विशेष जीवन के प्रति प्रतिबद्ध होने के खिलाफ विद्रोह कर रहे हैं, जो शायद आपके भीतर की सर्वश्रेष्ठता को बाहर न ला पाए। जीवन जीने के लिए इस किताबी सुखवाद से बिल्कुल अलग तरह की प्रतिक्रियाओं और दृष्टिकोणों की आवश्यकता होती है... और आपको किसी और से बना बनाया जीवन पाने की उम्मीद करने से पहले, अपने लिए एक वास्तविक रचनात्मक जीवन बनाना होगा। अरे, आप तो बड़े नासमझ हैं!
सबसे मुश्किल काम यह जानना है कि खुद को कहां और कैसे समर्पित करें... और यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर इस गर्मी में विचार करने की जरूरत है।
क्या आप लिखकर पैसे कमा सकते हैं? किशोरों के बीच तो कमा सकते हैं, लेकिन साहित्य जगत में प्रतिस्पर्धा अभूतपूर्व है... साहित्यिक बाजार एक साथ अधिक कठिन और अधिक कलात्मक रूप से आकर्षक प्रतीत होता है।
मैं हार्वर्ड समर स्कूल में नहीं जा रहा हूँ।
मैं शॉर्टहैंड सीखूंगा, टाइपिंग सीखूंगा, लिखूंगा और पढ़ूंगा, और अपने आप से दृष्टिकोणों के बारे में बात करूंगा, एल्ड्रिच परिवार और पड़ोसियों से मिलूंगा, और अच्छा, मिलनसार और बहिर्मुखी बनूंगा, और जीवन को समृद्ध बनाने वाली और सबसे

महत्वपूर्ण चीजों को सीखने और समझने की कोशिश में अपने अहंकार को भूल जाऊंगा।
आप एक अस्थिर और बेहद भयभीत पाखंडी हैं: आप सोचने, खुद को जानने, अपनी लेखन क्षमता को परखने के लिए समय चाहते थे, और अब जब आपको वह समय मिल गया है: लगभग तीन महीने का भयानक समय, तो आप पंगु, स्तब्ध, बेचैन और गतिहीन हो गए हैं। आप नकारात्मकता के अपने ही छोटे से निजी भंवर में इतने गहरे डूब गए हैं कि आप खुद को एक रटी- रटाई दिनचर्या में ढालने के अलावा कुछ नहीं कर सकते, जहाँ सरलतम कार्य भी भयावह और भारी लगने लगते हैं। आपका दिमाग सोचने में असमर्थ है। अगर आप हार्वर्ड जाते, तो आपका सारा समय योजनाबद्ध, सुनियोजित होता—लगभग उसी तरह जैसे अगले साल स्मिथ कॉलेज में होगा: और अभी इस तरह की सुरक्षा वांछनीय लगती है—वास्तव में, यह आपको अपने कार्यों और योजनाओं की जिम्मेदारी से मुक्त करने का एक और तरीका है, हालाँकि अब मामला इतना उलझा हुआ है कि यह सोचना मुश्किल है कि किस विकल्प में सबसे अधिक साहस की आवश्यकता होगी: और किस प्रकार के साहस की। मार्सिया काम भी कर रही है और कोर्स भी कर रही है—तुम दोनों में से कुछ भी नहीं कर रही हो: वोकेशनल ऑफिस वाली महिला ने कहा था कि तुम्हें शॉर्टहैंड आनी चाहिए: अब तुम इसे सीख सकती हो—तुम्हें दोबारा इतनी अच्छी शॉर्टहैंड नहीं आएगी, बेबी। तुम बी.यू. में साइकोलॉजी भी पढ़ सकती हो—अगर तुममें आने-जाने की हिम्मत हो… लेकिन एक के बाद एक कोर्स करके खुद को क्यों अंधा कर रही हो: जबकि अगर तुम कुछ हो, जो तुम निस्संदेह नहीं हो, तो तुम्हें बोर नहीं होना चाहिए, बल्कि सोचने, स्वीकार करने, पुष्टि करने में सक्षम होना चाहिए—और उस आत्म-पीड़ादायक मानसिक नरक में नहीं डूबना चाहिए जहाँ ईर्ष्या और भय तुम्हें खाना-पीना भी बंद करवा देते हैं। उन सभी लोगों को

महीने, तुम सोचते हो, मौत से डरते हुए। तुम उस आदमी को [ज़ाहिर तौर पर एक मनोचिकित्सक] फोन करना चाहते हो। तुमने जाने के लिए काफी पैसे कमा लिए हैं। क्यों नहीं जाते? रेज़र, खुद को चोट पहुँचाने और बाहर जाकर सब कुछ खत्म करने के स्वार्थी विचारों को छोड़ दो। तुम्हारा कमरा तुम्हारी जेल नहीं है। तुम खुद हो। और स्मिथ तुम्हें ठीक नहीं कर सकता; तुम्हें ठीक करने की शक्ति सिर्फ तुम्हारे पास है। तीन महीने के लिए अंतर्मुखी बनो—शोर, नामों, नाच-गाने के बारे में सोचना बंद करो—तुम इसे खरीद सकते थे। इन सब की कीमत बहुत ज़्यादा है। सनकी औरतें। धिक्कार है। नौकरी करो। रात में शॉर्टहैंड सीखो। कुछ भी हमेशा एक जैसा नहीं रहता।
14 जुलाई। ठीक है, आपने हद पार कर दी—आज आपने, पिछली दो रातों में सिर्फ़ दो घंटे की नींद के बाद, ज़िम्मेदारी से पूरी तरह से पल्ला झाड़ने की कोशिश की: आपने चारों ओर देखा और पाया कि हर कोई या तो शादीशुदा है या व्यस्त, खुश, सोच-विचार में डूबा हुआ और रचनात्मक है, और आपको डर, बेचैनी, सुस्ती महसूस हुई, सबसे बुरा, आप किसी भी स्थिति से निपटना नहीं चाहते थे। आपको खुद को एक बेबस बंधन में जकड़ा हुआ, परिवार पर बोझ, अपनी माँ की हत्या करने वाला, और सालों से लोगों के दिलों में बने प्यार और सम्मान के भवन को नष्ट करने वाला नज़रिया दिखाई दिया। आपने कुछ ऐसा करना शुरू कर दिया जो आपके सभी विश्वासों के खिलाफ था। गतिरोध: पुरुष संबंध; ईर्ष्या और बेतहाशा डर; महिला संबंध: वही हाल। नज़रिए और हास्य का अभाव। भागने, पीछे हटने, किसी से बात न करने की ज़बरदस्त इच्छा। थीसिस को लेकर घबराहट—साथ रहने के लिए लोगों की कमी—पिछली गलतियों के लिए पछतावा। डर, बड़ा, बदसूरत और रोने जैसा। बौद्धिक और अकादमिक रूप से सफल न होने का डर: सुरक्षा पर

सबसे बड़ा प्रहार। पिछले कुछ वर्षों की तेज़ रफ़्तार और पुरस्कार जीतने की उम्दा रफ़्तार को बनाए रखने में नाकाम रहने का डर—और किसी भी तरह के रचनात्मक जीवन का डर। परवाह न करने की विकृत इच्छा। मैं अब प्यार करने या महसूस करने में असमर्थ हूँ: यह मेरी अपनी ही गलती है।
इससे बाहर निकलो, बच्चे। तुम उस चीज़ को बेवजह बड़ी बाधा बना रहे हो जिसे स्वाभाविक माना जाना चाहिए—यानी बीते समय की प्रतिष्ठा के सहारे जीना।
न्यूयॉर्क: दर्द, पार्टियाँ, काम। और गैरी, प्टोमेन, और क्रूर पेरूवासी जोस, और कैरोल जो दरवाजे के बाहर फर्श पर उल्टी कर रही थी—और टीवी शो के लिए इंटरव्यू, प्रतियोगिताएँ, और खूबसूरत मॉडल और मिस एबेल्स (सक्षम, और न जाने क्या-क्या)। और अब ये: सदमा। घोर निराशावादी सदमा।
एक कहानी पढ़िए: सोचिए। आप सोच सकते हैं। लेकिन सोते समय लगातार भागते मत रहिए—छोटी-छोटी बातों को भूलिए—समस्याओं को नज़रअंदाज़ कीजिए—अपने और दुनिया के बीच, और सभी खुशमिजाज लड़कियों के बीच दीवारें खड़ी कीजिए—कृपया सोचिए—इस स्थिति से बाहर निकलिए। अपने सीमित स्वार्थ से परे किसी परोपकारी शक्ति पर विश्वास कीजिए। हे भगवान, हे भगवान, हे भगवान: आप कहाँ हैं? मुझे आपकी ज़रूरत है, आपमें विश्वास है, प्रेम में विश्वास है और मानवता में विश्वास है। आपको इस तरह भागने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। आपको सोचना चाहिए।
1953 की गर्मियों में प्लाथ के मानसिक रूप से टूटने के बाद के दो वर्षों के दौरान उनकी डायरीज़ गायब हो गईं—यदि वे मौजूद भी थीं। उनके ठीक होने में शॉक ट्रीटमेंट और इंसुलिन थेरेपी शामिल थी, लेकिन शायद सबसे महत्वपूर्ण तत्व डॉ. रूथ ब्यूशर के साथ

उनका संबंध था, जो एक असाधारण चिकित्सक थीं और जिन्होंने प्लाथ के जीवन में, उस समय और उसके बाद कई वर्षों तक, महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्लाथ को दिसंबर 1953 में अस्पताल से छुट्टी मिल गई। जब वह 1954 की वसंत ऋतु में स्मिथ विश्वविद्यालय लौटीं, तो उनके बाल सुनहरे हो गए थे, वह अधिक साहसी हो गई थीं और परिसर में एक प्रसिद्ध हस्ती बन चुकी थीं। अप्रैल 1954 में उनकी मुलाकात रिचर्ड सैसून से हुई, जो येल विश्वविद्यालय के एक छात्र थे और उनके सामान्य अमेरिकी टाइप के नहीं थे, बल्कि महाद्वीपीय, अत्यंत परिष्कृत और साहित्यिक सैसून परिवार से संबंधित थे। यह संबंध प्लाथ के लिए बहुत महत्वपूर्ण था। वह गॉर्डन लैमेयर से समय-समय पर मिलती रहीं और 1954 की गर्मियों में हार्वर्ड समर स्कूल में जर्मन का अध्ययन करने और स्मिथ विश्वविद्यालय के दोस्तों के साथ रहने में बिताया। स्मिथ कॉलेज में उनका अंतिम वर्ष बेहद सफल रहा—उन्होंने पुरस्कार जीते, कविताएँ बेचीं और अंततः कैम्ब्रिज के न्यून्हम कॉलेज में अध्ययन के लिए फुलब्राइट छात्रवृत्ति प्राप्त की। श्रीमती प्लाथ की उसी गर्मी (1955) में सर्जरी हुई, और सिल्विया ने काम न करने का फैसला किया और घर पर रहकर अपनी माँ की देखभाल करने लगीं। उनके जीवन में एक नया साथी भी आया, पीटर डेविसन, जो न्यूयॉर्क में संपादक रह चुके थे और स्वयं भी कवि थे; यह प्रेम प्रसंग केवल कुछ गर्मियों तक ही चला, लेकिन बाद में डेविसन उनके मित्र बन गए।
*

“(बलात्कार किया जा रहा है।)” बाद में अलग स्याही से जोड़ा गया है; प्लाथ यहां खुद का मजाक उड़ा रही थीं।
एडी कोहेन प्लाथ के पत्र-मित्र थे—उन गिने-चुने लोगों में से एक जिनके साथ उन्होंने अपनी सच्ची भावनाएं साझा कीं। उन्होंने ही सबसे पहले आने वाले मानसिक आघात को भांप लिया था और प्लाथ को

इससे बचने के लिए मनोचिकित्सक से परामर्श लेने की सलाह दी थी।
उनका वह वाक्य जिसे प्लाथ ने यहां उद्धृत किया है, 'द बेल जार' में पुनः दिखाई देता है।
प्रथम वर्ष के दौरान एक करीबी दोस्त, जिसने स्मिथ कॉलेज छोड़ दिया लेकिन सिल्विया के साथ अपनी दोस्ती बनाए रखी।
उनके पिता, ओटो प्लाथ, का निधन तब हुआ जब वह आठ साल की थीं।
डिक नॉर्टन का भाई, जो एक महत्वपूर्ण प्रेमी था। सिल्विया भी पेरी की ओर बहुत आकर्षित थी।
यहां संदर्भ स्पष्ट नहीं है—संभवतः यह डिक नॉर्टन को लिखे गए पत्र का मसौदा था। द बेल जार में एस्थर ग्रीनवुड की भी अपने प्रेमी के एक गुप्त कथन पर ऐसी ही भयभीत प्रतिक्रिया होती है। डिक नॉर्टन कई मायनों में पचास के दशक के आदर्श का प्रतिनिधित्व करते थे: एक गंभीर, आकर्षक, पड़ोस का लड़का जो डॉक्टर बनना चाहता था और एक सभ्य डॉक्टर की पत्नी चाहता था। वह अपनी माँ के बहुत करीब थे—जिनके नारी की भूमिका पर मधुर कथन 'द बेल जार' में अमर हो गए हैं—और उनकी माँ सिल्विया की माँ की अच्छी दोस्त थीं।
फिल मैककर्डी, प्लाथ के गृहनगर के एक अच्छे मित्र
प्रिंसटन छात्र
एक पेशेवर लेखक
श्री क्रॉकेट प्लाथ के हाई स्कूल में अंग्रेजी के शिक्षक थे, शायद उनके पहले मार्गदर्शक भी।
नॉर्टन
डिक नॉर्टन तपेदिक से उबर रहे थे।

उपन्यासकार ओलिव हिगिंस प्राउटी, जिन्होंने प्लाथ की छात्रवृत्ति को प्रायोजित किया था।
मार्सिया ब्राउन, जो सिल्विया की एक महत्वपूर्ण मित्र थी और द्वितीय वर्ष में उसकी रूममेट थी, अब कहीं और रह रही थी।
उनकी जिंदगी में आया नया शख्स मायरोन लोट्ज़ था, जो येल विश्वविद्यालय में प्रीमेडिकल का छात्र था और माइनर लीग में भी खेलता था। ऐसा लगता था कि उसमें प्लाथ की भावी पति की सभी खूबियां मौजूद थीं। शुरुआत में भले ही दोनों के बीच काफी तनाव था, लेकिन यह कोई गंभीर प्रेम संबंध नहीं था और बाद में एक अच्छी दोस्ती में बदल गया।
गेस्टाल्ट मनोवैज्ञानिक कर्ट कॉफ़्का
गॉर्डन लैमेयर, एक प्रेमी जो कवि भी था
डिक नॉर्टन, गॉर्डन लैमेयर और मायरोन लोट्ज़
उसका आवेदन खारिज कर दिया गया, जो उसके लिए एक बड़ा झटका था।
p ये तत्व बाद में द बेल जार में दिखाई दिए।
मैडमोजेल में प्लाथ की संपादक, सिरिली एबेल्स
अब रेवरेंड रूथ टिफ़नी बार्नहाउस, एम.डी.

□□□ II

□□□□□□□□□□ 1955–1957

□□□□□ □□□□□ 1957–1958

कलियों में सिमट जाते हैं और पौधे सर्वशक्तिमान सफेद पाले के आगे आत्मसमर्पण कर देते हैं, जो सभी रंगों को बर्फ के षट्कोणीय हृदयों में क्रूरतापूर्वक कैद कर लेता है।
आधी रात को, जब चाँद छत की टाइलों को छिपकली के नीले रंग से ढक लेता है और साधारण लोग नरम रुई में लिपटे होते हैं, तब वह गाजर की तरह पतली और जमी हुई उंगलियों से खिड़की खोलती है और सफेद रोटी के टुकड़े बिखेरती है जो उछलते-कूदते छत से नीचे गिरकर तिरछी नालियों में जाकर जंगल में सो रहे बच्चों को खिलाते हैं। इस प्रकार भूखी ब्रह्मांडीय माँ दुनिया को फिर से भ्रूण के समान सिकुड़ा हुआ देखती है और उसके बच्चे अंधेरे में सो रहे होते हैं, कंदों और फलियों में सिमटे हुए, मुड़े हुए सेम के बीज की तरह फीके और दूर, उसकी पूर्ण दूधिया प्रेम से, जो आकाश में तारों के क्रूस की तरह जम जाता है।
इसलिए सेरेस को उस उदास जगह पर जाकर प्रोसरपाइन के लिए फिर से सौदेबाजी करने में इतना दर्द सहना पड़ता है। हम नवंबर की हवा में भटकते और इंतजार करते हैं, जो चूहों के जमे हुए आंसुओं से सख्त हो चुके फर की तरह धूसर है। सहन करो, सहन करो, और शब्द ऐसे कठोर हो जाते हैं जैसे सर्दियों की रस्सी पर अकड़ कर टंगी हुई सफेद चादरें।
यहां कृत्रिम आग जलती है: शराब के गिलासों के बीचोंबीच उछलती लाल आग, शेरी के प्यालों में सुलगता सुनहरा रंग, हिमालय और दार्जिलिंग से तराशे गए एक मजबूत यहूदी हरक्यूलिस के परीकथा जैसे गालों में चटकता लाल रंग, जिसे एक स्त्री बौने ने बड़ी कुशलता से गढ़ा है और जिसे वह आमों से तृप्त करता है, और दिमित्री करामाज़ोव की उंगलियां पियानो के विशाल क्षेत्र से

बीथोवेन की धुनें निकालती हैं और कंकालनुमा क्रिस्टल पर स्कारलाटी की धुनें बजाती हैं।
बार्थोलोम्यू मेले के नीले आसमान की पृष्ठभूमि में गुलाबी घरों के ऊपर फीकी, तिरछी आग की लपटें उठती हैं, जहाँ एक वेश्या पीलिया-पीले रंग की स्लिप पहनकर कामुक जेबकतरों से सेब और खिलौने चुराती है। केतली के टिन के अंदरूनी हिस्से में पानी उबलता और फुफकारता है, और सेरेस उन असंख्य लोगों की आत्माओं और पेट को तृप्त करता है जो शैतानी मिट्टी के चाय के सेट, कांटेदार और चौथाई कटे हुए नारंगी अनानास और ठंडे हरे अंगूरों से भरी प्लेटें, और मैकरून केक पसंद करते हैं जो भूखे मुंह से चिपक कर नरम हो जाते हैं।
जब ईश्वर का चेहरा गायब हो जाता है और ठंडी धुंध के धुंधले पर्दों के पीछे सूरज फीका पड़ जाता है, तो वह अधम की धूसर, निष्कलंक तटस्थता पर उल्टी करती है और उन लाल लपटों और धुंआ उगलते साँपों की तलाश करती है जो शापितों के अंगों को अनंत काल तक निगलते रहते हैं। कैसेंड्रा के क्रोध से प्रेरित होकर, वह भविष्यवाणी करती है और ट्रॉय के "गिरते हुए कांच और ढहती हुई इमारतों" की आवाज़ सुनती है, जबकि हेक्टर उसके फटे और उलझे बालों को सहलाता है और बुदबुदाता है: "बस करो, बस करो, पागल बहन।" ईश्वर परम पवित्र सूर्य और उस प्रचंड गर्मी के साथ अवकाश पर हैं जो हमारे प्रेम के अपूर्ण श्वेत शरीर को काँच में बदल देती है: देखो! कैसे संसार का रहस्य काँच के इन युग्मित टुकड़ों के संग्रह में सुलझ जाता है, कैसे निर्मल और चमकीला प्रकाश इन पवित्र और शांत प्राणियों को आशीर्वाद देता है! अचानक कीचड़ के बिस्तर से वे स्वर्ग के देवदूतों को चकित करने के लिए उठते हैं जो उनके प्रेम के प्रकाश को बर्फ में संजोकर रखते हैं।

देखो, देखो! कैसे मन और कामुक शरीर मिलकर मनुष्य को ईश्वर की ईर्ष्या का पात्र बना देते हैं, जो अपने अहंकार द्वारा निर्मित अनंत शून्य में आत्मसंतुष्टि करता है। परन्तु कल इनकी अपेक्षा मत करना। वह एक ईर्ष्यालु ईश्वर है और उसने इन्हें नष्ट करवा दिया है।
मैंने कई छोटे काले रंग के आदमियों से बात की है जो मेरे अनुरोध पर मुझे पीले रंग की पुस्तिकाएँ देते रहते हैं जिन पर लिखा होता है: धूप वाली छुट्टियाँ...
क्या आपको एहसास है कि सैसून नाम दुनिया का सबसे खूबसूरत नाम है? इसमें घास के विशाल मैदानों की झलक है और फारसी चाँद अकेला ही लकड़ी के वाद्य यंत्रों की धुन से गूंजता हुआ रोकोको शैली के लैगून में समाया है, जहाँ से आबनूसी मानसून गुजरता है...
मैं फिर से गर्वित हूँ, और तुम्हारे पास दोबारा आने से पहले ही दुनिया की तमाम दौलत मेरे हाथों में होगी... वो सब मुझे मिल जाएगी, और अभी भी मुझे तुर्की मेजों पर और काले अलादीनों द्वारा भेंट की जा रही है। मैं बस इतना कहता हूँ, अपनी दूसरी तरफ मुड़कर, मुझे ये खनकते खिलौने नहीं चाहिए। मुझे तो बस वो चाँद चाहिए जो नाम में गूंजता है और वो मनुष्य का पुत्र चाहिए जो उस नाम को धारण करता है।
आरंभ में शब्द था और वह शब्द सैसून था और यह एक भयानक शब्द था क्योंकि इसने ईडन और स्वर्ण युग का निर्माण किया था, जिसकी ओर पतित ईवा अपने क्रिस्टल जैसे आँसुओं को अपने पीलियाग्रस्त एडम के होठों से उगने वाले पीले डहलिया के साथ मिलाते हुए देखती है। हे मसीह! वह पुकारती है, और मेरी आँखों के सामने उठ खड़े हो जाओ, जबकि नीली मरियमें हमें अपने गीतों से आशीर्वाद दें। और वह

पूछती है (क्योंकि ईवा भी व्यावहारिक है), यह पुनरुत्थान कब होगा?
रिचर्ड सैसून को लिखे पत्र का अंश (11 दिसंबर)
अनेकों दुखद प्रश्नों के बीच, जिन्हें मीठे पकवानों और खुशियों से दूर करने की कोशिश करना बेहतर है, मुझे जो बात सबसे अधिक परेशान करती है, वह यह है कि मेरे भीतर एक गहरा दुख समाया हुआ है, जिसके कई पहलू हैं, जैसे मक्खी की आंखें, और मुझे फिर से प्रकाशमान होने से पहले इस विकरालता को जन्म देना होगा। अन्यथा मैं नाचते हुए हाथी की तरह हो जाऊंगी... मैं उन शैतानों के प्रश्नों से त्रस्त हूं जो मेरे रेशों को कब्र की ठंड और मानव मल से बुनते हैं, और मेरे पास इस बारे में दुनिया को एक बड़ा पत्र लिखने की क्षमता या प्रतिभा नहीं है। जब कोई अपने स्वर्ग और नरक को साफ-सुथरे टाइप किए हुए कागजों के कुछ टुकड़ों में समेट लेता है और संपादक बहुत विनम्रता से उसे अस्वीकार कर देते हैं, तो व्यक्ति सनक में संपादकों को ईश्वर के सेवकों के समान समझने लगता है। यह घातक है।
शायद जब हम सब कुछ चाहने लगते हैं, तो इसका कारण यह होता है कि हम कुछ भी न चाहने के बेहद करीब होते हैं। कुछ भी न चाहने के दो विपरीत पहलू हैं: एक वह स्थिति जब व्यक्ति इतना परिपूर्ण और समृद्ध होता है और उसके भीतर इतने सारे आंतरिक संसार होते हैं कि बाहरी दुनिया आनंद के लिए आवश्यक नहीं होती, क्योंकि आनंद उसके अस्तित्व के आंतरिक सार से उत्पन्न होता है। दूसरा वह स्थिति जब व्यक्ति भीतर से मृत और सड़ा हुआ होता है और दुनिया में उसके लिए कुछ भी नहीं होता।
मुझे अब ऐसा लग रहा है मानो मैं रात के अंधेरे में चुपचाप एक बहुत ही नाजुक और जटिल पुल बना रहा हूँ, एक कब्र से दूसरी कब्र

तक, जबकि विशालकाय सो रहा है। हे भगवान, इस खूबसूरत पुल को बनाने में मेरी मदद करो।
मैं हर दिन को रंगीन मोतियों की माला की तरह जीना चाहता हूं, और वर्तमान को क्रूर छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर उसे नष्ट नहीं करना चाहता ताकि भविष्य में ताजमहल के लिए किसी हताश वास्तुशिल्पीय योजना में फिट हो सके।
फ्रांस
नव वर्ष की पूर्व संध्या, 1956। आखिरकार, सीटियों की चीख, कुलियों की चिल्लाहट और सहज शांति का क्षण। ट्रेन चलने लगी। रात के अंधेरे में, एक अनजान देश का अंधेरा छटपटाता हुआ आगे बढ़ रहा था। मेरे मन में, फ्रांस का एक नक्शा, अनियमित रूप से चौकोर, उत्तर की ओर पेरिस को चिह्नित करता हुआ छोटा सा एफिल टॉवर, और रेलवे ट्रैक की एक रेखा, ज़िप की तरह, दक्षिण की ओर, मार्सिले, नीस और कोट डी'अज़ूर की ओर तेज़ी से खुलती हुई, जहाँ शायद वास्तविकता में सूरज चमक रहा है और आकाश फ़िरोज़ी है। धूसर कैम्ब्रिज की कीचड़ और तेज़ हवाओं से दूर, ठंडे धूसर लंदन की जमा देने वाली सफेद बर्फ से दूर, जहाँ सूरज सफेद धुंध में खूनी अंडे की जर्दी की तरह लटका हुआ था। पेरिस की बारिश और गीले पैरों से दूर, पानी से भरी नालियों में रंगीन रोशनी टिमटिमा रही थी, और सीन नदी घाटों के किनारे धूसर और सुस्त बह रही थी और नोट्रे डेम के दो टावर नीचे की ओर झुकते, घने, दही जैसे धूसर आकाश की ओर उठे हुए थे।
ट्रेन में: खिड़की के बाहर के अंधेरे को सम्मोहित होकर घूरते हुए, पहियों की अतुलनीय लयबद्ध भाषा को महसूस करते हुए, मानो कोई बाल कविता गुनगुना रहा हो, मन के पलों को टूटे हुए रिकॉर्ड की गूंज की तरह समेटते हुए: बार-बार कहते हुए: ईश्वर मर गया है,

ईश्वर मर गया है, जा रहा है, जा रहा है, जा रहा है: और इस आनंद का शुद्ध आनंद, डिब्बे का कामुक झूलना। फ्रांस मन में पके अंजीर की तरह खुल उठता है; हम धरती का शोषण कर रहे हैं, हम रुकने वाले नहीं हैं। सुंदर गोरी लड़की बत्ती बुझा देती है और संकरे गलियारे में खिड़कियों पर लगे पर्दों के साथ डिब्बे में गर्म और अंधेरा छा जाता है, और खिड़की के बाहर का रात का नज़ारा धीरे-धीरे छायाओं और तारों के प्रकाश-अंधकार में जीवंत हो उठता है। क्योंकि हम घने बादलों और धुएँ से भरी छत को पीछे छोड़ रहे हैं, हम साफ चांदनी में गोता लगा रहे हैं, पहले पतले होते बादलों को दही की मलाई की तरह किनारे करते हुए, फिर शुद्ध और साफ होकर घूमते हुए नीलेपन में फूट पड़ते हैं। गांवों में अकेली रोशनी और रोशनी के समूह। फिर सड़कों की अजीब सफेदी, मानो टूटे हुए सफेद सीपियों से बनी हों, या जंगल में बच्चों द्वारा छोड़े गए रोटी के टुकड़ों के निशान हों। अब, आकाश में तारे भी, सर्पिलाकार गति में घूमते हुए, वैन गॉग के तारों जैसे दिखने लगते हैं, और अजीब काले पेड़, हवा से झुके हुए, टेढ़े-मेढ़े, मुड़े हुए, आकाश के सामने कलम से बनाए गए अनोखे रेखाचित्रों जैसे: सरू के पेड़। और पत्थर की खदानें, ब्लॉकों में बनी घनवादी पेंटिंग की तरह खड़ी ढलान वाली, और तिरछी छतें और आयताकार सफेद झोपड़ियाँ, प्रकाश में फीकी पड़ गई, ज्यामितीय छायाओं के साथ। फिर से अंधेरा, और साफ चाँदनी में फैली समतल भूमि।
संकरी डिब्बे की सीट पर पीठ के बल लेटे हुए, कुछ देर तक ऊंघते हुए, सैसून का भारी वज़न मेरी छाती पर था, जो करवटें बदलते हुए सो रहा था। और नीचे, ट्रेन के पहियों की अथक आवाज़ गूंज रही थी, जो हमें स्टील के जाल में धीरे-धीरे हिला रही थी। धीरे-धीरे, शांत होते हुए, ल्योन की रोशनी में प्रवेश करते हुए, और एक मदहोश

रोशनी। लाल मिट्टी, पीले, आड़ू और नीले रंग की टाइलों वाले विला, और दाईं ओर समुद्र की नीली लहरों का विस्फोट। कोट डी'अज़ूर। एक नया देश, एक नया साल: हरे-भरे ताड़ के पेड़ों से भरा, नुकीले टेंटेकल्स वाले कैक्टस से उगते सब्जी जैसे ऑक्टोपस, और चीखते नीले समुद्र से भगवान की आंख की तरह उगता लाल सूरज।
रिचर्ड सैसून को लिखे पत्र का अंश, दिनांक 15 जनवरी, 1956
जब मैं तुम्हें कपड़े पहनते, दाढ़ी बनाते या पढ़ते हुए देखता हूँ, तो तुम्हारे चेहरे पर एक अलग ही आभा छा जाती है और तुम अचानक उस रोजमर्रा के रूप से कहीं अधिक बन जाते हो जिसके साथ हमें जीना और प्यार करना पड़ता है, वह क्षणभंगुर दिव्य स्वरूप जो स्वर्गदूतों के मनमौजी समय के साथ चमकता है।
जिस आत्मविश्वास और उत्साह से मैंने तुम्हें लिखा था, वह लहरों की तरह थम गया है, और अब यह जानकर मुझे रोना आ रहा है, बस एक बार के लिए: हम इस जीवन का कितना छोटा सा हिस्सा जीते हैं: बहुत सारा समय नींद, दांत साफ करने, चिट्ठी का इंतजार करने, बदलाव का इंतजार करने, और उन अचानक चमकते पलों में बीतता है: अप्रत्याशित, लेकिन एक बार जब कोई उन्हें जान लेता है, तो वह अपने अतीत के प्रकाश और अपने भविष्य की आशा में जीवन जी सकता है।
मेरे मन में यह बात तो स्पष्ट है कि युद्ध, खुले युद्ध की कामना करना बहुत सरल है, लेकिन फिर भी हम उन परिस्थितियों की कामना किए बिना नहीं रह सकते जो हमें वीर बनाती हैं। अपनी संपूर्ण क्षमताओं का भरपूर उपयोग करते हुए जीवन जीना। जब मुझे लगता है कि दुनिया का अंत आ गया है, तो हमारे ब्रह्मांडीय संघर्ष हमारे विकास के चारों ओर बिखरे हुए कई टूटे हुए खोलों की तरह लगते हैं।

रविवार की दोपहर: रूसी मैदानों से आती हवा के झोंकों से आसमान बेहद नीला और सफ़ेद हो गया है। सुबह का समय ईश्वर का समय होता है, और नाश्ते के बाद उन पाँच घंटों में सब कुछ ठीक लगता है और लगभग सब कुछ संभव भी हो जाता है। लेकिन दोपहर तेज़ी से बीत जाती है और रात चार बजे के कुछ ही देर बाद आ जाती है। अब रात का अंधेरा सबसे बुरा होता है। नींद कब्र जैसी लगती है, सपनों से भरी हुई। रिचर्ड सैसून को लिखे पत्र का अंश (28 जनवरी)
ये कहना आसान होगा कि मैं तुम्हारे लिए लड़ूँगी, चोरी करूँगी या झूठ बोलूँगी; मुझमें खुद को पूरी तरह झोंक देने की तीव्र इच्छा है, और जहाँ पुरुषों के लिए लड़ना एक उद्देश्य होता है, वहीं महिलाओं के लिए लड़ना पुरुषों के लिए होता है। संकट के समय ये कहना आसान है: मैं उठ खड़ी होऊँगी और तुम्हारे साथ रहूँगी। लेकिन मैं क्या करूँगी... ये मेरे लिए सबसे कठिन है, मेरे आदर्शवाद और पूर्णतावाद के बेतुके स्वभाव के कारण: मुझे विश्वास है कि मैं तुम्हारे साथ बैठूँगी, तुम्हें खाना खिलाऊँगी और मेजों, कुर्सियों और पत्तागोभी के सभी आवश्यक क्षेत्रों में तुम्हारे साथ उन अद्भुत क्षणों का इंतज़ार करूँगी जब हम देवदूत होंगे, और हम देवदूतों को जन्म देंगे (जो स्वर्ग के देवदूत कभी नहीं हो सकते) और जब हम मिलकर दुनिया को प्रेम से भर देंगे और उसे प्रकाशमान कर देंगे। मैं बैठकर पढ़ूँगी, लिखूँगी और अपने दाँत ब्रश करूँगी, ये जानते हुए कि तुममें एक देवदूत के बीज हैं, मेरे जैसे देवदूत के, आग, तलवारों और प्रज्वलित शक्ति से भरपूर। आखिर मुझे ये इतनी धीरे-धीरे क्यों समझ आता है कि महिलाएं किस लिए बनी हैं? यह मेरे भीतर अप्रैल के महीने में खिलने वाले ट्यूलिप के बल्बों की तरह धीरे- धीरे उभरता है और मुझे प्रेरित करता है।

19 फरवरी, रविवार रात। सभी संबंधितों के लिए: कभी-कभी ऐसा समय आता है जब दुनिया की तटस्थ और निष्पक्ष शक्तियां पलट जाती हैं और न्याय की गर्जना के साथ एकजुट हो जाती हैं। अचानक उत्पन्न होने वाले इस भय, इस निंदा की भावना का कोई कारण नहीं होता, सिवाय इसके कि परिस्थितियां आंतरिक संदेह, आंतरिक भय को प्रतिबिंबित करती हैं। कल, अपनी साइकिल मरम्मत के लिए छोड़कर (खुद को खोया हुआ, पैदल यात्री, असहाय महसूस करते हुए) मिल लेन ब्रिज पर शांतिपूर्वक चलते हुए, अजनबियों की निगाहों के डर को छुपाने वाली उस मुस्कान के साथ, अचानक बांध पर बर्फ के गोले बना रहे छोटे लड़कों ने मुझे घेर लिया। वे खुलेआम, ईमानदारी से, मुझे मारने की कोशिश करते हुए मुझ पर गोले फेंकने लगे। हर बार उनका निशाना चूक जाता था, और अनुभव से प्राप्त उस सतर्क विवेक के साथ, मैं अपने पीछे और आगे से आती हुई गंदी बर्फ की गेंदों को देखता रहा, और आश्चर्य से व्याकुल होकर, धीरे-धीरे, दृढ़ता से चलता रहा, किसी भी अच्छे वार को लगने से पहले ही रोकने के लिए तैयार। लेकिन एक भी नहीं लगा, और एक सहनशील मुस्कान के साथ, जो एक दिखावटी झूठ थी, मैं चलता रहा।
आज मेरी थिसॉरस (शब्दकोश), जिसे मैं किसी रेगिस्तानी द्वीप पर बाइबल से भी ज़्यादा अपने साथ रखना पसंद करूँगा, जैसा कि मैंने अक्सर चतुराई से शेखी मारी है, एक घटिया, बीमार कविता का कच्चा मसौदा लिखने के बाद खुली पड़ी थी, पृष्ठ 545: छल; 546: असत्य; 547: मूर्ख; 548: छल करने वाला। वह चतुर समीक्षक और लेखक, जो उदार रचनात्मक विरोधी शक्तियों का सहयोगी है, घातक सटीकता से चिल्लाता है: "धोखा, धोखा।" और यह चीख उस अंधकारमय वर्ष के दौरान छह महीनों तक लगातार सुनाई देती रही।

…कल रात: पार्टी में आते ही… सबके चेहरे पर एक जैसी मुस्कुराती हुई डरी हुई मुस्कान थी, मानो वो कह रही हो: “मैं महत्वपूर्ण हूँ। अगर तुम मुझे जान लोगे, तो तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं कितनी महत्वपूर्ण हूँ। मेरी आँखों में देखो। मुझे चूमो, और तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं कितनी महत्वपूर्ण हूँ।” मैं भी महत्वपूर्ण बनना चाहती हूँ। अलग बनकर। और ये सारी लड़कियाँ एक जैसी हैं। दूर जाकर, मैं विन के साथ अपना कोट लेने जाती हूँ; जब मैं सीढ़ियों पर इंतज़ार कर रही होती हूँ, तो वह मुझे मेरा स्कार्फ लाकर देता है, और क्रिस के गाल लाल हो रहे हैं, वह नाटकीय, हाँफता हुआ और पश्चाताप करता हुआ दिख रहा है। वह डांट और सज़ा पाना चाहता है। यह तो बहुत आसान है। यही तो हम सब चाहते हैं।
मैं काफी मदहोश और खोई हुई सी हूँ, और बर्फ के मैदानों से होकर घर जाना सुविधाजनक लगता है। बहुत ठंड है, और पूरे रास्ते मैं यही सोचती रहती हूँ: रिचर्ड, तुम इस पल में जीते हो। तुम अभी जीते हो। तुम मेरे दिल में बसे हो और मैं तुम्हारे जीवित होने के कारण ही ये सब कर रही हूँ। और इस बीच तुम शायद किसी शानदार वेश्या की बाहों में थके-हारे और खुश होकर सो रहे होगे, या शायद उस स्विस लड़की की बाहों में जो तुमसे शादी करना चाहती है। मैं तुम्हें पुकारती हूँ। मैं तुम्हें लिखना चाहती हूँ, अपने प्यार के बारे में, उस बेतुके विश्वास के बारे में जो मुझे पवित्र रखता है, इतना पवित्र कि मैंने दूसरों को जो कुछ भी छुआ या कहा है, वह सब तुम्हारे लिए ही पूर्वाभ्यास बन जाता है, और सिर्फ इसी के लिए सहेज कर रखा जाता है। ये दूसरे लोग अब समय बिता रहे हैं, और सीमा के उस पार, चुंबनों और स्पर्शों तक भी, मैं दया की भीख मांगती हूँ और जम कर पीछे हट जाती हूँ। मैंने काले कपड़े पहने

हैं, आजकल मैं अक्सर काले ही कपड़े पहनती हूँ। एक कॉकटेल पार्टी में मेरा एक लाल दस्ताना खो गया। अब मेरे पास सिर्फ काले दस्ताने बचे हैं, और वे ठंडे और बेजान हैं।
“रिचर्ड,” मैं कहती हूँ, और नैट, विन, क्रिस, मैलोरी, इको, ब्रायन, मार्टिन और डेविड को भी यही सब बताती हूँ: फ्रांस में एक लड़का है। और आज मैंने जॉन को भी बताया, जो एक बेहतरीन श्रोता है और जो बैठकर मेरी बातें सुनने को तैयार है कि कैसे मैं कभी खुश थी, कभी अपने भीतर के सबसे ऊँचे शिखर पर थी, और आज मैं जो स्त्री हूँ, वह सब रिचर्ड नाम के इस लड़के की वजह से है। और जॉन कहता है: “अगर मैं खुद को इजाज़त दूँ, तो मैं तुमसे बेतहाशा प्यार कर सकता हूँ।” लेकिन उसने खुद को इजाज़त नहीं दी। क्यों? क्योंकि मैंने उसे छुआ तक नहीं है, मैंने उसकी आँखों में उस नज़र से नहीं देखा है जो वह देखना चाहता है। और मैं देख सकती थी। लेकिन मैं बहुत थकी हुई हूँ, एक अजीब तरीके से बहुत नेक हूँ। यह मुझे बीमार कर देता है। मैं उसे नहीं चाहूँगी, भले ही वह शिकार बन जाए। इसलिए मैं उसे हल्के-फुल्के अंदाज़ में, मज़ाक में कहती हूँ कि मैं ऐसा नहीं होने दूँगी, क्योंकि यह एक मरा हुआ बच्चा है। मैंने ऐसे कई बच्चों को जन्म दिया है।
और फिर, कड़वाहट से मैं कहती हूँ: क्या मैं रिचर्ड से प्यार करती हूँ? या मैं उसे आस्था के विकृत नाम के तहत एक नेक, एकाकी, प्रेमहीन रवैये के बहाने के रूप में इस्तेमाल कर रही हूँ? उसका इस तरह इस्तेमाल करते हुए, क्या मैं उसे दुबला-पतला, घबराया हुआ, छोटा, चिड़चिड़ा, बीमार देखना चाहती हूँ? या मैं उसके मजबूत दिमाग, आत्मा और प्रज्वलित क्षमता को ही संजोना चाहूँगी, जो वास्तविक दुनिया की विकृतियों से मुक्त है? कायर।

और नाश्ते के समय अचानक भोजन कक्ष में आते ही, वे तीनों होशियार बच्चे अजीब सी नज़र से मुड़कर उसी तरह बातें करने लगते हैं जैसे वे तब करते थे जब श्रीमती मिल्ने [गृहणी] अंदर आती हैं, मानो अपनी बातों का विषय छुपा रही हों: "कितना अजीब है, बस आग को घूर रहे हो।" और उन्होंने तुम्हें पागल करार दे दिया। बस यूँ ही। क्योंकि डर पहले से ही मौजूद है, और बहुत लंबे समय से है। यह डर कि वास्तविक दुनिया के सभी किनारे, आकार और रंग, जिन्हें इतने सच्चे प्यार से इतने दर्द के साथ फिर से बनाया गया है, संदेह के एक पल में मिट सकते हैं, और ब्लेक की कविता में चंद्रमा की तरह "अचानक गायब हो सकते हैं"।
एक भयानक डर: जो हद से ज़्यादा विरोध करता है। डॉक्टर के पास। मैं इस हफ्ते मनोचिकित्सक के पास जा रही हूँ, बस उनसे मिलने के लिए, यह जानने के लिए कि वे मेरे साथ हैं। और विडंबना यह है कि मुझे लगता है कि मुझे उनकी ज़रूरत है। मुझे एक पिता की ज़रूरत है। मुझे एक माँ की ज़रूरत है। मुझे किसी ऐसे बड़े, समझदार व्यक्ति की ज़रूरत है जिसके सामने मैं रो सकूँ। मैं ईश्वर से बात करती हूँ, लेकिन आकाश खाली है, और ओरियन पास से गुज़रता है और कुछ नहीं बोलता। मुझे लाजरस जैसा महसूस होता है: उस कहानी में एक अलग ही आकर्षण है। मरकर, मैं फिर से जीवित हो उठी, और यहाँ तक कि आत्महत्या करने की अनुभूति के लिए भी तत्पर हो गई, मौत के इतने करीब पहुँचने के लिए, कब्र से बाहर आने के लिए, अपने गाल पर पड़े ज़ख्मों और दाग के साथ जो (क्या यह मेरी कल्पना है?) और भी ज़्यादा स्पष्ट होता जा रहा है: लाल, हवा से झुलसी त्वचा पर मौत के धब्बे की तरह पीला पड़ रहा है, तस्वीरों में मेरी गंभीर सर्दियों की पीली त्वचा के विपरीत गहरा भूरा दिख रहा है। और मैं अपने पढ़ने और अपने लेखन से बहुत गहराई से जुड़ गई हूँ। मैं

स्ट्रेंज इंटरल्यूड की नीना हूँ; मैं एक ही समय में पति, प्रेमी, पिता और पुत्र, सब कुछ पाना चाहती हूँ। और मैं अपनी कविताओं, अपनी छोटी-छोटी, सरल और सुव्यवस्थित कविताओं को, द न्यू यॉर्कर में प्रकाशित करवाने के लिए बहुत बेताब हूँ। उस गोरी लड़की (एक अन्य अमेरिकी छात्रा जिसे प्लाथ प्रतिद्वंद्वी मानती थी) से बदला लेने के लिए, मानो छपाई के कागज़ के ये पतले बांध उस रचनात्मक बाढ़ को रोक सकते हैं जो सारी ईर्ष्या, सारी तुच्छ भय और जलन को नष्ट कर देती है। उदार बनो।
हाँ। कैम्ब्रिज आलोचना में स्टीफन स्पेंडर यही चूक जाते हैं। और मुझे भी उस कंजूस चुगली में यही कमी खलती है जो विकृतियों पर मज़ाक उड़ाती है और उन पर कटाक्ष करती है: हम खुद क्या हैं: जेन, चाकू से बेढंगे इशारे करती हुई, टोस्टर और टेबल के चांदी के बर्तन गिराती हुई, गॉर्डन का हार अजीब सी हंसी के साथ तोड़ती हुई, रिचर्ड से रात का खाना छीनती हुई, मुझसे नींद, कमरा और चाबी छीनती हुई, और कभी परवाह न करती हुई, बिलकुल बेपरवाह। हम कितने प्रतीकात्मक हो सकते हैं? आक्रोश खाता है, अपने भोजन को ही मार डालता है। क्या वह आक्रोश कर सकती है? वह बड़े, विजयी लड़कों, रचनात्मक लोगों के पक्ष में है। हमारे पास उतावले पिल्ले हैं। क्या हम उन दूसरों को ढूंढ सकते हैं? हमारे पास हमारा क्रिस है, हमारी नैट है। लेकिन क्या हम ढूंढ पाते हैं?
उदार। हाँ, आज मैंने क्रिस को माफ़ कर दिया। मुझे छोड़ने और थोड़ा दुख पहुँचाने के लिए, ठीक वैसे ही जैसे उन दो अनजान लड़कियों ने मुझे दुख पहुँचाया था, क्योंकि एक औरत होने के नाते, मैं अपने मर्दों के लिए सभी औरतों से लड़ती हूँ। मेरे मर्द। मैं एक औरत हूँ, और वफ़ादारी माँ और बेटी के बीच भी नहीं होती। दोनों पिता के लिए, बेटे के लिए, मन और शरीर के बिस्तर के

लिए लड़ती हैं। मैंने जॉन को भी माफ़ कर दिया, उसके सड़े हुए दाँत और पीले चेहरे के लिए, क्योंकि वह भी इंसान था, और मुझे लगा, "मुझे इंसानियत की ज़रूरत है।" यहाँ तक कि जॉन भी, जब वह वहाँ बैठा था, हमारी उन ज्ञान भरी बातों से दूर, वह भी एक पिता हो सकता था। और मैं किसी पुरुष के आलिंगन के लिए तरसती हूँ; किसी ऐसे पुरुष के लिए, जो पिता हो।
तो अब मैं हर रात बातें करूँगी। खुद से। चाँद से। मैं चलूँगी, जैसे आज रात चली, अपने अकेलेपन से ईर्ष्या करते हुए, ठंडे चाँद की नीली-चाँदी में, जो ताज़ी गिरी बर्फ पर अनगिनत चमक बिखेर रहा है। मैं खुद से बातें करती हूँ और गहरे पेड़ों को देखती हूँ, मानो शांत और तटस्थ हों। लोगों का सामना करने से, खुश, अजेय, चतुर दिखने से कहीं ज़्यादा आसान। मुखौटे उतारकर, मैं चलती हूँ, चाँद से बातें करती हूँ, उस तटस्थ, निर्जीव शक्ति से जो सुनती नहीं, बल्कि बस मेरे अस्तित्व को स्वीकार करती है। और मुझे कुचलती नहीं। मैं उस काँसे हुए लड़के के पास गई जिससे मुझे प्यार है, कुछ हद तक इसलिए क्योंकि कोई उसकी परवाह नहीं करता, और उसके कोमल मुस्कुराते चेहरे से बर्फ का एक गुच्छा हटाया। वह चाँदनी में, अँधेरे में, बर्फ से उसके अंगों पर सफ़ेद निशान बने हुए, प्रिवेट की बाड़ के अर्धवृत्त में, अपने लहराते हुए डॉल्फ़िन को लिए, मुस्कुराता हुआ, एक पैर पर संतुलन बनाए खड़ा था।
और वह "व्हेन वी डेड अवेकन" में बच्चे जैसा बन जाता है। और रिचर्ड मुझे कोई बच्चा नहीं देगा। और मैं तो बस उसी के बच्चे को चाहती हूँ। उसे जन्म देना, उसे बढ़ते हुए देखना। वही एक है जिसके साथ मैं बच्चा पैदा कर सकती हूँ। फिर भी। मुझे एक डर भी है, एक विकृत बच्चे को जन्म देने का, एक मंदबुद्धि बच्चे का, जो

करती रहूंगी। अजीब बात है कि इतने जुनून, इतने मोहक प्रेम, इतने आंसुओं, इतनी तीव्र खुशी में जीने के बाद भी, मैं दूसरों के साथ इन फिजूल के दिखावटी रिश्तों, इन क्षणिक आकर्षणों से इतनी ठंडी, इतनी घृणा करने लगी, जो अब मुझे मेरी बर्बादी लगते हैं, क्योंकि हर एक मुझे रिचर्ड के और करीब ले आता है। और फिर भी मुझे उम्मीद है कि यूरोप में कोई ऐसा पुरुष मिलेगा जिससे मैं मिलूंगी, प्यार करूंगी और जो मुझे इस प्रबल मोह से मुक्त करेगा। जिसे मैं उसकी कमजोरी में भी स्वीकार करूंगी, जिसे मैं मजबूत बना सकूंगी, क्योंकि वह मुझे एक लक्ष्य और काम करने के लिए एक सोच देता है। और अब देर होती जा रही है। और मुझे वही हफ्ते की शुरुआत वाली घबराहट सता रही है, क्योंकि मैं अपनी छोटी-मोटी अकादमिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए पर्याप्त पढ़ और सोच नहीं पा रही हूँ, और मैंने वेंस की कहानी के बाद से कुछ भी नहीं लिखा है (जिसे द न्यू यॉर्कर ने मेरी कविताओं की तरह ही अस्वीकार कर दिया है, और भले ही मैं यह बात हिम्मत से कह रही हूँ, मुझे उम्मीद है कि मैं झूठ बोल रही हूँ, क्योंकि रिचर्ड के लिए मेरा प्यार कहानी में है, और मेरी थोड़ी-बहुत चतुराई भी, और मैं चाहती हूँ कि यह छप जाए, न कि अस्वीकृत हो: देखो, कितना खतरनाक है, मैं फिर से अस्वीकृतियों से बहुत ज्यादा जुड़ गई हूँ!)। लेकिन मैं चुप कैसे रह सकती हूँ, यहाँ मेरे पास बात करने के लिए कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो किसी न किसी तरह से बहुत ज्यादा शामिल न हो, या इतना करीब न हो कि कम से कम मेरी उदासी से खुश हो। मैं रिचर्ड से, घर पर अपने सभी दोस्तों से, रो-रोकर कहना चाहती हूँ कि वे आकर मुझे बचाएँ। मेरी असुरक्षा से, जिससे मुझे खुद ही लड़ना होगा। यहाँ अगला साल खत्म करते हुए, पढ़ने और सोचने के दबाव का आनंद

लेते हुए, मेरे पीछे हमेशा एक चुभती हुई आवाज गूंजती रहती है: एक जीवन गुजर रहा है। मेरा जीवन।
ऐसा ही है। और मैं अपनी जवानी और सुनहरे दिन बंजर ज़मीन पर बर्बाद कर रही हूँ। उस रात मैं कितना रोई थी, जब मुझे सोने का मन हुआ, और वहाँ कोई नहीं था, बस क्रिसमस के सपने थे, और रिचर्ड के साथ बीता पिछला साल, जिसे मैंने बहुत प्यार किया था। और मैंने बची हुई फीकी शेरी पी ली, और कुछ मेवे तोड़े, जो सब खट्टे और अंदर से बिल्कुल सूखे हुए थे, और इस भौतिक, निष्फल दुनिया ने मेरा मज़ाक उड़ाया। कल क्या? हमेशा मुखौटे चिपकाती रहती हूँ, जो मैंने पढ़ने का सोचा था उसका आधा ही पढ़ पाने के बहाने बनाती रहती हूँ। फिर भी ज़िंदगी गुज़र रही है।
मैं इस संसार के पदार्थ में समा जाना चाहती हूँ: कपड़े धोने और लिली के फूलों, रोज़ की रोटी और तले हुए अंडों, और उस काले आँखों वाले अजनबी के साथ जीवन से जुड़ जाना चाहती हूँ, जो मेरा खाना, मेरा शरीर और मेरा प्यार खाता है, दिन भर दुनिया घूमता है और रात को मेरे साथ सुकून पाने के लिए लौट आता है। कौन मुझे बच्चा देगा, जो मुझे फिर से उस जाति का सदस्य बना देगा जो मुझ पर बर्फ के गोले फेंकती है, शायद उनमें छिपी सड़न को भांपते हुए?
एली इस गर्मी में आ रही है (और माँ और श्रीमती प्राउटी भी) और सू अगले पतझड़ में। मैं दोनों लड़कियों से प्यार करती हूँ, और पहली बार उनके साथ खुलकर एक स्त्री बन सकती हूँ, और हम घंटों बातें कर सकते हैं। मैं भाग्यशाली हूँ। अब ज़्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ेगा। फिर भी, मैं कितना दे सकती हूँ? कुछ नहीं। मैं स्वार्थी हूँ, डरी हुई हूँ, इतना रोती हूँ कि अपने काल्पनिक लेखन के लिए खुद को बचा नहीं पाती। लेकिन फिर भी यह पिछले सत्र से बेहतर है, जब मैं रात-रात भर पीले रंग की पोशाक में चीखती हुई वेश्या बनकर

पागल हो रही थी। एक पागल कवयित्री। डिक गिलिंग की कितनी चतुराई है; लेकिन वह बहुत सहज हैं। मुझमें हिम्मत नहीं थी, लचीला दिल नहीं था, साहस नहीं था। लेकिन मैंने आगे बढ़ने से इनकार कर दिया, यह जानते हुए कि मैं बड़ी नहीं बन सकती, छोटी बनने से इनकार कर दिया। मैं काम में लग गई। और यह बेहतर रहा है: दो के बजाय एक सप्ताह में 15 नाटक। संख्या? केवल यही नहीं, बल्कि महारत का एक वास्तविक एहसास, कभी-कभी अंतर्दृष्टि का एहसास। और यही तो हम इंतज़ार करते हैं।
क्या रिचर्ड को कभी मेरी ज़रूरत पड़ेगी? मेरी शर्त का एक हिस्सा यह है कि जब तक उसे मेरी ज़रूरत नहीं पड़ेगी, मैं चुप रहूँगी। आखिर क्यों पुरुष को ही अक्सर पहल करनी पड़ती है? औरतें बहुत कुछ कर सकती हैं, लेकिन इस तरह अलग-थलग रहकर मैं कुछ नहीं कर सकती, एक तरह के सम्मान और गर्व के कारण मैं उसे पत्र नहीं लिख सकती (मैं अब उसके प्रति अपने प्यार का इज़हार नहीं करना चाहती) और मुझे तब तक इंतज़ार करना होगा जब तक उसे मेरी ज़रूरत न पड़े। अगर कभी पड़ी भी, तो अगले पाँच सालों में। और देखो, प्रेम और विश्वास के साथ, कड़वाहट और उदासी में डूबे बिना, दूसरों की मदद करो। यही मुक्ति है। भीतर से प्रेम देना। जीवन के प्रति प्रेम को हर हाल में बनाए रखना और दूसरों को उदारतापूर्वक देना।
एक बार फिर प्लाथ खुद को गंभीर अवसाद की चपेट में पाती हैं।
20 फरवरी, सोमवार। प्रिय डॉक्टर: मैं बहुत अस्वस्थ महसूस कर रहा हूँ। ऐसा लग रहा है जैसे मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा हो और चिढ़ा रहा हो। अचानक दिनचर्या के साधारण काम भी अड़ियल घोड़े की तरह अड़चन पैदा कर रहे हैं। लोगों से नज़रें मिलाना नामुमकिन हो

गया है: कहीं भ्रष्टाचार फिर से न पनप जाए? कौन जाने। छोटी-मोटी बातें भी निराशाजनक लगने लगी हैं।
दुश्मनी भी बढ़ती जा रही है। वह खतरनाक, जानलेवा ज़हर जो एक बीमार दिल से निकलता है। बीमार दिमाग से भी। पहचान की वह छवि जिसे हम हर दिन तटस्थ या शत्रुतापूर्ण दुनिया पर थोपने के लिए संघर्ष करते हैं, अंदर ही अंदर ढह जाती है; हम कुचल जाते हैं। हॉल में कतार में खड़े होकर, पनीर-क्रीम सॉस में उबले अंडे, मसले हुए आलू और फीके पार्सनिप के घटिया डिनर का इंतज़ार करते हुए, हमने एक लड़की को दूसरी से कहते सुना: "बेत्सी आज उदास है।" यह जानकर लगभग अविश्वसनीय राहत मिलती है कि हमारे अलावा भी कोई ऐसा है जो हर समय खुश नहीं रहता। जब हम इतने गहरे अंधकार में डूब जाते हैं, तो हम ज़रूर बहुत निराश होते हैं: यह सोचना कि हर कोई, सिर्फ़ इसलिए कि वे "दूसरे" हैं, अजेय है। यह सरासर झूठ है। लेकिन मैं सापेक्षता के जाल में फिर से उलझ रही हूँ। अनिश्चित। और यह बेहद असहज है; पुरुषों के साथ (रिचर्ड चला गया, यहाँ प्यार करने वाला कोई नहीं), लेखन के साथ (अस्वीकृति से बहुत घबराती हूँ, खराब कविताओं से बहुत हताश और डरी हुई हूँ; लेकिन कहानियों के लिए विचार हैं; बस जल्द ही कोशिश करूंगी), लड़कियों के साथ (घर संदेह और रूखेपन से भरा है; कितना डर मुझ पर हावी है? सबसे बुरी बात यह है कि वे असुरक्षा और नीचता को ऐसे भांप लेती हैं जैसे जानवर खून को सूंघते हैं), अकादमिक जीवन के साथ (फ्रेंच छोड़ दिया है और अस्थायी रूप से बहुत दुष्ट और कामचोर महसूस कर रही हूँ, प्रायश्चित करना होगा; साथ ही, चर्चा में मूर्ख महसूस कर रही हूँ; त्रासदी आखिर क्या है? मैं हूँ)।
बस हो गया। बाइक रिपेयर शॉप में थी, मैंने जल्दी से दूध वाली कॉफी, आलू के साथ बेकन और पत्ता गोभी, और टोस्ट खाया। माँ के दो

पत्र पढ़े जिनसे मुझे काफी हौसला मिला: वो कितनी साहसी हैं, दादी और घर को संभाल रही हैं, और यूरोप जाने की उम्मीद में एक नई जिंदगी बना रही हैं। मैं यहाँ उनके लिए खुशियों भरे दिन बनाना चाहती हूँ। उन्होंने मुझे पढ़ाने के लिए भी प्रोत्साहित किया। एक बार जब मैं पढ़ाना शुरू कर दूँगी तो मुझे इतनी बेचैनी नहीं होगी। ये जड़ता मेरी सबसे बड़ी दुश्मन है; मैं संदेह से बुरी तरह बीमार पड़ जाती हूँ। मुझे हर बाधा को तोड़ना होगा: स्कीइंग सीखनी होगी (अगले साल गॉर्डन और सू के साथ?) और शायद इस गर्मी में किसी आर्मी बेस में पढ़ाना होगा। इससे मुझे बहुत फायदा होगा। अगर मैं अफ्रीका या इस्तांबुल जाऊँ, तो साथ-साथ वहाँ के बारे में लेख भी लिख सकती हूँ। बहुत हो गई बातें। अब काम पर लगो। शुक्र है क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर ने कैम्ब्रिज का लेख और चित्र प्रकाशित कर दिया। उन्हें मेरे और लिखने के अनुरोध पर एक पत्र भी लिखना चाहिए। न्यू यॉर्कर द्वारा कविताओं को अस्वीकार किए जाने से मुझे किसी भी सुबह बहुत बुरा लग सकता है। हे भगवान, यह कितना दुखद है जब किसी का जीवन ऐसी हास्यास्पद कविताओं पर निर्भर करता है, जो संपादकों की आलोचना के लिए तैयार हैं।
आज रात मुझे ओ'नील के नाटकों के बारे में सोचना होगा; कभी-कभी, घबराहट में, दिमाग सुन्न हो जाता है, दुनिया शून्य में गायब हो जाती है, और मुझे लगता है कि मुझे भागना होगा, या रात में मीलों तक चलते रहना होगा जब तक कि मैं थककर गिर न जाऊं। क्या मैं भागने की कोशिश कर रहा हूँ? या इतना अकेला होना चाहता हूँ कि स्फिंक्स के रहस्य को सुलझा सकूँ? मनुष्य भूल जाते हैं। हँसते हुए लाजरस ने कहा था। और मैं चमक के क्षणों को भूल जाता हूँ। मुझे उन्हें लिख लेना चाहिए। उन्हें लिखकर गढ़ना चाहिए। ईमानदार होना चाहिए।

खैर, नाश्ते के बाद, जल्दी से कपड़े पहने और बर्फ में दौड़ते हुए ग्रोव लॉज में रेडपाथ की क्लास के लिए निकल पड़ी। दिन धुंधला था, लेकिन बर्फ उड़ते बालों में उलझ रही थी और गाल लाल हो रहे थे, जिससे मुझे खुशी का एहसास हुआ। काश मैं थोड़ा जल्दी निकल जाती ताकि कुछ देर और रुक पाती। बर्फ से ढके दलदल में काले कौवे बैठे थे, आसमान धुंधला था, पेड़ काले थे और पानी बत्तख के रंग का हरा था। मैं बहुत प्रभावित हुई। रॉयल होटल के कोने पर कारों और ट्रकों की भारी भीड़ थी। जल्दी से ग्रोव लॉज पहुंची, वहां पत्थर की धुंधली सुंदरता देखी; इमारत पसंद आई। अंदर गई, कोट उतारा और लड़कों के बीच बैठ गई, जिनमें से कोई नहीं बोला। किसी महिला योगी की तरह डेस्क पर लगातार देखते-देखते ऊब गई थी। तभी एक गोरा लड़का दौड़कर आया और बताया कि रेडपाथ को फ्लू हो गया है। और हम कल रात दो बजे तक जागकर बड़े सत्कार के साथ मैकबेथ पढ़ रहे थे। जो ठीक था। पुराने भाषणों को सुनकर मैं दंग रह गई: खासकर "शोर और क्रोध की कहानी"। कितनी विडंबना है: मैं उन पात्रों की काव्यात्मक पहचान अपना लेता हूँ जो आत्महत्या करते हैं, व्यभिचार करते हैं या जिनकी हत्या कर दी जाती है, और कुछ समय के लिए मैं उन पर पूरी तरह विश्वास कर लेता हूँ। उनकी बातें सच लगती हैं।
खैर, फिर शहर की ओर सैर की, हमेशा की तरह किंग्स चैपल के टावरों को निहारती रही, मार्केट हिल पर खुशी का एहसास हुआ, लेकिन सभी दुकानें बंद थीं, सिवाय सायल्स के, जहाँ मैंने खोए हुए दस्तानों की जगह एक जैसे लाल दस्ताने खरीदे। पूरी तरह से शोक में डूबे रहना मुमकिन नहीं है। क्या तटस्थ, वस्तुनिष्ठ दुनिया से प्यार करना और लोगों से डरना मुमकिन है? लंबे समय तक खतरनाक, लेकिन मुमकिन। मुझे अनजान लोग भी प्यारे लगते हैं। दलदली रास्ते से

लौट रही एक महिला को देखकर मैं मुस्कुराई, और उसने व्यंग्यपूर्ण समझ के साथ कहा, "मौसम बहुत बढ़िया है।" मुझे वह अच्छी लगी। उसकी आँखों में जो छवि झलक रही थी, उसमें मुझे पागलपन या सतहीपन नहीं दिखा। पहली बार।
इस कठिन समय में अजनबियों से प्यार करना सबसे आसान होता है। क्योंकि वे मांग नहीं करते और न ही हमेशा देखते रहते हैं। मैं मैलोरी, इको, जॉन, यहाँ तक कि क्रिस से भी तंग आ चुकी हूँ। मेरे लिए उनमें कुछ भी नहीं है। मैं उनके लिए मर चुकी हूँ, भले ही कभी मैं उनके साथ खिली थी। यही छिपा हुआ डर है, एक लक्षण: अचानक या तो सब कुछ या कुछ भी नहीं: या तो आप सतही कवच को तोड़कर उस खालीपन में उतर जाते हैं या नहीं। मैं अपने उस सामान्य, मध्यम मार्ग पर लौटना चाहती हूँ जहाँ दुनिया का सार मेरे अस्तित्व में समाया हुआ है: खाना खाना, पढ़ना, लिखना, बातें करना, खरीदारी करना: ताकि सब कुछ अपने आप में अच्छा हो, और सिर्फ़ उस डर को छुपाने की एक व्यस्त गतिविधि न हो जिसका सामना उसे खुद से करना है और उससे मृत्यु तक लड़ना है, यह कहते हुए: जीवन बीत रहा है!
भयानक बात यह है कि अचानक ही यह भौतिक संसार सिमट कर गायब हो जाता है, कुछ भी नहीं बचता। बस चिथड़े-चिट्ठे। इंसानी कौवे जो कहते हैं: धोखा। शुक्र है कि मैं थक जाता हूँ और सो सकता हूँ; अगर ऐसा है तो सब कुछ मुमकिन है। और मुझे खाना अच्छा लगता है। और मुझे चलना अच्छा लगता है और यहाँ के ग्रामीण इलाकों से मुझे प्यार है। बस ये शाश्वत प्रश्न ही मेरी रोज़मर्रा की ज़िंदगी के दरवाज़े पर दस्तक देते रहते हैं, जिससे मैं एक पागल प्रेमी की तरह चिपका रहता हूँ, ऐसे प्रश्न जो मुझे उस अंधेरी, खतरनाक दुनिया में ले आते हैं जहाँ सब कुछ एक जैसा है, कोई भेद नहीं, कोई अंतर नहीं, कोई स्थान नहीं और कोई समय नहीं: अनंत काल की सीटी

जैसी साँस, ईश्वर की नहीं, बल्कि इनकार करने वाले शैतान की। तो हम ओ'नील पर कुछ विचार करेंगे, खुद को फ्रेंच भाषा के आरोपों, एक न्यू यॉर्कर द्वारा अस्वीकृति, और उन लोगों की शत्रुता या, इससे भी बदतर, पूर्ण उदासीनता का सामना करने के लिए तैयार करेंगे जिनके साथ हम भोजन करते हैं।
एक अच्छी कविता लिखी: “चट्टानों के साथ शीतकालीन परिदृश्य”: यह गतिशील और जीवंत है: एक मानसिक परिदृश्य। एक और बड़ी कविता लिखना शुरू किया, जो अधिक अमूर्त है, बाथटब में बैठकर: ध्यान रहे कि यह बहुत सामान्य न हो जाए। शुभ रात्रि, प्यारी राजकुमारी। तुम अभी भी अकेली हो; धैर्य रखो; घबराओ मत; इस मुश्किल दौर से निकलकर वसंत के उदार, मधुर, भरपूर प्रेम की ओर बढ़ो।
पुनश्च: किसी बहस में जीतना या हारना, स्वीकृति या अस्वीकृति मिलना, व्यक्तिगत पहचान की वैधता या मूल्य का प्रमाण नहीं है। कोई व्यक्ति गलत हो सकता है, भूल कर बैठ सकता है, कुशल कारीगर नहीं हो सकता है, या मात्र अज्ञानी हो सकता है—लेकिन यह किसी व्यक्ति की संपूर्ण मानवीय पहचान के वास्तविक मूल्य का संकेत नहीं है: अतीत, वर्तमान और भविष्य!
धमाका! मैं भविष्य देख सकता हूँ, पर उतना नहीं जितना देखना चाहिए। मेरी कृति "द मैटिस चैपल", जिसके लिए मैं काल्पनिक धन खर्च कर रहा था और जिसके बारे में मैं बड़े गर्व से चर्चा कर रहा था, आज सुबह द न्यू यॉर्कर ने बिना किसी निशान के खारिज कर दी। छपे हुए अस्वीकृति पत्र में मैंने उसे कागजों के ढेर के नीचे ऐसे छिपा दिया जैसे कोई मरा हुआ नाजायज बच्चा हो। उसमें छिपी बेतुकी बातों पर मुझे घिन आ रही थी। खासकर पीट डी व्रीस की हाल ही में आई शानदार कृति "आफ्टरनून ऑफ अ फॉन" पढ़ने के बाद। प्रेम

संबंध बनाने के कई तरीके होते हैं। सबसे ज़रूरी बात, इसमें गंभीरता नहीं होनी चाहिए।
फिर भी, मेरा सहज मन यह सोचता है कि एक सप्ताह पहले भेजी गई कविताओं की गहन समीक्षा हो रही होगी। मुझे कल तक वे अवश्य वापस मिल जाएंगी। शायद साथ में एक नोट भी हो।
25 फरवरी, शनिवार। हम सब नहा-धोकर तैयार हो चुके हैं, बाल अच्छे से धोए हैं, अंदर से खाली और कांपते हुए महसूस कर रहे हैं; एक संकट टल गया है। हम फिर से एकजुट होते हैं, आशावाद की एक मजबूत टुकड़ी जुटाते हैं और आगे बढ़ते हैं। बस चलते ही रहते हैं। हफ्ते की शुरुआत में ही मैं सोचने लगी थी कि पिछले सत्र में उन सभी लड़कों से अंतिम बातें कहना मेरी कितनी बड़ी बेवकूफी थी। यह हास्यास्पद है; ऐसा नहीं होना चाहिए था। ऐसा नहीं है कि मैं उन लोगों को नहीं चुन सकती जिनके साथ मैं अपना समय बिताना चाहती हूँ, लेकिन ऐसी स्थिति में पहुँचने का कोई कारण तो रहा होगा जहाँ अंतिम और स्पष्ट बात कहने के अलावा कोई चारा नहीं था। शायद ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मैं एक के बाद एक लड़कों के साथ बहुत ज़्यादा भावुक हो जाती थी। उनके साथ भी वही खौफ आता था, जो तब आता है जब जीवन के सारे ताने-बाने गायब हो जाते हैं और बस उजाला और अंधेरा, रात और दिन रह जाते हैं, उन छोटी-छोटी शारीरिक खामियों, दाग-धब्बों और गांठों के बिना जो जीवन का ताना-बाना बुनती हैं: या तो वे सब कुछ थे या कुछ भी नहीं। कोई भी इंसान सब कुछ नहीं होता, इसलिए, ज़ाहिर है, वे कुछ भी नहीं थे। ऐसा नहीं होना चाहिए।
वे स्पष्ट रूप से रिचर्ड नहीं थे; अंततः मैंने उन्हें यह बात ऐसे बताई जैसे उन्हें कोई जानलेवा बीमारी हो और मुझे बहुत अफ़सोस हो। मूर्ख: अब उपदेशात्मक बनो: इको और हामिश नाम के

सूंघने, चखने, आँखों से पानी बहने के कारण देखने और सुनने तक की क्षमता खत्म हो गई, जो लगभग और भी बदतर था। और इन सबके ऊपर, बुखार, छींक और करवटों के साथ पूरी रात नींद नहीं आई, मासिक धर्म के भयानक दर्द (सच में, अभिशाप!) और खून की गीली, चिपचिपी बौछारें भी थीं।
भोर हुई, काला-सफेद रंग धीरे-धीरे जमी हुई नरक जैसी स्थिति में बदल गया। मैं आराम नहीं कर पा रही थी, झपकी भी नहीं ले पा रही थी, कुछ भी नहीं। यह शुक्रवार था, सबसे बुरा, बेहद बुरा। पढ़ भी नहीं पा रही थी, नसों में ड्रग्स का ज़बरदस्त असर था। हर जगह घंटियाँ सुनाई दे रही थीं, टेलीफोन मेरे लिए नहीं, दुनिया की बाकी लड़कियों के लिए गुलाबों से सजी दरवाज़ों की घंटियाँ। घोर निराशा। बदसूरत, लाल नाक, कोई ताकत नहीं। जब मैं मानसिक रूप से सबसे उदास थी, तभी सब कुछ बिखर गया, आसमान टूट पड़ा और मेरा शरीर साथ छोड़ गया।
अब, भले ही मुझे सर्दी-ज़ुकाम के हल्के-फुल्के लक्षण हैं, मैं तरोताज़ा महसूस कर रही हूँ, और एक बार फिर शांत और विनोदी हो गई हूँ। इस सप्ताह मैंने कुछ कार्यों की आलोचना की और मुझे अपनी बात साबित करने का मौका मिला। मैंने यहाँ जिन पुरुषों को जानती थी, उनकी सूचियाँ देखीं और मैं दंग रह गई: मान लिया कि जिन्हें मैंने जाने के लिए कहा था, वे देखने लायक नहीं थे (हाँ, यह सच है), लेकिन उनमें से कितने कम देखने लायक थे! और कितने कम! तो, मैंने फिर से तय किया, कि अब पार्टी और चाय का आनंद लेने का समय आ गया है। और डेरेक ने मुझे बुधवार को वाइन पार्टी में बुलाया। हमेशा की तरह मैं झिझक गई, लेकिन शायद कहकर चली गई। पहले डर के बाद (मुझे हमेशा लगता है कि जब मैं बहुत देर तक अकेली रहती हूँ तो मैं एक राक्षस जैसी बन जाती हूँ, और लोग मेरी ओर इशारा करेंगे)

सब ठीक रहा। वहाँ आग जल रही थी, पाँच गिटार बजाने वाले थे, अच्छे लड़के थे, सुंदर लड़कियाँ थीं, ग्रेटा नाम की एक नॉर्वेजियन गोरी लड़की थी, जिसने नॉर्वेजियन भाषा में "ऑन टॉप ऑफ़ ओल्ड स्मोकी" गाना गाया, और नींबू और जायफल के साथ एक लाजवाब हॉट वाइन और जिन पंच था, जिसका स्वाद बहुत अच्छा था और ठंड शुरू होने से पहले मुझे हो रही कंपकंपी से राहत मिली। फिर, हामिश नाम के एक लड़के ने मुझे अगले हफ्ते डेट पर जाने के लिए पूछा, और संयोग से उसने कहा कि वह मुझे आज रात सेंट बोटॉल्फ की पार्टी में ले जाएगा...
तो क्या मैं वाकई अच्छे लड़कों के लायक नहीं हूँ? या शायद यह मेरी ही गलती है? अगर मेरी कविताएँ वाकई अच्छी होतीं, तो शायद कुछ उम्मीद होती; लेकिन जब तक मैं कुछ ऐसा नहीं लिखती जो मधुर सेस्टिना और सॉनेट की सीमाओं को पार कर जाए, रिचर्ड की आँखों में मेरी छवि से दूर हो और उस तंग बिस्तर से भी दूर हो जो प्रेम के किसी जोशीले कृत्य के लिए बहुत छोटा है, तब तक वे मुझे नज़रअंदाज़ कर सकते हैं और मज़ाक बना सकते हैं। ईर्ष्या का एकमात्र इलाज जो मुझे नज़र आता है, वह है एक ऐसी पहचान और व्यक्तिगत मूल्यों का निरंतर, दृढ़ सकारात्मक निर्माण करना जिन पर मुझे विश्वास है; दूसरे शब्दों में, अगर मुझे लगता है कि फ्रांस जाना सही है, तो किसी और के इटली जाने पर दुखी होना बेतुका है। तुलना करने का कोई कारण नहीं है।
मुझे डर है कि मेरी संवेदनशीलता कमज़ोर या घटिया है, और शायद यह डर जायज़ भी है; लेकिन मैं मूर्ख नहीं हूँ, भले ही मैं कई मामलों में अज्ञानी हूँ। मैं यहाँ अपने कार्यक्रम को और व्यवस्थित करूँगा, क्योंकि मैं जानता हूँ कि मेरे लिए कुछ चुनिंदा कामों को अच्छी तरह से करना ज़्यादा ज़रूरी है, बजाय इसके कि मैं बहुत

सारे काम सतही तौर पर करूँ। मेरे अंदर का पूर्णतावादी स्वभाव अभी भी मौजूद है। चुनाव और त्याग के इस रोज़मर्रा के खेल में, अनावश्यक चीज़ों को पहचानने की पैनी नज़र ज़रूरी है। यह नज़र भी हर दिन बदलती रहती है। कभी चाँद भी अनावश्यक लगता है, कभी बिलकुल नहीं…
मेरे लेखन और मेरे जीवन के बीच का संवाद हमेशा ज़िम्मेदारी को टालने और बहानेबाजी में बदलने के खतरे में रहता है: दूसरे शब्दों में: मैंने अपने जीवन की गड़बड़ी को यह कहकर सही ठहराया कि मैं इसे व्यवस्थित, रूप और सौंदर्य दूंगा, इसके बारे में लिखकर; मैंने अपने लेखन को यह कहकर सही ठहराया कि यह प्रकाशित होगा, मुझे जीवन देगा (और जीवन को प्रतिष्ठा देगा)। अब, शुरुआत कहीं न कहीं से तो करनी ही पड़ती है, और यह जीवन से ही क्यों न हो; मुझमें, मेरी सीमाओं में विश्वास और एक-एक करके उन पर काबू पाने के लिए दृढ़ संकल्प: जैसे भाषाएँ, फ्रेंच सीखना, इतालवी को अनदेखा करना (तीन भाषाओं का सतही ज्ञान शौकियापन है) और जर्मन को फिर से जीवित करना, हर एक को ठोस बनाना। सब कुछ ठोस बनाना। 25 फरवरी। आज सुबह मनोचिकित्सक के पास गई और वो मुझे बहुत पसंद आए: आकर्षक, शांत और विचारशील, जिनमें उम्र और अनुभव का एक सुखद एहसास था; मन में आया: हे भगवान, क्यों नहीं? मेरा मन कर रहा था कि फूट-फूटकर रोऊँ और कहूँ, हे भगवान, हे भगवान, मुझे दिलासा दीजिए। मैंने उन्हें अपने ब्रेकअप के बारे में बताया और मुख्य रूप से यही शिकायत की कि यहाँ मुझे परिपक्व लोग नहीं मिलते: बस यही बात है! यहाँ एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे मैं जानती हूँ और जो मुझसे उम्र में बड़ा हो और जिसकी मैं प्रशंसा करती हूँ! कैम्ब्रिज जैसी जगह में यह शर्मनाक है। इसका मतलब है कि ऐसे कई अच्छे लोग हैं जिनसे मैं अभी तक नहीं मिली हूँ; शायद कई युवा

प्रोफेसर और पुरुष परिपक्व हों। मुझे नहीं पता (और मैं हमेशा पूछती हूँ, क्या वे मुझे जानना चाहेंगे?)। लेकिन न्यून्हम में एक भी प्रोफेसर ऐसा नहीं है जिसकी मैं व्यक्तिगत रूप से प्रशंसा करती हूँ। पुरुष शायद बेहतर हों, लेकिन उन्हें सुपरवाइजर के रूप में पाने की कोई संभावना नहीं है, और वे इतने प्रतिभाशाली हैं कि उस दोस्ताना व्यवहार में शामिल नहीं होते जिसके लिए श्री [अल] फिशर, श्री [अल्फ्रेड] काज़िन और श्री [जॉर्ज] गिबियन इतने उत्सुक रहते थे।
खैर, मैं डॉ. ब्यूशर के दोस्त से मिलूंगी और ईस्टर पर कैराबट्स से मिलने का प्लान बनाऊंगी। मैं उन्हें जवानी, जोश और प्यार दे सकती हूं ताकि उनकी नासमझी की भरपाई हो सके। कभी-कभी मुझे बहुत बेवकूफ महसूस होता है; फिर भी, अगर मैं होती, तो क्या मैं उन कुछ पुरुषों के साथ खुश नहीं होती जिनसे मैं मिली हूं? या यह इसलिए है क्योंकि मैं बेवकूफ हूं कि मैं खुश नहीं हूं; ऐसा तो बिल्कुल नहीं है। मैं चाहती हूं कि कोई रिचर्ड के बारे में खुलकर बोले; मैं इसकी हकदार हूं, है ना, एक ऐसा जोशीला प्यार जिसके साथ मैं जी सकूं। हे भगवान, मुझे खाना बनाना, घर बसाना, किसी पुरुष के सपनों में जोश भरना और लिखना कितना अच्छा लगेगा, अगर वह बोल सके, चल सके, काम कर सके और अपने करियर को लेकर पूरी तरह से जुनूनी हो। मैं यह सोच भी नहीं सकती कि प्यार करने और देने की यह क्षमता मुझमें यूं ही खत्म हो जाए। फिर भी, यह चुनाव इतना महत्वपूर्ण है कि मुझे थोड़ा डर लगता है। बहुत ज्यादा...
मुझे सबसे ज़्यादा डर कल्पना की मृत्यु का लगता है। जब बाहर का आकाश केवल गुलाबी हो और छतें केवल काली: वह फोटोग्राफिक मन जो विरोधाभासी रूप से सत्य बताता है, लेकिन दुनिया के बारे में निरर्थक सत्य। वह संश्लेषण करने वाली भावना, वह "आकार देने

वाली" शक्ति, जो प्रचुर मात्रा में अंकुरित होती है और ईश्वर से भी अधिक रचनात्मकता के साथ अपनी दुनिया बनाती है, वही मेरी इच्छा है। यदि मैं चुपचाप बैठा रहूँ और कुछ न करूँ, तो दुनिया एक बेजान ढोल की तरह बजती रहेगी, बिना अर्थ के। हमें गतिशील रहना चाहिए, काम करते रहना चाहिए, सपनों को साकार करना चाहिए जिनकी ओर हम दौड़ सकें; सपनों के बिना जीवन की दरिद्रता की कल्पना भी नहीं की जा सकती: यह उस प्रकार का पागलपन है जो सबसे बुरा है: कल्पनाओं और मतिभ्रम वाला पागलपन तो बॉश की कलाकृति जैसा होगा। मैं हमेशा सीढ़ियों से आती हुई कदमों की आहट सुनती रहती हूँ और अगर वो मेरे लिए न हों तो मुझे उनसे नफरत होती है। क्यों, क्यों, मैं कुछ समय के लिए तपस्वी क्यों नहीं बन सकती, बजाय इसके कि हमेशा काम और पढ़ने के लिए पूर्ण एकांत की चाहत में डूबी रहूँ, और दूसरों के हाथों के इशारों और शब्दों के लिए तरसती रहूँ। खैर, इस रेसीन के लेख, इस रोंसार्ड की यातना, इस सोफोक्लीज के बाद, मैं लिखूँगी: पत्र, गद्य और कविता, सप्ताह के अंत तक; तब तक मुझे संयमी रहना होगा।
26 फरवरी, रविवार। एक बड़ी अय्याशी के बाद एक छोटा सा नोट। सुबह का समय है, धुंधली, एकदम शांत, ठंडी, सफेद, सजग आँखें; मुझे घूर रही हैं। कल रात मैं खूब नशे में धुत हो गया, बहुत ही शानदार तरीके से, और अब मैं एकदम थका हुआ हूँ, छह घंटे बच्चे की तरह गर्म नींद के बाद, रेसीन पढ़ने के लिए है, और टाइप करने की भी ऊर्जा नहीं है; मुझे चक्कर आ रहे हैं। या कुछ और।
हैमिश टैक्सी से आया, और मिलर के बार में एक बदसूरत, दाँतों वाले, छोटे कद के, मुस्कुराते हुए आदमी, मीसन के साथ बार के सहारे खड़े-खड़े काफी उबाऊ समय बीत गया। वह आदमी बड़ी चालाकी दिखाने की कोशिश कर रहा था और बेमतलब की तीखी और चुभने वाली

बातें कर रहा था। हैमिश का रंग पीला था, उसकी आँखें गुलाबी और हल्के नीले रंग की थीं। मैंने लाल-सुनहरे रंग की व्हिस्की मैक से भरे गिलास एक के बाद एक लगातार पी लिए, और जब हम एक घंटे बाद निकले, तो मुझे वह तीव्र, भारी ऊर्जा महसूस हुई जो किसी को हवा में तैरने की तरह सहजता से आगे बढ़ने पर मजबूर कर देती है। पार्टी में ऊपर पियानो की तालबद्ध धुन गूंज रही थी, और ओह, यह बहुत ही बोहेमियन माहौल था, लड़के टर्टलनेक स्वेटर पहने हुए थे और लड़कियां नीली पलकों वाली या काले रंग के सुरुचिपूर्ण परिधानों में थीं... बर्ट चमक रहा था और गर्व से भरा हुआ लग रहा था जैसे उसने अभी-अभी पांच बच्चों को जन्म दिया हो, उसने बहुत ज़्यादा शराब पीने के बारे में कुछ स्पष्ट कहा, और सेंट बोटॉल्फ में कविता पाठ करने और उस पर चिल्लाने के बाद ल्यूक के शैतानी होने के बारे में बात करने लगा: [उदासीन अंश] ... ल्यूक, बहुत ज़्यादा नशे में, अपने पीले चेहरे पर एक मूर्खतापूर्ण मुस्कान, काली साइडबर्न और बिखरे बालों, काले-सफेद चेक वाली ढीली पैंट और एक ढीली झूलती जैकेट पहने हुए, हरे रंग के कपड़े पहने एक लड़की के साथ वह धीमा, पागल सा अंग्रेजी जाइव डांस कर रहा था, जो काफी काले बालों और आंखों वाली और परी जैसी लग रही थी, और जब उन्होंने नाचना बंद किया, तो ल्यूक उसके पीछे भाग रहा था। डैन ह्यूज़ बेहद पीले, भयानक रूप से पीले और झाइयों वाले दिख रहे थे, और मैंने आखिरकार अपनी अमर प्रस्तावना वाली पंक्ति कही जो उनके चतुर, असाधारण और व्यंग्यात्मक समीक्षा के बाद से मेरे साथ है: "क्या यह बेहतर या बदतर भाग है?" और वह इतने कम उम्र के लग रहे थे कि अभी इतना सोच भी नहीं सकते थे...
तब तक मैंने एक ड्रिंक गिरा दी थी, कुछ मेरे मुँह में, कुछ मेरे हाथों और ज़मीन पर, और जैज़ संगीत मुझ पर हावी होने लगा था, और

मैं ल्यूक के साथ नाचने लगी और जानती थी कि मैं बहुत बुरी तरह नाच रही थी, नदी पार करके पेड़ों से टकरा गई थी, कविताओं के बारे में चिल्ला रही थी, और वह बस उस दूर-दूर सी मुस्कान के साथ मुस्कुरा रहा था... उसने वो सब लिखा था, और वो इधर-उधर आलस कर रहा था। खैर, मैं भी इधर-उधर आलस कर रही थी, "बड़बड़ा रही थी, बड़बड़ा रही थी," और मेरे पास उन चीज़ों को लिखने का बहाना भी नहीं था; मुझे लगता है कि अगर आप ऐसी सेस्टिना लिख सकते हैं जो नियमों और पंक्तियों को तोड़-मरोड़ कर रख देती हैं, तो आप [लोप] ... एक शैतान की तरह मुस्कुरा सकते हैं।
फिर सबसे बुरी बात घटी, वो बड़ा, सांवला, हट्टा-कट्टा लड़का, जो वहाँ मौजूद एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जो मेरे लिए काफी बड़ा था, जो महिलाओं के ऊपर झुका हुआ था, और जिसका नाम मैंने कमरे में आते ही पूछा था, लेकिन किसी ने मुझे बताया नहीं था, मेरे पास आया और मेरी आँखों में घूरने लगा, और वो टेड ह्यूज़ था। मैंने फिर से उसकी कविताओं के बारे में चिल्लाना शुरू कर दिया और ये पंक्ति उद्धृत की: "सबसे प्रिय, अचूक हीरा" और उसने विशाल स्वर में, एक ऐसी आवाज़ में जो किसी पोलिश व्यक्ति की होनी चाहिए थी, चिल्लाकर जवाब दिया, "पसंद आया?" और मुझसे पूछा कि क्या मैं ब्रांडी पीना चाहती हूँ, और मैंने हाँ चिल्लाकर कहा और अगले कमरे में पीछे हट गई, प्यारे बर्ट के घमंडी, चमकते हुए चेहरे के पास से गुज़रते हुए, जो ऐसा लग रहा था जैसे उसने कम से कम नौ या दस बच्चों को जन्म दिया हो, और धड़ाम से दरवाज़ा बंद हो गया और वह एक गिलास में ब्रांडी उड़ेल रहा था और मैं उसे उस जगह पर उछाल रही थी जहाँ मेरा मुँह आखिरी बार था।
हम तेज़ हवा में चिल्ला रहे थे, समीक्षा के बारे में, और उसने कहा कि डैन जानता था कि मैं सुंदर हूँ, वह किसी अपाहिज के बारे

में नहीं लिखता, और मेरा ज़ोरदार विरोध जिसमें "संपादक के साथ सो जाओ" शब्द बार-बार निकल रहे थे। और फिर बात इस पर आ गई कि मैं पूरी तरह से वहाँ मौजूद थी, है ना, और मैंने पैर पटके और चीखकर हाँ कहा, और अगले कमरे में उसकी कुछ ज़िम्मेदारियाँ थीं, और वह लंदन में काम कर रहा था, दस पाउंड प्रति सप्ताह कमा रहा था ताकि बाद में बारह पाउंड प्रति सप्ताह कमा सके, और मैं पैर पटक रही थी और वह भी ज़मीन पर पैर पटक रहा था, और फिर उसने मुझे ज़ोर से मुँह पर चूमा [अंश]… और जब उसने मेरी गर्दन चूमी तो मैंने उसके गाल पर ज़ोर से काट लिया, और जब हम कमरे से बाहर आए, तो उसके चेहरे से खून बह रहा था। [अंश] और मैं मन ही मन चीखी, सोच रही थी: ओह, खुद को पूरी तरह से, लड़ते हुए, तुम्हें सौंप दूँ। मेरे जीवन में एकमात्र ऐसा आदमी जो रिचर्ड को ध्वस्त कर सकता है।
और अब मैं यहाँ बैठी हूँ, भूरे रंग के वस्त्र पहने, शांत और थकी हुई, मन में थोड़ी उदासी लिए। मैं लिखती रहूँगी। मैं सदमे के उपचार का विस्तृत वर्णन लिखूँगी, संक्षिप्त, सटीक और भावुक वर्णन, जिसमें ज़रा भी बनावटीपन नहीं होगा, और जब पर्याप्त हो जाएगा तो मैं उन्हें डेविड रॉस को भेज दूँगी। कोई जल्दी नहीं होगी, क्योंकि अब मैं प्रतिशोध की भावना से व्याकुल हूँ। लेकिन मैं उन्हें इकट्ठा करती रहूँगी। मैंने कल रात सदमे के उपचार के वर्णन के बारे में सोचा: उसके पागलपन की जानलेवा नींद, और नाश्ता न आना, छोटी-छोटी बातें, उस सदमे के उपचार की यादें जो गलत हो गया: बिजली का झटका दिया गया, और अनिवार्य रूप से भूमिगत गलियारे में जाना, एक नई दुनिया में जागना, बिना नाम के, पुनर्जन्म लेना, और स्त्री के रूप में नहीं।
मैं उसे फिर कभी नहीं देख पाऊँगी, और दिन की काँटेदार सीमाएँ कल रात क्वींस के गेट पर लगे काँटों की तरह मुझ पर टूट पड़ी हैं:

मैं उसके साथ कभी सो ही नहीं सकती, उसके सारे दोस्त यहाँ हैं और उनका उनसे करीबी रिश्ता है, हँस रहे हैं, बातें कर रहे हैं, मैं दुनिया की वेश्या बन जाऊँगी, साथ ही रोजेट की रखैल भी। मैं उसे कभी नहीं देख पाऊँगी, वह मुझे कभी नहीं ढूँढेगा। उसने मेरा नाम, सिल्विया, लिया और मेरी आँखों में एक काली, मुस्कुराती हुई नज़र डाली, और मैं बस एक बार कोशिश करना चाहती हूँ, अपनी ताकत उसके सामने। लेकिन वह कभी नहीं आएगा, और वह गोरा, पवित्र, आत्मसंतुष्ट और पसंदीदा, इस नशे में धुत, आकारहीन वेश्या को देखता है, क्या यह दिखावटी दया और घृणा से है?
लेकिन हामिश बहुत दयालु था और मेरे लिए लड़ता। मुझे उन दुष्टों से दूर ले जाने में उसे एक अलग ही गौरव महसूस होता था, और मैं उसके लिए लड़ने लायक थी, मैंने उसके साथ अच्छा व्यवहार किया था, उसने कहा। हम बाहर निकले तभी गोरी लड़की अंदर आ रही थी, और ओसवाल्ड ने अपने रूखे व्यंग्य में कुछ कहा, "हमें हड्डियों की बनावट के बारे में बताओ" और सेंट जॉन में वह आखिरी पार्टी थी जहाँ मैंने लाल दस्ताना खो दिया, जैसे आज रात मैंने लाल बैंड्यू खो दिया जिसे मैं अपने दिल की सारी लाली से प्यार करती थी। किसी तरह ये अय्याशी भरी रातें मुझे लिखने और खुद को एकांत में रखने के लिए एक तीव्र, नन जैसी तीव्र इच्छा जगाती हैं। मैं एकांत में रहूँगी। मैं किसी से मिलना नहीं चाहती क्योंकि वे टेड ह्यूजेस नहीं हैं और मुझे कभी किसी पुरुष ने मूर्ख नहीं बनाया है। वे पाखंडी हैं, हामिश ने कहा। [अधूरा अंश।] क्या मैं लिखूँ, और अलग बनूँ? हमेशा, मैं इसे पकड़ लेती हूँ, लेखन को, इसे अपने पास रखती हूँ, बचाव करती हूँ, बचाव करती हूँ, चेहरों के उतार-चढ़ाव, एकरूपता के खिलाफ। उसने मेरा नाम, सिल्विया, एक तूफानी हवा में

लिया जो मेरी आंखों के पीछे, उसकी आंखों के पीछे रेगिस्तान में तेजी से निकल गई, और उसकी कविताएं चतुर, भयानक और प्यारी हैं। खैर, हामिश और मैं चांदनी रात में धुंध भरी गलियों में बहुत देर तक घूमते रहे। चारों ओर धुंध की चादर बिछी थी और सब कुछ धुंधला सा दिख रहा था। काले गाउन पहने कुछ लड़के लड़खड़ाते हुए गा रहे थे। हम एक कार के पीछे छिप गए और उसने कहा, "पुलिस वाले मेरे पीछे पड़े हैं।" मैं लगातार विश्वास रखने और भाग्यशाली होने की बात करता रहा, क्योंकि अगर आप किसी चीज़ में विश्वास करते हैं, तो आप पानी पर भी चल सकते हैं। आखिरकार, कई अनजान गलियों से गुज़रने के बाद, जब हम व्हिस्की और मौज-मस्ती की दुनिया में बहुत दूर पहुँच गए, तो मैंने लैम्पपोस्ट को "टेड" कहा और खुद को "हामिश, हामिश" कहकर कोसता रहा, बार-बार उससे कहता रहा, क्योंकि वह मुझे सुरक्षित ले आया था। हम क्वींस के दरवाज़े पर पहुँचे और मैं एक बच्चे की तरह लेटकर आराम करना चाहता था, बस शांति, शांति, मैं फुसफुसाता रहा। पांच लड़के, पांच नवजात शिशु, मेरे पास आए और मुझे घेर लिया, धीरे से कहने लगे, आप यहाँ क्या कर रही हैं, क्या आप ठीक हैं, आपकी खुशबू कितनी अच्छी है, वह इत्र, और क्या हम आपको चूम सकते हैं? और मैं लोहे की बाड़ से लिपटी खड़ी रही, एक खोए हुए मेमने की तरह मुस्कुराती हुई और कहती रही, प्यारे बच्चों, और फिर हामिश भी उनमें शामिल हो गया, और वे उस लकड़ी के पुल पर चढ़ गए जिसे न्यूटन ने कभी बिना बोल्ट के बनाया था।
हामिश ने मुझे दीवार पर चढ़ने में मदद की, और अपनी तंग स्कर्ट में, मैंने कीलों के ऊपर से कदम रखने की कोशिश की; वे मेरी स्कर्ट, मेरे हाथों में चुभ गईं, और मुझे कुछ भी महसूस नहीं हुआ, इतनी दूर से सोचते हुए कि शायद मैं आखिरकार कीलों के बिस्तर पर लेट जाऊँ और मुझे कुछ भी महसूस न हो, योगी की तरह, सेलिया

कॉपलस्टोन की तरह, चींटियों के टीले के पास सूली पर चढ़ाई गई, आखिरकार, शांति, और कीलें मेरे हाथों में घुस गईं, और मेरे पैर जांघ तक नंगे थे, और मैं मर गई। मैंने जम कर कहा, "कलंक," उन कच्चे ठंडे हाथों को देखते हुए जिनसे खून बहना चाहिए था। लेकिन उनसे खून नहीं बह रहा था। मैं उदात्त नशे और विश्वास के एक कार्य में मर गई थी। और फिर हम हामिश के कमरे में गए और आग के पास फर्श पर लेट गए और मैं बहुत आभारी थी... और वह मुझे पसंद करने लगा था और मैं अपना सबक कब सीखूँगी? कब? कब? अचानक ढाई बज गए, और मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि मैं गैरकानूनी होऊंगा, लेकिन मैं था, और हम दो माचिस की तीलियों की रोशनी में किसी तरह नीचे उतरे, और बाहर निकल गए, बर्फ की हल्की सफेद धुंध के बीच एक अंधेरी अकेली आकृति की तरह, एकदम शांत अर्धचंद्राकार आंगन में।
उसने इशारा किया, मैं बाहरी रास्ते से बर्फ की मोटी परत पर चलते हुए आया, बर्फ टूट रही थी, सूखी बर्फ के चटकने की आवाज़ आ रही थी, फिर मैं बर्फ के मैदान को पार करके उसके पास पहुँचा, अचानक चमकती रोशनी का इंतज़ार कर रहा था, फिर 'अरे, रुको!' की आवाज़ और पिस्तौलों की आवाज़। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था, ठंडी बर्फ मेरे जूतों में थी और मुझे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। हम बॉक्स हेज के बीच से निकले, और हामिश ने नदी पर जमी बर्फ को परखा; उसने कहा कि कुली ने इसे काटा था, लेकिन यह पूरी थी, और हमें ढो रही थी, और हम आज़ादी से पार कर गए, घर की ओर चल पड़े। और मैंने सोते हुए लोगों के सन्नाटे में घड़ियों के तीन बजने की आवाज़ सुनी, और किसी तरह सीढ़ियाँ चढ़कर गर्म दूध लेने के बाद बिस्तर पर चला गया।
और अब आज का दिन है, और मैं सिर्फ छह घंटे सोया हूँ, थका हुआ हूँ और अगले दिन और उसके बाद के दिनों तक आराम करने का इंतज़ार कर

रहा हूँ। मुझे आज रेसीन का पेपर लिखना है, मैलोरी के साथ डिनर करना है (क्या मैं जी पाऊँगा?) और फिर कल रोंसार्ड पर काम करना है।
शायद रात के खाने पर वे मुझ पर हँसेंगे। खैर, वे गोरे तो नहीं हैं, भले ही वे पुरुष हों। लेकिन मैं बहुत देर तक होश में रहूँगी। मैं उसे दोबारा क्यों नहीं देख पाऊँगी? पर मैं नहीं देख पाऊँगी। मैं लंदन में तेज़ हवा में धमाचौकड़ी मचाने का सपना देख रही हूँ। लेकिन मैं उसे होश में देखना चाहती हूँ; मैं उसे उसी अनुशासन और जोश के साथ पत्र लिखना चाहती हूँ। इसलिए मैं आज रात और कल रात चुप रहूँगी और सो जाऊँगी, और फिर ऐसा करूँगी। 27 फरवरी, सोमवार। संक्षेप में, बहुत संक्षेप में। आज सुबह देर से सोया, 11:30 बजे अंधेरे में उठा, खुद को बेकार और सुस्त महसूस कर रहा था, फिर भी जिद्दी था। दो दिनों के लिए सभी जिम्मेदारियों को त्यागकर आराम करने का दृढ़ निश्चय किया। यह थकान मेरी नसों को चूस रही है। बहाने बनाने में इधर-उधर घूमने से ज्यादा मेहनत लगती है, लेकिन दोपहर के भोजन के बाद मैंने मिस बी से बात की, और खुद को बेहतर महसूस कराने के लिए स्लैक्स और अपनी पसंदीदा पैस्ले वेलवेट जर्सी पहनी, और वासना की काली शक्तियों के बारे में एक पूरे पृष्ठ की कविता लिखी: "पीछा करना"। यह बुरी नहीं है। यह टेड ह्यूजेस को समर्पित है।
मुझे सुस्ती और आलस महसूस हो रहा था; लोगों से मिलने के डर से बाहर न जाना, खाना न खाना अजीब लग रहा था: बर्फीले मैदानों में चलकर खाना खाने जाना और फ्रेंच का अनुवाद करना और एक शोध पत्र लिखना, इन दोनों में कितना फर्क है। ऐसा लग रहा था जैसे मैं सम्मोहित हो गई हूँ। मैंने जो लगातार काम किया है, उससे ऐसा लगता है जैसे मैं सदियों से यहीं हूँ। फिर भी मैंने फ्रेंच को

पूरी तरह से छोड़ दिया है, और मुझे प्रायश्चित करना होगा। मेरा अंतरात्मा इतना रूढ़िवादी है कि जब मुझे लगता है कि मैंने कुछ गलत किया है या खुद से पर्याप्त अपेक्षा नहीं रखी है, तो यह मुझे कंपकपी की तरह चीर देता है: मुझे लगता है कि मैंने भाषाओं के मामले में खुद को धोखा दिया है: मैंने इसे सीखने के लिए वास्तव में मेहनत नहीं की है, और अगले साल मुझे इतालवी के बजाय जर्मन की ट्यूशन लेनी होगी। इस सप्ताह के बाद मुझे हर दिन थोड़ा-थोड़ा फ्रेंच पढ़ना होगा (एक घंटा)। और दो घंटे लिखना होगा (लेकिन जब मैं कविताएँ लिखती हूँ, तो यह एक ऐसी धीमी लत में पूरा दिन खा जाती है जिसका मैं विरोध नहीं कर सकती)।
नए साल के नियम: अगले सेमेस्टर में सिर्फ़ एक ही सुपरविज़न लेना; भाषाओं को लिखने और पढ़ने के लिए पर्याप्त समय। लेखों के लिए विचार सोचना। हे भगवान! कैम्ब्रिज वैज्ञानिकों, प्रिंटिंग प्रेस, थिएटर समूहों से भरा पड़ा है, और मुझे बस उनके बारे में लिखने का साहस चाहिए। इसीलिए असाइनमेंट पर रिपोर्टिंग करना अच्छा है, क्योंकि इससे शुरुआती झिझक दूर करने का बहाना मिल जाता है। शायद अगले सेमेस्टर में यूनिवर्सिटी में दाखिला लेने की कोशिश करूँ। साथ ही, मुझे एक-दो पार्टी भी देनी है: शेरी, चाय या चार लोगों के लिए डिनर। देखते हैं। कुछ भी देने को तैयार। आज माँ ने कुछ अच्छे उपदेशों से भरा पत्र लिखा; हमेशा की तरह पहले तो मुझे थोड़ा संशय हुआ, लेकिन फिर मैंने जो पढ़ा वो दिल को छू गया: “अगर तुम अपनी तुलना दूसरों से करोगे, तो तुम घमंडी या कड़वे हो सकते हो—क्योंकि हमेशा तुमसे बड़े और छोटे लोग होंगे… अच्छे अनुशासन के अलावा, अपने प्रति कोमल रहो। तुम भी ब्रह्मांड की संतान हो, पेड़ों और तारों की तरह; तुम्हें यहाँ रहने का पूरा अधिकार है।” उन शब्दों ने मेरे दिल को शांति दी,

मानो मेरे जीवन और मेरे दिनों पर दयालुता से टिप्पणी कर रहे हों। इसने सबसे पहले मेरे उस गलत निर्णय को छुआ जो मैं बना चुकी थी: अपने जान-पहचान के उन हीन, टूटे हुए पुरुषों से निराश होना (जिनके बारे में मैं शादी के लिए सोच भी नहीं सकती) और गोरे लोगों और बाकी सभी को ज़रूरत से ज़्यादा महत्व देना। ईर्ष्या और अहंकार, और वह सुनहरा संतुलन कहाँ है, वो पुरुष जो मेरा हो, और मैं उसकी। जब मुझे मैडम के पाँचों संपादकों के विवाहित होने पर जलन होने लगती है (थोड़ी सी कसक के साथ—शायद ये मेरी ही सोच है, सफलता जैसा मीठा शब्द!) या फिलिप बूथ के द न्यू यॉर्कर के लिए कविताएँ लिखने और पत्नी होने पर जलन होने लगती है, तो समझ आता है कि मुझे अपने भीतर कुछ शक्ति का संचार करना चाहिए; मैं बहुत कुछ यूँ ही व्यर्थ जाने दे रही हूँ; मुझे कुछ ऐसे लक्ष्य बनाने चाहिए जिन्हें मैं हासिल कर सकूँ, वरना मैं ईस्टर की छुट्टियों की शुरुआत में बिल्कुल सुस्त और खाली बैठी रहूँगी। पहले हम स्वस्थ होते हैं, फिर काम करते हैं। इस बीच, सुकून के लिए हॉपकिंस की रचनाएँ पढ़ें।
जाहिर तौर पर यह रिचर्ड सैसून को संबोधित एक पत्र का मसौदा था, लेकिन इसे भेजा नहीं गया था, जैसा कि प्लाथ ने इस पृष्ठ पर बताया है।
1 मार्च, गुरुवार। किसी तरह मार्च का महीना है और काफी देर हो चुकी है, बाहर तेज़ गर्म हवा चल रही है जिससे पेड़ और बादल छटपटा रहे हैं और तारे तेज़ी से चमक रहे हैं। मैं दोपहर से ही उस हवा के साथ बह रहा हूँ, और आज रात लौटते समय, गैस की आग किसी फीनिक्स की आवाज़ की तरह गरज रही है, और मैंने वर्लेन की रचनाएँ पढ़ी हैं जिनमें उनकी पंक्तियाँ मुझे कोस रही हैं, और अभी-अभी कोक्टो की फ़िल्में 'ला बेले एट ला बेटे' और 'ऑर्फी' देखकर आया हूँ, क्या आप

समझ सकते हैं कि मुझे एक मरे हुए आदमी को पत्र लिखना क्यों बंद करना होगा और एक पत्र कागज़ पर लिखना होगा जिसे आप फाड़ सकते हैं, पढ़ सकते हैं या उस पर अफ़सोस कर सकते हैं।
ऐसा ही है। स्टीफन स्पेंडर आज दोपहर शेरी पी रहे थे, नीली आँखों और सफ़ेद बालों वाले, जो अब एक मूर्ति की तरह स्थिर हो चुके हैं, और कहते हैं, "भारत, यह मुझे बेहद उदास कर देता है" और उन भिखारियों के बारे में बताते हैं जो अनंत काल तक भिखारी ही रहेंगे। नौजवान फूलों और कविताओं से भरे जहाज़ छोड़ रहे हैं, और आत्माएँ—बर्फ़ के फूलों की तरह नाज़ुक—बत्तख की घंटी जैसे सफ़ेद सिर मेरी चाय के प्यालों में।
मुझे प्यारे जानवर की घायल, चमत्कारिक, कोमल आवाज़ सुनाई दे रही है, जो तैरते हुए पर्दों के महल से धीरे-धीरे फुसफुसा रही है। और देवदूत हर्टेबिस और मृत्यु दर्पणों में पानी की तरह घुल जाते हैं। केवल तुम्हारी आँखों में ही हवाएँ दूसरे ग्रहों से आती हैं, और यह मुझे बहुत दुख पहुँचाता है, जब तुम मुझसे फ्रांसीसी के हर शब्द के माध्यम से, हर उस शब्द के माध्यम से बात करते हो जिसे मैं खून बहते हुए शब्दकोश में ढूंढता हूँ।
मुझे लगा कि आपका पत्र ही वह सब कुछ था जो कोई मांग सकता है; आपने मुझे अपनी छवि दी, और मैंने उसे कहानियों और कविताओं में ढाल दिया; मैंने कुछ समय तक इसके बारे में सभी से बात की और उन्हें बताया कि यह एक कांस्य प्रतिमा थी, एक कांस्य का लड़का जिसके साथ एक डॉल्फिन थी, जो सर्दियों में हमारे बगीचों में अपने चेहरे पर बर्फ के साथ संतुलन बनाए रखता था, जिसे मैं हर रात उससे मिलने पर झाड़ देता था।
मैंने तुम्हारी छवि को अलग-अलग मुखौटे पहनाए और रात में और सपनों में उससे खेलता रहा। जब मैं शराब के नशे में होता था, तो

मंगलवार दोपहर, 6 मार्च, 1956। सारी बाधाएँ टूट गईं; मैं बहुत पीड़ा में हूँ, और मेरी सीमित समझ का एक और खोल चकनाचूर हो गया है। सारे व्यवस्थित, कसे हुए और बेताब कार्यक्रम धराशायी हो गए हैं, और आज दोपहर मुझे रिचर्ड का एक पत्र मिला जिसने सब कुछ तहस-नहस कर दिया, सिवाय इसके कि अचानक मैंने अपने भीतर झाँका और वह पाया जिसका मुझे डर था और जिसे पाने से मैंने बहुत संघर्ष किया था: मैं उस लड़के से अपने पूरे दिल से प्यार करती हूँ, और यह बहुत ज़्यादा है। इससे भी बुरा, मैं रुक नहीं सकती; एक इंसान होने के नाते भी, मुझे किसी को इतना जानने में दो या तीन साल लग जाएँगे कि मैं उसे इतना पसंद करूँ, इतना प्यार करूँ, इतना कि उससे शादी कर सकूँ। इसलिए, व्यावहारिक रूप से, मैं एक नन आश्रम में हूँ। इससे भी बुरा, नन आश्रम में नहीं, बल्कि ऐसे पुरुषों से घिरी हुई हूँ जो मुझे लगातार याद दिलाते रहते हैं कि वे रिचर्ड नहीं हैं; मैंने घृणा के आवेश में आकर मैलोरी और शायद कुछ अन्य लोगों को भी चोट पहुंचाई (और, मैलोरी को देखकर, हालांकि मुझे अपनी उस निर्दयता के लिए खेद है, मैं जानता हूं कि अब इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं था, मैं इतना क्रोधित हूं)।
मैं उससे बेइंतहा प्यार करती हूँ, करती रही हूँ और करती रहूँगी। पता नहीं कैसे, इस चिट्ठी ने आखिरकार मेरे सारे छोटे-मोटे संदेह मिटा दिए: तुम उसके बराबर लंबी हो; तुम्हारा वज़न उससे ज़्यादा है; तुम शारीरिक रूप से उतनी ही मज़बूत और स्वस्थ हो; तुम ज़्यादा एथलेटिक हो; तुम्हारा घर, पृष्ठभूमि और दोस्त इतने शांत और रूढ़िवादी हैं कि वे उसे स्वीकार या समझ नहीं पाएंगे और समय के साथ तुम्हारा नज़रिया बदल देंगे: बस!
तो, इस दर्द और पीड़ा से, पेरिस जाने और शांतिपूर्वक, चुपचाप उसका सामना करने की इस पागल इच्छा से, यह महसूस करते हुए कि मेरी

इच्छाशक्ति और मेरा प्यार दरवाजे पिघला सकता है: इसी से, मैं उसके पत्र के उत्तर में लिखे अपने पत्र को फिर से टाइप करती हूँ, जिसे वह शायद कभी नहीं पढ़ेगा, और शायद कभी जवाब भी नहीं देगा, क्योंकि ऐसा लगता है कि वह गिलोटिन की धार की तरह साफ और सावधानीपूर्वक संबंध तोड़ना चाहता है:
“मेरी बात बस एक आखिरी बार सुनो। क्योंकि यह आखिरी बार होगा, और मैं एक ऐसी भयानक शक्ति को जन्म दे रही हूँ, और यह तुम्हारा बच्चा है जैसे मेरा है, इसलिए तुम्हारा सुनना ही इसका पवित्र संस्कार होगा।”
जब मैं लिख रही हूँ तो सूरज की रोशनी मेरे कमरे में भर रही है और मैंने दोपहर संतरे, पनीर और शहद खरीदने में बिताई है और दो सप्ताह तक बहुत बीमार रहने के बाद बहुत खुश हूँ, क्योंकि मैं समय-समय पर देख सकती हूँ कि इस दुनिया में कैसे जीना पड़ता है, भले ही किसी की सच्ची और पूर्ण आत्मा उसके साथ न हो; मैं अपनी तीव्रता और जुनून को दुनिया को छोटे-छोटे होम्योपैथिक चम्मचों की तरह देती हूँ; मेट्रो के शौचालय में उस कॉकनी महिला को जब मैंने कहा: देखो, मैं भी इंसान हूँ और उसने मेरी आँखों में देखा और मुझ पर विश्वास किया और मैंने उसे चूमा; और माल्ट ब्रेड बेचने वाले उस टेढ़े-मेढ़े आदमी को; और एक छोटे काले बालों वाले लड़के को जो एक कुत्ते के साथ दौड़ रहा था जिसने सफेद हंसों के तालाब के ऊपर बने पुल के खंभे पर पेशाब कर दिया: इन सभी को, मैं अपने प्रेम की अद्भुत इच्छाओं को छोटे-छोटे पैकेटों में दे सकती हूँ जो उन्हें चोट नहीं पहुँचाएँगी या उन्हें बीमार नहीं करेंगी, क्योंकि वे बहुत तीव्र नहीं होंगी।
“मैं यह कर सकती हूँ, और मुझे यह करना ही होगा। भय से भरी एक रात में मैंने आशा की थी कि मैं उस अटूट प्रेम के बंधन में हमेशा के

लिए नहीं बंधी हूँ। मैंने अपने आप को उस नाम के बोझ से मुक्त करने के लिए अथक संघर्ष किया जो एक शिशु भी हो सकता था और एक घातक ट्यूमर भी; मुझे कुछ पता नहीं था। मैं केवल भयभीत थी। लेकिन यद्यपि मैं रोती रही (हे भगवान, मैं रोई भी!) और अपना सिर नुकीली कीलों से टकराती रही, इस उम्मीद में कि अगर मैं मर रही होती और तुम्हें पुकारती, तो शायद तुम आ जाते, मैंने अपनी कमजोरी से वही पाया जिससे मैं सबसे ज्यादा डरती थी। मैंने पाया है कि मुझे कभी भी मुक्त करना या मेरी आत्मा को वापस देना तुम्हारी शक्ति से परे है; तुम्हारे पास एक दर्जन रखैलें, एक दर्जन भाषाएँ और एक दर्जन देश हो सकते हैं, और मैं चाहे जितना भी प्रयास करूँ; मैं फिर भी मुक्त नहीं हो पाऊँगी।”
एक स्त्री होने के नाते, अपने सबसे प्रिय प्रेम और स्नेह, अपने 'घरेलू देवताओं' को त्यागना सूली पर चढ़ाने जैसा है: ये सभी छोटे-छोटे, स्नेहपूर्ण भाव हैं जो आपको जानने और प्यार करने के संकेत देते हैं: आपको पत्र लिखना (मुझे घुटन महसूस हुई है, आपके लिए एक तरह की डायरी लिखना, और उसे डाक से न भेजना: यह भयावह रूप से बड़ा होता जा रहा है, और हर बार यह मेरे सबसे बुरे फ़रिश्ते से जूझने का गवाह है) और आपको अपनी कविताएँ सुनाना (जो सब आपके लिए हैं) और छोटी-मोटी रचनाएँ, और सबसे भयानक, आपको देखना, भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, जब आप इतने करीब होते हैं, और भगवान जाने हमें इतने संशयवादी होने के लिए कब क्षमा मिलेगी।
"मेरे भीतर की स्त्री का यह हिस्सा, ठोस, वर्तमान, तात्कालिक हिस्सा, जिसे बिस्तर में अपने पुरुष की गर्माहट, उसके साथ भोजन करने की, और उसके मन से विचार करने और संवाद करने की आवश्यकता है: यह हिस्सा अब भी तुमसे पुकारता है: क्यों, क्यों तुम मुझे देखते और मेरे साथ रहते नहीं, जबकि उन भयानक वर्षों और अनंत

वर्षों से पहले अभी भी यह थोड़ा सा समय बचा है; यह स्त्री, जिसे मैंने 23 वर्षों से पहचाना नहीं है, जिसे मैंने तिरस्कृत और अस्वीकार किया है, अब मुझे ताना मारने आती है, जब मैं अपनी भयानक खोज में सबसे कमजोर हूँ।"
"क्योंकि मैं अपनी मर्ज़ी से तुम्हारे प्रति समर्पित हूँ (हालाँकि जब मैंने पहली बार तुम्हारे प्रति अपना प्रेम विकसित होने दिया था, तब मुझे यह पता नहीं था कि यह मुझे इतना गहरा दर्द देगा, इतना गहरा दर्द देगा, इतना गहरा दर्द देगा), और शायद अब मैं उस तरह से जानती हूँ, जिस तरह से मुझे कभी नहीं जानना चाहिए था, अगर तुम मेरे लिए जीवन आसान बना देते और मुझसे कहते कि मैं तुम्हारे साथ रह सकती हूँ (इस दुनिया में किसी भी शर्त पर, केवल तुम्हारे साथ) - तो अब मैं जानती हूँ कि मैं तुम्हें कितनी गहराई से, कितने भयभीत होकर और पूरी तरह से प्यार करती हूँ, हर तरह के समझौते से परे, तुम्हारे बारे में मेरे मन में आज तक जो भी शंकाएँ रही हैं, उनसे परे।"
मैं तुम्हें ये सब महज़ नेक बनने के लिए नहीं कह रही; मैं नेक बनना बिल्कुल नहीं चाहती थी। उस सबसे करीबी औरत (जिसकी वजह से, विडंबना ये है कि मैं तुम्हारी ही हूँ) ने मुझे इस भ्रम में डाल दिया कि मैं कभी तुमसे खुद को आज़ाद कर पाऊँगी। सच में, ये कितना बेतुका था: एक रखैल मुझे कैसे आज़ाद कर सकती है? जब तुम भी, और यहाँ तक कि सारे देवता भी, मुझे आज़ाद नहीं कर सकते, जो हर तरफ से तरह-तरह के मर्दों से मुझे लुभाते रहते हैं?
“मैंने सबसे निराशाजनक समय में भी यही सोचा था, जब मैं इतनी बीमार थी कि सो नहीं पाती थी, बस लेटी रहती थी और गॉर्डन के शरीर को कोसती रहती थी, जिससे मैं दो साल पहले बनावटी सामाजिक चेतना के नाम पर शादी करने वाली थी: हम दोनों एक साथ कितने अच्छे लगते

थे! अब वह जर्मनी में पढ़ने आ रहा है, और मैंने सोचा कि शायद अगर मैं उसे स्कीइंग और तैराकी में व्यस्त रख सकूँ तो मैं उसके साथ रह सकती हूँ, बशर्ते वह कभी मुझे पत्र न लिखे या मुझसे बहस न करने दे (क्योंकि मैं हमेशा जीतती हूँ) या बिस्तर की तरफ देखे भी नहीं। इस कायरता ने मुझे डरा दिया; क्योंकि यही मेरी कायरता थी। मैं तब भी इस मूल दुखद तथ्य को स्वीकार नहीं कर सकती थी, जैसा कि मैं अब करती हूँ।”
मैं तुम्हें अपने पूरे दिल, आत्मा और शरीर से प्यार करती हूँ; तुम्हारी कमजोरी में भी, तुम्हारी ताकत में भी; और किसी पुरुष को उसकी कमजोरी में भी प्यार करना मेरे लिए जीवन भर पहले कभी संभव नहीं हो पाया। और अगर तुम मेरी उस कमजोरी को समझ सको, जिसने मुझे अपना आखिरी भीख मांगने वाला पत्र लिखा था, और यह स्वीकार कर सको कि यह उसी स्त्री की है जिसने अपनी ताकत और विश्वास से पहला पत्र लिखा था, और उस पूरी स्त्री से प्यार कर सको, तो तुम जान पाओगे कि मैं तुमसे कितना प्यार करती हूँ।
मैं अपने जीवन के उन कुछ पलों के बारे में सोच रहा था जब मैंने महसूस किया कि मैं पूरी तरह से जीवंत था, तनावग्रस्त था, अपने भीतर की हर चीज का उपयोग कर रहा था: मन और शरीर, बजाय इसके कि मैं छोटे-छोटे टुकड़े बाँट दूँ, कहीं ऐसा न हो कि दर्शक बहुत अधिक प्लम केक से तृप्त हो जाएँ।
“एक बार मैं स्की ढलान के शिखर पर थी, नीचे एक छोटी सी आकृति के पास उतरना था, और मुझे स्की चलाना नहीं आता था; मैं नीचे गिर पड़ी; मैं खुशी से चीखती हुई उड़ गई कि मेरा शरीर इस गति को संभाल रहा है और उस पर काबू पा रहा है; और तभी एक आदमी लापरवाही से मेरे रास्ते में आ गया और मेरी टांग टूट गई। फिर वो समय भी आया... जब घोड़ा सरपट दौड़ते हुए सड़क पार कर गया और रकाब निकल

गई, मैं उसकी गर्दन से लटक गई, बेदम होकर, एक अजीब सी बेचैनी में सोच रही थी: क्या अंत ऐसा ही होगा? और फिर ऐसे कई मौके आए हैं जब मैंने खुद को उस क्रोध और उस मृत्यु के हवाले कर दिया है जो तुमसे प्रेम करने में होती है, और मैं अपने ही गहरे दर्द के बावजूद, अपनी शांति और संपूर्णता के लिए ज़रूरत से ज़्यादा वफादार रही हूँ। मैं दो दुनियाओं में जीती हूँ और जब तक हम अलग रहेंगे, मैं हमेशा ऐसी ही रहूँगी।”
अब जब मुझे अपनी सबसे भयानक और शाश्वत दुर्दशा का अचानक और स्पष्ट अहसास हो गया है, तो मुझे यह जानना ही होगा कि आप इसे समझते हैं और यह भी समझते हैं कि मुझे तब और अब आपको क्यों लिखना पड़ा: यदि आप मुझे फिर कभी नहीं लिखना चाहते, तो मुझे एक खाली, बिना हस्ताक्षर वाला पोस्टकार्ड भेज दें, कुछ भी, जिससे मुझे पता चले कि आपने मेरे शब्दों को यह जानने से पहले फाड़ कर जलाया नहीं कि मैं आपकी सोच से कहीं बेहतर और बदतर हूँ। मैं इतना इंसान हूँ कि इस दुनिया में मायने रखने वाले एकमात्र दूसरे इंसान से बात करना चाहता हूँ।
मुझे सबसे ज़्यादा दुख इस बात का हुआ कि तुमने मुझे अपने साथ बाँध लिया (ताकि हम दोनों में से कोई भी इस बंधन को तोड़ न सके, चाहे कितनी भी नफ़रत, ज़हर, घृणा और दुनिया भर की रखैलें क्यों न हों) और मुझे इस तरह चीर-फाड़ कर, मेरा दिल पूरी तरह से टूट चुका, बिना एनेस्थेटिक या टाँके लगाए छोड़ दिया; मेरा खून बंजर मेज़ पर बह रहा था, और कुछ भी उग नहीं पा रहा था। खैर, अब भी बह रहा है। और मुझे हैरानी होती है कि तुम मुझे देखने से क्यों डरते हो, जबकि हमारे पास इतना समय है: क्योंकि मुझे तुम पर भरोसा है, और मैं यह नहीं मान सकती (जैसा कि मैं कभी मानना चाहती थी) कि यह

सिर्फ़ सुविधा के लिए है, ताकि मैं दूसरी औरतों के साथ न मिलूँ। तुम ब्रांड की तरह इतने अड़ियल क्यों हो?
“मैं समझ सकती हूँ, अगर आपको लगता कि आपके साथ रहने से मैं आपसे और अधिक बंध जाऊँगी, या मुझे किसी और को खोजने की आज़ादी कम हो जाएगी, लेकिन अब मैं जानती हूँ, जैसा कि मैं जानती हूँ और आपको भी जानना चाहिए, कि मैं इतनी बुरी तरह टूट चुकी हूँ कि केवल चाकू से परहेज़ करने से मेरा इलाज नहीं हो सकता, तो आप हमें इस छोटी, सीमित दुनिया को बनाने से क्यों रोकते हैं? इतना वर्जित क्यों? मैं आपसे यह सवाल खुद से पूछने के लिए कहती हूँ। और अगर आपमें साहस या समझ है, तो मुझे बताएँ।”
जब मैं कमजोर थी, तब एक कारण था; अब मुझे कोई कारण नहीं दिखता। मुझे समझ नहीं आता कि मैं तुम्हारे साथ पेरिस में क्यों न रहूँ, तुम्हारी कक्षाओं में जाऊँ और तुम्हारे साथ फ्रेंच पढ़ूँ। मैं अब उतनी असुरक्षित नहीं हूँ, अपने आप से बाहर नहीं हूँ। तुम हमारे मामले को (जो पहले से ही नरक समान है, और आने वाले इन क्रूर वर्षों में हमें परखने के लिए बहुत कुछ है) इतना कठोर क्यों बना रहे हो? मैं फिर से भावनाओं में डूबने की और भी कठिन पीड़ा सहन कर सकती हूँ, और यह जानते हुए कि उन्हें फिर से जम जाना होगा, बशर्ते मैं यह मान सकूँ कि यह समय और स्थान के एक छोटे से हिस्से को उससे बेहतर बना रहा है जितना कि हठपूर्वक हमेशा अलग रहने से होता, जबकि हमारे पास पास रहने के लिए बहुत कम समय है।
“मैं तुमसे विनती करता हूँ कि इन बातों पर अपने मन और मन में विचार करो, क्योंकि अब मेरे मन में एक गहरा प्रश्न उठ रहा है: तुम मुझसे क्यों भाग रहे हो, जबकि तुम जानते हो कि मैं तलवार की छाया में जीवन को समृद्ध बनाना पसंद करूँगा? तुमने पहले कहा था कि मैं तुमसे कुछ ऐसा चाहता हूँ जो तुम मुझे नहीं दे सकते। ठीक

है, मैं चाहता हूँ। लेकिन अब मैं समझ गया हूँ कि क्या होना चाहिए (जो मैं तब नहीं समझता था) और यह भी समझ गया हूँ कि तुम्हारे प्रति मेरा विश्वास और प्रेम शराब पीने या दूसरे पुरुषों के साथ बिस्तर पर जाने से कुंद या अंधा नहीं हो सकता। मैंने यह पाया है, और यह जानता हूँ, और मेरे पास क्या है?”
समझ। प्रेम। दो दुनियाएँ। मैं इतनी सरल हूँ कि वसंत से प्रेम करती हूँ और यह मूर्खतापूर्ण और भयानक समझती हूँ कि आप इसे हमसे छीन सकते हैं, जबकि इसका अद्भुत सौंदर्य केवल हमारा ही है। उस अजीब सी अनुभूति से, जो मुझ पर किसी दिव्य दृष्टि की तरह छा जाती है, मैं जानती हूँ कि मुझे अपने आप पर और आपके लिए अपने असीम और असीम शाश्वत प्रेम पर पूरा भरोसा है; जो हमेशा रहेगा। लेकिन एक तरह से, यह मेरे लिए कठिन है, क्योंकि मेरा शरीर मेरे विश्वास और प्रेम से बंधा है, और मुझे लगता है कि मैं वास्तव में कभी किसी दूसरे पुरुष के साथ नहीं रह सकती; जिसका अर्थ है कि मुझे (चूँकि मैं नन नहीं बन सकती) एक समर्पित अविवाहित महिला बनना होगा। अब, अगर मैं वकील या पत्रकार के रूप में करियर बनाने की इच्छुक होती तो यह ठीक होता। लेकिन मैं नहीं हूँ। मैं बच्चों, बिस्तर, प्रतिभाशाली दोस्तों और एक शानदार, प्रेरणादायक घर की ओर आकर्षित हूँ जहाँ प्रतिभाशाली लोग स्वादिष्ट भोजन के बाद रसोई में जिन पीते हैं, अपने उपन्यास पढ़ते हैं, शेयर बाजार के भविष्य के कारणों पर चर्चा करते हैं और वैज्ञानिक रहस्यवाद पर बात करते हैं (जो कि, वैसे, दिलचस्प है: हर तरह से)। रूप: वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित और भौतिकी आदि के कई महान पुरुष, यहाँ सभी विभिन्न तरीकों से रहस्यवादी हैं)—खैर, जो भी हो, यही वह चीज़ है जो मुझे एक पुरुष के लिए बनानी थी, और उसे विश्वास और प्रेम का यह विशाल भंडार देना था जिसमें वह प्रतिदिन डूब सके,

और उसे बच्चे देना था; बहुत सारे बच्चे, बड़े दर्द और गर्व के साथ। और मैं अपनी अविवेकी अवस्था में तुमसे सबसे ज़्यादा नफ़रत करती थी, क्योंकि तुमने मुझे स्त्री बनाया, यह चाहत पैदा की, और मुझे केवल अपनी स्त्री बनाया, और फिर मुझे उस वास्तविक और भयावह तात्कालिक संभावना का सामना करवाया कि मुझे अपना जीवन एक स्कूल शिक्षिका के रूप में पवित्रता से जीना होगा जो अन्य महिलाओं के बच्चों को प्रभावित करके अपने आध्यात्मिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करती है। दुनिया में किसी भी चीज़ से ज़्यादा मैं तुम्हें एक पुत्र देना चाहती हूँ और मैं अपनी लौ के अंधकार से भरी हुई, फ्रेड्रे की तरह घूमती हूँ, किस कठोर संकोच, किस गर्व से वर्जित?
“एक तरह से, मुझे लगता है, मुझे लगा कि आप सिग्नोर रैपाचिनी की तरह हैं, जिन्होंने अपनी इकलौती बेटी को केवल खतरनाक जहरीले भोजन और एक जहरीले विदेशी पौधे से निकलने वाली हवा पर जीने के लिए पाला-पोसा: वह सामान्य दुनिया में जीने में बुरी तरह असमर्थ हो गई, और इस दुनिया से उसके पास आने वालों के लिए मौत का खतरा बन गई। खैर, कुछ समय के लिए मैं भी वैसा ही बन गया था। मैंने यहाँ कई लोगों को बेरहमी से चोट पहुँचाई, क्योंकि मैं उस सामान्य दुनिया में वापस जाना चाहता था और वहाँ जीना और प्यार करना चाहता था। खैर, मैं ऐसा नहीं कर सका, और मुझे उनसे नफरत थी जिन्होंने मुझे यह दिखाया…”
“मैं जानती हूँ कि अगर मैं [पेरिस] अराजकता, आरोपों के बवंडर, या यहाँ तक कि तुम्हें फिर से छोड़ने में और भी मुश्किल पैदा करने वाली स्थिति में आ रही होती (जो शायद हो भी सकती है, लेकिन इसे संभाला जा सकता है)—तो मुझे पता है कि तब तुम्हें मना करने का पूरा अधिकार होता। लेकिन मैं बस तुम्हें देखना चाहती हूँ,

तुम्हारे साथ रहना चाहती हूँ, चलना-फिरना चाहती हूँ, बातें करना चाहती हूँ, उस तरह से जैसे प्यार की उम्र पार कर चुके लोग करते हैं… मैं यह दिखावा नहीं कर रही कि मैं तुम्हारे साथ रहने की दिली इच्छा नहीं रखती, लेकिन हम उस समय और समझ तक पहुँच चुके हैं जहाँ हम एक-दूसरे के प्रति सबसे ज़्यादा दयालु और अच्छे हो सकते हैं। भले ही वो अनंत वर्ष हमारे सामने हों, फिर भी तुम अब मुझसे मिलने से क्यों इनकार कर रही हो?”
“मुझे विश्वास है कि मैं आपसे यह पूछ सकती हूँ, और आपको ऐसा महसूस नहीं होगा कि मुझमें अति-संकोच की कोई बीमारी है जो पत्रों को कमजोरी का प्रतीक बना देती है या उनमें कोई संक्रामक रोग फैला देती है। एक ऐसी स्त्री के रूप में जो अब स्वयं को जानती है, मैं आपसे पूछ रही हूँ। और यदि आपमें साहस है, और आप अपने भीतर झाँकेंगी, तो आप उत्तर देंगी। क्योंकि मैं आऊँगी, और आपकी इच्छा का सम्मान करूँगी; लेकिन अब मैं यह भी पूछूँगी कि आप ऐसा क्यों चाहती हैं। हे भगवान, ऐसा कृत्रिम ठहराव मत बनाइए जो अटूट हो; इसे तोड़िए, मोड़िए और फिर से बढ़िए, जैसा मैंने आज ही किया है।”
तो मैं भी रो रही हूँ, और रोना रोक नहीं पा रही, वो उमड़ते हुए आँसू जो जीवन और आशा की तलाश में छटपटा रहे हैं, जबकि मेरा प्यार उस भयानक नाले के उस पार है, मुझे आने से मना कर रहा है। क्यों, क्यों?…
मैंने उसका पत्र पढ़ा और आज रात भीगे हुए चीड़ के घने अंधेरे रास्ते पर चली, नम धुंधली तारों भरी रोशनी में काली पत्तियों पर गर्म बारिश की बूँदें टपक रही थीं और चमक रही थीं, इस भयानक दर्द से मैं लगातार रो रही थी; हे पिता, दर्द हो रहा है, हे पिता,

जिन्हें मैंने कभी जाना ही नहीं; एक पिता भी, जिसे उन्होंने मुझसे छीन लिया।
यह सब इतना सरल और हास्यास्पद लगता है: मुझे आज पता चला कि मैं एक ऐसे लड़के से बेहद लंबे समय से प्यार करती हूँ जो मुझे अपने पास आने नहीं देता, अपनी कठोर संशय और संकोच के कारण। और इतना ही नहीं, जब संभव है तब भी वह मुझे आने नहीं देता, बल्कि इस वसंत में वह ऐसी जगह जा रहा है जहाँ अनंत वर्षों तक मेरा आना असंभव होगा। और वह मुझे आने नहीं देगा।
और मुझे जेम्स जॉयस की वह शानदार कविता याद आती है: "मैं एक सेना को धरती पर हमला करते हुए सुनता हूँ..." और अंतिम अपरिवर्तनीय पंक्तियाँ जिनमें, घोड़ों की गर्जना, घूमती हुई हंसी और समुद्र से निकलते लंबे हरे बालों के बाद, दुनिया की सारी पीड़ा से भरे शब्दों की सरल श्रृंखला है:
मेरे दिल, क्या तुम्हें इस तरह निराश होने की कोई समझ नहीं है? मेरे प्यार, मेरे प्यार, मेरे प्यार, तुमने मुझे अकेला क्यों छोड़ दिया?
अगर मैं पुरुष होती तो इस विषय पर एक उपन्यास लिख सकती थी; लेकिन एक महिला होने के नाते, मुझे सिर्फ रोना और जम जाना, रोना और जम जाना ही क्यों सहना पड़ता है?
मुझे मजबूत बनने दो, नींद से भरपूर, बुद्धि से मजबूत, हड्डियों और तंतुओं से मजबूत; इस निराशा के बीच से मुझे खुद को फैलाना सीखने दो: यह जानने दो कि किसे और कहाँ देना है: नैट को, गैरी को, क्रिस को भी, इको को, और अपने प्यारे गॉर्डन को भी: छोटे-छोटे पलों और अनौपचारिक बातचीत में भक्ति और प्रेम का वह विशेष संचार करने दो जो हमारे ज्ञानोदय का कारण बनता है। कड़वाहट से

दूर रहो। मुझे उससे बचाओ, उस आखिरी कड़वे, खट्टे नींबू के एसिड से जो अकेली, चतुर और तन्हा महिलाओं की नसों में दौड़ता है। मुझे हताश होकर सांत्वना की कमी में अपनी इज्जत दांव पर नहीं लगानी चाहिए; मुझे शराब पीकर और अजनबी पुरुषों के साथ खुद को चोट पहुँचाकर छुपना नहीं चाहिए; मुझे कमजोर होकर दूसरों को यह नहीं बताना चाहिए कि मैं अंदर से कितनी दुखी हूँ; कैसे दिन-ब-दिन यह रिसता है, इकट्ठा होता है और जम जाता है। मैं अभी भी जवान हूँ। साढ़े तेईस साल की उम्र भी नई शुरुआत करने के लिए बहुत देर नहीं है… मुझे पूरी उम्मीद है कि अगर वह नहीं आया तो पाँच साल में मैं एक नई जिंदगी बना सकती हूँ; मैं निश्चित रूप से सिर्फ अंधाधुंध यह सोचकर नहीं जी सकती कि मैं इतने साल कैसे बिताऊँ कि वह आ जाए; मैं किसी तरह हमेशा उसके साथ रहना चाहती हूँ; जागकर उसका अभिवादन पाना चाहती हूँ, और उसके बच्चे पैदा करना चाहती हूँ; उसके बच्चे को गर्भ में धारण करना कितना दिव्य गौरव है। हे भगवान! मैं इस तरह की अतिशयोक्ति सहन नहीं कर सकती। ऐसा कुछ भी न हो; इसे बाहर निकालो, और तय करो कि क्या करना है, और उसे करो।
ओह, कोई तो हो! मैं नामों को दोहराती हूँ, सोचती हूँ कोई तो हो: मेरी बात सुनो, मुझे अपने दिल में जगह दो, मुझे प्यार से सहलाओ और मुझे रोने दो, रोने दो, रोने दो। और मुझे मजबूत बनने में मदद करो: ओह, सू, ओह, मिस्टर फिशर, ओह, डॉ. बी., ओह, माँ। हे भगवान! शायद मैं एली लिखूँगी। इससे इसे और स्पष्ट करने में मदद मिलेगी… मुझे इसमें बहुत आनंद आ रहा है; मैं पिछले दो महीनों से बहुत तनावग्रस्त और कठोर रही हूँ। दो महीने अकेले। अचानक सब कुछ छोड़ देने और दिल खोलकर रोने में मुझे बहुत आनंद आ रहा है। मैं थकी हुई हूँ और इतने लंबे समय से साइनस की वजह से बहुत निराश थी, और इससे मुझे राहत मिली: सारी निराशा, जब मैं सबसे कमजोर होती

हूँ तब मुझ पर हावी हो जाती है। मैं हॉपकिंस को पढ़ूँगी: और, जब हमारा जीवन बिखर जाता है, और सबसे सुंदर दर्पण भी टूट जाता है, तो क्या आराम करना, एक तरफ हट जाना और ठीक होना सही नहीं है; मुझे क्यों भाग-दौड़ करनी चाहिए, खुद को घसीटते हुए कक्षाओं में जाना चाहिए: मुझे वास्तव में काम से मिलने वाले उस "पलायन" की ज़रूरत नहीं है: मुझे आराम चाहिए: भगवान का शुक्र है, मेरे पास करने, पढ़ने और सोचने के लिए बहुत कुछ है। मुझे अगले सेमेस्टर में शेरी पार्टी या चाय पार्टी करनी चाहिए, और क्रिस, गैरी, नैट, कीथ (जो बहुत प्यारा लगता है) और एक-दो लड़कियों को बुलाना चाहिए। सही लोग और सही संख्या बहुत महत्वपूर्ण हैं: ताकि हर कोई बात करे और संवाद करे, और अराजकता या संकीर्णता न हो…
किसी दिन जब मैं लड़खड़ाते हुए उठकर अंडे पका रही होऊंगी, बच्चे को दूध पिला रही होऊंगी और अपने पति के दोस्तों के लिए रात का खाना तैयार कर रही होऊंगी, तब मैं बर्गसन, या काफ्का, या जॉयस की रचनाएँ उठाऊंगी और उन बुद्धिजीवियों के लिए तरसूंगी जो मुझसे कहीं आगे निकल चुकी हैं और आगे बढ़ चुकी हैं।
लेकिन कैसे? क्या ये महिलाएं, ये मिस बर्टन, ये बूढ़ी मिस वेल्सफोर्ड (जिनकी ऊर्जा अब ढल रही है), "जॉनसन और चैपमैन की राजनीतिक त्रासदी" जैसे लेख या "द फूल" जैसी किताबें पढ़ने और लिखने और डॉ. क्रूक जैसे प्रतिभाशाली युवाओं से डरने से बेहतर हुई हैं? मैं संघर्षों से भरा जीवन जीना चाहूंगी, बच्चों, कविताओं, प्रेम और गंदे बर्तनों के बीच संतुलन बनाना चाहूंगी; और पियानो पर, स्की ढलानों पर और बिस्तर पर, बिस्तर पर, बिस्तर पर जीवन की पुष्टि को जोर-शोर से व्यक्त करना चाहूंगी।
कभी न कभी। आज मैंने निगरानी में गुजारा: अब घंटों तक कर्तव्य की ज़िम्मेदारी निभाना भी एक बड़ी बात है, बिना चिल्लाए: शांत,

धीरे-धीरे, धैर्य से। वैसे, आज मिस बर्टन ने हमें तब टोका जब हमने आवेग में आकर कहा कि आत्महत्या एक तरह से मुक्ति है (बचाव के तौर पर?) और उन्होंने कहा कि अगर कोई इस दुनिया में भ्रष्ट और दुखी जीवन जी सकता है, तो इसे छोड़ देना एक बहादुरी का काम है। नोट: हमने ऐसा सोचा था। एक समय।
आज श्रीमती क्रूक प्रेम की मुक्तिदायक शक्ति पर चर्चा करेंगी, जिसे दार्शनिक एफ. एच. ब्रैडली ने अपनी पुस्तक 'एथिकल स्टडीज़' में छोड़ दिया था (जिससे उनकी छवि काफी कमजोर हुई) और जिसके बारे में हम अगले सप्ताह डी. एच. लॉरेंस की पुस्तक में पढ़ेंगे। और मुझे अपना शोध पत्र "रेसीन में नियति के रूप में जुनून" वापस मिल गया, जिस पर यह टिप्पणी थी कि जुनून केवल एक पहलू है, न कि वह घातक नरसंहार जो मैंने इसे बना दिया था: साथ ही मैंने ज्वालाओं, कैंसर और भूख से संबंधित अपने रूपकों को भी मिला दिया था...
डॉ. क्रूक के बाद, मैंने गैरी [हॉप्ट] के साथ ईगल में अच्छा लंच किया। अच्छे, पौष्टिक भोजन, बीयर, समझदारी भरी बातों और सभी पुरुषों से भरे उस अंधेरे पब के माहौल में मैं अकेली महिला थी; और मुझे इससे बहुत अच्छा लगा! गैरी गोरा, नीली आँखों वाला, सौम्य स्वभाव का, काफी हद तक जर्मन है: उसकी सोचने की शैली परिष्कृत, विश्लेषणात्मक, धीमी और विचारशील है: ऐसा लगता है कि वह हर जगह के सभी बेहतरीन दिमागों से मिला है: यहाँ, उसने [डेविड] डाइचेस, क्रूक, शायद [सी. एस.] लुईस के अधीन अध्ययन किया है: वह सभी बेहतरीन दिमागों से मिला है: ई. एम. फोर्स्टर: खैर, वैसे भी, मुझे हमारी पिछली मुलाकातों की तुलना में बेहतर महसूस हुआ क्योंकि मैंने, हालांकि गहनता से, कम से कम अधिक शांति से संवाद किया और मुझे लगा कि मैं उससे पहले की तरह जल्दबाजी में बात नहीं कर रही

थी, यह सोचकर कि वह मेरे दिमाग को स्त्री, अतार्किक और थोड़ा बेतुका समझकर उसका तिरस्कार कर रहा है।
गैरी और मैंने वैज्ञानिक रहस्यवाद, ताश के पत्तों में पूर्वज्ञान की संभावना, सम्मोहन, उत्तोलन, ब्लेक (जिनकी वह बहुत प्रशंसा करते हैं) के बारे में खूब बातें कीं: मैंने वैलेस स्टीवंस को पढ़ा है, और वह अभी शुरुआत ही कर रहे हैं। मैं अपने भाषण को और अधिक प्रभावशाली बनाने की कोशिश कर रहा हूँ, बोलने से पहले ज़्यादा सोच रहा हूँ: केवल हाव-भाव से बोलने के बजाय, अपनी बात को साबित करने की कोशिश कर रहा हूँ: इसके बारे में और जानें, यह अच्छा है। गैरी भी मदद कर सकते हैं, क्योंकि, हालांकि उनमें एक रोमांटिक तेवर है (लगभग हास्यास्पद, अच्छे अर्थ में, वह इतने साधारण लगते हैं, किसी तरह एक विशेष विश्लेषणात्मक स्वभाव का अभिशाप), वह अत्यंत सटीक और तार्किक हैं; मैं इस गुरुवार को उनके साथ कॉफी पी रहा हूँ, अगले हफ्ते उनके और कीथ के साथ चाय पी रहा हूँ। मुझे पढ़ना चाहिए। बर्गसन को पढ़ना चाहिए। न्यून्हम के एक अंधेरे कमरे में मिस बैरेट के साथ एक उबाऊ सत्र के दौरान भी, जब वह उन अपरिपक्व लड़कियों से मीठी तुतलाहट में 'लेस फ्लेर्स डू माल' का विश्लेषण कर रही थीं, मुझे यह एहसास हुआ कि मैं बॉडेलेयर की रचनाओं का अनुवाद देखते ही, लगभग तुरंत कर सकता हूँ, सिवाय उन स्पष्ट शब्दावली शब्दों के जिन्हें मैं नहीं जानता था: मैंने शब्दों और अर्थों के सहज प्रवाह को महसूस किया और उनमें डूब गया, उन्हें पढ़ने और उनके साथ जीने की तीव्र इच्छा के साथ। शायद किसी दिन फ्रेंच भाषा मेरे लिए सचमुच स्वाभाविक हो जाएगी...
ये सब रोने से रोकने के लिए किया। रविवार को जेन के साथ मेरा ज़बरदस्त झगड़ा भी हुआ। उसने मेरी पाँच नई किताबों पर पेंसिल

से निशान लगा दिए थे और नोट्स भी लिख दिए थे; ज़ाहिर है उसे लगा कि चूंकि मैंने पहले ही उन पर काले रंग से निशान लगा दिए हैं, इसलिए अब और कुछ नुकसान नहीं हो सकता; खैर, मैं गुस्से से आग बबूला हो गई, मुझे लगा जैसे मेरे बच्चों के साथ किसी अजनबी ने बलात्कार किया हो या उन्हें पीटा हो...
लेकिन इस भयानक दुःख, इस बीमारी, इस थकान, इस भय के बीच भी, मैं अभी भी सोचता रहता हूँ: अभी भी प्राकृतिक दुनिया का आशीर्वाद है और उन प्रियजनों के साथ समय बिताना और पढ़ना और देखना बाकी है। विज्ञापन देखकर एक और फुलब्राइट स्कॉलर से संपर्क हुआ। शायद उनके साथ पेरिस जाऊं (क्या वो कद में छोटे, कुरूप, बदसूरत, बूढ़े या शादीशुदा हैं? उनके पास कोलंबिया से पीएचडी है और वो युवा और व्यावहारिक लग रहे थे)। मुझे लगता है कि मुझे किसी तरह एक सुबह जल्दी रिचर्ड के घर जाना चाहिए और वहाँ खड़े होकर, मजबूत और संयमित होकर, बस इतना कहना चाहिए: नमस्कार। फिर मैं पेरिस में घूम सकती हूँ, और शायद कुछ लोगों से मिल सकूँ, कुछ नाटक देख सकूँ, और फिर ट्रेन से जर्मनी में गॉर्डन से मिलने जा सकती हूँ। गॉर्डन प्यारे और मजबूत होंगे और अपनी दयालुता से मुझे ठीक कर देंगे, भले ही उन्हें इस सारी पीड़ा का कुछ भी पता न हो। मैं कमजोर नहीं पड़ना चाहती और किसी और को बताना नहीं चाहती। देखते हैं। उसका सामना करना एक तरह का आखिरी कदम होगा। (हाँ, मुझे अब भी लगता है कि मुझमें शक्ति है: हो सकता है वह अपनी प्रेमिका के साथ सो रहा हो, मुझे अंदर न आने देने का आदेश दे रहा हो, या वहाँ न होने का, या अगर हो भी तो इससे भी बुरा, मुझसे मिलने से इनकार कर दे, लेकिन मैं अब हताश नहीं हूँ। और इसीलिए मुझे लगता है कि मैं ईमानदारी से जा सकती हूँ। मैं उससे प्यार करती हूँ और मुझे समझ नहीं आता कि मैं उसके साथ जीवन का आनंद क्यों

नहीं ले सकती, यह जानते हुए कि हमें इसे छोड़ना ही होगा। देखते हैं।)
आइए, मेरे कोच। शुभ रात्रि, शुभ रात्रि।
गुरुवार रात, 8 मार्च… मुझे पेम्ब्रोक बहुत पसंद है: मैं पत्थरों से बने आंगन को पार करके गोथिक मेहराब वाली गोलाकार सीढ़ियों से ऊपर भागी, जिन्हें देखकर मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने एलिज़ाबेथन रेशमी वस्त्र पहने हों। गैरी (हॉप्ट) घर की पिसी हुई कॉफी और कुछ खबरें सुनाने के लिए तैयार था, खासकर कीथ और श्रीमती क्रूक के बारे में (जो शायद मुझसे शादी कर लें, गैरी आशावादी लग रहा था)। हमने येल और स्मिथ और कई हस्तियों (जिन प्रोफेसरों को वह जानता है वे अद्भुत हैं) और सैसून के बारे में घंटों बातें कीं: मुझे यह कहने में एक अजीब सी खुशी महसूस हुई: ओह हाँ, मैं उन्हें जानती थी; उनके बारे में बताओ। और फिर गैरी ने मुझे बताया कि उन्होंने पांडुलिपि क्लब से सैसून को क्यों अस्वीकार किया: वह समूह में रहने वाला व्यक्ति नहीं था; येल से असंतुष्ट था; लिखने के लिए सब कुछ छोड़ दिया; पारिवारिक नाम का प्रभाव, आदि। मैं मन ही मन मुस्कुराई और सोचा: हे भगवान! कितना बेतुका है! और मैं उन्हें कितना प्यार करती हूँ!
… क्रूक को पकड़ने के लिए दौड़ी… जो डी. एच. लॉरेंस और उनकी अद्भुत कहानी “द मैन हू डाइड” पढ़ने लगी। उसने कुछ अंश पढ़े, उसे ठंडक महसूस हुई, जैसे “द डेड” के आखिरी पैराग्राफ में, मानो किसी देवदूत ने मुझे बालों से खींचकर रोंगटे खड़े कर दिए हों: शोकग्रस्त आइसिस के मंदिर के बारे में, आइसिस की खोज के बारे में। लॉरेंस की मृत्यु वेंस में हुई, जहाँ मुझे सैसून के साथ एक रहस्यमयी दर्शन हुआ था; मैं वह स्त्री थी जिसकी मृत्यु हुई थी, और उस वसंत में सैसून के माध्यम से मेरा संपर्क जीवन की उस

प्रज्वलित ज्वाला, अस्तित्व के उस दृढ़ क्रोध से हुआ। सब कुछ कंपकंपी पैदा करने वाला प्रासंगिक लगा; मैंने बहुत कुछ पढ़ा है; मैंने इसका बहुत कुछ अनुभव किया है। यह मायने रखता है। रात के खाने से पहले लॉरेंस को खत्म कर दिया…
... श्रीमती लैमेयर लिखती हैं कि ग्रैमी को वापस अस्पताल ले जाया गया है; वह कुछ खा नहीं पा रही हैं। क्या जब मैं लिख रही हूँ, तब भी वह कैंसर से मर रही हैं? यह घिनौना रहस्य है; मैं उस महिला से बहुत प्यार करती हूँ, मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वह इस दुनिया से चली गईं और मैं वहाँ नहीं हूँ; मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि घर उनके बिना हो सकता है। यह मुझे अंदर से तोड़ देता है; दूर से, मैं उनके बारे में सोचती हूँ और रोती हूँ। वे उपस्थितियाँ, वे लोग जिनसे प्यार किया गया और जो अंधकार में चले गए; मैं अपने पिता के चले जाने पर क्रोधित और आक्रोशित हूँ, जिन्हें मैं कभी जान नहीं पाई; यहाँ तक कि उनका मन, उनका हृदय, उनका चेहरा, एक 17 वर्षीय लड़के के रूप में मैं उनसे बहुत प्यार करती थी। मैं उनसे प्यार करती; और वह चले गए। मैं किसी तरह बहुत बूढ़ी महसूस कर रही हूँ, मेरे जानने से पहले ही सभी बड़े लोग गुजर गए हैं, और केवल छोटे बच्चे, शिशु ही मेरे नीचे हैं। मैं अंधकार के बहुत करीब हूँ। मेरी विलानेल मेरे पिता की थी; और सबसे अच्छी थी। मैं उन्हें जानने के लिए तरसती हूँ; एंकर में उस शानदार कॉफी सेशन के दौरान मैंने रेडपाथ को देखा और लगभग उनसे विनती कर ली कि वे मेरे पिता बन जाएं; एक अनुभवी, संयमित और बुद्धिमान बुजुर्ग व्यक्ति के साथ जीवन व्यतीत करने के लिए। मुझे सावधान रहना होगा, इस कारण शादी करने से बचना होगा। शायद एक प्रतिभाशाली पिता वाला युवक ठीक रहेगा। मैं दोनों से शादी कर सकती हूँ।

* * *

9 मार्च, शुक्रवार… कमरा साफ करते समय गाने का मन हुआ: मैंने माँ को एक पत्र लिखा जिसमें मैंने बताया कि कैसे मैं प्रसव पीड़ा के बीच अपनी आत्मा का निर्माण कर रही हूँ और सैसून के बारे में मुझे कैसा महसूस हो रहा है, साथ ही दो बेहतरीन कविताओं की प्रतियाँ भी भेजीं: "पर्स्यूट" और "चैनल क्रॉसिंग"। उन्होंने अपनी नई प्रेरणा के बारे में भी लिखा: युवा लेखकों के लिए यूजीन सैक्सटन फैलोशिप के लिए आवेदन। मेरा पूरा ध्यान फिर से इस बात पर केंद्रित हो गया है कि अगर मैं इस अकादमिक, आलोचनात्मक दुनिया में प्रवेश करती हूँ तो मेरा सारा समय पढ़ने में ही व्यतीत होगा, और मुझे अपनी दिनचर्या में एक स्वस्थ बदलाव की आवश्यकता है, लगभग एक सीमा से आगे न पढ़ने का संकल्प लेना होगा, और उन चीजों को अधिक पढ़ना होगा जो मेरे लेखन को प्रभावित करती हैं, न कि उसे पंगु बनाती हैं: समकालीन रचनाएँ। मैं अब लेखन-जीवन पर जोर देना चाहती हूँ; अकादमिक-आलोचनात्मक-शिक्षण जीवन प्रतीक्षा कर सकता है। यदि मैं इस सत्र में लिखती हूँ (अपने कार्यक्रम को न्यूनतम स्तर तक सीमित करके: नैतिकतावादी और फ्रांसीसी, शायद जर्मन) और एली के साथ एक महीने स्पेन में रहती हूँ, फिर एक महीने लेखन के लिए लौटती हूँ, और फिर से निकल जाती हूँ, तो मेरे पास विभिन्न पुरस्कारों के साथ पर्याप्त धन जमा हो जाएगा; शायद इससे मैं एक उपन्यास (प्रेम और आत्महत्या का एक बड़ा हिस्सा: साथ ही कॉलेज का वातावरण, दुनिया में एक बुद्धिमान महिला की स्थिति: अध्यायों, कहानियों में सोचना, विजय के लिए संघर्ष करना) और कविता लिख सकूँगी जो मुझे अनुशासन में रखेगी। मैं उपन्यास लिखना ज़्यादा पसंद करूँगी, और मैं एक साल के लिए दक्षिणी फ़्रांस (वेंसे? ग्रास?) या इटली या स्पेन में रह सकती हूँ, अपनी आत्मा को तराश सकती हूँ, बस अकेले रहकर

फ़्रेंच और जर्मन पढ़ सकती हूँ और कला में डूब सकती हूँ। मुझे यह ज़रूर आज़माना चाहिए। इसके तरीके सोचने होंगे। सेवेंटीन से लेकर मैडमोज़ेल तक, और हाल ही में कविता के क्षेत्र में मिली सफलताएँ, सभी पुरस्कार अमूल्य होंगे; साथ ही, अख़बार का अनुभव भी।
यह एक सपना है। हम इसे पूरा करने के लिए मेहनत करेंगे। अगर मेरा उपन्यास प्रकाशित हो जाए तो अमेरिका में नौकरी मिलने में भी मदद मिलेगी। इस गर्मी में इसे शुरू करेंगे। रूपरेखा: बुद्धिमान महिला, संघर्ष, विजय: संघर्ष के प्रति सहनशीलता, आदि। इसे जटिल, समृद्ध और जीवंत बनाएं। सैसून को लिखे पत्रों आदि का उपयोग करें। मैं बहुत उत्साहित हूं। इसे तनावपूर्ण और कठिन बनाएं, और भगवान के लिए, भावुक न बनाएं।
हेफ़र की दुकान से हक्सले की कई किताबें खरीदीं: सबसे नई, स्वर्ग और नरक: विपरीत ध्रुवों का विचार मन में: सम्मोहन या मेस्केलिन के प्रभाव में।… अब वापस यहाँ: द न्यू यॉर्कर ने मेरी कविताएँ अस्वीकार कर दीं, कम से कम "क्षमा करें, कृपया पुनः प्रयास करें" कहकर। आशा के इन दिनों में, मुझे नियमित डाक से ही कविताएँ वापस मिल रही थीं। लेकिन आज, सौभाग्य से, मैं दस उपन्यास लिख सकता हूँ और देवताओं को परास्त कर सकता हूँ; बाहर, टेनिस की गेंदें बज रही हैं, पक्षी चहचहा रहे हैं, और मुझे बर्टन के लिए अपना अंतिम लेख लिखने के लिए मार्लो और टूरनर को पढ़ना होगा। वसंत के लिए, जीवन के लिए, और एक विकसित होती आत्मा के लिए शुभकामनाएँ।
शनिवार सुबह, 10 मार्च। मैं चैन से नहीं बैठ पा रही; मैं बेचैन हूँ; सुबह की धूप में सपना मुझे चिढ़ाने आ रहा है। पिछली रात हामिश के साथ पी गई व्हिस्की, एक के बाद एक गिलास गटकना, कम से कम

पाँच या छह, अभी भी मेरी नसों में उथल-पुथल मचा रही है, मानो मुझे धोखा देने को तैयार हो; आज सुबह की कॉफ़ी का कैफीन भी मेरी नसों में तनाव पैदा कर रहा है, और मैं स्तब्ध हूँ: विडंबना यह है कि ग्रांटा पत्रिका में उसी नाम के शुरुआती अक्षरों वाली लड़की की एक घटिया कविता छपी है; गुट के प्रति कड़वाहट: वे दोस्तों को ही छापते हैं, हमेशा दोस्तों को; अगले हफ्ते के बाद मुझे उनके और यूनिवर्सिटी के लिए कुछ छोटे-छोटे लेख लिखने होंगे: दमदार, हास्यपूर्ण, तीखे: कुछ ऐसा जिसे वे अनैतिक माने बिना अस्वीकार न कर सकें।
मैं कहना चाहता हूँ कि: वो यहाँ हैं; कैम्ब्रिज में। मुस्कुराते हुए गोल चेहरे वाले बर्ट, एकदम साफ-सुथरे और सजे-धजे, कॉलेज लाइब्रेरी जाते समय सड़क पर मुझसे मिले: “कल रात ल्यूक और टेड ने तुम्हारी खिड़की पर पत्थर फेंके थे।” मुझे बहुत खुशी हुई; उन्हें मेरा नाम याद था; खिड़की गलत थी और मैं हामिश के साथ शराब पी रहा था, लेकिन वे इस दुनिया में मौजूद हैं; मैंने एक मिनट बात की; लगता है टेड को जेम्स जॉयस की यूलिसिस (!!!) का सारांश लिखने का काम सौंपा गया है, और इसी तरह। मैंने कुछ बुदबुदाया: उन्हें आने के लिए कह देना, या कुछ ऐसा ही, और साइकिल चलाकर चला गया। अब, तनावग्रस्त, विद्रोही, खिड़की के बाहर बसंत की बहार मेरे खून में उथल-पुथल मचा रही है, मुझे वेबस्टर और टूरनर पर पेपर के लिए रटना पड़ रहा है: काश मैंने इसे कल ही कर लिया होता। मुझे पता होना चाहिए था; और आज तो गया काम से क्योंकि वह यहाँ है और शायद दोबारा न आए, पुडफूट्स के साथ डेट पर गया हो या कुछ और, और मैं यहाँ काँपती हुई, पॉलिश किए हुए कांटेदार तार की तरह इंतज़ार कर रही हूँ। काश मैं इतनी थकी हुई और उस व्हिस्की से भरी हुई न होती, तो मैं संभाल पाती। चाहे वह आए या न आए। शायद वह

गोरी लड़की अभी भी उसके साथ लंच कर रही होगी। भगवान का शुक्र है कि बर्ट उसका है। लेकिन वह। ओह वह!
आज सुबह डॉ. डेवी (मनोचिकित्सक) के साथ आखिरी सत्र में मैंने ये बातें रखीं: मुझे दमनकारी और कुचलने वाली शक्तियों का डर है, अगर मैं अपने रास्ते को योजनाबद्ध, व्यवस्थित और नियंत्रित नहीं करता, जिसमें अकादमिक, रचनात्मक और लेखन, और भावनात्मक और जीवन और प्रेम शामिल हैं: लेखन मुझे एक छोटा देवता बना देता है: मैं अपने द्वारा बनाए गए छोटे-छोटे व्यवस्थित शब्द पैटर्न के माध्यम से दुनिया के प्रवाह और उथल-पुथल को फिर से रचता हूँ। मेरे पास शक्तिशाली शारीरिक, बौद्धिक और भावनात्मक शक्तियाँ हैं जिन्हें रचनात्मक रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए, अन्यथा वे विनाश और व्यर्थता में बदल जाती हैं (जैसे हैमिश के साथ शराब पीना और अंधाधुंध प्रेम करना)।
कृपया उसे आने दीजिए; मुझे इस ब्रिटिश वसंत ऋतु के लिए उसे पाने दीजिए। कृपया, कृपया…
कृपया उसे आने दो, और मुझे वह धैर्य और हिम्मत दो जिससे मैं उसे अपना सम्मान करने, मुझमें रुचि लेने और खुद को उस पर चिल्लाते या उन्मादी होकर चीखते हुए न थोपने के लिए मजबूर कर सकूँ; शांति से, कोमलता से, आराम से, जान, आराम से। वह शायद अब सात स्कैंडिनेवियाई रखेलों के साथ कैम्ब्रिज में नदी के किनारे के बगीचों में क्रोकस के बीच इतरा रहा होगा। और मैं मकड़ी की तरह, यहाँ, घर पर, इंतज़ार कर रही हूँ; पेनेलोप वेबस्टर के जाले बुन रही है, टूरनर की तकलियाँ चला रही है। ओह, वह यहाँ है; मेरा काला लुटेरा; ओह, भूखी भूखी। मैं एक बड़े, ज़बरदस्त, रचनात्मक, बढ़ते, बोझिल प्यार के लिए बहुत भूखी हूँ: मैं यहाँ हूँ; मैं इंतज़ार कर

रही हूँ; और वह कैम नदी के किनारे एक लापरवाह फ़ॉन की तरह खेल रहा है।
10 मार्च। परिशिष्ट: ओह, कितना गुस्सा, कितना गुस्सा। मुझे पता ही क्यों था कि वह यहाँ है। पैंथर जाग उठा है और फिर से शिकार की तलाश में निकल पड़ा है, घर में हर आवाज़ सीढ़ियों पर उसके कदमों की आहट जैसी लगती है; मैंने एक बार "पागल लड़की का प्रेम गीत" इसी तरह के पागलपन भरे मूड में लिखा था जब माइक नहीं आया और नहीं आया, और हर बार जब मैं काले, सफेद और लाल रंग के कपड़े पहनती हूँ: हिंसक, उग्र रंग। ऊपर आते और दौड़ते हुए हर कदम को मैंने उसके कदमों में बदल दिया और उन धोखेबाजों को कोसा जिन्होंने उसकी जगह ले ली...
अब मैं जलती हुई, इस बीमारी से तड़पती हुई पड़ी थी, और सूरज अचानक मुझ पर ऐसे चमक रहा था जैसे कोई नारंगी आँख नीचे झुका रहा हो, खाली और उपहास भरी नज़रों से देख रहा हो; वह ठीक समय पर अस्त हो गया, मैंने समय देखा। और फिर से अंधेरा मुझे खा रहा था: एक विशाल अंधेरी मशीन में कुचल जाने का डर, परिस्थितियों की उदासीन चक्की के पत्थरों द्वारा पूरी तरह से निचोड़ लिए जाने का डर। मुझे पता है कि वह अभी किसी पार्टी में है; किसी लड़की के साथ। मेरा चेहरा जल रहा है, और मैं राख में बदल रही हूँ, सदोम और गोमोरा के सेबों की तरह।
मैं लेटी रही और सीढ़ियों पर कदमों की आहट और दरवाजे पर दस्तक सुनी, और मैं उछल पड़ी, मानो अपनी इच्छा के फल का स्वागत कर रही हो। जॉन आया था, मुझे फिल्म देखने के लिए। मैं वो फिल्म देखना चाहती थी, लेकिन खुद को रोक रही थी; यहाँ बैठे रहना और घड़ी को आठ से दस बजते देखना और 'द डचेस ऑफ माल्फी' पढ़ना ज़्यादा मुश्किल होगा। मैं उससे कितनी नफरत करती हूँ: मैं बर्ट से कितनी नफरत

करती हूँ, जिसने मेरे उस गुस्से को और भड़का दिया जिसे मैंने पिछले हफ्ते उस कविता को लिखकर शांत किया था।
मैं गुस्से से छटपटाता रहा और जॉन से बातें करता रहा, उसे अलविदा कहता रहा और विदा करता रहा; सोचो, उसने मुझे पेरिस के बजाय कोपेनहेगन से होकर जाने के लिए मनाने की कोशिश की!
मुझे पिछली दो रातों के सपने याद हैं: पहला सपना: एक नाटक के लिए ऑडिशन देना और एक विशाल व्यायामशाला में होना जहाँ विदूषक और अभिनेता अभ्यास कर रहे थे। हर तरफ खतरे का माहौल छाया हुआ था: मैं भागा, भारी वज़न मेरे सिर पर गिर रहे थे; मैं फिसलन भरे फर्श पर चल रहा था, और दूर से हंसते हुए बेघर लोग मुझे गिराने के लिए मुझ पर बड़ी-बड़ी काली गेंदें फेंक रहे थे; यह एक भयानक और खतरे भरा समय था: ठीक वैसे ही जैसे ट्रैफिक के बीच फंस जाना, भारी- भरकम ट्रक, बसें और साइकिलें हर तरफ से आती हुई, जब मैं या तो स्थिर खड़ा रह सकता हूँ और अपनी आँखें बंद कर सकता हूँ, या ट्रैफिक के जाल में फंसकर किस्मत की उम्मीद कर सकता हूँ। काली गेंदें, काले वज़न, पहिएदार वाहन और फिसलन भरा फर्श: सभी मुझे कुचलने की कोशिश कर रहे थे, भारी-भारी कोशिशों में आगे बढ़ रहे थे, बस चूक रहे थे।
तब मैं अपने काले कोट और बेरेट में थी: आईएसआईएस से बिछड़ी हुई, आईएसआईएस की तलाश में, एक अंधेरी, सुनसान सड़क पर चल रही थी। एक कैफे में, खोजते-खोजते, और एक कुर्सी पर, अखबार के पीछे अपना चेहरा छिपाए, वह सांवला आदमी बैठा था, विनम्र, मुस्कुराता हुआ। मैं भयभीत होकर खड़ी रह गई, और वह सीधा हुआ, और मेरे साथ आ गया, सांवला और प्यारा। एक और सांवला आदमी, जिसका चेहरा किसी स्लाविक मूर्ख या पीले पड़े स्पेनिश जैसा था, किसी अज्ञात नस्ल का, मेरे पास आया और भारी, कर्कश आवाज में बोला, "रात हो गई है।"

उसने सोचा कि मैं एक वेश्या हूँ; मैं उससे पीछा छुड़ाकर अपने रिचर्ड के पीछे भागी, जो आगे चल रहा था, उसकी पीठ मेरी तरफ थी। नीचे से पुरुषों की आवाज़ें आ रही हैं। मैं बीमार हूँ, बहुत बीमार। इस भयानक गुस्से से। भगवान जाने पेरिस में मेरे साथ क्या होगा। प्यार, वासना, मौत की चाह में बदल जाती है। मेरा प्यार चला गया, चला गया, और मेरा बलात्कार हो जाएगा। "रात हो गई है।"
11 मार्च, रविवार की सुबह। एक और नरक जैसा दिन। वह घात लगाए बैठा है, सारे शैतान मुझे सताने आए हैं: और मैं अकेला बचकर तुम्हें यह बताने आया हूँ। तमाम आँखें, असंख्य आँखें, उसकी मौजूदगी की खबर दे रही हैं। आज सुबह, किसी पुरुष के कदमों की आहट, दरवाजे पर दस्तक; क्या वह वही है? हाँ, वही था: क्रिस, इतने दस दिनों की अनुपस्थिति के बाद। बस, एक ऐसा क्रिस जो यातना देने में माहिर है: जिसने आज सुबह ही ल्यूक और टेड को गली में देखा था; वे नहीं आएंगे। सुबह की धुंधली, गंभीर रोशनी में नहीं। वे नहीं आएंगे। लेकिन कल रात वे आए, सुबह के दो बजे, फिलिप्पा ने कहा। मेरी खिड़की पर कीचड़ फेंकते हुए, मेरा नाम लेते हुए, दोनों आपस में मिल गए: कीचड़ और मेरा नाम; मेरा नाम कीचड़ है। वह मुझे ढूंढने आई थी, लेकिन मैं सो रही थी। मैं सपने में देख रही थी कि मैं विनथ्रोप में अपने घर पर एक खूबसूरत नए बसंत के दिन हूँ, पायजामे में पिघलते तारकोल की सड़कों पर समुद्र की ओर चल रही हूँ, नमकीन ताजगी का आनंद ले रही हूँ, और हरे-भरे खरपतवारों के बीच समुद्र में सीप खोदने वाले बेंत की टोकरियाँ लिए बैठे हैं, एक के बाद एक उठकर मुझे मेरे पायजामे में देख रहे हैं, और मैं बसंत की शर्म से डेज़ के घर के जालीदार मंडप में छिप गई।

डाक नाले से आती थी, और मुझे केवल बिल मिलते थे। डाक और चावल नाले से आते थे, उस हरे-भरे गंदे नाले से जिसमें हम समुद्र किनारे खेलते थे, और जो उस भ्रष्टाचार को, उस चूने से सजे बेर के फूलों को, उस चमकदार जादू में बदल देता था। वे हँसते और कहते कि उन्हें नाले से आने वाली डाक और चावल पर भरोसा है।
और इस पूरे समय, अंधेरे में वे लड़के मेरे साथ एक वेश्या जैसा व्यवहार कर रहे थे, जैसे सैनिक ब्लैंच डुबोइस के पास आते हैं और बगीचों में नशे में धुत होकर लोटते हैं, और उसका नाम मिट्टी में मिलाते हैं। आज दो रिपोर्टें, मेरी त्वचा में और सुई चुभोने के लिए। मुझे अपने पेपर के लिए रट्टा मारना होगा। हे भगवान, मुझे इस सप्ताह को सहने की हिम्मत दो। काश मैं कभी उसका सामना कर सकूँ, बस उसका सामना कर सकूँ, उसे इंसान बना सकूँ, न कि उस काले पैंथर की तरह जो अफवाहों के जंगल के किनारों पर इतराता है। कितना नरक है। वे दिन के उजाले में मेरा सामना करने से इनकार करते हैं। मैं इसके लायक नहीं हूँ। मुझे होना ही होगा, जब, अगर वे कभी आएँ। वे नहीं आएँगे। मैं आज खाना नहीं खाना चाहती, चाय नहीं पीना चाहती। मैं सड़कों पर निकलकर उस बड़े पैंथर का सामना करना चाहती हूँ, ताकि दिन का उजाला उसे असली आकार में बदल दे। पेरिस
26 मार्च, सोमवार की सुबह। वाह! क्या बात है! मैं पेरिस में होटल बेर्न के एक कमरे में हूँ और बस ऊपर वाले कमरे में जाने की तैयारी में हूँ, जो धूप से भरा है और जिसकी कीमत 30 फ्रैंक कम है। होटल के लोग बहुत अच्छे हैं और क्रोइसैन नरम और हल्के हैं और मक्खन भरपूर मात्रा में है, इसलिए मैं यहीं रुकूँगा और खुद को भाग्यशाली समझूँगा। आज सुबह मैंने कुछ और सस्ते कमरे भी ढूंढे, लेकिन ईस्टर की छुट्टियों के कारण सभी कमरे भरे हुए थे।

आज का दिन बहुत ही खूबसूरत है, आसमान में ताज़गी है और मैं सुबह-सुबह सड़कों पर उछल-कूद कर रहा था, मानो सच में यहीं का हूँ। यहाँ रहना अच्छा रहेगा। मैं अपनी फ्रेंच में भी काम चला सकता हूँ। होटल डी वैलेंस याद है? वहाँ की बुज़ुर्ग महिला बहुत प्यारी थी और हालाँकि वहाँ कमरे भरे हुए थे, फिर भी उनके पास 400 फ्रैंक में कमरे उपलब्ध हैं।
शनिवार की शाम को थकी-हारी पेरिस पहुँची... और अंत में सोचा कि बड़ी-बड़ी काली आँखों और सफ़ेद रंग से रंगे चेहरे वाली मीठी- मीठी बातें करने वाली जेनेट ड्रेक मुझे बिल्कुल पागल कर देगी। नाविक की पोशाक में एमेट का मासूम अंदाज़ मुझे पिछली रात की तुलना में बहुत कम अच्छा लगा, जब उसने एक मर्द की तरह बर्ताव किया था और आयरिश मज़दूर नेता जेम्स लार्किन पर अपनी किताब का कुछ हिस्सा ज़ोर से पढ़ा था। मैं बस अकेले जाना चाहती थी, नहाना चाहती थी और सो जाना चाहती थी। शाम ढल रही थी जब हमें होटल बेर्न में मेरे लिए एक कमरा मिला, और मुझे बिल्कुल अकेलापन महसूस हुआ। पहले की तरह सैसून भागने की एक बुरी इच्छा से घबराकर, मैंने खुद को संभाला... और रिचर्ड के घर की ओर चलने और रास्ते में खाने की तलाश करने का फैसला किया। नीचे जाते समय, टेलीफोन बूथ में एक अच्छे दिखने वाले आदमी ने मेरी तरफ मुस्कुराया, और मैंने भी मुस्कुरा दिया; खैर, जब मैं बाहर निकली और चलने लगी (अपना पेरिस का नक्शा गलती से एमेट की कार में छोड़ आई थी) तो मुझे एहसास हुआ कि वह आदमी मेरा पीछा कर रहा था। वह मुझसे आगे निकल गया और फिर मुस्कुराया, और मैंने तुरंत कहा, "मैं अपना पेरिस का नक्शा भूल गया था, इसलिए मैं थोड़ा भटक गया हूँ।" बस, उसे यही चाहिए था; तो हम वापस होटल गए और उसने मुझे अपने ठहरने के दौरान उधार देने के लिए अपना नक्शा ले लिया; आखिरकार हम बुलेवार्ड सेंट जर्मेन पर

पैदल चले और मैंने उसके साथ एक छोटे से रेस्तरां में स्टेक टार्टर, वाइन और मेरिंग्यू का आनंद लिया। जब हम खाना खा रहे थे, दो कलात्मक संगीतकार बजाने आए, एक वायलिन और कागज़ के फूलों का मुकुट लिए हुए था; दूसरा एक अजीब से डिब्बे से कॉफी मशीन की तरह पीस रहा था और उससे हल्की-सी धुन निकल रही थी। मैंने जल्दी सोने और आराम करने का फैसला किया ताकि सुबह सैसून से मिलने के लिए तरोताज़ा रह सकूँ। यह एक बड़ा समझौता था क्योंकि मैं बहुत अकेला महसूस कर रहा था।
मज़े की बात यह है कि वह व्यक्ति रोम के अख़बार पैसे सेरा का पेरिस संवाददाता निकला: एक इतालवी कम्युनिस्ट पत्रकार! इसीलिए उसने मुझे आज के लिए ओलिवेट्टी प्रिंटर उधार दिया था। खैर, भले ही उसे अंग्रेज़ी नहीं आती थी, फिर भी हमारी बातचीत बहुत अच्छी रही, मुझे आश्चर्य हुआ; वह बहुत सुसंस्कृत है और हमने विभिन्न देशों में साम्यवाद (वह बहुत आदर्शवादी और मानवतावादी है) और कला पर चर्चा की: वह मेल्विल, पो और टी. एस. एलियट की प्रशंसा करता है, जिन्हें उसने फ्रेंच में पढ़ा था: "जे. अल्फ्रेड प्रूफ़्रॉक"! और मैंने उससे उन फ्रांसीसी और इतालवी कलाकारों के बारे में पूछा जिनके बारे में उसने अपने अख़बार के लिए लिखा था। यह सब बहुत तसल्ली देने वाला था। इससे मुझे हिम्मत मिली और मुझे लगा कि ज़रूरत पड़ने पर मैं रिचर्ड के बिना भी काम चला सकता हूँ।
रविवार: मैं थका हुआ उठा और ताजी सुबह की हवा में रू डू बैक से होते हुए प्लेस डेस इनवैलिड्स से रू डुविवियर की ओर चल पड़ा, खुद को खुश और काफी प्रसन्न महसूस कर रहा था, और अपने उद्घाटन भाषण की तैयारी कर रहा था।

मैंने नंबर 4 पर घंटी बजाई, जिसके बाहर एक बूढ़ी भिखारी औरत उदास स्वर में गा रही थी। अंधेरे और संदिग्ध से दिखने वाले चौकीदार ने मुझसे मुलाकात की और बेपरवाही से बताया कि सैसून वापस नहीं आया है और शायद ईस्टर के बाद ही वापस आएगा। मैं एक-दो दिन अकेले सहने के लिए तैयार थी, लेकिन इस खबर ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया। मैं उसके बैठक कक्ष में बैठ गई और एक बेतरतीब चिट्ठी लिखने लगी, जबकि मेरे आंसू कागज पर गर्म और गीले होकर गिर रहे थे और उसका काला पूडल मुझे अपने पंजे से थपथपा रहा था और रेडियो पर बज रहा था: "मुस्कुराओ, भले ही तुम्हारा दिल टूट रहा हो।" मैं लिखती रही, यह सोचकर कि शायद किसी चमत्कार से वह दरवाजे पर आ जाए। लेकिन उसने न तो कोई पता छोड़ा था, न कोई संदेश, और समय पर लौटने की मेरी विनती भरी चिट्ठियां वहीं पड़ी नीली और बिना पढ़ी रह गईं। मैं अपनी स्थिति पर सचमुच हैरान थी; इससे पहले कभी किसी आदमी ने मुझे रोने के लिए छोड़कर नहीं गया था...
शुक्रवार, 30 मार्च। एक अजीब दिन, आनंद से गुज़रते हुए निश्चित उदासी की ओर, और अंधेरी छतों पर उदास और अकेले सवालों की बारिश। गैरी से सुबह जल्दी मुलाकात हुई और पोंट रॉयल तक पैदल चली, जहाँ मेरी मुलाकात टोनी से हुई। मैं अपनी सफेद प्लीटेड स्कर्ट, एक्वा स्वेटर, लाल जूते और लाल-सफेद पोल्का-डॉट्स वाले हेयर-स्कार्फ में बहुत स्टाइलिश महसूस कर रही थी; कियोस्क पर सिट्रोनेड पिया और वह खुशमिजाज और काफी प्यारा था; अपनी बहन के चले जाने से थोड़ा शांत था; हमने मेट्रो से पिगाले तक का सफर किया और हॉन्की-टोंक चौक पर तेज़ धूप में उतरे और मोंटमार्ट्रे की चोटी तक जाने वाली छोटी संकरी सड़कों पर चढ़ना शुरू किया; दुकानें अंधेरी, बदबूदार जगहें थीं और लहसुन और सस्ते तंबाकू की दुर्गंध से भरी थीं। धूप में क्षय का जादू था: खुरदुरे

पेस्टल पोस्टर, कोढ़ी जैसे भूरे रंग की दीवारें, गंदगी से उगते फूल। मैंने रू वियूविले और खड़ी ढलान वाली सीढ़ियों की एक श्रृंखला चढ़कर प्लेस डू टेर्ट्रे तक का सफर तय किया, जो पर्यटकों और अलग-अलग मुद्राओं में चारकोल पोर्ट्रेट या सैक्रे- कोउर के गुंबदों की मिट्टी से बनी पेंटिंग बना रहे कलाकारों से खचाखच भरा हुआ था; टोनी और मैं इधर-उधर घूमते हुए पेंटिंग देख रहे थे, तभी एक छोटे कद के आदमी ने मुझसे पूछा कि क्या वह मेरी आकृति को "उपहार की तरह" काट सकता है, इसलिए मैं मोंटमार्ट्रे के बीचोंबीच चौक के मध्य में खड़ा हो गया और उमड़ती भीड़ के बीच शानदार रेस्तरां को निहारने लगा, जो वाह-वाह कर रही थी और यही वह छोटा आदमी चाहता था - ग्राहकों को आकर्षित करना: इस तरह मुझे एक मुफ्त आकृति मिल गई और इस समय तक टोनी चलते समय मेरी कमर पर हाथ रख रहा था और मैं महसूस कर सकता था कि उसकी चुभती हुई व्यंग्यात्मकता नरम पड़ रही थी: हम सैक्रे-कोउर के सामने धूप में खड़े होकर पहाड़ी पर चढ़ती पर्यटक बसों को देख रहे थे, जो धूप-हवा-रोधी-गोली-रोधी कांच के गुंबदों से ढके हुए भावहीन लोगों से भरी हुई थीं; चर्च के अंदर कुएँ की तरह ठंडक और अँधेरा था, खिड़कियों से लाल रंग की रोशनी की कुछ किरणें आ रही थीं। टोनी ने चार्ट्रेस के बारे में थोड़ा बताया और कुछ बेहद सुखद संवेदनशीलता झलक रही थी। हमने कमर्शियल स्क्वायर के पास ही शानदार दोपहर का भोजन किया, जहाँ पेड़ों के नीचे भीड़ को भोजन परोसा जा रहा था और वायलिन की मधुर धुनें बज रही थीं, जहाँ एक आदमी अपने सिर पर तस्वीर के फ्रेम और कागज़ के फूल लपेटे हुए चिल्ला रहा था और करतब दिखा रहा था। हमने इन सबसे बचकर शांत ऑबर्ज डू कुकू के छायादार बगीचे में जाकर बढ़िया टमाटर सलाद, मशरूम में भुना हुआ स्वादिष्ट गोमांस और मक्खनी आलू का आनंद

लगता है कि वह जवानी में या पियानो बजाते समय ऐसा ही रहा होगा; मुझे लगता है कि ऑक्सफ़ोर्ड ने उसे बिगाड़ दिया है, उस घमंडी और अक्खड़ रवैये और रॉथ्सचाइल्ड लड़की और "ऑक्सफ़ोर्ड की शान" लेडी ट्वीड्समिर की बेटी ऐन के साथ रहने की चेतना ने। इसलिए उसने कपड़े पहने और अपने शालीनता के आवरण को ओढ़ लिया...
और फिर मैं खुद से पूछती हूँ: क्यों? मुझे इतना सावधान रहना होगा, और मैं कैम्ब्रिज और उन गपशपों के पास वापस जा रही हूँ। मैं टेड पर टूट पड़ने के लिए लंदन नहीं जाऊँगी; उसने मुझे लिखा नहीं है; वह मेरे पास आ सकता है, और मुझे शर्ली नहीं, सिल्विया कह सकता है। और मैं इस सेमेस्टर में पवित्र और संयमित रहूँगी और काम और गंभीरता से उन गपशप करने वालों को रहस्य में डाल दूँगी! 1 अप्रैल। कार्यक्रम: दोस्त बनाना और लोगों को प्रभावित करना।
• ज्यादा शराब मत पियो—(सेंट जॉन पार्टी के बाद इको के साथ हुई दुर्भाग्यपूर्ण घटनाओं, हैमिश के साथ हुई दो मुलाकातों, सेंट बोटॉल्फ पार्टी और लंदन की रात को याद रखो); होश में रहो। •पवित्र रहो और लोगों पर खुद को मत लुटाओ (डेविड बक, मैलोरी, इको, हैमिश, टेड, टोनी ग्रे देखें) - अफवाहों और एम. बॉडी के बावजूद, किसी को भी इस शब्द को सत्यापित नहीं करने दें।
• दोस्ताना और संयमित रहें—यदि आवश्यक हो, तो "रहस्यमयी महिला" का धुंधलापन अपनाएं, शांत, सौम्य, और अश्वेतों से जुड़े घोटालों पर थोड़ी हैरानी जताएं। सैली बाउल्स की तरह सहज व्यवहार करने से बचें।
• अपने आंतरिक जीवन को समृद्ध बनाने के लिए काम करें—क्रूक के लिए काम पर ध्यान केंद्रित करें—लेखन (कहानियां, कविताएं, मॉनिटर के लिए लेख—रेखाचित्र)—फ्रांसीसी दैनिक।

• ज्यादा बकबक मत करो—ज्यादा सुनो; लोगों के प्रति सहानुभूति रखो और उन्हें "समझने" की कोशिश करो।
• अपनी परेशानियों को अपने तक ही सीमित रखें।
•बुरी अफवाहों और अपमान को सहन करें और उससे आगे बढ़ें—सभी के प्रति दयालु और सकारात्मक रहें।
•किसी की भी आलोचना किसी दूसरे के सामने न करें—गलत तरीके से उद्धृत करना टेलीफोन गेम की तरह है।
•गैरी या हैमिश में से किसी के साथ भी डेटिंग न करें—कीथ और अन्य लोगों के प्रति विनम्र रहें, लेकिन बहुत ज्यादा उत्साहित न हों।
जब आवश्यक हो तो धैर्य रखें और लिखें—आपने बहुत कुछ देखा है, गहराई से महसूस किया है, और आपकी समस्याएं इतनी सार्वभौमिक हैं कि उन्हें सार्थक बनाया जा सकता है—लिखें।
प्लैथ की मुलाकात पेरिस में उनके पुराने प्रेमी गॉर्डन लैमेयर से हुई और उन्होंने साथ में जर्मनी और इटली की यात्रा की। यह यात्रा बेहद खराब रही; वे लगातार झगड़ते रहते थे।
गुरुवार, 5 अप्रैल। सुबह भर बाहर धूसर छतों पर बारिश होती रही और मैं चुपचाप, गर्माहट में लेटा इस भयानक मशीन की कार्यप्रणाली पर विचार करता रहा, इसमें कितना संयोग और दुर्घटना है, कितना इच्छाशक्ति के प्रभाव और इच्छाशक्ति के अपने ही कार्यों को अंजाम देने का मेल है, और कितना इच्छाशक्ति सभी घटनाओं को चुंबक की तरह आकर्षित करती है, जो कभी मजबूत होती है, कभी कमजोर। कितनी बार मैंने अपने सपनों में अपने उस काले लुटेरे को सीढ़ियों पर, गली के मोड़ पर, अपने चमकीले पीले बिस्तर पर इंतज़ार करते हुए, दरवाज़ा खटखटाते हुए, पार्क की बेंच पर सिर्फ़ कोट और टोपी पहने, हल्की मुस्कान के साथ बैठे

हुए देखा है; वह पहले ही कई रूपों में बँट चुका है; आशा करते हुए भी, पर्दा गिर जाता है और लोग हमारी दृष्टि से परे एक निजी कमरे में अभिनय करते हुए परछाइयों में बदल जाते हैं... पिछली रात, जियोवानी से बात करने के लिए रुकते हुए, जो देर रात तक इतालवी में लिखी कविता लेकर इंतज़ार कर रहा था, जिसका उसने बाद में फ्रेंच में अनुवाद किया, जिसमें गेहूँ के ढेरों और बर्फ के टूटने का वर्णन था, मुझे एहसास हुआ - कितनी स्पष्टता से, कितनी पूर्णता से - कि अब मैं केवल घर जाना चाहती हूँ, उस घर में जहाँ मैंने अपनी शांति और अपना आश्रय बनाया है: अमेरिका नहीं, बल्कि मेरा व्हिटस्टेड [कैम्ब्रिज में उसका घर], मेरा छज्जा और मेरा बगीचा: वहाँ मैं आराम कर सकती हूँ और सुबह के दूध की तरह तरोताज़ा हो सकती हूँ और अपने विश्वास और मासूमियत को फिर से पा सकती हूँ, वह मासूमियत जो विश्वास है, अन्य पुरुषों और अन्य स्मारकों के साथ इन मुलाकातों की सत्यता में विश्वास है जहाँ नए रास्ते खोजने के लिए गलत मोड़ लेने पड़ते हैं; उफ़, कितनी महानता, कितना उपदेश: ठोस प्रयास करो, नाम लो।
कल रात अचानक मुझ पर इतना डर, उदासी और निराशा छा गई कि मैं उस बेचारे, उलझन में पड़े और खुद को भाग्यशाली समझने वाले (विडंबना यह है कि उसका भाग्य दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है) लड़के के साथ जर्मनी या इटली नहीं जाना चाहती थी, जो मेरे बगल में बैले देखने आया था: फ़ेद्रे का बैले, मेरी फ़ेद्रे, अपनी काली लौ और उस लहराते लाल रंग के लबादे के साथ, जो खून से लथपथ था: सुनहरे बालों वाला और गर्वित हिप्पोलिटे अपने हरे अयाल वाले घोड़ों के साथ, गुलाबी और सफेद परी अरिसी, अपने पीले चेहरे और त्रिशूल के साथ शैलीबद्ध नेपच्यून, और वे सभी नीली-हरी लहरें: क्या मैं एक हफ्ते तक ठीक रह पाऊँगी? कोई खटास नहीं, कोई नींबू जैसी नज़रें

एक दोस्त के रूप में, और मुझे याद रखना चाहिए कि जिस रात हम अमेरिकन एक्सप्रेस में अचानक और सौभाग्य से मिले थे, उससे पहले वाली रात मैं अपने आस-पास बैठे छोटे, काले, गंदे आदमियों से इतनी तंग आ चुकी थी कि रात के खाने के लिए बाहर जाने की हिम्मत ही नहीं हुई थी; और तब जियोवानी अपने दिलासे, केले, खजूर और गर्म दूध के साथ आया था; वह कितना दयालु रहा है। मैंने उसके साथ सोने के बारे में भी सोचा था, लेकिन कल एक तरह से मुझे खुशी हुई कि गॉर्डन आया, क्योंकि जियोवानी और मैं अब एक-दूसरे के प्रति इतने कोमल और दयालु हैं कि यह अच्छा है [लोप]… व्हिटस्टेड पर प्रतिबंध लगने के बाद, जीवन अब विभिन्न राजधानियों और उनसे जुड़े पुरुषों का एक भयानक मिश्रण बन गया है: लंदन और टेड, पेरिस और रिचर्ड की गहरी अनुपस्थिति और जियोवानी का दिलासा और बातचीत, और रोम और गॉर्डन के साथ यात्रा। और अब सुबह से गॉर्डन के साथ ठंडेपन से पैसों की चर्चा करने के बाद, बढ़ती ठंडक के साथ, अचानक उसे यह बताने का मन हुआ कि मैं नहीं जा रही हूँ। कोने के एक छोटे से कैफे में हैम, अंडे और रेड वाइन के साथ भी इन बातों पर चर्चा हुई, लेकिन अब बहुत कुछ हो चुका है और अलग होना मुश्किल है: मैं वेनिस, फ्लोरेंस और रोम देखना चाहती हूँ, भले ही सिर्फ पाँच दिनों के लिए ही सही, क्योंकि तब मुझे पता चल जाएगा कि मैं कहाँ और कैसे लौटना चाहती हूँ। अब यह बात मुझे अंदर ही अंदर कितना दर्द दे रही है... और मैं गॉर्डन के साथ रहने के बजाय अपने टाइपराइटर के साथ अकेले रहना पसंद करूँगी। उसकी बेवकूफी भरी हकलाती फ्रेंच और यहाँ अपनी बात समझाने में असमर्थता, उसका तालमेल की पूरी कमी, उसके मूड को सहज रूप से समझने की क्षमता की कमी मुझे घृणा दिलाती है, हाँ, सच में। मुझे बार में वेटर की मुस्कान याद आती है, जो ज़्यादा पैसे लेकर गॉर्डन से पूछता है

कि क्या उसे दूध चाहिए; मैंने उस पर तिरछी मुस्कान दी; गॉर्डन के साथ मैं और भी बुरी तरह पेश आती हूँ; फिर भी क्या करूँ?
क्या करूँ? क्या यह कोई भयानक कमी है जो मेरे विकल्पों को इतना घातक बना देती है? पुरुषों पर मेरी कोई कमज़ोर निर्भरता है जो मुझे उनकी सुरक्षा, देखभाल और कोमलता पर निर्भर कर देती है? आह, मैं दो हफ़्तों से पेरिस में अकेली हूँ, और यहाँ कोई लड़कियाँ नहीं हैं, इसलिए गैरी (जिसे मैंने बड़ी सावधानी से अलविदा कहा और यहाँ तक कि चार्ट्रेस को भी छोड़ दिया, क्योंकि रिचर्ड के बिना या अकेले वहाँ जाना एक तरह का अपवित्रता होता, क्योंकि गैरी अपनी घोषित संवेदनशीलता के बावजूद अपने व्यवहार में इतना सुस्त है कि चिड़ियों को भी मार देता है) और टोनी, जिसे मैंने अपनी ज़रूरत और उग्र इच्छाशक्ति से डरा दिया, के अलावा मैं अकेली ही घूमी हूँ। (जियोवानी एक खोज था, मेरी अपनी, और एक तरह की जीत: उसके साथ सब ठीक रहा, बस पर्याप्त गर्मजोशी और कोमलता, फ्रेंच में उसकी सारी अच्छी बातें, उसके दोस्त और वह छोटी सी किराने की दुकान जहाँ वह मुझे मेरे आँसुओं के बाद ले गया, जहाँ मानवीय गर्मजोशी और आत्मीयता का अद्भुत अनुभव हुआ, और उस छोटी सी भीड़भाड़ वाली जगह में स्वादिष्ट स्टू, आलू, पनीर और रेड वाइन से भरी एक थाली।) ... मैंने एक उजाड़ शहर से लड़ाई लड़ी और उसे जीत लिया। मैं रिचर्ड के बारे में सोचता रहता हूँ; क्या इसलिए कि वह अब इस दुनिया में नहीं है, उसकी धुंधली छवि मुझे सताती रहती है? नीस में नाचते हुए वो पल याद हैं—उसका दुबला- पतला, बेढंगा शरीर: उसे तैरना नहीं आता, वो एक तरह से कमज़ोर है, वो कभी बेसबॉल नहीं खेलेगा या गणित नहीं पढ़ाएगा: संतरे के रस और भुने हुए चिकन वाली वो मज़बूती उसमें बिलकुल नहीं है, और वो गैरी और गॉर्डन में है (कहानी "डार्क माराउडर" में रिचर्ड के

मैंने हमें झूमरों से सजे एक बड़े कमरे में मनोरंजन करते देखा और उसने एक सुंदर, छोटी गोरी लड़की की ठुड्डी के नीचे वैसे ही हाथ फेरा जैसे उसने पहली बार मेरे साथ किया था, लगभग अपमानजनक प्रशंसा और चुनौती भरे अंदाज में; हे भगवान, अगर वह आज आ जाए तो मैं यहीं उसके साथ रहूँगी। मैं उसे अभी भी देख सकती हूँ, पेरिस में वापस, शांति से मेरे पत्र पढ़ते हुए और सोचते हुए: बेचारा, हिस्टीरिकल, सताया हुआ, और अपनी स्विस या स्पेनिश लड़की के साथ रह रहा है। क्या वह कभी उस तरह वफादार हो सकता है जिस तरह मुझे इतनी सख्त जरूरत है? आह, और क्या मैं कभी इतनी विशाल शक्ति प्राप्त कर पाऊँगी कि उसे स्वीकार कर सकूँ, अगर वह शहीद न बन जाए या इससे भी बदतर, प्रतिशोध और हताशा में जानबूझकर खुद को दूसरे पुरुषों के सामने बलिदान के रूप में पेश न कर दूँ, विनाश की ओर छलांग न लगा दूँ? शायद यही सब भाग्य में लिखा है, उन पत्तों में जिनमें इतने सारे बादशाह और रानी हैं और इतने सारे विकल्प हैं! और अब विकल्प एक घातक नृत्य में उलझे हुए हैं और मेरे पोस्टकार्ड भेजने से माँ को पता चल जाएगा कि मैं रोम जा रही हूँ और टेड को पता चल जाएगा कि मैं उससे मिलना चाहती हूँ, भले ही एक रात के लिए ही सही (ओह, मैं बस उसके साथ रहना चाहती हूँ: वही एकमात्र ऐसा व्यक्ति है जो रिचर्ड की तरह शान से चल सकता है और इसके लिए मैं बॉडी की सारी सूअर जैसी आँखों और चुगली और बातों को भी सह लेती हूँ, यहाँ तक कि जेन और चुने हुए लोगों को भी पता चल जाता है; इसके लिए मैं उसे मुझे शर्ली, गलत नाम से बुलाने देती हूँ, और जानती हूँ कि उसे नहीं पता कि मैं यहाँ कितनी कोमल और समझदार हो सकती हूँ, क्योंकि अब मैं बहुत जल्दी बहुत सहज हो गई हूँ और वह इसे जानने की जहमत नहीं उठाएगा); क्या मैं उसके साथ युगोस्लाविया जाऊँ? या मैं एली और स्पेन को छोड़ने के लिए खुद

को कोसूँगी? मुझे एक अच्छी औरत की कमी खल रही है; मैं यह सोचने की हिम्मत कैसे कर सकती हूँ कि एली आसान, काले रंग के पुरुषों के प्रति आकर्षित होने में अनैतिक थी, जबकि वास्तव में मैं मजबूत, साफ-सुथरे और प्यारे पुरुषों को अधिक पसंद करती हूँ; टेड दीवारों को तोड़ सकता है; मैं आज रात उसे टेलीग्राम कर सकती हूँ, [पूछ सकती हूँ] कि क्या मैं लंदन वापस आकर व्हिटस्टेड तक वहीं रह सकती हूँ: खतरा उसके आगंतुकों का होगा, और शायद उसके कुछ आगंतुक भी होंगे, उसकी बातों का [अस्पष्ट]… मैं उसके लिए तड़प रही हूँ, और मेरे मन में उसके शब्दों का जाल बुनकर और उनका इस्तेमाल करके मुझे टुकड़े-टुकड़े कर दिया गया है… गॉर्डन: अभी वही सबसे सुरक्षित रास्ता है: मैं दो और देशों पर विजय प्राप्त कर लूँगी — और चाहे मैं इटली में कितना भी समय बिताना चाहूँ, क्या यह बेहतर नहीं है कि मैं पाँच दिन देखूँ और भूखी होकर वापस आऊँ ताकि और अधिक समय तक रह सकूँ, पहले किसी व्यक्ति की सुरक्षा में भोजन की तलाश कर लूँ, अभी भी ऑफ-सीज़न है, बिना पिकअप के घूमने में सक्षम हूँ? आह, हाँ। अगर रिचर्ड अभी वापस आ जाए: मैं अपना स्वाभिमान त्याग कर उसके घर जा सकती हूँ और चौकीदार से पूछ सकती हूँ कि क्या कोई खबर है: वह वहाँ छिपा हो सकता है। वह कल आ सकता है; कोई संदेश हो सकता है (जिसके बारे में मुझे बहुत देर से पता चलेगा)। मैं कुछ दिन रुक सकती हूँ और यहाँ से इंग्लैंड वापस जा सकती हूँ।
यह ऐतिहासिक क्षण है; सब इकट्ठा होते हैं और मुझे पेरिस से चले जाने के लिए कहते हैं। मैं भूल गया था कि गॉर्डन एक अलग तरह का गैरी था, बस थोड़ा बेहतर। अगर मैं पेरिस में रुका रहता: और फिर कहानी के बीच में ही जियोवानी आता है और विनाश की इन भयानक क्रूर इच्छाओं के बारे में सब कुछ सुनता है और एक बहुत ही

गर्मजोशी भरे और कोमल समय के बीच में ही मुझे कदमों की आहट सुनाई देती है और यही मेरा भाग्य है और एक हल्की सी दस्तक जो होनी चाहिए थी अगर भाग्य मेहरबान होता, जो होनी तो चाहिए थी लेकिन नहीं है, नहीं है और इसलिए मेरा फैसला पक्का हो जाता है और विकल्प अपने छोटे से सीटी बजाते हुए शून्य में संतरे के छिलके और नीले गॉलोइस रैपर के साथ घूमते और फुसफुसाते रहते हैं और यह तय हो जाता है और वह कहता है चलो, चलो और इसलिए हम चलते हैं। [कुछ अंश हटा दिया गया।]
18 अप्रैल। अब मेरे विरुद्ध शक्तियाँ और भी बढ़ती जा रही हैं, और मेरी प्यारी दादी, जिन्होंने माँ के काम करते समय जीवन भर मेरी देखभाल की, कैंसर से बहुत धीरे-धीरे और बहादुरी से मर रही हैं। उन्हें छह सप्ताह से नसों के ज़रिए भी पोषण नहीं दिया जा सका है, बल्कि वे अपने शरीर के सहारे जी रही हैं, जो धीरे-धीरे नष्ट हो जाएगा, और तभी उनकी मृत्यु होगी। मेरी माँ काम कर रही हैं, पढ़ा रही हैं, खाना बना रही हैं, गाड़ी चला रही हैं, बर्फीले तूफानों से बर्फ हटा रही हैं, और अपने धीमे दुख के भय से दुबली होती जा रही हैं। मैंने उन्हें मजबूत और स्वस्थ बनाने की आशा की थी, और अब इस धीमी मृत्यु के बाद, मेरे पिता की धीमी लंबी मृत्यु की तरह, शायद वे खुद भी इतनी कमजोर हो गई हों कि मेरे पास न आ सकें। और मैं यहाँ व्यर्थ हूँ, पारिवारिक प्रेम और पड़ोस की परंपराओं से कटा हुआ, और अपनी प्यारी बहादुर दादी को, जिनसे मैं असीम प्रेम करता था, शक्ति और प्रेम देने से वंचित। और मेरी माँ चली जाएँगी, और इस दुनिया में मुझे सलाह और प्यार देने वाले कोई माता-पिता, कोई अनुभवी वरिष्ठ व्यक्ति न होने का भय सता रहा है। [रिचर्ड सैसून को संबोधित] मेरे साथ भी कुछ बहुत ही भयानक घटित हुआ है, जो दो महीने पहले शुरू हुआ था और जिसका होना ज़रूरी नहीं

था, ठीक वैसे ही जैसे आपका यह लिखना कि आप मुझे पेरिस में नहीं देखना चाहते और मेरे साथ इटली नहीं जाना चाहते, ज़रूरी नहीं था। जब मैं लंदन वापस आई, तो मुझे बस यही एक रास्ता नज़र आया, और अब मैं एक तरह के नरक में जी रही हूँ, और ईश्वर ही जानता है कि जीवन या प्रेम की कौन-सी रस्में इस तबाही को समेट पाएंगी। मैंने बहुत सावधानी बरती, इतनी सावधानी, और वह भी मेरे पूरी तरह से परित्याग किए जाने के लिए पर्याप्त नहीं थी। आपने कहा था कि आपने मुझे "निर्दयतापूर्वक" कहा था कि जब आप पेरिस लौटेंगे तो आपकी छुट्टियाँ समाप्त हो जाएँगी। खैर, मेरी छुट्टियाँ भी निर्दयतापूर्वक समाप्त हो गई हैं, और मैं भी थक चुकी हूँ, हर दिन दोनों हाथों से देते हुए, और यह विपत्ति और आतंक आपके लंबे समय तक अनुपस्थित रहने के चुनाव और अनावश्यक, चीखते हुए खालीपन में समाया है। आपकी लिखावट इतनी बेतरतीब और विकृत हो गई है कि सारे शैतान भी उससे कोई अर्थ नहीं निकाल सकते।
सिल्विया और टेड ह्यूजेस का विवाह 16 जून, 1956 को हुआ था। शादी के बाद वे हनीमून के लिए स्पेन के छोटे से मछली पकड़ने वाले गाँव बेनीडोर्म चले गए। विधवा मंगाडा के साथ उनके संक्षिप्त प्रवास के परिणामस्वरूप प्लाथ की इसी शीर्षक वाली एक कहानी लिखी गई, हालाँकि उस समय लिखी गई अधिकांश वर्णनात्मक सामग्री अब पीछे मुड़कर देखने पर अजीब तरह से सपाट लगती है।
बेनिडोर्म
हमारा नया घर शानदार है। हम इस बात पर हैरान होते रहते हैं कि हमने इसे गर्मियों के लिए उसी कीमत पर खरीदा, जिस कीमत पर विधवा मंगाडा अपने शोरगुल भरे छोटे कमरे, गंदे और बदबूदार बाथरूम, चींटियों से भरी रसोई (जिसे उन लालची स्पेनिश लोगों के साथ साझा करना पड़ता था) और समुद्र के नज़ारे वाली छत (बल्कि सड़क पर

हॉर्न बजाती, घूरती और ताकती भीड़) के लिए ले रही थी, जो सबसे अच्छी नहीं बल्कि सबसे बुरी बात साबित हुई। टेड को मजबूर होकर अंदर के अंधेरे कमरे में बिस्तर पर जाना पड़ता था, जबकि सुबह 10 बजे के बाद, मुझे बालकनी पर घूरे जाने का डर सामने रखे टाइपराइटर से ज़्यादा सजता रहता था। अब यहाँ पूरी तरह शांति है। कोई नखरेबाज़ अभिनेत्री मेरी नई रसोई में आकर मेरे हाथ से आलू छीनकर मुझे उन्हें छीलने का अपना तरीका नहीं दिखाती, न ही पेट्रोल स्टोव पर रखे मेरे फ्राइंग पैन के ढक्कन के नीचे झाँकती है। हम पूरी तरह से शांत हैं। पहले दो दिन हम बाहर के कामों में व्यस्त रहने और विधवा के घर पर बीते सप्ताह की भावनात्मक उथल-पुथल से उबरने की कोशिश कर रहे थे; मजदूर रसोई और बाथरूम में लगातार काम करते रहे, शावर, टॉयलेट और नलों के लिए पानी की मोटर लगा रहे थे। आखिरकार कल उन्होंने काम खत्म किया, छेदों को भर दिया, और अब हमारे पास साफ, चमकदार पानी है, ठंडा है, लेकिन बहुत बढ़िया है, विधवा के पुराने खराब पाइप और वायरिंग से कहीं बेहतर।
इस नई जगह पर सब कुछ बहुत बढ़िया चल रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह जगह रचनात्मक जीवन और लेखन का स्रोत है, और आने वाले 10 हफ्तों में भी रहेगी। कल टेड ने मुझे तीन नई कहानियाँ पढ़कर सुनाईं जो उसने अपनी जानवरों पर लिखी किताब के लिए लिखी थीं, जिनमें बताया गया था कि सभी जानवर कैसे बने: कछुए वाली कहानी सबसे मज़ेदार और प्यारी थी; लकड़बग्घे वाली कहानी थोड़ी गंभीर थी, एक कड़वे और विकृत चरित्र के बारे में, और लोमड़ी और कुत्ते वाली कहानी कथानक से भरपूर और अद्भुत थी… मुझे उम्मीद है कि यह बच्चों की क्लासिक किताब बनेगी। अभी जब मैं लिख रही हूँ, टेड मुख्य मेज पर हाथी और झींगुर की कहानियों पर काम कर रहा है।

उसके साथ रहना एक अंतहीन कहानी सुनने जैसा है: उसका दिमाग सबसे विशाल और कल्पनाशील है, जितना मैंने आज तक देखा है। मैं उसकी बढ़ती हुई दुनिया में हमेशा के लिए रहना चाहूँगी। मुझे अपने काम में नई ऊर्जा का प्रवाह महसूस हो रहा है, और इस सप्ताह मैं कहानी लेखन के अपने बुरे दौर को तोड़ दूँगा। मैं बुलफाइट की कहानी और शायद विधवा मंगाडा पर एक कहानी (मजेदार?) लिखने की कोशिश करूँगा, साथ ही अपने नए उपन्यास के कुछ अध्याय भी लिखूँगा जो हार्पर पत्रिका के लिए लेख के रूप में काम आ सकते हैं; इसके अलावा, क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर के लिए बेनीडोर्म पर रेखाचित्रों के साथ एक लेख भी लिखूँगा। मुझे स्पेनिश सीखनी होगी और फ्रेंच का अनुवाद भी करना होगा।
जीवन में मैंने कभी इतनी उत्तम परिस्थितियाँ नहीं देखीं: एक शानदार, आकर्षक और प्रतिभाशाली पति (नए-नए पुरुषों को आसानी से अपने वश में करने की अधूरी आत्मसंतुष्टि के वो दिन अब बीत चुके हैं), एक शांत, बड़ा घर जहाँ कोई शोर-शराबा नहीं, कोई फ़ोन नहीं, कोई मेहमान नहीं: गली के अंत में समुद्र और ऊपर पहाड़ियाँ। संपूर्ण मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य। हर दिन हम और अधिक मजबूत और जागरूक महसूस करते हैं।
कल शाम जब हम शराब और तेल की बिक्री कर रहे थे, तभी अचानक बारिश शुरू हो गई और रोशनी का नजारा बेहद खूबसूरत था: चमकते सूरज की ओर देखते हुए, बारिश की चांदी जैसी चादर के बीच से हमें अंधेरे कस्बों के बीच एक चकाचौंध भरी सड़क दिखाई दी; दूसरी ओर, काले बादलों के बीच, सफेद कस्बे एक ऐसे इंद्रधनुष से जगमगा रहे थे जो मैंने आज तक नहीं देखा था, जिसका एक सिरा पहाड़ों में और दूसरा समुद्र में था। हमने अपनी नई दुकान से एक रोटी खरीदी और इंद्रधनुष के उस खूबसूरत नजारे से उत्साहित होकर, बकरियों की

ताज़ी लीद के बीच से होते हुए अपने सफेद घर की ओर चल पड़े, जिसके चारों ओर तीखे लाल रंग के गेरेनियम के फूलों की चमकीली कतार लगी थी।

* * *

23 जुलाई। अकेला, गहराता हुआ। गेरेनियम की सुगंध, पूर्णिमा की रोशनी और दर्द के कम होने के साथ, अनुभूतियाँ और गहरी होती जा रही हैं; दर्द की गहरी जड़ें, सतही झंझटों और शोर-शराबे से बहुत दूर। दर्द अंदर तक जा रहा है, जैसे किसी तेज धार वाले यंत्र से, और गहरा खून उमड़ रहा है। बस बीमार व्यक्ति को पता है कि पूर्णिमा की रोशनी में गलतियाँ बढ़ती जा रही हैं। सुनते हुए, वह अपनी ठुड्डी खुजलाता है, दाढ़ी के छोटे-छोटे रेशे। वह सोया नहीं है। उसे बाहर आना ही होगा, वरना अंदर जाना नामुमकिन है।
पहाड़ी सड़क पर गांव से आखिरी गधे की गाड़ियां आती हैं, परिवार पहाड़ पर अपने घर लौट रहे हैं, धीरे-धीरे, गधों की घंटियां बज रही हैं। हंसती हुई दो लड़कियां। एक दुबला-पतला लड़का, जिसके गले में पट्टा बंधा एक दुबला-पतला कुत्ता है। एक फ्रेंच भाषी परिवार। एक मां, जिसके गले में सफेद लेस वाली झालरदार पोशाक में एक रोता हुआ बच्चा है। अंधेरा और सन्नाटा, पूर्णिमा की रात में एकदम स्थिर। कहीं कोई झिंगुर की आवाज। फिर उसकी गर्माहट, इतनी प्यारी, और अजीब सी, और उस कमरे में खिंचाव जहां बुराई पनप रही है। बुराई त्वचा में पनपती है और उसे छूना मुश्किल बना देती है। उठो, गुस्से में, अंधेरे में, स्वेटर के लिए। नींद नहीं आ रही, घुटन हो रही है। नाइटगाउन और स्वेटर पहने डाइनिंग रूम में बैठी पूर्णिमा को घूर रही है, पूर्णिमा से बातें कर रही है, बुराई बढ़ती जा रही है और घर को नरभक्षी पौधे की तरह भर रही है। बाहर जाने की जरूरत। बहुत सन्नाटा है। शायद वह सो रहा है। या मर गया

है। कैसे पता चलेगा कि मौत से पहले कितना समय है। मछली जहरीली हो सकती है, और जहर अपना असर दिखा रहा है। और दो लोग बुराई में अलग-अलग बैठे हैं।
क्या हुआ? वह पूछता है, स्वेटर, ऊनी पैंट और रेनकोट उतारते हुए। मैं बाहर जा रहा हूँ। क्या तुम आना चाहते हो? अकेलापन असहनीय होगा; सुनसान सड़कों पर हताश और मूर्खतापूर्ण। विनाश को न्योता देना। वह डंगरी, कमीज़ और काली जैकेट पहनता है। हम घर की बत्ती जलाकर पूर्णिमा की चकाचौंध में बाहर निकल जाते हैं। मैं पहाड़ी की ओर अजीब से हल्के बैंगनी पहाड़ों की ओर बढ़ता हूँ, जहाँ बादाम के पेड़ बाढ़ से भरे सफेद परिदृश्य के बीच काले और मुड़े हुए दिखते हैं, सब कुछ गलत की धुंधली रोशनी में साफ दिखता है, दिन नहीं, बल्कि किसी बेज, फीके रंग की डैगरोटाइप तस्वीर जैसा। तेज़, और तेज़, रेलवे स्टेशन से आगे। मुड़कर देखा तो समुद्र दूर चाँदी की तरह चमक रहा है। हम दूर-दूर पत्थरों और सूखी घास पर बैठते हैं। रोशनी ठंडी, क्रूर और स्थिर है। सब कुछ हो सकता है: जानबूझकर डूबना, हत्या, जानलेवा शब्द। पत्थर खुरदुरे और साफ हैं, और चाँदनी में बेरहमी से उभरे हुए हैं। बादल छा जाते हैं, खेत अंधेरे में डूब जाते हैं, और पास का एक कुत्ता उन दो अजनबियों पर भौंकता है। दो खामोश अजनबी। वापस लौटते हुए, बढ़ती हुई बीमारी, अलग-अलग नींद और कड़वाहट भरी जागृति है। और हर समय बुराई बढ़ती जा रही है, रेंगती जा रही है, घर को जकड़ रही है, मेजों और कुर्सियों को जकड़ रही है और चाकुओं और कांटों को ज़हर से भर रही है, पीने के पानी को उस घातक संदूषण से दूषित कर रही है। सूरज की किरणें तिरछी आँखों पर बेसुरी पड़ रही हैं, और दुनिया रातोंरात नींबू की तरह टेढ़ी और खट्टी हो गई है।

पसीने से भीगे कपड़े उतारकर स्विमिंग सूट पहन लिया; दोपहर के भोजन में टमाटर, शिमला मिर्च, प्याज और अंडे तले; गहरी, थका देने वाली नींद ली; उठे तो ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उन्हें कोड़े मार दिए हों, फिर धीरे-धीरे कॉफी पीते हुए आराम किया। रात के खाने के लिए थोड़ा और दूध लेने गली पार गए; सुंदर नज़ारे, पौधों से घिरी सफेद बाड़ को पार करते हुए घर में दाखिल हुए; पुराना घर, एक अनुभवी किसान ने कहा कि दूध जल्द ही तैयार हो जाएगा। अंजीर के पेड़ों के बीच से नीले समुद्र की एक झलक दिखी, चौड़ी हरी पत्तियाँ हरे फलों से लदी थीं: हमने इंतज़ार करने का फैसला किया। टेड को चींटियों के निशान मिले: आधा घंटा भगवान बनने का नाटक करते हुए बिताया। काली चींटियों की एक कतार भूसे के दाने या मक्खी के पंख लेकर बिल की ओर जा रही थी; हमने घर का पत्थर का द्वार उठाया, जिससे पूरे समूह में अफरा-तफरी मच गई: नई धरती के खुलने पर बहुत भीड़, पीछे हटना और लड़खड़ाना। दो चींटियाँ ऐंठन से जकड़ी हुई दिखीं; लगभग पारदर्शी, बेज रंग की, मिट्टी के रंग की मकड़ी उनके चारों ओर बेतहाशा दौड़ रही थी, उन्हें अदृश्य जाले से जकड़ रही थी: चींटियाँ संघर्ष कर रही थीं, धीमी गति से चल रही थीं; मकड़ी तेज़ थी, घड़ी की दिशा में, घड़ी की विपरीत दिशा में दौड़ रही थी; हमने उसे एक और बड़ी चींटी फेंकी, जिसे उसने पकड़ लिया। चींटियों को एक बड़ी मरी हुई मक्खी दी, जिसे उन्होंने चिमटे से पकड़ा, एक चींटी को पैर से चिपकाकर, और खड़े होकर खींचने लगीं। काली चींटियों का एक झुंड अभी भी वहीं था; हमने करीब से देखा; सभी चट्टान से चिपकी हुई थीं, कमजोर और धीमी गति से हिल रही थीं, जबकि एक काली चींटी-मकड़ी चट्टान से पहरा दे रही थी, मानो कोई लुटेरा सरदार हो। एक बड़ा काला मूर्ख भृंग

चींटियों के ऊपर से लड़खड़ाता हुआ गुजरा, मानो कोई जंग लगा सज्जन पिनस्ट्राइप सूट पहनकर रेत की चट्टान पर चढ़ रहा हो। मछलियाँ: धूप में चमकती और नम, दुर्लभ चमकदार सीपियों की तरह रंगीन, धब्बेदार और धारीदार: चमकदार हल्के नीले किनारों पर काली धारियों वाली छोटी, घनी मांस वाली मछलियाँ; काँटेदार, बदसूरत मुँह वाली भूरे रंग की धब्बेदार मछलियाँ; त्रिकोणीय सिर, काली, भयानक आँखों और शानदार पीले ब्रोकेड पीठ वाली दुष्ट काली मोरे ईल; पंखों से निकलती लाल और गुलाबी रोशनी की किरणें। समुद्र से बाहर निकलता तैराक छटपटाते छोटे ऑक्टोपस को पकड़े हुए है, जिसके लंबे लटकते पैर लिपटे और मरोड़ रहे हैं; बेतुका गोल सिर; किनारे पर पड़ा टूटा हुआ ऑक्टोपस, जिसके पैर ढेर और कुंडलित हैं, मछुआरे के लिए उपहार।
पेरिस की एक संक्षिप्त यात्रा और टेड के माता-पिता के साथ यॉर्कशायर में लंबे समय तक रहने के बाद, ह्यूजेस परिवार कैम्ब्रिज लौट आया, जहां उन्होंने एल्टिसली एवेन्यू पर एक छोटा, गंदा अपार्टमेंट पाया और अपना घर बसा लिया, जबकि सिल्विया ने कैम्ब्रिज में अपनी पढ़ाई पूरी की।
विथेंस (यॉर्कशायर)
अधिकांश लोग कभी वहाँ नहीं पहुँच पाते, लेकिन चाय, गुलाबी फ्रॉस्टिंग वाले केक, स्मृति चिन्ह और उस जगह की रंगीन तस्वीरें लेने के लिए शहर में रुक जाते हैं, जहाँ पैदल जाना बहुत दूर है। वे सेंट माइकल और ऑल एंजल्स चर्च, काले पत्थर से बने पादरी के निवास के यादगार कमरों को देखते हैं—लकड़ी का पालना, शार्लोट का खानदानी लेस और हनीसकल से बना शादी का मुकुट, एमिली का अंतिम पलंग, छोटी, चमकदार किताबें और जलरंग, मोतियों से बना नैपकिन रिंग, प्रेरितों की अलमारी। उन्होंने इसे छुआ,

उसे पहना, और भूतों से भरे इस घर में लिखा। पत्थर के घर तक जाने के दो रास्ते हैं, दोनों ही थकाऊ हैं।
एक, कस्बे से निकलने वाला सार्वजनिक मार्ग, हरे-भरे चरागाहों से होते हुए पत्थर की बाड़ पार करके उस सफेद झरने तक जाता है, जो अपनी लंबी जलधारा को गोल-गोल, हरे रंग से ढकी चट्टानों पर गिराता है। फिर एक लकड़ी के पैदल पुल से होते हुए उस इलाके तक जाता है जहाँ बकरियों के पैरों से चपटी हुई घासें हैं। सौ साल पहले, एक भव्य युग में, यहाँ से होकर एक घोड़ागाड़ी का रास्ता गुजरता था, जहाँ की घुमावदार जीभें घिसकर टूटी हुई दीवारों, पुराने तहखाने के गड्ढे और गेट के खंभों तक पहुँच गई थीं, जो भेड़ों के चरागाह से तीतरों के इलाके तक जाती थीं। पुराना घोड़ागाड़ी का रास्ता एक धँसी हुई खाई बन गया है, झरने का साफ पानी और इतनी हरी घास के नीचे से आती कलकल की आवाज़ अविश्वसनीय है। उलझे हुए भूरे बालों का गुच्छा और एक लंबी खोपड़ी भेड़बाड़े की निशानी हैं, एक घिसा-पिटा रास्ता, जो धीरे-धीरे खो रहा है, लेकिन पूरी तरह से खोया नहीं है।
दूसरी ओर—अंतर, धीमी गति से ऊपर उठती हुई, हर दिशा से एक के बाद एक पहाड़, दलदल से होते हुए दुनिया के मध्य तक, हरी-भरी कीचड़ से लथपथ, जूतों की कीचड़—भूरी पीट मिट्टी, जिस पर केवल तीतर के पैर पड़े हों—कांटेदार झाड़ियों के नीले-सफेद कांटे, जले हुए चीनी जैसे रंग की फर्न—सनामी, जंगलीपन, अकेलापन—पीट के रंग का पानी। घर—छोटा, टिकाऊ—छत पर कंकड़, चट्टान पर नाम खुदे हुए— पहाड़ी के उस किनारे पर दो निर्जन पेड़ जहाँ से तेज़ हवाएँ आती हैं, सन्नाटे में प्रकाश को चीरती हैं। उग्र भूत कहीं नहीं, केवल आगंतुकों के दिमाग में और पीली आँखों वाली भेड़ों में।

प्रेम का घर तब तक रहता है जब तक मनुष्य के मन में प्रेम रहता है।
क्रोध गले में जलन की तरह झनझनाहट पैदा करता है।
“सभी मृत प्रिय”
मिसेज मीहान की यॉर्कशायर में बसी एक समृद्ध बोली वाली कहानी (वुथरिंग हाइट्स की पृष्ठभूमि में) - जिसमें एक ऐसी महिला पर मृतकों की आत्माओं का जीवंत प्रभाव है, जिसे लगभग भविष्य देखने की शक्ति प्राप्त है। शुरुआत - "मैंने एक बार एक देवदूत को देखा था" - "मेरी बहन मरियम" - फांसी की कहानियां, निमोनिया से मौत (हत्या का संकेत), पागल चचेरे भाई, एक अच्छे व्यक्ति की मौत - अस्पताल के वार्ड में युद्ध की तस्वीर - भूसे के बेंजी और चांदी की घुंडी वाली छड़ियों के साथ एक शानदार तस्वीर - "उसका पैर काट दिया गया है। उसकी हत्या कर दी गई थी। वह मर चुका है और वह मर चुका है।"
कविता
उग्र प्रचंड क्रोध—ठंडी बर्फ: घनी सफेद दलदली धुंध—लटकते दीपक। धुंधली रोशनी। स्थिर: स्थिर: जमे हुए पत्ते। झुंड में बैठी काली चिड़िया: क्रोध—“एक पल और, बिल्ली की फुफकार निकल आएगी।” घुटन भरे, दम घोंटने वाले क्रोध की जागरूकता—सफेद खाली दुनिया में चलना—सामान्य स्पष्ट दृष्टि से अलग होने का प्रतीक — व्यर्थ विस्फोट। मानवीय सीमाएँ बनाम ठंड, बर्फ, तारों और अंधकार की विशाल शक्ति—लुप्त डेज़ी: सिर में सफेद, गर्मियों की याद—वह उन्हें सूखे बंजर टूटे हुए डंठलों पर थोपती है—विरोध का ज्वलंत बोध, ऋतुओं और जलवायु का ध्रुवीय पारगमन—काली पत्थर की बाड़—विशाल जंगली परिदृश्य—भूरी बिल्ली, लाल कोयले की आग, जलते गाल, कोयले के घर के नीचे बिल्ली—चर्बी के टुकड़ों पर

सारस—पाला पड़ा हुआ हेज—प्रकृति की विशाल निर्वैयक्तिक सफेद दुनिया को इच्छाशक्ति की छोटी हिंसक चिंगारी के सामने प्रस्तुत करना।
उपन्यास
मैं हर व्यक्ति को फिर से देखता हूँ। सब कुछ घूम-फिर कर वहीं आ जाता है। टोनी—पीला, सुनहरे बालों वाला, दुबला-पतला—रेलवे स्टेशन पर देखा गया—पूरा तैरता हुआ पेरिस का दिन लौट आता है— निराशा का चक्र अपने आप में सिमट जाता है। आतंक का वसंत, डूबने का, जहाँ तीन आदमियों ने धमकाया और कोई विकल्प चुनने लायक नहीं था, लेकिन एक विकल्प तो चुनना ही था। म्यूनिख जाने वाली जर्मन ट्रेन—“अगर तुम मुझे पहले जानते तो मुझे पसंद करते।” लो, पकड़ो, पियो—संबंधों को काट डालो—अंधा हो जाओ और वर्तमान में डूब जाओ। अँधेरा कमरा। पीले लचीले शरीर। पीला वॉलपेपर—गुलाब के गुलदस्ते—अस्वीकृति—तेजी से भाग जाना—चाय की फिल्म में खो जाना—यह ज्ञान कि एक दिन अंतिम घटना घटेगी। मैं उसे किसी और जीवन से देखूंगा, एक बिल्कुल अलग दुनिया से, थोड़ी ऊँची, थोड़ी मनोरंजक पहचान में सिर हिलाऊंगा, एक ऐसी दुनिया जहाँ एक युवा सुनहरे बालों वाले लड़के का बिस्तर पूरी तरह से अप्रासंगिक, अधिक, अकल्पनीय, अवांछित है।
अँधेरे कमरे में, खिड़कियों पर परदे लगे हैं, कार की रोशनी दीवार के साथ-साथ घूमती हुई, तिरछी, कोने में मुड़ी हुई, फिर गायब हो जाती है। फिर भी, स्ट्रीट लैंप से आती हुई नीली रोशनी लगातार दरारों से छनकर आती है, सपाट दीवार पर चौकोर पर्दे की जाली जैसी छाया बनाती है जैसे कांच के टुकड़े बिखरे हों, पानी की दरारों से चाँदनी की तरह आती है, डेस्क के किनारे पर चमकती हुई फैलती है, फर्श पर कोणीय रूप से गिरती है। खिड़की की चौखट पर

पेड़ों में शर्मी से शंकु फेंकते, बिच्छू-बूटी के बीच लड़खड़ाते और थिसल में लोटपोट होते। हर साल कबूतर घास से ढके, घने और उपेक्षित पवित्र पत्थर पर दाना चुगता है। अपने गहरे काले, गूंगे शरीर के आवरण में लंबे समय तक सोते हुए, रक्त रुका हुआ, वे कोमल मुखों को आकार देने की परवाह नहीं करते।
कैंब्रिज
सोमवार दोपहर, 25 फरवरी। नमस्कार, नमस्कार। अब समय आ गया है कि मैं बैठूं और कुछ चीजों का वर्णन करूं: कैम्ब्रिज, लोग, विचार। साल तेज़ी से बीत जाते हैं, और मैं उन्हें व्यक्त करने के मामले में दो साल पहले की तुलना में कहीं भी आगे नहीं बढ़ पाई हूं। मैं वेलेस्ली में अपने घर के दरवाजे पर बैठकर अपनी स्थानीय स्थिरता पर शोक मनाती थी: अगर, मैं खुद से बुदबुदाती थी, मैं यात्रा कर पाती और दिलचस्प लोगों से मिल पाती, तो मैं क्या-क्या लिखती! मैं सबको चकित कर देती। अब, मैं कैम्ब्रिज, लंदन और यॉर्कशायर में रह चुकी हूं [ह्यूजेस परिवार यॉर्कशायर में रहता था]; पेरिस, नीस और म्यूनिख; वेनिस और रोम; मैड्रिड, एलिकांटे, बेनीडोर्म। वाह! मैं कहां हूं? एक उपन्यास। शुरुआत के लिए। कविताएं पल के स्मारक हैं। मैं अपनी कल्पनाशील तृतीयक कविता की कड़ियों को तोड़ रही हूं। मुझे कथानक चाहिए: लोग विकसित हो रहे हैं: एक-दूसरे से और परिस्थितियों से टकरा रहे हैं: जटिल नागरिक: बढ़ रहे हैं, दुखी हो रहे हैं, प्यार कर रहे हैं और विभिन्न बुरी परिस्थितियों में भी सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं।
तो यह अमेरिकी लड़की खुद को खोजने के लिए कैम्ब्रिज आती है। खुद को समझने के लिए। वह एक साल रहती है, सर्दियों में गहरे अवसाद से गुज़रती है। प्रकृति और शहर का विस्तृत वर्णन, प्यार भरी बारीकियां। कैम्ब्रिज उभरता है। पेरिस और रोम भी। सब कुछ

सूक्ष्म रूप से प्रतीकात्मक है। वह कई पुरुषों के साथ संबंध बनाती है—अपने तरीके से एक आकर्षक महिला: किरदार: गंभीर येल विश्वविद्यालय का आलोचक गैरी हॉप्ट; दुबला-पतला, बीमार, आकर्षक अमीर रिचर्ड; गैरी और गॉर्डन का संयोजन; रिचर्ड और लू हीली [एक पुराना प्रेमी]। सुरक्षित बनाम असुरक्षित। और निश्चित रूप से: बड़ा, विस्फोटक और खतरनाक प्यार। साथ ही, दोहरा विषय: नैन्सी हंटर [स्मिथ की रूममेट] और जेन का संयोजन: पहचान की गंभीर समस्या। गौण लड़के: मनोरंजन के पात्र…
अब से लेकर परीक्षा तक हर दिन: कम से कम 2 से 3 पन्ने किसी याद की हुई घटना का वर्णन करते हुए लिखें, जिसमें पात्र, संवाद और विवरण शामिल हों। कथानक के बारे में भूल जाइए। इसे यादों की एक जीवंत डायरी बनाइए। अध्याय छोटे-छोटे रखें। घर लौटने तक लगभग 300 पन्ने तैयार हो जाने चाहिए। गर्मियों में पुनरावलोकन करें। फिर हार्पर या अटलांटिक प्रतियोगिता में भाग लें।
हर दृश्य को गहराई से देखें, उसे एक जटिल, बहुआयामी रत्न की तरह प्यार करें। प्रकाश, छाया और जीवंत रंगों को महसूस करें। रात को ही दृश्य की कल्पना कर लें। रात को इसके बारे में सोचें, फिर सुबह उसे लिखें।
लेकिन पहले: इस द्वीप के बारे में कुछ संक्षिप्त बातें। मैं बेचैन हूँ। उत्सुक हूँ। फिर भी कुछ कर नहीं पा रही। बाहर: नीला, साफ़, ठंडा दिन है, जो मुझे कंटीली झाड़ियों और गिलहरी के पेड़ के पास से लकड़ी की पगडंडियों से होते हुए ग्रैनचेस्टर जाने के लिए प्रेरित कर रहा है। लेकिन आज मैं खरीदारी के लिए साइकिल से शहर गई: बैंक, डाकघर, जहाँ से मैंने टेड की कविताओं के दो बैच, ताज़ा टाइप किए हुए, 'द सैटरडे रिव्यू ऑफ़ लिटरेचर' को भेजे। मैंने अपने काले पेटेंट-चमड़े के बैग में शेरी, क्रीम चीज़

(ग्रैमी के खुबानी टार्ट के लिए), थाइम, तुलसी, तेज पत्ता (वेंडी के स्वादिष्ट स्टू के लिए - जिसकी एक प्रतिकृति अभी चूल्हे पर पक रही है), गोल्डन वेफर्स (रिट्ज़ क्रैकर्स के लिए कितना सुंदर नाम है!), सेब और हरे नाशपाती भर लिए।
मुझे चिंता होने लगी थी कि मैं बहुत ज्यादा व्यावहारिक और खुशमिजाज न हो जाऊं: उदाहरण के लिए, लॉक का अध्ययन करने या लिखने के बजाय—मैं सेब पाई बनाने चली जाती हूं, या 'द जॉय ऑफ कुकिंग' पढ़ती हूं, जैसे कोई दुर्लभ उपन्यास पढ़ रही हो। अरे, मैंने खुद से कहा। तुम घरेलू जीवन में खो जाओगी और कुकी बैटर के कटोरे में सिर डुबोकर खुद को घुटन में डाल लोगी। और अभी-अभी मैंने वर्जीनिया वुल्फ की वह पवित्र डायरी उठाई है, जिसे मैंने 'सैटरडे विद टेड' में उनके उपन्यासों के संग्रह के साथ खरीदा था। और वह हार्पर पत्रिका से अस्वीकृति के कारण हुए अवसाद से उबरने के लिए रसोई की सफाई करती हैं (और वो भी बड़ी पत्रिकाएं!— मुझे तो विश्वास ही नहीं होता कि बड़ी पत्रिकाओं को भी अस्वीकृति मिलती है!)। और हैडॉक और सॉसेज पकाती हैं। भगवान उनका भला करे। मुझे लगता है कि मेरा जीवन किसी न किसी तरह उनसे जुड़ा हुआ है। मैं उनसे प्यार करती हूं—मिस्टर क्रॉकेट के लिए 'मिसेज डैलोवे' पढ़ने के समय से—और मुझे अभी भी एलिजाबेथ ड्रू की आवाज सुनाई देती है, जो स्मिथ के विशाल कक्षा कक्ष में 'टू द लाइटहाउस' पढ़ते हुए मेरे रोंगटे खड़े कर देती है। लेकिन उसकी आत्महत्या, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं 1953 की उस काली गर्मी में उसी घटना को दोहरा रही हूँ। बस मैं डूब नहीं सकी। मुझे लगता है मैं हमेशा अति संवेदनशील और थोड़ी शंकालु रहूँगी। लेकिन मैं बहुत स्वस्थ और दृढ़ भी हूँ। और बेहद खुश भी। बस मुझे लिखना है।

इस हफ्ते कुछ भी न लिखने से मैं बीमार महसूस कर रही हूँ। उपन्यास का विचार इतना बड़ा हो गया कि मैं घबरा गई।
लेकिन; मैं बहुत कुछ जानती, महसूस करती और जी चुकी हूँ: और अपनी उम्र के हिसाब से जीने में बहुत समझदार हूँ: मैंने पारंपरिक नैतिकता को धराशायी कर अपनी खुद की नैतिकता पाई है। जो शरीर और मन के प्रति समर्पण है: एक अच्छा जीवन जीने के लिए दृढ़ विश्वास। कोई ईश्वर नहीं, बस सूर्य ही है। मैं टेड के साथ मकारी परिवार का हिस्सा बनना चाहती हूँ। किताबें, बच्चे और गोमांस का स्टू।
प्रिय डॉ. क्रूक ने हमें जो पैराफिन हीटर उधार दिया था, वह चमकीले नीले पेट्रोल से धीरे-धीरे गर्म हो रहा है और उसका जगमगाता लाल तार का गुंबद कमरे को गर्म कर रहा है। दोपहर की धूप सड़क के उस पार बने एक जैसे ईंट के मकानों की खिड़कियों से परावर्तित हो रही है। पक्षी चहचहा रहे हैं। नारंगी ईंट की चिमनियों और चिमनी के ऊपर, सफेद बादल एक दुर्लभ नीले आकाश में तैर रहे हैं और बिखर रहे हैं। हे भगवान, यह कैम्ब्रिज है! इन अगले तीन महीनों में, इंग्लैंड में मेरे 22 महीनों के अंत में, मैं इसे अच्छे से समझ लूँगी। और मैंने यहाँ आते समय खुद से कहा था कि घर लौटने से पहले मुझे खुद को खोजना होगा: अपने जीवनसाथी और अपने करियर को। नहीं तो—मैं कभी घर नहीं लौट पाऊँगी।
और अब: दोनों! जैसा मैंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था: अचानक पहचान का दृश्य। आस्था का कार्य। और मेरी शादी एक कवि से हुई है। हम चिमनी साफ करने वालों के उस गिरजाघर में सिर्फ प्यार, उम्मीद और अपने आप के साथ मिले: टेड अपनी पुरानी काली कॉरडरॉय जैकेट में और मैं माँ के उपहार में मिली गुलाबी बुनाई वाली पोशाक में। गुलाबी गुलाब और काली टाई। बरसाती लंदन की धुंधली

[illegible]
[illegible]
[illegible]

न्यूयॉर्क में हमारा स्वागत करने के लिए कुछ ऐसा ही होगा! मरने से पहले हम सब मिलकर किताबों का एक पूरा संग्रह प्रकाशित करेंगे! और हमारे कई बच्चे भी होंगे जो प्रतिभाशाली और स्वस्थ हैं। मैं पुरस्कार पत्र (जो अभी तक नहीं आया है) देखने और प्रकाशन की जानकारी प्राप्त करने के लिए बेसब्री से इंतजार कर रहा हूँ। पन्नों की छपाई की खुशबू का भी!
मुझे बेहद खुशी है कि टेड पहले नंबर पर है। लेखक से शादी करने के मेरे सारे पुराने विचार टेड के साथ आते ही धराशायी हो गए: उसके अस्वीकार करने से मेरा दुख दुगुना हो जाता है और उसकी स्वीकृति से मुझे मेरी खुशी से भी कहीं ज़्यादा खुशी मिलती है—ऐसा लगता है जैसे वह मेरे लिए एकदम सही पुरुष साथी है: हम दोनों एक-दूसरे को उस जीवन का विस्तार देते हैं जिसे हम जीना चाहते हैं: कभी भी दिनचर्या, सुरक्षित नौकरी, पैसे के गुलाम नहीं बनते: बल्कि लगातार लिखते रहते हैं, खुले दिल से दुनिया में घूमते हैं, और प्यार और विश्वास के साथ जीते हैं। यह सुनने में तो आदर्श लगता है। लेकिन मैं सच में मानती हूँ कि हम हैं: अलग-अलग, हम विलासिता में डूबे रहे, प्रेमियों द्वारा प्यार और दुलार से लाड़-प्यार पाते रहे। उन पर बेरहमी से रौंदते रहे। साथ में, हम कल्पना से परे सबसे वफादार, रचनात्मक, स्वस्थ और सरल दंपत्ति हैं!
कल का दृश्य: वसंत ऋतु में गॉर्डन के साथ पेरिस से प्रस्थान का सटीक वर्णन: जियोवानी को विदाई: संदेह, भयानक दबी हुई उदासी; नीरस ट्रेन यात्रा; शानदार भोजन; बेस्वाद जीवन; म्यूनिख में बर्फ़बारी; डरावना सर्जिकल होटल। पेरिस के कमरे और नाश्ते का वर्णन करें। [कुछ अंश छूट गए हैं।] लड़की के प्रति तिरस्कार और घृणा; आगे की यात्रा की विफलता का पूर्वानुमान। "अगर तुम ऐसे ही रहे तो तुम्हारी कभी शादी नहीं होगी।" कमज़ोर मर्दानगी और

उद्देश्यहीनता पर ताने और उसे कमज़ोर करना। निर्णय का निर्णायक मोड़।
मीठी नींद आए।
26 फरवरी, मंगलवार। लगभग 7:30 बज रहे हैं। मैं सुबह 3:30 बजे से जाग रही हूँ, टेड को छींक आ रही है और वह सर्दी से जूझ रहा है; ठंडी, धुंधली सुबह। दिमाग बहुत तेज़ी से चल रहा है। कविताएँ लिख रही हूँ। किताबों के सपने: कविताएँ, उपन्यास। क्या हम उतने ही सफल होंगे जितना मैं सोचती हूँ? या यह सिर्फ़ एक ख्वाब है? सुबह 6 बजे अलार्म की तेज़, परेशान करने वाली आवाज़ से उठ गई, ताकि खराब एगनोड बना सकूँ। एक मामूली सवाल पर तीखी बहस हुई, टेड का कहना था कि जेल में दो साल तक एक खराब किताब को गहराई से पढ़ना अच्छा होगा—इंसान अपने असली अनुभव से सीख जाएगा कि यह गलत था। मेरा कहना था कि एक खराब किताब पढ़ने से बेहतर है कुछ न देखना: कि केवल वही लोग बुराई को पहचान पाएंगे जिनके पास पहले से ही आलोचनात्मक समझ हो, और इससे उन्हें क्या फायदा होगा। वह मेरी 'मिट्टी के बर्तन का सिर' वाली कविता की आलोचना कर रहा था। आलोचना के लिए यह सही समय नहीं था। मेरे पास अभी तक कोई नई कविता नहीं थी जिस पर मैं काम कर सकूँ। काश, छुट्टी मिल जाए। बहुत हो गया। शुरू करते हैं।
सोमवार, 4 मार्च। मैं स्तब्ध, अटका हुआ, गतिहीन महसूस कर रहा हूँ। दिमाग सुन्न पड़ गया है। शायद एक हफ्ते में तीन शोध पत्र लिखने और तीन महीने से भी कम समय में अंग्रेजी साहित्य की सारी किताबें पढ़ने और बार-बार पढ़ने के ख्याल ने मुझे मूर्ख बना दिया है। मानो मैं सुन्न होकर और कुछ भी शुरू न करके इससे बच सकता हूँ। सब कुछ रुका हुआ सा लग रहा है, आखिर क्या बात है?

डाक नहीं आती। 1 अक्टूबर से अब तक कोई स्वीकृति नहीं मिली है। मेरी ढेरों कविताएँ और कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं। मेरी कविता संग्रह की तो बात ही छोड़िए। प्रतियोगिता जीतने के बारे में टेड का पुरस्कार विवरण वाला पत्र भी नहीं आया, इसलिए मुझे परोक्ष आनंद भी नहीं मिल रहा। बिल आते रहते हैं। मैं कुछ नहीं लिख पाती। उपन्यास, या यूँ कहूँ कि प्रतिदिन तीन पृष्ठ लिखने का प्रयास, बेहद खराब है। मैं उस पर ध्यान ही नहीं दे पा रही। ऐसा लग रहा है जैसे मैं किसी मील लंबी छड़ी पर बंधी कुंद पेंसिल से क्षितिज रेखा के उस पार किसी दूर की चीज़ को लिख रही हूँ। क्या मैं कभी सफलता पा पाऊँगी? कम से कम अगर मई के अंत तक 300 पृष्ठ लिख भी लूँ, तो मेरे पास पूरी कहानी का सारगर्भित ढाँचा तो होगा। फिर मैं धीरे-धीरे लिख पाऊँगी, हर अध्याय को फिर से लिखूँगी, एक सूक्ष्म संरचित शैली में सावधानीपूर्वक। अगर मैं कभी ऐसी सूक्ष्म संरचित शैली खोज पाऊँ तो।
अगर आप नोटबुक नहीं रखते तो ज़िंदगी को समझना नामुमकिन है। मैं अब गुस्से में हूँ क्योंकि बर्फ़ के अलावा, मुझे याद ही नहीं कि फ़्रांस से म्यूनिख का सफ़र कैसा था। मैं बार-बार अपने दिल की बात कह रही हूँ। सारी अंदरूनी भावनाएँ और बेहद अजीबोगरीब एहसास। एक बार फिर, मुझे अपनी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं और अपनी क्षमताओं के बीच का अंतर महसूस हो रहा है। लेकिन मैं रोज़ अपने तीन पन्ने लिखती रहूँगी, चाहे मेरे सुपरवाइज़र मुझे कितना भी ताना मारें। बस, अगर मुझे लगे कि यह एक अच्छा उपन्यास है, तो मेरा मनोबल बहुत बढ़ जाएगा। लेकिन अब यह उपन्यास नहीं है। बस कोरी बकवास है। लेकिन उस लड़की को मेरी ज़िंदगी के तीन महीनों में एक साल गुज़ारना होगा। और फिर, इस गर्मी में दो महीने फिर से लिखने के लिए, ध्यान से, यह जानते हुए कि मैं क्या करने की कोशिश

कर लूँगी। मैं उसके बिना जीवन की कल्पना ही नहीं कर सकती। पच्चीस साल तक हर जगह खोजने के बाद, उसके जैसा कोई नहीं है। जो बिल्कुल फिट बैठता हो। जो इतना सटीक बैठता हो और मेरे लिए एकदम सही पुरुष पूरक हो। अरे, बोलो। मैं कितनी मूर्ख हूँ। सचमुच मूर्ख…
मैं एक शानदार उपन्यास लिख सकता हूँ। समस्या है उसकी शैली। मैं चाहता हूँ कि वह गंभीर, दुखद, फिर भी जीवंत, समृद्ध और रचनात्मक हो। मुझे एक गुरु की ज़रूरत है, कई गुरुओं की। लॉरेंस, 'विमेन इन लव' को छोड़कर, अपनी शैली में बहुत ही सरल और पत्रकारिता शैली में लिखते हैं। हेनरी जेम्स बहुत ही विस्तृत, शांत और सभ्य हैं। जॉयस कैरी मुझे पसंद हैं। उनमें मुझे उनकी ताज़गी, बेबाकी और बोलचाल की भाषा की झलक मिलती है। या जे. डी. सैलिंगर। लेकिन उसमें एक "मैं" वक्ता की ज़रूरत होती है, जो बहुत सीमित है। या जैक बर्डन। मेरे पास समय है। मुझे खुद को याद दिलाना होगा कि मेरे पास समय है।
इरविन शॉ और पीटर डी व्रीस और उन सभी बुद्धिमान, चतुर, गंभीर और विपुल लेखकों का भार ही मुझे दबाता है। मुझे लगता है, अगर टेड न होता, तो मैं अपनी आत्मा भी बेच देता। इस उपन्यास पर बड़े उत्साह से लिखने, दोस्तों और फुर्सत के पलों का त्याग करने और एक घटिया उपन्यास लिखने के बारे में सोचना कितना विडंबनापूर्ण है। लेकिन मुझे लगता है कि मैं एक बेस्टसेलर लिख सकता हूँ। मुझे इस बात का एक अजीब सा यकीन है: मैं जो लिख रहा हूँ उससे मैं परेशान हूँ—लेकिन मुझे यकीन है कि यह विकसित हो सकता है, इसे एक कलाकृति में बदला जा सकता है। अपने छोटे से रूप में। एक लड़की की तबाही, नफरत और निराशा से भरी यात्रा के बारे में, जो प्यार की मुक्तिदायक शक्ति का अर्थ खोजने और पाने के लिए निकलती है।

लेकिन डर यह है कि घटिया लेखन का नतीजा सस्ता और सतही प्यार होगा। अच्छी तरह से लिखा गया, यौन संबंध महान और दिल दहला देने वाला हो सकता है। खराब तरीके से लिखा गया, यह एक सच्ची स्वीकारोक्ति है। और कितना भी आत्मनिरीक्षण इसे ठीक नहीं कर सकता।
मुझे लगता है कि मैं ये कागज़ात पूरे कर लूँगा, और कुछ समय के लिए इस दबाव के बोझ से छुटकारा पाकर छुट्टियों में अच्छा लिख पाऊँगा। मैंने पहले भी ये कागज़ात पूरे किए हैं, और मरा नहीं हूँ। लेकिन मुझे अपने रचनात्मक दिमाग की दुनिया में वापस लौटना होगा: नहीं तो, पाई और बीफ़ की दुनिया में मैं मर जाऊँगा। महान वैम्पायर रसोइया मेरा पोषण निचोड़ लेता है और मैं पदार्थ के भ्रष्टाचार, मात्र बेजान पदार्थ पर मोटा होता जाता हूँ। मुझे दुबला-पतला होना होगा, लिखना होगा और इस दुनिया के अलावा जीने के लिए नई दुनियाएँ बनानी होंगी।
सोमवार, 11 मार्च, 1957। मैंने सोचा: मेरी इस साधारण "उसने सोचा- उसने महसूस किया" उपन्यास पर धिक्कार है। "द हॉर्सेस माउथ" पढ़ो: बस यही काफी है। कम से कम अभी के लिए। एक सीमित, लोक-शैली, जीवंत शैली अपनाओ जो लड़की को सीमित करे, उसे परिभाषित करे: हास्य, जीवंतता, लेकिन गंभीरता: "अंततः बहुत गंभीर।" "वाइफ ऑफ बाथ"। "हरसेल्फ सरप्राइज्ड" पढ़ना बेहतर होगा। अपनी खुद की शैली बनाओ, नकल मत करो। लेकिन "लॉन्ड्रोमैट अफेयर" जैसी समृद्ध शैली। और देखो यह बेस्टसेलर बन जाती है। इस पर काम करना बहुत आसान है: शैली ही विषयवस्तु को परिभाषित करेगी। सबसे कठिन भाग: शैली। जीवंत और प्रत्यक्ष वर्णन। प्रथम पुरुष: शायद मैं तृतीय पुरुष का प्रयोग कर सकता हूँ।

मैं बहुत आलसी और बीमार हूँ: एक हफ़्ता पीछे चल रही हूँ। लेकिन धीरे-धीरे करके जब तक मैं बाकी का काम पूरा नहीं कर लेती, तब तक रोज़ 5 पन्ने लिखूँगी। शब्दों का प्रयोग वैसे ही करो जैसे कवि करते हैं। बस! गुली जिमसन भी शब्दों की कलाकार हैं—या यूँ कहें कि जॉयस कैरी हैं। लेकिन मुझे तो शब्द-कलाकार बनना है। नायिका। जैसे स्टीफन डेडलस समुद्र किनारे चल रहे हों: ऊ-ई-ऊ-सिस। अपनी पेटीकोट को सरसराते हुए।
अब: एक संक्षिप्त विवरण: पुस्तक के कैम्ब्रिज-वसंत भाग में होने के लिए। बरसात की रात में मछली और चिप्स की दुकान:
मछली और चिप्स

काली, गर्म, बहती धुंध में फेन कॉज़वे पर मुड़ी। पानी के गड्ढों में नारंगी रोशनी चमक रही थी, भड़कीले नारंगी सूरज, घने कोहरे से निकलते नारंगी रंग के कोकून। नारंगी बारिश की बूँदें। एक अप्राकृतिक रंग। उसने अपने दांत भींचे, अपने बालों को थपथपाया। भीगे हुए, बारिश से भीगे हुए। बाईं ओर, धँसी हुई शीप्स ग्रीन, उफनती धाराओं और स्थिर तालाबों से भरी हुई, अपने चिनार के पेड़ों को उग्र धुंध में धकेल रही थी। वे चिनार के पेड़। साफ़ रातों में, तारों से भरी, झुकी हुई, इशारा करती हुई, शाखाओं में फँसे बड़े तारे। या देवदूत। उन रातों में, देवदूतों के साथ चमकती हुई। टिंका बेल याद है? पास जाने से पहले जुगनू की चमक जैसी दिखती थी। छोटी सी लड़की, नाजुक चमकती हुई, ड्रैगनफ्लाई के पंखों वाली।
आंखें सिकोड़कर देखने पर, काली, चिकनी पेड़ की शाखाएं नारंगी रंग की स्ट्रीटलाइटों के चारों ओर घूमती हुई प्रतीत हुईं। शाखाओं का एक जाल बुनती हुई, मकड़ी के जाले की तरह नारंगी रंग बिखेरती हुई।

"शाखाएं बत्तियों के चारों ओर क्यों घूमती हैं?"
"रोशनी," उसने कहा, उसका हल्का नारंगी रंग का चेहरा काले रंग में आगे की ओर उभरता हुआ दिख रहा था, "गोल घूमती शाखाओं पर प्रतिबिंबित होती है, दूसरों पर नहीं।"
उसने अपना हाथ उसकी जेब में डाला। नारंगी रोशनी ने उसके चमकदार चमड़े के कोट पर पेटेंट-चमड़े की धारियों को चमका दिया। वे रॉयल होटल के पास से गुजरते हुए सुनसान राजमार्ग को पार कर रहे थे, जिसकी ईंटें बदसूरत और नारंगी रंग की थीं। फिर वे बॉटनिकल गार्डन के पास लोहे की रेलिंग वाले एक छोटे से पुल को पार कर गए। मुझे नारंगी बत्तियाँ बिल्कुल पसंद नहीं हैं। उनसे शहर बीमार सा लगता है।
“कैसी परिषद! एक-दो मोटे आदमी बैठे हैं। नारंगी बत्तियाँ लगाने का प्रस्ताव है। बर्फ़ीले तूफ़ानों में, एक-दो बर्फ़ीले तूफ़ानों में, और कोहरे में, देखना आसान होगा। ड्राइवरों के लिए। और हमें उस बदबूदार नारंगी रंग में घूमना पड़ेगा। जैसे नारंगी कोढ़ी हों।”
बारिश में कोई बाहर नहीं निकला था। सड़कें चमक रही थीं, और मुख्य राजमार्ग से निकलने वाली संकरी, टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पर नीली-सफेद बत्तियाँ जगमगा रही थीं, जिन पर धातु के स्टड से घिरी काली-सफेद पट्टी के किनारे नारंगी रंग के गोलाकार पैदल यात्री क्रॉसिंग लाइटें अपने आप टिमटिमा रही थीं।
रसेल स्ट्रीट। आगे, दाईं ओर दूर। हल्की रोशनी एक गर्म पोखर की तरह फैल रही थी। दो आदमी उस रोशनी में, मछली और चिप्स की दुकान के चमकदार सफेद दरवाजे से अंदर चले गए।
"क्या तुम्हारे पास पैसे हैं?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]!"

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]"

“[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

लिया। वह बार-बार पीछे खिसककर उसकी बाहों को ऐसे जकड़ लेता था जैसे कोई स्ट्रेट-जैकेट हो।
काउंटर के पीछे दुबला-पतला पीला आदमी फुफकारती हुई फ्रेंच फ्राइज़ से भरी तार की टोकरी उठा रहा था। उसके बगल में खड़ी हंसमुख महिला मुस्कुराई, मानो सवालिया निगाहों से देख रही हो। वह बगल में घूर रहा था, उसे सैल्मन मछली उछलती हुई दिखाई दे रही थी। कुछ तो था। उसने उसे कोहनी मारी। "हे!"
एक मछली। छह पैसे के चिप्स।
“प्लेइस या कॉड?” महिला ने पूछा।
लड़की ने उसे देखकर मुस्कुरा दिया।
“कॉड,” लड़के ने कहा।
“मुझे लगा कि तुम्हें प्लेइस मछली पसंद आएगी,” महिला ने लड़की से कहा। उसने एक कागज़ का थैला लिया, उसे आधे कुरकुरे भूरे चिप्स और तली हुई कॉड मछली के एक टुकड़े से भर दिया। “सिरका डालने के बाद मुझे वापस दे देना।”
लड़की ने नमक का टूटा हुआ धातु का डिब्बा उठाया और उसे थैले में डाल दिया। फिर, सिरके की कांच की बोतल लेकर, उसने मछली पर सिरका छिड़का, बोतल का किनारा उठाया और आलू पर भी डाल दिया। उसने थैला वापस महिला को दे दिया, जिसने उसे अखबारों के ढेर में लपेट दिया।
लड़के ने खुले पैसे गिने। उनके पास दो पेंस बचे थे।
“रात हो गई।” वे गीले अंधेरे में बाहर निकल आए। धीरे-धीरे उसने अखबार को खोला और कागज के थैले का मुंह ढूंढ लिया।
“लो।” उसने हाथ बढ़ाकर गरमागरम मछली का एक टुकड़ा तोड़ा, अपना सिर पीछे झुकाया और उसे अपने मुंह में डाल लिया। तली हुई खाल का

एक हिस्सा निकालते समय उसकी उंगलियां जल गईं, मछली का रस उसकी उंगलियों से चिपक गया। रसेल स्ट्रीट पर धीरे-धीरे चलते हुए उसने अपनी उंगलियां चाटीं।
“बारिश की रात में मुझे किसी भी चीज़ से ज़्यादा मछली और चिप्स खाना पसंद है,” उसने कहा और उसे फिर से थैला पकड़ा दिया। “कुछ चिप्स भी ले लो। सारे नीचे ही हैं।” उसने थैले को अपने पास सटा लिया और उसकी गर्माहट महसूस की। बारिश में एक गर्म एहसास। चिप्स को सिरके में भिगोया गया था।
क्या वह मठ है?
वे बाईं ओर एक लंबी ईंटों की इमारत के पास पहुँचे, जिसमें बंद पर्दों के पीछे से रोशनी छनकर आ रही थी। "हाँ," उसने कहा।
पर्दों के पीछे से रेडियो का संगीत तेज़ आवाज़ में बज रहा था।
वह एकदम रुक गई।
“भिक्षु ध्यान कर रहे हैं।” वह अपने हाथों को जेब में डाले हुए आगे बढ़ गया और गली के कोने की ओर चल पड़ा। लेकिन वह दृश्य उसकी आँखों में थम सा गया।
गली के आखिर में ईंट की दीवार के सामने लगी कांच की लालटेन, स्ट्रीटलाइट, "सेंट एलिगियस स्ट्रीट" के सफेद बैकग्राउंड वाले साइनबोर्ड को रोशन कर रही थी। काले अक्षर। कितना साफ-सुथरा। मुझे हमेशा यह याद रखना चाहिए: लोहे की पसलियों और कांच के चौकोर ढांचे में साफ रोशनी। वह साइनबोर्ड कितना ताजा दिखता है। रेडियो से हंसी की एक जोरदार आवाज आई। और फिर गहरी, गूंजती घंटियों की आवाज। "घंटियों की आवाज सुनो। आओ अपना सिर झुकाओ..." रेडियो पर। वही औपचारिक गीत जो वे हमेशा गाते थे।

"क्या यह बिग बेन है?" उसने धीरे से उसकी पीठ की ओर देखते हुए पूछा।
"हाँ।"
वह इंतजार करती रही। घड़ी बजने लगी।
बोंग। बोंग। बोंग। क्या यह खत्म होगा? हल्की बारिश हो रही थी।
बोंग। बोंग। किसी ने, एक बूढ़ी औरत ने, मठ का पर्दा खींचा और बाहर झाँका।
बोंग। लड़की भागने के लिए तैयार खड़ी थी।
बोंग। उस आवाज़ ने उसे स्तब्ध कर दिया, और उसके सामने हेमार्केट के नीचे टेम्स वॉक का दृश्य उभर आया। काली जंजीरें, काली दीवारें, पारदर्शी हरे पेड़ों की पत्तियों में लटकती रोशनी।
बोंग। बोंग।
“नौ बजे हैं,” लड़के ने कहा।
वह उसके पास आई और अपना हाथ वापस उसकी जेब में डाल दिया, अपनी उंगलियों के बीच नाखून गड़ा दिए। वे चलते रहे, खिड़की के पर्दों की दरारों से रोशन कमरों में झाँकते हुए।
क्या आप उस घर में रहना चाहेंगे?
“यह एक गैराज है।” उसने छोटी ईंटों की इमारत की दूसरी मंजिल की खिड़की की ओर देखा। पर्दे नहीं लगे थे, और उसे सफेद रंग से रंगी दीवारों के बीच लाल रंग के पर्दे दिखाई दिए। काले बालों और लाल स्वेटर पहने एक भारतीय लड़का खिड़की के पास से गुजरा। एक दीवार पर बैंगनी रंग का पेंट किया हुआ था।
"यह युवा वास्तुकार का है।"
मुझे यह पसंद आएगा। आरामदायक। वाटरप्रूफ।
वे मुख्य सड़क पर निकले और नारंगी धुंध में प्रवेश कर गए।

“चलो घोड़े वाले पार्क से वापस चलते हैं,” उसने कहा। “यह नारंगी रंग मुझे बिल्कुल पसंद नहीं है। इसे देखकर मेरा जी मिचला रहा है।”
"वो रास्ता कीचड़ से भरा है।"
हमने जूते पहन रखे हैं।
वे बाईं ओर मुड़े, राजमार्ग को पार करते हुए बाड़ के नीचे से गुजरे। घोड़े चर रहे थे, नारंगी रोशनी में उनकी आकृतियाँ धुंधली सी लग रही थीं, पीठ झुकी हुई थी, अयाल लहरा रहे थे। वे गीली घासों पर धीरे-धीरे चल रहे थे, नारंगी दलदली कोहरे के घने जाल में टखनों तक डूबे हुए।
अचानक सृजनात्मक प्रतिभा का नया अहसास: "क्षण को स्थायी बना देने" की क्षमता—वातावरण: "ब्लू रूम" से भरा हुआ—कपड़ों और प्लेटों की खड़खड़ाहट—फलों जैसे उष्णकटिबंधीय रंगों में सजी अश्वेत महिलाएं—टैंगरिन, लाइम, तरबूज गुलाबी—
शब्द शुरू होते हैं: आंतरिक एकालाप, दृश्य का पुनर्निर्माण, पुनर्व्यवस्थापन—उसे बोलना—मन के स्पष्ट कांच में खिलते फूल की गोली—खिलना—किसमें? डायरी बनाओ—प्रत्येक गोली को पकड़ो और उसे दुर्लभ फूलों के संग्रहणीय एक्वेरियम में खिलने दो— रचनात्मक मूल और अखंडता को बनाए रखो ([शब्द गायब] को उसकी कीमत से अधिक में न बेचो) और किसी भी महिला के पास इससे अधिक नहीं हो सकता—निरंतर सामाजिक जीवन आंतरिक दुनिया को नष्ट या धोखा देता है: इसे दुर्लभ और विचित्र बनाने के लिए।
प्लाथ द्वारा स्मिथ विश्वविद्यालय में एक वर्ष का शिक्षण कार्य शुरू करने से पहले, उनकी मां ने ह्यूजेस परिवार के लिए केप कॉड के ईस्टहैम में एक लंबी छुट्टी की व्यवस्था की थी। ईस्टहैम, केप कॉड

15 जुलाई, 1957। एकदम नया, सफ़ेद पन्ना। पहला: तोड़-फोड़ कर फेंक दिया गया। सारे सपने, सारे वादे: इंतज़ार करो जब तक मैं दोबारा लिख सकूँ, और फिर पहले पन्ने का दर्दनाक, बेतरतीब बलात्कार। कुछ नहीं कहा गया। बस एक शुरुआत। एक निर्देश। लगभग दोपहर हो चुकी है, और छोटे-छोटे चीड़ के पेड़ों के बीच से आसमान एक चमकदार, धुंधला सा धूसर रंग लिए हुए है। किसी कमीने का रेडियो पेड़ों से बज रहा है: जैसे हरी आँखों वाली चुभने वाली मक्खियाँ: भगवान को हमें याद दिलाना है कि यह स्वर्ग तो दूर-दूर तक नहीं है। इसलिए वह रेडियो और जानलेवा मक्खियों की संख्या बढ़ा देता है।
धीरे-धीरे, बड़े दर्द के साथ, जैसे किसी अनंत और आदिम बच्चे को जन्म दे रही हो, मैं लेटी रहती हूँ और संवेदनाओं को उभरने देती हूँ, उन्हें खुद को देखने देती हूँ और शब्दों में दर्ज करने देती हूँ: खिड़की पर लगा पर्दा हल्की हवा के साथ अंदर-बाहर हिलता है, पीला-भूरा, हल्का भूरा, और पर्दे हिलते हैं, सूती कपड़े पर पीले खिले हुए फूल और सफेद पृष्ठभूमि पर काली टहनियाँ बनी हुई हैं। हमें अभी तक अच्छी कॉफ़ी नहीं मिली है, लेकिन दो दिनों की गहरी नींद के बाद, बुरे सपनों से भीगी हुई, थकान धीरे- धीरे हम पर हावी हो रही है: शैतानी रूप से वास्तविक: हेवन हाउस, स्मिथ लड़कियों के कदमों की आहट कमरे के पास से गुज़रती है, जो एक जेल बन जाता है, हमेशा एक सार्वजनिक गलियारे में खुलता है, कोई निजी निकास नहीं। घूरती नज़र: धीमी, सूक्ष्म, विश्वासघाती मुस्कान, और सबसे बुरे का डर, सबसे बुरे का सपना, अंततः अपने चरम पर पहुँच जाता है। जागना स्वर्ग है, अपनी निश्चितताओं के साथ। ये सपने क्यों? मेरे पिता की मृत्यु के बाद शुरू हुए और सब कुछ बिखर जाने के बाद से ये उन भयावहताओं और भय का अंतिम निवारण

हैं। मैं अभी-अभी ठीक हुई हूँ। मुझे ठीक हुए एक साल से ज़्यादा हो गया है, फिर भी सपने पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हैं। वे नहीं हैं क्योंकि मैं नहीं हूँ। और मुझे लगता है कि कभी नहीं हो पाऊँगा। सिवाय इसके कि हम एक सुरक्षित जीवन जिएंगे, कोई शराब पार्टी नहीं, कोई नशे में धुत होकर अपनी बड़ाई नहीं करेंगे। अगर मैं कहानियां, कविताएं और उपन्यास लिखूं। मुझे बस काम करना है, अनुभव और कल्पना की गहरी खानों को खोलना है, शब्दों को आने देना है और उन्हें सब कुछ कहने देना है, खुद को आवाज़ देने देना है और खुद को चखने देना है।
इन जादुई सात हफ़्तों में से हर एक: लेखन: अभी उपन्यास नहीं, जब तक कि मैं पूरी तरह से तैयार न हो जाऊं। अब कहानियां। डैन आरोन द्वारा सैम लॉरेंस के परिचय के लिए तैयार होने के लिए द अटलांटिक मंथली के लिए फिक्शन: कम से कम दो कहानियां: "द आई बीम वन": काफ्का की तरह, सरल भाषा में, प्रतीकात्मक, फिर भी बहुत यथार्थवादी। कैसे कोई हमेशा और अपरिवर्तनीय रूप से अकेला होता है। जासूस की विकृतियां। कैम्ब्रिज में सेट। और एक और: शायद वेट्रेस की कहानी का एक संस्करण: बस मेरे पास अभी वह कहानी नहीं है। इसे खुद बनाओ। यथार्थवादी। सुंदर गद्य। छोटे-छोटे पैराग्राफ बनाओ कि किसके साथ क्या होता है। फिर इसे स्पष्ट रूप से सोचो। इसे लिखो…
आकर्षक कहानियां: पैसा कमाने वाली कहानियां: बेहद खुशनुमा, जीवंत और पारिवारिक माहौल से भरपूर। एल्ड्रिच की कहानियों का इस्तेमाल करें, बेबी-सिटिंग के अनुभव साझा करें। गर्मियों में परिवार के साथ समुद्र तट पर रहना: कैंटर्स की कहानियां। बहुत तेज़ गति वाली कहानी। "लॉन्ड्रोमैट अफेयर" को दोबारा लिखें। साथ ही, एक शातिर बहन की कहानी। कैसे वह आती है, छोटे भाई की शादी

से ईर्ष्या करती है, पुराने दिनों जैसी नहीं। मज़ेदार और थोड़े चंचल किरदार। एक गंभीर कहानी भी आज़माएं: भावुक: जहाज पर सवार महिला? न्यूयॉर्क की सचिव: पृष्ठभूमि: महारानी एलिजाबेथ। हाँ। उपन्यास: फाल्कन यार्ड: केंद्रीय छवि: प्रेम, एक बाज़, एक ऐसा प्रहार जो हमेशा के लिए निर्णायक साबित होता है: रक्त बलिदान: फाल्कन यार्ड, पुस्तक का केंद्रीय अध्याय: अकाट्य मिलन और अनुभव। प्रतीक चिन्ह: कलाई पर बाज़ लिए मुस्कुराते हुए घोड़े पर सवार स्वामी और स्वामिनी। जूडिथ के चरित्र में निष्पक्ष रूप से उतरें, ऐसे अन्य पात्रों का निर्माण करें जो अपने दम पर कार्य करते हों, न कि केवल उसके प्रतिबिंब के रूप में…
गरदनी फली
बुधवार, 17 जुलाई। आज के बाद कोई छुट्टी नहीं: एक पृष्ठ डायरी, बस शुरुआत के लिए। मेरे लिए सब कुछ खुशी भरा है: प्यार, शोहरत, जीवन का काम, और शायद बच्चे भी, ये सब मेरी प्रकृति की मूल आवश्यकता पर निर्भर करता है: अपनी बात को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना, पिछले पाँच वर्षों में और उससे पहले भी, मेरे भीतर दबे, अवरुद्ध और भरे हुए अनुभवों के विशाल सैलाब को तराशना। हालाँकि उससे पहले हालात इतने निराशाजनक नहीं थे, क्योंकि अनुभवों का प्रवाह धीमा था, इतना सुगम कि उन्हें छोटी कहानियों और कविताओं में लिखा जा सकता था। उस समय मेरे पास एक ऐसी सहजता थी जो अब काबिले तारीफ है, हालाँकि अब वह सहजता मेरे भीतर उमड़ते अनुभवों को नीले और सफेद मिट्टी के बर्तन में सजे फलों की तरह पूर्ण और समृद्ध रूप से प्रस्तुत नहीं कर सकती। खैर, अगर मैं लिख नहीं रही होती, जैसा कि पिछले छह महीनों से नहीं लिख पा रही हूँ, तो मेरी कल्पना रुक जाती है, अवरुद्ध हो जाती है, मेरा दम घुट जाता है, यहाँ तक कि पढ़ना मुझे उपहास लगने लगता है (दूसरों

ने लिखा है, मैंने नहीं), खाना बनाना और खाना मुझे अरुचिकर लगने लगता है (महज शारीरिक गतिविधि, जिसमें कोई बुद्धि नहीं होती) और एकमात्र चीज़ जो मुझे सहारा देती है, फिर भी जिसका मैं पूरी तरह आनंद नहीं ले पाती, वह है वह अनंत गहरा प्रेम जिसमें मैं जीती हूँ... इसके बिना, मैं सुकून की तलाश में इधर-उधर भटकती रहूँगी, उसे कभी नहीं पाऊँगी, और उस स्थिर, शांत, दृढ़ निश्चयी केंद्र को बनाए नहीं रख पाऊँगी जो मेरे सबसे बड़े सूखे दौर के अंत में भी मेरे पास है: यह आएगा। अगर मैं मेहनत करूँगी।
कविताएँ वैसे भी बुरी होती हैं: खासकर विस्तृत कविताएँ: वे मुझे बहुत जल्दी ही थोड़े से शब्दों में उलझा देती हैं। बेहतर है वे छोटी-छोटी अभ्यास कविताएँ जो वर्णनात्मक हों और तार्किक विकास के दार्शनिक जाल में न उलझें। जैसे कि स्केट मछली, चाँदनी रात में गाय, या सूअरनी पर लिखी छोटी कविताएँ। ऐसी कविताएँ जो भौतिकता से भरी हों, इस अर्थ में कि मेरे शब्दों में संसार साकार हो उठता है, अमूर्तता में नहीं, या तीन स्पष्ट स्तरों पर शाब्दिक रूप से नहीं। छोटे-छोटे वर्णन जिनमें शब्दों में एक रहस्यमयी शक्ति का आभास हो: किसी गुण का नाम लेना: दुबला-पतला, चुभने वाला, चिकना, फैला हुआ, पीला, चमकदार, फूला हुआ। उन्हें हमेशा ज़ोर से बोलो। उन्हें अकाट्य बनाओ।
फिर: पत्रिका की कहानी: गंभीरता से लिखी गई, लेकिन सहजता से, क्योंकि उपन्यास के डायरी "मैं" की तुलना में सख्ती से सीमित पात्रों, लगभग व्यंग्यचित्रों, उनमें से कुछ को, नियंत्रित करना आसान है, जिसे अपने तरीके से सीमित होना पड़ता है, लेकिन केवल इसलिए ताकि वह जीवन के उस दृष्टिकोण तक विकसित हो सके जो मेरे पास अब है, जो कल एक पूर्ण दृष्टिकोण होगा, और कल।

ऐसा लग रहा है कि दिन से आगे निकलने के लिए जल्दी उठना पड़ेगा, जो एक बजे तक तय हो जाएगा। पिछली रात: 'द वेव्स' खत्म की, जिसने मुझे परेशान कर दिया; अंतहीन सूरज, लहरों, पक्षियों और वर्णन की अजीब असमानता से लगभग गुस्सा आ गया था—एक भारी, भद्दा, बदसूरत वाक्य एक धाराप्रवाह, शुद्ध, बहते वाक्य के बगल में। लेकिन फिर आखिरी 50 पन्नों की रोंगटे खड़े कर देने वाली बारीकी: बर्नार्ड का सारांश, जीवन पर एक निबंध, समस्या पर: एक ऐसे अस्तित्व की नश्वरता जिसके साथ कुछ भी घटित नहीं हो सकता, जो अब सृजन नहीं करता, पतन के विरुद्ध सृजन करता है। ज्ञानोदय, संलयन, सृजन का वह क्षण: हमने इसे बनाया: संपूर्ण के बिखरने, दूर चले जाने और फिर से आने के विरुद्ध, प्रवाह के सामने सृजन करने और सृजन करने के लिए: क्षण को कुछ स्थायी बनाना। यही जीवन का कार्य है। मैंने बार-बार रेखांकित किया: इसे दोबारा पढ़ा। मैं उससे बेहतर करूँगी। जब तक मैं यह नहीं कर लेती, तब तक कोई संतान नहीं। मेरा स्वास्थ्य अनुभवों की कहानियाँ, कविताएँ, उपन्यास रचने में लगा है: इसीलिए, या यूँ कहें कि इसीलिए यह अच्छा है कि मैंने कष्ट सहा है और नरक का अनुभव किया है, हालाँकि सभी नरकों का नहीं। मैं जीवन के लिए नहीं जी सकती: बल्कि उन शब्दों के लिए जो प्रवाह को रोकते हैं। मुझे लगता है कि मेरा जीवन तब तक नहीं जिया जाएगा जब तक ऐसी किताबें और कहानियाँ न हों जो इसे समय में निरंतर पुनर्जीवित करती रहें। मैं बड़ी आसानी से भूल जाता हूँ कि वह कैसा था, और वर्तमान की भयावहता में सिमट जाता हूँ, जहाँ न अतीत है, न भविष्य। लेखन मृतकों के रहस्यों और उन आकाशों के द्वार खोलता है जिनके पीछे भविष्यवाणी करने वाले देवदूत छिपे होते हैं। मन सृजन करता रहता है, अपना जाल बुनता रहता है।

क्षणिक विचार, क्षणिक अवलोकन लिख डालो। श्रीमती स्पॉल्डिंग, अपनी भारी पलकों वाली नीली आँखों और भूरे बालों की लंबी चोटी के साथ, कैसे अपना जीवन लिखवाना चाहती हैं: कितना कुछ घटित हुआ। सैन फ्रांसिस्को में भूकंप और आग, उनकी माँ का शरणार्थियों को पके हुए सेम और रोटी बाँटना, और उनका रोना और सेम अपने पास रखना चाहना; साइडिंग पर रेलगाड़ियों के आपस में टकराने जैसी आवाज़ सुनना, अपनी गुड़िया का पालना हिलते देखना, गुड़िया को पकड़ना, उनकी माँ का उन्हें बिस्तर पर खींच लेना। उनके पति का अचानक निधन। उनका ऑपरेशन, अस्पताल से छुट्टी होकर अपनी सहेली के घर जाकर बाल सुखाना और उन्हें संवारना। उनके दूसरे पति का घर आना, उनके लंबे बालों को देखना: कितना सुंदर दृश्य। छोटा बच्चा बीमार पड़ गया और उन्हें याद करने लगा। उनकी पत्नी का उसी दिन निधन हो गया जिस दिन उनके पति का। यह सब: कच्चा, ठोस। उपयोगी होने के लिए। साथ ही, जीवन की छवियाँ: जैसे वूल्फ ने पाया था। लेकिन वह: बहुत क्षणभंगुर, धरती से जुड़ी हुई। मैं और मजबूत बनूँगी: मैं तब तक लिखूँगी जब तक मैं अपने भीतर की गहरी भावनाओं को व्यक्त न कर दूँ, फिर बच्चे पैदा करूँगी, और उनसे भी गहरी भावनाओं को व्यक्त करूँगी। पहले रचनात्मक मन का जीवन, फिर रचनात्मक शरीर का। क्योंकि मेरे लिए शरीर के बिना शरीर कुछ भी नहीं है, और शरीर शरीर की समृद्ध जड़ों से पोषित होता है। हर दिन, लिखना। चाहे कितना भी बुरा हो। कुछ न कुछ तो निकलेगा। मुझे यह सोचकर आदत पड़ गई थी कि यह बहुत जल्दी निकल आएगा: बिना मेहनत और पसीने के। खैर, अब 40 दिनों तक मैं मेहनत और पसीना बहाऊँगी। लिखूँगी, पढ़ूँगी, धूप सेंकूँगी और तैरूँगी। काश, मैं ऐसे जी पाती। हम मेहनत करेंगे। और वह मेरे जीवन रूपी सागर को स्थिर करता है, उसे अपने मन के गहरे समृद्ध रंग, अपने प्रेम और अपने

परिपूर्ण अस्तित्व पर निरंतर विस्मय से भर देता है: मानो मैंने अंततः शांत लहरों से एक देवता को प्रकट किया हो, जो अपने चमकते भाले के साथ ऊपर आ रहा हो, और उसके पीछे सीपियाँ और दुर्लभ मछलियाँ आ रही हों, और वह संसार को अपने पीछे खींच रहा हो: मेरी पृथ्वी देवी के लिए, वह सूर्य है, सागर है, काली पूरक शक्ति है: यांग से यिंग। आकाश एकदम नीला है, और चीड़ के पेड़ की पत्तियाँ सफेद और चमकदार हैं। ज़मीन गिरी हुई चीड़ की पत्तियों से नारंगी-लाल रंग की है, और रॉबिन पक्षी और गिलहरियाँ इस लाल मिट्टी से अपना रंग चुरा रही हैं।
18 जुलाई, 1957। सोने से पहले बस एक छोटी सी बात, बस यह बताने के लिए कि आज का दिन कितना खराब था। कल शाम स्पॉल्डिंग्स के साथ रात भर गाड़ी चलाने के बाद, मच्छरों की चुभन से हड्डियों तक खुजली हो रही थी, देर रात तक चिकने-चुपड़े खाने पड़े, जैकब के कमरे में वूल्फ की चुभन इसी वजह से टल गई, नींद अजीब सी आई। आज तक रानी-राजा के सपने नहीं आए, नौकर टेड के लिए सफेद सूट, जैकेट वगैरह ला रहे थे और मेरे लिए बॉल गाउन और मुकुट। बच्चों का एक धुंधला सा सपना आया, उदास, गुमसुम, दबे हुए, उकड़ू बैठे हुए और मछलियाँ पकड़ने वाले। फिर टेड की गुलाबी माँ का एक प्यारा सा नज़ारा दिखा, जो एक प्यारे से बच्चे को गोद में लिए खड़ी थी, उसके दाहिनी ओर दो बड़े बच्चे थे, मैं बच्चे के गाल पकड़कर उसे एक मज़ेदार प्यारे से चेहरे में दबा रही थी: उसके बच्चे या मेरे?
बहुत थकी हुई, लेकिन सुबह की ताज़ी नीली रोशनी के विपरीत, दूध से बनी कॉफ़ी के कटोरे और माँ की सहायिका की कहानी पर व्यर्थ की सोच-विचार में बीती सुबह, जिसके पात्र अड़ियल हैं, न हिलते हैं, न बोलते हैं, और मुझे उनके बारे में कोई निश्चित विचार नहीं है:

क्या सैसी एक शर्मीली किताबी कीड़ा है, जो माँ के दबदबे में रहती है, और फिर अपने खोल से बाहर निकलकर एक आदमी को पा लेती है? या एक बिंदास, बहुत फुर्तीली लड़की, जो अपनी माँ के मना करने के बावजूद पहली बार एक अच्छे, सीधे-सादे लड़के से प्यार कर बैठती है? भगवान जाने। लगभग तीन कहानियाँ मुझे अपनी ओर खींच रही हैं: माँ अपनी बेटी पर हावी रहती है, जो उससे केवल उन्नीस या बीस साल बड़ी है: लड़की 17 साल की, माँ 37 साल की: माँ लड़की के प्रेमियों के साथ छेड़छाड़ करती है। लड़की आज़ादी और ईमानदारी के लिए लड़ती है। शनिवार शाम की कहानी: जैसे ही मैं इसके बारे में सोचती हूँ, यह अचानक संभव लगने लगती है। इरा और गॉर्डन संकट के दौरान माँ के साथ दृश्यों का तनाव महसूस होता है। विद्रोह। कार की चाबियाँ। मनोचिकित्सक। विवरण: डॉ. बी.: बच्चा। लड़की खुद को संभाल लेती है, एक अच्छी बेटी बन सकती है। माँ की कठिनाइयों का दृश्य देखती है। हाँ हाँ। यह एक अच्छी कहानी है। एक गंभीर विषय। नाटकीय। गंभीर। समाज के नामों के बीच में जोड़े गए नामों से छुटकारा। मानसिक अस्पताल की पृष्ठभूमि। खतरा। अत्यधिक तनाव में डायनामाइट। माँ का चरित्र। पहले तो डरावनी, बाद में दयनीय, मार्मिक। पहले बाहर से देखा गया, फिर अंदर से। लड़की लौटती है: बड़ी हो गई है: और बड़ी होने के लिए तैयार। माँ जैसी, फिर भी इस बात से नाराज़। अलग बनना चाहती है। बालों को ब्लीच करती है। पुलिसवाले। उसे परेशान करते हैं। अखबारों में खबर। आत्महत्या के प्रयास के बाद। व्यावहारिक डॉक्टर बी। कहीं जाने की जगह नहीं। वापस स्कूल। फिर क्या? कुछ। मेहनत से बनाए गए चार्ट। माँ- बेटी। परेशानियाँ। सजीव। एक सच्ची कहानी। "परेशानी खड़ी करने वाली माँ।"

ठीक है। एक विचार। ठीक तब जब आपको लगा कि कुछ नहीं आया। या आ ही नहीं सकता। छह हफ़्तों में आपके पास लिखित पांडुलिपियों का ढेर होना चाहिए। कर डालो। जैसा कि काज़िन ने कहा, इसका यह सारांश कहानी नहीं है। यह तो बस एक खेल है। लेकिन मेरे लिए इस शुरुआती चरण में किसी विचार को संक्षेप में खोल पाना किसी जीवनरक्षक घटना से कम नहीं है। अपने दिमाग की चमकदार सतह पर खरोंच कर किसी विचार को जन्म देने की भीख मांगने जैसा नहीं, जो एक दिन के चूजे की तरह खाली पन्ने पर फूट पड़े। यहां तक कि मां की सहायक की कहानी भी कुछ तो असरदार होनी चाहिए। भोली-भाली, बेबाक और जिद्दी लड़की सैसी? उसके चरित्र के मूल तक पहुंचें: उसे क्या करने के लिए प्रेरित करता है? संघर्ष: चरण। मां चाहती है कि सैसी अपनी वर्तमान स्थिति के बजाय सामाजिक रूप से सफल हो और सही लड़के को पसंद करे: वह चक को चुनती है। लिन और गैरी का प्रवेश। मां चाहती है कि लिन उदाहरण पेश करके सैसी को सामाजिक बनने में मदद करे। मां और लिन बनाम सैसी। ताजगी, बदलाव के लिए मंच तैयार। सैसी गैरी के प्यार में पड़ जाती है, गैरी लिन के प्यार में पड़ जाता है, जो स्थिर और बंधी हुई है। लिन को यह समझ आता है: वह सैसी को गैरी (जहाज दुर्घटना में) को ढूंढने में मदद करती है और माँ को चक से अलग होने में मदद करती है। कहानी का रुख बदल जाता है। उसका अपना प्रेमी वापस आ जाता है। माँ को सच्चाई का पता चलता है। कितना स्पष्ट, कितना प्यारा। अब बस इसे लिख डालो...
20 जुलाई, 1957, शनिवार। एक नए युग की शुरुआत हो चुकी है: अभी साढ़े सात भी नहीं बजे हैं। मेरे सामने सुबह के चार घंटे का पूरा समय है। और मैं धीरे-धीरे, आश्चर्य से, अपने मन की कार्यप्रणाली में फिर से आनंद लेने लगा हूँ: जो पिछले छह महीनों में परीक्षा की तैयारी, अस्त-व्यस्त एल्टिसली [कैम्ब्रिज में]

में रहने, तंग बजट बनाने, हम सब, बड़े-बड़े संदूक, सैकड़ों किताबें और छोटे पतले नाजुक महंगे मिट्टी के प्याले वगैरह के चलते फर्श के नीचे दबे एक बेजान शव की तरह बंद पड़ा था। एक तरह का लकवा। और अब, दर्द के साथ, लेकिन और भी अधिक आश्वस्त होकर, मैं अनुभव और विचारों के कुओं को फूटते हुए, चुपचाप उमड़ते हुए, रस की हल्की-हल्की स्पष्ट आवाज़ों के साथ महसूस कर रहा हूँ। मुझे ये वाक्य कैसे सूझते हैं: मैंने उपद्रवी माँ की कहानी शुरू कर दी है, और नाखूनों से खुरचने के बजाय, मैं कहानी के केंद्र में बैठकर उसे उंडेल रही हूँ, बेशक बेतरतीब ढंग से, लेकिन वह आ रही है, और फिर उसका क्रम और आकार भी आएगा। और फिर चौबीस केक की कहानी आएगी…
हम सपने देखते हैं: और मेरे सपने और भी अच्छे होते जा रहे हैं। कल रात न्यून्हम में आसमान साफ़ था, बादलों से घिरा हुआ नहीं था, वैसी दुर्गंध नहीं थी जैसी मेरे पुराने परीक्षा के सपनों में होती थी। शांत, सुखद सा: रॉबिन पक्षियों पर किताबें, विचित्र पक्षी, और प्राकृतिक डिज़ाइन पर परीक्षा की पुस्तिका: सूखे फूल: गुलाबी और पीले तुरही जैसे फूलों के गुच्छे, जंगली और छोटे। मोटे-ताज़े परीक्षक, मिस कोहेन, मिस मॉरिस। और जागते ही, मेरी त्वचा अभी पूरी तरह से नहीं आई थी, टेड मेरे लिए नींद की प्यास बुझाने के लिए ठंडा संतरे का रस और हरे रंग के चीनी मिट्टी के बर्तनों में कॉफी लेकर आया।
उसके सपने में हम एक घास के मैदान में चल रहे थे: एक छोटा बाघ, और एक बाघ जो झाड़ियों के पार था। एक बाघ-आदमी, जिसका चेहरा चीनी पीले रंग का था, बंदूक लिए दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। टेड खाली राइफल से बचाव करते हुए, धमकाने लगा: मैं इतनी दूरी से स्नाइप शॉट से बाघ को मार सकता हूँ। शानदार। उपन्यास के लिए।

वर्जीनिया वुल्फ मदद करती हैं। उनके उपन्यासों ने मेरे लिए संभव बनाया है: मैं खुद को वर्णन करते हुए पाती हूँ: प्रसंग: आपको अपनी जूडिथ ग्रीनवुड के साथ नाश्ते, दोपहर के भोजन, रात के खाने पर जाने या उनकी ट्रेन यात्राओं के बारे में बताने की ज़रूरत नहीं है, जब तक कि कहानी उन्हें आगे न बढ़ा दे, उन्हें प्रकट न कर दे। उन्हें रहस्यमय बनाइए: वह गोरी लड़की कौन है: वह एक कुतिया है: वह श्वेत देवी है। उन्हें पीढ़ी का प्रतीक बनाइए। जो आप हैं। प्रसंग: बाहरी दृश्य: न्यून्हम के सफेद शादी के केक जैसे हॉल: कंक्रीट जैसा कोई और नहीं: इतिहास के संतृप्त स्थान पर अमेरिकी मासूमियत। घिसे-पिटे रास्ते, खोखली पत्थर की सीढ़ियाँ: किसने खोखली कीं: प्रसिद्ध हस्तियों ने? मासूमियत से परे मासूमियत, वासना, घमंड, घृणा, महत्वाकांक्षा की विघटनकारी शक्तियों से अक्षुण्ण होकर गुज़री: प्रचुरता, दरिद्रता से गुज़री। पतन से पहले कोई बगीचा नहीं: लेकिन उसके बाद एक हस्तनिर्मित बगीचा। बी.डब्ल्यू.: कष्टदायक रूप से पांडित्यपूर्ण, निराशावादी: एक आलोचक की तरह, "जब मैं सेब की डालियों के नीचे जवान और सहज थी" पढ़ने की कोशिश कर रही होंगी। उसका व्यंग्य करो: लड़खड़ाती चाल, साइनस, नीली आँखें और हल्की सफ़ेद-पीली त्वचा: सादा जीवन: आलू और स्टेक। येल के प्रोफ़ेसरों द्वारा लिखी भारी-भरकम किताबें जिन पर लिखा है: बी. के लिए, अंग्रेज़ी में उनके काम की सराहना में... एक बड़ी उम्र की, बदसूरत लड़की-कलाकार के साथ उनका प्रेम प्रसंग, जो एक अय्याश, स्वच्छंद कवि की पूर्व प्रेमिका थी और जिसे वे भुला नहीं पाए। सब कुछ उपन्यास के लिए। सोमवार से शुरू: प्रतिदिन 7 या 8 पृष्ठ पढ़ने का प्रयास करो।

दर्पण में दिख रही लड़की लाल लोमड़ी के साथ चिड़ियाघर
25 जुलाई, गुरुवार… आज: आसमान साफ़, नीला, चीड़ के पेड़ों जैसी ठंडक, पैरों के नीचे नारंगी सुइयाँ। तीन दिन तक घने बादलों और बारिश के बाद, लिखने के लिए एकदम सही मौसम था: सोमवार को चाँदी जैसी चमकीली बारिश की बूँदें नाटकीय और साफ़ थीं, फिर मूसलाधार बारिश, ठंडी, सीधी और बेहद शानदार। हम टपकते हुए बरामदे में कुर्सियों पर बैठे थे, बारिश का पानी हरे प्लास्टिक के सीट कवर पर जमा हो रहा था, पारदर्शी पानी की बूंदों से स्क्रीन पर फैल रहा था, और सूखी दरारों वाली ज़मीन में रिस रहा था। रविवार स्वर्ग जैसा था: जीवन का एक पड़ाव, एक साफ़ पन्ने पर एक स्पष्ट रेखा: हम आराम कर चुके थे, आज़ादी से लिख रहे थे, धूप में तपे हुए, अपने काम, आसमान और नासेट लाइट और कोस्ट गार्ड बीच के बीच नहाने के लिए एक चिकनी और उथली रेत की पट्टी पाकर बेहद खुश थे: हम खेले: तैरते हुए, मेरे हाथ-पैर कॉर्क की तरह ऊपर-नीचे हो रहे थे, मेरे माथे से बाल गीले थे, जो मछलियों को लुभाने के लिए लटक रहे थे। गौरव और शक्ति का एक उभार। फिर काम पर वापसी। लिखना, गलतियाँ सुधारना, फिर से टाइप करना, मेरी कहानी 'मुसीबत खड़ी करने वाली माँ' पर: मेरे अनुभव के करीब, एक बड़े, उलझे हुए पाई के टुकड़े की तरह... मुझे कहना होगा, मैं कहानी से हैरान हूँ: मुझे लगता है कि यह मेरी अब तक की किसी भी रचना से ज़्यादा दिलचस्प है। प्लैटिनम समर्स के बारे में कोई बकवास नहीं, जिसे मेरी आँखों के पीछे दस फुट के डंडे से हेरफेर किया गया हो। असली, नाटकीय संकट। मुख्य पात्र का विकास। महत्व की बातें और प्रतीक। मंगलवार को अंत देखकर मैं निराश हो गया था: डॉक्टर और सारा के बीच चार पन्नों का नीरस सवाल-जवाब, सूखा और कटा-फटा, किसी जोड़-तोड़ की तरह: अब,

आपने यह तय कर लिया है, आपको इसके बारे में कैसा लगता है। एक समृद्ध, जटिल कविता की तरह, जिसके अंत में एक सपाट, सपाट दो- पंक्ति का नैतिक संदेश चिपका दिया गया हो: यही सच है, बच्चों, बिना किसी दिखावे के। खैर, मंगलवार रात और कल सुबह मैंने सोचा और जवाब पाया: दर्शकों को अनुमान लगाने दो: तेज़, त्वरित अंत, कहानी के नाटकीय आवरण में सिमटा हुआ। मुझे लगता है कि मैंने इसे कर दिखाया। मैंने इसे द सैटरडे ईव पोस्ट को भेज दिया: शुरुआत ऊपर से करो। निराश होने से पहले मैक्कल, लेडीज़ होम जर्नल, गुड हाउसकीपिंग, वुमन्स डे में कोशिश करो। अगर उन्होंने मेरी दूसरी कहानियों में मेरी शैली की थोड़ी-बहुत तारीफ की हो, लेकिन किसी गंभीर विषय की इच्छा जताई हो, तो यह मेरी सबसे अच्छी शैली वाली कहानी है और इसमें गंभीरता, पहचान की समस्याएँ, क्रोध, प्रेम आदि सब कुछ है, जो इसे सफल बना सकता है। अगर मेरी एक भी कहानी स्वीकार हो जाती है, तो मेरे पास अपने और पिछली प्रकाशित कहानी के बीच एक सहारा होगा: मेरा बचपन, 1952 में, पाँच साल पहले। इससे मुझे मदद मिलेगी: यह मेरे वर्तमान संघर्षों पर तत्काल संभावना का आभास देगा और मुझे किशोरों के बाज़ार से निकालकर उन सभी पैसे कमाने वाले, बुद्धिमान वयस्कों के बीच अपनी जगह दिला देगा। लेकिन, अगर ऐसा नहीं होता है, तो मुझे काम करना होगा, शिकायत नहीं करनी। लगातार पाँच साल काम करने के बाद, शायद मेरे पास शिकायत करने का कारण हो। अभी नहीं, पाँच साल बाद मेरी पहली अच्छी कहानी के बाद, जिसके बीच में मैंने मुश्किल से एक शब्द भी लिखा है।
कलाकार का जीवन विशिष्ट, ठोस चीज़ों से पोषित होता है: यह बात मुझे कल रात तब सूझी जब मैं सात घातक पापों की अवधारणा पर कविताएँ लिखने से निराश था और मैंने खुद से कहा कि हत्या के

विचार को त्याग दो: यह दर्शन का एक महान कार्य होना चाहिए। कल चीड़ के जंगल में उगी उस हरे रंग की फफूंद से शुरुआत करो: उसके बारे में शब्द, उसका वर्णन, और एक कविता बन जाएगी। रोज़ाना, सरलता से, और फिर वह दूर कहीं एक अछूत वस्तु बनकर नहीं रह जाएगी। गाय के बारे में लिखो, श्रीमती स्पॉल्डिंग की भारी पलकों के बारे में, भूरी बोतल में वेनिला फ्लेवर की खुशबू के बारे में। यहीं से जादुई पहाड़ों की शुरुआत होती है।
हे भगवान, आज 9 अगस्त है: शुक्रवार का दिन, जड़ों के उखड़ने के बेहद करीब, सुबह करीब 9:30 बजे आसमान बिल्कुल साफ और नीला-सफेद है, और मैं बड़ी सावधानी से अपनी लंबी, बोझिल संवाद कविता की लगभग 14 पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, जिसमें दो लोग ओइजा बोर्ड पर बहस कर रहे हैं। जटिल सात पंक्तियों वाले पंचमापन के छंदों (ababcbc) के बावजूद यह कविता काफी संवादपरक लगती है और मेरी अब तक की सभी रचनाओं से कहीं अधिक महत्वाकांक्षी है, हालाँकि मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं इसे एक पैचवर्क रजाई की तरह बना रहा हूँ, बस इतना पता है कि यह एक आयताकार आकृति में बननी चाहिए, लेकिन यह समझ नहीं आ रहा कि इसके अलग-अलग रंगों के टुकड़े कैसे फिट होंगे। कम से कम इससे मुझे उस घुटन से मुक्ति मिल जाती है जो मुझे छोटी-छोटी, बेजान कविताओं के लिए विषय खोजने में होती है, और हमेशा यह महसूस होता है कि वे परिपूर्ण होनी चाहिए, जिससे मुझे एक बनावटी, चमकदार और कृत्रिम रूप मिलता है। इसलिए मैं धीरे-धीरे हर दिन काव्य अभ्यास करने की आदत डालूँगा, इस भावना के साथ कि चाहे ये प्रकाशित हों या नहीं, किसी को क्या फर्क पड़ता है। यही मेरी समस्या है। अब मुझे यह स्पष्ट रूप से समझ आ रहा है: एक प्रतिभाशाली किशोर, जिसकी रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी थीं और जो 20 वर्ष की आयु में ही समाप्त हो गया, और एक संभावित

प्रतिभाशाली और परिपक्व वयस्क, जिसने लगभग 25 वर्ष की आयु में लिखना शुरू किया, के बीच की खाई को पाटना। पुराने भावुक गीतों से चिपके रहना लुभावना है: गद्य दिखाता है कि मैं कितना पीछे हूँ: मैंने 5 वर्षों से कोई कहानी प्रकाशित नहीं की है। गद्य को परिपक्वता तक पहुँचाना कविता जितना आसान नहीं है, जो अपनी संक्षिप्तता और शैली के साथ मेरे अभ्यास के कारण पूर्ण प्रतीत होती है। मुख्य समस्या है समृद्ध, वास्तविक विषयों को अपने लिए खोलना और यह भूल जाना कि मेरे और टेड के अलावा कोई और श्रोता भी है।

* * *

1953 की उस भयानक गर्मी और पतझड़ को छोड़कर, मैंने अपने जीवन में कभी ऐसे काले, जानलेवा दो सप्ताह नहीं बिताए। मैं इसके बारे में एक शब्द भी नहीं लिख सकती, हालाँकि मन ही मन में सब कुछ महसूस कर रही थी। गर्भावस्था का डर, जो दिन-ब-दिन और भी पक्का होता जा रहा था। मुझे याद है गर्भनिरोधक के प्रति मेरी बढ़ती लापरवाही, मानो तब ऐसा मेरे साथ हो ही नहीं सकता था: खट-खट, एक के बाद एक दरवाजे उस खौफ से बंद होते चले गए, जो अब मुझे पता है कि मुझे, शायद टेड को, हमारे लेखन को और हमारे अटूट साथ को भी खत्म कर देगा। चमकती हुई और आने वाली वास्तविकताएँ: स्मिथ में मेरी नौकरी, जिसकी मुझे सबसे ज़्यादा ज़रूरत है, ताकि मुझे वास्तविकता का एहसास हो, रोज़ाना सेवा करने का, विशेष रूप से, लोगों से मिलने-जुलने, उनके साथ काम करने और अभ्यास करने का; हमारा भविष्य, टेड बिना नौकरी के, मैं बिना नौकरी के, बिलों का अंबार जो हमें कर्ज में डुबो देगा, और सबसे बुरा, उस घुसपैठिए से नफरत करना, जबकि चार साल बाद, मान लीजिए, हम सबसे अच्छे माता- पिता बन सकते हैं। साथ ही, बीस साल के दुख और एक बच्चे के

उपेक्षित रहने का विचार भी मन में घर कर गया, क्योंकि अनजाने में, हमारी गलती से, इसने हमारे आध्यात्मिक और मानसिक अस्तित्व को जड़ से उखाड़ फेंका, पैसे कमाने के लिए सब कुछ कुर्बान करने की मजबूरी में। फिर हम बीमार होकर दिन-ब-दिन जीते रहे, सबसे लंबे समय तक दिन गिनते रहे: 35 दिन, 40 दिन, और फिर डॉक्टर के क्लिनिक में रोने-धोने के दौर, रविवार को खून की जाँच, मूसलाधार बारिश और गरज के बीच, बहती सड़कों पर साइकिल चलाते हुए, गड्ढों में घुटनों तक पानी में डूबे हुए, पूरी तरह भीगे हुए, बिजली की कड़क में झुके हुए। मैंने एक पुल पर अंतिम न्याय की कल्पना की: एक गड़गड़ाहट और बिजली की आखिरी चिता। लेकिन कुछ नहीं हुआ। सोमवार तक कुछ नहीं हुआ, जब खरीदारी की व्यस्त, भ्रामक सुबह के बाद, मैं टाइपराइटर पर बैठी और वह तीव्र पीड़ा शुरू हो गई, वह लाल धब्बा जिसका मैंने छह सप्ताह के उन सफेद, नीरस और अशुभ क्षणों में सपना देखा था और जिसकी कामना की थी। और मैंने उन सभी देवताओं या भाग्य के सामने कसम खाई कि जब तक बच्चा नहीं आ जाता, मैं कभी शिकायत या विलाप नहीं करूंगी: शारीरिक विकृतियों, बीमारियों, मृत्यु या प्रेम के खोने के अलावा, यह सबसे बुरा था।
और, ठीक एक दिन बाद, मुझे एक और बुरी खबर का सामना करना पड़ा: कल, मेरी कविता संग्रह को अस्वीकार कर दिया गया, माँ की लगभग दुर्भावनापूर्ण झूठी सूचना के बाद, और आधे साल तक उस किताब के प्रकाशित होने की उम्मीद और हाँ, उस पर भरोसा करने के बाद। यह ऐसा था जैसे किसी कैंसरग्रस्त प्रेमी का शव, जिसे आप मृत मान चुके थे, मुर्दाघर में फूलों की माला में लिपटा हुआ वापस मिला हो, मानो अतीत की याद में रखा गया हो।

* * *

9 अगस्त (जारी) यह वापस आ गया। और इस दुख के साथ कि मेरी आधी प्रकाशित कविताएँ अब स्वीकार्य नहीं रहीं, या दो साल में निश्चित रूप से नहीं रहेंगी, क्योंकि उनमें नीरस, स्त्री-सुलभ या तुच्छता आ गई थी। और मैं फिर से उस किताब से जुड़ गई, उसे एक बढ़े हुए बगीचे की तरह छाँट रही थी: कभी खरपतवार सुंदर हुआ करते थे, लेकिन अब नहीं। और अगर [एड्रीएन] रिच इतनी नीरस न होतीं, और डोनाल्ड हॉल इतने नीरस न होते, और उन्होंने सौ पन्नों की नीरस प्रकाशित कविताएँ न डाली होतीं, तो मुझे इतना बुरा न लगता। इससे स्मिथ में मेरे काम में मदद मिलती, मुझे अपने वयस्क काम में एक आधार मिलता, बजाय इसके कि मुझे पाँच साल के अंतराल के बाद आगे बढ़ना पड़े, और पिछले साल केवल 16 कविताएँ प्रकाशित हुईं। सबसे बुरा: मुझे खुद पर इतना तरस आता है कि मैं टेड के बारे में चिंतित हो जाती हूँ: टेड की सफलता, जिससे मुझे इस पतझड़ में अपनी नौकरी के साथ निपटना होगा, मुझे यह नौकरी पसंद है, और मैं चाहती हूँ कि उसे भी यह सफलता मिले, लेकिन मैं चाहती हूँ कि काश मैं उसके साथ यह सफलता पाकर हम दोनों को बेहतर महसूस करा पाती। मैं यही चाहती हूँ, अगर हम दोनों में से कोई भी सफल हो जाए: इसीलिए मैं उससे शादी कर सकी, यह जानते हुए कि वह मुझसे बेहतर कवि है और मुझे अपनी छोटी सी प्रतिभा को कभी दबाना नहीं पड़ेगा, बल्कि मैं उसे निखार सकती हूँ और उसका भरपूर उपयोग कर सकती हूँ, और फिर भी उसे आगे महसूस कर सकती हूँ। मुझे अपने भीतर एक ऐसी अवस्था के लिए प्रयास करना होगा जो संयमी हो: काम करने और प्रतीक्षा करने की पुरानी अवस्था। मेरा सबसे दुर्भाग्यपूर्ण अनुभव रहा है: 17 से 20 वर्ष की उम्र तक की उज्ज्वल और चमकदार जवानी और फिर ब्रेकअप और सन्नाटा छा जाना, जब मैं अपनी शुरुआती परिपक्वता के

अनुभवों को अपने टाइपराइटर पर उतारने के लिए संघर्ष कर रही हूँ।
कल: मुझे एक और सच्चाई का सामना करना पड़ा: मैं न केवल हद से ज़्यादा बिगड़ा हुआ हूँ, बल्कि मैंने बिल्कुल भी काम नहीं किया है। दसवें हिस्से जितना भी कठिन काम नहीं किया। यह बात मुझे अब समझ में आई: श्रीमती कैंटर द्वारा भेजे गए दो युवा लेखकों से हमारी मुलाक़ात के दौरान यह बात स्पष्ट हो गई: वे दोनों अपने उपन्यासों के पहले मसौदे पूरे कर चुके हैं, 350 पन्ने टाइप कर चुके हैं: अब, सिर्फ़ तकनीकी रूप से ही सही, यह बहुत ज़्यादा टाइपिंग है, लेखन और पुनर्लेखन की तो बात ही छोड़िए। उनके पास छह महीने थे, जबकि हमारे पास छह सप्ताह। तो क्या हुआ। मैंने तो छह सप्ताह का उपयोग ही नहीं किया। मैंने छह महीने से कोई कविता नहीं लिखी थी, इस लंबे अभ्यास से पहले जिसमें मैंने खुलकर बोलने और विषयों को विस्तृत करने का प्रयास किया। अक्टूबर के बाद से मैंने एक कहानी के अलावा कोई कहानी नहीं लिखी है, सिवाय एक कहानी के, "द ट्रबल-मेकिंग मदर", जो एक आकर्षक कहानी है, लेकिन मुझे अच्छी लगती है। इसे द सैटरडे ईव पोस्ट ने बिना कुछ कहे अस्वीकार कर दिया था। दूसरी कहानी एक माँ की सहायिका के बारे में है, जो मुझे बनावटी लगती है और जिसे दोबारा लिखने लायक नहीं समझती। यह कहानी भी एक हफ्ते में द लेडीज़ होम जर्नल से "लॉन्ड्रोमैट अफेयर" के साथ वापस आ जाएगी। तो मैंने क्या लिखा है: मैडमोजेल, हार्पर्स और द अटलांटिक के बारे में मेरा अंतरात्मा मुझे सता रहा है: वे मेरी लिखी कोई भी अच्छी रचना छाप देते। इसलिए मुझे बस काम करना है। मेविस गैलेंट ने द न्यू यॉर्कर में नियमित रूप से प्रकाशित होने के लिए दस साल तक हर रात काम के बाद लिखा, हालाँकि उन्होंने सब कुछ त्याग दिया था।

लेकिन, अपने अंतरात्मा को शांत करने के लिए, मुझे काम के दर्द को थोड़ा और महसूस करना होगा और यहाँ पाँच कहानियाँ, वहाँ पाँच या दस कविताएँ जमा करनी होंगी, इससे पहले कि मैं प्रकाशन की उम्मीद भी करूँ और फिर, इस पर भरोसा किए बिना: हर कहानी लिखूँ, प्रकाशन के लिए नहीं, बल्कि एक बेहतर लेखक बनने के लिए—और इस तरह, प्रकाशन के करीब पहुँचने के लिए। और हाँ; घबराओ मत। मैं केप की इस आलीशान विलासिता में रहना पसंद नहीं करूँगा, जहाँ समुद्र तट और सूरज हमेशा बुलाते रहते हैं, और मुझे धूप से दूर रहने पर अपराधबोध होता है… लेकिन उससे भी ज़्यादा अपराधबोध धूप में बाहर जाने पर होता है जब मैंने लिखने में दिन-रात मेहनत नहीं की होती। यही वह चीज़ है जिसकी मुझे इस भयानक स्थिति को खत्म करने के लिए ज़रूरत है: प्रतिभाशाली होने के बावजूद मेरे पास कोई ऐसा हालिया काम नहीं है जिस पर मुझे गर्व हो, या जिसे मैं दिखा सकूँ। अगली गर्मियों में, हैम्प [नॉर्थम्प्टन] में पसीना बहाना और पैसे बचाना और उपन्यास पर काम करना बेहतर होगा ताकि मैं एक साल के अनुदान के योग्य हो सकूँ, जैसे कि एक पद्य नाटक पर काम करने के लिए। अब जब मैंने यह बातचीत शुरू कर दी है, तो मुझे पद्य नाटकों में रुचि है। टीवी: उसे आज़माएँ। लेकिन ईमानदार रहें। अब बनावटी कथानकों वाली माँ की सहायक कहानियों का सिलसिला खत्म। कहानी पूरी तरह बनावटी नहीं थी, बल्कि उसमें छिपे अजूबों को हटाकर उसे जल्दी निपटाने के लिए चिकना-चुपड़ा रखा गया था। और टेड को मुझ पर गर्व होगा, और यही मैं चाहती हूँ। उसे दिखावटी सफलता की परवाह नहीं, बल्कि मेरी और मेरे लेखन की परवाह है। यही मुझे आगे बढ़ने में मदद करेगा।
बुधवार, 21 अगस्त, 1957। उमस भरा दिन। आसमान तेज़ सफ़ेद रोशनी से जगमगा रहा था। मैं इस सब के खत्म होने से पहले के छह दिनों

में उलझा हुआ था। रुक-रुक कर चल रहा था। हेनरी जेम्स की कहानियों से मुझे बेहद लगाव हो गया था: 'बीस्ट इन द जंगल' ने कहानी के प्रति मेरे प्रेम के कारण नौकरी के डर को भुला दिया था, मैं हमेशा इसे मन में, जैसे किसी कक्षा में प्रस्तुत कर रहा हूँ, वैसे ही प्रस्तुत करने की कोशिश करता था। पहला हफ़्ता सबसे मुश्किल होगा, लेकिन 1 सितंबर से मैं अपने पहले चार हफ़्तों की रूपरेखा तैयार करूँगा, उन्हें विस्तार से तैयार करूँगा और पुस्तकालय से फिर से परिचित हो जाऊँगा। बस। एक बार जब मैं इस नौकरी की सुखद वास्तविकता में डूब जाऊँगा, तो मेरा जीवन एक नए चरण में प्रवेश कर जाएगा: यह मुझे पता है। अनुभव, विभिन्न छात्र, विशिष्ट समस्याएँ। वास्तविकता और तथ्य के सुखद पहलू...
कल: रॉक हार्बर क्रीक के किनारे कीचड़ में फ़िडलर केकड़ों का विचित्र नज़ारा: कम ज्वार के समय एक कीचड़ का मैदान, चारों ओर सूखी, भंगुर दलदली घास की एक पतली पट्टी से घिरा हुआ, जो दूर तक पीले-हरे खारे दलदल में फैली हुई थी। बीच में नम कीचड़, हरे-काले फ़िडलर केकड़ों की सरसराहट और उनके कवच की सरसराहट से जीवंत था, जो मकड़ियों, लॉबस्टर्स और झींगुरों के बीच एक दुष्ट मिश्रण की तरह लग रहे थे, एक विशाल हल्के हरे पंजे के साथ और बगल में चलते हुए। हमारे आने की आहट सुनते ही, किनारे के पास के केकड़े ऊपर की ओर सरक कर काली कीचड़ भरी मिट्टी में बने छेदों में और घास की जड़ों में घुस गए, और सूखे तालाब के बीच में मौजूद गीले काले हिस्से में मौजूद केकड़े खुद को कीचड़ में छोटे-छोटे ढक्कनों के नीचे दबा लेते, जब तक कि किनारे की छोटी सी चट्टान से केवल पंजे ही बाहर न निकल आएं, और उनकी कोहनी और आंखें सूखी घास की जड़ों और सूखते हुए सीप के खोलों के बीच अनगिनत छेदों से बाहर झांकती हुई दिखाई देती थीं, जैसे कि झाड़ियों के बीच कुछ

क्रस्टेशियस कंद हों। एक छवि: विचित्र, किसी दूसरी दुनिया की, अपनी ही विचित्र आदतों वाली, कीचड़ से भरी, ढेलेदार, शांत केकड़ों से आबाद...
जब प्लाथ एक प्रतिष्ठित छात्रा के रूप में स्मिथ विश्वविद्यालय में संकाय सदस्य बनकर लौटीं, तो उन्हें वहाँ मिले ठंडे स्वागत से बहुत आश्चर्य हुआ। उन्हें अपनी शिक्षण क्षमताओं पर भी गहरा संदेह था, और उनका व्यस्त कार्यक्रम अक्सर उन्हें शारीरिक रूप से थका देता था।
28 अगस्त, 1957। —“उसकी पूर्णता”
6 सितंबर। पहली सुबह जल्दी उठना। साफ आसमान, हल्की पीली रोशनी, ठंड, एल्म के पत्तों के बीच। पिछली रात: एक अजीब से प्राचीन हरे- भरे पार्क में सैर - गहरे रंग के मुड़े हुए पत्थर, पैरों के नीचे बलूत के फल की चरमराहट, गिरी हुई हर टहनी गिलहरियों के लिए अपना आकार ले रही थी। अब: कॉफी का सपना, भले ही टेड ने कॉफी परकोलेटर का गलत इस्तेमाल किया, जिससे जहरीली कॉफी बन गई, दूध उबल कर बाहर गिर गया, परकोलेटर के निर्देश खो गए, डेस्क का इंतजार (डेस्क आती है, छोटी, बदसूरत; दरवाजे में फिट नहीं होती; आदमी दरवाजा उतारते हैं, फिर भी फिट नहीं होती; खुशी; यह इतनी बदसूरत थी; घर से बेल की पत्तियों वाली छोटी डेस्क लाऊंगी)। कहानी: एक महिला जिसका पति कवि है और प्रेम, जुनून के बारे में लिखता है - वह, घमंड और खुशी की चमक के बाद, पाती है कि वह उसके बारे में नहीं लिख रहा है (जैसा कि उसके दोस्त सोचते हैं) बल्कि सपनों की महिला प्रेरणा के बारे में लिख रहा है।

* * *

12 सितंबर। पिछली रात: अज्ञात शारीरिक दर्द का भयानक अनुभव, बढ़ता ही जा रहा था—पीठ का मसूड़ा सूजा हुआ, फफोलेदार, ढीला,

खून बह रहा था; फर्नीचर उठाते समय पेट की मांसपेशी फट गई थी: जैसे कोई चाकू घूम रहा हो, घूम रहा हो, धड़क रहा हो; फिर बचा हुआ गोमांस का स्टू, नमकीन सूअर के मांस के सफेद धब्बे, चर्बी, चिकनाई, और पैन में पिघली हुई बेकन की चर्बी को देखकर बुखार की हल्की-हल्की लहरें, और सूअर के मांस के सॉसेज से रिसती और टपकती चर्बी—दम घुटा हुआ डर: हर्निया, रक्तस्राव का खतरा, और ईथर का खौफ, पेट को चीरने वाले रेजर का डर, और जीवन का धड़कते हुए निकल जाना, लाल बाढ़ की तरह—मैं लिविंग रूम के फर्श पर खाकी रजाई पर घुटनों के बल बैठा था जहाँ हवा थी, स्पेन और जहरीले लाल स्पेनिश सॉसेज को याद कर रहा था; इंग्लिश चैनल पार करना और टूना सैंडविच और शराब और नाक में तीखी उल्टी, गले में जलन, और मेरा कुर्सियों के नीचे रेंगना; अटलांटिक महासागर पार करना और बिजली की रोशनी में छोटी सी झोपड़ी के फर्श पर घुटनों के बल बैठना, और उस लज़ीज़ खाने से कमरे में उल्टी आना, लॉबस्टर, पेकान और मार्टिनी—अब, बाथरूम में, फर्श पर घुटनों के बल बैठा, वसा के बारे में सोच रहा था, नमकीन सूअर के मांस और गाढ़े सूप में मौजूद वसायुक्त मज्जा के बारे में, और सूखी उल्टी कर रहा था: "नमकीन सूअर का मांस," मैंने कहा, और फिर वो आया, स्टू की पहली हल्की उल्टी, पानी में घुली हुई, फिर जकड़न, फिर उबकाई। टेड ने मेरा सिर, मेरा पेट, शौचालय के सफेद कटोरे के ऊपर पकड़ रखा था। फिर मैंने अपना चेहरा धोया, वसायुक्त गंध दूर हो गई, मैं सो सका, थका हुआ, ठंडा, सुबह के सूरज तक, पीला और तिरछा वेनेशियन ब्लाइंड्स से छनकर आता हुआ, और पत्तों के गिरने की आवाज़—
मंगलवार, 1 अक्टूबर।
एक राक्षस को पत्र:

मैं इतनी अच्छी हूँ कि मुझे परिपूर्ण होना चाहिए। या कुछ भी नहीं। इसके विपरीत, मैं कुछ हूँ: एक ऐसा इंसान जो थक जाता है, जिसे शर्म से लड़ना पड़ता है, और जिसे लोगों का आसानी से सामना करने में दूसरों से ज़्यादा परेशानी होती है। अगर मैं इस साल को पार कर लूं, अपने अंदर के डर को काबू में करते हुए, यह समझते हुए कि दिनभर के काम के बाद थकान होगी, और पेपर चेक करने के बाद भी थकान होगी, और यह स्वाभाविक थकान है, न कि कोई ऐसी चीज जिसके बारे में डर के मारे चिल्लाना चाहिए, तो मैं धीरे-धीरे जीवन के मैदान का सामना करने में सक्षम हो जाऊंगी, बजाय इसके कि दर्द महसूस होते ही उससे भाग जाऊं।
वह शैतान मुझे अपमानित करेगा: मुझे कॉलेज के अध्यक्ष, मेरे विभाग के अध्यक्ष, सबके सामने घुटनों पर गिरा देगा, और मैं रोते हुए कहूँगी: देखो मुझे, मैं कितनी दयनीय हूँ, मैं यह नहीं कर सकती। दूसरों से अपने डर के बारे में बात करने से वह और बढ़ जाता है। मैं शांत रहने का दिखावा करूँगी और अपने भीतर ही उससे लड़ूँगी, लेकिन उसे कभी भी सार्वजनिक रूप से प्रकट होने का सामाजिक सम्मान नहीं दूँगी, उससे भागकर उसके आगे हार नहीं मानूँगी। मैं सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक अपने कार्यालय में काम करूँगी जब तक कि मुझे कक्षा में बेहतर प्रदर्शन न दिखने लगे। किसी भी हालत में, मैं शाम को कुछ आरामदेह काम करूँगी, जैसे अलग तरह की किताबें पढ़ना, आदि। मैं इस नौकरी, इस काम से बाहर खुद को संभाल कर रखूँगी। वे मुझसे मेरी सर्वश्रेष्ठ क्षमता से अधिक की अपेक्षा नहीं कर सकते, और केवल मैं ही जानती हूँ कि मेरी सर्वश्रेष्ठ क्षमता की सीमा कहाँ है। मेरे पास एक विकल्प है: जीवन से भाग जाना और खुद को हमेशा के लिए बर्बाद कर लेना क्योंकि मैं बिना दर्द और असफलता के तुरंत परिपूर्ण नहीं हो

सकती, या जीवन का सामना अपनी शर्तों पर करना और "जो भी हो, उसका भरपूर लाभ उठाना।"
हर दिन मैं दृढ़ता से एक कदम आगे बढ़ाऊँगी या एक जगह पर कुछ समय बिताऊँगी। मुझे पढ़ना बहुत पसंद है। मुझे धीरे-धीरे सीखना होगा कि इसे सबसे अच्छे तरीके से कैसे प्रस्तुत किया जाए, कक्षा में होने वाली चर्चा को कैसे संभाला जाए: मुझे अपने भीतर के डरपोक जानवर की दबी हुई छवि को नकारना होगा, जो एक बनावटी पलायन की छवि है, और दिनों को क्रम से लगाना होगा। मेरे अंदर एक संघर्ष चल रहा है जिसे किसी नारे या एक रात के संकल्प से जीता नहीं जा सकता। मेरा नकारात्मकता का राक्षस मुझे दिन-प्रतिदिन लुभाएगा, और मैं उससे लड़ूँगी, क्योंकि वह मेरे मूल स्वरूप से अलग है, जिसे मैं बचाने के लिए लड़ रही हूँ: हर दिन में कुछ न कुछ खास होगा: चाहे वह गिलहरी के फुर्तीले शरीर को देखने का सच्चा आनंद हो, या मौसम और रंगों को गहराई से महसूस करना हो, या किसी चीज को पढ़ना और उस पर अलग नजरिए से सोचना हो: एक अच्छी व्याख्या या कक्षा में 5 मिनट किसी बुरे 45 मिनट को सुधारने के लिए। पल-पल ऊपर की ओर संघर्ष करना होगा। उस काले बादल से बाहर निकलना होगा जो पूर्णता और माप की अपनी मांग से मेरे पूरे अस्तित्व को नष्ट कर देगा, इस बात से नहीं कि मैं क्या हूँ, बल्कि इस बात से कि मैं क्या नहीं हूँ। मैं जैसी हूँ वैसी ही हूँ, मैंने लिखा है, जिया है और यात्रा की है: मैंने जो कुछ भी हासिल किया है, वह मेरे लिए मूल्यवान है, लेकिन मुझे और अधिक मूल्यवान बनने के लिए मेहनत करनी होगी। मैं कोरी कल्पनाओं से कुछ भी हासिल नहीं कर सकती। तो: एक भावहीन चेहरा। विडंबना और दोहरी दृष्टि की स्थिति। मेरा काम गंभीर और महत्वपूर्ण है, लेकिन मेरे जीवन और उसमें निहित पूर्ण क्षमता से बढ़कर कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं है: ईर्ष्या,

जलन, किसी और जैसा बनने की बेताब इच्छा, किसी ऐसे व्यक्ति जैसा जो पहले से ही शिक्षण में सफल हो, ये सब भोलापन है: श्री फिशर, अपने छात्रों के प्रति अथाह प्रेम के बावजूद, अपनी पत्नी और बच्चों द्वारा त्याग दिए गए हैं; मिस एफ., अपने अनुभव और ज्ञान के बावजूद, पूरी तरह से नीरस हैं। इन सभी लोगों में कोई न कोई कमी, कोई न कोई खामी है, और उनमें से एक होना, एक अलग ही रूप में दोषपूर्ण और खामी होना होगा। मैं अपनी खामी को स्वीकार करूँगा, आज जेम्स पर काम करूँगा, अगले सप्ताह हॉथोर्न पर, और धीरे-धीरे सहजता से जीवन को अपनाऊँगा, शुरू में दृढ़ निश्चय के साथ, लेकिन धीरे-धीरे अधिक से अधिक आनंद के साथ। मेरी पहली जीत इस नौकरी को स्वीकार करना था, दूसरी, अपने अंदर के डर के मना करने से पहले ही इसमें कूद पड़ना, तीसरी, नींद न आने और निराशा से भरी रात के बाद क्लास जाना, चौथी, कल रात टेड के साथ अपने अंदर के डर का सामना करना और उसे मुंहतोड़ जवाब देना। मैं अपनी योजना पर कड़ी मेहनत करूंगी, लेकिन साथ ही साथ एक समृद्ध घरेलू जीवन बनाने के लिए भी उतनी ही मेहनत करूंगी: फिर से लिखना शुरू करने के लिए, और नौकरी के अलावा अपने दिमाग को नए विचारों से भरने के लिए...
अब और हार मानकर, कराहते हुए, आहें भरते हुए नहीं: दर्द सहने की आदत पड़ जाती है। यह दर्द देता है। अपूर्ण होना दर्द देता है। खाने-पीने और घर चलाने के लिए काम करना भी दर्द देता है। तो क्या हुआ? आखिरकार, यही समय है। यह महीना मेरे लिए एक चौथाई सदी के उस दौर का अंत है, जो डर के साये में बीता: इस डर से कि मैं किसी अमूर्त पूर्णता से कम पड़ जाऊंगी: मैंने अक्सर संघर्ष किया है, लड़ाई लड़ी है और जीती है, पूर्णता नहीं, बल्कि खुद को स्वीकार करने की, कि मुझे अपने मानवीय, त्रुटिपूर्ण शर्तों पर जीने का अधिकार है।

रवैया ही सब कुछ है। रोने-धोने या बेहोश होने से मैं इस नौकरी से नहीं बच पाऊँगी, और अगर ऐसा हुआ तो मैं सोच भी नहीं सकती कि मेरे पूरे अस्तित्व पर क्या असर पड़ेगा। मैंने अपना पहला वेतन स्वीकार कर लिया है: मैंने काम पर हस्ताक्षर कर दिए हैं, और कोई भी बचकानी हरकत मुझे इससे नहीं हटा पाएगी, और न ही ऐसा होना चाहिए।
पुस्तकालय चलते हैं। जेम्स की किताब खत्म करते हैं, अपने विषय याद करते हैं, शायद गिलहरी की कहानी भी। खूब मज़ा आएगा। अगर मुझे मज़ा आएगा, तो पूरी कक्षा को मज़ा आएगा।
आज रात घर आ जाओ: लॉरेंस को पढ़ो, या हो सके तो लिखो। वो भी हो जाएगा।
राजा अमर रहें; राजा मर गए, राजा अमर रहें।
मंगलवार रात, 5 नवंबर। संक्षिप्त टिप्पणी: स्वयं के लिए। अब खुद को संभालने का समय है। मैं उदास, निराश, हताश और बीमार सी भटक रही हूँ। अब मुझे खुद को मजबूत बनाना है, खुद को हिम्मत देनी है, चाहे मैं कितनी भी असफल क्यों न हो जाऊँ। अगर मैं इस साल को किसी तरह पार कर लेती हूँ, चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो, यह मेरी अब तक की सबसे बड़ी जीत होगी। मेरी बिगड़ी हुई बच्ची वाली भावनाएँ मेरे पुराने शिक्षकों और नए छात्रों के सामने मेरी खराब शिक्षा और अज्ञानता के सार्वजनिक होने से पहले ही भागने को बेताब हैं। अगर मैं बेहोश हो जाऊँ, या लकवाग्रस्त हो जाऊँ, या श्री हिल से बड़बड़ाते हुए कहूँ कि मैं आगे नहीं बढ़ सकती, तो शायद मैं बच जाऊँगी: लेकिन उसके बाद खुद का सामना कैसे करूँगी, कैसे जीऊँगी? एक महिला के रूप में कैसे लिखूँगी या बुद्धिमान बनूँगी? यह इससे भी कहीं बुरा आघात होगा, हालाँकि भागना बहुत आसान और संभव लगता है। इस तरह, मैं एक सुस्त, गुस्से से भरी नाराजगी पाल सकती

हूँ और महसूस कर सकती हूँ कि मैं इसे झेल रही हूँ और जून में अपनी आजादी की हकदार हूँगी, क्योंकि मैंने अपने जीवन का एक साल कुर्बान कर दिया है। अभी 7 महीने और बाकी हैं।

सिल्विया प्लाथ अपनी मां और भाई के साथ , 1950

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], a [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], 1953

□□□ 1954 □□ □□□□□□□□□ □□□, □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□

स्मिथ कॉलेज में अंतिम वर्ष , 1955

कैम्ब्रिज में घर पर , सर्दियों 1956-57

[illegible] on [illegible] [illegible] [illegible], 1956

□□□□ 1959

□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□, 1960

□□□□□ □□ □□□□□□, □□□□, 1960

प्लैथ , फ्रीडा और निकोलस के साथ , मार्च 1962

[illegible] [illegible] on [illegible], [illegible] 1962

[illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on-[illegible] [illegible] on, [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] on on [illegible] [illegible] on [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on on [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on, on on on on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] on on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on on [illegible] on [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] on [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

पहला दिन। बुधवार और गुरुवार तैयारी के लिए हैं। आराम करना ज़रूरी है। यही सबसे ज़रूरी है। कुछ छोटे-छोटे लेक्चर पूरे कर लूँगी। क्लास को तैयार कर लूँगी।
सबसे ज़रूरी है इस तैयारी को अच्छे से संभालना। उन्हें लेखन शैली के बारे में सिखाना कैसे शुरू करें, यह समझना। पहले पाठ में, शोधपत्रों के स्वरूप, संगठन और पढ़कर सुनाने जैसे सामान्य व्याख्यान तैयार करें। परेशान न हों। शांत रहें: शुरुआत घर से करें। टेड के साथ भी मुझे शांत और प्रसन्न रहना सीखना होगा: उसे उसका समय देना होगा और स्वार्थी होकर उसे बर्बाद नहीं करना होगा। परिपक्वता यहीं से शुरू होती है, चाहे मैं कितनी भी बुरी क्यों न हूँ। मुझे व्याख्यान तैयार करने ही होंगे, चाहे वे कितने भी खराब क्यों न हों।
4 जनवरी, 1958। नया साल चार दिन बीत चुका है, और साथ ही हर दिन एक पन्ना लिखने का संकल्प भी, जिसमें मनोदशा, थकान, संतरे के छिलके जैसा रंग या एक हफ्ते की सफाई के बाद बाथटब के पानी का रंग जैसी चीजों का वर्णन करना था। सजा भी और राहत भी: चार पन्ने पूरे करने थे। हवा चलने लगी, साफ हो गई। अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर की काली पीली धारियों वाली घुटन छंट गई और नए साल की साफ हवा आ गई—इतनी ठंडी कि नंगे पैर, कान और गाल बर्फ की तरह ठंडे हो गए। फिर भी सूरज, अब स्टोररूम के दरवाजे के नए सफेद रंग पर पड़ रहा है, फर्श पर लगे भूरे-भद्दे रंग में प्रतिबिंबित हो रहा है, और पश्चिम की ओर वाली खिड़की से बैंगनी-जंग लगे गुलाबी लैवेंडर रंग के कालीन पर तिरछी किरणें डाल रहा है। बदलाव: घुटन भरे माहौल में पतली हवा, नीले नज़ारों के लिए कौन सी चीज़ खिड़कियां तोड़ती है? क्रिसमस के लिए एक लाल ट्विली शर्ट: चीनी लाल रंग की, काली रेखाओं वाले स्क्रॉल और प्राच्य हरे फर्न के साथ, जिसे हल्के

नीले रंग की दीवारों के सामने हर दिन पहनना था। टेड को पढ़ाने का उतना ही लंबा और उतना ही समय मिल रहा है जितनी हमें ज़रूरत है। यूरोप के लिए 1000 या 2000 डॉलर की बचत हो रही है। टेड के लेखन से मुझे परोक्ष रूप से खुशी मिलती है, जिससे मेरे लिए भी उम्मीदें जगती हैं: न्यू यॉर्कर पत्रिका में मेरी तीसरी कविता की स्वीकृति और जैक एंड जिल पत्रिका में एक लघु कहानी। 1958: वह वर्ष जब मैंने पढ़ाना छोड़कर लिखना शुरू किया। टेड का विश्वास: उम्मीद मत रखो: बस लिखो; अपनी आवाज़ सुनो, कुछ भी लिखो। इस बारे में डर: खामोशी। फिर भी: तो क्या हुआ? मेरे भीतर की दुनिया को आबाद करने और लोगों को गति देने में महीनों लगेंगे। इसके अलावा और क्या तरीका है सिवाय इस सुरक्षित, समयबद्ध, वेतनभोगी दुनिया से निकलकर अपने ही खालीपन में डूबने के। दूर के ग्रह घूम रहे हैं: मैं प्रसिद्धि, दिखावे, प्रकाशित उपन्यास के बहुत सपने देखता हूँ, लोगों के हावभाव, बोलने, बढ़ने और छपने के सपने नहीं। लेकिन बिना नौकरी, बिना पैसों की चिंता के, यह काला पर्दा तो उठना ही चाहिए। जीवन को हास्य से देखो: कहना आसान है: चीज़ें खुलती हैं: लोगों को जानो: क्षितिज विस्तृत होते हैं…
रात के दृश्य: आग और खांसी—दीवारों और तिरछी छतों पर वेनेशियन ब्लाइंड्स से बनी ज़ेबरा जैसी रोशनी की धारियाँ: फाल्कन यार्ड: शुद्ध केंद्रीय रेखा डायरी से ऊपर उठना—गीतमय विलाप, नहीं: बल्कि समृद्ध, हास्यपूर्ण व्यंग्य। पुनर्निर्माण… टकराने के लिए मेजें। कैमियो—स्पष्ट परिप्रेक्ष्य। परिपूर्ण लय और शब्दों में वापस लौटना जो अपने आप में गूंजते और बजते हैं: हरा, पतला, कराहना…
जिस क्षण मैं रुकती हूँ, सपनों की खुजली और सपनों को शांत करने वाली, बेतरतीब ढंग से पैसे गिनने की आदत को रोकती हूँ, उसी क्षण

चटकने और फैलने का आतंक: ये छवियां, ये सपने कहां से आते हैं? दुनिया - कारों की भीड़ और कैलेंडर के निर्देशों से बंद। क्रिसमस के आभूषण में लटकी एक दुनिया, सुनहरी चमक से जगमगाती हुई, मेरी पीतल की चायदानी के पेट में चांदी की तरह चमकती और फैली हुई एक दुनिया: एलिस का दरवाजा खोलो, काम करो और पसीना बहाओ ताकि द्वार खुल सकें और शब्द और दुनिया बोल सकें।
हर दिन एक अभ्यास, या विचारों का एक बेतरतीब प्रवाह? नफरतें मुझ पर भड़कती और वार करती हैं: प्रतिभा की छवि को विचलित करती हैं। मैं अपना चेहरा नहीं पहचानती। एक दिन मेंढक की तरह बदसूरत, दर्पण ने उसे वापस दिखा दिया: मोटी त्वचा, छलनी की तरह खुरदरी, मवाद के नरम धब्बे, गंदगी के बिंदु, अशुद्धता के कठोर कण - एक खुरदुरापन। दूध से भरा रेशम नहीं... तेल से नीले पड़े बाल, बालों और हरे या भूरे रंग की पपड़ी से ढकी नाक। आंखों का सफेद भाग पीला, कोने जमे हुए, कान मुलायम मोम के घेरे जैसे। हम रिसते हैं। धब्बेदार शरीर। फिर भी धुंधली या दूर की रोशनी में हम अपने बंधनों से मुक्त होकर खड़े होते हैं, जलते और बोलते हुए, देवताओं की तरह। जीवन की सतह मृत हो सकती है, मेरे लिए मृत थी। मेरी आवाज रुक गई, मेरी त्वचा ने हर इंच पर दूसरे 'मैं' का दबाव महसूस किया, झुर्रीदार, सिकुड़ी हुई, अपने आप में धंसी हुई। अब बाहर निकलना है। दुनिया की सतह और उसके मर्म को आत्मसात करना और उस पर महारत हासिल करना, और अपनी दुनिया बनाने के लिए संघर्ष करना। नैतिक रूप से बोलना, क्योंकि यह एक नैतिकता है। विकास की नैतिकता। फर्न की तरह, जो वर्तमान और यहाँ की ठोस ज़मीन पर अपना सिर पटककर अपना रास्ता बना रही है। चेहरों, शरीरों, कार्यों और नामों को समझना और उन्हें जीवंत करना। जितना हो सके उतना कठिन जीवन जीना, विस्तार करना और बेहतर लिखना। इस गर्मी में: कोई

नौकरी नहीं, या केवल अंशकालिक नौकरी। जर्मन का अध्ययन और फ्रेंच पढ़ना। अपनी किताबें पढ़ना: बर्कले, फ्रायड, समाजशास्त्र। सबसे बढ़कर: मिथक, लोककथाएँ, कविता और मानवविज्ञान। इतिहास भी। बोस्टन को जानना। बोस्टन डायरी: स्वाद, स्पर्श, गलियों के नाम। शाम छह बजे की घंटी, उस चर्च से बजती है जहाँ सभी अंत्येष्टि होती हैं। कमरे। हर कमरा एक दुनिया। ईश्वर बनना: मरने से पहले हर जीवन जीना: एक ऐसा सपना जो लोगों को पागल कर दे। लेकिन एक व्यक्ति, एक स्त्री बनना—जीना, दुख सहना, बच्चे पैदा करना और दूसरे जीवन सीखना और उन्हें मुद्रित दुनिया में बदलना जो दूसरे लोगों के मन में ग्रहों की तरह घूमती हैं।
…वापसी पर सब कुछ कैसे सिकुड़ जाता है—आप फिर कभी घर नहीं जा सकते: विन्थ्रोप सिकुड़ गया, फीका पड़ गया, उसकी घनी खाल झुर्रीदार हो गई: सपनों के वे इंद्रधनुषी विस्तार अपनी चमक खो बैठे, पानी से बाहर निकले सीपों की तरह, रंग फीका पड़ गया। क्या ऐसा है कि हमारे मन ने तब सड़कों और बच्चों को रंग दिया था और अब ऐसा नहीं करते? हमें उस शुरुआती मन में लौटने के लिए संघर्ष करना होगा—बौद्धिक रूप से हम उन कहानियों से खेलते हैं जिन्होंने कभी हमें चादरों के नीचे पसीना बहाने पर मजबूर कर दिया था—आश्चर्य का भावनात्मक, अनुभूतिपूर्ण सैलाब चला जाता है—हमें अपने मन में उसे फिर से बनाना होगा, भले ही हम जल्दी में केक बनाने के लिए बेकिंग पाउडर नाप रहे हों और अगले महीने के खर्चों का हिसाब लगा रहे हों। एक ईश्वर हर चीज़ में समाया हुआ है। अभ्यास: एक कुर्सी, एक टूथब्रश, एक कॉफी का जार बनो, अंदर से बाहर तक: महसूस करके जानो।

मंगलवार रात, 7 जनवरी। पूरे दिन, या दो दिन, तुम मेपल की मेज के नीचे लेटे रहे और आँसुओं की आवाज़, फ़ोन की घंटियों की आवाज़, पीतल के बर्तन से चाय के गिरने की आवाज़ सुनते रहे। क्यों न वहीं लेटे रहो जब तक तुम सड़ न जाओ या कचरे के साथ फेंक न दिए जाओ, किताब? एक उथले किनारे पर डूबा हुआ मलबा, समय और आँसू तुम्हारे चारों ओर चक्कर लगा रहे हैं, उमड़ते और फिसलते हुए ठंडे और नीले-दूर। वहीं लेटे रहो, धूल पकड़ते हुए, कालीन से हल्के गुलाबी और लैवेंडर रंग के खुरदुरे टुकड़े, खाली पन्ने, और मेरी आवाज़ शांत, दबी हुई। या हवा में बहते हुए, अन्य चीखों और शिकायतों के साथ, दूर के किसी धुंधले आकाश में। खैर: यहाँ कुछ स्याही बर्बाद करके, तुम्हारे पन्ने गिनने के बाद, तुम्हें मुझे वसंत तक, मेरी तथाकथित स्वतंत्रता तक पहुँचाना चाहिए— जिससे मैं जानता हूँ, लेकिन जिसके लिए मैं केवल सपना देख सकता हूँ। कहानियाँ और कविताएँ लिखना इतना दूर की बात नहीं है। लेकिन इसके बारे में काल्पनिक रूप से बात करना गंभीर है: एक चीज़। आज, बाहर, बर्फ गिर रही है। यहीं से मेरी शुरुआत हुई। खिड़की पर सूखे नल। लैंप से आती हरी रोशनी और उस रोशनी के शंकु में तिरछी उड़ती बर्फ के टुकड़े। कल के काम के लिए एक शुभ शुरुआत। पूरे हफ्ते धूप के बाद। और हमेशा की तरह मेरे लेक्चर, कल सुबह की तैयारी के लिए—पागलपन महसूस कर रहा हूँ और अभी भी पागल, चिड़चिड़ा, बीमार ततैया की तरह—खांसी अभी भी है और देर रात तक नींद नहीं आती, दोपहर तक सुस्ती और नशे जैसा महसूस होता है। फिर भी मैं काम करूँगा और इसे पूरा करूँगा। एक-एक दिन करके। कल चार्ल्स हिल के साथ एक संक्षिप्त और साहसी मुलाकात के बाद, नीले और टेढ़े-मेढ़े दांतों वाले, और उनके बर्फीले स्वभाव के बाद, मिस्टर फिशर का फोन आया और आज सुबह ऊँची सफेद अटारी जैसी

स्टडी में मेरी बेवकूफी भरी बहस हुई, जो किताबों से भरी हुई थी, और उनकी सात खंडों वाली उपन्यास काली थीसिस की किताबों में सफेद अक्षरों में लिखी हुई थी, जो मुझे पता है कि कितनी भयानक होगी। गपशप। इसका अनुमान लगाने की कोशिश में ही तबीयत खराब हो जाती है। ग्यारह बजे का कॉफी ब्रेक और गपशप। सभी अनुमान: संस्थान आपको गैर-जिम्मेदार समझेगा। दो साल के सम्मेलन। बकवास। मैं रुई में लिपटा हुआ हूँ। सब कुछ मेरी समझ से परे है— सारे दोहरे अर्थ। “मेरी वफ़ादारी बँटी हुई है,” मैं कहता हूँ। “मैं तुम्हारा दोस्त हूँ,” वह कहता है। “मेरे सिवा कोई तुम्हें यह नहीं बताएगा। वैसे, क्या मैं यह सब मिस्टर हिल को बता सकता हूँ?” “मैंने दो बार इस्तीफ़ा दिया,” उसने कहा। “एक बार तो इस अफवाह की वजह से कि मैं छात्राओं के साथ सो रहा था। प्रेसिडेंट नीलसन ने फ़ोन किया और पता चला कि मेरी क्लास में 10 छात्राएँ थीं: ‘अरे, फिशर, यह तो तुम्हारे लिए भी बहुत ज़्यादा है!’” अब वह अपनी तीसरी पत्नी स्मिथ के स्वार्थ के कारण उससे अलग होकर रह रहा है। उसका घमंड उसकी करीने से सजी सफ़ेद मूंछों की तरह ही साफ़ दिखता है। “यह सब तुम्हारे दिमाग़ का वहम है,” वह कहता है, “चिंता के बारे में। मुझे यह कई स्रोतों से है।” अगर वे इशारों, संकेतों, धमकियों, दोहरे अर्थों, गपशप में उलझे हैं, तो मैं इससे तंग आ चुका हूँ। उनका इरादा कुछ-कुछ अच्छा ही होता है। लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि मेरे भले के लिए क्या है, उन्हें सिर्फ़ अपने भले की समझ है। “तुम्हें क्या लिखना है?” गिबियन चाय पर पूछता है। क्या मुझे कुछ लिखने की ज़रूरत है? या मुझे समय और ऊर्जा चाहिए? मुझे लोगों से भरा दिमाग चाहिए। पहले खुद को गहराई से जानो, समय और स्थान के संदर्भ में मैंने जो कुछ भी अपने भीतर समेटा है, उसे जानो। एक समय था जब व्हिटस्टेड असली था, मेरा

हरा-भरा कमरा जिसकी पीली दीवारें थीं और खिड़की ओरियन पर्वत और हरे-भरे बगीचे और फूलों वाले पेड़ों की ओर खुलती थी, फिर पेरिस का धुंधला नीला कमरा जो किसी डेल्फिनियम के अंदर जैसा था, जिसमें एक दुबला-पतला घबराया हुआ लड़का, अंजीर और संतरे और गलियों में भिखारी रात के 2 बजे अपना सिर पटकते थे, फिर गैरेज के ऊपर नीस की बालकनी, मेरी शादी की रात रग्बी स्ट्रीट की धूल, ग्रीस और गाजर के छिलके, एल्टिसली एवेन्यू, उदास हॉल, कोटों का भार, कोयले की धूल। अब यह गुलाबी-गुलाब की दीवारों वाला कमरा। यह भी गुजर जाएगा, बेहतर दिनों के अंडे देते हुए। मेरे भीतर जीवन के ये बीज हैं।

* * *

रविवार रात, 12 जनवरी। अपमान की आग, बार-बार जलती हुई, सीने में जलन, मानो मैं एक दृश्य को बार-बार जी सकूँ, उसे फिर से कह सकूँ, उसे अपने सांचे में ढाल सकूँ और उसे बाहर फेंक सकूँ, धूल को मोती में बदल सकूँ। धूल को कला में। लड़खड़ाते हुए, बूट पहने, छोटी सी कॉफी शॉप की मेज तक, दबी हुई कुर्सियों के पास से, कोटों से ढके हुए। तीन लोगों का अंतरंग समूह, जेम्स जा रहा है, काले बालों वाला, आँखें सिकोड़े हुए, चुप, हवा अनकहे भावों से भरी हुई, "क्या तुम्हें यहाँ सच में इतनी नफरत है?" पीली ब्रिटिश जोन, हरे फ्रेम वाले चश्मे, हरे रंग से रंगे नाखून, घनी दाढ़ी, घनाकार देवदूतों के आकार के बड़े-बड़े लटकते सोने के एज़्टेक झुमके पहने, अर्थपूर्ण टिप्पणियाँ और अर्थपूर्ण निगाहें—सैली के बड़े, चपटे, पीले हाथ, हवा में उड़ती सफेद पेट वाली मछलियों की तरह, पीठ पर धब्बे, इशारे करते हुए, सुनहरे रंग से रंगे छोटे नाखून। श्रेष्ठ। तिरस्कारपूर्ण। बदतमीज़ गुलाबी सफेद मूंछों वाला फिशर: "तुम्हें शर्म आनी चाहिए," मूर्खतापूर्ण मुस्कान के

साथ, कॉफी कप पर जमी लाल लिपस्टिक के अर्धचंद्र की ओर इशारा करते हुए—"शैतान का निशान।" आम अनुभवों के सभी संदर्भ—"क्या यह तुम्हारा है?"—फ़ारसी भेड़ की खाल से बनी टोपी पहने मोनास, लाल, हरे और सुनहरे पैटर्न से छपे हल्के भूरे रंग के सुअर की खाल के थैले को पकड़े हुए। "नहीं, काश यह मेरा होता। क्या यह सूज़ी का है? क्या यह जूडी का है?" पार्टियाँ। डिनर। मछली जैसी आँखों वाली महिला। "यह सब तुम्हारे दिमाग में है," फिशर कहता है। "मुझे यह कई स्रोतों से पता चला है।" सभ्य समाज में एक महिला न तो मुक्का मारती है और न ही थूकती है। इसलिए मैं अपने काम की ओर मुड़ जाती हूँ। परीक्षा समिति द्वारा बिना कुछ कहे खारिज कर दिए जाने पर, सैली को घमंडी ढंग से मुझे सलाह देते हुए सुनकर कि मैं अपने छात्रों को प्रश्न न बताऊँ, मैं स्वाभाविक रूप से क्रोधित हूँ। द्वेष। नीचता। और क्या। मैं उन्हें अपने अंदर से कैसे निकाल रही हूँ। पित्त की तरह। एरॉन से मिलो और इसे बाहर निकालो। परीक्षा के बारे में मार्लीज़ से बात करो और अपनी बात कह दो। लड़कियाँ साथ खड़ी हैं। यहाँ तक कि वो मोटी, बदमिजाज, भावहीन चेहरे वाली लड़की भी, जिसने रैकून कोट पहना था, शुक्रवार को ढाई घंटे की अच्छी बातचीत के बाद सुधर गई। शनिवार को थकी हुई, नसें तनावग्रस्त। नींद नहीं आई। मैंने तुम्हें, किताब को नीचे फेंक दिया, मुक्के मारे। लात मारी, घूंसे मारे। हिंसा उबल रही थी। किसी की हत्या करने में खुशी, मानो बलि का बकरा। लेकिन काम करने की मजबूरी में शांत हो गई। काम मुक्ति दिलाता है।
14 जनवरी, मंगलवार… अब मुझे स्मिथ विश्वविद्यालय के सामाजिक जीवन की परवाह कम होती जा रही है। मैं अपना खुद का जीवन जीऊँगी: रविवार की चाय पार्टियाँ, बाद में मिशिगन विश्वविद्यालय के शिक्षकों और अपने काम के लिए रात्रिभोज। अगर गद्य बहुत बुरा

नहीं है, तो मैं कोशिश भी करूँगी। कविताएँ अब संभव नहीं: बहुत निराशाजनक हैं। अगर वे खराब हैं, तो खराब ही हैं। गद्य कभी पूरी तरह से निराशाजनक नहीं होता। मेरी कविता की पांडुलिपि 1000 डॉलर की प्रतियोगिता से बिना पुरस्कार के वापस आ गई। कौन जीता? मैं जानना चाहती हूँ। दूसरी हार। तीसरी बार सावधान रहना होगा। लेकिन मैंने अपना पूरा दिन टेड की नई कविताओं के पन्ने टाइप करके अपनी उदासी और गम को दूर कर लिया। जब तक मैं अपने दम पर जीना शुरू नहीं कर देती, तब तक मैं उन्हीं में डूबी रहूँगी। 1 जून से। क्या तब तक मेरे पास कोई विचार होंगे? मैं आधे साल से एक खालीपन में जी रही हूँ, एक साल से कुछ नहीं लिख रही। मुझे सुस्ती सता रही है। मैं फिर से कितनी तरस रही हूँ कि मैं फिर से रचनाशील हो जाऊँ। अपने दिमाग में दुनियाओं की कल्पना करूँ। क्या मैं अगले 150 दिनों तक लिखने का वादा करती रहूँगी, या हिम्मत जुटाकर अभी से लिखना शुरू कर दूँगी? कुछ गहरा, दिल को छू लेने वाला, दब गया है। आवाज़ जम गई है...
20 जनवरी, सोमवार। अजीब बात है, मेरा हाथ हर रात लिखते-लिखते रुक जाता था, मैं नींद में डूब जाती थी, किताब अधूरी ही रह जाती थी। आज दोपहर को उठी, मानो किसी नशे में चूर होकर, एक खोए हुए सप्ताहांत के बाद। गहरी जम्हाईं। थकान की गहराई में डूबी हुई, और अब: शब्दों का अंबार। मैं अपने दिमाग की सतह पर लिखती हुई आगे बढ़ती हूँ। अब गद्य। अपने उपन्यास के मूल अध्याय पर काम कर रही हूँ, उसे समेटकर एक कहानी का रूप देने की कोशिश कर रही हूँ। फाल्कन यार्ड में शुक्रवार की रात। एक लड़की, जो सपने की मूर्ति से बंधी है, सिंड्रेला अपने अग्नि-मंडल में, अपने अटूट अहंकार में लिपटी हुई, एक ऐसे आदमी से मिलती है जो एक चुंबन से उसकी मूर्ति तोड़ देता है, पुरुषों के लिए नींद को चुंबन से भी कमजोर

बना देता है, और उसके जीवन की लय को हमेशा के लिए बदल देता है। छोटे-मोटे किरदारों को शामिल करो, उन्हें पूरा करो। श्रीमती गिनी। मिस मिंचेल। हैमिश। साधु जैसा डेरिक। अमेरिकी बनाम ब्रिटिश। क्या मैं यह कर सकती हूँ? शायद एक साल में कर पाऊँ। शैली ही सब कुछ है। “मैं तुमसे प्यार करता हूँ” कहने के लिए मुझे अपनी भाषा का इस्तेमाल करना होगा…
अब अचानक कक्षाओं और शोध पत्रों से मुक्ति मिल गई है। आधा साल बीत चुका है और बसंत का मौसम आने वाला है, इसलिए मैं स्वार्थवश अपने लेखन की ओर मुड़ गई हूँ। शनिवार शाम के अखबारों की ढेर सारी कहानियाँ पढ़ते-पढ़ते मेरी आँखें दुखने लगीं। पिछले कुछ दिनों में मुझे अपने और उनके लेखन में अंतर का एहसास हुआ। मेरी दुनिया सपाट, पतले गत्ते जैसी है, जबकि उनकी दुनिया बच्चों, अजीबोगरीब बूढ़ी महिलाओं, विचित्र नौकरियों और नौकरी की खास शब्दावली से भरी है, न कि "आई लव यू" जैसे वाक्यों से खत्म होने वाली तयशुदा कहानियों से। जीना, गपशप करना, शब्दों में दुनिया गढ़ना। मैं यह कर सकती हूँ। अगर मैं काफी मेहनत करूँ तो...
मैं ईर्ष्यालु, ईर्ष्यालु और द्वेष से भरी हुई हूँ। इंग्लैंड और अमेरिका के नए कवियों में शामिल छह महिला कवियों को पढ़िए। नीरस, उबाऊ। मे स्वेंसन और एड्रिएन रिच को छोड़कर, मुझसे बेहतर या मुझसे ज़्यादा प्रकाशित कोई नहीं। मेरे अंदर एक शांत, न्यायपूर्ण द्वेष है, मानो मेरी कविताएँ उन महिलाओं की प्रतिष्ठा से कहीं बेहतर हों जिनसे उनकी प्रतिष्ठा बनी है। जून तक इंतज़ार कीजिए। जून? उससे बहुत पहले ही मेरी ज़बान लड़खड़ा जाएगी। किसी तरह, कविताएँ लिखने के लिए मुझे अपना सारा समय हमेशा के लिए चाहिए—न खाना बनाना है, न किताबें तैयार करनी हैं। मैं योजना बनाती हूँ, हिसाब लगाती हूँ: बीस कविताएँ अब

मेरा केंद्र हैं। तीस और कविताएँ एक बड़ी, अधिक स्वतंत्र, अधिक सशक्त आवाज़ में: मुख्य रूप से लय पर काम करना है, स्वतंत्रता के लिए, फिर भी गायन के लिए, बोलने की लज़ीज़ता जैसे रसीले चिकन में होती है। कोई नज़ाकत नहीं, कोई पुराने ज़माने की प्यारी-प्यारी चालें नहीं। एक साल में चालीस या पचास कविताओं की एक किताब के साथ उन्हें पूरा करना है—हर दस दिन में एक कविता। गद्य मुझे सहारा देता है। मैं इसे बिगाड़ सकती हूँ, इसे मसल सकती हूँ, इसे फिर से लिख सकती हूँ, इसे कभी भी उठा सकती हूँ—लय धीमी और परिवर्तनशील होती हैं, यह इतनी जल्दी खत्म नहीं होती। इसलिए मैं गर्मियों की कहानियों पर फिर से काम करने की कोशिश करूँगी: फाल्कन यार्ड वाला अध्याय। फिर भी यह किसी तरह एक उपन्यास जैसा अध्याय है: ढीला-ढाला, आलोचना रहित। इसमें बहुत सारे पात्र हैं। कुछ संघर्ष तो पैदा करना ही होगा। कम से कम मैं कुछ गौण पात्रों को जीवंत कर रही हूँ… मुझे अतिरंजित, रोमांटिक और महिमामयी बातों से बचना होगा। चमकीले विवरणों पर ध्यान देना होगा। मेरी आवाज़ कैसी है? ऊनी जैसी, अफसोस, लेकिन कठोर। कृपया, कठोर, बिना किसी नैतिक संदेश के, सिवाय इसके कि विकास अच्छा है। आस्था भी अच्छी है। मैं दिल से एक कट्टरपंथी भी हूँ। मुझे बैठक कक्ष की रोशनी में एक अजनबी के काले सिर का पिछला हिस्सा दिखाई देता है, सफेद कॉलर, काला स्वेटर, काली पतलून और जूते। वह आह भरता है, मेरी दृष्टि से ओझल हो जाता है, उसके पैर के नीचे फर्श का एक तख्ता चरमराता है। मैंने इसे चुना है और मैं हमेशा के लिए इससे विवाहित हूँ।
शायद दबी हुई प्रतिभा का इलाज समलैंगिक बनना है: समलैंगिक और एकांतप्रिय, फिर भी किसी तरह अपनी समलैंगिकता को बनाए रखते हुए दुनिया के बाकी लोगों को भोजन और शब्द परोसना। विचारों पर

चर्चा किए हुए कितना समय बीत गया? वे उग्र बहस करने वाले दोस्त कहाँ हैं? सत्रह साल की उम्र के, बीते दिनों के? अब मार्सिया अपनी हठधर्मी आत्मसंतुष्टि में डूबी हुई है... सुपरमार्केट, पुस्तकालयों और नौकरी की दिनचर्या में फंसी हुई। मनोरंजक? शायद... वह अपनी चुस्त-दुरुस्त बातों के नीचे कुछ नाराजगी छुपाती है। मैं इसे ईर्ष्या कहने के लिए बहुत भोली हूँ: "क्या आपके सभी छात्र आपको अद्भुत, घुमक्कड़ और लेखिका समझते हैं?" तीखा हमला। समय मिलने पर... मैं अगले साल उस पर हमला करूँगी और उसके अंदरूनी राज़ खोल दूँगी। मासूमियत मेरा मुखौटा है। उसकी नज़रों में, मैं हमेशा से एक महान स्वप्निल, भोली-भाली, असहाय, इसलिए चुनौतीहीन, गंवार लड़की थी। वह, इतनी व्यावहारिक, अब मुझसे कम ही कुशलता से बाज़ार और खाना बनाती है। मैं अपने पति की देखभाल करती हूँ, अपनी कक्षाएँ पढ़ाती हूँ और "लिखती" हूँ। उसे मेरे बारे में दो बातें याद हैं: मैं हमेशा किताबों को उनके कवर के रंग और बनावट के आधार पर चुनती थी और मैं बालों में कर्लर और एक पुराना एक्वा रंग का बाथरोब पहनती थी। मेरी रूममेट को, प्यार के साथ... मैं सोचती हूँ कि क्या मैं एक कमरे में बंद होकर एक साल तक लिख सकती हूँ। मैं घबरा जाती हूँ: कोई अनुभव नहीं! फिर भी मैं अपने दिमाग से क्या नहीं निकाल सकती? अस्पताल और पागल औरतें। शॉक ट्रीटमेंट और इंसुलिन की बेहोशी। टॉन्सिल और दांत निकलवाना। प्यार से छूना, पार्किंग, कौमार्य खोने का एक कुप्रबंधित अनुभव और दुर्घटना वार्ड, न्यूयॉर्क, पेरिस, नीस में कई असफल प्रेम प्रसंग। मैं भूली हुई बातों को गढ़ती हूँ। चेहरे और हिंसा। काटने और व्यंग्यात्मक शब्द। इन्हें आज़माएँ। 22 जनवरी, बुधवार। एकदम अंधा, भयंकर बीमार। क्रोध, ईर्ष्या और अपमान। नसों में द्वेष की हरी-हरी ज्वाला। संकाय बैठक के लिए,

हल्की-हल्की बारिश में भागते हुए, पूर्व छात्रा भवन के पास से, पार्किंग की कोई जगह नहीं, कॉलेज के पीछे से, बर्फीली जमी हुई पटरियों पर धक्के खाते हुए। अकेला, अकेले जा रहा हूँ, अजनबियों के बीच। महीने दर महीने, ठंडा व्यवहार। किसी ने मेरी आँखों से नज़रें नहीं मिलाईं। भीड़ भरे कमरे में, सितंबर से भी ज़्यादा अजनबी चेहरों के बीच, मैंने एक कप कॉफ़ी उठाई। अकेला। अकेलापन जल रहा था। एक शरारती, अभिमानी छात्रा जैसा महसूस हो रहा था। मार्लिस सफेद जम्पर और गहरे लाल रंग के पैटर्न वाले ब्लाउज में। प्यारी, कुशल: बस नहीं आ सकती। वेंडेल और मैं एक पाठ्यपुस्तक पर काम कर रहे हैं। क्या तुमने नहीं सुना? गहरी आँखें, वेंडेल की गोल-गोल मुस्कान पर टिकी। धुएँ से भरा कमरा और नारंगी रंग की काली रंगी कुर्सियाँ। सबसे आगे, एक कुछ-कुछ जानी- पहचानी सी महिला के बगल में बैठी थी, मेरे और राष्ट्रपति के बीच कोई नहीं था। मुझे आगे धकेल दिया गया। मैं सुनहरे पत्तों वाले पेड़ों, नारंगी-सुनहरे स्तंभों, हिरणों की कांस्य की नक्काशी, हिरणों और धनुष ताने एक धनुर्धर को टकटकी लगाए देखती रही। प्लस और माइनस, स्नातक ग्रेडों को लेकर असहनीय, समझ से परे बहस चल रही थी। पीछे के कपड़े पर सफेद-चांदी के पैरों वाली एक यूनानी महिला एक दासी के साथ बैठी थी, जो शरमाते हुए अपनी यूनानी पोशाक से अपना एक सफेद पैर बाहर निकाल रही थी। गुलाबी, नारंगी और सुनहरी रंग की युवतियाँ। और एक कहानी, एक घटिया भावुक उपन्यास का 30 पन्नों का अध्याय, जो बिल्कुल बेकार था, मेरे पीछे पड़ा था: इस पर मैं अपने घंटे लुटाती हूँ, यही मेरा बचाव है, उन लोगों के खिलाफ मेरी प्रतिभा का प्रमाण है जो किसी चमत्कारिक तरीके से एक साथ, समसामयिक, एकजुट रहना जानते हैं। क्या आपने नहीं सुना? श्री हिल के जुड़वां बच्चे हुए हैं। तो जीवन मेरे जाल से बाहर

घूमता रहता है। मैंने एलिसन को देखा, मिलने के बाद उसकी ओर दौड़ी - वह मुड़ी, काली, एक अजनबी। “एलिसन,” वेंडेल उसे अपने पास ले गया, “क्या तुम गाड़ी चलाकर आ रही हो?” वह जानती थी। वह जानता था। मैं बहरी, गूंगी हूँ। कीचड़ में, अंधी सी चली। बर्फ और हल्की-हल्की बारिश में। मेरे छात्र जीवन के सुनहरे दिनों के सारे चेहरे दूसरी तरफ मुड़ गए। क्या मैं अनजाने में उन्हें दावत दूँ? क्या उन्हें हमें मनोरंजन करने के लिए आमंत्रित करूँ? टेड सामने बैठा है: उसकी समस्याओं को अपनी समस्याएँ बना लो। सबके सामने चुप। वे गहरे निजी घाव। काम में मुक्ति। क्या होगा अगर मेरा काम घटिया हो? मैं किसी भी बेकार चीज़ को छापने के लिए बेताब हूँ। शब्द, शब्द, बांध में अंगूठे के छेद से बाढ़ को रोकने के लिए। यह मेरी गुप्त जगह है। क्या मैं पूरी ज़िंदगी बाहर नहीं निकली? भले ही दुश्मन नेक हों? हताश, तीव्र: मुझे समूह असंभव क्यों लगते हैं? क्या मैं उन्हें चाहती भी हूँ? क्या इसलिए कि मैं उनका मुकाबला नहीं कर सकती, ज़ुबान से झिझकती हूँ, दिमाग छोटा है, कि मैं अपने सपनों को भव्य उपन्यासों और कविताओं में बदल देती हूँ ताकि सबको चकित कर सकूँ? मुझे किशोरावस्था की चमक और परिपक्वता की रोशनी के बीच की खाई को पाटना होगा। ओह, शांत रहो। शांत रहो। मेरा एक सच्चा साथी है। मैं उसकी मदद जरूर करूंगी।
रविवार रात, 26 जनवरी। खाना पकाने और नींद के झोंकों से भरा एक खाली दिन। माँ नए सिरे से संवाद करने की धुन में डूबी हुई थीं: अचानक मुझे एहसास हुआ—जिन लोगों को हम उपकार करते हैं और जिन्हें हम हल्के में लेते हैं, उनकी ज़ुबानों में कितना जीवन छिपा और जकड़ा हुआ है। “एम को यह पागलपन कैसे हुआ?” हमने पूछा। भोजन कक्ष अँधेरा, बिना खिड़कियों वाला, अपनी परछाइयों को

सँभालता हुआ था, और मोम से ढकी हरी बोतलों में लगी दो असमान लाल मोमबत्तियाँ, एक लंबी और एक छोटी, मोमबत्तियों की तरह एक भद्दी पीली रोशनी बिखेर रही थीं, जो हल्की भूरी धूप से लड़ रही थीं। एम एक धार्मिक कट्टरपंथी बन गई और एक सुबह, पर्ल हार्बर हमले से कुछ समय पहले, भविष्यवाणी करने लगी: वह ईसा मसीह है, वह गांधी है, वह अपने पति को उसे छूने नहीं देगी। माँ पीठ के बल लेटी, आँखें बंद किए, बिना कुछ खाए-पिए, लगातार दस घंटे तक उसकी बातें सुनती रहीं। दो साल तक मानसिक अस्पताल में रहीं; [उनके पति]: “तितलियों के पीछे भागना बंद करो और घर आकर अपनी असली ज़िम्मेदारियाँ निभाओ।” बार-बार होने वाली परेशानियाँ, असफलताएँ। वह और उसका "आदर्श विवाह"—उसने कभी भी उसका विरोध नहीं किया या उसकी इच्छाओं के विरुद्ध नहीं गई। वह, अपनी ही नायिका, जीती-जागती संतता, शहादत, उपन्यास गाथाएँ। गलत आदमी से शादी, जो उससे इक्कीस साल बड़ा था। [कुछ अंश हटा दिया गया।]
ओह, वसंत की छुट्टियाँ! कभी-कभी, सुरक्षित महसूस करते हुए, मैं सोचती हूँ कि हम यहीं क्यों नहीं रुक जाते, टेड एमहर्स्ट या होलीओक में पढ़ाते (उसे दोनों जगहों से प्रस्ताव मिले हैं) और मैं यहाँ। हमारी संयुक्त आय 8 हज़ार डॉलर है। लेकिन जैसे ही मैं इस आरामदायक माहौल से जागती हूँ, मुझे अपनी मृत्यु दिखाई देती है, और उसकी और हमारी मृत्यु मीठी मुस्कान के साथ हम पर मुस्कुराती हुई: मुस्कुराता हुआ देवता। एक दूर की आत्मा, घमंडी और अभिमानी, एक महान नाटकीय डन या ड्रू-प्रकार के शिक्षक होने का सपना देखती होगी, प्रिय, बुद्धिमान, सफ़ेद बालों वाला और झुर्रियों वाला, झुर्रियों से भरा ज्ञान।
मैं सूखी खांसी और बंद नाक के बीच सांस ले रही हूँ। सुबह की कॉफी के नशे में उमंग और सर्वशक्तिमानता के भाव से भरी हुई, मुझे इस

गर्मी में अपना उपन्यास लिखना शुरू करना होगा और पूरे स्कूल वर्ष की तरह मेहनत करनी होगी—क्रिसमस तक कच्चा मसौदा तैयार करना होगा। और कविताएँ भी। कोई कारण नहीं है कि मैं अमेरिका में कम से कम सहज इसाबेला गार्डनर और यहाँ तक कि समलैंगिक और कल्पनाशील एलिजाबेथ बिशप को भी पीछे न छोड़ सकूँ। अगर मैं पूरी गर्मी मेहनत करती रहूँ तो...
मुझे एक बच्चा चाहिए। इस किताब वाले साल के बाद, अगले यूरोप वाले साल के बाद, एक बच्चे वाला साल? क्या चार साल बिना संतान के शादीशुदा ज़िंदगी हमारे लिए काफी है? हाँ, मुझे लगता है तब तक मुझमें हिम्मत आ जाएगी। मर्विन परिवार को बच्चे नहीं चाहिए— आज़ाद रहना चाहते हैं... मैं दो साल तक पागलों की तरह लिखूँगी— और तब भी लिख रही होऊँगी जब गेराल्ड या वॉरेन द्वितीय का जन्म होगा, उस बच्ची का क्या नाम रखूँ? हे सपने देखने वाली! मैंने ठंडी खिड़की के शीशे पर हाथ हिलाया, खटखटाया, और नीचे दिखाई देने वाले टेड को हाथ हिलाया, काले कोट में, काले बालों में, भूरे रंग के कूल्हों और कंधों में गिरती बर्फ की कुरकुरी छाप लिए। मैं उससे कितना प्यार करती हूँ!
जैक और जिल की अस्वीकृति आ गई। मुझे पहले से ही कैसे आभास हो जाता है। कोई कारण नहीं, बस मेरे सारे गुलाबी गमलों वाले सपने चकनाचूर हो गए। लेकिन इसके साथ ही ARTnews से एक अजीब सा पत्र आया जिसमें कला पर एक कविता लिखने को कहा गया था और 50-75 डॉलर के "मानदेय" की बात कही गई थी—क्या यह सांत्वना पुरस्कार था? मैं गौगुइन में डूब जाऊंगी—लाल लबादा पहने वैद्य, अजीब लोमड़ी के साथ लेटी नग्न लड़की, ब्रेटन किसान महिलाओं की कड़क सफेद पंखों वाली टोपियों से घिरे लाल अखाड़े में अपने देवदूत के साथ कुश्ती करते जैकब। ओह, क्या यह सप्ताह समाप्त होगा, मेरे एक दिन,

मेरे रविवार, आराम के लिए? क्या मैं किसी तरह जॉयस पर अपनी अधूरी कक्षाओं की तैयारी कर पाऊंगी? मैं टूटने की कगार पर हूं, लेकिन मैंने खुद को परखा और आजमाया है और बस इतना ही कहती हूं: अंत आएगा। लिखने के लिए एक साल—सब कुछ पढ़ने के लिए। क्या यह आएगा और हम इसे कर पाएंगे? मुझे जवाब दो, किताब। आज: मैटिस, गुलाबी कपड़ों और जीवंत गहरे गुलाबी छायाओं में डूबा हुआ, हल्का आड़ू रंग का पीतल और धुएँ के रंग के पीले नींबू, चटख नारंगी संतरे और हरे नींबू, काली छायाओं से सराबोर। और भीतरी भाग: प्राच्य पुष्पमय—हल्के लैवेंडर और पीली दीवारें, एक खिड़की जो रिवेरा नीले रंग की ओर खुलती है—एक चमकीले नीले रंग का दोहरे नाशपाती के आकार का वायलिन का डिब्बा—बाहर सूरज से आती रोशनी की लकीरें, पीली उंगलियां—घुमावदार पियानो पर बैठा लड़का, जिसके पास हरे रंग का मेट्रोनोम है जो बाहरी दुनिया का प्रतीक है। रंग: एक खिड़की के बाहर पीले, हरे और काले रंग की किरणों से जगमगाता ताड़ का पेड़, गहरे काले लाल रंग के पैटर्न वाले पर्दों से घिरा हुआ। गोल नीले पेड़ों, हैटपिन और एक लैंप की नीली दुनिया। बस। मैं पुस्तकालय में बैठकर गौगुइन को निहारूँगा, अपने दायरे को सीमित करूँगा और आराम करने की कोशिश करूँगा, फिर लिखूँगा। अंडे के छिलके के जमने से पहले सोने की मुर्गियों को मत गिनो।
गुप्त पाप: मैं ईर्ष्या करती हूँ, लोभ करती हूँ, वासना से भर जाती हूँ—खोई हुई सी भटकती हूँ, लाल एड़ी के जूते, लाल दस्ताने, काले लबादे पहने, दुकानों की खिड़कियों, कारों की खिड़कियों में अपनी छवि देखती हूँ, एक अजनबी, एक ऐसा अजनबी जिसका चेहरा मेरे जाने-पहचाने चेहरे से कहीं ज़्यादा तीक्ष्ण है। मुझे लगता है कि यह साल बीतने पर एक सपने जैसा लगेगा। मुझे अपने खोए हुए

स्मिथ-शिक्षक स्वरूप की बहुत याद आती है, शायद इसलिए कि यह नौकरी अब सुरक्षित है, छोटी है, और एक नए (मेरे लिए) शहर में एक नए जीवन का नया खतरा मंडरा रहा है, उस पेशे में जिसे धोखा नहीं दिया जा सकता या कामचलाऊ नौकरियों, इंतज़ारों, खाली पन्नों से काम नहीं चलाया जा सकता: ओह, बोलो। फिर क्या? अब क्या? जॉयस, जेम्स के हरे-भरे पेड़ों से गुज़ारा करना कितना आसान है, कितना घातक मुस्कान के साथ? सुबह भी, मैटिस की ओडालिस्कों की, पैटर्न वाले कपड़ों की, चमकीले, नीले फूलों वाले डफली की, नंगी त्वचा की, गोल स्तनों की, लाल लेस से बने निप्पल-गुलाब के गुच्छों की और बड़े ताड़ी के पत्तों के घुमावदार और जटिल घुमावों की...
… इस नौकरी से निपटने, खाना बनाने और घर संभालने से मुझमें जो शक्ति और परिपक्वता का नया एहसास पनप रहा है, उसने मुझे उस घबराए हुए, असुरक्षित, दुखी मूर्ख से बहुत दूर कर दिया है जो मैं पिछले सितंबर में था। चार महीनों में यह सब हो गया है। मैं काम करता हूँ। टेड काम करता है। हम अपने काम में माहिर हैं और हमें लगता है कि हम अच्छे शिक्षक हैं, जन्मजात शिक्षक हैं—यही है खतरा। जानबूझकर किए गए बहिष्कार का एहसास, जोन की अनदेखी निगाहें और सैली का सोची-समझी धृष्टता और संरक्षणवादी रवैया, इन सब से मैं मुक्त हो जाऊँगा: मुझे ये पसंद नहीं हैं, फिर भी मैं उन्हें इतना भी पसंद नहीं करता कि उनसे नाता तोड़ लूँ। ये बदलाव कब आया? मार्लीज़ के सामने फूट-फूट कर रोने से? अपमानों को सड़े हुए फल की तरह सहा। मैं इनसे और आगे बढ़ता हूँ। अगले चार महीने मुझे अपने काम में ही व्यस्त रहना होगा—नाटक और कविताएँ, [न्यूटन] आर्विंन के लिए पढ़ना, ARTnews के लिए एक कविता पर काम करना। काले कपड़े पहने मैं अकेला चलता हूँ, और क्या फर्क पड़ता है: कहानियों में व्यंग्यात्मक हरे नाखूनों वाली जोन और पीली,

झाइयों वाली सैली। मैं शब्दों, रंगों और भावनाओं से अपना एक नया जीवन बनाऊँगी। मर्विन परिवार का बोस्टन स्थित आलीशान अपार्टमेंट, जिसकी खिड़कियाँ किसी जहाज़ के डेक की तरह विशाल दृश्य प्रस्तुत करती हैं।
रविवार, 9 फ़रवरी। रात के नौ बजने वाले थे। बाहर: लड़कों की हँसी, कार के इंजन की तेज़ आवाज़। आज का दिन सुस्ती में बीता, धुंधली रोशनी में, कॉफ़ी और गर्म चाय से तरोताज़ा होकर: सफ़ाई की एक श्रृंखला—आइसबॉक्स, बेडरूम, डेस्क, बाथरूम, धीरे-धीरे व्यवस्थित करते हुए—जीवन की गंदगी को दूर रखने की कोशिश करते हुए—बाल, खुद, मोज़े और ब्लाउज़ धोते हुए, एक हफ़्ते की थकान मिटाते हुए, हॉथोर्न की कहानियों के पहले हफ़्ते की पढ़ाई पूरी करने के लिए पढ़ते हुए—पहली बार ओल्विन को एक लंबा पत्र लिखते हुए, रंगों, लय, शब्दों को एक साथ जुड़ते और गतिमान होते हुए महसूस करते हुए, जो मेरे कानों और आँखों को भाते हैं। मैं उसे पत्र लिखने के लिए स्वतंत्र क्यों हूँ? मेरी पहचान आकार ले रही है, खुद को गढ़ रही है—मुझे लगता है कि कहानियाँ अंकुरित हो रही हैं, न्यू यॉर्कर कहानियों का संग्रह पढ़ते हुए—हाँ, समय आने पर मैं भी उनमें शामिल हो जाऊँगी—कवयित्रियों, लेखिकाओं में। मुझे जून की शुरुआत में ग्रहों और राशिफल के बारे में सीखना होगा ताकि मैं सही नक्षत्र में रह सकूँ: अगर मैं नहीं सीख पाई तो मुझे पछतावा होगा: टैरो कार्ड भी। शायद मुझे अकेले रहना चाहिए, तनावमुक्त होकर, और खुद को रहस्यमय और दिव्य दृष्टि की अवस्था में ले जाना चाहिए। बोस्टन के बेकन हिल को जानना और उसकी संस्कृति को शब्दों में पिरोना। मैं कर सकती हूँ। करूँगी। अब मुझे वो करना है जो मुझे करना चाहिए, फिर वो करना है जो मैं चाहती हूँ: यह किताब भी सपनों, निर्देशों और आदेशों की एक

श्रृंखला बन जाती है। मुझे दूसरों के साथ ज़्यादा रहने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि और भी गहराई से, भरपूर एकांत में रहने की ज़रूरत है। दुनियाओं का पुनर्निर्माण... अब एक तस्वीर देखिए, कैलेंडर की व्यस्तताओं के बारे में ये सब बकवास बंद कीजिए: मैं यहाँ हूँ: काले मखमली पैंट पर रुई चिपकी है, घिसे-पिटे चप्पल, हल्के भूरे रंग की पृष्ठभूमि पर गहरे भूरे तेंदुए के धब्बों से सजे, सुनहरे किनारे वाले, फिर मेपल की लकड़ी की पॉलिश की हुई सुनहरी कॉफी टेबल, गुंबदनुमा ढक्कन और गुंबदनुमा शिखर वाले टिन के चीनी के कटोरे पर सफेद और चांदी की हल्की चमक, फिर धंसे हुए लाल छिलके वाले सेब, जिनका स्वाद बेस्वाद और कृत्रिम है। टेड उपन्यासों की सफेद अलमारी के पास बड़ी लाल कुर्सी पर बैठा है, उसके बाल सामने से बिखरे हुए, गहरे भूरे, लेकिन पहले से कहीं ज्यादा कसे हुए हैं, और उसका चेहरा जबड़े के पास से नीला-हरा हो रहा है: वो चेहरे जो वो बनाता है: उल्लू, राक्षस: "चेहरे बनाने वाला आदमी": एक प्रतीकात्मक कहानी? हम असल में कौन हैं? गहरे हरे रंग के स्वेटर में, जिसकी कलाई पर सफेद और हरी धारियाँ थीं, वह गुलाबी टैबलेट पर झुका हुआ था, काली पतलून, हल्के मोटे ऊन के भूरे मोज़े, काले, फटे हुए, रोशनी में चमकते जूते पहने हुए। वह सधे हुए मुद्रा में बैठा था, दाहिने हाथ में कलम लिए, ठुड्डी को टैबलेट पर टिकाए, कोहनी टैबलेट पर और उसके पीछे हल्के हरे रंग की रोशनी थी। चारों ओर, तीन-चौथाई वृत्त में, कागज़, हवाई डाक से आए पत्र, किताबें, फटे हुए गुलाबी टिशू के टुकड़े, टाइप की हुई कविताएँ बिखरी थीं। मैं ठंड से कांपते हुए, उसकी गर्माहट महसूस कर रही थी... मुझे अपनी ओर खींचकर गले लगाना: गले लगाओ, उसकी शर्ट अंदरूनी नेकबैंड पर निर्देश देती है, कपड़े धोने के बाद कड़क और बंधी हुई। द न्यू यॉर्कर के लिए एक और कहानी: मेरी सत्रहवीं

गर्मियों का वर्णन, मेरे मासिक धर्म के दौरान खून का फव्वारा और जुड़वाँ बच्चों द्वारा घर को रंगना, खेत का काम और इलो का चुंबन। एक संश्लेषण: किशोरावस्था। बस एक पल की बात: एम. ई. चेज़ से पूछो कि न्यू यॉर्कर की कहानियाँ कहाँ और किसे भेजनी हैं। मैं एक साल में ऐसा कर दूँगी।
मैं खुद को संभालती हूँ: अब हर रात, मुझे दिन भर के कचरे के ढेर में से एक स्वाद, एक स्पर्श, एक दृश्य को पकड़ लेना होता है। यह सारा जीवन कैसे गायब हो जाएगा, कैसे मिट जाएगा, अगर मैं इसे थामे न रखूँ, इससे चिपके न रहूँ, जब तक मुझे गौरव की कोई झलक याद है। किताबें और पाठ मुझे घेरे हुए हैं: घंटों का काम। मैं कौन हूँ? कॉलेज में एक नया छात्र जो इतिहास रट रहा है और जिसकी कोई पहचान नहीं, कोई आराम नहीं? मैं एक गाय की तरह सोचती रहूँगी: केवल उस जीवन के बारे में, और मेरे जन्म से पहले के जीवन के बारे में नहीं: खिड़कियाँ अपने फ्रेम में हिलती और आवाज़ करती हैं। मैं काँपती हूँ, ठंड से जम जाती हूँ, मेरे शरीर की साधारण गर्मी के खिलाफ कब्र जैसी ठंड: मैं इस विशाल, संपूर्ण व्यक्तित्व तक कैसे पहुँची, लंबी-लंबी भुजाओं और टांगों के साथ? दागदार, अपूर्ण त्वचा के साथ? मुझे किशोरावस्था की गहरी, विकृत यादें याद हैं और मेरी यादों के रंग एक स्पष्ट रूपरेखा के साथ लौट आते हैं: हाई स्कूल, जूनियर हाई, प्राथमिक विद्यालय, शिविर और बेट्सी के साथ फर्न की झोपड़ियाँ: जोहाना को लटकाना: मुझे याद करना होगा, याद करना होगा, लेखन इन्हीं चीजों से बनता है, जीवन की यादों से... "किसी चीज को पकड़ो और उसमें अपना सिर घुसा दो," टेड ने अभी कहा। मैं थकी हुई हूँ और बिस्तर पर गर्म दूध लेकर जाऊंगी और हॉथोर्न की और रचनाएँ पढूंगी। मेरे होंठ सूख रहे हैं, फटे हुए हैं, और मैं उन्हें बुरी तरह काट रही हूँ। मैंने सपना देखा कि मेरे

दाहिने हाथ की उंगलियों पर लंबे, चुभने वाले खरोंच हैं, लेकिन नीचे देखने पर मेरे हाथ सफेद और स्वस्थ थे और उन पर खून के लाल धब्बे बिल्कुल नहीं थे।
मंगलवार, 10 फ़रवरी… मैं कितना साफ़, शुद्ध और खुश महसूस कर रही हूँ। क्यों? कल रात के खाने ने सब कुछ साफ़ कर दिया—वेंडेल, एक अप्रत्याशित साथी और अद्भुत गपशप करने वाला, जो इतनी गहराई से बातें कर रहा था, और पॉल और सुनहरे बालों वाली प्यारी क्लैरिसा, जिसका लाल मुँह पंखुड़ी वाले फूल या मांसल समुद्री एनीमोन की तरह खुलता और मुड़ता था, और पॉल, हमेशा की तरह सजे-धजे, लेकिन उतने भद्दे नहीं, उसकी नीली आँखें लालिमा से भरी हुई, उसके सुनहरे बाल रूखे और रोसेटी जैसे, देवदूत जैसे, घुंघराले, उसकी हल्की जैकेट और हल्के पीले रंग का स्वेटर उसके सुनहरे और भड़कीले सिर को और भी आकर्षक बना रहे थे। क्या मैंने बताया कि मैंने उसे पिछले हफ्ते गिरती बर्फ में सीली की सीढ़ियों से नीचे भागते हुए देखा था, उसने चमकीले एब्सिन्थे-हरे रंग का सूट पहना हुआ था जिससे उसकी आँखें बर्फ से भरे हुए उथल-पुथल वाले सर्दियों के समुद्र की तरह साफ़, अलौकिक और थोड़ी अप्रिय अम्लीय हरी लग रही थीं? हमने बातें कीं, और मुझे अपने मेहमानों के आने से पहले फिर कभी शराब नहीं पीनी चाहिए—मैंने धीरे-धीरे पीना शुरू किया, लेकिन बाद में तबीयत खराब हो गई। वे आधी रात तक रुके रहे और वेंडेल ने हमें विभाग के गुप्त रहस्यों से अवगत कराया...
मंगलवार दोपहर… आज अंधेरे कला व्याख्यान कक्ष में मुझे अपनी कविताओं की पुस्तक के शीर्षक का आभास हुआ, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है। अचानक, अत्यंत स्पष्टता से, मुझे यह विचार आया कि 'मिट्टी का सिर' ही सही शीर्षक है, एकमात्र सही शीर्षक। यह मेरी

कविता "द लेडी एंड द अर्थनवेयर हेड" के शीर्षक और विषय से स्वाभाविक रूप से लिया गया है, और मेरे लिए एक पवित्र वस्तु की सम्मोहक रहस्यमय आभा धारण कर लेता है, पहचान का एक भयानक और पवित्र प्रतीक जो दूर-दूर तक फैले शब्दों को चुंबक की तरह अपनी ओर खींच लेता है, जो मिट्टी, कीचड़ और पदार्थ से बनी मेरी अपनी विचित्र और विचित्र दुनिया को जोड़ते और मिलाते हैं; सिर अपनी कविताओं और भविष्यवाणियों को आकार देता है, जैसे-जैसे समय के साथ मिट्टी का शरीर घिसता है, संचित ज्ञान से सिर भारी हो जाता है। साथ ही, मैं अपने विलक्षण शब्द-भेदभाव की दृष्टि से पाता हूँ कि प्रारंभिक अक्षर T-E-H बनते हैं, जिसका अर्थ है "एडवर्ड ह्यूजेस को", या टेड, जो निश्चित रूप से मेरा समर्पण है। इस तीव्र उत्साह से भरे वातावरण में, मैं एक रचनात्मक वसंत का सपना देखता हूँ। इसलिए मैं डॉ. बी., डोरिस क्रूक, खुद, टेड और अपनी कला के योग्य जीवन जीऊँगी और रचना करूँगी। मेरी कला शब्दों का सृजन और संसार का निर्माण है। इस पुस्तक का शीर्षक मुझे ऐसी दृढ़ता प्रदान करता है (शायद इन्हीं पन्नों पर मेरा सपना टूट जाए, या फिर वास्तविक दुनिया में उसकी स्वीकृति मिल जाए)। खैर, मुझे मिट्टी का बना हुआ सिर दिखाई देता है, खुरदरा, बेढंगा, शक्तिशाली और तेजस्वी, गहरे नारंगी-लाल टेराकोटा रंग का, ऊर्जा से भरपूर और उसके बाल घने, बिजली जैसे। खुरदरा टेराकोटा रंग, नुकीले काले और सफेद डिज़ाइनों से अंकित, जो पृथ्वी और उसे आकार देने वाले शब्दों का प्रतीक हैं। किसी तरह यह नया शीर्षक मुझे "सर्कस इन थ्री रिंग्स" और "टू लवर्स एंड अ बीचकॉम्बर" की पुरानी, क्रिस्टल जैसी भंगुर और चीनी जैसी कोमल आवाज़ से मुक्ति दिलाता है, जो जीवन के तीन चक्रों - जन्म, प्रेम और मृत्यु, और प्रेम और दर्शन, इंद्रियों और आत्माओं - के लिए दो

विस्तृत आध्यात्मिक अवधारणाएँ हैं। अब भगवान से प्रार्थना है कि मैं इस तूफानी मौसम से बच जाऊं और जून में अपनी असली पहचान पाऊं: साढ़े तीन महीने, साल कैसे बीत जाता है। इस हफ्ते और थीसिस को किसी तरह पूरा कर लूं। मुझे महान रचनाएं महसूस हो रही हैं जो मुझसे बोल सकती हैं। क्या मैं सिर्फ एक स्वप्नद्रष्टा हूं? मुझे दुनिया को गति देने के लिए वाणी की शुरुआती लय और ताल महसूस हो रही है। प्रकाशन से ध्यान हटाकर बस वो कहानियां लिखूं जो लिखी जानी चाहिए। हम मर्विन के फ्लैट को अस्वीकार करते हैं: [अस्पष्ट।] नहीं, धन्यवाद। हम शायद जून में यहीं रुकेंगे और ऊपरी मंजिल, रोशनी और नज़ारे, शांति और बेहतर होगा कि सुसज्जित फ्लैट के लिए अड़े रहेंगे। नोट्स। [बिल] वैन वोरिस के बारे में:

k

पीला, मुंह घोंघे जैसा, फिसलने के लिए फैला हुआ—एक ऐसा आदमी जो हमेशा अपने चेहरे पर भाव को कुछ ज़्यादा देर तक बनाए रखता है। मेरी कविताएं घटकर मात्र बीस रह गई हैं, यहां तक कि वे भी जिनमें विचित्र पुरातन शैली का प्रयोग किया गया है। मैं उनसे, कविताओं से कितना दूर महसूस करता हूं। ओह, फिर से अपनी आवाज़ में आ जाऊं, यह किताब एक विलाप करती दीवार है। मेरे मन में कौन से विचार घूमते रहते हैं, भले ही वे बहुत कम हों? डौल्डे: मिट्टी का बना सिर (श्रीमती वैन डेर पोएल के स्क्रीन पर अफ्रीकी मुखौटों और गुड़िया के मुखौटों से उभरा हुआ, जिनकी खाली आँखें फॉस्फोरस के गोल घेरों से घिरी हैं, और फिर कीड़ों के सिर और छोटे-छोटे चिमटे जैसे मुंह) - कैसे सभी फोटोग्राफ चित्र हमारी आत्माओं को पकड़ लेते हैं - एक अतीत की दुनिया का हिस्सा, हमारी अपनी डूबी हुई दुनिया की हवा और साज-सज्जा की एक खिड़की, और इस तरह दर्पण की ओर
- जुड़वां, प्रेरणा।

गुरुवार की सुबह, 20 फ़रवरी… मैं अपना सारा समय चाहती हूँ, एक साल का समय, चार साल की उम्र के बाद पहला साल, अकेले काम करने और पढ़ने के लिए। और स्मिथ से दूर। अपने अतीत से दूर, इस कांच की दीवारों वाले, लड़कियों से भरे और कॉलेज वाले शहर से दूर। गुमनामी। बोस्टन। यहाँ देखने लायक सिर्फ़ वे बीस लोग हैं जो फैकल्टी में हैं और जिन्हें मैं एक और साल नहीं देखना चाहती। क्या मैं एक शब्द भी लिखूँगी? हाँ। जब तक मैं यहाँ दोबारा लिखूँगी, यह भयानक दिन बीत चुका होगा, मैं अपने स्वप्निल नशे की हालत से बाहर निकल चुकी होंगी और तीन कक्षाएँ ले चुकी होंगी, जो गड़बड़ और अनिश्चित थीं। लेकिन अगले तीन हफ़्तों के लिए, मैं एक हफ़्ते पहले से ही पूरी तैयारी करूँगी, चाहे यह मेरा आखिरी काम ही क्यों न हो। ओह, संकल्प! तीन लाल सेब, पीले धब्बेदार, अंगूठे के निशान वाले भूरे, मेरा मज़ाक उड़ा रहे हैं। मैं खुद दुखद अनुभवों का पात्र हूँ। मैं ओडिपस के रहस्यों पर पर्याप्त चिंतन नहीं करता—मैं थका हुआ, सर्वोत्तम निर्णय लेकर, अपनी आलस्य, ईर्ष्या और कमजोरी से अपना ही विनाश कर रहा हूँ। देवता क्या चाहते हैं? मुझे कपड़े पहनकर उठना होगा और अपने शरीर को बाहर भेजना होगा…
जीवन का एक दिन—यह नीरसता और उदासी मुझे अपने आप से अलग, बिखरा हुआ, एक परछाई जैसा महसूस कराती है, फिर भी जब मैं अपने द्वारा सिखाई गई शिक्षा और भविष्य में दी जाने वाली शिक्षा के बारे में सोचती हूँ, तो उपाधियों में आज भी एक चमक और उत्साह झलकता है, न कि आज की नीरस और थका देने वाली दिनचर्या। मुझे जीवन का वह दृष्टिकोण वापस मिल गया है, चाहे वह कुछ भी हो, जो लोगों को अपना जीवन जीने और पागल न होने में सक्षम बनाता है। मेरी शादी एक ऐसे व्यक्ति से हुई है जिनसे मैं चमत्कारिक रूप से अपने जीवन से भी

अधिक प्रेम करती हूँ और मेरे पास एक बेहतरीन नौकरी और पेशा है (इस एक वर्ष के लिए), इसलिए बचपन और किशोरावस्था का खोल टूट गया है—मेरे पास विश्वविद्यालय की दो डिग्रियाँ हैं और अब मैं अपने पेशे की ओर मुड़ूँगी और एक वर्ष निरंतर प्रशिक्षण और अपने बच्चों के लिए समर्पित करूँगी। कभी-कभी प्रसव पीड़ा और भय की आशंका से मैं काँप उठती हूँ, लेकिन यह आएगा और मैं इसे सह लूँगी। शनिवार रात, 22 फ़रवरी… एक बिखरा हुआ नीरस दिन—क्या यही जीवन का सार है? क्या हम हमेशा वर्तमान में ही उलझे रहते हैं, अतीत पर सुनहरे धुंध की तरह छाए रहने के लिए अभिशप्त (जैसे कि मेरी वो तस्वीरें, पेरिस में प्लेस डू टर्ट्रे में वो अप्रैल का दिन, टोनी के साथ धूप में वाइन और वील का आनंद, जब मैं निस्संदेह वेनिस और रोम की भयावहता और कैम्ब्रिज की मेरी सबसे खूबसूरत वसंत ऋतु की बहार और प्रेम की कल्पना से पहले सबसे दुखी थी) या फिर अनिश्चित भविष्य की ओर बढ़ते हैं, जहाँ उपन्यासों, कविताओं की किताबों और टेड के साथ रोम जाने के सपने धुंधलेपन से बुने जाते हैं। [कुछ अंश हटा दिया गया।]

* * *

रविवार रात, 23 फरवरी। यह शायद 26 वीं बार है जब मैंने 23 फरवरी को इस तरह का अनुभव किया है: एक चौथाई सदी से भी अधिक फरवरी के महीने, और काश मैं उन सभी यादों को सहेज कर अपने वयस्क बनने के घुमावदार सफर को देख पाता—या यह पतन है? मुझे लगता है कि मैंने इतना जी लिया है कि मेरा जीवन चिंतन में, लोगों के साथ मुलाकातों और फिर से मिलने के अनुभवों को याद करने में ही बीत जाएगा—पागल और समझदार, मूर्ख और प्रतिभाशाली, सुंदर और विचित्र, शिशु और प्राचीन, ठंडे और गर्म, व्यावहारिक और स्वप्निल, मृत और जीवित। मेरे दिनों और मुखौटों का घर इतना

समृद्ध है कि मैं वर्षों तक उन मोती जैसी आंखों वाले, सींग जैसे, पपड़ीदार और समुद्री दाढ़ी वाले राक्षसों को खोजता रहूँ, जो मेरी कल्पना के सरगासो में बहुत लंबे समय से डूबे हुए हैं। मैं अपने अतीत को ऐसे थामे बैठी हूँ मानो वही मेरा जीवन हो: मैं उसे अपना भविष्य का काम बनाऊँगी: लकड़ी पर बनी बंदर की हर साधारण सी नक्काशी, मेरी दादी की सीढ़ियों की खिड़की पर लगा नारंगी और बैंगनी रंग का हर नुकीला शीशा, वॉरेन और मुझे चीन जाते समय खुदाई के दौरान मिली हर सफेद षट्भुजाकार बाथरूम की टाइल, सब कुछ दीप्तिमान, चुंबकीय, अर्थ से भर जाता है और एक अजीब से महत्व से चमक उठता है: इस पहेली को सुलझाओ: हर गुड़िया का जूता एक रहस्योद्घाटन क्यों है? हर इच्छा-पेटी का सपना एक घोषणा क्यों है? क्योंकि ये मेरे खोए हुए स्वरूप के दबे हुए अवशेष हैं जिन्हें मुझे शब्दों के माध्यम से भविष्य के ताने-बाने में पिरोना है। आज, सुबह कॉफी से लेकर शाम छह बजे चाय के समय तक, मैं लेडी चैटरलीज़ लवर पढ़ती हूँ, एक ऐसी महिला की खुशी से जो अपने ही रखवाले के साथ जी रही हो, और वीमेन इन लव और संस एंड लवर्स भी पढ़ती हूँ। प्यार, प्यार: मुझे ऐसा क्यों लगता है कि मैं लॉरेंस को जानती और प्यार करती। कितनी ही महिलाओं को ऐसा महसूस होता होगा और वे गलत होती होंगी! मैंने 'द रेनबो' खोली, जिसे मैंने पहले कभी नहीं पढ़ा था, और उर्सुला और स्क्रेबेन्स्की के अंतिम प्रसंग में खो गई। उनके लंदन होटल, पेरिस यात्रा, और कॉलेज में पढ़ाई के दौरान नदी किनारे उनके प्रेम प्रसंगों के बारे में पढ़ते हुए मेरी सांसें थम सी गईं। यही तो मेरे जीवन की कहानी है — मेरा जीवन, अलग है, लेकिन उतना ही शानदार और भव्य—और मेरी कहानी का प्रवाह मुझे इससे आगे ले जाएगा, अपने तरीके से—क्या यह अहंकार है? मुझे रहस्यमय रूप से यह एहसास हुआ कि अगर मैं

वूल्फ और लॉरेंस को पढ़ूँ (इन दोनों को, क्यों? इनकी दृष्टि, इतनी अलग होते हुए भी, मेरी दृष्टि से कितनी मिलती-जुलती है) तो मुझे एक महान रचना लिखने की प्रेरणा मिलेगी: जीवन के सार और बनावट से भरपूर, जीवंत रचना: यही मेरी पुकार है, यही मेरा काम है। इससे मेरे अस्तित्व को एक नाम, एक अर्थ मिलता है—“क्षण को स्थायी बनाना”: मैं, अपने क्षेत्र में, डॉ. ब्यूशर और डोरिस क्रूक के साथ उनके क्षेत्र में अपना स्थान ग्रहण करती हूँ—न मनोवैज्ञानिक, न पुजारिन, न दार्शनिक—शिक्षिका, बल्कि अपने शब्दों के संसार में दोनों समृद्ध व्यवसायों का मिश्रण। इन दोनों को समर्पित एक पुस्तक। मूर्ख। स्वप्नद्रष्टा। जब मेरा पहला उपन्यास लिखा और स्वीकार किया जाएगा (एक साल बाद? या उससे भी अधिक?), तब मैं स्वयं को ऊपर लिखे इस कथन का आनंद लेने दूँगी: “मैं झूठी नहीं हूँ।” मैंने लॉरेंस के शोध प्रबंध की सावधानीपूर्वक लिखित आलोचना के दो पृष्ठ लिखे: मुझे लगता है कि मैं सही हूँ, लेकिन हमेशा की तरह आश्चर्य होता है: क्या वे इसे समझेंगे? क्या वे तिरस्कारपूर्वक मुस्कुराकर मुझे गलत ठहरा देंगे? नहीं: मैंने अपना पक्ष स्पष्ट रूप से रखा है और मुझे लगता है कि मैंने एक अच्छा तर्क प्रस्तुत किया है। उबलती चाय के प्याले: यह मुझे कितना सुकून देती है। हम लगभग सात बजे सुखद हल्की-ठंडी रात में पुस्तकालय की ओर निकले: परिसर बर्फ़-नीला, असंख्य खिड़कियों से रोशन, सुनसान। साफ़-सुथरा, शुद्ध, ताज़ी ठंड से गालों पर हल्की चुभन लिए, हम वनस्पति उद्यानों के चरमराते तख्तों वाले रास्तों पर चले और जब टेड अपनी थीसिस और किताब प्रस्तुत कर रहा था, मैं लॉरेंस हाउस, छात्र भवन और पैराडाइज़ पॉन्ड से कॉलेज हॉल तक जाने वाली सड़क के बीच बने त्रिकोण के चारों ओर चार चक्कर लगाता रहा, किसी से नहीं मिला, मन

ही मन खुश और संयमित, अपने अतीत के सभी हरे, सुनहरे भूरे, उदास, भीगे और प्रेमहीन, आनंदित और प्रेममय स्वरूपों को अपने साथ रहने और आनंद मनाने के लिए आमंत्रित करता रहा…
सोमवार रात, 24 फरवरी। थकावट, काम अधूरा, सप्ताह की शुरुआत ही हुई: ऐसे क्षणिक पतन, गर्मी का किनारा कितनी जल्दी थम जाता है। फिर भी आज का दिन (सेंट बोटॉल्फ की पार्टी में हमारी मुलाकात की दूसरी वर्षगांठ [ठीक 25 वीं] और न्यूयॉर्क सिटी पोएट्री सेंटर प्रतियोगिता में टेड की पुस्तक को टेलीग्राम द्वारा विजेता घोषित किए जाने की वर्षगांठ के अवसर पर) कुछ प्रतीकात्मक सौभाग्य लेकर आया। मैडमोजेल ने सिरिली एबेल्स के नाम से हम दोनों से एक-एक कविता स्वीकार करने के लिए पत्र लिखा, जिसके बदले हमें कुल 60 डॉलर देने थे। टेड की कविता "पेनिन्स इन अप्रैल" और मेरी "नवंबर ग्रेवयार्ड"—दलदली भूमि पर बसंत और सर्दी, जन्म और मृत्यु, या यूँ कहें कि क्रम उलट दें तो, मृत्यु और पुनरुत्थान। लगभग एक साल बाद मेरी पहली कविता स्वीकृति मिली: मुझे जून की आज़ादी का एहसास होने लगा है—मैं अपनी बची हुई 5 या 6 कविताएँ तब तक भेजती रहूँगी जब तक कि मुझे उनमें से सर्वश्रेष्ठ के लिए कोई जगह न मिल जाए: लेकिन यह कविता हमारे साहित्यिक भाग्य को सबसे अच्छे तरीके से जोड़ रही है: मुझे कम से कम अगले फरवरी तक कविताओं की एक पुस्तक तैयार करने के लिए काम करना होगा। टेड मुझे एक गर्म, नम, धुंधली और उदास सुबह में अरविन के व्याख्यान के लिए ले गया—मुझे यकीन है कि मुझे 'द स्कारलेट लेटर' मुंह ज़बानी याद है। फिर: पिकासो का अच्छा परिचय — नीला काल (बूढ़ा गिटारवादक, धोबिन, मेज पर बैठा बूढ़ा आदमी) और शानदार गुलाबी-सिंदूरी काल के साल्टिम्बैंक, हल्के, नाज़ुक, संतुलित और प्यारे। मुझे उनके चालीसवें दशक के पागलपन भरे

विकृत रूप अपने गहरे स्व से ज़्यादा मेल नहीं खाते—झटके वाली कोयल घड़ियों की दुनिया—सब कुछ मशीनरी और शोर और सिज़ोफ्रेनिक लोग टुकड़ों और पंक्तियों में मृत वस्तुओं की तरह बिखरे हुए हैं: भयावह दृश्य व्यंग्य… अरविन की परीक्षा के साथ, असल में, मेरे लिए एक सप्ताह का सुधार कार्य है। मुझे बेवजह गुस्सा आ रहा है क्योंकि मुझे लगा था कि इस नौकरी में 300 डॉलर मिलेंगे, जबकि सिर्फ 100 डॉलर मिल रहे हैं, और अगर मैं कोई कला कविता लिखता, तो घंटों की मेहनत बर्बाद करने के बाद भी लगभग उतनी ही कमाई हो जाती। संकाय की बैठक लंबी, धुएँ से भरी और विवादों से भरी थी— बिल स्कॉट, कमज़ोर नज़र वाले, पीले, झुकी ठुड्डी वाले भौतिकी के प्रोफेसर, बिल्कुल मैड हैटर जैसे लग रहे थे, जिनके हाथ में ब्रेड और मक्खन का कटा हुआ टुकड़ा था। कभी-कभी मैं सोचता हूँ, क्या ये सब बेवकूफ हैं? आश्चर्य: स्टेनली को "निकाल दिया गया"— एक साल की नियुक्ति अगले साल खत्म हो रही है: वह अस्थिर, उत्साही, "अपरिपक्व" थे; वे चुपके से उनसे जलते हैं क्योंकि उन्होंने एक साल से ज़्यादा समय एक गैर-शैक्षणिक परियोजना—एक उपन्यास—पर बिताया। हाय रे, वे मेरे बारे में क्या सोचते होंगे? एक पूरा गद्दार। मैं बूट और ऊनी कपड़े पहनकर बर्फ से बचने जा रहा हूँ। मेरी सुरक्षित वापसी के लिए प्रार्थना करें। शुक्रवार की रात, 28 फरवरी। शराब के नशे में धुंधला सा, बिखरी प्लेटों पर मेमने की चर्बी और खून जम कर पीली चिकनाई बन गया था, गिलासों के तले में शराब का गाढ़ापन जम गया था। आज, किसी कारणवश, दिन ढल गया, और कल के लिए कोई अतिरिक्त तैयारी न करने का इनाम चमक रहा था, और उदास मन से लेखन की ओर मुड़ा—अपनी कविता संग्रह 'द अर्दनवेयर हेड' के पतले, क्षीण होते अंशों को फिर से पढ़ा और गर्व महसूस किया कि मेरी बची हुई कुछ कविताएँ कितनी स्थिर हैं—

पक्का बीस, उनमें से सोलह पहले ही प्रकाशित हो चुकी हैं (सिवाय उस धिक्कार है, उस धिक्कार है उस धिक्कार है उस विलंबकारी लंदन पत्रिका के)। अपने लंबे अंश "फ्राइडे नाइट इन फाल्कन यार्ड" को फिर से पढ़ा, बहुत भारी, सुस्त, बहुत बनावटी, बहुत कुछ भरा हुआ: फिर भी: इसे मैं संशोधित करूँगा…
रविवार रात, 2 मार्च। फिर से देर हो गई: मुझे सोने में बारह बज जाएंगे। एक अजीब, रुका हुआ दिन: टेड और मैं सुबह की कॉफ़ी पी रहे थे—काली और कड़वी, ब्रैमवेल्स अपने असुविधाजनक दूसरी मंज़िल के फ्लैट में थे, कुर्सियाँ उलटी पड़ी थीं, रिकॉर्ड बिखरे पड़े थे, सफेद संगमरमर की चिमनी टेढ़ी-मेढ़ी और बेकार पड़ी थी। जेम्स कल फ्रांस में अपने घर के लिए रवाना हो रहा है। कल पुस्तकालय में टेड की मुलाकात उससे हुई, मेरे सप्ताह की आखिरी कक्षा से पत्रिका कक्ष में आने से कुछ ही सेकंड पहले। दरवाजा खोलने से पहले मैंने कांच के दरवाजे से अंदर देखा, काले कोट में टेड नहीं दिखा। दरवाजा धक्का देकर खोला, तो जेम्स की पीठ भूरे और सफेद ट्वीड कोट में दिखी, फिर टेड, सांवला, बिखरे बालों वाला और उसी अजीब सी अदृश्य चमक के साथ, जैसी उस पहले दिन थी जब मैंने उसे दो साल पहले देखा था। सोचो, विडंबना ही है, कि दो साल पहले मैं अपने पर्यवेक्षणों के लिए वेबस्टर और टूरनर का गहन अध्ययन कर रहा था (जिन नाटकों पर मैं इस सप्ताह अपने छात्रों की परीक्षा ले रहा हूँ) और पूरी शिद्दत से, बेताबी से, खुद को इस पागलपन भरे विश्वास में ढाल रहा था कि मैं किसी तरह टेड से मिल पाऊंगा और ऑस्ट्रेलिया जाने से पहले उस पर अपनी अमिट छाप छोड़ दूंगा, ताकि वह अपनी पीली, झाइयों वाली प्रेमिका शर्ली की हत्या न कर दे। सभी प्रतिद्वंद्वियों को हमेशा के लिए शर्ली ही कहा जाए। अब, इस शांत, साफ-सुथरे बैठक कक्ष में बैठे हुए, जहाँ हम सब सलीके से

चाय पी रहे हैं, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैंने अराजकता और निराशा—और जीवन की सभी व्यर्थ घटनाओं—को एक समृद्ध और अर्थपूर्ण रूप में ढाल लिया है। इस दरवाजे से आती रोशनी, धुंधली गुलाबी दीवारों वाले भोजन कक्ष में चमकती हुई हमारे शयनकक्ष तक पहुँचती है, और विशाल, साफ-सुथरे शयनकक्ष में कविताएँ लिखते हुए उसकी चमकती रोशनी, दरवाजे के फ्रेम और दरवाजे के बीच की दरार से आती हुई रोशनी की एक झलक मुझे उसके बारे में बता देती है। और अचानक, मेरे उपन्यास का वह लंबा 35 पृष्ठों का अध्याय, जो कम से कम उसकी घटनाएँ तो होनी चाहिए थीं, सस्ता और आसानी से प्राप्त होने वाला लगता है—हवाओं, दरवाजों और दीवारों के टकराने और वापस आने की वह सनसनीखेज बकवास। लेकिन यह पूरे अनुभव का मानसिक सार था: वूल्फ यह कैसे करती हैं? लॉरेंस यह कैसे करते हैं? मैं इन दोनों के बारे में जानने आया हूँ: लॉरेंस के बारे में, उनकी गहन शारीरिक भावनाओं—शक्तियों के क्षेत्र—और पत्तियों, धरती, जानवरों और मौसमों की वास्तविक उपस्थिति के कारण, जो जीवन के रस से भरपूर हैं, और वूल्फ के बारे में, उनकी लगभग लिंगहीन, विक्षिप्त चमक के कारण—वस्तुओं को पकड़ लेना: कुर्सियाँ, मेजें और सड़क के कोने पर खड़े लोग, और प्रकाश का संचार: जीवन रूपी प्लाज्मा की झिलमिलाहट। मैं न तो इनकी नकल कर सकता हूँ और न ही करनी चाहिए। ईश्वर ही जानता है कि मैं किस लहजे में लिखूँगा। संतुलित, लयबद्ध शब्दों और अर्थों, सड़क के कोनों, रोशनी और लोगों से भरी गद्य-कविता के करीब, लेकिन केवल रोमांटिक नहीं; केवल व्यंग्यचित्र नहीं, केवल डायरी नहीं: दिखावटी आत्मकथा नहीं: एक वर्ष में मुझे इस अनुभव को अपने मन में इस प्रकार समाहित करना होगा, इसे दूरी से भर देना होगा, इसके शांत और सूक्ष्म दृष्टिकोण बनाने होंगे, ताकि यह नया रूप ले ले। यह

सब—विषयांतर: जेम्स, विषय: कल, एक टूटा हुआ आदमी, उसका खुरदुरा पीला चेहरा, जिस पर सौम्य झुर्रीदार काली रेखाएं थीं—बाल, भौंहें, झुर्रियां और दाढ़ी के काले रेशे, उसकी चमकीली, हंसमुख काली आंखें—सब कुछ टूटा हुआ, टेढ़ा-मेढ़ा लग रहा था। [अधूरा अंश।] “आप अमेरिका कब छोड़ रहे हैं?” मैंने सबसे पहले यह पूछने की इच्छा की, मेरा मतलब था, गर्मियों में। “सोमवार,” उसने कहा। वह यहां काम नहीं कर सकता, यहां लिख नहीं सकता। वह ज़ोर से, लगभग फुसफुसाते हुए बोल रहा था, और मैं उसे चुप कराना चाहती थी, और वहां से निकल जाना चाहती थी, उन लड़कियों के बीच जो पत्रिकाएं पढ़ते हुए सुन रही थीं। उसके दुख की एक झलक मिली: उसे जाने का फैसला करना कितना मुश्किल रहा होगा, और मुझे कितना अजीब सा संतोष हुआ, जोन के कड़वे लहजे में कहे गए “आप क्यों जा रहे हैं? क्या आपको यहां अच्छा नहीं लगता?” को याद करके। जेम्स उसे कैसे छोड़ सकता है? यह बात मुझे हमेशा परेशान करती है। मुझे टेड की ज़रूरत है... जैसे मुझे रोटी और शराब की ज़रूरत होती है। मुझे जेम्स पसंद है: यहाँ मौजूद उन गिने-चुने लोगों में से एक, जिनका जीवन किसी सांचे में ढले, सेलोफ़ेन में लिपटे ब्लॉकों की तरह, कृत्रिम नारंगी पनीर की तरह, उपलब्ध नहीं लगता: जेम्स में असली, गुफा में परिपक्व, फफूंदी से पके हुए असली चीज़ की महक है। [कुछ अंश हटा दिया गया।] जोन उनके लिए युवा और पतली लगती है। आज सुबह कॉफ़ी पर वह तरोताज़ा और खुशमिजाज़ लग रहे थे। कल रात गोया और बुलफाइटिंग पर बनी दो फ़िल्मों के बाद हमने बैलों और बुलफाइटिंग के बारे में बात की। मैंने जेम्स की आत्मकथा उधार ली और आज रात उसे पूरा किया: 250 पन्ने, 'द अनफिनिश्ड मैन' - युद्ध के दौरान एक विवेकशील आपत्तिकर्ता के रूप में उनके अनुभवों के बारे में: बेतरतीब शुरुआत, यहाँ, वहाँ, स्टॉकहोम, फ़िनलैंड और सब

कुछ बताया गया, पात्रों का चित्रण किया गया, जो वास्तव में अपने आप चलते-फिरते और बोलते नहीं हैं, बल्कि उनके बारे में बात की जाती है, आधे-अधूरे, जैसे चमचमाते संगमरमर की एक नक्काशी। और औरतें: वह उनसे भागते हुए प्रतीत होते हैं - उनकी पत्नी अजीब तरह से पृष्ठभूमि में, अमेरिका की ओर सिमटती हुई, तलाक की ओर; उनका बच्चा गायब होता हुआ। एक समलैंगिक फिनिश लड़की के साथ एक "कथित" प्रेम प्रसंग, जो मृत्यु के प्रति आसक्ति रखती थी और आत्महत्या कर लेती है (क्या वह आंशिक रूप से दोषी था? क्या यह सचमुच हुआ था?) और एक बेहद रोचक बयान कि वह ("अधिकांश पुरुषों की तरह") मानता है कि किसी स्त्री से शाश्वत प्रेम करना उसे छोड़ने के विपरीत नहीं है: प्रेम करना, छोड़ना—एक सुंदर सामंजस्य। मुझे यह समझ नहीं आता: और मेरे साथी को भी नहीं। रूट 9 पर आधी रात की खामोशी छा जाती है। कल आ चुका है और जिन दिनों को मैं इतनी क्रूरता से खुशी-खुशी गिन रही हूँ—ठीक वैसे ही जैसे मैं खाली शराब और शहद की बोतलों को कूड़ेदान में फेंक देती हूँ ताकि आधे भरे जार जाम न हों—वे मेरे यौवन और मेरी संभावनाओं के दिन हैं। मैं मानती हूँ, चाहे पागलपन में हो या आधे सच में, कि अगर मैं कैम्ब्रिज में बिताए अपने दो वर्षों के जीवन और ज्ञान के साथ एक साल बिताऊँ तो मैं एक अच्छा उपन्यास लिख और फिर से लिख सकती हूँ। इस 35 पृष्ठ के अध्याय को दस बार और फिर से लिखना और फिर से लिखना। लक्ष्य निर्धारित: जून 1959: एक उपन्यास और कविताओं की एक पुस्तक। मैं जेम्स के नाटक से प्रेरणा नहीं ले सकती: युद्ध, राष्ट्र, पैराशूट से उतरना, खाइयों में अस्पताल—मेरी महिला का मुख्य हथियार मानसिक और सौंदर्यपरक है: प्रेम और दृष्टि। सोमवार रात, 3 मार्च… ल्यूक के उपन्यास का एक अध्याय आया, बुरी तरह से टाइप किया हुआ, बिना हाशिये के, टेढ़े-मेढ़े अक्षरों में

सुधार लिखे हुए, और खराब तरीके से प्रूफरीड किया हुआ। लेकिन वह हास्यपूर्ण व्यंग्य, लंदन और ग्रामीण परिवेश का वह अनिश्चित सा माहौल जो अप्रत्यक्ष कथन के माध्यम से समा जाता है: यह सब नाजुक और सुंदर है। घटनाएँ और षड्यंत्र ऐसे हैं जिनकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था—जब तक कि, मैं यह भी कहूँ, मैंने इस पर मेहनत न की हो… प्रेम, कामुकता या घृणा जैसी नीरस, स्पष्ट और सामान्य बातें नहीं: बल्कि कुशल, अप्रत्यक्ष। हमेशा की तरह, किसी मित्र या परिचित के अच्छे काम को अचानक देखकर, मुझे उसकी नकल करने, उसे सहेजने की तीव्र इच्छा होती है। आज मुझे अपने पूरे उपन्यास को गुलाबी, कड़े, सुंदर बनावट वाले 100 पन्नों के स्मिथ मेमोरेंडम पैड पर लिखने या टाइप करने की एक अजीब और बेहद प्रबल इच्छा हो रही है: एक जुनून: किसी तरह, सफेद कागज के अंतहीन ढेरों से अलग उस गुलाबी कागज के टुकड़े को देखकर, मेरा काम सीमित, विशेष, गुलाबी रंग का प्रतीत होता है। आज मैंने बेडरूम की लाइट के लिए गुलाब का बल्ब खरीदा और सप्लाई क्लॉज़ेट से इतनी नोटबुक चुरा ली हैं कि उनसे 350 पेज के उपन्यास के डेढ़ ड्राफ्ट तैयार हो जाएंगे। क्या मैं इसे पूरा कर पाऊँगी...?
बुधवार, 5 मार्च… मुझे अक्टूबर और नवंबर में लिखे गए वे दो दर्द भरे और पीड़ादायक टाइप किए हुए पन्ने मिले, जब मैं खुद को पूरी तरह बिखरने से रोकने की कोशिश कर रही थी—अब मेरा आत्मविश्वास कितना नया है: मैं सहन कर सकती हूँ—कमजोरियों, बुरे दिनों, खामियों और थकान के बावजूद सहन कर सकती हूँ: और बिना भागे या रोए अपना काम कर सकती हूँ: हे भगवान, अब और नहीं। अगर, भगवान को छूकर (यह कहाँ से आया?), मैं वसंत की छुट्टियों तक स्वस्थ रहूँ, तो सब ठीक हो जाएगा… पैसा बरस रहा है: वेतन चेक रहस्यमय तरीके से बढ़ गया है (अरविन का काम? परीक्षा के लिए?)। वेतन से हमारा बैंक

खाता 700 डॉलर हो गया है, सितंबर से हमारी कविता की कमाई जल्द ही 850 डॉलर तक पहुँच जाएगी और जून तक शुभ रूप से अपने निर्धारित लक्ष्य तक पहुँच जाएगी: हम कविता प्रतियोगिताओं, तुकबंदी प्रतियोगिताओं में भाग लेने जा रहे हैं—मामूली रकम, लेकिन मेरी लालच बढ़ती जा रही है: मुझे पता था कि अमेरिका हमारे लिए ऐसा करेगा। कल टेड की दो कविताएँ, “ऑफ कैट्स” और “रेलिक,” हार्पर पत्रिका ने उत्साहपूर्वक स्वीकार कर लीं—पिछले तीन बैचों में अभी तक एक भी अस्वीकृति नहीं हुई है—आशा है कि येल रिव्यू और लंदन मैगज़ीन भी आनाकानी नहीं करेंगे: टेड की स्वीकृतियों से मुझे जो अप्रत्यक्ष आनंद मिलता है, वह अजीब है: शुद्ध आनंद: मानो वह मेरे लिए रास्ता खुला रख रहे हों, स्वर्णिम जगत में प्रवेश द्वार पर एक पैर रख रहे हों, और इस प्रकार मेरे लिए एक जगह सुरक्षित रख रहे हों। लक्ष्य: मार्च के अंत तक अपनी कला कविताओं — एक से तीन (गौगुइन, क्ली और रूसो)—को पूरा करना। मैं अंततः “कला पुस्तकालय” में समय बिताऊँगा। मुझे लगता है कि मेरा मन, मेरी कल्पना, प्रेरित हो रही है, अंकुरित हो रही है, खोजबीन कर रही है और झाँक रही है। आज सुबह बगल वाले बदसूरत, नारंगी रंग के प्लास्टर वाले घर से एक बूढ़ी, गुमनाम करोड़पति महिला आती दिखी। एक बैसाखी के सहारे लड़खड़ाती हुई, सड़क के किनारे खड़ी चमचमाती काली लिमोसिन की ओर बढ़ती हुई, भारी बोझ से दबी, झुकी हुई, चमकदार मिंक कोट के भार और भारीपन के नीचे, कार की पिछली सीट पर बैठने के लिए झुकती हुई, जबकि गोल-मटोल, गुलाबी सफेद बालों वाला ड्राइवर उसके लिए दरवाजा खुला रखता है। मिंक कोट से लदी एक झुकी हुई महिला। और मन उत्सुकता से उसके पीछे दरवाजे की दरार में झांकता है: वह कहाँ से आई है, वह कौन है? उसके जीवन में कौन-कौन से प्रेम और दुख पिरोए हुए हैं? माली से पूछो, रसोइए से

पूछो, नौकरानी से पूछो: वे सभी मेहनती, लेकिन मददगार नौकर जो एक निर्जन, सूने और वीरान घर में नियमित रूप से शालीनता का पालन करते हैं...
शनिवार रात, 8 मार्च। उन रातों में से एक जब मैं सोचता हूँ कि क्या मैं ज़िंदा हूँ, या कभी था भी। सड़क पर गाड़ियों का शोर किसी तेज़ बुखार जैसा है: टेड बीमार सा, असंतुष्ट होकर कहता है: “मैं इस फँसे हुए जीवन से छुटकारा पाना चाहता हूँ।” मैं सोचता हूँ: क्या हम बोस्टन में कम फँसे हुए होंगे? मुझे अपार्टमेंट और उपनगर नापसंद हैं। मैं सीधे अपने घर के दरवाज़े से निकलकर ज़मीन पर, धुएँ से मुक्त हवा में जाना चाहता हूँ। और मैं: मैं क्या हूँ, बस एक महिमामंडित मशीन, जो थकान के विशाल सागर में खुद को सुन रही है, अपने मुँह रूपी खोखले तुरही से जीवन, दुख, गहन ज्ञान और रस्मों के बलिदान के बारे में मृत शब्द बोल रही है। शिक्षा क्या मार डालती है? रस, सार—रहस्योद्घाटन का मूल तत्व: यहाँ तक कि अनसुलझे सवालों और अनेक संभावित उत्तरों को भी हठधर्मिता के कठोर और दृढ़ स्वरूप में ढालकर। यह उन विद्यार्थियों के जीवन के उत्साह को नहीं बुझाता जो हर साल नए, उम्दा और ऊर्जावान होकर आते हैं, जागृत होते हैं और आगे बढ़ते हैं—लेकिन यह मुझमें उस उत्साह को बुझा देता है क्योंकि यह मुझे महान दृष्टियों, शब्दों और अर्थों के महान संयोजनों और लय को सूत्रबद्ध करने के लिए मजबूर करता है। एक अच्छा शिक्षक, एक सच्चा शिक्षक, आस्था में निरंतर जीवित और रचनात्मक ऊर्जा से निरंतर नवीकृत होना चाहिए ताकि वह स्वयं में, अपने आप में और अपने कार्य में भी जोश बनाए रख सके। मुझमें न तो ऊर्जा है और न ही इच्छाशक्ति, और इस लौ को जीवित रखने के लिए मुझे अपनी पूरी शक्ति लगानी पड़ेगी। मैं पुनर्पठन, दूसरों के नोट्स पर जी रहा

हूँ और पढ़ा रहा हूँ, जो सीने में जलन की तरह कड़वे हैं, दो अधूरी आकृतियों के बीच: मूल शिक्षक और मूल लेखक के बीच: न तो मूल शिक्षक और न ही मूल लेखक। और अमेरिका मुझे थका देता है, मुझे परेशान कर देता है। मैं केप से तंग आ चुका हूँ, वेलेस्ली से तंग आ चुका हूँ: पूरा अमेरिका कारों की एक कतार जैसा लगता है, जो लोगों से भरी हुई, एक पेट्रोल पंप से दूसरे भोजनालय और आगे बढ़ती जा रही हैं। मुझे समय-समय पर इस अशिष्ट, असभ्य, ऊर्जावान, मांगपूर्ण और प्रतिस्पर्धी नए देश के माहौल में खुद को तरोताज़ा करना पड़ता है, लेकिन मैं अपने दिल की गहराई में, दलदली भूमि पर सबसे अधिक खुश रहता हूँ - मेरी आत्मा का सबसे गहरा परिदृश्य, स्पेनिश भूमध्य सागर के किनारे की पहाड़ियों में, पुराने, इतिहास से सजे और अभी भी भव्य, विशाल शहरों में: पेरिस, रोम।
… मुझे नई जिंदगी की उम्मीद की किरणें दिखाई दे रही हैं। क्या दर्द होगा? प्रसव पीड़ा का अभी पता नहीं। कल रात, थका हुआ, उस अजीबोगरीब गोथिक शैली की अंधी सीढ़ियों से चढ़कर अरविन के यहाँ पेय पीने गया: फिशर और गिबियन: आदिवासियों और राजनीति के आगमन पर मेरे बाहर जाने के बारे में नीरस, बेतरतीब बातें। अरविन: गुलाबी गंजा सिर, आँखें और मुँह किसी नक्काशीदार लाल मुखौटे की तरह सूखे, पतले छेद जैसे: बास्किन की नक्काशी: हॉल में विशालकाय, मैमथ जैसा: एक उभरा हुआ, धारीदार सिर, दागदार, दागदार, उल्लू जैसी आँखों वाला—“पीड़ित आदमी,” और एक बड़ा, पंखों वाला, पंजों वाला, भयंकर आँखों वाला उल्लू सिर के ऊपर हवा के एक असहनीय शाश्वत कोने में बैठा हुआ… मुझे दोनों पुरुषों [टेड और अरविन] के बीच एक तीखी घृणा महसूस हो रही है। मैं… अरविन को देखता हूँ: सूखा हुआ, कक्षा में अपनी चाबियों के गुच्छे को बार-बार सहलाता

हुआ, चमकदार, कठोर आँखें लाल-किनारे वाली, क्रूर, कामुक, सम्मोहक और मुझे उसी तरह जकड़े हुए जैसे लोर्के ने बौने को जकड़ा था। फिशर, बाहें फड़फड़ाता हुआ, हास्यास्पद, पेशाब करने या उल्टी करने के लिए उछलता हुआ, फिर चला जाता है, अपना पाइप और आधा खाली पेय छोड़कर। “वह पूरे साल ऐसा ही करता रहा है,” गिबियाई लोगों ने कहा।

* * *

सोमवार रात, 10 मार्च। थकावट: क्या कभी कोई दिन ऐसा होता है जब ऐसा न हो? आज रात अल्फ्रेड काज़िन डिनर पर हैं: वो: टूटे हुए, किसी तरह से, कड़वे और दुखी: उनके बाल सफ़ेद हो रहे हैं, उनकी चमक फीकी पड़ गई है। फिर भी प्यारे: और वो और उनकी पत्नी ऐन, जो खुद भी एक लेखिका हैं, इस दुनिया में एक और ऐसा जोड़ा जिससे बात की जा सकती है। बच्चे ज़िंदगी को कितना जटिल बना देते हैं: वो एक बेटे के लिए भी भुगतान कर रहे हैं। टेड अभी भी अजीब तरह से बीमार है: टेड को पीला, बिखरे बालों वाला, उदास चेहरे वाला देखकर मैं कितना निराश और असहाय महसूस करती हूँ, और कोई स्पष्ट बीमारी नहीं, कोई स्पष्ट इलाज नहीं। उसे खांसी आती है, पसीना आता है, पेट में दर्द होता है। वो पीला, प्यारा और दूर-दूर सा दिखता है… मैं बिस्तर पर गिर पड़ती हूँ, जैसे किसी नशे में चूर, इस अजीब सी हरी-शराब जैसी थकान से। नशे में चूर, शराब से लथपथ, थकावट से चूर। मेरा जीवन एक अनुशासन है, एक जेल है: मैं अपने काम के लिए जीती हूँ, जिसके बिना मैं कुछ भी नहीं हूँ। मेरा लेखन। टेड, टेड का लेखन और मेरा लेखन, इन सबके सिवा कुछ भी मायने नहीं रखता। वह बुद्धिमान है, और मैं भी, धीरे-धीरे और बुद्धिमान होती जा रही हूँ। हम अपनी योजनाओं को नए सिरे से गढ़ेंगे, उनमें बदलाव करेंगे और फिर से नया रूप देंगे ताकि हमें लिखने के लिए बेहतर

जगह मिल सके। मेरे नाखून टूट रहे हैं और उनमें दरारें पड़ रही हैं। यह एक बुरा संकेत है। मुझे लगता है कि इस साल मुझे सच में छुट्टी नहीं मिली: थैंक्सगिविंग एक भयानक बुरे सपने जैसा था और क्रिसमस निमोनिया के एक गंभीर झटके जैसा, और तब से सेहत बनाए रखने के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। न्यूटन की कक्षा में लगभग सो गई थी: कल सुबह जल्दी उठना है, कपड़े धोने के लिए और गुलाबी कागज़ के और पैड चुराने के लिए। काज़िन: हमारे साथ घर पर है, समीक्षाओं के बारे में बातें कर रहा है, अपने जीवन के बारे में: एक दूसरी पत्नी, गोरी, और वह उस पर गर्व करता है, बड़े ही भावुक ढंग से। ऐसा जीवन कैसा होता है जिसमें कोई फिशर के सपने देखता है, चुपके से, गुलाबी और भड़कीले बैंगनी और हरे घरों में, और डन और कपड़ों के ढेरों रैक के बारे में?
मंगलवार दोपहर, 11 मार्च… नंगी ज़मीन और पेड़ों के नीचे फैली हल्की हरी-पीली रोशनी, गर्मजोशी से चमकती हुई और उम्मीद जगाती हुई। ओह, मेरा अपना जीवन कितना चमकता है, मुझे पुकारता है, मानो मैं किसी पहिए पर फंसा हुआ, घूम रहा हूँ, अपने व्यस्त कार्यक्रम के लोहे के दांतों जैसे जबड़ों में जकड़ा हुआ। खैर, जनवरी से ही मैं खुद से संवाद कर रहा हूँ और बिना भागे डटे रहने की तैयारी कर रहा हूँ। अब मैं चरम सीमा पर पहुँच गया हूँ: तंग आ चुका हूँ। इस सप्ताह स्ट्रिंडबर्ग के तीन घंटे के नाटकों की रूपरेखा तैयार करने का विचार ही मुझे डरा देता है। जबकि स्ट्रिंडबर्ग के नाटक सबसे मनोरंजक होने चाहिए। मैं इन पन्नों की ओर ऐसे मुड़ता हूँ जैसे ठंडे पानी के घूंट की ओर—जैसे ये मेरे जीवन के सबसे करीब हों—शब्दों को ध्वनि, गीत और अर्थ देना चाहिए। जैसे ही मैं "पियो" कहता हूँ, मुझे फव्वारे के किनारे पर टिन के प्याले की खनक सुनाई देती है। मुझे अंतर्मुखी, विचित्र बनना होगा, केवल

अपने ही बौनों और राक्षसों में निवास करने और उनके प्रति वफादार रहने से... आज, मानचित्रों, फीके रेतीले रेगिस्तानों और कारों में बैठे लोगों से जुड़े एक भयानक और दमनकारी दुःस्वप्न में फँसकर देर तक सो गया - अपराधबोध, विश्वासघात, शर्मिंदगी और पीली, गंधक जैसी उदासी का भाव सब पर हावी था, मैंने वही अरविन का मार्डी पर व्याख्यान सुना जो मैंने चार साल पहले सुना था और शुद्ध अमूर्ततावादी मोंड्रियन पर एक व्याख्यान: प्लेटोनिक लिनोलियम चौकोर की तरह गर्म।
गुरुवार की सुबह, 13 मार्च… मैं बैठी हूँ, गर्म, नींद से भरी और कंपकंपी से उबरते हुए, यहाँ लिख रही हूँ, खुद को शांत करने की कोशिश कर रही हूँ। कल का दिन भयानक था—टेड ने चाँद और शनि के बारे में कुछ कहा, उस श्राप को समझाने के लिए जिसने मुझे तार की तरह जकड़ रखा था और बेरहमी से झकझोर रहा था। इतनी थकी हुई कि हँसी भी काम नहीं आई, मैं पूरी तरह से टूट चुकी थी… जैकेट पर बटन सिलने को लेकर टेड से झगड़ा (जो मुझे करना ही था), उसका ग्रे सूट पहनना, और ऐसी ही छोटी-छोटी बातों पर, वह बीमारी से उबर रहा था, मैं और भी बीमार होती जा रही थी। चिकन विंग और पालक-बेकन का ढेर सारा खाना, सब कुछ ज़हर में बदल गया। ड्रीम प्ले— महत्वाकांक्षी प्रस्तुति—बेटी बादलों के बीच से नाचते हुए नीचे उतरती है, उसकी आवाज़ अकड़ी हुई और बनावटी है… नाटक की विडंबना यह है कि यह सब मेरे अपने जीवन में सच है। हम बटनों और हेयरकट को लेकर झगड़ना बंद ही कर रहे थे (जैसे कि वे सलाद वगैरह को तलाक का आधार बनाते हैं), और खासकर उस अधिकारी की बार-बार की पढ़ाई को लेकर—लगातार सीखते और सिखाते रहना कि दुगुना दुगुना क्या होता है? और मैं भी उसी सीट पर बैठा हूँ जहाँ मैं तीन, चार, पाँच, छह, सात साल पहले बैठा था, वही सिखा रहा हूँ जो मैंने एक,

दो, तीन, चार साल पहले सीखा था, उतनी ही कम ऊर्जा के साथ जितना मैंने पढ़ा और सीखा था—भूतों और जाने-पहचाने चेहरों के बीच जी रहा हूँ जिन्हें मैं पहचानने का नाटक करता हूँ… सब कुछ अपने आप में सिमट रहा है, खट्टी रोटी जैसा स्वाद, सीने में जलन जैसा। अब मुझे जल्दी से कपड़े पहनकर क्लास जाना है, तीन गुलाबी किताबें चुराने के लिए: हाँ, अपने उपन्यास के लिए: मैंने अभी-अभी सनसनीखेज बकवास नाइटवुड पढ़ी है—सब विकृत, सब बकवास, नाटकीय: “वह सेक्स जिसे भगवान भूल गए”—आत्म-दया, जैसे ड्रीम प्ले का मंच विलाप। हम पर दया करो: ओह, ओह, ओह: मानवता दयनीय है…

* * *

शुक्रवार दोपहर, 14 मार्च… कल रात गहरी नींद और अजीबोगरीब बुरे सपने—नाश्ते के समय खंडित यादें: न्यूटन आरविन की: मुरझाया हुआ, रहस्यमय, खलनायक, सिकुड़े हुए सिर जिन्हें जोड़ना मुश्किल है, धोखे के सुराग: लॉलीपॉप के आकार के सिर, मुरझाए हुए, मौत के करीब आने के सिकुड़े हुए भ्रष्टाचार पर लाल रंग से रंगे हुए। अंधेरी लाइब्रेरी में फर्श और सीढ़ियों की अंधेरी ऊँचाई। पीछा, अपराधबोध… मैं अभी भी एक सपने में हूँ, अनुत्पादक, थका हुआ। गुगेनहाइम और हॉटन मिफ्लिन पुरस्कारों से एक सूचना मिली है—जब तक मैं अगले साल के अंत तक अपनी दो किताबें नहीं लिख लेता, तब तक इसके बारे में चिंता करने का कोई फायदा नहीं। आज दोपहर टेड को धन्य, पिता तुल्य सफेद बालों वाले जैक स्वेनी का फोन आया, जिन्होंने टेड को 11 अप्रैल शुक्रवार को हार्वर्ड में मॉरिस ग्रे रीडिंगशिप में 100 डॉलर और खर्चों के बदले कविता पाठ करने के लिए कहा! एक घंटे का उनका अपना पाठ: हमारे लिए यह पेशेवर गौरव जैसा लगता है। रसोई में चिकने बर्तनों का ढेर लगा है, कूड़ेदान कॉफी के अवशेष, बासी चर्बी, सड़े फलों के छिलके और सब्जियों के

झाड़ने की ज़रूरत हो, एक बदसूरत, या यूँ कहें कि साधारण सा सूट और धब्बेदार चर्बी की परतें। राउल द्वारा बाँटे जा रहे एक-दो मेवे और शेरी के साथ, उन्होंने कर्कश, तीखी आवाज़ में डायलन थॉमस के होलीओक दौरे की कहानी सुनाना शुरू किया, जिसमें किसी भी तरह की रुकावट की गुंजाइश नहीं थी: एक ऐसी औरत जो कभी सुनती नहीं, एक भयानक औरत, सख्त गोल गोली जैसी आकृति वाली, छोटी, सूखे मेंढक की तरह निर्दयी। गंदे, सड़े हुए दाँत, हाथों पर वैसी घिसी हुई मांसल चमक जो अविवाहित बूढ़ी महिलाओं में होती है: कहीं चमकते हुए हीरे, एक पिन या चेन। हमने किसी बात की बात नहीं की: डायलन थॉमस की कहानी रात के खाने तक चलती रही और जॉयस, एक प्लेट में सफेद कटी हुई ब्रेड लिए, जिस पर काले धब्बों वाला धूसर-गुलाबी रंग का पेस्ट लगा था, हमें उन भद्दी भूरी सीढ़ियों से नीचे एक असुविधाजनक निजी भोजन कक्ष में ले गई, जहाँ एक बहुत ही पॉलिश की हुई महोगनी की मेज और सख्त पीठ वाली कुर्सियाँ थीं। मैंने जल्दी से पी लिया और जब राउल लाल शराब लेकर आया तो मैंने ज़रा भी संकोच नहीं किया। बैंगनी मुहांसों वाली एक भद्दी, मोटी, पीले रंग की, मूर्ख जैसी दिखने वाली लड़की हमारी सेवा कर रही थी। मैं राउल के बाईं ओर बैठा, मेरे सामने बेबाक मिस माउंट थीं, जिन्हें जाहिर तौर पर मुझसे तुरंत नफरत हो गई थी और जिन्हें मैंने नज़रअंदाज़ कर दिया। "बेन यहाँ है," जॉयस ने धीरे से और खुशी से कहा। और मेरा पहला इंप्रेशन था: वह पागल है। वह बहुत चमकीले नीले और पीले रंग का लग रहा था, और ऐसा लग रहा था जैसे सालों से सैंडब्लास्टिंग से उसका चेहरा खराब हो गया हो। चश्मा, नीली-नीली मेंढक जैसी आंखें, गड्ढों वाली, चटख भूरी, खुरदरी त्वचा, छोटे सुनहरे बाल, और एक फीकी, भद्दी सफेद-क्रीम रंग की जैकेट जो ठीक से फिट नहीं हो रही थी और उसे टेढ़ी-मेढ़ी, कुबड़ी

जैसी शक्ल दे रही थी। भारी काले चमड़े के स्की बूट, या शायद हाइकिंग बूट, और फिर से, पैंट जो टेढ़ी टांगों पर लटक रही थी। उसने तुरंत ही काफी ऊंची, कर्कश आवाज में बोलना शुरू कर दिया: बेबाक, जोशीला और खुला। मैंने खाने के समय उससे बात की, अपनी आवाज भी ऊंची की: सब लोग हंसे, वाइन पी (मिस माउंट को छोड़कर) और अपनी आवाजें ऊंची कीं। मुझे सुखद कामुकता महसूस होने लगी, मेरा शरीर सुगठित और मजबूत हो गया, ऐसा लग रहा था जैसे मैं सौ पुरुषों को आकर्षित कर लूं। लेकिन तुरंत ही, मैं टेड की ओर मुड़ी: मुझे बस उस पहली रात के बारे में सोचना था जब मैंने उसे देखा था, और बस। हर्ली ने राजनीति, एज्रा पाउंड के बारे में बातें कीं: हम इस बात पर सहमत थे कि एक आदमी पूरी तरह से एक जैसा होता है, खुद को अलग-अलग हिस्सों में बांटना मुश्किल होता है, एकदम बंद। हर्ली (कम से कम दो गुगेनहाइम पुरस्कार विजेता) ने पुराने, संभ्रांत और प्रतिष्ठित लोगों को गुगेनहाइम पुरस्कार दिए जाने का पुरजोर विरोध किया और उन कवियों को यह पुरस्कार देने की वकालत की जो महिलाओं और शराब पर पैसा खर्च करते थे और राजनीतिक रूप से कट्टरपंथी थे। हम सब फिर से ऊपर चले गए। हर्ली ने खाने के दौरान (भुने हुए गोमांस के मोटे टुकड़े, पानीदार हरी बीन्स, भुने हुए आलू और कुछ भयानक आइसक्रीम, बीच में पुदीने के स्वाद वाली आइसक्रीम का हरा तिपतिया घास का टुकड़ा लिए वेनिला आइसक्रीम) हरे रंग के धूप के चश्मे पहन लिए थे। हर्ली ने तुरंत खिड़की के सारे पर्दे नीचे खींच दिए, सिवाय खिड़की की एक लंबी पतली पट्टी के, और बर्फ से चकाचौंध कर देने वाले दृश्य को काट दिया: बाईं पट्टी में जापानी जलरंग की तरह स्पष्ट और नाजुक रंग दिखाई दे रहे थे—बैंगनी पहाड़, बर्फ के सफेद मैदान, और झाड़ियों, घासों और पेड़ों की एक पट्टी जो सुलेख की रेखाओं की तरह परिपूर्ण थी।

हमने एंटोइन द्वारा एक अजीब से क्रोमियम-ट्यूब वाले बर्तन में बनाई गई काली, कड़वी एस्प्रेसो कॉफी पी और फिर ब्रांडी पी। एंटोइन ने गुलाबी, हरे, पीले और लैवेंडर रंग की ईस्टर-एग कैंडी से भरा एक कांच का जार हमें दिया। फिर हम चले गए। हर्ली ने हाथ मिलाकर अलविदा कहा और चमत्कारिक रूप से मेरे हाथ में कविता और राजनीति पर लिखे अपने कई पर्चे, यानी उनकी "अमेरिकाना" की किताबें छोड़ गए।
गुरुवार सुबह, 20 मार्च… मैंने खुद को अगले बुधवार तक का एक हफ्ता दिया है और लंबी प्रतियोगिता का विचार छोड़ दिया है। मैंने कविता के विषयों को क्ली (पांच चित्र और नक्काशी) और रूसो (दो चित्र) तक सीमित कर दिया है और मनमाने ढंग से, प्रतिदिन एक विषय पर कविता लिखने का प्रयास करूंगी। प्रत्येक विषय मुझे गहराई से आकर्षित करता है। मुझे उन्हें अपने मन में उतारना होगा और उन्हें समृद्ध, परतदार होने देना होगा। और चुनना होगा: आज ही एक चुनना होगा। मैं स्तब्ध बैठी हूँ—अंदर से फटी हुई: एक पूरा सप्ताह बीत गया, और मैं अपने गहरे स्व से, अपने भीतर के राक्षस से इतनी दूर हूँ कि मैं एक चित्रित सतह पर चक्कर खा रही हूँ। कल: कला पुस्तकालय में बैठी चित्रों में डूबी हुई थी। मुझे लगता है कि मैं पॉल क्ली की किताब खरीदने की कोशिश करूंगी। या कम से कम, सप्ताहांत में उसे प्राप्त कर लूंगी। अब मुझे पिछले सप्ताह के उन भयानक अनुभवों की याद आ रही है: सबसे घिनौने, सबसे शर्मनाक अनुभव: सोमवार—रोचेस के घर राल्फ रोजर्स के साथ चाय और ब्राउज़िंग रूम में एक भयानक व्याख्यान। पॉल, अपनी पेशेवर, नम नीली आँखों और व्यावसायिक रूप से संवारे हुए सुनहरे घुंघराले बालों के साथ, अपने सीधे, नाजुक-उदास कुलीन सिर को ऐसे दिखा रहा था मानो उसे किसी यूनानी सिक्के पर उकेरा गया हो, जो बहुत अधिक

सार्वजनिक सौदेबाजी और छूने से धुंधला और पतला हो गया हो। "अमेरिका के सर्वश्रेष्ठ लघु कवियों में से एक," पॉल ने फोन पर कहा। रोजर्स ने पॉल के बैठक कक्ष में आते ही मुझे और टेड को घृणा से भर दिया, उसकी चिकनी, घबराहट भरी मुस्कान और कांपते हुए हाथों से पैंट की जेब में खनकते पैसे। क्लेरिसा, जो जाहिर तौर पर हाल ही में आँसुओं के दौर से उबरी थी, ढीली सफेद स्वेटशर्ट और नीली-सफेद पूरी स्कर्ट और छोटे बटन वाले बैले जूतों में इधर-उधर घूम रही थी, जैसे मिस मफेट निजी तौर पर नखरे कर रही हो। और उसका भाषण: मैं छटपटा रहा था, चिढ़ रहा था। उस गहरे रंग के लकड़ी के फर्नीचर से सजे और प्राचीन कमरे में, जहाँ हल्की रोशनी थी, घिसी हुई, गहरी और आरामदायक कुर्सियाँ थीं और गहरे रंग के प्राच्य कालीन बिछे थे, और खोखले ताबूत जैसी दिखने वाली दादाजी की घड़ी अपनी कब्र जैसी टिक-टिक कर रही थी, और मैरी एलेन चेज़ का तेल चित्र आगे की ओर झुका हुआ था, मानो सुनहरे फ्रेम से बाहर निकल रहा हो, उसके सफेद बाल एक प्रभामंडल, एक चमकदार आभा की तरह लग रहे थे। रोजर्स ने अपनी भद्दी बातों का भंडार स्मिथ की साहित्यिक मैडमोजेल डेफार्जेस को उलटा-सीधा सुनाया, अपने चिकने और व्यावसायिक शब्दों को केबल-स्टिच वाले स्वेटर और बहुरंगी आर्गाइल में पिरोते हुए। असहनीय: घटिया जुमले। "यही तो बात है, समझे? मैं इसे यहीं समेट देता हूँ।" पता चलता है कि राल्फ रोजर्स के पास एक छोटा सा (निजी) भंडार कक्ष है जिसे "अवचेतन" या अधिक सरलता से "अचेतन" कहा जाता है, जहाँ वह अपने सभी पुराने सपने, विचार और कल्पनाएँ रखता है। भिनभिनाहट, कतरन, नन्हे-मुन्ने शैतान काम पर लग जाते हैं, और झटपट! कुछ घंटों, दिनों या महीनों बाद वो एक कविता लिख डालते हैं—ज़िप-ज़िप। इसका क्या मतलब है? मुझे नहीं पता—आप बताइए। वो अपनी कुछ

बेतुकी रचनाएँ पढ़ते हैं: एक रत्नजड़ित कुत्ता और एक लड़का चिपचिपी लॉलीपॉप चाट रहा है। इसका क्या मतलब है? कविता में कुछ न कुछ गति होनी चाहिए—वो अकादमी के लड़कों से अपनी कविताओं की व्याख्याएँ लिखवाते हैं: “शानदार!” वो मेज पर कागज़ों का एक गट्ठा फेंकते हैं, अटलांटिक के नवीनतम अंक में छपी मार्च नामक जानवर की “पुसी-विल्लो आँखों” पर लिखी कविता लहराते हैं। डींग मारते हैं: “मैंने इसे अभी-अभी पोएट्री लंदन-न्यूयॉर्क को बेचा है।” किसी कविता की जितनी अधिक व्याख्याएँ होती हैं, वह उतनी ही बेहतर कविता होती है। अरे, कोई भी लिख सकता है: उन्होंने तो "क्रिएशन व्हाइल यू वॉच" नामक एक शो के लिए मंच पर बीस मिनट में एक कविता भी लिख डाली थी—एक व्यक्ति ने तात्कालिक रूप से मूड म्यूजिक बजाया, दूसरे ने पेंटिंग की जबकि राल्फ रोजर्स ने अपने अवचेतन मन से एक मूड पोयम निकाली और उसे ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया — यह तो प्रेशर कुकर में कविता लिखने का कमाल है।

* * *

शुक्रवार दोपहर, 28 मार्च। पूरा एक हफ्ता बीत गया, और मैंने यहाँ कुछ नहीं लिखा, न ही किताब उठाई। इसका एक अच्छा कारण है। पहली बार यहाँ न लिखने का अंतराल लेखन का संकेत दे रहा है। एक हफ्ता पहले गुरुवार को, मेरी छुट्टियों के पहले असली दिन, मुझ पर लिखने का जुनून सवार हो गया था, और तब से यह जुनून जारी है: बस लिखते ही रहना: मैंने पिछले आठ दिनों में आठ कविताएँ लिखीं, लंबी कविताएँ, लयबद्ध कविताएँ, और जोशीली कविताएँ: ऐसी कविताएँ जो पिछले पाँच वर्षों में मेरे जीवन के वास्तविक अनुभव को उजागर करती हैं: वह जीवन जो एक रोकोको क्रिस्टल पिंजरे में बंद, अछूत, अछूत सा रहा है, जिसे छुआ नहीं जा सकता। मुझे लगता है कि ये मेरी अब तक की सबसे बेहतरीन कविताएँ हैं। कभी-कभी मैंने अपना

सिर उठाया, दर्द महसूस किया, थकावट महसूस की। शनिवार को मैं दर्द से कराह रही थी, बफरिन की गोलियां खा रही थी, महीनों से चले आ रहे सबसे भयानक ऐंठन और बेहोशी को किसी तरह सह रही थी, जिसे कोई भी गोली कम नहीं कर पा रही थी, और कुछ भी नहीं लिख पा रही थी: उस रात हम डोरोथी रिंच के साथ रोचेस के घर एक नीरस डिनर पर गए, जो एक बूढ़ी मूर्ख की तरह व्यवहार कर रही थी, आँखें गड़ाए, अपने उस छोटे-से-भूखे-समझे-प्रतिभाशाली-वैज्ञानिक होने का नाटक कर रही थी। जाहिर है, उसे टेड की परवाह नहीं है: वह उसके लिए बहुत ईमानदार, सरल, मजबूत, गैर-ऑक्सफ़ोर्ड-शैली का और शांत स्वभाव का है। जाहिर है, वह इस बात से नाराज़ थी कि मैंने उसे कॉफ़ी के लिए फ़ोन करने का वादा किया था और कभी नहीं किया: लेकिन मैं भी नहीं करूँगी। मुझे उसकी ज़रा भी परवाह नहीं है और मैं उन लोगों पर कविता लिखने का समय बर्बाद नहीं करूँगी जिन्हें मैं बर्दाश्त नहीं कर सकती। एक रात, देर से, हम बाहर निकले और हाई स्कूल के नीचे आग की भड़कीली नारंगी रोशनी देखी। मैं टेड को घसीटते हुए वहाँ ले गया, यह उम्मीद करते हुए कि शायद किसी प्रलय में जलते हुए घर दिखें, माता-पिता अपने बच्चों को लेकर खिड़की से कूद रहे हों, लेकिन ऐसा कुछ नहीं था: एक मोहल्ले में झाड़ियों से भरे घास के मैदान में आग लगी थी, अँधेरे में लपटें नारंगी रंग की थीं, जलती हुई बंजर भूमि पर दोस्ताना आवाज़ें गूँज रही थीं, पुरुषों और बच्चों की परछाइयाँ जलती हुई घास के गुच्छों से एक सीमा बना रही थीं, और झाड़ू से उस आग को बुझा रही थीं जो बाड़ को खतरे में डाल रही थी। हम चारों ओर घूमे और वहाँ खड़े हो गए जहाँ एक घर का मालिक गंभीर और दृढ़ निश्चय के साथ अपने गुलदाउदी के पौधों को पानी से भिगो रहा था और पानी को एक छोटे से बांध या नाले में बहने दे रहा था, जो उसके लॉन के हिस्से को चटकती हुई लाल रोशनी

वाली खरपतवार की डंडियों से अलग कर रहा था। आग अजीब तरह से सुकून देने वाली थी। मैं किसी घटना, किसी दुर्घटना के लिए तरस रहा था। आम तबाही के लिए किसी के अंदर कितनी तीव्र इच्छा होती होगी! मैं गलियों में घूमता हूँ, तैयार और सतर्क, और लगभग त्रासदी पर अपनी दृष्टि और हिम्मत आज़माने की इच्छा से—कार से कुचला हुआ बच्चा, आग में जलता घर, घोड़े द्वारा पेड़ पर फेंका गया कोई व्यक्ति। कुछ नहीं होता: मैं खतरे की पतली सी रेखा पर चल रहा हूँ...
शिक्षण के इस कार्य से मुझे बहुत लाभ हुआ है: पिछले सप्ताह मेरी कविताओं के उद्गार से यह स्पष्ट होता है: एक विशाल, बुलंद आवाज आनंद, दुःख और विचित्र, भयानक और विलक्षण दुनियाओं के गहन दर्शनों को गरजती और गाती है...
हम कला की किताबें खरीदना चाहते हैं। डी चिरिको। पॉल क्ली। मैंने डी चिरिको की उन चित्रों पर दो कविताएँ लिखी हैं जो मेरी कल्पना को झकझोर देती हैं—"द डिसक्वाइटिंग म्यूज़ेज़" और "ऑन द डिक्लाइन ऑफ़ ओरेकल्स" (उनकी शुरुआती पेंटिंग, द एनिग्मा ऑफ़ द ओरेकल के बाद) और रूसो की दो पेंटिंग पर—एक हरा और चाँदी भरा भाव-चित्र, "स्नेकचार्मर," और मेरी आठ कविताओं में से आखिरी, जैसा कि मैंने कहा, यद्विघा पर एक सेस्टिना, "द ड्रीम।"
मैं यहां डी चिरिको की अनुवादित गद्य कविता या उनकी डायरियों से कुछ उद्धरणों को उद्धृत करूंगा, जो मुझे अद्वितीय रूप से प्रभावित करने की शक्ति रखते हैं, जिनमें से पहला, मेरी कविता "भविष्यवाणियों के पतन पर" का उपसंहार है:
1) “एक खंडहर मंदिर के अंदर एक देवता की टूटी हुई मूर्ति एक रहस्यमय भाषा बोल रही थी।”

2) “फेरारा: वह पुराना बस्ती क्षेत्र जहाँ बेहद विचित्र और आध्यात्मिक आकृतियों में कैंडी और कुकीज़ मिल सकती थीं।”
3) “दिन निकल रहा है। यह रहस्य का समय है। यह प्रागैतिहासिक काल का भी समय है। यह काल्पनिक गीत है, पवित्र स्तंभ के चरणों में सो रहे पैगंबर के अंतिम, सुबह के सपने का रहस्योद्घाटन गीत है, जो ईश्वर की ठंडी, सफेद प्रतिरूप के निकट है।”
4) "मैं किससे प्यार करूँ, सिवाय इसके कि वह 'द एनिग्मा' हो?"
और चिरिको शहर में हर जगह, भारी मेहराबों, गुंबदों और गलियारों के भूलभुलैया में फंसी हुई ट्रेन धुएं का गुबार छोड़ती हुई। खाली, रहस्यमय छायादार चौकों के बीचोंबीच, अकेली, सोई हुई सी एरिआडने की लेटी हुई मूर्ति। और अदृश्य आकृतियों की लंबी परछाइयाँ—मानव या पत्थर की, यह बताना असंभव है। टेड मेरी कविताओं की आलोचना करते हुए और यहाँ-वहाँ सही शब्द सुझाते हुए, जैसे "प्रशंसापूर्वक" की जगह "आश्चर्य से", आदि, बिल्कुल सही होता है। अहंकारी होकर, मैं सोचती हूँ कि मैंने ऐसी पंक्तियाँ लिखी हैं जो मुझे अमेरिका की कवयित्री बनने के योग्य बनाती हैं (जैसे टेड इंग्लैंड और उसके साम्राज्य का कवि होगा)। प्रतिद्वंद्वी कौन? खैर, इतिहास में सैफो, एलिजाबेथ बैरेट ब्राउनिंग, क्रिस्टीना रोसेटी, एमी लोवेल, एमिली डिकिंसन, एडना सेंट विंसेंट मिलय—सभी मर चुकी हैं। अब: एडिथ सिटवेल और मैरिएन मूर, उम्रदराज दिग्गज कवि, और काव्य जगत की धर्मपरायण फिलिस मैकगिनली का समय बीत चुका है—हल्की-फुल्की कविताएँ: उन्होंने खुद को बेच दिया है। बल्कि: मे स्वेंसन, इसाबेला गार्डनर, और सबसे करीबी, एड्रिएन सेसिल रिच—जो जल्द ही इन आठ कविताओं के आगे फीकी पड़ जाएँगी: मैं उत्सुक हूँ, बेचैन हूँ, अपनी प्रतिभा पर पूरा भरोसा है, बस इसे निखारना और सिखाना चाहती हूँ—अब से

मैं इन आठ सर्वश्रेष्ठ कविताओं से मिलने वाली पत्रिकाओं और पैसों को गिनूँगी। देखते हैं…
…दुखी। टेड से चिढ़ रही हूँ, जो कभी-कभी मेरी संवेदनशील नसों को ठेस पहुँचाता है [उल्लंघन]…। और मेरी हालत इससे भी बदतर है— चिड़चिड़ी, काम टालने वाली, और फिर से शुरू होने वाली अपरिहार्य दिनचर्या से बुरी भावना से व्याकुल।
कल दोपहर से लेकर आज तक मैं इतनी उदास और चिड़चिड़ी रही कि बिस्तर पर लेटे-लेटे हाथों की मैनीक्योर करने, छींकने, कांपने और महिलाओं की नवीनतम पत्रिकाएँ पढ़ने के अलावा कुछ नहीं कर पाई—मैककॉल और द लेडीज़ होम जर्नल: विडंबना पर विडंबना: मैककॉल, जिसे "एकता की पत्रिका" कहा जाता है, नाजायज बच्चों और गर्भपात पर लेखों की एक श्रृंखला चला रही है, एक लेख का शीर्षक है "पुरुष अपनी पत्नियों को क्यों छोड़ देते हैं"; तीन कहानियाँ और लेख, कहीं गंभीरता से तो कहीं हास्यपूर्वक, ऊब, निराशा या शर्मिंदगी से आत्महत्या पर विचार करते हैं। स्लोन (द मैन इन द ग्रे फ्लैनल सूट) विल्सन की धारावाहिक कहानी, "समर प्लेस", सिल्विया नाम की एक दुखी अधेड़ उम्र की महिला के बारे में है, जो उस आदमी के साथ व्यभिचार करती है जिससे उसे बीस साल पहले शादी कर लेनी चाहिए थी, लेकिन उसने नहीं की क्योंकि वह मूर्ख थी और सोलह साल की उम्र में जब उस आदमी ने उसके साथ बलात्कार किया था, तब उसे एहसास नहीं हुआ था कि वे एक-दूसरे के लिए बने हैं। व्यभिचार, प्रेम संबंध, निःसंतान महिलाएं, संवादहीन और उदास जोड़े - "क्या इस शादी को बचाया जा सकता है?" मनोवैज्ञानिक दो स्वार्थी, मूर्ख, असंगत लोगों से पूछता है, जिन्होंने शुरू से ही शादी करके मूर्खता की थी। मुझे धीरे-धीरे आश्चर्य हुआ कि ये सभी लेख और कहानियां इस विचार पर आधारित हैं कि भावुक और

अस्तित्व का उपयोग करता है, जिससे मैं प्रेम की अग्नि से प्रज्वलित और दमकती हूँ, और यही वह सब कुछ है जिसकी मैंने अपने पूरे जीवन में तलाश की—अपने प्रेम, अपनी सहज खुशी को निःसंकोच, बिना किसी रोक-टोक के, झूठ, दुरुपयोग या विश्वासघात के डर के बिना, खुलकर दे सकूँ। और इसलिए, इस सर्दी के निराशाजनक और बंद कमरे वाले माहौल में, कल रात मैंने अपनी नई सफेद नायलॉन की नाइटगाउन पहनी, जिसके कॉलर पर छोटे-छोटे लाल गुलाब कढ़ाई किए हुए थे, और टेड की चप्पलों में एक चॉकलेट का खरगोश और दस छोटे चॉकलेट के अंडे भर दिए, हर एक अंडा अलग-अलग रंग के एल्युमिनियम फॉयल में लिपटा हुआ था—चांदी पर हरे धब्बे, सुनहरे धब्बे, मोर के नीले रंग की धारियाँ। मुझे लगता है उसने सब खा लिए होंगे… आज, इस साल के कई दिनों की तरह, और मेरे जीवन के कई दिनों की तरह, एक भयानक दर्दनाक अनिश्चितता रही है। नींद से जागने के बाद एक अजीब सा बुरा सपना आया—एक नए धूमकेतु या उपग्रह को देखने का— गोल लेकिन शंकु के आकार का, जिसका सिरा किसी तराशे हुए हीरे की तरह पीछे की ओर था। मैं किसी ऊँची, अंधेरी जगह पर था और उसे अपने सिर के ऊपर से हीरे के चाँद की तरह गुज़रते हुए देख रहा था, जो तेज़ी से आँखों से ओझल हो रहा था। फिर अचानक, कई छोटे-छोटे झटके लगे और मैंने उस ग्रह को स्थिर अवस्था में कई फ्रेमों में रुका हुआ देखा, जो किसी कारणवश मानव आँख को दिखाई नहीं देता था। और तुरंत ही मुझे ऊपर उठा लिया गया, मेरा पेट और चेहरा धरती की ओर था, मानो मैं किसी कमरे में बीच में एक खंभे से लटका हुआ हूँ और कोई मुझे घुमा रहा हो। मैंने नीचे टेड के खाकी रंग के पैरों को कुर्सी पर फैला हुआ देखा, और कमरे में भीड़ लगाए हुए अन्य बेनाम लोगों के शरीर देखे, और मेरा सारा संतुलन बिगड़ गया, चक्कर आने लगा। जैसे ही मैं घूम रहा था और वे नीचे घूम रहे थे, मैंने दूर से

आती हुई, गंभीर, तारों जैसी आवाज़ें सुनीं जो मेरे और मेरी प्रायोगिक स्थिति के बारे में चर्चा कर रही थीं और आगे क्या करना है, इसकी योजना बना रही थीं। मैं चीखता हुआ, बीमार सा घूमता रहा, और जब उठा तो मेरा गला चाकू से काटे जाने जैसा दर्द कर रहा था, सिरदर्द अपने चरम पर था, और नाक सूजी हुई थी और बह रही थी। अप्रैल फूल डे पर एक मूर्ख के बारे में कविता लिखने की कोशिश की, लेकिन इतनी कमजोरी और नशे की वजह से कलम उठा भी नहीं पाया, इसलिए कुछ नहीं हो सका। बहुत उदास महसूस कर रहा हूँ। इस तरह वीकेंड बर्बाद करना मुझे बिल्कुल पसंद नहीं। धिक्कार है। इससे मुझे स्पेन की ठंडी हवा में सांस लेने की इच्छा हो रही है। बियर्ड्सले की किताब को ध्यान से पढ़ा। ऐसा लगा जैसे सदी का अंत हो गया हो और मैं खुद भी मर चुका हूँ।
… मैंने जितना सोचा था उससे कहीं ज़्यादा जो काम किया है, वो है वसंत की छुट्टियों में वो आठ बेहतरीन कविताएँ लिखना, और मेरी किताब में अब 30 कविताएँ और 48 टाइप किए हुए डबल-स्पेस वाले पन्ने हो गए हैं। मेरा लक्ष्य है कि अगले साल 31 दिसंबर तक, यानी साल के अंत तक, 30 और कविताएँ लिख लूँ: तब तक किताब तैयार हो जाएगी और उम्मीद है कि सारी कविताएँ प्रकाशन के लिए स्वीकार हो जाएँगी। इन त्रैमासिक पत्रिकाओं में तो कितनी घटिया चीज़ें छपती हैं…
... स्वास्थ्य में सुधार और वसंत ऋतु के अटूट आगमन के साथ, मुझे वह पहली वास्तविक, गहरी शांति और आनंद प्राप्त हो रहा है जो मैंने अपने बचपन के बाद से जाना है, जब मैं रंगीन कहानियों और परियों की कहानियों के सपने देखता था।
आज एक वर्षगांठ है। दो साल पहले, 13 तारीख, शुक्रवार के दिन, मैंने रोम से यूरोप के धुंध से घिरे आसमान से होते हुए लंदन के

लिए एक विमान लिया—गॉर्डन, सैसून—अपने पुराने जीवन—को त्याग दिया और टेड को अपना लिया, और मेरा पुनर्जन्म उस हरे-भरे और अद्भुत कैम्ब्रिज वसंत के साथ हुआ। मुझे इसे अपने उपन्यास में और मैक्कल और द न्यू यॉर्कर के लिए विभिन्न कहानियों में लिखना चाहिए—मैं कर सकती हूँ: वसंत की छुट्टियों पर लिखी गई इन आठ कविताओं ने मुझे यह विश्वास दिलाया है कि मेरा दिमाग और मेरी प्रतिभा मेरे दुखों, पीड़ाओं और कठिनाइयों के नीचे विकसित हो रही है—जैसे कि मेरे राक्षस और देवदूत उन सभी उपहारों की रक्षा और वृद्धि कर रहे थे जिन्हें मैंने उस काले वर्ष के दौरान अनदेखा किया, भुला दिया और निराश किया, जो अब तक का सबसे परिपक्व और साहस प्रदान करने वाला वर्ष साबित हुआ है—मैं इससे कठिन परीक्षा की कल्पना भी नहीं कर सकती थी…
... मैं महिलाओं की पत्रिकाओं के लिए लिख सकता हूँ: यह भावना मुझ पर धीरे-धीरे हावी होती जा रही है—उतनी ही आसानी से जैसे मैंने सेवेंटीन के लिए लिखा था, अपनी कला को बरकरार रखते हुए: मैं अपना नाम सिल्वन ह्यूजेस रखूंगा—मनमोहक रूप से देहाती, रंगीन—फिर भी लिंगहीन और मेरे अपने नाम के करीब: एक बिल्कुल सुरीला पत्रिका नाम।
टेड ह्यूजेस को हार्वर्ड में एक पाठ देने के लिए आमंत्रित किया गया था, यह एक भव्य अवसर था जिसने प्लाथ की एक कट्टर प्रतिद्वंद्वी एड्रिएन रिच के साथ पहली मुलाकात को भी चिह्नित किया, जिनके काम का वह बहुत सम्मान करती थीं।
वापसी का सफर: गर्म, धूप भरा और एक नई शुरुआत: पहाड़ अविश्वसनीय रूप से चमकीले बैंगनी रंग के और दूर नीले आसमान में बर्फ से ढके हुए, पानी से भरे जंगल जिनमें पेड़ बीच तक नीले रंग में डूबे हुए थे; एक मरा हुआ खरगोश, एक मरा हुआ काला-सफेद स्कंक जिसके चारों

छोटे पैर गलकर चूर-चूर हो गए थे; सत्ताईस मजबूत, नुकीली नाक वाली फॉक्सवैगन गाड़ियां—हम उनका एक सहज सांख्यिकीय सर्वेक्षण कर रहे हैं। अब, बेडरूम में टेड को टाइप करते हुए सुनकर [उदासीन] … और कालीन पर गुलाबी रंग के खुरदुरे और टुकड़े देखकर, मैं मेलविल को स्थगित कर देती हूँ, वसंत के पुनरुत्थान और अपने स्वास्थ्य के साथ एक कविता लिखने की लालसा रखती हूँ, उस एक दिन के लिए जो दो साल पहले मुझे मेरे सपने, मेरा प्यार, मेरा कलाकार और मेरा कलाकार का जीवन लेकर आया था… अब अंत में शुक्रवार के बारे में: हम ओलों के एक क्षैतिज बवंडर से जूझते रहे जिसने मेरी खिड़की के पूरे हिस्से को ढक लिया था क्योंकि विंडशील्ड वाइपर काम नहीं कर रहा था और मुझे बहुत बेचैन कर रहा था क्योंकि मैं ओलों की अर्ध-अपारदर्शी परत के माध्यम से केवल पास आते ट्रकों की विशाल आकृतियाँ देख पा रही थी और प्रत्येक आकृति आती हुई, मंडराती हुई, एक खतरा, एक संभावित मौत लग रही थी। हम आगे बढ़ते रहे, अच्छे स्टेक सैंडविच खाते रहे, थर्मस से खौलती कॉफी पीते रहे, और बर्फ में चलने वाले भृंगों की तरह फॉक्सवैगन की गिनती करते रहे। टेड से 50 मील प्रति घंटे से दस मील प्रति घंटे कम चलने की विनती करने के ढाई घंटे बाद, हम संकरी और परिचित लकड़ी की सड़क, वेस्टन रोड पर पहुँचे। हम एल्मवुड [रोड, वेलेस्ली] से आगे फेल्स ड्रगस्टोर तक गए, जहाँ मैं बर्फीले पानी से भरे कीचड़ से बने गड्ढों में उतरा, जो टखनों तक गहरे थे। अंदर भागा और अपने चिपचिपे बालों को ठीक करने के लिए एक ड्राई शैम्पू खरीदा। एल्मवुड वापस आकर, बोरियाँ उतारीं और ब्रांडी का आखिरी घूंट पिया। फिर ब्राउनलीज़ गए, जहाँ हमने पोलियो का दूसरा टीका लगवाने के लिए अपनी बाहें दिखाईं, कोकीन का प्रिस्क्रिप्शन लिया, फिर धीमी गति से चल रहे ट्रैफिक से होते हुए कैम्ब्रिज

पहुँचे, जहाँ जैक स्वेनी, जो सफेद बालों वाले और प्यारे थे, कविता कक्ष के शांत वातावरण में हमारा इंतजार कर रहे थे। हम बर्फ, कीचड़ और छोटी-छोटी धाराओं में धँसते हुए आगे बढ़े। एक टैक्सी में बैठे और रेडक्लिफ के लॉन्गफेलो हॉल पहुँचे। मकबरे जैसा। सुनसान। मुझे लगा कि कोई नहीं आएगा। सफेद पोशाक पहने एक अटेंडेंट के पीछे-पीछे गूंजते संगमरमर से सजे और पॉलिश किए हुए हॉल से होते हुए एक शौचालय तक गए, जहाँ एक हष्ट-पुष्ट रेडक्लिफ की लड़की अपने बाल संवार रही थी। वहाँ कोई चमकीला तरल साबुन नहीं था, बल्कि गंदगी साफ करने वाला बोरेक्स था। और कीटाणुनाशक की ताजगी भरी गंध थी। हॉल में वापस जाकर हैरी लेविन की सांवली, चुस्त-दुरुस्त छोटी रूसी पत्नी से हाथ मिलाया: “हैरी शादी के बंधन में हैं। मैं ध्यान से सुनती हूँ।” श्रीमती कैंटर, मार्टी (मार्सिया ब्राउन), माइक और कैरोल पियर्सन का अभिवादन करने के बाद हम अंदर गए और कमरा मेरी आँखों के सामने धुंधला सा हो गया। बहुत बड़ा कमरा, बहुत कम लोग—श्रोता इधर-उधर बिखरे हुए थे। मैंने श्रीमती लेविन का पीछा किया और मैरे का चमकीला पीलापन, सुनहरे बाल जो एक नीची जूड़े में बंधे थे, और काले और भूरे पंखों से बनी एक विचित्र छोटी टोपी देखी, जो चिड़िया के पंखों जैसी लग रही थी। टेड ने (जैक द्वारा एक बढ़िया और सटीक परिचय के बाद, जिसमें स्टील फैक्ट्री में रात के चौकीदार के काम और गुलाब के माली के रूप में नौकरी का जिक्र था) पढ़ना शुरू किया। मुझे ठंड लग रही थी, श्रोता फीके और ठंडे लग रहे थे। जिन कविताओं को मैं कंठस्थ जानता था, उन्हें सुनकर मेरे मन में विस्मय और आश्चर्य की एक स्वाभाविक सिहरन दौड़ गई: मेरी आँखों से आँसू छलक पड़े। श्रीमती लेविन बेचैन हुईं, उन्होंने अपना पर्स निकाला और एक खड़खड़ाते लिफाफे पर पेंसिल से कुछ लिखा, मुझसे "द थॉट-फॉक्स"

का शीर्षक दोहराने को कहा। दूर कहीं, घड़ी में पाँच बज गए। टेड ने टेनीसन से भी बेहतर कविताएँ लिखने की बात कही—दर्शक हँसे, एक सुखद धीमी गड़गड़ाहट। हँसे और मन को सुकून दिया। मैं थोड़ा शांत हुआ: नई कविताओं ने सुखद आश्चर्य दिया—"टू पेंट अ वॉटरलिली": स्पष्ट, गीतात्मक—समृद्ध और फिर भी खुरदुरा। उन्होंने "एक्रोबेट्स" पर अपनी कविता समाप्त की—वास्तव में, यह उनके लिए एक काव्यात्मक कलाबाज-प्रतिभा और इच्छुक तथा कई मामलों में ईर्ष्यालु श्रोताओं के लिए एक सटीक रूपक था। तालियों की गड़गड़ाहट गूंजी। जैक ने ऊपर जाकर टेड से एक और कविता पढ़ने को कहा। उन्होंने "द कैजुअल्टी" पढ़ी। मुझे ठीक उसी दूरदर्शिता के साथ पता था, जैसा दो साल पहले इस मुकाम की कल्पना करते समय था, कि दस साल में टेड के सामने हार्वर्ड स्टेडियम खचाखच भरा होगा, जहाँ दर्शक तालियाँ बजाएँगे और उसकी प्रशंसा करेंगे। दर्शक तितर-बितर हो गए और अचानक सब दोस्त जैसे लगने लगे—पीटर डेविसन, श्रीमती ब्रैग (अब हैरी लेविन की सचिव), गॉर्डन लैमेयर (निस्संदेह बेहद ईर्ष्यालु, लेकिन अपने तरीके से नेक, जो आने ही वाले थे—अपने बड़े प्रोजेक्ट—फ्रेमिंगम म्यूजिक सर्कस—के बारे में एक पर्चा निकालते हुए, जिससे वे अमीर बन जाएँगे और जिसके लिए उन्होंने लाखों डॉलर का समर्थन जुटाया है)। फिल मैककर्डी, संयमित, युवा चेहरे वाले, मार्ला से विवाहित, एक बच्ची के पिता और ब्रुकलाइन हाई में जीव विज्ञान पढ़ाते हुए, स्क्रिब्नर के लिए विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का चित्रण करते हुए, हमें इस गर्मी में एक दोस्त की नौका पर मेन की संयुक्त यात्रा का प्रस्ताव देते हुए, जिसकी मुझे उम्मीद है कि वह सच हो जाए। माँ—दुबली-पतली और कुछ हद तक कमजोर—और नीली आँखों वाली श्रीमती प्राउटी: "टेड कितना अद्भुत है!" फिलिप बूथ:

पहली बार मुलाकात हुई—वह आकर्षक और अजीब तरह से भले इंसान जैसे मासूम दिखते थे। हमने एक-दूसरे की तारीफ की, उनकी चाची और उम्रदराज स्मिथ मनोचिकित्सक डॉ. बूथ के बारे में बात की। जब मैंने उनसे पूछा कि क्या वह अगले साल वेलेस्ली में पढ़ाएंगे, तो वह थोड़ा हिचकिचाए और कुछ खुशी के साथ स्वीकार किया कि उन्होंने अभी-अभी सुना है कि उन्हें गुगेनहाइम पुरस्कार मिला है। लेकिन वह, उनकी पत्नी और बच्चे अगले साल यहाँ होंगे। फिर मिलने की उम्मीद है। एड्रिएन सेसिल रिच: छोटी, गोल-मटोल और ठिगनी सी, घने छोटे काले बाल, बड़ी चमकीली काली आँखें और एक ट्यूलिप-लाल छाता लिए हुए: ईमानदार, स्पष्टवादी, खरी और यहाँ तक कि अपनी राय रखने वाली भी। भीड़ कम हो गई, और स्वेनी परिवार, टेड, मैं और एड्रिएन बारिश में भीगते हुए टैक्सी तक पहुँचे, फिर (जैक, टेड और मैं) अपनी भीगी हुई प्लाईमाउथ कार में सवार हुए, और जल्द ही वॉलनट स्ट्रीट की पहाड़ी ढलान पर लाल ईंटों से बने पत्थरों पर धीरे-धीरे चलते हुए जैक के पॉलिश किए हुए हॉल की ओर बढ़े, जो पूरी तरह से फिसलन भरे काले और सफेद लिनोलियम से ढका था। उनका अपार्टमेंट पतली सुनहरी सलाखों वाली लिफ्ट से पहुँचा जाता था। वहाँ एड्रिएन और मैरे भी थीं—साथ ही हिरण जैसी आँखों वाले सांवले अल कॉनराड भी, हार्वर्ड के एक अर्थशास्त्री, जिनके साथ मुझे शुरू में थोड़ी ठंडक और असहजता महसूस हुई। मैं अपनी पुरानी और भरोसेमंद लैवेंडर ट्वीड ड्रेस में थी, जो हल्के रंग की थी, जिस पर चमकीले फ़िरोज़ी और सफेद रंग की बुनाई और नीले और चांदी के मोती लगे थे। दो बॉर्बन और बर्फ़ वाला पानी। पता चला कि बाईं दीवार से बाहर निकलती हुई दो विशाल पेंटिंग पिकासो की असली पेंटिंग थीं (लगभग 1924)। दाईं ओर भूरे, क्रीम और काले रंग की रचना, जिसमें एक भयावह काला मुखौटा है—यह जुआन ग्रिस की

कृति है। और पुस्तकालय में, पुराने जैक येट्स द्वारा घोड़े पर सवार एक व्यक्ति का नीले-हरे रंग का जीवंत चित्र (द सिंगिंग राइडर)—डब्ल्यू.बी. के भाई—"कुछ हद तक सूटीन जैसा—कोकोश्का जैसा"

q
(जिन्हें मैं श्रीमती वैन डेर पोएल के बिना नहीं जान पाती)। मैं सबसे अलग-थलग महसूस कर रही थी। लैवेंडर ट्वीड में बुखार सा लग रहा था। फिर हम अल की बड़ी स्टेशन वैगन में "फेलिशिया के यहाँ रात के खाने" के लिए निकल पड़े। रोशनी का एक धुंधलापन, नियॉन बत्तियाँ। हमने हनोवर स्ट्रीट पर गाड़ी खड़ी की—दुकानों और भोजनालयों से भरी पेरिस की एक बिस्ट्रो गली। हम सिर झुकाए एक संकरी गली से गुज़रे, एक बेकरी के शानदार कमरे के पास से। एक खिड़की पर मक्खन जैसी चिकनी कागज़ की परत लगी थी, अंदर का हिस्सा बिल्कुल सादा था। एक भारी लकड़ी की मेज़ पीले- भूरे रंग के गोल केक से भरी थी, बड़े, मध्यम और छोटे आकार के। दो आदमी सफ़ेद एप्रन पहने एक तीन-मंज़िला चौकोर केक पर सफ़ेद फ्रॉस्टिंग लगा रहे थे। फिर एक संकरा दरवाज़ा दिखा जिस पर "फेलिशिया" लिखा था। वहाँ महिलाओं की भीड़ थी—जो खुद को "लड़कियाँ" मानती थीं, शायद टेलीफ़ोन ऑपरेटर थीं—उनमें से एक के गले में फूलों का गुलदस्ता था: उनके चेहरे पुराने ज़माने के या कुछ हद तक भड़कीले लग रहे थे: "बेटी क्लार्क?" "बेटी एंड्रयूज?" उन्होंने सीढ़ियों के ऊपर अपने जूते और छाते समेटे और चली गईं। हम बैठ गए, मैं जैक के साथ बाईं ओर और अल दाईं ओर। हमने नीले कांच के कलश जैसी दिखने वाली बढ़िया सूखी इतालवी सफ़ेद वाइन की बोतल से शुरुआत की। लाल सॉस में गरमागरम एंटीपास्टो झींगे और फेलिशिया खुद एक ईमानदार अभिनेत्री की तरह, बाज जैसी नाक, चमकीले आड़ू-गुलाबी स्वेटर और उससे मेल खाते लिपस्टिक और पाउडर के साथ, मेनू के नाम फटाफट बता रही थी:

"फेट्टुसिनी, लिंगुइन।" मैंने अल से तपेदिक के बारे में बात की... गहराई से, और भी गहराई से, उसके साथ बातचीत का आनंद लेते हुए। काफी देर तक, चिकन कैसियाटोर के बारे में बात करते हुए, जिसमें हड्डी के अजीब टुकड़े और सफेद मांस के टुकड़े थे। फिर जैक की ओर रुख किया, जिसने मुझसे जून में, शुक्रवार 13 तारीख को एक रिकॉर्डिंग करने के लिए कहा।
गुरुवार की सुबह, 17 अप्रैल। उठने, तैयार होने और सुबह की कक्षाओं में जाने का समय हो गया है। फिर भी, जब मैं जागता हूँ (और सुबह छह बजे के कुछ ही देर बाद हमारे कमरे में सूरज की तेज़ रोशनी होती है), तो मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं किसी कब्र से उठ रहा हूँ, अपने सड़े-गले, कीड़े-मकोड़ों से भरे अंगों को अंतिम प्रयास के लिए समेट रहा हूँ। कल का दिन खराब था—बेहद थका हुआ महसूस हुआ—कक्षा की तैयारी के लिए येट्स की कुछ कविताओं पर काम किया और उन्हें बार-बार पढ़ा: सिर में झनझनाहट हुई, रोंगटे खड़े हो गए। वे सच्चे हैं: एलियट के बिल्कुल विपरीत, और मुझे एलियट पसंद हैं। येट्स गीतात्मक और तीक्ष्ण, स्पष्ट, चट्टान की तरह तराशे हुए हैं। मुझे लगता है कि मेरी अपनी पसंदीदा कविताएँ "द डिसक्वाइटिंग म्यूज़ेज़" और "ऑन द डिक्लाइन ऑफ़ ओरेकल्स" इसलिए हैं क्योंकि उनमें वह अच्छा गीतात्मक तनाव है: एक साथ भरी हुई वाणी और संगीत: एक साथ मस्तिष्क और सुंदर शरीर। मुझे यह बात और भी ज़्यादा समझ में आ रही है कि मुझे अध्यापन छोड़कर लेखन पर ध्यान देना चाहिए: मेरे अंतर्मन को एकांत में जाकर, गहन भाव से भरे गीत और कविताएँ रचनी होंगी—जो डोनाल्ड हॉल और अन्य लेखकों की साफ़-सुथरी, नीरस और औपचारिक कविताओं से बिल्कुल अलग हों। मुझे कोई पहचान नहीं दे रहा। द न्यू यॉर्कर ने ढाई हफ्ते पहले भेजे मेरे पांडुलिपि का जवाब नहीं दिया। आर्टन्यूज़ ने भी मेरी

भेजी दो कविताओं का कोई उत्तर नहीं दिया: मैं डाक देखता हूँ और मुझे कुछ नीरस, जगह घेरने वाले पत्र मिलते हैं जो "प्रोफेसर ह्यूजेस" के नाम से आते हैं और जिनमें एक सुबोध वाक्य लिखने की कला पर उबाऊ किताबों के विज्ञापन होते हैं। मुझे अपनी शक्ति पर लगाम लगने का आनंद मिलता है—साथ ही यह एहसास भी होता है कि एक-दो साल में मुझे पहचान मिल जाएगी—जैसा कि अभी बिल्कुल नहीं है, हालाँकि मेरे पास एड्रिएन सेसिल रिच की कविताओं से भी कहीं ज़्यादा समृद्ध कविताएँ हैं। मैं खुद को व्यस्त रखता हूँ, अपने कार्यकाल के अंत के लिए बेचैन और उत्साहित हूँ…
मंगलवार सुबह, 22 अप्रैल… कल का दिन मेरे पहले दिन के दर्द और दवाइयों के असर से आई बेहोशी में डूबा रहा, जिसे श्राप कहना बिल्कुल सही है। क्या गर्मी में जानवर खून बहाते हैं, दर्द महसूस करते हैं? या फिर ये कि सुस्त और पढ़ी-लिखी महिलाएं पशुवत अवस्था से इतनी दूर आ गई हैं कि उन्हें दर्द सहकर ही कीमत चुकानी पड़ती है, जैसे छोटी जलपरी को अपनी मछली की पूंछ छोड़कर लड़की के सफेद पैर पाने पर कीमत चुकानी पड़ी थी?… रविवार रात को विगिन्स जाने के लिए तैयार होते समय टेड से एक बेतुकी कहा- सुनी हो गई—उसने मुझ पर आरोप लगाया कि मैंने उसके पुराने भयानक कफ़लिंक फेंक दिए “जैसे मैंने उसका कोट फेंक दिया था,” और उसकी चुड़ैलों पर लिखी किताब भी, क्योंकि मुझे यातना वाले हिस्से बिल्कुल पसंद नहीं थे। इनमें से कुछ भी सच नहीं था। उसने इसे मूर्खतापूर्ण नहीं कहा; मैं, अपनी ज़िद्दी आदत के कारण, भूली नहीं। इसलिए मैं बीमार होकर भाग गई। कहीं गाड़ी नहीं चला सकती थी। वापस आई। टेड बाहर जा चुका था। पार्क में बैठी थी—जो विशाल, अंधेरा और खामोश टेड्स से भरा हुआ था, या कहें कि कोई टेड नहीं था—रात के कीड़े पकड़ने वाले टॉर्च लेकर आए। मैंने पुकारा,

इधर-उधर घूमी। फिर मैंने उसकी आकृति को स्ट्रीटलाइट की रोशनी में वुडलॉन पर चलते देखा और उसके पीछे दौड़ी, जंगल के किनारे लगे चीड़ के पेड़ों की आड़ में छिपकर उसके रास्ते के समानांतर चलती रही। वह रुका, घूरा, और अगर वह मेरा पति न होता तो मैं उससे एक कातिल की तरह भाग जाती। मैं आखिरी मोटे देवदार के पेड़ के पीछे खड़ी हो गई और दोनों तरफ की शाखाओं को तब तक हिलाती रही जब तक वह मेरे पास नहीं आ गया। हम जल्दी से कपड़े बदलने और विगिन्स जाने के लिए भागे…
शाम: दुख भरा दिन: द न्यू यॉर्कर ने मेरी सभी कविताओं को अस्वीकार कर दिया (ओह, हॉवर्ड मॉस, या “उन्हें” “द डिसक्वाइटिंग म्यूज़ेज़” और रूसो की सेस्टिना पसंद आई)—अन्याय का गहरा एहसास, सिसकियाँ, दुख: पलटवार करने की इच्छा, लेकिन जून तक ऐसा करने के लिए समय या ऊर्जा नहीं। कोई काम नहीं हुआ: बिल्कुल नहीं — मेरे सभी पेपर चेक करने हैं और तीन घंटे की तैयारी करनी है। व्हाट मेज़ी न्यू खत्म किया: विडंबना यह है कि हेनरी जेम्स की जीवनी मुझे सुकून देती है और मैं उन्हें उनकी मरणोपरांत प्रतिष्ठा से अवगत कराना चाहती हूँ—उन्होंने दर्द में लिखा, अपना पूरा जीवन दे दिया (जो मैं सोच भी नहीं सकती—मेरे पास टेड है, बच्चे होंगे—लेकिन दोस्त बहुत कम हैं) और आलोचकों ने उनका अपमान और उपहास किया, पाठकों ने उन्हें पढ़ा ही नहीं। मैं सफलता के लिए बनी हूँ। क्या असफलता मेरी धार तेज करती है?…
29 अप्रैल… जब मैं कल की तरह उदास होती हूँ, तो मृत्यु के बारे में सोचती हूँ, इस बारे में कि दुनिया को बहुत कम जानते हुए, जागृत अवस्था में मरना होगा—महान लेखकों, फिल्म सितारों, मनोचिकित्सकों के जीवन के सपने। ऐसे लोग जिन्हें पैसे के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ता। फिर मैं बच्चे को जन्म देने के अपने

गहरे डर के बारे में सोचती हूँ, जो शायद बोस्टन के प्रसूति अस्पताल में कई साल पहले हुई उस महत्वपूर्ण घटना के इर्द-गिर्द घूमता है, जब एक गुमनाम कराहती हुई महिला, जिसके बाल मुंडे हुए थे और रंग-बिरंगे मेकअप लगा था, को चोट लगी, खून बहने लगा, पानी की थैली फट गई, और बच्चा खून से लथपथ नसों के साथ पैदा हुआ और उसने डॉक्टर के चेहरे पर पेशाब कर दिया। हर औरत ऐसा करती है: इसलिए मैं डरती भी हूँ और चाहती भी हूँ, चाहती भी हूँ और डरती भी हूँ। मैं यह भी सोचती हूँ कि मैं डोरिस क्रूक के आदर्श से कितनी दूर हूँ—मैं कितनी लापरवाह अंशकालिक विद्वान हूँ—न तो नन, न ही श्रद्धालु। और दूसरी ओर, मैं लेखन से कितना दूर हूँ—द न्यू यॉर्कर, द सैटरडे ईव पोस्ट में हज़ारों लोग लिखते हैं, काम करते हैं, पढ़ाई करते हैं, सामग्री जुटाते हैं, और मैं, सपने देखती हूँ और डींग मारती हूँ कि मैं यह कर सकती हूँ लेकिन करती नहीं और शायद कर भी नहीं सकती। और क्या? ओह, बच्चे के जन्म से पहले एक उपन्यास और कविताओं की किताब लिखने की इच्छा। पैसे की भी इच्छा, जिसके बारे में मैं कंजूस हूँ, कपड़े या दिखावटी चीज़ें नहीं खरीदती, हालाँकि मैं ऐसा करने में बेहिसाब खर्च कर सकती हूँ— ड्रेस और चटख रंगों के जूतों से शुरुआत कर सकती हूँ। आश्चर्य की बात है कि पैसा हमारी जैसी समस्याओं को कितना आसान बना देता। हम बिल्कुल भी बेहिसाब खर्च नहीं करते, बल्कि जीवन भर लिखते, यात्रा करते और पढ़ते रहते—जो मैं उम्मीद करती हूँ कि हम करेंगे ही। और एक अलग घर होता, सड़क के किनारे, चारों ओर ग्रामीण इलाका, एक अध्ययन कक्ष और किताबों से भरी दीवारें।
बुधवार, 30 अप्रैल… मैंने अपने उपन्यास की एक केंद्रीय घटना का अलंकृत, असंतुलित और शर्मनाक रूप से गंभीर, स्पष्ट संस्करण टाइप करने में कई घंटे बिताए: इस गर्मी में मैं हेनरी जेम्स और

जॉर्ज एलियट के मार्गदर्शन में सामाजिक शिष्टाचार और मर्यादा का अध्ययन करूँगा: मुझे लगता है कि मुझे इसकी आवश्यकता है, न कि उस बेतुके "आई लव यू किड, चलो बिस्तर पर चलते हैं" की, जो हर लड़के और लड़की को एक समान बना देता है, बल्कि एक जटिल, समृद्ध, रंगीन और सूक्ष्म वाक्य संरचना की, जो हर पल के विचार और भावना को समाहित कर सके…
गुरुवार, मई दिवस… हमेशा की तरह उठी, बीमार और अधमरी सी महसूस कर रही थी, आँखें चिपकी हुई थीं, भयानक सपने के बाद जीभ पर कफ़न का स्वाद था, जिसमें वॉरेन को रॉकेट से उड़ा दिया गया था। टेड, मेरा रक्षक, गर्म कॉफी का एक लंबा मग लेकर कमरे से बाहर आया, जिसे घूंट-घूंट करके पीते हुए उसने मुझे दिन भर के लिए तरोताज़ा कर दिया। वह पढ़ाने के लिए तैयार होकर बिस्तर के पास बैठा था। अब जाने ही वाला था कि मैं उसे फिर से देखते ही पलकें झपका लेती हूँ। यही वो आदमी है जिसके लिए असंतुष्ट औरतें 'द लेडीज़ होम जर्नल' में कहानियाँ पढ़ती हैं, जिसके लिए औरतें रोमांटिक उपन्यास पढ़ती हैं: ओह, वो अविश्वसनीय है और इसलिए भी क्योंकि वो मेरा पति है और मुझे किसी तरह उसके लिए खाना बनाना (कल रात मैंने लेमन लेयर केक बनाया था) और उसकी सेक्रेटरी बनना अच्छा लगता है। और दुनिया के उन सभी पुरुषों को पीछे छोड़ते हुए जो अपने पक्षपात से मुझे ऊबा देते हैं, मैं इकलौती हूँ। इसे खास कैसे बनाऊँ? मेरे उपन्यास में, भावुकता के अलावा: एक बड़ी समस्या। आज मेरी परीक्षा है, इसलिए मुझे बोर्ड पर लिखने के लिए जल्दी जाना होगा—लेकिन यहाँ मैं अपने लहजे और भावनाओं में आए एक सचेत बदलाव को दर्ज करना चाहती हूँ: अचानक मुझे एहसास हुआ कि मैं अब शिक्षिका नहीं हूँ—ओह, अभी एक महीना और एक दिन बाकी है, लेकिन जैसे मैं अपनी पहली कक्षा से एक महीने पहले घबराहट के साथ

शिक्षिका बनी थी, वैसे ही मेरे भविष्यसूचक पैंस और केवास (ओइजा आत्माएं) पहले ही मुक्त हो चुके हैं, और मैरिएन मूर, वालेस स्टीवंस आदि को पढ़ने से उत्पन्न हर खुजली पर लिखने के लिए उनका बेचैन खिंचाव मेरे संतुलन को बिगाड़ रहा है—अचानक मुझे अब कोई परवाह नहीं है—द वेस्ट लैंड चाहे जैसे भी चले—मैं पहले ही एक दूसरी दुनिया में हूँ—या दो दुनियाओं के बीच, एक मृत, दूसरी जन्म लेने के लिए तड़प रही है। संकाय के स्थायी सदस्य हमें भूतों की तरह मानते हैं—ऐसी परछाइयाँ जो पहले ही जा चुकी हैं और जिनका अपने भविष्य में कोई वास्तविक हित नहीं है… मैं अपने काम के प्रति हास्यास्पद रूप से उदासीन हूँ—दूर, हैरान, जैसा कि मैंने कहा, मैं जिस दुनिया में काम कर रही हूँ, उसकी एक परछाई महसूस कर रही हूँ, जिसकी कोई परछाई नहीं है। और इस तरह जीना एक तरह से जीवित मृत्यु के समान है, जिस पर मैं इस सप्ताह और अगले सप्ताह टी. एस. एलियट के बारे में विस्तार से चर्चा करूंगा। मुझे आश्चर्य है कि मैं 22 मई तक कैसे जीवित रहूंगा। 1 जून तक चलने वाली आर्विंन परीक्षाएं कोई समस्या नहीं हैं: समस्या तो मंच पर दिए जाने वाले उपदेशों से है।
शनिवार, 3 मई। मैंने विलियम डनबर की कुछ रचनाएँ पढ़ीं, 'द व्हाइट गॉडेस' का कुछ अंश पढ़ा, और अपने बच्चों के लिए कई सूक्ष्म प्रतीकात्मक नाम खोजे जिनकी आत्माएँ मुझे सताती हैं—कि मेरा दर्द और मेरे दो पैर चलने-फिरने और बोलने वाले इंसानों के लिए द्वार बन सकते हैं—यह बहुत अजीब और डरावना लगता है। हमने सोचा: ग्विन, एलिसन, विवियन, मारियन, फैरर, गावैन। सभी श्वेत देवियाँ और शूरवीर… मैं अपनी कविता की पांडुलिपि उठाती हूँ और उसके पन्ने पलटती हूँ, कुछ नया गढ़ने या सृजन करने में असमर्थ—अपने छात्रों के लिए मेरी सारी कल्पनाशील पुरानी यादें इस विश्वास

को नहीं हिला सकतीं कि शिक्षण एक मुस्कुराता हुआ सार्वजनिक सेवा पिशाच है जो बिना धन्यवाद कहे खून और दिमाग पी जाता है। सोमवार, 5 मई… काश… मैं अनौइल्ह का वादन देखने जा पाती—मैं टेड से एक घंटे के लिए भी अलग होने को लेकर बहुत अंधविश्वासी हूँ। मुझे लगता है कि मुझे उसकी गर्माहट और मौजूदगी में ही जीना है, उसकी खुशबू और उसके शब्दों में—जैसे मेरी सारी इंद्रियाँ अनजाने में उसी से पोषित होती हैं, और कुछ घंटों से ज़्यादा उससे वंचित रहने पर मैं मुरझा जाती हूँ, सूख जाती हूँ, दुनिया से बेखबर हो जाती हूँ… मैंने लाल रेशमी मोज़े और लाल जूते पहने— ये बहुत अच्छे लग रहे हैं, या यूँ कहूँ कि रंग बहुत अच्छा लग रहा है—लगभग दहकती आग जैसा रेशम मेरे पैरों को ढके हुए है। मैं उसे देखना बंद नहीं कर पा रही हूँ—मोज़ा लगभग मांस के रंग का है, लेकिन हवा में अपना आकार बनाते हुए पैरों के किनारों पर गुलाबी रंग में बदल जाता है और चमकता है, गोलाई में लाल रंग केंद्रित होता जाता है, मेरे हिलने-डुलने के साथ-साथ बदलता रहता है। बहुत संतोषजनक। आज दोपहर रॉबर्ट लोवेल का संगीत सुनने के लिए मैं अपनी सफेद प्लीटेड ऊनी स्कर्ट और गहरे नीले रंग की चौकोर गले वाली जर्सी पहनूंगी। मैंने कल रात उनकी कुछ कविताएँ पढ़ीं और मुझे अजीब तरह से वैसी ही प्रतिक्रिया (उत्साह, खुशी, प्रशंसा, उनसे मिलने और उनकी सराहना करने की उत्सुकता) हुई, जैसी सेंट बोटॉल्फ में टेड की कविताएँ पढ़ते समय हुई थी। उनके शब्दों का स्वाद चखिए: कठोर, पेचीदा, रंगों और क्रोध से भरपूर, अत्यंत सहजता से कहने योग्य: "जहाँ मजबूत लोहे के अजगर बर्फीले तूफान को जकड़ लेते हैं।" हे भगवान, कॉफी के बाद तो मुझे भी लगता है कि मेरी आवाज़ भी वैसी ही दमदार और रंगीन निकलेगी! आज मैं लियोनार्ड और एस्थर बास्किन के साथ बिताई अपनी रविवार रात के

बारे में लिखना चाहती हूँ, जिनसे हमारी अचानक और सुखद मुलाकात हुई। रविवार का दिन थोड़ा उदास था, परीक्षा के बीचोंबीच में धूसर, गीले मौसम और ठंड का सामना करना पड़ा। रात के खाने के बाद मैं टेड को सिल्वन ले गई ताकि वह वसंत प्रतियोगिताओं और नकद पुरस्कारों के लिए जमा की गई कविताएँ पढ़ सकें। पॉल रोश वहाँ मौजूद थे, उनका चेहरा चमकीला कृत्रिम नारंगी रंग का था, उनकी आँखें संगमरमरी नीली थीं और उनके बाल कुछ हद तक सँवारे हुए और घुंघराले गेहूँ जैसे थे—मुझे उनकी चालबाज़ियों, उनके कथित "विशाल" पत्राचार और लोगों से मिलने की उनकी क्षमता के बारे में जानने की उत्सुकता हो रही है…
रविवार, 11 मई। मातृ दिवस। माँ ने कल रात देर से फोन करके गुलाबी कैमेलिया और गुलाबी गुलाबों के लिए धन्यवाद दिया। अजीब माँ— बोस्टन आने में हमारी मदद करने को लेकर सख्त। उनका चेतन मन हमेशा उनके अवचेतन मन से युद्धरत रहता था: भयानक असुरक्षा के उनके सपने, घर खोने का डर—हमारी कविताएँ प्रकाशित होने पर उनकी संयमित प्रशंसा, मानो यह कवि के रूप में डूबने और सभी "सुरक्षित" शिक्षण कार्यों को अस्वीकार करने के हमारे संकल्प के ताबूत में एक और कील हो... मेरी किताब का एक और शीर्षक: फुल फैथम फाइव। मुझे लगता है कि दर्जनों किताबों का यही शीर्षक होगा, लेकिन मुझे अभी कोई याद नहीं आ रही। यह मेरे जीवन और कल्पनाओं से किसी भी अन्य रचना से कहीं अधिक गहराई से जुड़ा है: इसमें 'द टेम्पेस्ट' की पृष्ठभूमि है, समुद्र का जुड़ाव है, जो मेरे बचपन, मेरी कविताओं और कलाकार के अवचेतन मन के लिए एक केंद्रीय रूपक है, पिता की छवि है—जो मेरे अपने पिता से संबंधित है, मेरे भीतर दबी हुई पुरुष प्रेरणा और ईश्वर-सृष्टिकर्ता जो टेड में मेरे साथी के रूप में प्रकट हुए,

समुद्र-पिता नेपच्यून से—और मोती और मूंगे जिन्हें कला में उत्कृष्ट रूप से गढ़ा गया है: दुख और नीरस दिनचर्या की सर्वव्यापी धूल से समुद्र में रूपांतरित मोती। मैं 'द विंग्स ऑफ द डोव' के साथ आगे बढ़ रही हूँ और सभी देशों की शानदार लोक कथाओं और परियों की कहानियों के एक हजार पृष्ठों के संकलन को बड़े चाव से पढ़ रही हूँ, मेरा मन एक बार फिर जादू और राक्षसों से भर रहा है—मैं उन्हें अपने भीतर समाहित कर रही हूँ। ओह, अगर मैं अकेली रह जाऊँ, तो मैं खुद को एक महान कवि में बदल दूँगी। मैं अपने लेखन की शुरुआत जादुई वस्तुओं से करूंगा: समुद्र में दाढ़ी वाले शरीर—और इस प्रकार शुरुआत करूंगा, अपने गहरे डूबे हुए मस्तिष्क की गहराइयों में उतरते हुए, "और यह पुराना है, पुराना है, पुराना है, पुराना है, पुराना है, उदास और थका हुआ है, मैं तुम्हारे पास लौटता हूं, मेरे ठंडे पिता, मेरे ठंडे पागल पिता, मेरे ठंडे पागल भयभीत पिता..."—जैसा कि जॉयस कहते हैं, नदी इसी प्रकार देवत्व के पैतृक स्रोत की ओर बहती है।
मंगलवार सुबह, 13 मई… अभी लिखने का मन नहीं कर रहा: मेरा सतही मन खुद को व्यस्त रखना चाहता है: नौ महीने नौ हफ्तों में सिमटते हैं, जो धीरे-धीरे वर्तमान नौ दिनों में सिमटते हैं। कुछ हद तक यही मुझे लिखने से रोकता है (रविवार को मैंने अपनी मकान मालकिन के बारे में एक नीरस, उबाऊ कविता लिखने की कोशिश की, जो बेहद निराशाजनक, बोझिल और मुझे बुरी तरह से उदास कर देने वाली थी: जैसे ही मैं समय की इन सीमाओं के भीतर कोई खराब कविता लिखता हूँ — यह जानते हुए कि मैं दोबारा कोशिश नहीं कर सकता, यह जानते हुए कि मैं इसे यूं ही फेंक नहीं सकता, और अगले ही पल नए सिरे से शुरू नहीं कर सकता—मुझे अपने भीतर के बड़बड़ाते राक्षस और अफरीत या जो भी हों, जॉर्ज गिबियन या श्रीमती वैन डेर पोएल के उसी

व्यंग्यात्मक, संरक्षणवादी लहजे में मेरा मज़ाक उड़ाते सुनाई देते हैं: गर्मियों में क्यों नहीं लिखते? तुम्हें क्या लगता है कि तुम लिख सकते हो, या लिखना चाहते हो, या लिखोगे ही? तुमने बहुत कम दिखाया है, और शायद और भी कम दिखाओगे!) मेरे दो साथी हैं: टेड, और खुद के लिए समय निकालना ताकि मैं फाल्कन यार्ड के उस 35 पन्नों के विवरण की कच्ची, सामान्य और सतही शैली को निखार सकूँ, जिसे मैंने न्यू वर्ल्ड राइटिंग को भेजा था। हेनरी जेम्स मुझे हर घंटे कुछ न कुछ सिखाते हैं—वे मेरे लिए बहुत परिष्कृत हैं— लेकिन फिर, मैं इतना अशिष्ट और मुखर हूँ कि उनका पाठ मुझे केवल कम अशिष्ट बना सकता है, अधिक परिष्कृत नहीं—मुझे सिखाता है कि जीवन कितना घुमावदार, समृद्ध है, वाक्य और कार्य अर्थ और निहितार्थ की सारी समृद्धि से भरे हुए हैं। खैर, मैं 'द विंग्स ऑफ द डोव' आधा पढ़ चुका हूँ: मिली मुझे बेहद अच्छी लगती है... इतनी महान: वह देखती रहती है और न तो पीछे हटती है, न ही नीच, न ही छोटी: मैगी वेरवर की तरह वह "अपने अन्याय की अश्लील गर्मी" में लिप्त नहीं होती। जिसके साथ, जिसके नीचे, मैं फट पड़ूँगा। क्या "सरल" होने से, वे उसी गुण से, अत्यधिक परिष्कृत नहीं हैं? ओह, अगर मेरी डोडी थोड़ी जटिल हो सकती है: अनैतिकता की समस्या यह है कि यह वांछित वस्तु की अनुपलब्धता के अलावा कोई तनाव पैदा नहीं करती: एक बार यह मिल जाए, तो बाकी तनाव एक भयंकर, सर्वव्यापी बाढ़ में डूब जाते हैं। मुझे अपने शानदार सांडों के लिए एक असली चीनी मिट्टी के बर्तनों की दुकान बनानी होगी, नकली नहीं। मैंने मिली के बारे में पढ़ा, जिसकी बीमारी अभी तक स्पष्ट नहीं है। और मैं कलम उठाने की हिम्मत भी नहीं कर पा रही हूँ। मैं यहाँ इसलिए नहीं लिख रही हूँ क्योंकि लिखने का ख्याल ही मुझे थका देता है। मुझे बुखार जैसा महसूस हो रहा है, लेकिन मेरा तापमान बिल्कुल

सामान्य है: मैं पढ़ने के लिए बहुत थकी हुई हूँ, लिखने के लिए बहुत थकी हुई हूँ, अपने आखिरी तीन पाठ तैयार करने के लिए बहुत थकी हुई हूँ, जिनके लिए मुझे कम से कम मेहनत तो करनी चाहिए। मैं अपने बाथरोब और ऊनी मोजों में ठंडे, बेहद साफ-सुथरे और खाली कमरे में घूम रही हूँ: सफाई मेरी आत्मा को कितना सुकून देती है। मुझे इस गर्मी में एक कठिन प्रशिक्षण शुरू करना है। एक तरह से देखा जाए तो, कविता संग्रह लिखना, उपन्यास लिखना बहुत छोटी बात है: दूसरों की गुणवत्ता और मात्रा की तुलना में। और कुछ भी, जानबूझकर, मेरी महत्वाकांक्षा को पुष्ट नहीं करता। मेरी पलकें लाल, सूजी हुई और दर्द से भरी हैं, होंठ पर एक अजीब सा लाल धब्बा है—और यह थकावट किसी गुप्त और विनाशकारी बुखार की तरह है—क्या मैं अपने सपनों को साकार कर पाऊँगी?… मेरे अंदर एक दृढ़ता है जो इन पिछले दो हफ्तों से भी नाराज़ है और मुक्ति की लालसा रखती है, तैयारी में समय बर्बाद नहीं करना चाहती। मैंने कल का पूरा दिन भागदौड़ में, खरीदारी में, छानबीन में और एक पतला लेकिन स्वादिष्ट कस्टर्ड-मेरिंग्यू-रास्पबेरी पाई बनाने में बिताया। पॉल और क्लैरिसा आए, क्लैरिसा पाँच महीने की गर्भवती थी, काली ढीली कमीज़ के नीचे उसका वज़न बढ़ रहा था, उसके बाल चमकीले और घने थे, पॉल दुगना लग रहा था, शायद काफी शरारती (हमें पता चला कि उसका एक बड़ा भाई और एक बड़ी बहन है: यह तथ्य उसकी विलक्षणता की हमारी प्रबल धारणा के साथ तालमेल बिठाना मुश्किल था—हमने सुना था कि वह सैगिनॉ में क्लैरिसा के बंगले के गुलाब के बगीचे में नग्न अवस्था में लेटा हुआ था, टीवी देखते हुए, पैंडोरा के लिए हल्के नीले ऊन का एक केप बुन रहा था जिस पर सफेद अंगोरा ऊन से पीआर लिखा हुआ था और पीछे एक खरगोश की पूंछ बनी हुई थी)। [उल्लंघन।] टेड और मैं निमंत्रणों की भारी कमी से अवगत हैं,

घुंघराले थे, ऊँची एड़ी के जूते, शानदार फर, एक बेहद प्रशिक्षित और आत्माहीन चांदी के रंग का पूडल जिसे आधुनिक कला का शौक था: उनके रिश्तेदार प्राथमिक रंगों से जुड़ाव का संकेत देते हैं, लेगर के भड़कीले शहरी दृश्यों से जहाँ महिलाएँ टरबाइन इंजन हैं। मैंने श्रीमती वैन डेर पोएल जैसी शत्रुतापूर्ण उपस्थिति कभी महसूस नहीं की। वह मुझे बड़ा, कोमल और सुखद रूप से मूर्ख महसूस कराती हैं। वह बांझ हैं, बिल्कुल बंजर। मुझे लगता है कि उनका आना जबरदस्ती था। जब उसने पहली बार मना किया, तो उसने कहा कि वह "किसी और समय आना पसंद करेगी," जिसे मैंने अपना कर्तव्य मान लिया - उसे एक और मौका देने का, और तीन-चार बार टालमटोल करने के बाद, जिसे मुझे इनकार ही समझ लेना चाहिए था, वह आई, बैठी और कुछ बुदबुदाई। कला, कलाकारों, विशेष रूप से बास्किन के बारे में
- कुछ नहीं। या तो कोई उसकी बुद्धिमत्ता के लायक नहीं था, या उसका मूड नहीं था, या उसके पास सबसे अच्छी तरह की बुद्धिमत्ता नहीं है: वह हर बात को चमकीले, साफ-सुथरे शब्दों में कह सकती है, और यह बात चुभती है। ऐसा लगता है कि उसकी शुष्क, चमकीली, साफ-सुथरी छोटी सी आवाज सबसे खराब अराजकता के लिए भी एक स्पष्ट विशेषण ढूंढ सकती है। उसके गुमशुदा पति के बारे में सोचकर हैरानी होती है। प्रिसिला: यह नाम उस पर जंचता ही नहीं। ऐसा लगता है कि वह वैन डेर पोएल को उसके उच्च स्वर के लिए रखती है। टेड और मैं दोनों इस दृढ़ धारणा के साथ लौटे कि वह लियोनार्ड बास्किन को नापसंद करती है। क्यों? उसके पास बास्किन की एक प्रशंसनीय, विशाल कृति, "हैंगिंग मैन" है, उसने उन्हें अपनी कक्षाओं के लिए मूर्तिकला पर तीन व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया था; हालांकि, वह एक प्रोफेसर हैं, विभाग की अध्यक्ष हैं, और वह एक रचनात्मक कलाकार हैं जो कला भवनों में

बने दफ्तरों, विभागीय बैठकों और ऐसी ही चीजों से घोर नफरत करते हैं। किसी भी हालत में, उनकी नापसंदगी साफ झलक रही थी। मैं और टेड, उस वाक्य या वाक्यांश को पहचान नहीं पा रहे हैं, लेकिन यह स्पष्ट था। अभी-अभी, बेचैन और अनुत्पादक होकर, मैं अपने खाली- खाली साफ अपार्टमेंट में मक्खन लगा टोस्ट और स्ट्रॉबेरी जैम खाते हुए इधर-उधर घूम रहा था, तभी, हमेशा की तरह, बाथरूम के वेनेशियन ब्लाइंड के पास भेड़िये की तरह रुककर डाकिया का इंतजार करने लगा, तभी मुझे एक सीटी की तेज आवाज सुनाई दी और वह आदमी मानो अचानक सामने आ गया, अपनी हल्की नीली कमीज और चमड़े के कंधे पर लगे थैले के साथ। मैं नीचे जाने के लिए तैयार होने भागा और महसूस किया कि वह रुक गया है, इसलिए मैं जल्दी से लिविंग रूम की खिड़की की ओर भागा। और वहाँ, अचानक से उछल पड़ा, टेड अपनी गहरे हरे रंग की कॉरडरॉय जैकेट में उस आदमी को रोककर डाक माँग रहा था। खिड़की से मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दिया, और न ही कुछ था— मुट्ठी भर फलालैन: सर्कुलर, साबुन के कूपन, सियर्स की सेल, माँ का एक पत्र जिसमें वही पुरानी खबरें थीं जो उन्होंने पहले ही फोन पर बता दी थीं, ऑस्कर विलियम्स का एक कार्ड जिसमें मुझे मेरी कक्षाओं के आखिरी दिन न्यूयॉर्क में एक कॉकटेल पार्टी में आमंत्रित किया गया था। कोई खबर नहीं। मेरी नसों में बेचैनी दौड़ रही है—और मैं खुद को भूखा रखने के कगार पर हूँ—यहाँ टेड का प्रभाव साफ दिख रहा है। जब वह खाना नहीं खाता, तो मुझे अपने लिए खाना बनाना भी झंझट लगता है और इस तरह मेरा पोषण और नींद दोनों ही कम हो जाते हैं। एक नीरस और बेकार दिन, सपनों से भरा हुआ…
14 मई, बुधवार। भयानक रात। मेरी पलकों की तेज़ चुभन वाली खुजली, सचमुच या सहानुभूतिपूर्ण कल्पनाशील नसों के ज़रिए, मेरे पूरे

शरीर में फैल गई है—सिर, पैर, पेट: मानो कोई संक्रामक खुजली हो, जो जलती और भड़कती जा रही हो। मेरा मन कर रहा है कि मैं अपनी त्वचा नोच डालूँ। और एक सुस्ती मुझे मेरे ही तनावग्रस्त अवसाद के कारागार में बंद कर रही है। क्या ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं एक भूत की तरह महसूस कर रही हूँ? मेरी कक्षा में मेरा प्रभाव कम होता जा रहा है, जहाँ कोई परीक्षा नहीं है, बस एक पेपर है और फिर काम करने या सुनने की कोई ज़रूरत नहीं है। संकाय बैठक में मुझे आश्चर्य हुआ कि कितना समय बीत गया और मैं उसी अकेलेपन में थी, बस और भी ज़्यादा, मानो एक पारदर्शी ढक्कन ने मुझे घेर लिया हो और उन सभी को बंद कर दिया हो जिनके चेहरों का मेरे लिए कोई व्यक्तिगत अर्थ नहीं है—वे अगले साल जा रहे हैं, मैं आत्मा से पहले ही जा चुकी हूँ, भले ही टिड्डियों की तरह खुजली करते हुए शरीर में भटक रही हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मुझे कुष्ठ रोग हो जाएगा: घबराहट: सीढ़ियों की चरमराहट सुनाई दे रही है: कायरता से मर रहा हूँ—ऐसा लग रहा है जैसे अचानक सारी बत्तियाँ बुझ जाएँगी और कोई भयानक राक्षस मुझे अपने साथ ले जाएगा: बुरे सपने मुझे सता रहे हैं: जोन ऑफ आर्क का चेहरा जब वह आग में जल रही थी और दुनिया धुएँ में धुंधली हो गई, एक भयानक साया छा गया। मैं पॉल के ओडिपस के पाठ से टेड के लौटने का इंतज़ार कर रहा हूँ। मुझे खुजली हो रही है। मैं दो दुनियाओं के बीच फंसा हुआ महसूस कर रहा हूँ, जैसा कि अर्नोल्ड लिखते हैं—"एक मृत, दूसरी जन्म लेने में असमर्थ": सब कुछ व्यर्थ सा लगता है—मेरे शिक्षण का स्वाद फीका पड़ गया है: मुझे लगता है कि छात्र चले गए हैं और एक शिक्षक के रूप में मुझे अगले साल एक बेहतर और अधिक जीवंत पाठ्यक्रम की योजना बनाने की कोई संतुष्टि नहीं है: वह सब खत्म हो गया है। दूसरी ओर, मेरे पास मुट्ठी भर कविताओं के सिवा कुछ नहीं है—ये

कविताएँ इतनी असंतोषजनक और सीमित हैं, जब मैं एलियट, येट्स, यहाँ तक कि ऑडन और रैनसम का अध्ययन करता हूँ—और वसंत की छुट्टियों में लिखी गई कुछ कविताएँ ही मुझे लेखन की एक नई, अभी तक जन्म न ली हुई दुनिया से जोड़ती हैं—केवल पाँच साल पुरानी किशोरावस्था की लेखन संबंधी सफलताएँ: एक खालीपन। क्या मैं इसे भर पाऊँगा, इससे आगे बढ़ पाऊँगा? मैं लाचार हूँ: आने वाले प्रश्नपत्र, वरिष्ठ परीक्षाएँ और आर्विंन की पढ़ाई। मेरी आँखें दर्द से कराह रही हैं—आखिर इन्हें क्या हो गया है? कोई डाक नहीं—केवल पैट्सी का पत्र है जिसमें न्यूयॉर्क की झलक है— समय का एक दृश्य—एक मृत दुनिया से एक नवजात दुनिया तक का पुल। इसी समय के आसपास, और उसके बाद कई महीनों तक, प्लाथ को क्रोध का तीव्र उबाल महसूस होने लगा, एक ऐसी भावना जिसे वह शायद ही कभी खुद पर हावी होने देती थीं। आगे के अंश में, यह क्रोध उनके पति के प्रति है जिसमें एक छोटी सी घटना बहुत बड़ी हो जाती है, और जल्दी ही एक सार्वजनिक पार्क में कुछ लड़कियों पर केंद्रित हो जाती है। जैसा कि प्लाथ ने आठ महीने बाद (27 दिसंबर) लिखा, इसका असली कारण उनके पिता थे, हालांकि उन्हें इस बात को गहराई से समझने में कई साल लग गए। क्रोध की भावना उनके काम के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण थी; जैसा कि उन्होंने 27 अगस्त को लिखा, "क्रोध गले को जकड़ लेता है और जहर फैलाता है, लेकिन जैसे ही मैं लिखना शुरू करती हूँ, यह शांत हो जाता है, अक्षरों के रूप में बह जाता है: क्या लेखन एक चिकित्सा है?"
19 मई, सोमवार। लेकिन आज सोमवार नहीं, बल्कि गुरुवार, 22 मई है, और मेरी आखिरी कक्षाएं खत्म हो चुकी हैं, मैंने गर्म पानी से नहाया है और कई आदर्शों, सपनों और विश्वासों से मुक्त हो चुकी हूँ। विडंबना: वह परिपक्व रवैया जो भावुक महिलाओं की पत्रिकाओं

में छपे आंसुओं को छुपाता है। घृणा। हाँ, यही सही शब्द है: अपने आप में और उससे भी ज़्यादा टेड में घृणा... विडंबना: लगभग दो वर्षों में मैं एक पागल पूर्णतावादी और अनैतिक मानव-प्रेमी से एक मानवद्वेषी बन गई हूँ, और टोनी और पॉल के यहाँ एक दुष्ट, चुगलखोर और द्वेषपूर्ण मानवद्वेषी। इसलिए मैंने हम दोनों को अपनी अलग, असीम रूप से श्रेष्ठ दुनिया में रखा है: हम इतने अच्छे हैं, स्वभाव से, बहुत अच्छे—"मुस्कुराने वाले"। तो अब हम समाज में दुष्ट, क्रूर और चालाक हैं—शुरू में नहीं, बल्कि केवल तब जब हम पर हमला होता है। अब और कोई भोलापन भरी पलकें नहीं झपकाना— बस पूरी ताकत से लड़ना। और ठीक उसी समय जब मैं शायद अपने जीवन में पहली बार इतनी क्रूरता की चरम सीमा पर पहुँची—मैं पेशेवर और सार्वजनिक रूप से कभी इतनी चुगली करने वाली नहीं रही—मुझे अंतिम अहसास हुआ: न केवल मैं ही बाकी सब की तरह क्रूर हूँ, बल्कि टेड भी वैसा ही है। [कुछ अंश हटा दिया गया।] यह कैसे काम करता है: कैसे विडंबना ही जीवन का सार है। मेरा उपन्यास प्रेम और विवाह के साथ समाप्त नहीं होगा: यह जेम्स की तरह ही, कामगारों और काम करने वालों, शोषकों और शोषितों की कहानी होगी: घमंड और क्रूरता की: एक सुंदर दुनिया में झूठ और दुर्व्यवहार के एक चक्र के साथ जो बिगड़ गई है। मैं यहाँ उपन्यास के लिए, और साथ ही 'द लेडीज़ होम जर्नल' के लिए भी इस विडंबना को दर्ज कर रही हूँ। मैं मैगी वर्वर नहीं हूँ, मुझे अपने गलत काम की इतनी भयंकर गर्मी महसूस होती है कि मेरा दम घुटता है, मैं अपने अंदर के जहर को थूक देती हूँ: लेकिन मैं मैगी से ही सीख लूँगी, भगवान उस लड़की का भला करे। विडंबना कैसे बढ़ती जाती है—हर बार जब मैंने अपने मूर्खतापूर्ण, नीरस बयान दिए, तो मुझे एक सिहरन महसूस हुई, मानो एक काला, रबर जैसे चेहरे वाला, मेंढक जैसा भाग्य, जो उस पल के चरम

पर मेरे सामने किसी अनदेखे, अनहोनी भयावहता के साथ प्रकट होने को तैयार था। और यह सब मेरे अंतर्ज्ञान के सुदूर किनारों पर चल रहा था। मैंने टेड पर अपना भरोसा जताया, और आखिर पत्नी को अपने पति का अल्सर सबसे आखिर में क्यों दिखता है? क्योंकि उसे सबसे ज़्यादा भरोसा है, वह सावधानीपूर्वक और प्यार से पोषित अंधविश्वास जो बिना किसी सवाल के सूरज की राह पर चलता है, रेगिस्तान से आती प्यास की कोई पुकार नहीं सुनता, बंजर भूमि में कोई अभिशाप नहीं सुनता। [अंश।] ओह, मैंने एक उज्ज्वल, स्पष्ट आवाज़ में कहा: "मैं संकाय में अकेली महिला हूँ जिसका पति है।" ... खैर, मेरा पति [अंश] ... एक बवंडर है। मैं लोवेल की पहली किताब देखता हूँ: जीन स्टैफोर्ड।

u खैर, कम से कम वह द न्यू
यॉर्कर के लिए लिखती तो हैं—अच्छा करियर, अच्छी कमाई—या शायद जब मैं बोल रहा हूँ, तब भी वह पागलखाने में हों, वह शराबी रही हैं। कौन जाने टेड की अगली किताब किसे समर्पित होगी? अपनी नाभि को। [उद्धरण।] खैर, तथ्यों की पृष्ठभूमि से शुरू करते हैं—टेड और मेरे अलावा सभी के लिए महसूस की गई मानवद्वेष भावना, टेड और मुझ पर विश्वास और बाकी सभी पर अविश्वास। पिछली रात की बात जोड़ें—टेड पॉल के ओडिपस के अनुवाद में क्रियोन की भूमिका पढ़ रहे थे और लगभग मुझे आने से मना कर रहे थे। मैंने कहा ठीक है, लेकिन विद्रोह किया। मैं टेड को पढ़ते हुए न सुनने को लेकर अंधविश्वासी हूँ। मैंने अपने कागजों का दूसरा सेट जल्दी-जल्दी निपटाया (और अभी एक और बाकी है) और जैसे किसी पट्टे से बंधी हो, उछल पड़ी और सीढ़ियों से नीचे, मई की गर्म, घनी, बकाइन की खुशबू वाली अंधेरी रात में दौड़ने लगी। पेड़ों के ऊपर से नया चाँद मुझे घूर रहा था—उसकी संपूर्णता की छाया स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी। मैं दौड़ी, मानो उड़ना चाहती थी, हालाँकि मैं लंबे

तनाव और थकावट से भरी हुई थी, मानो मेरा दिल सीने में एक दर्द भरी मुट्ठी की तरह था। मैं बिना रुके दौड़ती रही, पैराडाइज़ पॉन्ड के पास ऊबड़-खाबड़, खड़ी पहाड़ी से नीचे उतरी, वनस्पति विज्ञान भवन के पीछे झाड़ियों में एक खरगोश देखा, रोएँदार, भूरा सा। मैं सेज हॉल के रोशन औपनिवेशिक अग्रभाग तक दौड़ी, बिजली की रोशनी में सफेद खंभे चमक रहे थे, दूर-दूर तक कोई नहीं दिख रहा था, खाली गूँजते फुटपाथ। हॉल चकाचौंध से भरा था: दो लोग, एक मोटी लड़की और एक बदसूरत आदमी, बगल वाले बूथ में रिकॉर्डिंग के लिए संगीत का टेप चला रहे थे। मैं दबे पांव अंदर गई, पीछे की एक सीट पर बैठ गई, और अपने दिल की अजीब सी धड़कन और हांफती साँसों को शांत करने की कोशिश की... जैसे ही मैं अंदर आई, [टेड] समझ गया, और मैं भी समझ गई कि वह समझ गया है, और उसकी आवाज़ ने पाठ को बिगाड़ दिया। वह किसी बात से शर्मिंदा था। उन्होंने आखिरी पंक्ति एक बेजान, मुरझाए हुए कपड़े के तौलिये जैसे भाव से पढ़ी और मुझे घृणा और आशंका की एक हल्की सी लहर महसूस हुई। वह भ्रष्ट, सफेद घोंघे जैसे चेहरे वाले वैन वोरिस के बगल में खड़े थे, जिनकी आवाज़ शब्दों पर लबालब भरी थी: कमर, अनाचार, बिस्तर, घिनौना। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं नंगे पैर रेंगते कीड़ों के गड्ढे में उतर गया हूँ। मुझे उल्टी आने लगी और थूकने का मन कर रहा था। टेड जानता था कि वह किसके बगल में खड़ा है और किसके शब्द पढ़ रहा है। वह सिकुड़ गया, उससे दूर हट गया। लेकिन वह इससे पहले भी निकल सकता था। बहुत पहले। पॉल चाहता था कि फिलिप व्हीलराइट क्रियोन को पढ़ें। टेड बाद में मुझसे मिलने नहीं आया। मैं आगे खड़ा रहा, पीछे गया और चौकीदार से पूछा कि पाठक कहाँ हैं। उसे मुझे बताना ही पड़ा। एक छोटे से रोशन कमरे में बिल वैन वोरिस फूलों से सजे सोफे पर ढीली, बेजान मुद्रा में, पैर सीधे फैलाए हुए, बैठा था।

टेड पियानो पर गुस्से से मुंह बनाकर बैठा था, झुककर एक उंगली से कर्कश धुन बजा रहा था, एक ऐसी धुन जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। [अंश हटा दिया गया।] ओह, हाँ, शिकारी, मैं कैसे निपटूंगा। वह कुछ नहीं बोला। वह जाने को तैयार नहीं था। मैं बैठ गया। फिर हम चले गए… खैर, वह एक नीरस, बदबूदार शाम थी… जिसके बारे में आगे बात करेंगे। तो यह एक दुर्घटना थी। [अंश हटा दिया गया।] तो आज मेरा आखिरी दिन है। या था। रैनसम, कमिंग्स और सिटवेल की कई कविताओं के साथ, मैं कक्षा में गया, और मुझे कक्षा में मेरे आनंद के बराबर ही तालियाँ मिलीं—9 बजे हल्की-फुल्की तालियाँ, 11 बजे ज़ोरदार तालियाँ, और 3 बजे इन दोनों के बीच की कुछ तालियाँ। मैंने टेड से औपचारिक रूप से अनुरोध किया था कि वह आज दोपहर तक मेरे साथ गाड़ी चलाकर आए, ताकि मैं अपनी पहली कक्षा खत्म होते ही उसे देख सकूँ और खुशी मना सकूँ। तो हम चले गए। मैं अन्य बातों के साथ-साथ "बिना किसी परिणाम के बिछड़ना" के बारे में पढ़ा रही थी: कितना उपयुक्त—मैंने बदले के आनंद, घृणा और द्वेष के खतरनाक विलासिता, और कैसे, भले ही द्वेष और ज़हर "पूरी तरह से उचित" हों, इन भावनाओं में लिप्त होना, अफसोस, विनाशकारी हो सकता है, के बारे में उपदेश दिया। आह, फिरौती। सब कुछ उल्टा ही होता है। क्लास से पहले मेरे पास बीस मिनट थे। टेड ने लाइब्रेरी में किताबें लाने और कार में मुझसे मिलने का इंतज़ाम किया था: मेरी क्लास खत्म होने तक वहीं इंतज़ार करने का। मैं अकेली कॉफी शॉप में गई, जो लगभग सुनसान थी। कुछ लड़कियाँ थीं। और बिल वैन वोरिस के सिर का पिछला हिस्सा। उन्होंने मुझे अंदर आते हुए नहीं देखा, न ही कॉफी माँगते हुए, हालाँकि मैं लगभग उनकी नज़र के सामने ही थी। लेकिन उनके सामने वाले बूथ में उनके साथ बैठी लड़की मुझे देख सकती थी। उसकी बहुत सुंदर काली आँखें, काले बाल और पीली

सफेद त्वचा थी, और वह बहुत गंभीर थी। मैंने अपनी कॉफी उठाई और बिल का ध्यान आकर्षित नहीं किया, बल्कि उनके ठीक पीछे वाले बूथ में बैठ गई, उनके सिर के पिछले हिस्से और उनकी छात्रा की ओर मुँह करके। हा, मैंने सोचा, सुनते हुए, या यूँ कहें कि सुनते हुए। मैंने अपनी कॉफ़ी की चुस्की ली और जैकी [वैन वोरिस] के बारे में सोचा, जिसकी त्वचा आटे के रंग की है, जिस पर बारीक झुर्रियाँ हैं, जिसके बाल भूरे रंग के हैं, और जिसकी आँखें कछुए के खोल जैसे फ्रेम वाले चश्मे के पीछे अनिश्चित रंग की हैं। जो शायद बिल के छात्रों की तरह "बुद्धिमान" नहीं है। मैंने बिल की पीठ को ध्यान से देखा: उसकी पतली-दाने वाली कॉरडरॉय जैकेट, जो उसके चौड़े मर्दाना कंधों पर फिट बैठती थी, हल्के दालचीनी रंग की, ट्वीड या तंबाकू रंग की, उसकी पीली गठीली गर्दन, और उसके छोटे- छोटे काले बालों के घुंघराले गुच्छे। वह अपने ही अंदाज़ में बात कर रहा था: मूर्खतापूर्ण, दिखावटी, हाँ, बेवकूफ़ाना। उसने सुंदर ढंग से हकलाते हुए कहा, और मैंने अपने कान खुले रखे: "नायक... क्लासिक नायक से अलग हास्य नायक" के बारे में कुछ। "हास्य?" बिल की आवाज़ लड़खड़ा गई, एक फुसफुसाहट, या घरघराहट कहीं उसमें दबी हुई थी। “आपका मतलब…” वह लड़खड़ा गई, उसकी गहरी आँखें मदद माँग रही थीं। “व्यंग्य,” बिल ने पूरे आत्मविश्वास के साथ कहा। मुझे एक हलचल महसूस हुई, उसका कंधा थपथपाने का मन हुआ, झुककर उसे कहने का मन हुआ कि बस करो, हास्य नायक ठीक हैं, व्यंग्य का एकाधिकार नहीं है। लेकिन मैं चुप रहा। बिल झट से पुनर्स्थापना काल के नाटकों की ओर मुड़ गया। अपने ही खेत में खिले फूलों को सूंघते हुए, उनकी खुशबू में घुलमिलते हुए। “नैतिकता। बिल्कुल, चुटकुलों के लिए इतनी सारी सामग्री, अश्लील चुटकुलों के लिए इतना बढ़िया अवसर। पुरुष अपनी पत्नियों को

छोड़ रहे हैं।” लड़की ने पूरी समझदारी के साथ जवाब दिया: “ओह, मुझे पता है, मुझे पता है।” जब मैं अपनी क्लास के लिए कॉफी शॉप से निकला, तब भी वे बातें कर रहे थे। मेरी क्लास में मैं लगभग बोलते-बोलते गला बैठ गया। मैं अल फिशर को उसी सीट पर बैठे देख सकता था, और मैं उसके सामने, वह औपचारिक यौन संबंध। अल फिशर और उसके छात्रों की वंश-परंपराएँ: छात्रों ने रखैलें बनाईं। छात्रों ने पत्नियाँ बनाईं। और अब, उसकी मूर्खतापूर्ण, बेतुकी और घमंडी मुस्कान। जब बिल को स्थायी पद मिल जाएगा—शायद अभी जल्दी नहीं, लेकिन तब तक मजे करो—वह स्मिथ की रखैलें पालना शुरू कर देगा। या शायद जैकी मर जाएगी: उसके तनी हुई होंठों पर मौत और गहरा दर्द साफ झलक रहा है: गंभीर, जकड़े हुए होंठ और ऐसी आंखें जो संयमित, शांत और ठंडी हैं, उन जोखिमों को दर्शाती हैं जो वह लेती है, लेने को मजबूर है और लेगी। ये सारी तस्वीरें मेरे दिमाग में घूमती रहीं। मुझे मन हुआ कि क्लास से पहले लाइब्रेरी जाकर टेड के साथ अपनी मजेदार अंतर्दृष्टि साझा करूँ, वैन वोरिस और मोहक स्मिथ गर्ल के बारे में अपने अनुभव साझा करूँ: या विलियम एस. फिर से बुरा बन गया है। लेकिन मैं क्लास चला गया। क्लास से निकलते ही मैं पार्किंग की ओर भागा, आधी उम्मीद थी कि कार तक जाते समय टेड मिल जाएगा, लेकिन मुझे ज्यादा यकीन था कि वह कार के अंदर ही होगा। मैंने कार की खिड़कियों से झाँका, लेकिन कोई चेहरा नहीं दिखा। हमारी कार खाली थी और यह खालीपन मुझे अजीब लगा, खासकर उस दिन, जिसका हम अट्ठाईस हफ्तों से इंतजार कर रहे थे। लगभग डेढ़ घंटे बाद मैंने बिल को देखा, कॉफी शॉप से पार्किंग तक जाने वाले रास्ते के दोनों ओर लगे हरे लिली के झाड़ियों के बीच वह अपने छात्र को मुस्कुराते हुए गर्मजोशी से विदाई दे रहा था। वह मेरी ओर आने लगा, लेकिन मैंने झट से उसकी ओर

पीठ करके कार में बैठ गई और उसे लाइब्रेरी तक ले गई। मुझे लगा कि टेड रीडिंग रूम में होगा, समय का ध्यान रखे बिना, एडमंड विल्सन के 'द न्यू यॉर्कर' लेख में डूबा हुआ। लेकिन वह वहाँ नहीं था। मुझे अपनी तीन बजे की क्लास के बचे हुए छात्रों से लगातार मुलाकात होती रही। मुझे घर जाने की एक अजीब सी इच्छा हुई, लेकिन अपार्टमेंट में अभी तक मुझे कुछ भी चौंकाने वाला देखने को नहीं मिला था, हालाँकि मैं इसके लिए तैयार थी। जैसे ही मैं लाइब्रेरी की ठंडी छाया से बाहर निकली, मेरी नंगी बाहें ठंडी हो गईं, तभी मुझे एक अंतर्ज्ञान हुआ। मुझे पता था कि मैं क्या देखूँगी, किससे मेरा सामना होगा, और मुझे यह बहुत लंबे समय से पता था, हालाँकि मुझे पहली मुलाकात की जगह या तारीख याद नहीं थी। टेड पैराडाइज़ पॉन्ड से सड़क पर आ रहा था, जहाँ लड़कियाँ सप्ताहांत में अपने बॉयफ्रेंड को रोमांस के लिए ले जाती हैं। वह एक चौड़ी, तीव्र मुस्कान लिए चल रहा था, उसकी निगाहें भूरे बालों वाली, बड़ी लिपस्टिक लगी मुस्कान वाली और खाकी बरमूडा शॉर्ट्स में नंगे मोटे पैरों वाली एक अजनबी लड़की की हिरनी जैसी आँखों में गड़ी हुई थीं। मैंने यह दृश्य कई तेज़ झटकों में देखा, जैसे किसी प्रहार से। मैं लड़की की आँखों का रंग नहीं बता सकता था, लेकिन टेड बता सकता था, और उसकी मुस्कान, हालाँकि लड़की की तरह खुली और आकर्षक थी, उस संदर्भ में बदसूरत सी लगने लगी। वैन वोरिस के बगल में उसका खड़ा होना एकदम सही हो गया, उसकी मुस्कान बहुत ही तीखी, मूर्खतापूर्ण और प्रशंसा पाने की चाहत वाली हो गई। वह इशारे कर रहा था, जैसे कोई बात पूरी कर रहा हो, कोई स्पष्टीकरण दे रहा हो। लड़की की आँखों में खुशी की लहर दौड़ गई। उसने मुझे आते हुए देख लिया। उसकी आँखों में अपराधबोध झलकने लगा और वह सचमुच बिना अलविदा कहे भागने लगी, टेड ने उसका परिचय

कराने की कोई कोशिश नहीं की, जैसा कि मुझे यकीन है कि बिल करता। पहली नज़र में ही वो धोखेबाज़ बनना नहीं सीख पाई है, पर जल्दी सीख जाएगी। उसने सोचा था कि उसका नाम शीला है; एक बार उसने सोचा था कि मेरा नाम शर्ली है: ओह, ज़बान के सारे छल; वो मुस्कानें। अजीब बात है, लेकिन मेरे अंदर की ईर्ष्या घृणा में बदल गई। देर से घर आने पर, बाल संवारते समय, मुझे एक काले सींग वाले, मुस्कुराते हुए भेड़िये की छवि दिखाई दी, सब कुछ साफ़, घुलमिल गया, और जो मैंने देखा उससे मुझे उल्टी आने लगी। मैं अब मुस्कुराती नहीं हूँ। लेकिन टेड मुस्कुराता है। अपनी लड़कियों से उसकी कलात्मक दूरी उसके झुके हुए अंदाज़ से ज़ाहिर होती है, जैसे वो प्यार भरी निगाहों में देख रहा हो—पुराना प्यार नहीं, बल्कि नया, ताज़ा, शुद्ध प्यार। या शायद, मिलावटी। वैन वोरिस गोरा दिखता है। कमज़ोर हाथों वाला। मुझे इस तरह के मर्दाना घमंड से इतनी नफ़रत क्यों है? रिचर्ड में भी ये था, उन्नीस साल की उम्र में छोटा, कमज़ोर सा होने के बावजूद। बस वो अमीर था, उसका परिवार था और इसलिए सुरक्षा थी: ऐसे पुरुषों का वंश जो अपनी औकात से बेहतर पत्नियाँ खरीद सकते थे। जैसा कि जोन ने कहा था: अहंकार और आत्ममुग्धता। व्यर्थता, व्यर्थता। मुझे पता है कि डॉ. बी. मुझसे क्या कहतीं, और मुझे लगता है कि अब मैं उन्हें बता सकती हूँ। नहीं, मैं खिड़की से नहीं कूदूँगी, न ही वॉरेन की कार को पेड़ से टकराऊँगी, न ही घर के गैरेज को कार्बन मोनोऑक्साइड से भर कर खर्च बचाऊँगी, न ही अपनी कलाई काटकर बाथटब में लेटूँगी। मैंने सभी विश्वासों को त्याग दिया है और अब मुझे सब कुछ स्पष्ट दिखाई देता है। मैं पढ़ा सकती हूँ, और लिखूँगी, और अच्छा लिखूँगी। शायद मैं एक साल तक यह कर पाऊँ, इससे पहले कि मुझे दूसरे विकल्प चुनने पड़ें। फिर वे कुछ लोग हैं जिनसे मैं

थोड़ा-बहुत प्यार करती हूँ। और मेरी दृढ़ और अकथनीय गरिमा और ईमानदारी की भावना है जिसे मुझे बनाए रखना है। मैं बहुत लंबे समय से ट्रस्ट फंड पर निर्भर रही हूँ। इस मामले में मैं दिवालिया हो चुकी हूँ।
बाद में, बहुत बाद में। अगली सुबह किसी समय। झूठे बहाने, नाम और वर्ग के बारे में अस्पष्ट उलझनें। सब नकली। सब झूठा। और गलत उपस्थिति की स्तब्ध जागरूकता का दोषी भाव। इसलिए मुझे नींद नहीं आ रही। कुछ हद तक खुद भी घमंड की सस्तीपन से सदमे में हूँ। [अधूरा अंश।] और स्पष्टीकरण देने से पूरी तरह इनकार। उस बसंत की शाम को काज़िन ने जो कहा था वह सच था: इसीलिए टेड उस पर झपटा था। केवल काज़िन एक बात में गलत था: वे स्मिथ लड़कियाँ नहीं थीं। नहीं—उत्सुकता से झुकी हुई खुली मुस्कान और इसके साथ वैन वोरिस की मेरी छवि—बाद में फिशर की, हाँ। बेईमानी—एक दरार। मेरी तरफ से सारी मूर्खता और स्पष्टवादिता: सच्चे दिल से प्यार करना कितना बड़ा मूर्खता है। धोखा न देना। दो-तरफ़ा रिश्ता रखना। दूर चले जाना और कहीं न जाना चाहना भयानक है। टेड पर भरोसा करके मैंने सबसे हास्यास्पद, विडंबनापूर्ण और घातक कदम उठाया कि वह अन्य घमंडी, भ्रामक और आत्म-भोगी पुरुषों से अलग था। मैंने अपना उद्देश्य पूरा किया है, पैसे खर्च किए हैं, माँ के पैसे, जो सबसे ज़्यादा दुख देते हैं, उसके लिए कपड़े खरीदने में, उसे आधा साल, आठ महीने लिखने के लिए देने में, उसकी कविताओं को सैकड़ों बार टाइप करने में। खैर, मैंने आधुनिक ब्रिटिश और अमेरिकी कविता के लिए इतना कुछ किया है। मैं बेईमानी को कभी माफ़ नहीं कर सकती—और चाहे कुछ भी हो जाए, या कितनी भी मुश्किल हो, मैं उसके मुँह से उस सच्चाई को जानना ज़्यादा पसंद करूँगी जिसका आज मुझे इतना स्पष्ट और दिल दहला देने वाला अनुभव हुआ,

बजाय इसके कि मैं घिनौनी बातों, अस्पष्टताओं और चालाकी भरी बातों को सुनूँ। मुझे यहाँ अपना जीवन समाप्त करना है। लेकिन विश्वास के बिना जीवन का क्या—यह एहसास कि प्यार एक झूठ है और सभी आनंदमय बलिदान एक बदसूरत कर्तव्य हैं। मैं बहुत थक गई हूँ। मेरा आखिरी दिन है, और मैं डर के मारे काँप रही हूँ, सो नहीं पा रही हूँ। वह शर्मिंदा है, शर्मनाक है और मुझे और मेरे विश्वास को शर्मिंदा करता है, जो झूठ बोलने वालों, धोखेबाजों और टूटे हुए या घमंडी लोगों की दुनिया में कोई बहाना नहीं है। प्यार मेरे पोषण का एक अटूट स्रोत रहा है और अब मैं घुट रही हूँ। गलत, गलत: इसकी भद्दी गर्मी: मूर्खतापूर्ण ध्यान, भोली-भाली मुस्कान, चौंककर पहचानना, भाग जाना—इन सब से इनकार नहीं किया जा सकता। इन्हें केवल स्पष्ट रूप से समझाया जा सकता है। मैं वह नहीं पूछना चाहता जो भारी-भरकम, बनावटी अमेरिकी सस्ते बोलचाल के "चलो सुलह कर लेते हैं" से पहले दिया जाना चाहिए। वह भारी-भरकम, अति- मज़ाकियापन। [उल्लंघन।] क्योंकि मुझे इसकी बू आ रही है [भ्रष्टाचार]। घर में इसकी बदबू फैली हुई है। और मेरी दृष्टि धुंधली देरियों को भर देती है, ओह, हाँ, फ्रैंक सूसा। मैं जानता हूँ। मैं इससे भी बुरा जानता हूँ क्योंकि मैं सब कुछ जानता हूँ और वह मुझे नहीं बताता या यह नहीं समझता कि जानना क्या होता है। [उल्लंघन।] मैंने उसकी चिंताओं को अपनी चिंता क्यों बना लिया और उसे उसके सबसे अच्छे और बेहतरीन रूप में क्यों देखना चाहा?… उसे परवाह नहीं है। वह रूठा हुआ है, जैसा कि मेरे पढ़ने के लिए आने के बाद से होने लगा था। उसका इसे स्वीकार करना और इसे जारी रखना दिखाता है कि वह कितना नीचे गिर चुका है। वह नीचे जाना चाहता है, मुझे अपने शिक्षण के अंतिम क्षणों में उसकी तलाश में अकेला छोड़ना चाहता है, शिक्षण के एक वर्ष के अंत का जश्न उस

ज्ञान को सीखकर मनाना चाहता है जो मेरी अंतरात्मा मुझे कीचड़ जमने के बाद साफ पानी के तालाब की तरह दिखाती है। ओह, मुझे कीचड़ के बिस्तर पर मेंढक दिखाई दे रहे हैं। और उनकी चिकनी और तैलीय काली खाल पर मस्सों के रूप में भ्रष्टाचार। तो अब क्या?
11 जून, बुधवार। एक हरी-भरी, ठंडी, बरसाती रात: शांति और सद्भाव। इस किताब को लिखने में लगभग एक महीना पीछे चल रही हूँ, पर बहुत कुछ कहना बाकी है। मैंने यहाँ लिखने से परहेज किया है क्योंकि मुझे जिस भयावह और डरावने अध्याय से शुरुआत करनी है, वह बहुत कठिन है। लेकिन अब मैं लिखती हूँ और बिखरे हुए धागों को समेटती हूँ। मेरे अंगूठे में मोच आ गई थी, टेड के नाखूनों के निशान एक हफ्ते तक खून से लथपथ रहे, और मुझे याद है कि मैंने एक अंधेरे कमरे में पूरी ताकत से एक गिलास फेंका था; टूटने के बजाय, गिलास उछलकर वापस आया और साबुत रहा: मुझे चोट लगी और मुझे तारे दिखाई दिए - पहली बार - चकाचौंध कर देने वाले लाल और सफेद तारे, जो गुस्से और काटने के काले सन्नाटे में फूट पड़े। हवा साफ हो गई। हम सुरक्षित हैं। और कुछ भी नहीं - पैसे, बच्चे, सुरक्षा, यहाँ तक कि पूर्ण अधिकार की कोई इच्छा नहीं - कुछ भी उस चीज़ को खतरे में डालने लायक नहीं है जो मेरे पास है, जो इतनी कीमती है कि शायद स्वर्गदूत भी उससे ईर्ष्या करें। मैंने उदास होकर, आँखों में चुभन और खुजली से लाल चकत्ते के साथ, सुधार किया। सम्मान पत्र— फैकल्टी क्लब के बगीचे में समय बिताना—ये सब मिस हॉर्नबीक की तीखी निगाहों के नीचे, मेरे लिए चाहे “सुम्मा” हों या “कम्स”— कुछ भी हो सकते थे। फिर आर्विंन की परीक्षाएँ, जो मैंने स्मिथ कॉलेज में अपनी सभी जिम्मेदारियों के साथ लगभग 10 दिन पहले, रविवार, 1 जून को पूरी कीं। हमारे पास जून का आधा महीना है, फिर जुलाई और अगस्त लिखने के लिए खाली हैं, लेकिन टेड के लिए

सैक्सटन पुरस्कार न मिलने का गहरा अंधकार छाया हुआ है। विडंबना यह है कि हार्पर में उनके अपने संपादक ही ट्रस्टियों के सलाहकार हैं और उनकी परियोजना, हालांकि बहुत गर्मजोशी से सराही गई, अयोग्य है क्योंकि जिस योग्यता के आधार पर हमने सोचा था कि वह उन्हें पुरस्कार दिलाएगी—उनकी हार्पर द्वारा प्रकाशित पुस्तक—उसी के कारण। इसलिए मैं अगले साल 10 महीने तक सैक्सटन पुरस्कार के लिए प्रयास करूँगा और टेड गुगेनहाइम पुरस्कार के लिए—वह टी. एस. एलियट, डब्ल्यू. एच. ऑडन, मैरिएन मूर आदि को पीछे छोड़ने की कोशिश करेगा। मैं इस साल गाँव में नहीं रहना चाहती, बल्कि बोस्टन में रहना चाहती हूँ, जहाँ लोग हों, रोशनी हो, दर्शनीय स्थल हों, दुकानें हों, नदी हो, कैम्ब्रिज हो, थिएटर हो, संपादक हों, प्रकाशक हों—जहाँ हमें कार की ज़रूरत न पड़े और हम स्मिथ से दूर रहें। इसलिए हम जोखिम उठा रहे हैं—मेरे लिए सैक्सटन में नौकरी मिलने की उम्मीद में और कम से कम बोस्टन में नौकरी मिलने की उम्मीद में, अगर हम लेखन से कमाई नहीं कर रहे हैं, लेकिन यह आखिरी उपाय तो बस अंतिम समय में ही काम आएगा। हमें यूरोप के लिए आने-जाने का जहाज़ का किराया और कविता से होने वाली हमारी रहस्यमयी 1,400 डॉलर की कमाई बचाकर रखनी है। मैं अभी शांति की आदत डाल रही हूँ: कोई लोग नहीं, कोई काम नहीं, कोई छात्र नहीं। शांति, कम से कम इस सप्ताहांत घर जाकर अपार्टमेंट ढूंढने के बाद, और मुझे हार्वर्ड में एक रिकॉर्डिंग करने और अपनी दूसरी शादी की सालगिरह मनाने के बाद—मैं यह बात शांति से कैसे कहूँ? यह मेरी दूसरी किताब में एक मुख्य समस्या थी, और यहाँ यह शादी के बाद शुरू होती है। आज एक घटना घटी जिससे न्यूयॉर्क में हमारा थका देने वाला और साथ ही स्फूर्तिदायक सप्ताह यादों की एक श्रृंखला शुरू हुई, जिसने स्मिथ के दिमाग से सारी उलझनें दूर कर

दीं: हम शाम ढलते ही हरे-भरे पार्क में टहलने गए (मैंने अभी-अभी एक सुंदर शब्दांश कविता, "चाइल्ड्स पार्क स्टोन्स" लिखी है, जिसमें क्षणभंगुर नारंगी और फुकसिया रंग के अज़ेलिया फूलों का वर्णन है, और मुझे लगता है कि यह पार्क अमेरिका में मेरी पसंदीदा जगह है)। शाम धुंधली, हल्की धूसर थी, जिसमें नम कोहरा छाया हुआ था, और चारों ओर हरियाली तैर रही थी। मैंने अपने रेनकोट की जेब में चांदी की परत चढ़ी कैंची रखी थी, ताकि गुलाब के बगीचे (पत्थर के शेर के सिर वाले फव्वारे के पास) से एक और गुलाब तोड़ सकूँ—अगर संभव हो तो पीला—जो अभी-अभी खिला हो—एक ऐसा गुलाब जो हमारे बैठक कक्ष में महक बिखेर रहे लाल, लगभग काले- लाल गुलाब की तरह खिलना शुरू हो जाए। हम प्लास्टर वाले घर की ओर जाने वाली सड़क पर घूमे और गुलाब के बगीचे में उतरने ही वाले थे कि हमें टहनियों के टूटने जैसी तेज़ चटकने की आवाज़ सुनाई दी। हमें लगा कि यह वही आदमी होगा जिसे हमने पार्क के दूसरे हिस्से में मेंढक के तालाब से घने रोडोडेंड्रोन के झुरमुटों से आते देखा था। पीले गुलाब मुरझाए हुए थे, एक भी कली नज़र नहीं आ रही थी। मैं एक गुलाबी कली तोड़ने के लिए झुकी, एक पंखुड़ी खुल गई, और तभी तीन हष्ट-पुष्ट लड़कियाँ रोडोडेंड्रोन के झुरमुट से बाहर आईं, अजीब तरह से शरमाई हुई, हल्के मनीला रंग के रेनकोट पहने हुए। हम अपने गुलाब के बगीचे में शान से खड़े रहे और उन्हें घूरते रहे। वे फुसफुसाते हुए बातें करती हुई लड़खड़ाती हुई सफेद पियोनी और लाल जेरेनियम के औपचारिक बगीचे की ओर गईं, और एक सफेद मंडप के नीचे असमंजस में खड़ी हो गईं। "मुझे लगता है कि वे कुछ फूल चुराना चाहती हैं," टेड ने कहा। फिर लड़कियाँ जाहिर तौर पर चली गईं। मैंने एक नारंगी गुलाब की कली देखी, अजीब, जो मैंने पहले कभी नहीं देखी थी, और लड़कियों के नज़र से ओझल

छोटी वाली लड़की अकड़कर बोली और लगभग ताना मारते हुए बोली, “ये तुम्हारा पार्क नहीं है।” “और न ही तुम्हारा,” मैंने जवाब दिया, अजीब तरह से उसका रेनकोट उतारकर उसके चेहरे पर थप्पड़ मारने, उसकी जर्सी पर उसके स्कूल का लोगो पढ़ने और उसे जेल भेजने का मन कर रहा था। “तुम चाहो तो झाड़ी को जड़ से उखाड़ दो।” उसने मुझे घूरकर देखा और मैंने भी उसे गुस्से से, निर्मम, पत्थर जैसी घूरती नज़र से देखा, जिससे उसकी नज़रें फीकी पड़ गईं। दिखावटी अंदाज़ में उसने दूसरी लड़की को बाकी रोडोडेंड्रोन लाने का इशारा किया। हम उनके पीछे-पीछे तालाब तक गए, जहाँ वे खड़ी होकर आपस में सलाह-मशविरा करने लगीं, फिर वापस लौट आईं। बारिश में हम रोडोडेंड्रोन के झुरमुट के किनारे तक गए, बिजली चमकी, लगभग साफ़ लाल रंग की, और हमने उन्हें जल्दी से एक इंतज़ार कर रही कार की ओर जाते और रोडोडेंड्रोन को खुली हुई पिछली डिग्गी में लादते देखा। हमने उन्हें जाने दिया। अगर हमने उन्हें थोड़ा असहज कर दिया, तो लगभग इतना ही काफ़ी था। लेकिन हम गुस्से में थे। और मैं अपनी दुविधा में उलझी नैतिकता पर सोचने लगी। मेरी जेब में एक नारंगी और एक गुलाबी गुलाब की कली थी, और घर पर एक पूरा लाल गुलाब अपनी खुशबू बिखेर रहा था। मेरा मन कर रहा था कि नाचने के लिए ढेर सारे रोडोडेंड्रोन चुराने वाली लड़की को मार डालूँ। मुझे लगता है कि हफ्ते में एक गुलाब खाना मेरे और टेड के लिए सौंदर्य का आनंद है, किसी के लिए कोई दुख या हानि नहीं। पीले गुलाब मुरझा चुके हैं - क्यों न एक कली को पूरी तरह खिलने से लेकर मुरझाने तक बचाकर उसकी जगह दूसरी कली लगाई जाए: गुलाब के मौसम में एक अमर, रंग-बिरंगे गुलाब को प्यार करना और उसे संजोकर रखना, जबकि पूरा बगीचा छोड़ दिया जाए - लेकिन ये लड़कियाँ तो पूरी झाड़ियाँ उखाड़ रही थीं - उनकी यह क्रूरता और स्वार्थ मुझे

घृणा और क्रोध से भर देता था। मेरे अंदर एक ऐसी हिंसा भरी है जो मौत के खून की तरह गर्म है। मैं खुद को मार सकती हूँ या - अब मुझे पता है - किसी और को भी मार सकती हूँ। मैं किसी औरत को मार सकती हूँ, या किसी आदमी को घायल कर सकती हूँ। मुझे लगता है कि मैं कर सकती हूँ। मैंने अपने हाथों को काबू में रखने के लिए दांत पीस लिए, लेकिन उस उद्दंड लड़की को घूरते ही मेरे दिमाग में खून से लथपथ सितारों की एक चमक कौंध गई, और उस पर झपटने और उसे खून से लथपथ कर टुकड़े-टुकड़े करने की तीव्र इच्छा जागृत हुई।
* घर के पुराने दोस्त
† उनके शेक्सपियर प्रोफेसर
पीटर डेविसन
कैम्ब्रिज में एक नई साहित्यिक पत्रिका
जिसमें ह्यूज़ ने प्लाथ की एक रचना का हल्के-फुल्के अंदाज़ में मज़ाक उड़ाया था।
a सेंट बोटॉल्फ्स रिव्यू के संपादक
डोरोथिया क्रूक, प्लाथ की पसंदीदा प्रोफेसर थीं, जिनका उन पर बहुत सकारात्मक प्रभाव था और वे एक आदर्श थीं। प्लाथ अक्सर - और अस्पष्ट रूप से - अपनी डायरी में उन्हें डोरिस क्रूक के नाम से संबोधित करती हैं।
लुकास मायर्स, कैम्ब्रिज में पढ़ने वाले एक अमेरिकी लेखक, जो टेड ह्यूजेस के बहुत करीबी थे।
d माइकल सेंट जॉर्ज बॉडी, टेड ह्यूजेस के एक करीबी दोस्त गॉर्डन लैमेयर
ब्रोंटे परिवार
आलोचक डैनियल आरोन, स्मिथ संकाय

h सीमोर लॉरेंस, प्रकाशक
कवि डब्ल्यू. एस. मर्विन और उनकी पत्नी, डिडो
j टेड की बहन
स्मिथ संकाय
जूना बार्न्स का क्लासिक उपन्यास
यह चित्र डुआनियर रूसो द्वारा बनाया गया है।
जॉयस विद्वान, हार्वर्ड संकाय
जैक स्वेनी की पत्नी; प्राचीन आयरिश परंपराओं की विशेषज्ञ
p एड्रिएन रिच के पति
q ऑस्ट्रियाई चित्रकार ऑस्कर कोकोस्चका
रॉबर्ट ग्रेव्स द्वारा रचित; प्लाथ के कार्यों पर एक महत्वपूर्ण प्रभाव।
कवि एंथोनी हेक्ट
कविता संकलनकर्ता
जीन स्टैफोर्ड उस समय लोवेल की पत्नी थीं जब उन्होंने अपनी पहली पुस्तक उन्हें समर्पित की थी। टेड ह्यूजेस की पहली पुस्तक प्लाथ को समर्पित थी।

□□□ III

□□□□□□ 1958–1959

□□□□□□□□ 1960–1962

शुक्रवार, 20 जून। मेरा आदर्श वाक्य शायद यही हो सकता है, "मेरी आत्माएं, जैसे किसी सपने में, उलझी हुई हैं।" मैं अवसाद से जूझ रही हूँ और जूझती रहूँगी। ऐसा लगता है मानो मेरा जीवन जादुई रूप से दो विद्युत धाराओं से संचालित हो रहा हो: आनंददायक सकारात्मक और निराशाजनक नकारात्मक—जो भी धारा उस क्षण प्रवाहित होती है, वही मेरे जीवन पर हावी हो जाती है, उसे डुबो देती है। मैं अब निराशा से, लगभग उन्माद से, घिरी हुई हूँ, मानो मेरा दम घुट रहा हो। मानो कोई विशालकाय, बलवान उल्लू मेरी छाती पर बैठा हो, अपने पंजों से मेरे दिल को जकड़ रहा हो और जकड़ रहा हो। मुझे पता था कि यह नया जीवन शिक्षण से कहीं अधिक कठिन होगा— लेकिन मेरे पास हथियार हैं, और आत्मज्ञान उनमें सबसे श्रेष्ठ है। पिछले पतझड़ में जब मैंने अपनी नौकरी शुरू की थी, तब मैं घोर रूप से उन्मादी थी: बाहरी दबाव ने मेरा खून चूस लिया था, और मैं भयभीत थी। अब, स्थिति बिल्कुल अलग है, फिर भी भावनात्मक रूप से वही है। जीवन में पहली बार मुझे चौदह महीने पूरी तरह से आज़ादी मिली है, आर्थिक रूप से सुरक्षित महसूस कर रही हूँ, और एक ऐसे अद्भुत पति का जादुई और पल भर का साथ पा रही हूँ... विशाल, रचनात्मक, इतना अद्भुत कि मुझे लगता है जैसे मैंने ही उन्हें बनाया हो—लेकिन वो इतना आश्चर्य देते हैं कि मैं जानती हूँ कि वो असली हैं और अपने वातावरण में जमे हिमखंड की तरह गहरे हैं। तो मेरे पास ये सब है, और मेरे अंग सुन्न पड़ गए हैं: अंदर की मांगें मेरा खून चूस रही हैं, और मैं डरती हूँ—क्योंकि मुझे अपनी ही मांगों को पूरा करना है: दुनिया की सबसे कठिन ज़िम्मेदारी: रुकावटों और असफलताओं के लिए दोष देने के लिए कोई

बाहरी अड़ियल पदार्थ नहीं है, केवल अंदर का उग्र अड़ियलपन है: आलस्य, भय, घमंड, नम्रता। मैं जानती हूँ, जैसा कि मैंने पिछली शरद ऋतु में लिखा था, कि अगर मैं इस अनुभव का सामना करूँ और इस पर काबू पाऊँ और कविताओं, कहानियों, उपन्यासों की एक किताब लिखूँ, जर्मन सीखूँ और शेक्सपियर और एज़्टेक मानव विज्ञान और 'द ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़' पढ़ूँ—जैसे मैंने शिक्षण की विभिन्न मांगों का सामना किया और उन पर काबू पाया—तो मैं फिर कभी खुद से नहीं डरूँगी। और अगर मैं खुद से नहीं डरती—अपने ही डर और झिझक से—तो दुनिया में डरने के लिए कुछ खास नहीं बचेगा—दुर्घटना, बीमारी, युद्ध, हाँ—लेकिन खुद के डटकर खड़े होने से नहीं। यह तो अंधेरे में तीर चलाने जैसा है। मैंने तो उस सबसे भयानक पहली महिला की परीक्षा की भी कामना की है: बच्चे को जन्म देना—अपने अंदर के राक्षसों से बचने और लेखन में कमी का लगातार बहाना बनाने के लिए। मुझे पहले अपने लेखन और अनुभव पर विजय प्राप्त करनी होगी, और फिर ही मैं बच्चे को जन्म देने की चुनौती पर विजय प्राप्त करने के योग्य बनूँगी। लकवा। एक बार बाहरी तनाव दूर हो जाए: मैं जून के ठंडे, धुंधले दिन में पत्तियों के हरे-भरे धुंधलेपन का स्वागत करते हुए बैठती हूँ, मैं अपने भीतर ही सिमटती जाती हूँ, गहराई में उतरती हूँ, अपने पहले गृहनगर विन्थ्रोप को फिर से देखने की लालसा करती हूँ, वेलेस्ली को नहीं। जमैका प्लेन भी: ये नाम ताबीज बन गए हैं। चर्च की घड़ी, या क्या यह एंजेलस है? अपनी अजीब लयबद्ध घंटियों के साथ बारह बजती है। लगभग एक महीना ऐसे ही बीत गया—न्यूयॉर्क जाने में, वेलेस्ली में पढ़ने में और अपार्टमेंट ढूंढने में। समय बर्बाद करने में। लोगों के साथ रहने में। मैं कहती हूँ कि मुझे लोगों की ज़रूरत है, फिर भी उन्होंने मेरा क्या भला किया? शायद, जब मैं

कोई कहानी लिखने की कोशिश करूँगी, तब मुझे पता चलेगा। मैं खिड़की पर झुककर, माथा शीशे से लगाकर, नीली वर्दी वाले डाकिया के घर से बाहर आने का इंतज़ार कर रही हूँ, जिसने स्वीकृति पत्र छोड़ दिए हों…
मैं साल भर की शिक्षण मशीन के खालीपन, शून्य और धुएं में खो जाती हूँ, जो क्लिक और गुर्राते हुए तेज़ी से आगे बढ़ती है। मुझे फिर से, पहली बार... और काफी लंबे समय बाद, अपने दिनों को व्यवस्थित और रचनात्मक ढंग से संवारना होगा—खुद को पढ़ने और लिखने के कामों में व्यस्त रखना होगा—घर को साफ-सुथरा और सुव्यवस्थित रखना होगा, और अपनी आलस की बीमारी से छुटकारा पाना होगा। इस हफ्ते हमें एक "आदर्श" अपार्टमेंट मिला—सौंदर्य की दृष्टि से आदर्श, भले ही कीमत अधिक हो और रसोईघर लिविंग रूम की एक दीवार से सटा हुआ हो। लेकिन नज़ारा, ओह, नज़ारा, हाँ, नज़ारा। 115 डॉलर प्रति माह में दो छोटे कमरे, फिर भी रोशनीदार, शांत और छठी मंजिल से बीकन हिल से नदी का दृश्य, दो बे खिड़कियाँ, एक टेड के लिए और एक मेरे लिए लिखने के लिए। मैं केवल मैरिएन मूर के पत्र का इंतजार कर रही हूँ ताकि मैं सैक्सटन अनुदान के लिए अपना आवेदन भेज सकूँ, जो हमारे अनुबंधित वर्ष के केवल दस महीनों के लिए किफायती होगा और किराए के बारे में मेरी रूढ़िवादी अंतरात्मा को पूरी तरह से राहत देगा। बीकन हिल का किराए का फ्लैट हमारी गर्मियों की शांति प्रदान करता है। मैं यहाँ लिख रही हूँ, क्योंकि मैं हर जगह पंगु हो गई हूँ। मजबूर। मानो शिक्षण वर्ष के नाच-गाने, टैरेंटेला नृत्य की प्रतिक्रिया स्वरूप, मेरा मन ज्ञान और अध्ययन से विमुख हो जाता है: मैं फिजूलखर्ची करती हूँ, बेसुध सी—कभी यह उठाती हूँ, कभी वह, कभी कोई बर्तन पोंछती हूँ, कभी मेयोनेज़ मिलाती हूँ, कभी यातायात के शोर के बीच डाकिया की

सीटी की काल्पनिक ध्वनि से चौंक जाती हूँ। मैं अपनी कविताओं से निराश हूँ: वे नीरस हैं। मेरे पास 25 से अधिक केवल कुछ ही कविताएँ हैं और मुझे 40 की ठोस कविताएँ चाहिए। मेरे विषय दूर के हैं। मैंने अपने अनुभव को खोला ही नहीं है। मैं बस त्यागती ही जा रही हूँ। मेरा मन विचारों से खाली है और मुझे विषयों को एक मैगपाई की तरह खोजना पड़ता है: टुकड़ों और अधूरी चीजों से। मैं तुच्छ, समृद्धता से रहित महसूस करती हूँ। भयभीत, अपर्याप्त, हताश। मानो मेरा मन एक "अड़चन" में फंस गया हो, जो जम गया हो और अंधा हो गया हो। और मुझे धीरे-धीरे अपनी ज़मीन को व्यवस्थित करना होगा: कविताओं, स्तनपान करते शिशुओं, वाइफ-ऑफ-बाथ जैसी शांति, हास्य और लचीलेपन से परिपूर्ण अपने आत्म-सपने को समय के साथ साकार करना होगा। मुझे किसी स्कूल-निर्धारित वर्ष का सामना नहीं करना पड़ रहा है, बल्कि एक ऐसे कठिन वर्ष का सामना करना पड़ रहा है जहाँ सभी चुनाव मेरे हैं, सभी निर्माण, सभी विलंब, चूक, टालमटोल और सभी सुस्ती मेरी ज़िम्मेदारी हैं।
25 जून, बुधवार। एक खास दिन, शायद इस पूरी किताब में पहला। मैं कल यहाँ लिखने वाली थी, लेकिन बहुत उदास और निराश थी। आज मैं टेड और अपनी कुछ और कविताएँ और चिट्ठियाँ टाइप करने बैठी, जिन्हें भेजना था। टाइपराइटर पर बैठे-बैठे ही मैंने डाकिया को पड़ोस की करोड़पति महिला के घर के सामने वाले रास्ते में जाते देखा, जिसकी प्यारी सी हल्की नीली शर्ट मुझे बहुत भाँप रही थी। मैं दौड़कर नीचे गई। मेलबॉक्स से एक चिट्ठी निकली हुई थी, और मैंने उसके बाएँ कोने पर गहरे अक्षरों में 'द न्यू यॉर्कर' देखा। मेरी आँखें चौंधिया गईं। मेरे दिमाग में कई सवाल दौड़े: मैंने अपनी पिछली कविताओं के साथ एक स्टांप लगा लिफाफा भेजा था, तो शायद वो खो गया होगा और उन्होंने बाकी कविताएँ अपने किसी लिफाफे में

वापस भेज दी होंगी। या फिर ये कॉपीराइट के बारे में टेड के लिए कोई चिट्ठी होगी। मैंने चिट्ठी को बॉक्स से फाड़कर निकाला। वो उम्मीद से भरी पतली सी थी, जो मुझे चौंका रही थी। मैंने सीढ़ियों पर ही उसे फाड़कर खोल दिया, वहीं विशाल मार्शमैलो जैसी दिखने वाली श्रीमती व्हेलन हरे-भरे आंगन में अपने दो फीके, बनावटी रूप से प्यारे दिखने वाले छोटे बेटों के साथ बैठी थीं, जो स्विमसूट पहने रबर के गोल पोर्टेबल स्विमिंग पूल में कूद-कूद कर एक चटख धारीदार गेंद उछाल रहे थे। हॉवर्ड मॉस के पत्र की मोटी काली छपाई मेरे दिमाग में कौंध गई। मैंने देखा, “मसल हंटर एट रॉक हार्बर मुझे एक अद्भुत कविता लगती है और मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि हम इसे द न्यू यॉर्कर के लिए भेज रहे हैं…”—दस साल की उम्मीद भरी प्रतीक्षा (और उसके बाद की अस्वीकृतियों) के इस अहसास पर मैं खुशी से चिल्लाते हुए टेड के पास ऊपर भागा और एक मैक्सिकन बीन की तरह उछलने लगा। कुछ ही क्षण बाद, थोड़ा शांत होकर, मैंने वाक्य पूरा किया, “…साथ ही नॉक्टर्न भी, जिसे हम भी बेहद बढ़िया मानते हैं।” दो कविताएँ— इतना ही नहीं, मेरी सबसे लंबी कविताओं में से दो—क्रमशः 91 और 45 पंक्तियों की: दोनों को ही प्रमुख स्थान देना होगा और वे इन्हें ग्रीष्मकालीन कविताओं के पूरे भंडार के बावजूद खरीद रहे हैं, न कि केवल भरने के लिए। खुशी का यह क्षण मेरे पुराने डर को जीत लेता है और मुझे आने वाले महीनों में रचनात्मक लहर पर सवार होकर लेखन करने में मदद करेगा।
गुरुवार, 26 जून… कॉलेज पुस्तकालय के चिपचिपे, सुनसान और उदास वातावरण में मकड़ियों, केकड़ों और उल्लुओं के बारे में खोजबीन की: उमस भरी गर्मी में इस पुस्तकालय पर अपना अधिकार जताना सुखद था। आज सुबह एक छोटी सी कविता लिखी—“मेन स्ट्रीट के ऊपर उल्लू”

“अक्षरबद्ध” छंद में। और बेहतर हो सकती थी। शुरुआत विषय के हिसाब से थोड़ी भावुक है और आखिरी छंद को थोड़ा और विस्तार दिया जा सकता था। मुझे कविताओं को यूं ही छोड़ देना चाहिए, उन्हें फिर से लिखने के लिए छोड़ देना चाहिए, और उन्हें अपनी किताब में चिपकाने की इतनी जल्दी नहीं करनी चाहिए। मुझे पंद्रह-बीस और कविताएँ चाहिए। वह उल्लू जिसे हमने शहर में आधी रात की सैर के दौरान सुना था, पक्षी के शरीर का विशाल पंखदार निचला हिस्सा, उसके चौड़े पंख टेलीफोन के तारों पर फैले हुए—एक भयानक चीख। और हाँ: स्पेन में काली मकड़ी जो चींटियों को अपनी चट्टान के चारों ओर लपेटे हुए थी। हिंसा के दृश्य। पशु जगत मुझे दिन-प्रतिदिन अधिक आकर्षक लगता है। अजीबोगरीब सपने: मैंने लाल नोक वाली प्लास्टिक की बेलनाकार बोतल से पानी पिया और डर के मारे समझ गया कि उसमें स्टार्च मिला हुआ ज़हर था—पेट में मरोड़ उठने का इंतज़ार किया, फिर एंटीडोट्स याद करके आइसबॉक्स की तरफ भागा और एक कच्चा अंडा पूरा निगल गया: टेड कहता है कि यह गर्भधारण का प्रतीकात्मक सपना है। और कल रात—एक म्यूजिकल कॉमेडी और सौ डैनी केज़। मैंने अपने होंठ से त्वचा का एक टुकड़ा खींचा और मेरे होंठ से खून बहने लगा, होंठ के आकार का—मेरा पूरा मुंह चमकदार लाल खून से लथपथ था।
गुरुवार, 3 जुलाई… मैं लगातार कविताएँ लिख रहा हूँ और गद्य लेखन की इच्छा का एक सुखद नवप्रवेश महसूस कर रहा हूँ: अपनी इस उत्सुकता को और बढ़ाने के लिए मैंने एक साहित्यिक पत्रिका खरीदी है—अभी गुस्सा मत कीजिए: मेरे पास अपना समय है। मैं अपनी पुस्तक से एक-एक करके कविताएँ अस्वीकार कर रहा हूँ, जिसका शीर्षक अब मेरी सबसे बेहतरीन और दिल को छू लेने वाली कविताओं में से एक है, जो मेरे पिता-समुद्र-देवता प्रेरणास्रोत के बारे

में है: फुल फैथम फाइव। “द अर्दनवेयर हेड” अब प्रकाशित नहीं हो रही है: कभी इंग्लैंड में इसे “मेरी सर्वश्रेष्ठ कविता” कहा जाता था: बहुत ही अलंकृत, बनावटी, बिखरी हुई और कठोर—अब तो मुझे शर्म आती है—सिर के लिए पाँच छंदों में दस विस्तृत विशेषणों के साथ। अब मुझे लगता है कि मेरी सबसे बेहतरीन रचना “मसल हंटर एट रॉक हार्बर” है: लेखक के प्रूफ कल द न्यू यॉर्कर से आए। तीन लंबे कॉलम उसी शानदार न्यू यॉर्कर प्रिंट में छपे हैं जिसका मैंने इतने लंबे समय से सपना देखा था। मेरी अगली महत्वाकांक्षा द न्यू यॉर्कर में एक कहानी प्रकाशित करवाना है—इसके लिए अभी पाँच-दस साल और लगेंगे। दो दिन तक बिजली की आरी से पेड़ काटने की भयानक आवाज़ आती रही, जिससे पुजारी आजकल नाराज़ और परेशान हैं। ट्रक चला गया है और मुझे शांति की उम्मीद है—ट्रैफ़िक नियमित और इतना कम है कि न के बराबर है। मैंने 1 जुलाई से जर्मन सीखना शुरू किया—दिन में दो घंटे। ग्रिम की कहानियों का अनुवाद करना शुरू कर दिया है, शब्दावली की सूची बना रही हूँ, लेकिन अब व्याकरण पर काम करना ज़रूरी है—क्रिया और संज्ञा के सभी रूप भूल गई हूँ, लेकिन दो साल तक कहानी को हाथ न लगाने के बाद भी उसका सार समझ पा रही हूँ, यह देखकर मुझे हैरानी हो रही है। मेरा जीवन मेरे हाथों में है। मैं एज़्टेक, जानवरों के व्यक्तित्व, मनुष्य और रीढ़धारी जीवों पर पेंगुइन की किताबें पढ़ रही हूँ। पढ़ने के लिए बहुत कुछ है, लेकिन इस साल मैं समय सारिणी बना लूँगी—इससे मदद मिलेगी। टेड ने मुझे कविता के कई विषय और असाइनमेंट दिए हैं जो बहुत रोमांचक हैं: मैंने पहले ही ग्राउंडहॉग और ज़मींदारों पर एक अच्छी छोटी कविता लिख ली है और आगे लिखने के लिए उत्सुक हूँ।

शुक्रवार, 4 जुलाई। स्वतंत्रता दिवस: कितने लोग जानते हैं कि वे किससे मुक्त हैं, किससे कैद हैं। ठंडी हवा, कनाडा की हवा, ने रात में वातावरण बदल दिया और मैं ठंडे मौसम में जागा, इतना ठंडा कि गर्म चाय और स्वेटर पहनने का मन कर रहा था। मैं अपने नन्हे पक्षी को दाना खिलाने के लिए उठा। कल, मुझ पर एक अजीब, घुटन भरी बेचैनी छाई हुई थी—शायद कुछ हद तक गद्य न लिखने की वजह से: कहानियां, मेरा उपन्यास—मैं टेड के साथ घनी उमस भरी हवा में बाहर निकला। वह सड़क पर एक पेड़ के पास रुक गया। वहाँ नंगी ज़मीन पर, पीठ के बल, दुबले-पतले पंख बेताबी से फैलाए, एक नन्हा पक्षी, अपने घोंसले से गिरकर, तड़प रहा था, मानो मौत की कंपकंपी हो रही हो। मैं उसकी पीड़ा देखकर बीमार पड़ गया, जी मिचला रहा था। टेड उसे गोद में उठाकर घर ले आया, और उसने अपनी चमकदार काली आँखों से बाहर देखा। हमने उसे गत्ते के एक छोटे से डिब्बे में रखा, जिसमें एक तौलिया और मुलायम कागज़ के टुकड़े भरकर घोंसला जैसा बनाया। पक्षी कांपता रहा। ऐसा लगा जैसे उसका संतुलन बिगड़ गया हो, और वह पीठ के बल गिर पड़ा। हर पल मुझे लग रहा था कि इसकी दुबली-पतली छाती में साँस रुक जाएगी। पर ऐसा नहीं हुआ। हमने इसे दूध में भीगी रोटी टूथपिक पर लगाकर खिलाने की कोशिश की, पर इसने छींका, निगला नहीं। फिर हम शहर गए और ताज़ा पिसा हुआ स्टेक खरीदा, जो मुझे कीड़े के आकार का लगा। जैसे ही हम सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे, चिड़िया ने दयनीय आवाज़ में चीखा और अपनी पीली, मेंढक जैसी चोंच इतनी चौड़ी खोल दी कि उसका सिर जीभ के पीछे से दिखाई ही नहीं दे रहा था। बिना सोचे समझे, मैंने मांस का एक बड़ा टुकड़ा चिड़िया के गले में ठूँस दिया। चोंच मेरी उंगली पर बंद हो गई, जीभ ने मेरी उंगली को चूस लिया, और खाली मुँह फिर से खुल गया। अब मैं चिड़िया को निडर होकर मांस और रोटी खिलाती हूँ और

यह भी कहा कि मुझे "लोरेली" विषय पर कविता लिखनी चाहिए क्योंकि वे मेरे "अपने रिश्तेदार" हैं। तो आज मैंने मजे के लिए ऐसा किया, और मुझे वह उदास जर्मन गीत याद आ गया जो माँ हमें सुनाया करती थीं और गाती थीं, जिसकी शुरुआत होती है "Ich weiss nicht was soll es bedeuten…"। यह विषय मुझे दो तरह से (या तिगुने से) आकर्षित करता है: राइन जलपरियों की जर्मन कथा, समुद्र-बचपन का प्रतीक, और गीत की सुंदरता में छिपी मृत्यु की इच्छा। कविता ने मेरा पूरा दिन ले लिया, लेकिन मुझे लगता है कि यह एक उपयुक्त कविता है और मैं इससे खुश हूं। मुझे बड़ी पीड़ा के साथ गद्य लिखना शुरू करना होगा—यह एक विडंबना है, यह गतिरोध, जबकि मैं दिन-प्रतिदिन कविताएँ लिखता हूँ—और अन्य पठन भी करता हूँ—वरना मैं मानवीय भाषा बोलने में असमर्थ हो जाऊँगा, क्योंकि मैं अपने भीतर के शब्दहीन सरगासो में खो गया हूँ।
सोमवार, 7 जुलाई। मैं लेखन की शुरुआत में एक ऐसे दौर से गुज़र रही हूँ जो पिछले पतझड़ में अध्यापन शुरू करने के दो महीनों की मेरी बेचैनी जैसा है। एक तरह की बीमारी, हर चीज़ के प्रति आक्रोश का उन्माद, सिवाय खुद के। मैं रातों को जागती रहती हूँ, और सुबह थकी हुई उठती हूँ, ऐसा लगता है जैसे नसों को रेज़र से छील दिया गया हो। मुझे खुद ही अपना डॉक्टर बनना होगा। मुझे इस विनाशकारी पक्षाघात, मननशील सोच और दिवास्वप्न का इलाज करना होगा। अगर मुझे लिखना है, तो इस तरह व्यवहार करना ठीक नहीं है— इससे भयभीत होना, इससे जम जाना। अजन्मे उपन्यास का भूत एक मेडुसा के सिर की तरह है। मेरे मन में पात्रों के बारे में हास्यपूर्ण या सरल अवलोकन संबंधी टिप्पणियाँ आती हैं। लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि शुरुआत कैसे करूँ। शायद, मैं बस शुरू कर दूँगी। मुझे कहीं न कहीं यकीन है कि मुझे हर दिन एक अच्छी "किताब

कविता" लिखनी चाहिए—लेकिन यह बकवास है—जब मैं एक दिन में बारह खराब पंक्तियाँ लिखती हूँ तो मैं पागल हो जाती हूँ—जैसा कि मैंने कल किया। मुझे लगता है, मेरा खतरा आंशिक रूप से टेड पर अत्यधिक निर्भरता है। वह उपदेशक और कट्टरपंथी हैं—यह आखिरी बात मुझे सबसे ज़्यादा तब नज़र आती है जब हम उन लोगों के साथ होते हैं जो उनका मुझसे ज़्यादा संतुलित आकलन कर सकते हैं— जैसे कि लियोनार्ड बास्किन। ऐसा लगता है जैसे मैं किसी लुभावने लेकिन खतरनाक भंवर में फंस गई हूँ। हमारे बीच कोई रुकावट नहीं है—ऐसा लगता है जैसे हम दोनों में से किसी के पास—या खासकर मेरे पास—कोई त्वचा ही नहीं है, या हमारे बीच एक ही त्वचा है और हम लगातार एक-दूसरे से टकराते और रगड़ते रहते हैं। मुझे अच्छा लगता है जब टेड कुछ देर के लिए चुप रहते हैं। मैं अपने आंतरिक जीवन, अपने विचारों को विकसित कर सकती हूँ, बिना उनके लगातार "क्या सोच रही हो? अब क्या करने वाली हो?" जैसे सवालों के, जो मुझे तुरंत और ज़िद से सोचने और करने से रोक देते हैं। हम दोनों में गजब का तालमेल है। लेकिन मुझे खुद को साबित करना होगा—खुद को बनाना होगा, न कि उन्हें खुद को बनाने देना होगा। वह आदेश देते हैं—जो एक-दूसरे के विपरीत हैं: एक घंटा गाथागीत पढ़ो, एक घंटा शेक्सपियर पढ़ो, एक घंटा इतिहास पढ़ो, एक घंटा सोचो और फिर "एक घंटे में कुछ मत पढ़ो—थोड़ा-थोड़ा करके, पूरी किताब एक साथ पढ़ो।" उनकी कट्टरता और संतुलन व संयम की पूर्ण कमी उनकी गर्दन की अकड़न से स्पष्ट होती है, जो उनके "व्यायामों" के कारण हुई है
- जो स्पष्ट रूप से इतने ज़ोरदार हैं कि उन्हें अक्षम कर देते हैं।
… रास्ते में हमें एक मरा हुआ छछूंदर मिला—मैंने ऐसा छछूंदर पहले कभी नहीं देखा था—एक छोटा सा जीव जिसके नंगे, चपटे पैर थे,

जो किसी छोटे आदमी जैसे दिखते थे, और पीले, सफेद, धक्केदार से दिखने वाले हाथ—एक नाजुक थूथन और उसका सॉसेज के आकार का शरीर, जो सुंदर भूरे-नीले मखमली फर से ढका हुआ था। हमें एक मरी हुई लाल गिलहरी भी मिली, एकदम सही, उसकी आंखें मौत की वजह से बेजान और अकड़ी हुई थीं। मुझे लगा जैसे मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं है—एक ग्रीस से सने हट्टे-कट्टे गैराज मैकेनिक लड़के से बात करके मुझे अचानक खुशी हुई। वह असली लग रहा था। जब तक आत्मा में अपार संतुलन शक्ति न हो, वह जरूरी काम, दूसरे लोगों और उनके जीवन के सहारे और नियंत्रण के बिना अंतरिक्ष में हर दिशा में भटकती रहती है। लेकिन मुझे अपना लेखन कार्यक्रम बाहर से नहीं मिलेगा — यह भीतर से ही आना चाहिए। मैं कुछ समय के लिए कविताएँ लिखना बंद कर दूँगी—अभी जो किताबें पढ़ रही हूँ उन्हें पूरा करूँगी (कम से कम पाँच!), जर्मन सीखूँगी (जो मैं सीख सकती हूँ) और रसोई पर एक लेख लिखूँगी (शायद द अटलांटिक के "एक्सेंट ऑन लिविंग" के लिए?), हार्पर्स कैम्ब्रिज के लिए छात्र जीवन पर एक लेख—एक कहानी, "द रिटर्न," और फिर अचानक अपने उपन्यास पर बीच से काम शुरू कर दूँगी। काश, कोई बढ़िया कथानक होता!
बुधवार, 9 जुलाई। अभी-अभी नहाया था, क्योंकि आज सुबह का समय था और ज़्यादा गर्मी भी नहीं थी। पक्षी के साथ एक हफ़्ते के बाद हम थोड़ा संभल रहे हैं। कल रात हमने उसे मार डाला। बहुत भयानक था। वह हांफ रहा था, एक तरफ़ ऐसे पड़ा था जैसे कोई जहाज़ चूर-चूर हो गया हो, उसके मल के धब्बे थे, पूंछ के पंख बिखरे हुए थे, मुंह खोलने की कोशिश कर रहा था, तड़प रहा था। आखिर क्या हुआ था? मैंने उसे अपने हाथों में लिया, उसकी गर्म धड़कन को महसूस किया और पेट में अजीब सी बेचैनी हो रही थी: टेड की हालत भी ठीक नहीं थी— मैंने उसे एक दिन के लिए पक्षी दिया था और वह भी मेरी तरह ही

गड्ढे में एक गड्ढा खोदा, उसे दफनाया और पत्थर को वापस रख दिया। हमने कब्र पर फर्न और एक हरी जुगनू छोड़ी, और पत्थर के हमारे दिलों से निकल जाने का एहसास हुआ।
गद्य लेखन मेरे लिए एक डर बन गया है: मेरा दिमाग सुन्न हो जाता है और मैं जकड़ जाती हूँ। मैं कथानक को स्पष्ट नहीं कर पाती, या करना नहीं चाहती। कविता को एक तरफ रख देना होगा और कल से कहानी शुरू करनी होगी। आज का दिन बेकार गया, पक्षी के बाद थकान से चूर। हमेशा बहाने। मैंने कैम्ब्रिज में घोड़े सैम पर अपनी बेकाबू सवारी के बारे में एक कविता लिखी, जिसे मैं "किताब की कविता" मानती हूँ: मेरे लिए एक कठिन विषय, घोड़े मेरे लिए अनजान हैं, फिर भी सैम में आया साहसी बदलाव और न जाने कैसे मेरा उस पर टिके रहना एक तरह का रहस्योद्घाटन है: यह अच्छा रहा। उतना ही कठिन जितना मेरी छोटी सी घायल पिकेडोर कविता थी। लेकिन अब मैं पहले की तरह नहीं लिख सकती—सामान्य रूप से, दार्शनिक रूप से, "विचार जिन्होंने जलपरी के बालों वाली घोड़ी को ज्वार की हरी धारा में उलझते हुए पाया"—मुझे अपनी "लोरेली" लिखनी होगी—जलपरियों को प्रस्तुत करना होगा, उन्हें आह्वान करना होगा। उन्हें वास्तविक बनाना होगा। मैं अपनी अच्छी कविताएँ बहुत जल्दी लिख देती हूँ—वे वस्तुओं पर होती हैं, विषयों पर नहीं, इसलिए ठोस, सीमित। काफी अच्छी हैं, लेकिन मुझे विस्तार करना होगा… शनिवार, 12 जुलाई। मुझे अपने जीवन में एक बदलाव महसूस हो रहा है: लय और उम्मीद का, और अब, सुबह 11 बजे, थका हुआ, बहुत थका हुआ, फिर भी कल रात की हमारी शानदार बातचीत के बाद स्थिर। एक बदलाव आया है: क्या इसका असर एक महीने बाद, एक साल बाद दिखेगा? मुझे लगता है, यह कोई झूठी शुरुआत नहीं है। बल्कि एक पुराने, अपंग कर देने वाले भ्रम का पुनर्मूल्यांकन है, जो एक मजबूत, धीमी गति से चलने

वाले व्यावहारिक कार्यक्रम में बदल गया है। कल का दिन सबसे बुरा था। सारा दिन मैं दर्पणों और पहचान पर एक अमूर्त कविता पर बैठा रहा, जिससे मुझे नफरत थी, ठंड लग रही थी, हताशा हो रही थी, क्योंकि महीने भर की मेरी गति (उस दौरान 10 से अधिक कविताएँ) धीमी पड़ गई थी, और केन्योन पत्रिका से अस्वीकृति ने निराशा को और बढ़ा दिया था। मुझे एहसास होने लगा कि कविता गद्य लेखन से बचने का एक बहाना और पलायन थी। मैंने कहानियों के लिए अपने वाक्य नोट्स देखे, ठीक वैसे ही जैसे इस पृष्ठ पर लिखे नोट्स हैं: मैंने सबसे "आशाजनक" विषय चुना—यूरोप से जहाज से लौट रही सचिव, जिसके सपने परखे गए और चकनाचूर हो गए। वह खूबसूरत या अमीर नहीं थी, बल्कि छोटी, लगभग नीरस, कुछ कम आकर्षक और स्वभावहीन थी। चालाक लोग मुझ पर झुके हुए थे: रोमांस की मांग कर रहे थे—क्या उसे खूबसूरत होना चाहिए? क्या श्रीमती एल्ड्रिच, जो इतनी सामान्य, शांत और अपने सात बच्चों की अच्छी देखभाल करने वाली थीं, का सड़क के उस पार रहने वाले युवा, प्यारे श्री क्रुइक्शैंक के साथ प्रेम संबंध होना चाहिए? मैंने अपने अनुभवों में से तैयार "बड़े" विषयों को खोजने की कोशिश की: कोई नहीं मिला... सब फीका पड़ गया—जैसे कोई कांच का आवरण मुझे छूने से रोक रहा हो। बहुत ही नीरस। या क्या मेरा नज़रिया ही नीरस था? जीवन कहाँ था? यह बिखर गया, हवा में गायब हो गया, और मेरा जीवन बोझिल और अधूरा रह गया क्योंकि इसमें कोई तैयार उपन्यास का कथानक नहीं था, क्योंकि मैं बस टाइपराइटर पर बैठकर अपनी प्रतिभा और इच्छाशक्ति से आज ही एक गहन और आकर्षक उपन्यास शुरू करके अगले महीने खत्म नहीं कर सकती थी। कहाँ से, कैसे, किससे और किसलिए शुरू करूँ? मेरे जीवन की कोई भी घटना 20 पन्नों की कहानी के लिए भी उपयुक्त नहीं लग रही थी। मैं सुन्न होकर बैठी थी, मानो

दुनिया में बात करने के लिए कोई इंसान ही न हो। खुद के बनाए खालीपन में, मानवता से पूरी तरह कटी हुई। मेरी तबीयत और भी खराब होती जा रही थी। मैं लेखक के सिवा कुछ और बनकर खुश नहीं रह सकती थी, और मैं लेखक बन भी नहीं सकती थी। मैं एक वाक्य भी नहीं लिख पा रही थी: मैं डर से, जानलेवा उन्माद से लकवाग्रस्त हो गई थी। मैं गर्म रसोई में बैठी थी, समय की कमी, जुलाई की उमस भरी गर्मी, खुद के सिवा किसी और को दोष नहीं दे पा रही थी। सफेद उबले अंडे, हरी सलाद पत्ती, दो गुलाबी रंग के वील चॉप्स मुझे चुनौती दे रहे थे कि मैं उनसे कुछ भी करूँ, उन्हें एक भोजन बनाऊँ, उनकी नीरस पहचान को एक सुपाच्य भोजन में बदल दूँ। मैं लेखक बनने के एक खोखले सपने में जी रही थी। और यहाँ बेवकूफ गृहिणियाँ और पोलियो से पीड़ित लोग अपनी कहानियाँ 'द सैटरडे ईव पोस्ट' में छपवा रहे थे। मैं पूरी तरह टूट चुकी थी, टेड के पास गई और उससे वील चॉप्स को संभालने के लिए कहा। और फूट-फूट कर रोने लगी। बेकार, किसी काम की नहीं। हमने इस पर चर्चा की, इसका विश्लेषण किया। मुझे लगा जैसे दुनिया का बोझ उतर गया हो। मैं अपनी शुरुआती सफलता से बहुत ज़्यादा बिगड़ गई थी, सेवेंटीन, हार्पर और मैडमोज़ेल जैसी पत्रिकाओं में मिली सफलता ने मुझे इतना बिगाड़ दिया था कि मुझे लगता था कि अगर मैं किसी कहानी पर काम करूं और वह न बिके, या अभ्यास के लिए कोई रचना लिखूं और उसे बाज़ार में न उतार पाऊं, तो कुछ गड़बड़ है। मैं प्रतिभाशाली थी, हुनरमंद थी—सभी संपादक यही कहते थे—तो फिर मैं लिखने के हर मिनट के बदले बड़ा प्रतिफल क्यों न मांगूं? हर हफ्ते एक ज़बरदस्त कहानी? मैं एक ऐसे विषय पर 20 पन्नों का कथानक चाहती थी जो मुझे बिल्कुल भी आकर्षित न करे। अब, हर दिन, मैं एक छोटे से दृश्य पर 5 पन्ने, लगभग 1,500 शब्द लिखती हूं, एक ऐसा दृश्य जो भावनाओं और संघर्ष से भरा होता

है, और बस इतना ही: जीवन के इन छोटे-छोटे टुकड़ों को, जिन्हें मैं तुच्छ और गैर-गंभीर समझकर नज़रअंदाज़ कर देती थी, "कथानक सामग्री" बनाना। मैं लय और अभिव्यक्ति की खामियों को हवा में ठीक नहीं कर सकती। मैं अब से लगातार तीन घंटे लिखने में बिताऊंगा, और किसी भी बुरे या मामूली विषय को अपने दिन पर हावी नहीं होने दूंगा।
गुरुवार, 17 जुलाई। दो दिन बिना किसी कार्यक्रम के बीतने के बाद, बास्किन्स, रॉडमैन से मिलने के कारण थोड़ी देर के लिए दिनचर्या बाधित हुई... मैं एक साफ, ठंडे, धूप वाले दिन बैठा हूँ, सिवाय उस बेचैनी के जो पीछा नहीं छोड़ रही। यह आती-जाती रहती है। मुझे लगता है कि मैं जीवन के रहस्यों को उजागर कर सकता हूँ— अपने दैनिक लेखन में, अपने पढ़ने और योजना बनाने में: काश मैं अपने इस अतिवादी डर से छुटकारा पा पाता। मुझे लगातार यह एहसास होता है कि यह समय अनमोल है, और साथ ही यह भी कि मैं इसका उपयोग करने में असमर्थ हूँ: या इसे व्यर्थ और अंधाधुंध तरीके से उपयोग करूँगा। मेरे कंधों पर दुनिया भर की किताबें पढ़ने का बोझ है, जबकि मैं हर दिन एक किताब पढ़ सकता था। मुझे खुद को अनुशासित करना होगा और कुछ लेखकों, कुछ क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करना होगा, अन्यथा मैं कुछ भी न जानते हुए भी सब कुछ भूलकर भटक जाऊँगा। सड़क के उस पार कीलों पर हथौड़ों की खनखनाहट और लकड़ी पर हथौड़ों की थपथपाहट सुनाई दे रही है। लोग मचान पर काम कर रहे हैं। मैं न तो अज्ञानी हूँ और न ही आवारा, लेकिन मैं चाहती हूँ, काश, मेरी अपनी एक जगह होती: कुछ ऐसा जिसके बारे में मैं जान सकूँ, जिसके बारे में मैं अच्छे से लिख सकूँ। मैंने आज तक जो कुछ भी पढ़ा है, वह धुंधला और लुप्त होता जा रहा है: याद रखिए, मैं संचय नहीं करती। इस साल मैं धीरे-धीरे, स्थिर विकास के लिए काम

करूँगी, कुछ भी असाधारण नहीं, और इस घबराहट से छुटकारा पाने के लिए। खिड़कियाँ किसी अनसुने विस्फोट से हिल रही हैं। टेड कहता है कि वे ध्वनि अवरोध को तोड़ रही हैं। कहीं न कहीं मुझे एक दृष्टि दिखाई देती है, जो निराशा या नीचता की नहीं, बल्कि परिपूर्णता की है, एक परिपक्व, शांत स्वभाव की, बुरे सपनों को सहने की क्षमता की, एक व्यवस्थित, पुनर्आकार देने वाली क्षमता की जो स्थिर करती है और भयभीत नहीं होती। एक गृहिणी—बच्चों के साथ, लेखन और पठन के साथ, व्यस्त जीवन के बीच, लेकिन पूरी तरह से, अच्छे दोस्तों के साथ जो किसी न किसी रूप में निर्माता हैं। जितना अधिक मैं करती हूँ, उतना ही अधिक मैं कर सकती हूँ। मुझे सबसे पहले उन कुछ चीजों को चुनना चाहिए जिन्हें मैं सीखना चाहती हूँ: जर्मन, कवि और कविता, उपन्यास और उपन्यासकार, कला और कलाकार। फ्रेंच भी। क्या सड़क के उस पार वे सब कुछ बना रहे हैं या बिगाड़ रहे हैं? सारे डर तो बस कल्पना हैं: मैं उन्हें खुद बनाता हूँ।
मेरी कविताओं के जवाब में और सैक्सटन पुरस्कार के लिए उन्हें संदर्भ के रूप में देने के मेरे अनुरोध पर मैरिएन मूर ने एक अजीबोगरीब, अस्पष्ट और द्वेषपूर्ण पत्र भेजा। इतना द्वेषपूर्ण कि विश्वास करना मुश्किल है: ऐसी टिप्पणियाँ जिनका कोई स्पष्ट अर्थ या मदद नहीं थी, केवल घोर अप्रियता से भरी थीं: "इतने क्रूर मत बनो," "मैं तो बस मक्खियाँ भगाती हूँ" (मेरी कब्रिस्तान कविता के लिए), "तुम बहुत कठोर हो" ("मसल हंटर" में), और "टाइपिंग एक मुसीबत है" जैसी तीखी टिप्पणियाँ। इसलिए उन्होंने हमारी भेजी हुई कविताएँ वापस भेज दीं। मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि वह सिर्फ इसलिए इतनी तीखी और कटु हो गईं क्योंकि मैंने उन्हें कार्बन कॉपी भेजी थीं ("स्पष्ट," उन्होंने टिप्पणी की)। मुझे

एहसास हुआ कि यह मेरी सबसे बड़ी और मूर्खतापूर्ण गलती थी - अमेरिकी साहित्यकार को कार्बन कॉपी भेजना। शायद इसी वजह से मैंने सैक्सटन पुरस्कार पाने का अपना मौका गंवा दिया... शनिवार, 19 जुलाई। लकवा अभी भी मुझ पर हावी है। ऐसा लगता है जैसे मेरा दिमाग रुक गया हो और प्रकृति की घटनाएं—चमकीले हरे गुलाब के कीड़े, नारंगी मशरूम और चीखते कठफोड़वे—मुझ पर एक विशालकाय गाड़ी की तरह टूट पड़ें—जैसे मुझे फिर से उठने से पहले अस्तित्वहीनता, घोर भय की गहराई में डूबना पड़े। मेरी सबसे बुरी आदत मेरा डर और मेरा विनाशकारी तर्क है। अचानक मेरा जीवन, जिसके हमेशा से स्पष्ट रूप से तात्कालिक और दीर्घकालिक लक्ष्य थे—स्मिथ छात्रवृत्ति, स्मिथ डिग्री, कविता या कहानी प्रतियोगिता जीतना, फुलब्राइट छात्रवृत्ति, यूरोप यात्रा, प्रेमी, पति—अब या तो है ही नहीं। मैं धुंधला सा एक उपन्यास, लघु कथाएँ, कविताओं का संग्रह लिखना चाहती हूँ (या लिख चुकी हूँ?)। और भयभीत होकर, धुंधला सा, एक बच्चा चाहती हूँ: बीस साल की एक अधूरी योजना। कुछ पंक्तियाँ मेरे मन में आती हैं और अचानक रुक जाती हैं: "टाइगर लिली का धब्बेदार गला।" और फिर यह एलियट की कविता "द टाइगर इन द टाइगर पिट" की हूबहू प्रतिध्वनि है, अक्षर-अक्षर और व्यंजन-ध्वनि तक। मैं देखती हूँ: "पत्तियों के नीचे शहतूत लाल हो रहे हैं।" और रुक जाती हूँ। मुझे लगता है कि इन घबराहटों को ज़ाहिर करना सबसे बुरा है, इसलिए मैं चुप रहने की कोशिश करूँगी और टेड से बकवास नहीं करूँगी। उसकी सहानुभूति मुझे लगातार लुभाती है। मुझे व्यस्त, खुशमिजाज, अजीबोगरीब काम करने और यह-वह लिखने के लिए मजबूर किया गया है—कहानियाँ, कविताएँ और बच्चों की देखभाल। मैं खुद को इसमें कैसे झोंक दूँ? जब मैं हिलना-डुलना बंद कर देती हूँ, तो दूसरे जीवन और एकतरफ़ा

लक्ष्य मुझे छाया में धकेल देते हैं। मैं स्थिर हूँ, साफ-सफाई पर अड़ी हुई हूँ—मैं चीजों को उनके आने पर स्वीकार नहीं कर सकती, न ही उन्हें अपनी मर्ज़ी से होने दे सकती हूँ। क्या यह एक बीमारी की तरह बीत जाएगा? काश मुझे इस बारे में किसी महिला की निष्पक्ष सलाह मिल जाती। बचाव करते हुए, मैं कहती हूँ कि मुझे कुछ नहीं पता: मेरे दिमाग पर ढक्कन बंद हो जाते हैं। और झूठ बोलने का यही पुराना तरीका है: मैं ज़िम्मेदार नहीं हो सकती, मुझे कुछ नहीं पता। पत्तियों के नीचे सफेद शहतूत लाल हो रहे हैं। शिक्षण मेरे लिए अच्छा रहा: इसने मेरे दिमाग को व्यवस्थित किया और मुझे स्पष्टवादी बनने के लिए मजबूर किया। अगर मैं अपनी परेशानी को भीतर से हल नहीं करूँगा, तो भाग्य की कोई भी वर्षा घास नहीं उगाएगी। मैं अफीम, हशीश के नशे में हूँ—लकवाग्रस्त महसूस कर रहा हूँ—सुन्न उंगलियों से सब कुछ फिसल रहा है, जैसे किसी बुरे सपने में। यहाँ तक कि जब मैं अपने टाइपराइटर पर बैठता हूँ, तब भी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने जो लिखा है, वह दस मील दूर किसी मंदबुद्धि ने लिखा हो। मैं अब उस पक्षी के बारे में सोच रहा हूँ, और दो दिनों से यही सोच रहा हूँ: मैंने अठारह पन्ने उलझे हुए, दोहराव वाले अवलोकन से भर दिए हैं: मिरियम ने ऐसा महसूस किया, ओवेन ने वैसा कहा, पक्षी ने ऐसा किया। मैं अभी तक उस नाटकीय हिस्से तक नहीं पहुँचा हूँ जहाँ वे पक्षी को मारते और दफनाते हैं, जिसकी बीमारी उनके जीवन पर हावी हो गई है। मुझे विषय की मजबूती का तो पूरा भरोसा है, लेकिन अपनी कहानी की भावनात्मक धारा और संकट के बारे में निश्चित नहीं हूँ: फिर भी यह एक कहानी होगी। कल सुबह मैं इसे पूरा करूँगा और फिर से शुरू करूँगा, इससे संरचना निकालूँगा। मेरे साथ रहना भयानक होगा। अयोग्यता मुझे घृणा से भर देती है, मुझे धिक्कार है, और मैं एक

अपनी अभिव्यक्ति और व्यवस्था के तरीके को विकसित करना चाहिए, कुछ भी नहीं खोना चाहिए, सुस्ती नहीं बरतनी चाहिए।
रविवार, 27 जुलाई। एक धुंधला दिन, ठंडा, सौम्य। चिंता, उन्माद और लकवे का घुटन भरा फंदा चमत्कारिक रूप से गायब हो गया है। मैंने दृढ़ता से इसका सामना किया और दृढ़ता से ही मुझे इसका फल मिला। गद्य में कोई तरक्की नहीं हो रही है। मैं एक पुरानी कहानी, दो साल पुरानी कहानी, "द रिटर्न" को फिर से लिख रहा हूँ, जिसमें भव्य, भड़कीले और मदहोश कर देने वाले रोमांटिक शब्दों का इस्तेमाल किया गया है, जिससे मैं चकित हूँ। पिछले दस दिनों में, निरंकुश और उन्मादी दस दिनों के बाद, मैंने चार-पाँच अच्छी कविताएँ लिखी हैं। मुझे लगता है कि ये कविताएँ अब तक की मेरी सभी कविताओं से गहरी, गंभीर और शांत (फिर भी रंगों से सजी) हैं। मैंने बेनीडोर्म के बारे में दो कविताएँ लिखी हैं, जो अब तक मेरे लिए कविता का विषय नहीं था। मुझे लगता है कि मैं नए विषयों को खोज रहा हूँ और अब मेरे पास अतिरंजित और जोशीले शब्दों के बजाय, सरल और वास्तविक कविताएँ हैं। मेरी किताब के लिए मेरे पास लगभग 29 कविताएँ हैं—ऐसा लगता है जैसे यह एक अनंत सीमा है, लेकिन मैंने अपनी व्यस्त अप्रैल की छुट्टियों के सप्ताह में लिखी गई आधी कविताएँ पहले ही त्याग दी हैं, और उसके बाद लिखी गई कई कविताएँ भी। मेरी सबसे पुरानी कविताएँ "फॉनस" और "स्ट्रम्पेट सॉन्ग" हैं, जो मैंने टेड से मिलने के तुरंत बाद लिखी थीं। मुझे एक अजीब और बहुत ही कमज़ोर कर देने वाला बुखार है, और पिछले कुछ दिनों से है। मैं हर सुबह बहुत थकी हुई महसूस करती हूँ, जैसे किसी कोमा से जाग रही हूँ, एक अजीब सी मौत जैसी अवस्था में, जब टेड मेरे लिए जूस लाता है—और वह भी काफी देर से, लगभग दस बजे, दस घंटे की नींद के बाद। आखिर क्या बात है? मैं

जीवन के सबसे अच्छे दौर में हूँ, मेरे सबसे अच्छे साल अभी आने बाकी हैं काम करने के लिए, कविताएँ लिखने के लिए और बच्चे पैदा करने के लिए, और मैं थकी हुई हूँ, एक सुस्त, बिजली जैसी जलन मेरे सिर और खून को सुखा रही है। क्या मैं एक महीने या उससे अधिक समय में अपने छोटे से बोस्टन अपार्टमेंट से पूरी तरह स्वस्थ होकर लिख पाऊँगी? मुझे उम्मीद है। मुझे लगता है कि मैं आगे आने वाले काम का सामना करने के लिए दृढ़ता और शांति से तैयार हो रही हूँ, कम से कम उपज के साथ अधिकतम काम, अध्ययन और समर्पण की उम्मीद कर रही हूँ। चाय पर टेड के साथ हार्डी की कुछ कविताएँ पढ़ें— हार्डी का मन बहुत ही मार्मिक और आत्मीय है, विशेष रूप से "एन एन्शिएंट टू एन्शिएंट्स" और "लास्ट वर्ड्स टू ए डंब फ्रेंड"।
2 अगस्त, शनिवार। मुझे तीव्र अस्वस्थता का अनुभव हो रहा है, जिससे मैं बुरी तरह पीड़ित हूँ। निष्क्रिय जीवन मृत्यु के समान है। हमारा जीवन हास्यास्पद रूप से अंतर्मुखी और गतिहीन है। [कुछ अंश हटा दिया गया।]
बाद में: रविवार सुबह: ऐसा लगता है जैसे मुझे अपनी ऊर्जा को सक्रिय करने के लिए किसी न किसी तरह के संकट की ज़रूरत थी। आज सुबह सब कुछ शांत, स्पष्ट और संभव लग रहा है। अमेरिका की सबसे बड़ी खामी—इसके इस हिस्से की—इसका दबाव भरा माहौल है: अनुरूपता की अपेक्षा। मेरे लिए यह समझना मुश्किल है कि डॉट और फ्रैंक शायद टेड को सिर्फ इसलिए पसंद नहीं करते क्योंकि उसे "नौकरी नहीं मिलेगी, कोई स्थिर करियर नहीं मिलेगा।" मैंने वास्तव में ठीक उसी तरह के आदमी से शादी की है जिसकी मैं सबसे ज़्यादा प्रशंसा करती हूँ। मैं एक साल के लिए भविष्य के बारे में चुप रहूँगी और काम पर ध्यान दूँगी और टेड के काम को प्रोत्साहित करूँगी, जिसमें मुझे पूरा विश्वास है। मुझे घर और

बच्चों के अमेरिकी सपने को ज़ाहिर करने में डर लग रहा है—मेरे घर की कल्पना, ज़ाहिर है, मेन के तट पर, एकांत में स्थित एक कलाकार की संपत्ति है। मैं निस्संदेह एक अव्यावहारिक घुमक्कड़ पत्नी और माँ बनूँगी, एक तरह से निर्वासन। मुझे आंतरिक शांति और स्थिरता के लिए काम करना होगा जो मुझे बाहरी रूप से सबसे कठिन परिस्थितियों से भी बचाए रखेगी: एक शांत, टिकाऊ, आशावादी दर्शन जो किसी अमेरिकी सुपरमार्केट के नज़दीक आजीवन पते पर निर्भर नहीं करता। और टेड के साथ इंग्लैंड घूमना, इटली और दक्षिणी फ्रांस में रहना कितना सुखद होगा! अगर मैं इस साल जी-तोड़ मेहनत करके एक महिला की कहानी प्रकाशित करवा सकूँ, कविताओं की एक किताब पूरी कर सकूँ, तो मुझे बहुत खुशी होगी: साथ ही, जर्मन और फ्रेंच साहित्य की समीक्षा और पठन भी। विडंबना यह है कि मेरा अपना सपना है, जो मेरा अपना है, अमेरिकी सपना नहीं। मैं हास्यपूर्ण और कोमल महिलाओं की कहानियाँ लिखना चाहती हूँ। मुझे भी हास्यपूर्ण और कोमल होना चाहिए, न कि माँ की तरह हताश महिला। सुरक्षा मेरे भीतर और टेड की गर्मजोशी में है। [अंश।]

* * *

3 अगस्त, रविवार। आज सुबह अचानक कैथोलिक चर्च के बारे में जानने की एक अजीब सी इच्छा हुई—इसमें इतनी सारी बातें हैं जिन्हें मैं स्वीकार नहीं कर पाऊँगी: मुझे समझाने के लिए किसी जेसुइट की ज़रूरत पड़ेगी—मैं अभी जवान और मज़बूत हूँ—मुझे रोमांच की तलाश करनी चाहिए, किसी साथी पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। बच्चों की बात करें तो—मैं उनके बारे में सोचने से पहले एक साल लेखन पर काम करना और छुट्टियाँ बिताना ज़्यादा पसंद करूँगी: एक बार बच्चा हो जाए, तो मैं तब तक लेखन जारी नहीं रख पाऊँगी जब तक कि इसकी कोई मज़बूत नींव न हो। छोटा सा अपार्टमेंट होने के कारण घर

के काम और खाना पकाने में कम समय लगेगा। मुझे खुद से कहना होगा, शांति, ताकि यह एक सहज भावना बन जाए; शांति आंतरिक होती है, जो बाहर की ओर फैलती है। मुझे लोगों और जगहों के बारे में नोटबुक में लिखना होगा—ताकि उन्हें याद रख सकूँ। अभी: एक हवाई जहाज़ की आवाज़ आ रही है, गाड़ियाँ तेज़ी से गुज़र रही हैं, कुछ पक्षी चहचहा रहे हैं, एक कार का दरवाज़ा ज़ोर से बंद होता है, टेड ने अभी-अभी एक कागज़ नीचे फेंका है, आह भरी है, और उसकी कलम तेज़ी से चल रही है। मुझे उसके साथ अपना जीवन जीना सीखना होगा, लेकिन हर कदम पर उस पर निर्भर नहीं रहना है…
8 अगस्त, शुक्रवार। “वे जिस स्थान पर विद्यमान हैं, उसकी पारदर्शिता हैं और उनकी कविताओं में हमें शांति मिलती है।”— स्टीवंस
मैं विस्मित, उत्साहित और अंदर ही अंदर बिल्ली की तरह मुस्कुरा रहा हूँ: पूरा दिन मेरी कविता "मसल हंटर एट रॉक हार्बर" के चिंतन में ही बीत गया, मानो गायब ही हो गया हो। यह कविता 9 अगस्त को शानदार पत्रिका "न्यू यॉर्कर" में प्रकाशित हुई थी—जिसका शीर्षक उसी विचित्र, टेढ़े-मेढ़े, अर्ध-पुराने फॉन्ट में है, जिसमें मैं लगभग आठ वर्षों से अपनी कविताओं और कहानियों के शीर्षक सपने में देखता आ रहा हूँ। सबसे विचित्र बात तो यह है कि मैंने कल रात ही सपना देखा था कि यह कविता प्रकाशित होगी! सौभाग्य से मैंने टेड को अपना सपना सुनाया—हावर्ड मॉस और एक कवि के बारे में, जिसकी कविता "आखिरकार द न्यू यॉर्कर में प्रकाशित हो गई", हालाँकि कविता के नीचे इटैलिक में एक नोट लिखा था जिसमें कहा गया था कि इसे लगभग पूरी तरह से संशोधित और संपादित एक महिला ने किया था, जिसका नाम मुझे लगता है ऐनी मॉरो था (क्या मॉस ने मेरे छोटे अक्षरों को बड़े अक्षरों में बदल

दिया, अल्पविराम जोड़े और हाइफ़न हटा दिए?)—मेरे सपने में, मेरी कविता एक डमी कॉपी की तरह, एक पृष्ठ के बाईं ओर, विज्ञापनों के एक कॉलम और दाईं ओर के पृष्ठ के बीच में कटी हुई थी। मैं तब हैरान रह गया जब फ्लोरेंस सुल्तान ने मुझे फोन किया और बताया कि मेरी कविता प्रकाशित हो गई है। मैं उनके घर गया, उनके साथ शराब पी और बच्ची सोनिया को निहारा, जो अचानक से फ्लोरेंस की ही तरह दिखने लगी, गहरे घुंघराले बालों और नीली आँखों वाली, प्यारी और मासूम। वहाँ उसकी प्रति में वह कविता थी, पत्रिका की पहली कविता, पृष्ठ 22 पर, बाईं ओर लगभग पूरा पृष्ठ घेरे हुए, सिवाय नीचे की ओर तीन स्तंभों वाली कहानी के लगभग डेढ़ इंच के हिस्से के—मेरी दो स्तंभों वाली कविता के चारों ओर चमकदार सफेद न्यू यॉर्कर जैसी पर्याप्त जगह थी, प्रत्येक स्तंभ में लगभग 45 पंक्तियाँ थीं। खैर, यह सप्ताह जल्द ही समाप्त हो जाएगा। मुझे भोला-भाला विचार है कि दुनिया भर के लोग इस कविता को पढ़ेंगे और इसकी प्रशंसा करेंगे! बेशक, यह एक तरह से मेरी कविता लेखन को बाधित करता है (और कौन सी रचना इतनी भव्यता प्राप्त कर सकती है!) और फिर भी, मेरे भीतर गहराई से, यह मेरे गद्य लेखन को बहुत प्रोत्साहित करता है—कि मैं भी अपनी कहानियों को अपनी कविताओं के बगल और बाद वाली कहानियों की तरह उत्कृष्ट कई पृष्ठों वाली सतह तक पहुँचा सकूँ, यह एक पागलपन भरा लक्ष्य नहीं लगता।
27 अगस्त, बुधवार। क्रोध गले में अटक जाता है और ज़हर फैलाता है, लेकिन जैसे ही मैं लिखना शुरू करता हूँ, वह शांत हो जाता है, अक्षरों के रूप में बह निकलता है: क्या लेखन एक चिकित्सा है? मकान मालकिन, श्रीमती व्हेलन के साथ एक ज़हरीला झगड़ा। उनकी ओर से बेतुके आरोप, मेरी ओर से कांपते हुए जवाब और घृणा: एक शर्मनाक घटना: हमारी पीठ पीछे, जब हम केप में थे, उन्होंने बैठक के कमरे

साँस लीं, बड़बड़ाने लगीं—हमने उन्हें बोलने दिया — "अपार्टमेंट अस्त-व्यस्त है, भयानक हालत में है"—हमने उन्हें ऊपर बुलाया: "आखिर गंदगी क्या थी?" वह हिचकिचाईं—रसोई के सिंक के पास चिकनी दीवार, बाथरूम में गंदा वेनेशियन ब्लाइंड—जासूसी के आरोपों से बचने की इच्छा से प्रेरित होकर: उन्होंने "बस इधर-उधर भागते हुए यह देखा था"—हमने अपार्टमेंट को एकदम साफ-सुथरा छोड़ा था। "क्या आपने बिस्तर के नीचे देखा है?" मैंने कहा। मैं थका हुआ, भूखा, इतना मूर्ख और बीमार महसूस कर रहा था कि चालाक और साफ-सुथरा होने की कोई गुंजाइश नहीं थी—उसे इस जगह की आलोचना करने का कोई अधिकार नहीं था—जो मेरे घर के काम की आलोचना करने के बराबर है—घर को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया: मैं सफाई कर लेता, लेकिन कालीन वाली घटना के बाद ऐसा लग रहा है जैसे उस पर गंदगी मल दी जाए: मैं भी शांत नहीं हूँ… सारा क्रोध, मेरे लिए प्रेरणा का स्रोत। मैं आराम करूँगा और, जितना अधिक आराम करूँगा, उतना ही इसे पूरी तरह समझ पाऊँगा। मैं राक्षसी कब्ज़े पर एक किताब पढ़ रहा हूँ—मामले बेहद मनोरंजक हैं—लेकिन प्रेरणादायक भी— मानवीय अनुभवों की अवस्थाओं के साथ-साथ स्वयं अनुभव के लिए भी रूपक—जैसे एफ़्रोडाइट वासना और प्रचंड जुनून का मानवीकरण है, वैसे ही राक्षसों के ये दर्शन क्रोध, पश्चाताप, घबराहट के वस्तुनिष्ठ प्रतीक हैं: कब्ज़ा: राक्षसी और अन्य: ओस्टर्रेच। (पृष्ठ 94)
चार साल पहले, एक दिन सी. काम से घर लौट रही थी, तभी सड़क पर उसे एक स्त्री का भूत दिखाई दिया, जिसने उससे बात की। अचानक, जब वह बोल रही थी, उसकी गर्दन पर ठंडी हवा का झोंका लगा और वह तुरंत गूंगी हो गई। बाद में उसकी आवाज़ लौट आई, लेकिन बहुत कर्कश और तीखी... फिर उसने अपनी पहचान खो दी। [पृष्ठ 106 लोमड़ी का

कब्ज़ा:] न तो बहिष्कार, न धूप-धूप, न ही कोई और प्रयास सफल हुआ। लोमड़ी ने व्यंग्यपूर्वक कहा कि वह इतनी चालाक है कि ऐसे हथकंडों में नहीं फँसेगी। फिर भी, उसने बीमार व्यक्ति के भूखे शरीर से स्वेच्छा से बाहर आने की सहमति दी, बशर्ते उसे भरपूर भोजन दिया जाए। "इसका इंतज़ाम कैसे किया जाए?" एक निश्चित दिन, ठीक चार बजे, बारह किलोमीटर दूर स्थित लोमड़ियों के पवित्र मंदिर में, विशेष विधि से तैयार किए गए चावल, सेम के साथ पका हुआ पनीर, और बड़ी मात्रा में भुने हुए चूहे और कच्ची सब्जियां, जादुई लोमड़ियों के सभी पसंदीदा व्यंजन, दो बर्तनों में रखे जाने थे। फिर वह ठीक निर्धारित समय पर लड़की के शरीर को छोड़ देगा। [अकिलीज़ का पृष्ठ 116 (जेनेट "शैतान" को सम्मोहित करती है):] यद्यपि रोगी प्रेतबाधित प्रतीत होता था, उसकी बीमारी प्रेतबाधा नहीं बल्कि पश्चाताप की भावना थी। यह कई प्रेतबाधित व्यक्तियों के लिए सच था, जिनके लिए शैतान केवल उनके पछतावे, पश्चाताप, भय और दुर्गुणों का अवतार था।
इस पर मनन करना, इसका उपयोग करना और इसमें बदलाव लाना, इसे छलनी की तरह बहने न देना...
28 अगस्त, गुरुवार। ठंडी, साफ़ सुबह। कल का गुस्सा अब और भी स्पष्ट और गहरा हो गया है: मैं जितना बोला उससे कहीं बेहतर बोल सकता था, लेकिन चार दिनों में हम निकल पड़ेंगे—यहाँ सब कुछ अपनी भावनात्मक तीव्रता खो देगा और केवल एक सपाट स्मृति बनकर रह जाएगा, जिसे गिरगिट की तरह बदलते मन द्वारा व्यवस्थित और अलंकृत किया जाएगा। कल रात मैंने सपना देखा कि मैं अपना उपन्यास लिखना शुरू कर रहा था—"देखने के लिए क्या है?" डोडी वेंचुरा ने कहा था—एक शुरुआती बातचीत—फिर एक वाक्य, एक पैराग्राफ, सबसे पहले वर्णन के लिए डाला गया, दृश्य को "स्थान"

देने के लिए, "सेट" करने के लिए: एक लड़की की अपने मृत पिता की खोज—एक बाहरी सत्ता की खोज, जिसे वास्तव में भीतर से विकसित किया जाना चाहिए।
आधी रात: अभी भी थकी हुई, लेकिन अजीब सी खुशी, मानो घुटन से छुटकारा मिल गया हो—परियोजनाओं का शोरगुल—बोस्टन और हमारा फ्लैट विधवा मंगाडा के भूमध्यसागरीय ठिकाने या पेरिस के हमारे लेफ्ट बैंक वाले कमरे से भी बेहतर, बल्कि उससे भी अच्छा लग रहा है। अचानक मुझे लोग अच्छे लगने लगे हैं, मैं अच्छी, स्वाभाविक हो सकती हूँ… मुझे लगता है मैं ज़्यादा बेफिक्र हो रही हूँ— क्या मैं सच में बेफिक्र हो रही हूँ? या यह घबराहट भरे दौर में एक ठहराव है? हर चीज़ को जैसी है वैसी ही स्वीकार करना और छोटी- छोटी खुशियों में आनंद लेना—टेड की एक अच्छी कुत्ते पर लिखी कविता: एस्थर बास्किन और टोबियास [उनका बेटा] के साथ पेड़ों के नीचे एक हरी-भरी दोपहर, गिरे हुए सेब ज़मीन पर सड़ रहे हैं, एस्थर का चमगादड़ पर लिखा निबंध पढ़ना, टेड की पाइक मछली पर लिखी कविता का प्रमाण—टोबियास गोरा, गुलाबी, मासूम सा, मुस्कुराता हुआ, चहकता हुआ, रेंगता हुआ, मेरे पर्स से कागज़ निकालकर इधर-उधर बिखेरता हुआ—किताबों, कविताओं, लकड़ी की नक्काशी, मूर्तियों से भरा माहौल…
मध्य अफ्रीका में पशुओं का स्वामित्व (पृष्ठ 145):
कई हत्याओं का मामला अंततः एक बूढ़े व्यक्ति से जुड़ा पाया गया, जो नदी की ओर जाने वाले रास्ते के किनारे उगने वाली लंबी घास में घात लगाकर बैठा रहता था। जब कोई अकेला व्यक्ति वहाँ से गुजरता, तो वह अचानक बाहर निकलकर उस पर चाकू से हमला कर देता और बाद में शव को क्षत-विक्षत कर देता। उसने स्वयं इन अपराधों को स्वीकार किया। उसने कहा कि वह ऐसा करने से खुद को रोक नहीं पाता

था, क्योंकि उसे कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह शेर में परिवर्तित हो गया है और शेर की तरह ही उसे मारने और शव को क्षत-विक्षत करने की प्रेरणा मिलती है। यह "शेर" कई वर्षों से पूर्ण संतुष्टि के साथ चिरोम की सड़कों की मरम्मत का काम कर रहा है।
2 सितंबर, मंगलवार… लिज़ टेलर, एडी फिशर को डेबी रेनॉल्ड्स से दूर कर रही हैं, जो मासूम, गोल चेहरे वाली, पीड़ित, पिन कर्ल और घर के लबादे में नज़र आती हैं—माइक टॉड को तो जैसे ठंड लग ही नहीं रही। ये घटनाएँ किसी को इतना प्रभावित क्यों करती हैं? क्या ये तुलनाएँ हैं? मैं बालों की स्टाइलिंग और कपड़ों पर पैसे लुटाना चाहती हूँ। फिर भी जानती हूँ कि असली शक्ति काम और सोच में है। बाकी सब दिखावा है। मैं बहुत ज़्यादा, पूरी तरह से, सादगी से प्यार करती हूँ, किसी भी चालाकी की ज़रूरत नहीं। कल्पना का इस्तेमाल करो। लिखो और काम करो ताकि मन को प्रसन्न कर सको। कोई आलोचना या ताने नहीं। [कुछ अंश हटा दिया गया।] वह एक प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं। मैं उनकी पत्नी हूँ।
रविवार सुबह, 14 सितंबर। यहाँ दो सप्ताह कतई ऐसे ही बीत गए। कल हम दोनों गहरे अवसाद में डूबे रहे—देर रात तक जागना, बीच-बीच में बीथोवेन के पियानो सोनाटा सुनना—हमारी सुबहों को बर्बाद कर रहा था, दोपहर की धूप थकी हुई आँखों के लिए बहुत तेज़ और चुभने वाली थी, खाना-पीना सब बेसमय पर चल रहा था—और मेरे ऊपर मेरा पुराना डर हावी था—मैं कौन हूँ? मैं क्या करूँ? पच्चीस साल की स्कूली दिनचर्या और सुस्त, शौकिया दिनों के डर के बीच का मुश्किल दौर। शहर पुकार रहा है—अनुभव और लोग पुकार रहे हैं, और भीतर से एक नियम बनाकर उन्हें रोकना होगा। कल, सोमवार से, दिनचर्या शुरू होनी है—नियमित भोजन, खरीदारी, कपड़े धोना— सुबह गद्य और कविताएँ लिखना, दोपहर में जर्मन और फ्रेंच पढ़ना,

स्नोडग्रास जैसे अशिष्ट लोग प्रकाशित करके प्रसिद्धि पा रहे हैं। टेड ने अपनी किताब से पहले प्रकाशन के लिए संघर्ष किया, जो एक जादुई चाबी की तरह थी—पुरस्कार और प्रसिद्धि बटोरते हुए। और मैं भी अब संघर्ष कर रहा हूँ—लेकिन जून से अब तक तीन दरवाजे खोल चुका हूँ: द न्यू यॉर्कर, सेवानी और द नेशन: हर महीने एक। आज मुझे अचानक डर का अभाव महसूस हो रहा है—धीमी, परिश्रमपूर्ण आत्म-समर्पण की भावना। इस किताब ने मुझे एक साल के संघर्ष और निपुणता से गुज़ारा। शायद जो किताब मैं शुरू करने वाला हूँ, वह भी कुछ ऐसा ही करेगी। मुस्कुराओ, चुपके से लिखो, किसी को मत दिखाओ। बहुत कुछ इकट्ठा करो। उपन्यास। कविताएँ। कहानियाँ। फिर भेज दो। किसी को भी किताब की इच्छा न जताने दो—काम करो। मुझे दूसरों को प्रेरित करने से पहले खुद को प्रेरित करना होगा— महिलाओं में प्रसिद्ध एक महिला।
सोमवार, 15 सितंबर। बहादुरी का दिखावा, और डर हावी हो गया। एक ऐसा भयानक आतंक जो सब कुछ मिटा देता है: यहाँ सारी डायरियाँ समाप्त हो जाती हैं—सामने वाली ईंट की दीवार पर लताएँ एक मुड़ी हुई हरी साँप की शाखा की तरह बिखर जाती हैं। नाम, शब्द, शक्ति हैं। मैं डरी हुई हूँ। किससे? मुख्यतः बिना जिए जीवन से। क्या मायने रखता है? एक पर्दे में हवा का थरथराना। अगर मैं इस डर, इस खौफ को किसी उपन्यास में पिरो पाती—तो मेरे पेट पर एक मेंढक बैठा है। रुककर पूछो कि तुम क्यों नहाती हो, क्यों कपड़े पहनती हो, तुम बेकाबू हो जाती हो—ऐसा लगता है जैसे प्यार, आनंद, अवसर मुझे घेरे हुए हैं, और मैं अंधी हूँ। मैं हिस्टीरिया में बड़बड़ाती हूँ—या मुझे लगता है कि मैं फट जाऊँगी: मैं एक मुश्किल में फँसी हूँ: इससे कैसे निकलूँ? कुछ छोटी-मोटी रोज़मर्रा की बाहरी रस्में—मैं बहुत अंतर्मुखी हो गई हूँ—

जैसे कि मुझे टेड के अलावा किसी से बात करना ही नहीं आता—दीवार से मुँह सटाकर, आईने में बैठी रहती थी… मैं एक दुष्चक्र में फँसी हूँ—बहुत अकेली हूँ, बाहर के नए अनुभव नहीं हैं सिवाय इधर-उधर घूमने के, लोगों को घूरने के, जो सिर्फ़ इसलिए ईर्ष्या के पात्र लगते हैं क्योंकि वे अलग हैं—मेरे भविष्य की ज़िम्मेदारी भारी है, डरावनी है। ऐसा क्यों होना चाहिए? मैं व्यावहारिक, सामान्य क्यों नहीं हो सकती? पढ़ाने के दिन के अंत में, चाहे कितनी भी परेशानियाँ क्यों न हों, मैंने दस डॉलर कमा लिए—कई लोगों के लिए यह काफ़ी प्रेरणा है। मुझे एक पेशा चाहिए, उत्पादक महसूस करना चाहिए, और मैं बेकार, अज्ञानी महसूस करती हूँ। लेखन का विकास कैसे करूँ जब मुझे लगता है कि मेरी आत्मा अधूरी, बिखरी हुई, तुच्छ है? मैं इतनी अभिमानी क्यों नहीं हूँ कि जो मैं कर सकती हूँ उसका आनंद ले सकूँ और डर महसूस न करूँ? लॉरेंस अपने शब्दों में दुनिया को समेट लेते हैं। आशा, करियर— लेखन मेरे लिए बहुत मुश्किल है: जब तक मैं लेखन से संतुष्ट नहीं हो जाती, तब तक मुझे नौकरी नहीं चाहिए—फिर भी नौकरी पाने के लिए मैं बेताब हूँ—खुद को किसी बाहरी वास्तविकता से भरने के लिए— जहाँ लोग फ़ोन बिल, भोजन, बच्चे, विवाह को ब्रह्मांड के उद्देश्य का हिस्सा मानते हैं। एक उद्देश्यहीन महिला जिसके बड़े-बड़े सपने हैं। मेरी एक ही इच्छा है: ऐसा काम करना जिसका मैं आनंद ले सकूँ—माँ से किसी भी बात को साझा करने से बचना चाहिए...
गुरुवार, 18 सितंबर। आज बहुत खुश हूँ—क्यों? ज़िंदगी धीरे- धीरे अपने आप संभलने लगी है—और एक अजीब सी प्रेरणा से खुशी और जीवन का सैलाब उमड़ आया—कुछ अजीब से अच्छे, थोड़े रहस्यमय लोग: टैटू बनाने वाले की दुकान पर। वैसे, भले ही मैं सुबह नौ बजे के

आसपास, गीले और धुंधले दिन में "देर से" उठी और हमेशा की तरह सुबह की मतली महसूस कर रही थी, "आज मैं क्या करूँ जो सार्थक हो?", फिर भी कॉफ़ी पीने के बाद मैं सीधे काम पर लग गई और पी.डी. [पीटर डेविसन—यह रचना अब उपलब्ध नहीं है] का विश्लेषण करते हुए 5 पन्ने लिखे—एक-दो वाक्य अच्छे थे। फिर मैं बैठकर अपनी कहानी "बर्ड इन द हाउस" पढ़ने लगी, जो इतनी बोझिल और खराब थी कि मुझे लगा कि मैं इसे सुधार सकती हूँ, मैंने 5 पन्नों पर बारीकी से काम किया और दोपहर के भोजन तक बेहतर महसूस करने लगी। मुझे बढ़िया मेल मिला, हालाँकि वीक्स से एक बदतमीज़ी भरा पत्र मिला जिसमें मेरे "स्नेकचार्मर" को अस्वीकार कर दिया गया था (हालाँकि "घुमावदार बनावट से मोहित" वगैरह), क्योंकि टेड को "डिक स्ट्रेटअप" के लिए $150 का एक प्यारा सा चेक मिला था, जिससे "थॉट-फॉक्स" पुरस्कार के साथ इस सितंबर में लगभग $1,000 की कमाई हो गई। चेक जमा करने के लिए बाहर निकला और टैटू की दुकान की ओर मेरा मन और भी ज़्यादा खिंचता चला गया—मौसम ठंडा था, बारिश होने वाली थी, लेकिन टेड मान गया। हमने स्कॉले स्क्वायर पर डिस्प्ले विंडो वाली दुकान ढूंढ ली और बाहर खड़े हो गए, मैं दीवार पर बने पैंथर के सिर, मोर और साँपों की ओर इशारा कर रहा था। टैटू बनाने वाला, जिसके अंदर एक पीला-सा, अजीब सा छोटा सा आदमी था, हमें देख रहा था। फिर टैटू बनाने वाला काले काउबॉय बूट, एक गंदी सूती कमीज़ और तंग काली चिनो पैंट पहने दरवाज़े पर आया। "बाहर से ठीक से दिखाई नहीं दे रहा है। अंदर आ जाओ।" हम बड़ी- बड़ी आँखों से उस छोटी सी दुकान में घुस गए, जो चमकीली रोशनी से जगमगा रही थी, लेकिन भड़कीली सी थी: मैं अगली पूरी सुबह इसके बारे में लिखने में बिताऊँगा। मैंने उस आदमी से बातें शुरू कर दीं—तितली टैटू, गुलाब टैटू, खरगोश के शिकार वाले टैटू—मोम के

टैटू—उसने हमें मिस स्टेला की तस्वीरें दिखाईं—पूरे शरीर पर टैटू—ब्रॉकेड ओरिएंटल। मैंने उसे अपने हाथ पर एक कट का टैटू बनाते देखा, एक नाविक की बांह पर काले, लाल, हरे और भूरे रंग का चील और "जापान" का टैटू बनाते देखा, एक स्कूली बच्चे की बांह पर "रूथ" का टैटू बनाते देखा—मैं लगभग बेहोश हो गया था, मुझे होश में आने के लिए नमक लेना पड़ा। मशीन में नए स्प्रिंग आज़मा रहा वह पीला-सा, काफी अच्छा दिखने वाला छोटा सा प्रोफेसर जैसा आदमी इधर-उधर घूम रहा था। गुलाब टैटू, चील टैटू मेरे दिमाग में घूम रहे हैं—हम वापस जाएँगे। जीवन धीरे-धीरे खुद को सही ठहराने लगता है—थोड़ा-थोड़ा करके—मैं इसे धीरे-धीरे बनाऊँगा। शनिवार, 27 सितंबर… हम लेखन में लगे रहे, अपने बिखरे हुए मन को समेटने की कोशिश करते रहे। मैंने और टेड ने मेरी बीमारी का निदान किया - उदासी - और अब मैं बेहतर महसूस कर रही हूँ, मानो अब मैं इससे निपट सकती हूँ: एक सैनिक की तरह, जो सेवामुक्त होकर लौटता है, बीस से अधिक वर्षों की निरंतर स्कूली शिक्षा से मुक्त होकर नागरिक जीवन में आ जाता है - अभी तक, नए सिरे से, मुझे समझ नहीं आ रहा कि मैं क्या करूँ। स्कूलों के खुलने की खबर सुनकर मैं किसी घुड़दौड़ के घोड़े की तरह चौंक जाती हूँ - मुझे हार्वर्ड, येल जाने की अजीब सी इच्छा होती है, उनसे मुझे पीएचडी, मास्टर डिग्री, या किसी भी डिग्री के लिए दाखिला देने की भीख माँगने की - लेकिन फिर मैं अपने जीवन को अपने ही अनाड़ी हाथों से छीन लेती हूँ। मैं पूरे साल लगन से, अपनी गति से, एक नागरिक बनकर काम करूँगी, सोचूँगी, लिखूँगी, और अधिक से अधिक गहनता से, अधिक से अधिक उद्देश्य के साथ, और केवल उस महान लेखक के बारे में सपने नहीं देखूँगी जो मैं बन सकती थी। मैंने आज अपनी पक्षी की कहानी

पर खूब मेहनत की है—शब्द सही बैठ रहे हैं, लय सही बैठ रही है, यहाँ-वहाँ, और यह एक नए जीवन की शुरुआत है।
प्लैथ ने बोस्टन के एक मानसिक अस्पताल में मरीजों के रिकॉर्ड के साथ काम करने की नौकरी ली, जिसे उन्होंने तुरंत अपने काम के लिए एक जबरदस्त संसाधन के रूप में पहचाना। उदाहरण के लिए, वह मरीज जिसे लगता था कि वह जानवरों को जन्म दे सकती है, "पोयम फॉर अ बर्थडे" से "डार्क हाउस" में दिखाई देती है।
किसी भी दिन मैं पिल्लों को जन्म दे सकती हूँ या घोड़े की माँ बन सकती हूँ। मेरा पेट हिल रहा है।
14 अक्टूबर, मंगलवार। एक पल जो बीत गया, ढाई हफ्ते बाद, टेड के पुस्तकालय से लौटने पर ओवन में चिकन और स्क्वैश तैयार थे, उसकी कमर में दर्द था, नई नौकरी से उसकी आँखें थकी हुई थीं। मैं एक हफ्ते पहले सोमवार को तीन एजेंसियों में गई थी, मंगलवार को मुझे पहली नौकरी मिल गई जिसके लिए मेरा इंटरव्यू हुआ था—जितने घंटे मैं चाहती थी उससे ज़्यादा और कम वेतन, लेकिन बदले में मुझे दिलचस्प काम और कोई होमवर्क नहीं मिला—मैसाचुसेट्स जनरल अस्पताल के मनोरोग क्लिनिक में रिकॉर्ड टाइप करना, फोन का जवाब देना, पच्चीस से ज़्यादा डॉक्टरों के स्टाफ से मिलना और उन्हें भेजना और लगातार आने वाले मरीजों को संभालना—यह थका देने वाला है, क्योंकि मैं अभी इस काम में नई हूँ, लेकिन इससे मेरे और टेड के दिन को एक निश्चित ढाँचा मिलता है। द न्यू यॉर्कर में मेरी कविताएँ अस्वीकृत हो गईं जिन्हें मैं "पक्का सफल" समझ रही थी और मेरे पास सोचने या लिखने का समय या ऊर्जा नहीं है! लेकिन मुझे लगता है कि यह नौकरी मेरे लिए अच्छी है—खुद का विश्लेषण करवाने की मेरी सारी इच्छाएँ, कभी-कभार होने वाली घबराहट को छोड़कर, खत्म हो रही हैं: विरोधाभासी रूप से, रिकॉर्ड के माध्यम से

परेशान मरीजों का मेरा वस्तुनिष्ठ दैनिक अवलोकन मेरे स्वयं के प्रति मेरे दृष्टिकोण को वस्तुनिष्ठ बना देता है। मैं इस कार्यक्रम में लेखन के लिए कुछ समय निकालने की कोशिश करूँगा— इसे विस्तार देने की। मुझे लगता है कि इससे लोगों के प्रति मेरी समझ और भावनाएँ गहरी और समृद्ध हो रही हैं: मानो मेरी इच्छा पूरी हो गई हो और मैंने बोस्टन के लोगों की आत्माओं को खोलकर उन्हें गहराई से पढ़ा हो। आज एक महिला—मोटी, मौत से डरती हुई— तीन चीजों का सपना देख रही है: उसके मृत पिता, उसकी मृत सहेली (प्रसव के दौरान, गठिया बुखार से मरी हुई), उसका अपना अंतिम संस्कार—वह ताबूत में, और साथ ही दर्शकों के बीच खड़ी होकर रो रही है। उसका बेटा सीढ़ियों से गिरकर ज़हर (डीडीटी) पीकर अपनी खोपड़ी तोड़ बैठा—उसकी माँ घर में विस्फोट के समय मौजूद थी, जलकर मर गई। डर: मुख्य देवता: लिफ्ट का डर, साँपों का डर, अकेलेपन का डर—डर के चेहरों पर एक कविता। डिफ़ो की 'प्लेग वर्ष की डायरी' से संबंधित एक प्रासंगिक टिप्पणी:
... दूसरों की राय थी कि इस [प्लेग] की पहचान कांच के एक टुकड़े पर सांस छोड़ने से की जा सकती है, जहां सांस के संघनन से सूक्ष्मदर्शी से अजीब, राक्षसी और भयानक आकृतियों वाले जीवित प्राणी देखे जा सकते हैं, जैसे कि अजगर, सांप, सर्प और शैतान, जो देखने में भयावह होते हैं।
बीमार मन के "चेमेरा" भी।
अस्पताल के नोट्स
पच्चीस वर्षीय महिला, जिसकी दो बार शादी हो चुकी है और एक बार तलाक हो चुका है, तीन बच्चों की माँ है। “मुझे अपने बच्चों से नफरत है।” उसे अंधेरे से डर लगता है। वह पूरे कपड़े पहने सोती है।

नौकरी: मुर्गी पालन कंपनी में काम करता है। मुर्गियों के पेट साफ करने का काम करता है। उसे अपना काम बहुत पसंद है, मुर्गियां बेहद प्यारी हैं, कच्ची भी खा सकता है। मैकरोनी बहुत पसंद है। एक बार में 1 पाउंड सूखा खाना खा लेता है। हमेशा अपनी माँ से और खाना माँगता रहता है।
लौरा आर.: चटख नारंगी रंग के बाल। हैटचेक गर्ल। फोटोग्राफर के लिए न्यूड मॉडलिंग करती है। लेस्बियन गर्लफ्रेंड।
डोरोथी एस.: बुरे सपने: खुद का सिर कटा हुआ देखा लेकिन वह सिर्फ त्वचा के सहारे लटका हुआ था।
मैरी एम.: सपना: सपने में, वह एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति के बिस्तर के पास काम कर रही थी, जो उसके पुराने मरीज़ों में से एक जैसा दिखता था। वह व्यक्ति परिवार वाला था और मैरी के प्रति बहुत दोस्ताना व्यवहार रखता था, लेकिन अनुचित तरीके से नहीं। सपने में, वह अपने शयनकक्ष में गई और कपड़े धोने के थैले में देखा तो उसे पाँच सिर मिले। चार सिर उन बच्चों के थे जिन्हें वह पहचान नहीं पाई। पाँचवाँ सिर उसकी माँ का था, जैसा कि वह बचपन में दिखती थी।
एक कांच की आंख वाले आदमी से सगाई हुई। चार साल पहले: पड़ोस के कुत्ते का रात में पिछवाड़े में भौंकना शुरू हो गया और शोर के साथ-साथ कस्बे की आबादी भी बढ़ रही थी। उसके पति के प्रयासों से अब उसके कस्बे में कोई कुत्ता नहीं है... वह अनिद्रा को अपने तनाव का परिणाम नहीं मानती और पड़ोस के कुत्तों को ही दोष देती रहती है। (मुझे लगता है कि मैं एक मानसिक रूप से विक्षिप्त व्यक्ति को संभाल रही हूँ।)
स्पैरो पी.: 34 वर्ष। श्वेत, अविवाहित, प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य। दम घुटने और मृत्यु से भयभीत। विवाह की बात आने

पर किसी लड़की के साथ गहन संबंध बनाए रखने में असमर्थ। अपनी माँ से घोर घृणा करता है। उसे अभिमानी, अमानवीय, दुष्ट, कठोर, जिद्दी, घिनौनी बुढ़िया कहता है जिसने बचपन में उस पर अमानवीय अत्याचार किए थे। अपनी नपुंसकता से भयभीत। कहता है कि वह किसी भी काम में निपुण हो सकता है और इसे किसी को भी साबित कर सकता है। बहस में किसी को भी हरा सकता है।
एडवर्ड सी.: उसे कभी-कभी दौरे पड़ते हैं जिनमें वह खुद को पहचान नहीं पाता। दौरे के दौरान उसे अवास्तविकता का अहसास होता है। टीवी देखते समय उसे लगता है कि वह सब कुछ खुद ही बना रहा है। एक बार तूफान आया और जब तूफान थम गया तो उसे लगा कि तूफान और उससे हुए सारे नुकसान का कारण वही है।
बारबरा एच.: पेट में कुछ हलचल महसूस हुई। शायद जानवर में बदल जाए या गर्भवती हो जाए और पिल्लों को जन्म दे। खच्चर या घोड़े में बदल जाए। चेहरे पर बाल उगने का आभास हुआ। 35 वर्ष, विवाहित, श्वेत।
फिलोमेना टी. को हर चीज़ में परफ़ेक्ट होना ज़रूरी है: केक बनाते समय उन्हें पता चला कि उनसे एक सामग्री छूट गई है। वे गुस्से से पागल हो गईं, बाल नोचने लगीं, मुक्के पटकने लगीं और दीवार पर हाथ पटकने लगीं।
लिलियन जे.: 68 वर्षीय महिला। उन्हें यह अजीबोगरीब जुनून सवार है कि वे गर्भवती हैं। उनका एक प्रेमी (52) है जिसके साथ वे पिछले 30 वर्षों से संबंध बनाए हुए हैं। वे उससे शादी नहीं करना चाहतीं। उनके बीच शारीरिक संबंध हैं। उनके पहले पति की शादी के 6 साल बाद टीबी से मृत्यु हो गई थी। वे 11 कमरों के किराए के मकान में रहती हैं।

एडसन एफ.: एक बड़ी साजिश चल रही है। सोते समय उसके साथ बलात्कार हुआ—“उन्होंने मुझे यौन शोषण के लिए इस्तेमाल किया।” अपने अस्तित्व को साबित करने के लिए कई दस्तावेज़ पेश करता है। जन्म प्रमाण पत्र, मतदान कर और नागरिकता प्रमाण पत्र।
जॉन एम.: मैकेनिक। न्यूटन बॉल बेयरिंग कंपनी में इंजीनियर। न्यू इंग्लैंड सिटी आइस कंपनी में कीट नियंत्रक। बुरा सपना: छाती पर रेत का एक कण रखा होता था, जो बढ़कर घर जितना बड़ा हो जाता था: घुटन और कुचले जाने का अहसास।
फ्रैंक एस.: “मुझे अपने ‘सामाजिक दुर्भावनाओं’ पर अपराधबोध होता है।” वे इस बीमारी की शुरुआत कैमस की रचना ‘द रेबेल’ पढ़ने से मानते हैं। उन्हें लगता है कि उन्होंने धमकी भरे और तिरस्कारपूर्ण निगाहों से भावनात्मक रूप से कमजोर लोगों को काफी चोट पहुंचाई है। जर्मनी में उन्हें जर्मन लोगों को चोट पहुंचाने या दंडित करने की इच्छा हुई। उन्होंने राहगीरों को धमकी भरी निगाहों से देखकर ऐसा किया। इस दौरान उन्हें लगा कि उनका व्यक्तित्व अधिकांश लोगों की तुलना में कहीं अधिक आकर्षक और शक्तिशाली है।
प्लैथ द्वारा अपनी माँ को लिखे गए पत्रों के संग्रह 'लेटर्स होम' के पाठक जानते हैं कि उनका रिश्ता बेहद घनिष्ठ और गहरा था। जैसा कि ऑरेलिया प्लैथ लिखती हैं, सिल्विया अक्सर अपना जीवन अपनी माँ के साथ जोड़ लेती थीं। उनका एक सहजीवी, गहरा सहायक और जटिल रिश्ता था, जिसमें एक अलग व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाए रखना हमेशा आसान नहीं रहा होगा। सिल्विया की शादी के बाद भी, उनकी अपने पति पर ऐसी ही निर्भरता बनी रही—"ऐसा लगता था मानो हम दोनों में से किसी की भी, या विशेष रूप से मेरी, कोई त्वचा ही न हो, या हमारे बीच कोई एक त्वचा ही न हो।" एक कलाकार के

रूप में उनका निरंतर संघर्ष—डर और खालीपन के राक्षसों से पार पाना, अपने वास्तविक स्वरूप को महसूस करना, अपनी शक्ति तक पहुँचना—इस सहजीवन से बाहर निकलना, वियोगी क्रोध की विस्मृति की भावना को त्यागना और इस प्रकार उस बंधन को तोड़ना था। इस दिशा में पहले किए गए प्रयासों को लेकर जो घोर अपराधबोध उसे महसूस हो रहा था, वह जादुई ढंग से उसकी पुरानी थेरेपिस्ट डॉ. रूथ ब्यूशर* ने दूर कर दिया। उसने अपने पति और माँ दोनों को बिना बताए बोस्टन में उनसे दोबारा मिलना शुरू किया था। “अपनी माँ के प्रति अपनी शत्रुता व्यक्त करने से मुझे बहुत अच्छा लगता है, यह मेरे दिल और मेरे टाइपराइटर पर बैठे डर से मुझे मुक्ति दिलाता है (क्यों?)” इस थेरेपी का प्रभाव असाधारण था—इससे कुछ महीनों बाद उसकी पहली प्रमुख रचना “जन्मदिन के लिए कविता” का जन्म हुआ। इन पन्नों में सिल्विया प्लाथ की चिकित्सा से संबंधित अधिकांश सामग्री मेरे लिए अत्यंत पीड़ादायक है, और इसे प्रकाशित करने का निर्णय लेना मेरे लिए कठिन रहा है। मुझे पूरा विश्वास है कि कई पाठक उनके द्वारा यहां व्यक्त किए गए नकारात्मक विचारों को पूर्ण सत्य मान लेंगे, भले ही अन्य सकारात्मक पन्नों पर उनका खंडन किया गया हो। फिर भी, सिल्विया प्लाथ के कार्यों के लिए इस सामग्री का महत्व निर्विवाद है, और उनकी भावनात्मक स्थिति को बेहतर ढंग से समझने के लिए, मैंने इस सामग्री को प्रकाशित करने की सहमति दी है।
ऑरेलिया प्लाथ
शुक्रवार, 12 दिसंबर। अगर मैं उसके समय और बुद्धि के लिए पैसे दे रहा हूँ, मानो मैं जीवन और भावनाओं के प्रबंधन और उनसे निपटने के तरीके के बारे में मार्गदर्शन के लिए जा रहा हूँ, तो मैं जी तोड़ मेहनत करूँगा, सवाल पूछूँगा, हर तरह की उलझन और

बेकार की बातों की गहराई से जाँच करूँगा और खुद को इससे भरपूर लाभ उठाने दूँगा।
बुधवार से ही मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं एक "नया इंसान" बन गया हूँ। मानो ब्रांडी का एक घूंट घर ले गया हो, कोकीन का एक कश, जिसने मुझे अंदर तक झकझोर दिया हो और मैं ज़िंदा हूँ और पूरी तरह से होश में हूँ। यह उस सदमे से कहीं बेहतर है जिसमें कहा जाता है, "मैं तुम्हें अपनी माँ से नफ़रत करने की इजाज़त देता हूँ।"
…तो मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। एक ऐसे रूढ़िवादी मातृसत्तात्मक समाज में जहाँ हर कोई अपनी माँ से नफ़रत करता है, उसे नफ़रत करने की अनुमति मिलना मुश्किल है, खासकर ऐसी अनुमति जिस पर हम विश्वास करते हों। मैं आर.बी. पर विश्वास करती हूँ क्योंकि वह एक समझदार महिला हैं जो अपने काम में माहिर हैं और मैं उनकी प्रशंसा करती हूँ। वह मेरे लिए "एक उदार माँ जैसी" हैं। मैं उन्हें कुछ भी बता सकती हूँ, और वह ज़रा भी नाराज़ नहीं होंगी, न डाँटेंगी और न ही मेरी बात सुनने से इनकार करेंगी, जो प्यार का एक सुखद विकल्प है।
लेकिन अपनी माँ के प्रति अपनी घृणा व्यक्त करने से मुझे बहुत अच्छा लगता है, मेरे दिल और मेरे टाइपराइटर पर बैठे डर से मुझे मुक्ति मिलती है (क्यों?), फिर भी मैं पेरिस, लंदन, मेन के जंगलों से डॉ. ब्यूशर को लंबी दूरी की कॉल करके जीवन नहीं गुजार सकती। [अधूरा अंश।] जीवन नरक था। उसे [सिल्विया की माँ] काम करना पड़ता था। काम भी करना पड़ता था और माँ भी, एक ही प्यारी सी पीड़ादायक गेंद में पुरुष और स्त्री दोनों की भूमिका निभानी पड़ती थी। वह चुटकी काटती थी। खरोंचती थी। वही पुराना कोट पहनती थी। लेकिन बच्चों के पास स्कूल के नए कपड़े और फिट जूते थे। पियानो,

वायोला, फ्रेंच हॉर्न की कक्षाएं। वे स्काउट्स में जाते थे। वे समर कैंप जाते थे और नाव चलाना सीखते थे। उनमें से एक छात्रवृत्ति पर निजी स्कूल में जाता था और अच्छे अंक लाता था। पूरी ईमानदारी से और अपने दुखी दिल से उसने उन दो मासूम छोटे बच्चों को खुशियों की दुनिया देने के लिए मेहनत की, जो उसे कभी नहीं मिली थी। उसकी दुनिया बहुत खराब थी। लेकिन वे छात्रवृत्ति और काम के दम पर, और उसके कुछ पैसों से देश के सर्वश्रेष्ठ कॉलेज में पढ़े, और उन्हें उबाऊ व्यावसायिक विषयों का अध्ययन नहीं करना पड़ा। एक दिन वे सच्चे प्यार से शादी करेंगे, उनके पास खूब पैसा होगा और सब कुछ खुशनुमा होगा। उन्हें बुढ़ापे में उसका सहारा भी नहीं बनना पड़ेगा।
कोने पर बना छोटा सा सफेद घर, जिसमें औरतों से भरा एक परिवार रहता था। इतनी सारी औरतें थीं कि घर में उनकी बदबू आती थी। दादाजी कंट्री क्लब में रहते और काम करते थे, लेकिन दादीजी घर पर रहकर दादीजी की तरह खाना बनाती थीं। पिताजी मर चुके थे और उनकी कब्र में उनका शव सड़ रहा था, जिसकी उन्होंने बड़ी मुश्किल से ही कीमत चुकाई थी। माँ किसी भी गरीब औरत की तरह रोटी कमाने के लिए मेहनत करती थी और साथ ही एक अच्छी माँ भी थी। भाई प्राइवेट स्कूल में पढ़ता था और बहन पब्लिक स्कूल में जाती थी क्योंकि वहाँ लड़के थे (लेकिन सोलह साल की होने तक उसे कोई पसंद नहीं करता था) और वह वहीं जाना चाहती थी: वह हमेशा वही करती थी जो वह चाहती थी। औरतों की बदबू: लाइज़ोल, कोलोन, गुलाब जल और ग्लिसरीन, निपल्स पर कोकोआ बटर ताकि वे फटें नहीं, और तीनों के होंठों पर लाल लिपस्टिक।
मुझे तो कभी पिता का प्यार नहीं मिला, आठ साल की उम्र के बाद किसी ऐसे पुरुष का प्यार नहीं मिला जो मेरे लिए स्थिर और सच्चा

साथी हो... एकमात्र ऐसा पुरुष जो जीवन भर मुझसे अटूट प्रेम करता: एक सुबह वो आँखों में आँसू लिए आई और मुझे बताया कि वो हमेशा के लिए चले गए हैं। मैं इस बात के लिए उनसे नफरत करती हूँ। [उल्लंघन।] वह एक राक्षस था। लेकिन मुझे उसकी याद आती है। वह बूढ़ा था, लेकिन उसने एक बूढ़े आदमी से शादी की थी ताकि वह मेरा पिता बन सके। यह उसकी गलती थी। [उल्लंघन।]
मुझे मर्दों से नफ़रत थी क्योंकि वे मेरे साथ रहकर मुझे पिता की तरह प्यार नहीं करते थे: मैं उन्हें चुभोकर दिखा सकती थी कि वे पिता बनने लायक नहीं हैं। मैं उनसे शादी का प्रस्ताव रखती थी और फिर उन्हें दिखा देती थी कि उनका कोई चांस नहीं है। मुझे मर्दों से नफ़रत थी क्योंकि उन्हें औरतों की तरह तकलीफ़ें नहीं सहनी पड़ती थीं। वे मर सकते थे या स्पेन जा सकते थे। वे मौज-मस्ती कर सकते थे जबकि औरतें प्रसव पीड़ा से जूझ रही होती थीं। वे जुआ खेल सकते थे जबकि औरतें रोटी पर मक्खन कम डालती थीं। मर्द, घटिया, नीच मर्द। वे जितना मिल सकता था उतना ले लेते थे और फिर नखरे दिखाते थे या मर जाते थे या स्पेन चले जाते थे, जैसे फलां महिला का पति अपने लंपट होंठों के साथ।
एक प्यारा, सुरक्षित, मीठा, स्नेहशील नकली आदमी ढूंढो जो तुम्हें बच्चे, रोटी, सुरक्षित छत, हरा-भरा लॉन और हर महीने ढेर सारा पैसा दे। समझौता करो। एक समझदार लड़की को सब कुछ नहीं मिल सकता। जो भी अच्छा लगे, उसे स्वीकार करो। जो भी तुम्हें लगता है कि तुम संभाल सकती हो और प्यार से उस पर महारत हासिल कर सकती हो, उसे स्वीकार करो। उसे गुस्सा मत होने दो, मरने मत दो या अपनी सेक्सी सेक्रेटरी के साथ पेरिस मत जाने दो। बस यह सुनिश्चित करो कि वह अच्छा, अच्छा, अच्छा हो। [कुछ अंश हटा दिया गया।]

तो [माँ] प्यार के बारे में क्या जानती हैं? कुछ नहीं। तुम्हें प्यार होना चाहिए। तुम्हें प्यार मिलना चाहिए। यह अच्छा है। लेकिन आखिर प्यार है क्या?
खैर, कोई तो आपको सुरक्षित महसूस कराता है। घर, पैसा, बच्चे: ये सभी पुराने सहारे। एक स्थिर नौकरी। प्राकृतिक आपदाओं, पागलों, चोरों, हत्यारों, कैंसर से सुरक्षा। उसकी माँ की मृत्यु कैंसर से हुई। उसकी बेटी ने आत्महत्या करने की कोशिश की... उसके पास पर्याप्त बीमा नहीं था। कुछ तो गड़बड़ हुई। अगर वह इतनी नेक और अच्छी थी, तो भाग्य ने उसे इस तरह कैसे दंडित किया?
कुछ हद तक इसमें उसकी बेटी की गलती थी। उसने एक सपना देखा: उसकी बेटी भड़कीले कपड़े पहनकर बाहर जाने वाली थी और शायद एक वेश्या भी बनने वाली थी। [कुछ अंश हटा दिया गया।] पति, सपने में फिर से जीवित होकर अपने पुराने गुस्से के श्राप को फिर से जी रहा था, बेटी के गायन करने जाने की बात पर क्रोधित होकर घर से बाहर निकल गया। बेचारी माँ रेतीले समुद्र तट पर दौड़ती रही, उसके पैर जीवन की रेत में धंसते रहे, उसका पैसों का थैला खुला रहा और पैसे और सिक्के रेत में गिरते हुए रेत में मिल गए। पिता ने गुस्से में आकर, उसे चिढ़ाने के लिए, सड़क के पुल से गाड़ी नीचे गिरा दी और कंट्री क्लब के खंभों के पास समुद्र के पानी में औंधे मुंह, फूला हुआ, मृत पड़ा था। घाट से हर कोई उन्हें देख रहा था। हर कोई सब कुछ जानता था।
उसने अपनी बेटी को कुलीन महिलाओं द्वारा लिखित 'पवित्रता के पक्ष में तर्क' नामक पुस्तकें दीं। उसने उसे बताया कि हर सच्चा पुरुष अपनी पत्नी के रूप में कुंवारी स्त्री का होना ज़रूरी समझता है, चाहे उसने अपने जीवन में कितने ही अनैतिक संबंध क्यों न बनाए हों।

उसकी बेटी ने क्या किया? उसने… उन्हें गले लगाया और चूमा। उसने उन सभी अच्छे लड़कों को ठुकरा दिया जिनसे वह तुरंत शादी कर सकती थी, और बड़ी हो गई फिर भी उसने किसी से शादी नहीं की। वह इतनी तेज़ और ज़ुबानबंद थी कि कोई भी अच्छा आदमी उसे बर्दाश्त नहीं कर सकता था। ओह, वह तो एक बोझ थी।
अब मुझे लगता है कि मेरी माँ ने भी यही महसूस किया होगा। मैं उनकी आशंका, उनका गुस्सा महसूस कर सकती हूँ… मैं केवल प्रेम की भावना को महसूस कर सकती हूँ, और यह कि उन्हें लगता है कि वह मुझसे उतना ही प्यार करती हैं जितना उन्हें करना चाहिए। वह मेरे लिए कुछ भी कर सकती थीं, है ना?
मैंने लगभग वो सब कुछ कर लिया है जो उसने कहा था कि मैं नहीं कर सकती और साथ ही खुश भी रह सकती हूँ, और अब मैं यहाँ हूँ, लगभग खुश हूँ।
सिवाय उस समय के जब मुझे अपराधबोध होता है, जब मुझे लगता है कि मुझे खुश नहीं होना चाहिए, क्योंकि मैं वो नहीं कर रही जो मेरे जीवन में सभी माँ समान महिलाएं मुझसे करवाना चाहती हैं। तब मुझे उनसे नफरत होती है। मुझे बहुत दुख होता है कि मैं वो नहीं कर रही जो हर कोई और मेरी सभी बूढ़ी माँएं अपने बुढ़ापे में चाहती हैं।
मुझे ठगा हुआ महसूस हुआ: मुझे प्यार नहीं मिला, जबकि सारे संकेत यही कह रहे थे कि मुझे प्यार मिला है: दुनिया कहती थी कि मुझे प्यार मिला है: सत्ता में बैठे लोग भी यही कहते थे कि मुझे प्यार मिला है। मेरी माँ ने मेरे लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। एक ऐसा बलिदान जो मैं नहीं चाहती थी… मैंने उनसे एक वादा लिया था कि वह कभी शादी नहीं करेंगी। जब मैं नौ साल की थी। काश उन्होंने वह वादा तोड़ा होता…

वो मेरे और मेरे पति के बारे में चिंतित है। हम कितने बुरे हैं कि उसे चिंता हो रही है। हमारे पास अच्छी नौकरियाँ थीं और हम दोनों मिलकर सालाना लगभग छह हज़ार कमा रहे थे। हे भगवान! और हमने जानबूझकर और पूरी तरह होश में रहते हुए ये नौकरियाँ (और निस्संदेह शिक्षक के रूप में अपना करियर भी) छोड़ दीं ताकि हम बिना कुछ किए जीवन यापन कर सकें। लेखन। हम क्या करेंगे: अगले साल, बीस साल बाद: जब बच्चे पैदा होंगे? हमें फिर से नौकरियों के प्रस्ताव मिले (खुशकिस्मत थे कि कॉलेज हमसे बहुत नाराज़ नहीं थे और दरवाज़े बंद नहीं कर रहे थे) और हमने उन्हें फिर से ठुकरा दिया! हम किसी न किसी तरह से पागल थे। चाची-मामा क्या कहेंगे? पड़ोसी क्या कहेंगे? [अधूरा अंश।]
पुरुष: आर.बी. कहते हैं: “क्या आपमें यह स्वीकार करने का साहस होगा कि आपने एक पति के मामले में गलत चुनाव किया था?” मुझमें होगा। लेकिन इस सवाल से मुझे ज़रा भी डर या चिंता नहीं होती। मैं अपने पति के साथ सहज महसूस करती हूँ: मुझे उनकी गर्मजोशी, उनका विशाल व्यक्तित्व, उनका साथ, उनका रचनात्मक स्वभाव, उनके चुटकुले, उनकी कहानियाँ, उनकी किताबें, उनका मछली पकड़ना, सैर करना, सूअर, लोमड़ी और छोटे जानवरों से उनका लगाव, उनकी ईमानदारी, उनका घमंड या प्रसिद्धि का भूखा न होना, और मेरे द्वारा उनके लिए बनाए गए भोजन पर उनकी खुशी, मेरी बनाई किसी भी रचना, चाहे वह कविता हो या केक, पर उनकी प्रसन्नता, और मेरे दुखी होने पर उनकी चिंता, और मेरे अंतर्मन की लड़ाई लड़ने और साहस और दार्शनिक सहजता के साथ परिपक्व होने के लिए हर संभव प्रयास करना अच्छा लगता है… जो कुछ भी टुकड़ों में, इधर-उधर बाँटा गया था, जिससे मैं भी उन्हीं टुकड़ों की तरह बन गई थी, वह सब मेरे पति

में समाहित है। इसलिए मैं अब इधर-उधर देखना नहीं चाहती: मुझे किसी भी चीज़ के लिए इधर-उधर देखने की ज़रूरत नहीं है। [अंश।] तो उसके पास वो सब कुछ है जो मैं चाहती थी। मेरे पास पैसा और स्थिर नौकरी वाले पुरुष हो सकते थे। लेकिन वे या तो नीरस थे, या बीमार, या घमंडी, या बिगड़े हुए। अंत में उनसे मुझे घिन आती थी। मैं जो चाहती थी वो एक ऐसा इंसान था जिसके साथ आप सहारा रेगिस्तान में नग्न अवस्था में भी पूरी तरह से खुश रह सकें: वो आत्मा और शरीर से मजबूत और प्रेममय हो। सरल और दृढ़।
तो मुझे पता था कि मुझे क्या चाहिए। तेरह लंबे वर्षों तक ऐसा कोई पुरुष नहीं मिला जो मेरा सारा प्यार ले सके और बदले में मुझे प्यार की निरंतर धारा दे सके, मुझे एक ऐसे पुरुष की ज़रूरत थी जो मेरे साथ प्यार और हर चीज़ का एक परिपूर्ण चक्र बना सके। मुझे वह मिल गया। मुझे समझौता करके किसी मीठे गंजे बीमा विक्रेता, न ही किसी नपुंसक शिक्षक या किसी मूर्ख अभिमानी डॉक्टर को स्वीकार नहीं करना पड़ा... मैंने वही किया जो मुझे सही लगा और उस पुरुष से शादी कर ली जिसे मैं एकमात्र ऐसा पुरुष मानती थी जिससे मैं प्यार कर सकती थी, जिसे मैं देखना चाहती थी, जो इस दुनिया में जो चाहे वो कर सकती थी, जिसके लिए मैं खाना बनाना चाहती थी, जिसके लिए बच्चे पैदा करना चाहती थी और जिसके साथ मैं लिखना चाहती थी। और मैं, देखने में, उसके साथ खुश थी, माँ को लगा।
[उल्लंघन।] मैं कैसे खुश हो सकता हूँ जब मैंने इतना खतरनाक काम किया कि मैंने उसकी अनुभवी सलाह, मैरी एलेन चेज़ की असहमति और व्यावहारिक अमेरिकी दुनिया की ठंडी निगाहों की परवाह किए बिना अपने दिल और दिमाग की बात मानी: लेकिन वह रोज़ी-रोटी के लिए क्या करता है? वह जीता है, दोस्तों। बस यही उसका काम है।

आजकल बहुत कम लोग ऐसा करते हैं। यह बहुत जोखिम भरा है। सबसे पहले तो, स्वयं होना एक बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। कोई और बनना या बिल्कुल कोई न होना कहीं ज़्यादा आसान है। या संत थेरेसा की तरह अपनी आत्मा ईश्वर को समर्पित कर देना और कहना: मुझे बस अपनी इच्छा पूरी करने से डर लगता है। हे ईश्वर, मेरे लिए यह कर दीजिए। इससे कई समस्याएं और सवाल सामने आते हैं।
माँ: माँ जैसी सभी शख्सियतों के प्रति अपनी नफरत का क्या करें? जब आप उनकी बात न मानने पर अपराधबोध महसूस करते हैं, तो क्या करें, क्योंकि आखिरकार उन्होंने आपकी मदद करने के लिए हर संभव प्रयास किया है?
आर.बी. मुझे यह नहीं बताएगी कि मुझे क्या करना है: वह मुझे यह पता लगाने और सीखने में मदद करेगी कि मेरे भीतर क्या है और मैं (न कि वह) उसका सबसे अच्छा उपयोग कैसे कर सकती हूँ। [उन्मूलन]
लेखन: मेरे मन में डर के कारण जो तर्क बैठ गया है, वह कुछ इस प्रकार है: मैं कहानियां, कविताएं और एक उपन्यास लिखना चाहती हूं, टेड की पत्नी बनना चाहती हूं और अपने बच्चों की मां बनना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि टेड अपनी मर्जी से लिखे, जहां चाहे वहां रहे और मैं अपने बच्चों की मां और पति बनी रहूं।
हम अभी अपनी लेखन कला से जीविका नहीं कमा सकते, और शायद कभी कमा भी नहीं पाएंगे, जबकि यही हमारा एकमात्र पसंदीदा पेशा है। हम अपनी ऊर्जा और समय को बर्बाद किए बिना और अपने काम को नुकसान पहुंचाए बिना पैसे कमाने के लिए क्या करेंगे? फिर, सबसे बुरा: अगर हमारा काम अच्छा न हो तो क्या होगा? हमें अस्वीकृतियाँ मिलेंगी। क्या दुनिया हमें यही नहीं बता रही कि हमें लेखक बनने की कोशिश ही नहीं करनी चाहिए? हम कैसे जान सकते हैं कि अगर हम अभी मेहनत करें और खुद को निखारें तो हम औसत दर्जे से बेहतर बन

पाएंगे? क्या यह दुनिया का हम पर बदला नहीं है, क्योंकि हमने जोखिम उठाया? जब तक हम काम नहीं करेंगे, लिखेंगे नहीं, तब तक हम कभी नहीं जान सकते। हमें लेखक की डिग्री मिलने की कोई गारंटी नहीं है। क्या माताएँ और व्यापारी सही नहीं थे? क्या हमें इन परेशान करने वाले सवालों से बचकर स्थिर नौकरियाँ नहीं कर लेनी चाहिए थीं और बच्चों के लिए एक अच्छा भविष्य सुरक्षित नहीं कर लेना चाहिए था?
ऐसा तभी संभव है जब हम जीवन भर कड़वाहट में डूबे रहना चाहें। ऐसा तभी संभव है जब हम उदास होकर यह महसूस करना चाहें: काश, मैं कितना अच्छा लेखक बन पाता। काश, मुझमें कोशिश करने, काम करने और उस सारी मेहनत और संघर्ष से जुड़ी अनिश्चितताओं का सामना करने का साहस होता।
लेखन एक धार्मिक क्रिया है: यह एक व्यवस्था है, एक सुधार है, लोगों और दुनिया को उनके वर्तमान स्वरूप और संभावित स्वरूप में पुनः सीखना और पुनः प्रेम करना है। यह एक ऐसा आकार है जो टाइपिंग के एक दिन या शिक्षण के एक दिन की तरह क्षणभंगुर नहीं होता। लेखन स्थायी होता है: यह दुनिया में अपने आप चलता रहता है। लोग इसे पढ़ते हैं: इस पर किसी व्यक्ति, दर्शन, धर्म या फूल की तरह प्रतिक्रिया करते हैं: वे इसे पसंद करते हैं या नहीं। यह उनकी मदद करता है या नहीं। यह जीवन को गहन बनाता है: आप अधिक देते हैं, खोजते हैं, पूछते हैं, देखते हैं, सीखते हैं और इसे आकार देते हैं: आपको अधिक मिलता है: राक्षस, उत्तर, रंग और रूप, ज्ञान। आप इसे सबसे पहले स्वयं के लिए करते हैं। अगर इससे पैसा आता है, तो कितना अच्छा। आप इसे सबसे पहले पैसे के लिए नहीं करते। पैसा वह कारण नहीं है जिसके लिए आप टाइपराइटर पर बैठते हैं। ऐसा नहीं है कि आप इसे नहीं चाहते। यह बहुत अच्छा होता है

जब कोई पेशा आपकी रोजी-रोटी का साधन बन जाता है। लेखन के साथ, यह शायद हो, शायद न हो। ऐसी अनिश्चितता के साथ कैसे जिएं? सबसे बुरी बात क्या है, कभी-कभी लेखन पर ही विश्वास का अभाव या खो जाना? इन चीजों के साथ कैसे जिया जाए?
सबसे बुरी बात, उन सभी से भी बुरी, बिना लिखे जीना होगा। तो इन छोटी-मोटी बुराइयों के साथ कैसे जिया जाए और उन्हें छोटा ही रखा जाए?
विविध प्रश्न: “क्या टेड चाहता है कि तुम ठीक हो जाओ?” हाँ, वो चाहता है। वो चाहता है कि मैं डॉ. बी. से मिलूँ और मेरी भावनात्मक और प्रसन्नता में आए सुधार से वो बहुत खुश है। वो चाहता है कि मैं अपनी सारी शक्तियों का इस्तेमाल करके अपनी समस्याओं से लड़ूँ और जीत हासिल करूँ।
आर.बी. कहते हैं: स्वयं से असंतुष्टि और क्रोध, अवसाद में अंतर होता है। आप असंतुष्ट हो सकते हैं और इसके लिए कुछ कर सकते हैं: यदि आपको जर्मन नहीं आती, तो आप इसे सीख सकते हैं। यदि आपने लेखन का अभ्यास नहीं किया है, तो आप इसका अभ्यास कर सकते हैं। यदि आप किसी और पर क्रोधित हैं और उसे दबाते हैं, तो आप अवसादग्रस्त हो जाते हैं। मैं किस पर क्रोधित हूँ? स्वयं पर। नहीं, आप पर नहीं। यह कौन है? यह [अधूरा अंश]... वे सभी माताएँ जिन्हें मैं जानता हूँ, जो चाहती थीं कि मैं वह बनूँ जो मैं वास्तव में अपने दिल से नहीं बनना चाहता था, और वह समाज जो हमें वह बनाना चाहता है जो हम अपने दिल से नहीं बनना चाहते: मैं इन लोगों और इन छवियों पर क्रोधित हूँ।
मैं उन उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पा रहा हूँ। क्योंकि मैं ऐसा करना ही नहीं चाहता।

वे क्या चाहते हैं? एक स्थिर नौकरी जिससे पैसा मिले, गाड़ियाँ, अच्छे स्कूल, टीवी, फ्रिज, डिशवॉशर और सुरक्षा, ये सब उनकी पहली प्राथमिकता है। हमारे लिए ये सब चीज़ें काफी अच्छी हैं, लेकिन फिर भी दूसरे नंबर पर आती हैं। फिर भी हम डरे हुए हैं। हमें खाने-पीने, रहने के लिए घर और बच्चों के लिए पैसे की ज़रूरत है, और लेखन से शायद कभी भी पर्याप्त पैसा नहीं मिलता, और अभी भी नहीं मिलता। समाज हम पर व्यंग्य करता है।
हम लेखकों की तरह पढ़ाना क्यों नहीं सीखते? लगता है पढ़ाने में ही हमारा सारा समय और ऊर्जा लग जाती है। पिछले साल तो हमने पढ़ाने का कुछ भी काम नहीं किया। महान कृतियों की निष्क्रिय व्याख्या से संतुष्टि पाना मन को थका देता है और ऊर्जा को नष्ट कर देता है। इससे सब कुछ व्याख्या करने योग्य लगने लगता है। मुख्य प्रश्न:
[छूट।]
पैसे कमाने के लिए क्या करें और कहां रहें: व्यावहारिक विचार। लेखन के डर का क्या करें: डर क्यों? क्या यह असफलता का डर है? या अस्वीकृतियों पर दुनिया द्वारा हमें गलत ठहराए जाने का डर? पुरुषत्व की अवधारणाएँ: रचनात्मक शक्ति का संरक्षण (यौन और लेखन)।
मैं डर के मारे क्यों जम जाती हूँ? मेरा मन और लेखन दोनों ही सोचने लगते हैं: देखो, सिर ही नहीं है, बिना सिर वाली लड़की से आप क्या उम्मीद कर सकते हैं?
मैं उपन्यास क्यों नहीं लिखता? [मैंने लिखा है! 22 अगस्त, 1961: द बेल जार।]

b

समाज की छवि: लेखक और कवि को तभी क्षमा किया जा सकता है जब वह सफल हो, पैसा कमाता हो।

मुझे ऐसा क्यों लगता है कि मेरे पास पीएचडी होनी चाहिए, कि मैं इसके बिना लक्ष्यहीन, बुद्धिहीन हूँ, जबकि मैं जानता हूँ कि मेरे भीतर जो है वही मेरी पहचान के लिए एकमात्र आवश्यक प्रमाण है?
नोट: मैं अक्सर हिट नहीं करता: एक या दो बार।
गुस्से को रचनात्मक तरीके से कैसे व्यक्त करें?
पुरुष टोटेम खोने का डर: इसकी जड़ें क्या हैं?
आर.बी.: आपको हमेशा इस बात का डर रहा है कि जल्दबाजी में लिए गए फैसले अन्य विकल्पों को खत्म कर देंगे। [कुछ अंश हटा दिया गया।]

* * *

शनिवार की सुबह, 13 दिसंबर। तो जीवन के बारे में सीखो। चांदी के चम्मच से अपने लिए पाई का एक बड़ा टुकड़ा काटो। सीखो कि पेड़ों पर पत्तियाँ कैसे उगती हैं। अपनी आँखें खोलो। पतला नया चाँद ग्रीन सिटीज़ सर्विस क्लोवरलीफ और वाटरटाउन की जगमगाती ईंटों की पहाड़ियों के ऊपर अपनी पीठ के बल लेटा है, ईश्वर की चमकती उंगली के नाखून जैसा, एक बंद देवदूत की पलक जैसा। सीखो कि क्रिसमस से पहले की रात की ठंड में चाँद कैसे डूबता है। अपनी नाक खोलो। बर्फ की खुशबू लो। जीवन को होने दो।
किसी के साथ सोने, अपनी कौमार्यता खोने और खून के फव्वारे के साथ आपातकालीन वार्ड में जाने, इसके और उसके साथ खेलने पर मुझे कभी अपराधबोध नहीं हुआ। क्यों? क्यों? मुझे इसका कोई अंदाजा नहीं था, बस भावनाएं थीं। मुझे भावनाएं महसूस हुईं और मैंने जान लिया कि मैं क्या चाहती थी और मुझे वह मिल गया जिसे सिर्फ मैं चाहती थी और मैंने इसे अपने दिमाग से नहीं बल्कि सच्चाई की तीव्र अनुभूति से जाना, नमक की तरह तीखा और पनीर में चूहे की तरह निश्चित।

मार्मिक कहानी: कौमार्य भंग। यह कैसा होता है? दर्द का स्वागत, अनुभव। फ़ोन कॉल। बिल का भुगतान।
अटलांटिक एवेन्यू पर चलते हुए हमने देखा: एक काली शवयात्रा गाड़ी कॉफीहाउस के पास, एक कंक्रीट की ईंटों से बने गैरेज में, जिसकी छत टीन की नालीदार चादर से ढकी थी, कोने से मुड़ रही थी। मखमली पर्दे किसी ओपेरा थिएटर जैसे, और पेटेंट लेदर का इंटीरियर किसी लफंगे के नाचते जूतों जैसा। रेलवे स्टेशन के पास दस टन के ट्रकों के बीच, यह शानदार, चमकीली और सजी-धजी शवयात्रा गाड़ी खड़ी थी। अरे, कहाँ जा रही है? हम चलते रहे, और ट्रक खड़खड़ाते हुए हमारे बगल से गुज़रते रहे। सड़क के उस पार शवयात्रा गाड़ी रुक गई थी, रेलवे एक्सप्रेस शेड के खुले दरवाजे के पास खड़ी थी। काले कोट और टोपी पहने आदमी रेडवुड के ताबूत को रोलर्स से शेड में उतार रहे थे। बहुत भारी। हम रुक गए, घूरते रहे, दस्तानों में हमारी उंगलियां जम गईं, हमारी सांसें धूसर, सन्नाटे भरी हवा में धुएं की तरह फैल रही थीं। एक काले कोट पहने आदमी के चेहरे पर शोक का भाव हमेशा बना रहता था, मानो वह बेरोजगार अभिनेता हो, जो बार-बार वही भूमिका निभा रहा हो जिसमें वह अचानक आता है और बताता है कि बहादुर सेना के टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं, छोटा आयॉल्फ अपनी चूही पत्नी के पीछे चला गया है और उसके गीले बिस्तर को पार करने के लिए पानी पर उसकी बैसाखी के अलावा कुछ नहीं बचा है। उसके बाल भूरे थे, चेहरा नसों से भरा था, आँखें धँसी हुई थीं, आँखें किसी ग्रीक त्रासदी की तरह स्थिर थीं और मुँह पर घोर दुख का भाव था: लेकिन भावहीन, जमा हुआ। वह एक लाल चेहरे वाले, गोल गालों और चेरी जैसी नाक वाले आदमी की मदद करता है, जिसका चेहरा मुस्कुरा उठता अगर उसका काला कोट और गोल टोपी उसे दर्शकों की नज़रों में गंभीर न बनाए रखती। हम देखते रहे।

लाल रंग का कीमती लकड़ी का ताबूत सूटकेस और ट्रंक ट्रॉली पर रखे हल्के रंग की लकड़ी के पैकिंग क्रेट में सरक गया। पैकिंग क्रेट के दोनों ओर तांबे के खांचेदार हैंडल लगे थे। ताबूत के लिए बने छेद पर लकड़ी का एक चौकोर ढक्कन लगाया गया और चमकदार तितलियों जैसे दिखने वाले तांबे के नटों से कसकर बंद कर दिया गया। गोल चेहरे वाला आदमी पैकिंग क्रेट के ऊपर चढ़ गया और मेहनत से पेंसिल से कुछ निर्देश लिखने लगा: पश्चिम में किसी के लिए क्रिसमस की चिट्ठी। नाज़ुक: जल्दी खराब होने वाली वस्तुएँ: सावधानी से संभालें: सिर ऊपर की ओर: ठंडी, सूखी जगह पर रखें। किसका शव? किसी की हत्या हुई? कोई पति, पिता, प्रेमी, वेश्या? आखिरी डिकेंसियन। शोक के आखिरी व्यंग्यचित्रकार, जिनके चेहरे एक ही भावहीनता से कभी नहीं बदलते। वे शोक संतप्त लोगों की भीड़ को अपने स्थिर स्वरूप को एक बहुमूल्य वस्तु की तरह बेचते हैं, फुसफुसाते हैं, सांत्वना देते हैं, सहानुभूति जताते हैं: "ऐसे समय में, सबसे अच्छा ही चाहिए।"
एक समलैंगिक घुसपैठ: खिड़की से डाकिया का इंतज़ार करते हुए: दूसरी कप कॉफ़ी पीते हुए, उसके पीतल के बटन, गोल नीली टोपी और नीले रंग के कपड़े से ढका तोंद दिखाई देती है। उसका फूला हुआ भूरा चमड़े का डाक थैला, बोस्टन के बदलते मौसमों से खरोंचों और धब्बों से भरा हुआ। लिफ्ट से नीचे भागा। सैक्सटन फेलोशिप, हार्पर, एनकाउंटर, अटलांटिक और वर्ल्ड पब्लिशिंग कंपनी से किताब की अस्वीकृति के बाद एक पतला हवाई पत्र। जॉन लेहमैन के एक आकर्षक, गर्मजोशी भरे प्रशंसा पत्र के साथ तीन कविताओं की स्वीकृति।

c

“लोरेली,” “द डिसक्वाइटिंग म्यूज़ेज़,” “द स्नेकचार्मर”: मेरी सभी रोमांटिक कविताएँ। मैं उसका स्वाद जानता था। कितना अच्छा, कितना बढ़िया। वह साहस। वह मज़बूत

आधार। और यह एहसास कि मुझे बदलना होगा, लापरवाह होना होगा, अपने लेखन में गहराई तक उतरना होगा…
मैं शायद कभी बच्चा पैदा करूँगी: यह सोचकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। वो पुराना डर कहाँ चला गया? मुझे अभी भी उस दर्द का गहरा एहसास है। क्या मैं ये कहानी सुनाने के लिए ज़िंदा रहूँगी? काम। काम। माँ का भावुक, आँसू भरी, तेज़ आवाज़ में फ़ोन आया… मेरा दिल दुख रहा है, सुस्त, सुन्न [अधूरा अंश]… मैं, जो शरारती हूँ, खुश क्यों रहूँ? मैं हूँ। उन्होंने हमसे विनती की कि “अगर हम बदलाव चाहते हैं तो कुछ समय के लिए उनके घर आकर रहें।” वह हमारा पूरा फ़ायदा उठाना चाहती हैं, आख़िरकार उन्हें डर है कि हम किसी भी पल चले जाएँगे।

* * *

मंगलवार सुबह, 16 दिसंबर। लगभग साढ़े नौ बजे: मैंने "जॉनी पैनिक और सपनों की बाइबिल" को बार-बार लिखा है और अब इसे भेजना शुरू करने जा रहा हूँ। मुझे लगता है कि मैं अस्वीकृतियों को सहन कर सकता हूँ: बस आशा है कि मुझे प्रशंसा पत्र मिलें। मैं चाहता हूँ कि यह कहानी आगे बढ़े। यह इतनी विचित्र और बोलचाल की भाषा से भरी है कि मुझे लगता है कि कहीं न कहीं इसे सफलता मिल सकती है। मैं इसे दस बार भेजूँगा, उसके बाद मुझे पछतावा होगा: तब तक मेरे पास दो-तीन और कहानियाँ तैयार हो जाएँगी...
इस सप्ताह मैं पिछले छह महीनों की तुलना में अधिक खुश हूँ। ऐसा लगता है जैसे आर.बी. ने "मैं तुम्हें अपनी माँ से नफ़रत करने की अनुमति देता हूँ" कहते हुए, "मैं तुम्हें खुश रहने की भी अनुमति देता हूँ" भी कह दिया हो। यह संबंध क्यों है? क्या खुश रहना खतरनाक है? [अधूरा अंश।] मैं चिंता में भारी कमी के साथ आनंदित हो रहा हूँ: स्वयं से असंतोष के अवशेष - पर्याप्त लेखन न करना,

कड़ी मेहनत न करना, गहन अध्ययन न करना, जर्मन का अध्ययन न करना - ये सब चीजें मैं चाहूँ और करूँ तो कर सकता हूँ। यह नफ़रत, यह लकवाग्रस्त भय है जो मेरे रास्ते में बाधा डालता है और मुझे रोकता है। एक बार जब यह दूर हो जाएगा, तो मैं सहजता से आगे बढ़ पाऊँगा। मेरा जीवन अंततः मेरे लेखन में झलक सकता है। जैसा कि जॉनी पैनिक की कहानी में हुआ था।
कल जब हम टहलने निकले तो मुझे न्यू वर्ल्ड राइटिंग की एक पुरानी किताब, फ्रैंक ओ'कॉनर की कहानियाँ और इओनेस्को के तीन नाटक मिले। ओ'कॉनर की कहानियाँ तकनीक के लिए प्रेरणा देती हैं; "पक्का असर करने वाली"। मुझे लगता है कि आजकल जो लिखा जा रहा है, उसे पढ़ना भी उतना ही ज़रूरी है, अच्छी चीज़ें (हर्ब गोल्ड अच्छे लेखक हैं), ताकि मैं अपनी पुरानी कक्षा की भाषा से बाहर निकल सकूँ: उसने महसूस किया, उसने कहा। एकदम सख़्त। "अमेडी" पढ़कर मैं ज़ोर से हँस पड़ा। बढ़ता हुआ शव: मशरूम: इन सबका सामना उन सभी तुच्छ बातों से होता है जो आमतौर पर छोटी-मोटी बातों पर इस्तेमाल होती हैं। भयानक और हास्यास्पद को ऐसे स्वीकार करना जैसे वह रोज़ाना अख़बार की डिलीवरी हो। क्या इसका मतलब यह है कि ये घिसी-पिटी बातें हमारे असली डर को कम कर देती हैं, जिससे हम सब उनसे, अपने शवों और ज़हरीले मशरूमों से, बेखबर हो जाते हैं? इस सप्ताहांत ट्रूमैन कैपोटी: एक नवजात शिशु जैसा, उम्र लगभग पैंतीस के आसपास होगी। बड़ा सा सिर, जैसे समय से पहले जन्मे बच्चे का, भ्रूण जैसा, बड़ा सा सफेद माथा, छोटा सा मुंह, सुनहरे बालों का गुच्छा, काले जैकेट में दुबला-पतला, परी जैसा शरीर, मखमली या कॉरडरॉय, जहां हम बैठे थे वहां से पता नहीं चल पा रहा था... पुरुष उसके समलैंगिक होने से सामान्य से कहीं अधिक घृणा करते थे। कुछ और: उसकी सफलता से ईर्ष्या? अगर वह सफल न होता तो

गुस्सा करने की कोई बात ही नहीं होती। मुझे बहुत मज़ा आया, बहुत भावुक भी हुआ, बस हॉलिडे गोललाइटली को पढ़ने के बाद मुझे उससे भी ज्यादा ठंडक महसूस हुई...
बुधवार, 17 दिसंबर, सुबह। लेडीज़ होम जर्नल में छपी एक कहानी, "बटन का झगड़ा"? डॉ. बी. से पति-पत्नी के बीच झगड़े और शत्रुता व्यक्त करने की मनोवैज्ञानिक ज़रूरत के बारे में पूछिए। एक "विकसित" दंपत्ति की कहानी, जिनके बच्चे नहीं हैं, पत्नी कामकाजी है, बटन सिलने से ज़्यादा खाना बनाना पसंद करती है। पति सोचता है कि वह सहमत है, और झगड़ा बटन सिलने को लेकर है। असल में झगड़ा बटन सिलने को लेकर नहीं है। झगड़ा उसके गहरे जड़े हुए रूढ़िवादी नारीत्व के विचारों को लेकर है, जैसे बाकी सभी पुरुषों के होते हैं, जो चाहते हैं कि पत्नी गर्भवती रहे और रसोई में रहे। वह उसे सबके सामने शर्मिंदा करना चाहता है; क्या यह कहानी एक समझदार बुजुर्ग महिला के नज़रिए से बताई गई है? सलाह? उफ़, यह क्या है?
आर.बी. के अपॉइंटमेंट को कल के लिए बदलने पर मुझे गुस्सा आ रहा है। क्या मैं उसे बताऊँ? मुझे ऐसा लग रहा है: वह ऐसा इसलिए कर रही है क्योंकि मैं पैसे नहीं दे रही हूँ। वह ऐसा करके प्रतीकात्मक रूप से खुद को रोक रही है, एक "वादा" तोड़ रही है, ठीक वैसे ही जैसे माँ मुझसे प्यार नहीं करती, हर बार जब मैं उससे बात करती हूँ या उससे मिलती हूँ तो वह एक प्यार करने वाली माँ होने का अपना "वादा" तोड़ देती है। वह मुझे इधर-उधर इसलिए कर रही है क्योंकि वह जानती है कि मैं आसानी से मान जाऊँगी और मान जाऊँगी, और इससे यह संकेत मिलता है कि मुझे आसानी से बहकाया जा सकता है। उसके साथ मेरी असुरक्षा की भावना उसके बदलते समय और जगहों से और भी बढ़ जाती है। सवाल यह है: क्या वह जानबूझकर ऐसा

कर रही है, या उसे पता है कि मुझे कैसा लगेगा, या वह बस व्यावहारिक रूप से अपॉइंटमेंट तय कर रही है?
जेन ट्रस्लो को लेकर टेड के साथ तीखी बहस हुई, “तुम उसे जानती हो,” “मैं कैसे जान सकती हूँ कि मैं कौन सी जेन ट्रस्लो हूँ?” और बटनों को लेकर भी। उसने मार्सिया और माइक से कहा कि मैं कमीज़ें छुपाती हूँ, फटे मोज़े फाड़ देती हूँ, और कभी बटन नहीं सिलती। उसका मकसद था: मुझे लगा था कि इससे तुम ऐसा करोगी। इसलिए उसने सोचा कि मुझे शर्मिंदा करके वह मुझे अपने वश में कर सकता है। मेरी प्रतिक्रिया: पहले से कहीं ज़्यादा ज़िद्दी, ठीक वैसे ही जैसे उसकी प्रतिक्रिया होती है जब मैं उसे कुछ करने के लिए मनाने की कोशिश करती हूँ, जैसे ट्रूमैन कैपोटी के शो में सीट बदलना। कैपोटी को देखते हुए सीट बदलना बेहतर होता, टेड के लिए कमीज़ें और कोट पहनना बेहतर होता अगर मैं उसके बटन सिल देती: इन दोनों कामों को नामुमकिन बनाने वाली बात यह थी कि मुझे लग रहा था कि दूसरा व्यक्ति अपने फैसले में काम से ज़्यादा अहमियत दे रहा है: यह एक दूसरे पर जीत थी, थिएटर की सीटों और बटनों का मामला नहीं। मैं इस बात को समझती हूँ। मुझे यह महसूस होता है। लेकिन उसे नहीं। जब वह मुझे किसी तरह से प्रभावित करना चाहता है (जैसे कि मुझे "शिकायत" करना बंद करवाने के लिए, जिसका मतलब है कि मैं उन चीजों के बारे में बात करती हूँ जो उसे पसंद नहीं हैं), तो वह मुझसे कहता है कि मैं अपनी माँ जैसी हूँ, जिससे निश्चित रूप से मेरी भावनात्मक प्रतिक्रिया होगी, भले ही यह सच न हो। [कुछ अंश हटा दिया गया।] उसकी सबसे पक्की जीत और मुझे अपनी बात मनवाने का सबसे आसान तरीका यह है कि जब भी मैं उसकी कोई बात मानती हूँ या नहीं मानती हूँ, तो वह मुझसे कहता है कि मैं बिल्कुल अपनी माँ जैसी हूँ। इस बात को समझना ही इससे लड़ने का आधा रास्ता है।

क्या वह खुद यह स्वीकार करेगा? मैं भी उतनी ही बुरी हूँ। गंदे हाथ, गंदे हाथ। [कुछ अंश हटा दिया गया।]
शुक्रवार की सुबह, 26 दिसंबर, 1958। डॉक्टर बी से मिलने जा रहा था। क्रिसमस के बाद की ठंडी सुबह। एक अच्छा क्रिसमस। क्योंकि, टेड कहता है, मैं खुश था। मैंने खेला, छेड़ा, माँ का स्वागत किया। मैं उससे नफ़रत करता हूँ, लेकिन बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है। मैं उससे प्यार भी करता हूँ। आख़िरकार, जैसा कि कहावत है, वह मेरी माँ है। "वह तब तक दखल नहीं दे सकती जब तक आप दखल देने लायक न हों।" इसलिए मेरी नफ़रत और डर मेरी अपनी असुरक्षा से उपजे हैं। वह क्या है? और उससे कैसे निपटा जाए?
शुरुआती फैसले लेने से डर लगता है, क्योंकि इससे सारे विकल्प बंद हो जाते हैं। टेड से शादी करने से डर नहीं लगता, क्योंकि वह लचीला है, मुझे बांधकर नहीं रखेगा। समस्या: हम दोनों लिखना चाहते हैं, एक साल का समय है। फिर क्या? कोई झंझट नहीं। कोई स्थिर आय वाला पेशा: मनोविज्ञान?
मैं अपनी आत्मनिर्भरता कैसे विकसित करूं? उसे सब कुछ न बताऊं। मुश्किल है, हर समय उसे देखना, बाहरी जीवन न जी पाना।
डर: हार्वर्ड में लोगों को देखने के बाद: मुझे लग रहा है कि मैंने खुद को दौड़ से बाहर कर दिया है। मैं लेखन में पूरी तरह से क्यों नहीं उतर पा रहा/रही? क्योंकि मुझे शुरू करने से पहले ही असफलता का डर है।
मां को उपलब्धियां देने और बदले में प्यार पाने की पुरानी जरूरत।
मेरी टेड से अक्सर बहस होती है: दो बार तीखी बहस। असली वजह ये है कि हम दोनों पैसों को लेकर चिंतित रहते हैं: हमारे पास अगले साल 1 सितंबर तक के लिए पर्याप्त पैसा है। उसके बाद क्या? पैसों और

पेशे को लेकर चिंताएं हमारे बचे हुए साल को बर्बाद न कर दें, इसके लिए हम क्या करें?
हम दोनों में से कोई भी अंग्रेजी से संबंधित नौकरी नहीं चाहता: न पत्रिका, न प्रकाशन, न अखबार, न ही अध्यापन: अभी तो अध्यापन बिल्कुल नहीं।
टेड और अमेरिका की समस्या। उसे अभी तक इसका उपयोग करना नहीं आता। मैं उसकी निराशा को समझता हूँ। मैं उसे किसी ऐसी चीज़ के लिए मजबूर या हेरफेर नहीं करना चाहता जो वह नहीं चाहता। फिर भी वह भी चिंतित है, बस इसे खुलकर व्यक्त नहीं कर पाता।
पता नहीं कहाँ रहना है। कौन सा पेशा अपनाना है। लेखन से कितनी कमाई होगी? कविता से ज़्यादा कमाई नहीं होती। शायद बच्चों की किताबें लिख सकते हैं।
टेड: स्थिर, दयालु, स्नेही, मिलनसार, बुद्धिमान, रचनात्मक। लेकिन हम दोनों ही बहुत अंतर्मुखी हैं: लोगों की तुलना में किताबों को ज़्यादा पसंद करते हैं। असुरक्षा की भावना से ग्रस्त...
अगर मैं खुद को और अपने काम को विकसित कर सकता हूं, तो मैं हमारे रिश्ते में एक योगदान दूंगा, न कि एक आश्रित और कमजोर साथी। माँ से नफ़रत, भाई से ईर्ष्या: ये भावनाएँ तभी आती हैं जब मुझे उस जीवनशैली पर संदेह होता है जिसे मैं उनके पसंदीदा जीवनशैली के स्थान पर अपनाना चाहता हूँ। वे इसे स्वीकार कर लेंगे, लेकिन हमें अपने मार्ग के प्रति आश्वस्त होना चाहिए। हम नहीं हैं; मैं नहीं हूँ। काम को लेकर निराशा। लेखन में वास्तव में कोई मेहनत नहीं की है। लक्ष्यहीन बौद्धिक व्यर्थता का डर। लोगों से सतही स्तर से हटकर, गहरे स्तर पर जुड़ने वाले पेशे की आवश्यकता।

पुरुषों को लेकर ईर्ष्या: टेड से ईर्ष्या क्यों? माँ उसे संभाल नहीं सकती। दूसरी औरतें संभाल सकती हैं। मुझे स्वार्थहीन नहीं होना चाहिए: आत्मसम्मान विकसित करना चाहिए। एक ऐसी दृढ़ता जो अटूट हो।
शनिवार, 27 दिसंबर, 1958। कल आर.बी. के साथ एक लंबा और गहन सत्र हुआ। मैंने कुछ ऐसी बातें निकालीं जिनसे मुझे बहुत दुख हुआ और मैं रो पड़ी। मैं सिर्फ उन्हीं के साथ क्यों रोती हूँ? मैं माँ के प्यार के खोने के गम से उबर नहीं पा रही हूँ। [अधूरा अंश।] तो फिर, मैं प्यार के रूप में क्या उम्मीद करती हूँ? क्या आर.बी. को देखकर मुझे वही मिलता है जिसकी मैं उम्मीद करती हूँ? क्या इसीलिए मैं रोती हूँ? क्योंकि उनकी पेशेवर दयालुता भी मुझे माँ से मिलने वाली दयालुता से कहीं ज़्यादा मेरी चाहत के अनुरूप लगती है? मैंने बचपन में ही अपने पिता और उनके प्यार को खो दिया था; इस वजह से मुझे उन पर गुस्सा आता है और मुझे लगता है कि उन्हें लगता है कि मैंने ही उन्हें मार डाला (उनका सपना जिसमें मैं एक कोरस गर्ल थी और उनके पिता गाड़ी चलाकर खुद को डुबो रहे थे)। मैंने अक्सर उन्हें खोने के सपने देखे हैं, और बचपन के ये बुरे सपने मुझे आज भी याद हैं: पिछली रात मैंने सपना देखा कि मैं एक बड़े अस्पताल में टेड के पीछे भाग रही हूँ, यह जानते हुए कि वह किसी और औरत के साथ है, पागलखानों में जा रही हूँ और हर जगह उसे ढूंढ रही हूँ: तुम्हें ऐसा क्यों लगता है कि वह टेड था? चेहरा तो उनका ही था लेकिन वह मेरे पिता थे, मेरी माँ थीं।
कुछ मौकों पर मैं उसे अपने पिता से जोड़कर देखती हूँ, और ये पल मेरे लिए बहुत मायने रखते हैं: जैसे, स्कूल के आखिरी दिनों में हुई वो लड़ाई, जब मैंने उसे उस खास दिन पर वहाँ न पाकर किसी और औरत के साथ पाया। मुझे बहुत गुस्सा आया। उसे पता था कि मैं उससे

कितना प्यार करती हूँ और उसके लिए कितना महसूस करती हूँ, फिर भी वो वहाँ नहीं था। क्या ये मेरे पिता के मेरे साथ किए गए व्यवहार की छवि नहीं है? मुझे लगता है शायद है। मैंने टेड से इस बारे में इसलिए बात नहीं की क्योंकि वो बात दोबारा नहीं उठी और ये उसका स्वभाव नहीं है: अगर ऐसा होता, तो मुझे उस पर भरोसा करने में बहुत बुरा लगता। ये बस एक घटना थी जिसने पुरानी यादें ताज़ा कर दीं, मेरे पिता का मुझसे पूरी तरह अलग हो जाना नहीं, जिन्होंने मुझे हमेशा के लिए छोड़ दिया। सवाल ये है: मैंने इसके बारे में बाद में बात क्यों नहीं की? क्या ये एक तर्कसंगत व्याख्या है? अगर ये बात बाद में उठी होती, तो इसी तरह की घटनाओं और डर के कारण फिर से याद आ जाती। टेड, जहाँ तक उसकी मौजूदगी है, मेरे पिता का विकल्प है: लेकिन किसी और तरह से नहीं। महिलाओं के प्रति उनकी बेवफाई की तस्वीरें मेरी मां और मृत्यु की देवी के साथ मेरे पिता के संबंधों के बारे में मेरे डर को प्रतिध्वनित करती हैं। यह सब कितना रोचक है। मैं इस पर महारत हासिल क्यों नहीं कर सकता, इसे अपने हिसाब से क्यों नहीं ढाल सकता और अपनी उस सतहीपन को क्यों नहीं हटा सकता, जो इसके खिलाफ एक सावधानीपूर्वक सुरक्षात्मक आवरण की तरह काम करती है?
आज सुबह टेड के पुस्तकालय जाने के बाद मैंने फ्रायड की 'शोक और उदासी' पढ़ी। मेरी भावनाओं और आत्महत्या के कारणों का लगभग सटीक वर्णन: मेरी माँ से मुझ पर स्थानांतरित हत्यारा आवेग: फ्रायड द्वारा प्रयुक्त "पिशाच" रूपक, "अहंकार को निचोड़ना": यही वह भावना है जो मेरे लेखन में बाधा बन रही है: माँ का चंगुल। मैं अपने आत्म-अपमान (उनकी ओर स्थानांतरित घृणा) को छुपाती हूँ और उसे अपने भीतर की वास्तविक असंतुष्टियों के साथ इस तरह मिलाती हूँ कि यह पहचानना बहुत मुश्किल हो जाता है कि वास्तव

में क्या झूठी आलोचना है और वास्तव में क्या एक परिवर्तनीय दायित्व है। मैं इस अवसाद से कैसे छुटकारा पा सकती हूँ? यह मानने से इनकार करके कि उनका मुझ पर कोई अधिकार है, उन पुरानी चुड़ैलों की तरह जिनके लिए दूध और शहद की थालियाँ रखी जाती थीं। यह करना आसान नहीं है। यह कैसे किया जाता है? बात करना, सच्चाई को समझना और उसका अध्ययन करना मददगार होता है।
डॉ. बी.: इस साल आप दो परस्पर विरोधी काम करने की कोशिश कर रही हैं। 1) अपनी माँ को चिढ़ाना। 2) लिखना। अपनी माँ को चिढ़ाने के लिए, आप नहीं लिखतीं क्योंकि आपको लगता है कि आपको कहानियाँ उन्हें देनी होंगी, या वे उन्हें अपना बना लेंगी। (जैसे मुझे डर था कि कहीं वे मेरे बच्चे को अपना न बना लें, क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि वह उनका हो।) इसलिए मैं लिख नहीं सकती। और मैं उनसे नफरत करती हूँ क्योंकि मेरा न लिखना उनके लिए फायदेमंद है और यह साबित करता है कि वे सही हैं, मैंने पढ़ाया न करके या कोई सुरक्षित काम न करके मूर्खता की, जबकि जिस चीज़ के लिए मैंने सुरक्षा का त्याग किया है, वह है ही नहीं। अस्वीकृति का मेरा डर इस डर से जुड़ा है कि इसका मतलब होगा कि वे मुझे असफल होने के कारण अस्वीकार कर देंगी: शायद इसीलिए वे इतनी भयानक हैं। राहत की बात यह है कि टेड को अस्वीकृतियों की परवाह नहीं है, सिवाय इसके कि वे मुझे परेशान करती हैं। इसलिए मेरा काम अपने काम में आनंद लेना और यह महसूस करना है कि मेरी रचनाएँ मेरी हैं। वह शायद इनका इस्तेमाल करे, प्रकाशित होने पर इन्हें अपने कमरे में सजा कर रखे, लेकिन इन्हें मैंने बनाया है और इनसे उसका कोई लेना-देना नहीं है।
ऐसा नहीं है कि मैं खुद सफल नहीं होना चाहती। मैं चाहती हूँ। लेकिन सफलता के लिए मुझे उस तरह की बेताबी नहीं चाहिए जो मैंने

महसूस की है: यह डर मेरे अंदर समाया हुआ है कि असफलता का मतलब माँ से स्वीकृति न मिलना है: और माँ से स्वीकृति को मैंने प्रेम के बराबर मान लिया है, चाहे वह कितना भी सच क्यों न हो।
[अधूरा अंश।] मैं उससे “प्रेम” से क्या अपेक्षा करती हूँ? ऐसी कौन सी बात है जो मुझे समझ नहीं आती और मुझे रुलाती है? मुझे लगता है कि मैंने हमेशा महसूस किया है कि वह मुझे अपने ही विस्तार के रूप में इस्तेमाल करती है; कि जब मैं आत्महत्या करती हूँ, या कोशिश करती हूँ, तो यह उसके लिए “शर्म” की बात होती है, एक आरोप होता है: जो कि वास्तव में था भी। एक आरोप कि उसका प्रेम अपूर्ण था। वॉरेन से प्रतिस्पर्धा का भाव भी: हार्वर्ड की उभरती छवि को उससे जोड़ दिया जाता है। वैसे, माँ मेरी आत्महत्या को कैसे समझती है? निस्संदेह, मेरे न लिखने के कारण। मुझे लगता था कि मैं लिख नहीं सकती क्योंकि वह उसे अपना बना लेगी। क्या बस इतना ही? मुझे लगता था कि अगर मैं नहीं लिखूँगी तो कोई मुझे इंसान के रूप में स्वीकार नहीं करेगा। इसलिए, लेखन मेरे लिए एक विकल्प था: अगर तुम मुझसे प्यार नहीं करते, तो मेरे लेखन से प्यार करो और मेरे लेखन के लिए मुझसे प्यार करो। यह इससे कहीं अधिक है: अनुभवों की अराजकता को व्यवस्थित और पुनर्व्यवस्थित करने का एक तरीका।
जब मेरा जादू-टोने पर विश्वास दूर हो जाएगा, तब मैं बिना किसी झिझक के उसे लेखन के बारे में बता पाऊँगी और फिर भी उसे अपना ही महसूस करूँगी। वह... जादूगरनी नहीं है। [कुछ अंश हटा दिया गया।] क्या मनोविज्ञान की जांच करने की हमारी इच्छा, डॉ. बी. की शक्ति को हासिल करने और उसे स्वयं नियंत्रित करने की इच्छा है? यह एक रोमांचक और उपयोगी शक्ति है। "इसके बाद आप कभी पहले जैसे नहीं रहते: यह एक पेंडोरा बॉक्स की तरह है: कुछ भी सरल नहीं रह जाता।"

मेरी रचना मेरी रचना है। उसमें उसकी स्वीकृति पाने के जो भी तत्व थे, मुझे अब उनका उपयोग उस उद्देश्य के लिए नहीं करना चाहिए। मुझे उससे प्रेम की अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। [अधूरा अंश।] मुझे बदलना होगा, उसे नहीं। उसे अपनी सफलता के बारे में बताना इतना असंतोषजनक क्यों है? क्योंकि एक सफलता कभी पर्याप्त नहीं होती: जब आप प्रेम करते हैं, तो वह आपके लिए अनिश्चित काल तक रहता है। जब आप स्वीकृति देते हैं, तो आप केवल एक ही कार्य को स्वीकृति देते हैं। इस प्रकार स्वीकृति की समय सीमा कम होती है। प्रश्न यह है: इतना तो ठीक है, लेकिन अब आगे क्या?
मुझे किस बात का अपराधबोध है? एक पुरुष का होना, खुश रहना... [अधूरा अंश।]
इंग्लैंड में रहते हुए मैं उसके साथ इतना संतोषजनक पत्र-व्यवहार इसलिए बनाए रख सका क्योंकि हम दोनों एक-दूसरे के प्रति अपनी इच्छित छवि को शब्दों में व्यक्त कर सकते थे: रुचि और सच्चा प्रेम, और इन मौखिक रूप से व्यक्त भावनाओं के साथ कभी भी भावनात्मक संघर्ष महसूस नहीं करते थे। मैं उसकी अस्वीकृति को महसूस करता हूँ। लेकिन मैं इसे दूर देशों में भी महसूस करता हूँ। [अंश।] काश... मैं अपने बारे में आश्वस्त हो पाता: ताकि मैं जान सकूँ कि मेरी भावनाएँ, भले ही कुछ उसकी भावनाओं से मिलती- जुलती हों, वास्तव में मेरी अपनी हैं। अब मुझे दिखावे और वास्तविकता के बीच अंतर करना मुश्किल लगता है। [अंश।] हार्वर्ड के सभी लोग मुझे क्यों नापसंद हैं और मुझे उनसे जलन क्यों होती है? इसका एक कारण यह है कि मैं उन्हें वॉरेन से जोड़कर देखता हूँ। इसे कैसे रोका जाए?

समस्या: एक ही कार्य अच्छा या बुरा हो सकता है, यह उसके भावनात्मक पहलू पर निर्भर करता है। जैसे संभोग। जैसे उपहार देना। जैसे नौकरी चुनना।
माँ के प्रति [दुश्मनी] से निपटने का समझदारी भरा तरीका क्या है? क्या परिपक्व जागरूकता के साथ इसे व्यक्त करने की आवश्यकता कम हो जाती है? [अस्पष्टता।] क्या सारी नफरत खत्म हो जाती है...? टेड और मैं अंतर्मुखी हैं और हमें लोगों से गहरा संपर्क बनाने के लिए नौकरी जैसी बाहरी प्रेरणा की आवश्यकता होती है: यहाँ तक कि सतही संपर्क जैसे छोटी-मोटी बातचीत भी सुखद होती है... लेखन को पेशे के रूप में अपनाने से हम अंतर्मुखी हो जाते हैं: हम रिपोर्टिंग, आलोचना, स्वतंत्र शोध नहीं करते। कविता रचनात्मक कलाओं में सबसे अंतर्मुखी और गहन कला है। इसमें ज़्यादा पैसा नहीं है, और वह भी अप्रत्याशित लाभ है। अध्यापन भी एक विकृति है: यह एक अमूर्त विषय का चयन करता है, एक ऐसा विषय जो "वास्तविकता, आध्यात्मिक और भौतिक" के बारे में है, उसे पाठ्यक्रमों में व्यवस्थित करता है, साहित्य के विशाल भंडार को समय, विषय और शैली के विभाजनों द्वारा सरलीकृत करता है। इसके एक छोटे से हिस्से को व्यवस्थित करता है और बीस वर्षों तक यही दोहराता रहता है। मुझे लगता है कि मनोविज्ञान अधिक वास्तविक परिस्थितियाँ प्रस्तुत करता है: जिन लोगों से आप मिलते हैं, वे कई तरह की चीजों, लोगों और विचारों से परेशान होते हैं, न कि केवल जेम्स जॉयस के प्रतीकों से। उनके अलग-अलग काम होते हैं; अलग-अलग चीजें उनके लिए अच्छी होती हैं। वे जीवन की परीक्षा एक ही कमरे में एक साथ नहीं देते: हर कोई अलग है। कोई समान ग्रेड स्केल नहीं है। उनकी समस्याएँ समान हैं, लेकिन कोई भी समस्या बिल्कुल एक जैसी नहीं है। इसके लिए दूसरों के प्रति जागरूकता

का विस्तार आवश्यक है। टेड जो भी करे, मैं स्वयं को उसमें समर्पित करना चाहूँगा। इसके लिए एक लंबे शिष्यत्व की आवश्यकता होगी। हालाँकि, मैं तब तक इसमें प्रवेश नहीं करना चाहता जब तक मैं स्वयं को आश्वस्त न कर लूँ कि मैं लिख रहा हूँ और अपने स्वयं के आनंद के लिए लिख रहा हूँ, साथ ही दूसरों के साथ अपने विचारों को साझा करने और तकनीक सीखने के लिए भी लिख रहा हूँ।
कल टेड और मैंने नौकरियों के बारे में बात की: वह भी मेरी ही तरह अपने तरीके से सनकी है: समाज के प्रति इतना जुनूनी कि वह "नौकरी पाने" को एक तरह की कैद समझता है। फिर भी अब कहता है कि कैम्ब्रिज में उसकी नौकरी एक समृद्ध अनुभव था जिसे उसने मौत के समान समझा। मुझे खुशी होगी अगर उसे कोई ऐसी नौकरी मिल जाए जो उसे पसंद हो। नियमित वेतन कमाने में आखिर क्या बुराई है? वह मानता है कि यह अच्छा लगता है। वह छवि से डरता है: इतने सारे लोग नियमित नौकरियां करते हैं और मर चुके हैं, तो यह उसे क्यों नहीं मारेगा? अगर इस साल उसकी लेखन प्रतिभा स्थापित हो जाती है, तो मुझे नहीं लगता कि यह उसे मार डालेगा। लेकिन वह उस तरह की नौकरी नहीं चाहता, और न ही मैं, जिसमें मैं/वह बिना ज्यादा तैयारी के जा सके; लेखन से जुड़ी नौकरी।
हमने शुक्रवार दोपहर को जमकर चर्चा करने का फैसला किया: सारी समस्याओं पर बात की और सिर्फ समस्याओं पर ही नहीं, बल्कि तारीफ भी की: हफ्ते भर की अच्छी बातों को गिनाया। अगले हफ्ते के लिए सकारात्मक योजनाएँ बनाईं… चाय पीते हुए हमने एक घंटे से ज़्यादा किंग लियर पढ़ा। मैंने इओनेस्को के चार नाटक पढ़े: द बाल्ड सोप्रानो, जैक, द लेसन, द चेयर्स: डरावने और मज़ेदार: हमारी पुरानी परंपराओं और घिसी-पिटी बातों पर आधारित, उन्हें चरम सीमा तक ले जाकर, वास्तविकता और अतिशय वास्तविकता के बीच के

अंतर से यह दिखाया कि हम कितने हास्यास्पद हैं और कितने भटक गए हैं। “हम अच्छा खाते हैं क्योंकि हम लंदन के उपनगर में रहते हैं और हमारा नाम स्मिथ है।” एक पारिवारिक संकट: एक लड़का मानने को तैयार नहीं कि उसे मैश किए हुए भूरे आलू बहुत पसंद हैं: वस्तु की छोटी सी बात, सभी पक्षों से जुड़ी भावनाओं की व्यापकता के विपरीत: एक उपहास, एक डर। अब मुझे बस इतना करना है कि बिना यह सोचे लिखना शुरू कर दूं कि यह माँ के लिए है ताकि मुझे उनसे स्नेह मिले! मैं यह कैसे करूँ: मेरे इरादे की पवित्रता कहाँ है? जब मुझे पूरा यकीन हो जाएगा कि मैं उसकी लेखनी का इस्तेमाल अनुमोदन प्राप्त करने के लिए नहीं कर रही हूँ और मुझे पूरा यकीन हो जाएगा कि मैं खुद हूँ, न कि वह, तो टेड को घर से बाहर निकलने की जरूरत नहीं पड़ेगी।
मैं क्यों चाहता हूँ कि आर.बी. पहले बात करे? क्या मैं विश्लेषण की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेना चाहता? मैं सवाल पूछना चाहता हूँ और पूछूंगा भी: यह मेरा काम है और इस पर काम करना मेरे लिए फ़ायदेमंद है। आज उससे बात करने के बाद बहुत शांति मिली, साथ ही गहरा दुख भी व्यक्त किया: यह दुख कब तक रहेगा?
रविवार, 28 दिसंबर। नौ बजने से पहले। दलिया खाने वाली और दो कप कॉफ़ी। बिस्तर पर कॉफ़ी के नशे में कुछ ख्याल आए। डिक नॉर्टन की कहानी साफ़-साफ़ याद आने लगी। एक संभावित विषय: आदर्शवाद में पली-बढ़ी कुंवारी लड़की अपने परिवार द्वारा पवित्र बताए जाने वाले लड़के से भी कुंवारेपन की उम्मीद करती है। वह डॉक्टर बनेगा, समाज का एक प्रतिष्ठित व्यक्ति; वह पहले से ही रूढ़िवाद की ओर झुक रहा है। वह उसे सिकल-सेल एनीमिया, जार में रखे गोल-मटोल चेहरे वाले शिशुओं, शवों और नवजात शिशुओं पर व्याख्यान देता है। वह ज़रा भी विचलित नहीं होती। वह जिस बात से विचलित

होती है, वह है उसका एक वेट्रेस के साथ अफेयर। वह इसके लिए उससे नफ़रत करती है। ईर्ष्या से भरी हुई। उसे खुद कुंवारी रहने का कोई कारण नज़र नहीं आता। कुंवारी रहने का क्या मतलब है? उससे बहस: मज़ाक। वह उससे शादी नहीं करेगी। उसके इरादे क्या हैं? वह पाखंडी है। "तो क्या मुझे सबको बताना चाहिए?" धरती को चूमकर माफ़ी मांगनी चाहिए। नहीं, यह काफ़ी नहीं होगा। आधुनिक महिला: आधुनिक पुरुष जितना ही अनुभव चाहती है...
कल दोपहर मैं टेड के साथ पुस्तकालय गया था। मैंने मनोविज्ञान में पीएचडी की पढ़ाई के लिए ज़रूरी योग्यताओं की जानकारी ली। इसमें लगभग छह साल लगेंगे। यह एक बहुत बड़ा अवसर है। दो साल ज़रूरी विषयों के लिए, दो साल एम.ए. के लिए भाषाएँ सीखने में, और बाकी के लिए चार साल, शायद तीन साल भी लग जाएँ। आवेदन करने, पाठ्यक्रमों का पता लगाने आदि का काम, और पैसे की बात तो छोड़ ही दीजिए, यह एक बहुत बड़ी चुनौती है। इतने विशाल अध्ययन कार्यक्रम का सामना करना वाकई अद्भुत है: इसमें मानव अनुभव का सार समाहित है। फिर भी, इसके मायने समझने में अच्छा लगा। मुझे आश्चर्य है कि क्या आंकड़े मुझे अभिभूत कर देंगे।
एक तरह की राहत के साथ, मैं अपनी कला सीखने के काम में लग जाती हूँ। मैं फ्रैंक ओ'कॉनर की कहानियाँ न केवल शुरुआती भोलेपन से पढ़ रही हूँ, बल्कि उनकी तकनीकी बारीकियों के प्रति बढ़ती जागरूकता के साथ भी पढ़ रही हूँ। मैं तब तक उनकी नकल करूँगी जब तक मुझे यह महसूस न हो जाए कि मैं उनसे सीखी हुई चीज़ों का उपयोग कर रही हूँ। उनकी कहानियाँ इतनी स्पष्ट रूप से "संरचित" हैं: उनमें ज़रा भी कमी नहीं है: एक प्रवाहपूर्ण कथा। यही वह चीज़ है जिसकी मुझे सबसे ज़्यादा ज़रूरत है और जिसकी मुझे सबसे ज़्यादा कमी खलती है। मैं एक तरह का कल्पनाशील, स्थिर गद्य लिखती हूँ:

तो लाल हुड या टोकरी भी नहीं है, जो मुझे चाहिए, लेकिन कुछ डॉलर भी खर्च करने का मन नहीं कर रहा।
मैं संत थेरेसा की आत्मकथा पढ़ रही हूँ: “पवित्र अवशेषों और वैभव की प्रशंसा” और पवित्र आत्मा के बीच विरोधाभास का भय। यीशु कहाँ हैं? शायद केवल भिक्षुणियाँ और भिक्षु ही उनके करीब आते हैं, लेकिन उनमें भी दुर्भाग्य के प्रति यह भयानक आत्मसंतुष्ट लालच है जो अपने आप में इस संसार में सुख के लालच जितना ही विकृत है: जैसे थेरेसा का अपने पिता के मस्तिष्क पक्षाघात और पागलपन को “अनमोल आशीर्वाद” मानना: एक ऐसा बोझ जिसे सहना सुखद है! दूसरों से ईर्ष्या करना बंद करने का एकमात्र तरीका आत्म-आनंद का अनुभव करना है। स्वार्थी आत्मा में ही समस्त सृष्टि समाहित है।
मुझे लगता है कि मैं गर्भवती हूँ: मुझे आश्चर्य है कि मुझे कब और क्या इसका एहसास होगा।
शनिवार, 3 जनवरी, 1959। हमेशा की तरह डॉ. बी. के साथ एक घंटे की गहन चिकित्सा के बाद, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं कोई ग्रीक नाटक देख रहा हूँ या उसमें भाग ले रहा हूँ: एक तरह की शुद्धि और थकावट। काश, मैं उन खुलासों को, जैसे भी वे हैं, अपने मन में ताजा रख पाता। राहत की बात यह थी कि उन्होंने एक घंटे के लिए 5 डॉलर का सुझाव दिया। मेरे लिए काफी था, उचित भी। फिर भी इतना ज्यादा नहीं, इसलिए यह एक तरह की सजा थी। यह सोचकर थोड़ी घबराहट हुई कि कहीं वह मुझे अपने साथ न रखें या किसी और के पास न भेज दें। पूरी ज़िंदगी मुझे उन लोगों से भावनात्मक रूप से धोखा मिला है जिनसे मैं सबसे ज़्यादा प्यार करती थी: पापा का देहांत और मुझे अकेला छोड़ जाना, माँ का अचानक गायब हो जाना। इसलिए, उदाहरण के लिए, जिन लोगों से मैं प्यार करती हूँ, उनकी छोटी-छोटी देरी को

भी मैं भावनात्मक रूप से ठंडा मान लेती हूँ, मानो उन्हें लग रहा हो कि मैं उनके लिए महत्वपूर्ण नहीं हूँ। यह जानते हुए भी, मुझे उसके देर से आने पर गुस्सा या परेशानी नहीं हुई। पिछले मई में मेरे अध्यापन के आखिरी दिन, जब ऐसा हुआ, तो मुझे बहुत डर लगा, खासकर उस लड़की के चेहरे को देखकर। अगर ऐसा अक्सर होता, तो मैं इसे चरित्र की कमी मानती, लेकिन ऐसा लगता नहीं है कि ऐसा हुआ है। ट्विस्टर: मुझे परवाह नहीं कि टी. मुझे प्यार जताने के लिए तोहफे देती है। मेरे मन में क्या आता है? गले लगाना। मुझे आज तक कोई ऐसा नहीं मिला जो मेरे अंदर के रोज़ाना के प्यार को समझ सके और बदले में उतना ही प्यार दे सके जितना मैं देती हूँ। डॉ. बी. ने सही कहा: ताकि तुम्हारा प्यार अधूरा न रह जाए। इस डर से कि कहीं प्यार ठुकराया न जाए, अधूरा न रह जाए। इस बात पर शर्म आती है। मैकलीन में रहते हुए, मेरे अंदर एक आंतरिक जीवन निरंतर चलता रहता था, लेकिन मैं इसे स्वीकार नहीं करती थी। अगर मुझे यह पता होता, तो मैं प्रभु की स्तुति करती। मुझे यह स्वीकार करने के लिए अनुमति की आवश्यकता थी कि मैं जीवित हूँ। क्यों?
आखिर तीन-चार झटकों के बाद, जो कि "बेहद कम समय" के थे, मैं इतनी तेज़ी से ऊपर क्यों चढ़ने लगा? मुझे ऐसा क्यों लगा कि मुझे सज़ा मिलनी चाहिए, खुद को सज़ा देनी चाहिए? अब मुझे ऐसा क्यों लगता है कि मुझे दोषी और दुखी होना चाहिए: और अगर मैं दोषी नहीं हूँ तो भी दोषी महसूस करता हूँ? डॉ. बी. से बात करने के बाद मुझे तुरंत खुशी क्यों महसूस होती है? मैं हर छोटी-छोटी चीज़ का आनंद ले पा रहा हूँ: मांस खरीदा, मेरे लिए एक जीत, और मुझे वो सब मिला जो मैं चाहता था: वील, चिकन, हैम्बर्ग। खुद को सज़ा देने की मेरी ज़रूरत, भयानक रूप से, जानबूझकर और अपने ही मुंह पर टी. को किसी न किसी तरह से निराश करने तक जा सकती है। यह मेरी सबसे बुरी सज़ा

होगी। और साथ ही लिखना बंद करना। यह जानना ही इससे बचने का पहला उपाय है।
मैं माँ से क्या अपेक्षा या चाहत रखती हूँ? गले लगाना, माँ का दूध? लेकिन अब हम सबके लिए यह असंभव है। फिर भी मुझे यह क्यों चाहना चाहिए? मैं इस चाहत का क्या करूँ? मैं इसे किसी ऐसी चीज़ में कैसे बदलूँ जो मुझे मिल सके?
हमारे दैनिक अनुष्ठानों, जन्म, विवाह, मृत्यु, माता-पिता, स्कूलों, बिस्तरों और भोजन की मेजों के उज्ज्वल मुखौटे के पीछे एक महान, कठोर, रक्तरंजित नाटक बार-बार घटित होता है: अंधेरे, क्रूर, हत्यारे साये, राक्षसी जानवर, भूख।
चीजों के प्रति मेरा नज़रिया: एक माँ की तरह, मैं नहीं चाहती कि कोई भी टी. के खिलाफ कुछ कहे, ऐसा नहीं कि वह आलसी या कामचोर है: मुझे पता है कि वह मेहनत करता है, और बहुत मेहनत करता है, लेकिन यह देखने वाले को पता नहीं चलता, जिसके लिए लेखन का मतलब घर पर बैठकर कॉफी पीना और इधर-उधर समय बिताना है। एक नाटक।
मातृ प्रेम के बारे में पूछें: ये भावनाएँ क्यों? अपराधबोध क्यों: मानो यौन संबंध, भले ही कानूनी रूप से किया गया हो, दर्द से "भुगतान" किया जाना चाहिए? मैं शायद दर्द को एक न्याय के रूप में देखूँगी: प्रसव पीड़ा, यहाँ तक कि एक विकृत बच्चा भी। जादुई भय कि माँ एक बच्ची बन जाएगी, मेरी बच्ची: एक बूढ़ी डायन जैसी बच्ची।
बुधवार, 7 जनवरी, 1959। अमूर्त चीज़ें मारती हैं, मूर्त चीज़ें बचाती हैं (कल इस सिद्धांत को उलट कर देखने की कोशिश करें)। क्या होना चाहिए या क्या करना चाहिए, इस विचार से एक खाने-पीने और मल त्याग करने वाला प्राणी कैसे दुख में डूब सकता है। कैसे धूल झाड़ना, रोज़ाना बर्तन धोना, उन लोगों से बात करना जो पागल नहीं

हैं और जो धूल झाड़ते हैं, बर्तन धोते हैं और महसूस करते हैं कि जीवन वैसा ही है जैसा होना चाहिए, मदद करता है...
सुबह इसलिए मत उठो क्योंकि मैं वापस गर्भ में जाना चाहती हूँ। अब से: देखो क्या यह संभव है: अलार्म 7:30 बजे लगाओ और उसी समय उठो, चाहे थके हुए हो या नहीं। नाश्ता और घर की सफाई (बिस्तर और बर्तन धोना, पोछा लगाना या जो भी हो) 8:30 बजे तक निपटा लो। टेड आज कॉफी और ओटमील लाया है: उसे यह करना पसंद नहीं है, लेकिन करता है। मैं उसे ऐसा करने देकर मूर्खता कर रही हूँ। अलार्म लगाने से सुबह नौ बजे के आसपास अजीब समय पर उठने की झंझट से छुटकारा मिल जाता है।
सुबह 9 बजे से पहले लिखना शुरू कर दो, इससे मन को शांति मिलेगी। अब लगभग 11 बज चुके हैं। मैंने दो स्वेटर धो लिए हैं, बाथरूम का फर्श साफ कर लिया है, पोछा लगा दिया है, दिन भर के बर्तन धो दिए हैं, बिस्तर ठीक कर दिया है, कपड़े तह कर दिए हैं और अपने चेहरे को देखकर डर गई हूँ: यह चेहरा समय से पहले ही बूढ़ा हो गया है। नाक फटी हुई सॉसेज की तरह फूली हुई: मवाद और गंदगी से भरे बड़े- बड़े रोमछिद्र, लाल धब्बे, ठुड्डी के नीचे एक अजीब सा भूरा तिल जिसे मैं निकलवाना चाहती हूँ। मेडिकल स्कूल की फिल्म में उस लड़की का चेहरा याद आता है, जिसके चेहरे पर एक छोटा सा काला तिल था: यह तिल कैंसरयुक्त है: वह एक हफ्ते में मर जाएगी। बाल बेतरतीब, बस भूरे और बचकाने ढंग से बंधे हुए: समझ नहीं आता इनका क्या करूँ। हड्डियों का ढाँचा ही नहीं। शरीर को धोने की ज़रूरत है, त्वचा की हालत बहुत खराब है: ये इस मौसम की वजह से है: कड़ाके की ठंड, कड़ाके की गर्मी: मुझे टैन होना है, पूरी तरह से भूरा, और फिर मेरी त्वचा साफ हो जाएगी और मैं ठीक हो जाऊँगी। मुझे एक उपन्यास, कविताओं की किताब, लेडीज़ होम जर्नल या न्यू यॉर्कर

में एक कहानी लिखनी है, और मैं रोमछिद्र रहित और दमकती हुई हो जाऊँगी। मेरा तिल कैंसररहित होगा।
'रीडिंग द हॉर्स माउथ': इसमें रमना मुश्किल है। मैं समझता हूँ कि यह यहाँ ज़्यादा क्यों नहीं बिकी: सतही तौर पर बहुत जटिल, दर्शन की उलझनों से भरी, लेकिन जीवन की उबड़-खाबड़ रंगीन सतह से निकली हुई, उस पर थोपी हुई नहीं। कथानक सरल और स्पष्ट नहीं, बल्कि किस्सों का अंबार है। मोटी-सी बूढ़ी सारा, ईव, एलिसन, वाइफ ऑफ बाथ की तरह शाश्वत है। यह पुरानी जर्जर खाल: इसमें रहने लायक बनाने के लिए दिमाग और रचनात्मकता की ज़रूरत है, जैसे इस खस्ताहाल घर में हीटर की।
ऐनू कथाएँ पढ़ें: आदिम: सभी लिंग-विरोध, गुदा-विरोध, मुख-विरोध के चरण में हैं। अद्भुत, अछूता हास्य, आदिम: धमाका, धमाका, तुम मर गए। परलोक की कहानियाँ: एक ही काम दो लोग करते हैं, केवल एक अमीर होता है, दूसरा गरीब और मर जाता है: अंतर केवल मानसिकता का है। नोट।
पहली बात तो सुबह जल्दी उठना है। साथ ही, टेड को कुछ न बताना। काम चल रहा है। शैडो की कहानी लगभग पूरी हो चुकी है: इसमें जोआना बीन का नामोनिशान नहीं है। निराशा: विचार तो हैं, लेकिन जानकारी की कमी है। साथ ही, विचारों की भी कमी है। कॉलेज के बाद शादी करने की सोच में कितनी लड़कियाँ सो जाती हैं: पच्चीस साल बाद उन्हें देखो, उनकी भोली आँखें बर्फ़ जैसी ठंडी हो गई हैं, वही भाव, बाहरी दिखावे के अलावा कोई विकास नहीं, जैसे किसी समुद्री जीव का खोल। सावधान रहो।
गुरुवार, 8 जनवरी। एक बार फिर बुरा दिन। पुरानी बीमारी ने मुझे घेर लिया और सुबह का सारा समय फोन कॉल और हिसाब-किताब में ही बीत गया, क्योंकि मेरे पास 1000 डॉलर कम थे। कोलंबिया जाकर पीएचडी

करने और काम करके पैसे कमाने की दिली इच्छा है। पता नहीं मैं वो इंसान हूँ जो सारा दिन घर पर बैठकर लिखता रहे। मुझे लगता है कि अगर मेरे पास तुलना करने के लिए कोई बाहरी दीवार न हो तो मेरा दिमाग सुन्न हो जाएगा। या फिर मैं इंसानों की भाषा बोलना ही बंद कर दूँगा।
आजकल बहुत बुरे सपने आ रहे हैं। पिछले हफ्ते मासिक धर्म के ठीक बाद एक सपना आया जिसमें मैंने अपने एक महीने के बच्चे को खो दिया: एक स्पष्ट अर्थ। बच्चा, बिल्कुल बच्चे जैसा, बस हाथ जितना छोटा, मेरे पेट में ही मर गया और आगे की ओर गिर पड़ा: मैंने अपने नंगे पेट पर नीचे देखा और दाहिनी ओर उसके सिर का गोल उभार देखा, जो फटे हुए अपेंडिक्स की तरह बाहर निकला हुआ था। वह बिना किसी खास दर्द के, मृत अवस्था में बाहर आया। फिर मैंने दो बच्चों को देखा, एक नौ महीने का बड़ा बच्चा और एक एक महीने का छोटा बच्चा जिसका चेहरा अंधा और सूअर जैसा था, उससे लिपटा हुआ था: निस्संदेह, कुछ दिन पहले रोज़ालिंड की बिल्ली और उसके बच्चों की छवि का प्रतिबिंब: छोटा बच्चा अजीब आकार का था, जैसे कोई बिल्ली का बच्चा जिसकी त्वचा फर की जगह सफेद हो। लेकिन मेरा बच्चा मर चुका था। मुझे लगता है कि एक बच्चा मुझे अच्छे तरीके से खुद को भुलाने में मदद करेगा। फिर भी मुझे खुद को खोजना होगा…
क्या ये बचाव का तरीका है, काम न करना? फिर तो मेरे काम की आलोचना भी नहीं हो सकती। मैं निष्क्रिय क्यों हूँ? मैं बाहर जाकर काम क्यों नहीं करती? मैं स्वभाव से आलसी हूँ। इस बोझ के बाद तो अध्यापन एक सुकून भरी राहत लगती है। खैर, हम बाहर जाकर लोगों से मिलते-जुलते नहीं हैं। टेड घर में ही रहता है और किताबों के सिवा कुछ खास नहीं लाता। मैं लापरवाह होती जा रही

काम के बीच एक ठंडा शव है। मुझे बाहर जीवन का प्रवाह चाहिए, एक बच्चा, एक नौकरी, एक ऐसा समुदाय जिसे मैं पादरी से लेकर बेकर तक जानती हूँ। ये काल्पनिक दुनिया नहीं।
शनिवार, 10 जनवरी। कल सुबह खूब रोई: मानो विलाप करने का समय हो: रोना इतना सुखद क्यों है? रोने के बाद मुझे एकदम शुद्ध, जैसे मन हल्का हो गया हो। मानो कोई गहरा दुख हो, कोई शोक। मैं उन दूसरी माताओं के बारे में रोई जो अपनी बेटियों और उनके बच्चों की कुछ समय के लिए देखभाल करने आती हैं। मैंने इस बारे में बात की कि अगर मैं इतनी समझदार होती कि माँ के बहकावे में आकर खुद को खतरे में न समझूँ, तो मैं उन्हें उनकी सीमित खुशी कैसे दे सकती थी। मैंने इस समस्या से चतुराई से किनारा कर लिया: एम.ई. चेज़ और समलैंगिकों के बारे में बात की (एक औरत दूसरी औरत में ऐसा क्या देखती है जो उसे मर्द में नहीं दिखता: कोमलता?)। मुझे एम.ई.सी. से डर भी लगता है: उससे नफरत करनी चाहिए, उससे डरना चाहिए: तुम्हें लगता है कि सभी बूढ़ी औरतें जादूगरनी होती हैं।
असल मुद्दा है मेरे अंदर हेरफेर किए जाने की इच्छा। यह इच्छा कहाँ से आती है, मैं इस पर कैसे विजय प्राप्त कर सकता हूँ? मेरे आंतरिक जीवन का प्रवाह इतना अवरुद्ध क्यों है? मैं इसे कैसे मुक्त कर सकता हूँ? मैं स्वयं को कैसे खोज सकता हूँ और अपनी पहचान के प्रति आश्वस्त कैसे हो सकता हूँ?
अगली बार: शुरुआत में यह पूछकर शुरू करना कि क्या मेरी शुरू में चुप रहने की ज़िद आर.बी. को पहले बोलने के लिए मजबूर करने की कोशिश है, ताकि पूरे घंटे का नियंत्रण मेरे हाथों से निकल जाए: वह पहले नहीं बोलेगी, मुझे बोलना पड़ेगा। और आखिरकार मैं ही बोलूंगी।

मैं दूसरों से डरना कैसे बंद करूँ? मैं खुद को कैसे जानूँ? मैं अपने सहज अर्थबोध को कैसे प्रवाहित होने दूँ और लोगों व दुनिया से कैसे जुड़ूँ? यह भय और डर मुझ पर क्यों हावी हो रहा है? अगर टेड का कोई सकारात्मक कार्यक्रम होता, अपने काम में आनंद होता— ऐसा काम जो लोगों और जगहों से जुड़ाव का माध्यम बनता, तो शायद मदद मिलती: अभी तक कोई प्रतिबद्धता न होने के बावजूद, मेरे सामने दर्जनों संभावनाएं, स्थान और रास्ते हैं: समय से पहले चुनाव करने से मृत्यु का भय, विकल्पों का खत्म हो जाना। मैं कैसे कहूँ: मैं इसे चुनता हूँ, और परिणामों से नहीं डरता।
येल रिव्यू द्वारा बिना किसी टिप्पणी के मेरी जॉनी पैनिक कहानी को अस्वीकार कर दिया गया: इसे वहाँ प्रकाशित करवाने के मेरे सारे सपने चकनाचूर हो गए: इसलिए लेखन अभी भी मेरी पहचान का प्रमाण है। दूसरों की उपलब्धियों से मुझे कड़वाहट महसूस होती है।
पिछली रात की खुशी की एक झलक, जो फिसल गई: अगाथा का ऊपरी मंज़िल का कमरा, शाम की हल्की-हल्की बर्फ़ जैसी रोशनी, चाय, शांति का सुकून भरा एहसास, पुराने कालीन, पुराना सोफ़ा, पुरानी चिकनी कुर्सियाँ: टेड के साथ अस्वीकृति का दुख बाँटना नहीं: वह मेरे बारे में चिंता करता है, मैं खुद ही समस्याएँ खड़ी कर लेती हूँ। कविता, बिल्लियों की बातें, टेड का स्मार्ट की बिल्लियों पर लिखी कविता पढ़ना। मार्टी के यहाँ मार्टिनी, उसकी प्रिंटेड ब्लाउज़ और पैंट देखना जो वह सिल रही थी, मन में भी वैसी ही कुछ बनाने की सच्ची इच्छा। फिर भी उस समय मन में विद्रोह सा था। बच्चों के लिए कपड़े बनाने में रुचि। अगर मुझे येट्स और हॉपकिंस पसंद हैं, तो मैं उन्हें क्यों नहीं पढ़ पाती? मैं

उन्हें न देखकर खुद को क्यों सज़ा देती हूँ? मुझे लगता है मैं अंग्रेज़ी में पीएचडी करूँगी और कविता पढ़ाऊँगी।
मैंने आर.बी. से विक्टोरियन युग की उन महिलाओं के बारे में भी बात की जो पुरुषों से डरती थीं: पुरुष महिलाओं को बुद्धिहीन वस्तु समझते हैं: मैंने कई प्रेम कहानियों का अंत इसी तरह होते देखा है, एक महिला का व्यर्थ होना, उन्हें विश्वास नहीं होता कि विवाह तब तक सफल हो सकता है जब तक महिला नौकरानी, दासी, नर्स बनकर अपनी बुद्धि न खो दे। अल्सर: निर्भरता की इच्छा और निर्भरता को गलत समझना: आप भोजन (मां का दूध), निर्भरता को अस्वीकार करते हैं, और फिर भी बीमार होकर निर्भरता प्राप्त करते हैं: इसके लिए अल्सर जिम्मेदार है, आप नहीं।
खुशी कहाँ है? मेंढकों में खुशी, न कि लोगों द्वारा मेरी मेंढक कविता को देखने के विचार में। मुझे खुद को क्यों दंडित करना चाहिए, या खुद को बचाना चाहिए, यह दिखावा करके कि मैं मूर्ख हूँ और महसूस नहीं कर सकती? (वह लानत इलेक्ट्रीशियन घर को काट रहा है।) क्या गर्भावस्था किसी तरह की शांति लाएगी? वह कहती है, अगर मैंने अभी इससे छुटकारा नहीं पाया, तो शायद मुझे अपने पहले बच्चे के बाद अवसाद हो जाएगा...
अनैतिक यौन संबंध: मेरा चतुर, टालमटोल भरा, आत्म-धोखा देने वाला स्पष्टीकरण: मुझे स्नेह थोड़ा-थोड़ा करके देना पड़ता था ताकि वह स्वीकार किया जा सके, सारा स्नेह एक ही व्यक्ति को नहीं देना पड़ता था, जो उसे सहन न कर सके। बहुत अजीब। इस बात का खंडन यह तथ्य करता है कि मुझे आर. [रिचर्ड सैसून] के साथ अपने संबंध के अलावा किसी और चीज़ में आनंद नहीं मिला, और जब तक यह संबंध चला, यह मेरे लिए एकनिष्ठ संबंध था। इसलिए मैं एक पुरुष की तरह बनने की कोशिश कर रही थी: किसी के साथ भी यौन संबंध बनाने या न बनाने

में सक्षम। मैंने बदला लिया। लेकिन वास्तव में मैं इसके लिए बनी ही नहीं थी। प्रदर्शनवाद के बारे में क्या? वेश्या, एक पुरुष-प्रधान स्त्री? सबके लिए?
वह [डॉ. बी.] मेरी प्रशंसा करती हैं, और मुझे उसकी बहुत प्यास लगती है: मैं खुद को बुरी तरह कोसती हूँ। मैं कितनी बुरी हालत में हूँ!
माँ आदि से क्या अपेक्षा करनी चाहिए, उसे समझना, स्वीकार करना और उससे निपटना सीखना। इसके लिए मुझमें आत्मनिर्भरता और पहचान की भावना होनी चाहिए, जो मुझमें नहीं है। यही मुख्य समस्या है… मैंने पुरुषों से नफरत की है क्योंकि मुझे लगता था कि वे शारीरिक रूप से आवश्यक हैं: उनसे नफरत इसलिए की क्योंकि वे अपने रवैये से मुझे नीचा दिखाते थे: महिलाओं को सोचना नहीं चाहिए, बेवफा नहीं होना चाहिए (लेकिन उनके पति हो सकते हैं), उन्हें घर पर रहना चाहिए, खाना बनाना चाहिए, कपड़े धोना चाहिए। कई पुरुषों को ऐसी ही महिला की ज़रूरत होती है। केवल कमज़ोर पुरुषों को ही इसकी ज़रूरत नहीं होती, इसलिए कई मज़बूत महिलाएं कमज़ोर पुरुषों से शादी कर लेती हैं, ताकि बच्चे पैदा कर सकें और अपनी मनचाही ज़िंदगी जी सकें। अगर मुझे कभी कहानी, उपन्यास लिखना आ जाए, जिससे मैं अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकूँ, तो मैं निराश नहीं होऊँगी। अगर लेखन भावनाओं को व्यक्त करने का ज़रिया नहीं है, तो फिर क्या है?…
कल खुशी का अनुभव हुआ, लेकिन जल्द ही वह खुशी धूमिल हो गई। उपसंहार: मैं अय्यूब की पुस्तक पढ़ रहा हूँ: उससे बहुत शांति मिलती है। बाइबल भी पढूंगा: प्रतीकात्मक अर्थ, भले ही उसमें नैतिक, ईश्वर-संरचित ब्रह्मांड की मान्यता न हो। क्या ऐसे जीना चाहिए जैसे कि वह मौजूद हो? एक बेहतरीन उपाय।

मैं टेड को अस्वीकृति के बारे में नहीं बताऊँगी: मैं अपनी उदासी को ज़ाहिर नहीं करूँगी: यह एक तरह की छूट होगी। वह परेशान हो जाता है क्योंकि मैं परेशान हूँ, और फिर मुझे उसकी परेशानी पर बुरा लगता है, और यह सिलसिला चलता रहता है। मैं चुपचाप इसे सोमवार को फिर से भेज दूँगी...
बुधवार, 20 जनवरी, 1959। आज सुबह अजीब सी शांति छाई हुई है: चारों ओर धूसर और भीगा हुआ सा माहौल है। हमारे घर में एक नई बिल्ली आई है, जिसकी ज़रूरतें और म्याऊं अब हमारी चेतना का हिस्सा बन गई हैं। मैंने उसे बेडरूम में बंद करने की कोशिश की, लेकिन वह रोती ही रही। उसे इंसानों का प्यार बहुत पसंद है, वह हमारे साथ बिस्तर पर आने के लिए रोती रहती है। एक छोटी सी बिल्ली, जो अब नीली आँखों से ऊंघती हुई सोफे पर लेटी है। चंचल, साहसी, जिसका नाम सैफो है…
एलिज़ाबेथ हार्डविक और रॉबर्ट लोवेल के साथ एक पल: वो आकर्षक और थोड़ी भावुक, अपनी उस साधारण आयरिश नौकरानी की नकल करती हुई, जिसे उन्होंने आखिरकार जाने दिया है; लोवेल जाने से पहले उसे प्यार से चूमते हैं, कहते हैं कि उन्हें देर हो जाएगी, और एक समर्पित पति का सारा स्नेह दिखाते हैं। लोवेल डायलन थॉमस की कहानियाँ सुनाते हैं, आयोवा के दो गंजे आदमियों की, थॉमस दोनों के सिर पर हाथ रखते हुए कहते हैं: मैं तुम दोनों को पहचान सकता हूँ क्योंकि एक चश्मा पहनता है, एक अच्छा आदमी है और दूसरा सूखा गोबर। लोवेल की धीमी फुसफुसाहट और तिरछी नज़र। पीटर ब्रूक्स, उनका लंबा, झुर्रियों वाला, कोमल, दयालु, आकर्षक चेहरा, कभी इधर तो कभी उधर, घबराहट से भरा हुआ: उनकी नीली आँखों वाली, रूठी हुई गोरी बैले डांसर पत्नी, गर्टा के., उनसे (स्पष्ट रूप से, हार्डविक से) कहती हैं, "मैंने सुना है कि मेरे बाद तुम

कैम्ब्रिज की सबसे बड़ी बदतमीज़ हो।" लोवेल: "तुम्हें उससे कहना चाहिए: तुम शेखी बघार रही हो।"
इस सप्ताहांत मैंने अपनी दादी पर एक कविता पूरी की, जिसका शीर्षक है "पॉइंट शर्ली, रिविजिटेड"। सख्त औपचारिक संरचना के बावजूद, यह कविता मुझे बेहद प्रभावशाली और मार्मिक लगी। भावपूर्ण। नीरस नहीं। बारिश से भरी एक सुखद दोपहर मैंने पुस्तकालय में बिताई, एस्थर की रात्रि प्राणियों पर आधारित पुस्तक के लिए बकरियों को चूसने वाले पक्षियों पर कविता लिखने में। मेंढकों पर लिखी गई कविताओं की तुलना में यह कहीं अधिक गहन और रुचिकर विषय है। मेरे पास इस पक्षी पर लिखे गए एक सॉनेट की आठ पंक्तियाँ हैं, जो अनुप्रास अलंकार से भरपूर और रंगीन हैं। आज सुबह समस्या इसके षट्कोण को लिखने में है।
मुझे अजीब सी खुशी महसूस हो रही है। वर्तमान का आनंद ऐसे लेना जैसे मैंने कभी जीवन जिया ही न हो और कल मर जाऊँगा, न कि "कल की चिंता मत करो, बीते हुए कल की चिंता मत करो, आज की चिंता मत करो।" शांति का रहस्य: पल की सच्ची आराधना। विडंबना यह है कि अधिकांश लोगों के लिए यह स्वाभाविक होता है...
… मैं बेवजह की समस्याएँ खड़ी कर देती हूँ। मुझे वर्तमान समय का कोई सम्मान नहीं है। कल: आर.बी. से पूछूँगी कि मुझे समस्या क्यों होनी चाहिए। वह देर से क्यों आई? मैं खुद को बचाने के लिए “दूसरे लोगों” के बारे में क्या छुपा रही हूँ? मैं दूसरों से इतनी ईर्ष्या क्यों करती हूँ? मैं तो मैं हूँ, और इन चिमनियों पर बारिश कितनी प्यारी लग रही है…
हमने इंग्लैंड में रहने का फैसला किया है। मैं सच में यही चाहती हूँ। टेड वहाँ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेगा। मैं एक फ्रिज और एक अच्छे दंत चिकित्सक की माँग करूँगी, लेकिन मुझे यह जगह

बहुत पसंद है। उम्मीद है कि लंदन से कुछ ही दूरी पर ग्रामीण इलाके में एक बड़ा, शांत स्थान मिल जाए, जहाँ मैं काम कर सकूँ। मैं ऐसा करना बहुत पसंद करूँगी। मैं लेसिंग और मर्डोक के उपन्यास पढ़ूँगी, साथ ही बियांका वैन ऑर्डन के भी। कभी-कभी जीवन बहुत ही सुखद और सुकून भरा लगता है। और फिर मैं अपनी आलस के लिए खुद को कोसती हूँ। पीएचडी न करने या ए.सी.आर. की तरह तीसरी किताब न लिखने या चार बच्चे और एक पेशा न होने के लिए, या इस या उस के लिए। सब बेतुका है। चिंता में मैं कुछ नहीं करती।
आनंद: आनंद प्रकट करो और मजे करो: तभी दूसरे भी आनंदित होंगे। कड़वाहट ही एकमात्र पाप है। और साथ ही सर्वव्यापी आलस्य भी। मंगलवार, 27 जनवरी… नव वर्ष का एक महीना बीत गया। आज सुबह विल्बर और रिच को पढ़ा। विल्बर एक सौम्य और सुखद रचना है, एक ताज़गी भरी अभिव्यक्ति और असीम सुंदरता से भरा चित्रण, सब कुछ मधुर, शुद्ध, स्पष्ट और अद्भुत, एक उस्ताद जिसमें सूक्ष्म मार्सेल है। इसके बाद रॉबर्ट लोवेल ऐसे लगते हैं जैसे किसी बहुत ही मीठी डिनर वाइन या डेज़र्ट वाइन के बाद तेज़, चुभने वाली ब्रांडी।
मैं डॉ. बी. से अपने छोटेपन के बारे में बात करती हूँ, मानो मैं कोई बौनी हूँ। मैंने कल बाल कटवाने और परमानेंट करवाने का अपॉइंटमेंट लिया था, लेकिन फिर उसे कैंसिल कर दिया। एक पेशेवर हेयरड्रेसर पर अपनी मर्ज़ी और इच्छा थोपने में असमर्थ... मैं काम नहीं कर रही, बस कविताएँ लिखने के अपने तरीके बदलने के लिए पढ़ाई कर रही हूँ। अपने काम से घृणा है। मेरी कविताएँ एक ही दिशा में, एक ही आयाम में शुरू होती हैं, और कभी आश्चर्यचकित, चौंकाती या यहाँ तक कि प्रसन्न भी नहीं करतीं। दुनिया पूरी तरह

से अलग-थलग पड़ जाती है। दुनिया की आलोचना में एक बात तो थी: बहुत ज़्यादा सपने, अंधेरी दुनियाएँ।
डॉ. बी. से पूछना है कि मैं अपने परिपक्व अहंकार को बचपन की दबी हुई भावनाओं और झकझोर देने वाली ईर्ष्याओं से कैसे अलग करूँ। जर्मन और इतालवी सीखूँ। आनंद। इस जीवन में कितने लोग और कितना कुछ केवल "एक अच्छा सौदा" चाहते हैं? स्वार्थवश ताश के पत्तों को सही, पर्याप्त रूप से आरामदायक संयोजन में फेरबदल करना। मुझे डर है कि अगर मैं खुश रहूँगी तो आलसी हो जाऊँगी, मुझे डर है कि अगर मैं कुछ काम कर रही हूँ तो खुद को धोखा दे रही हूँ। मैं इतनी छोटी हूँ कि मेरी बाकी सभी पहचानें मुझे डराती हैं। हमेशा सपने देखने वाली। रॉबर्ट लोवेल, उनकी पत्नी और फासेट परिवार इस हफ्ते रात के खाने पर आ रहे हैं। मैं सोच रही हूँ कि उन सबको एक ही थाली में क्या परोसूँ। लेमन मेरिंग्यू पाई। पुस्तकालय में हार्डविक की कहानियाँ पढ़ूँगी। मैं उनकी सफलता तो चाहती हूँ, लेकिन उनकी भावना या मेहनत के बिना...
बुधवार, 28 जनवरी। आसमान एकदम साफ था, नीचे छत और चिमनी के टेढ़े-मेढ़े कोनों पर बर्फ की बारीक कटी हुई झाड़ियाँ जमी थीं, और नदी भी सफेद थी। बाईं ओर की इमारत के पीछे सूरज चमक रहा था, एक गुंबददार मीनार से सुनहरी रोशनी निकल रही थी जिसका नाम मुझे नहीं पता। काश मैं यहाँ हर दिन एक पन्ना, आधा पन्ना ही लिख पाता और अपनी खुशियों को गिनता रहता और धीरे-धीरे एक बेहतर जीवन की ओर बढ़ता रहता।
कल सुबह भले ही थोड़ी खराब रही, लेकिन अजीब सी खुशी महसूस हुई। मुझे लगता है कि मैंने उस दिन कुछ नहीं किया सिवाय एक बेतुकी कविता लिखने के, जो एक विशाल महासागर के बारे में है और प्रतीकात्मक रूपक की आड़ में किसी भी बात को सीधे तौर पर कहने

से बचती है। आज मैंने ए. सी. रिच की कविताएँ पढ़ीं और आधे घंटे में ही उनकी कविता संग्रह खत्म कर दी: वे मुझे प्रेरित करती हैं: वे सरल हैं, फिर भी पेशेवर लगती हैं, खामियों और किसी बात की ओर भावहीन इशारों से भरी हैं, लेकिन उनमें "दर्शन" की भावना भरी है, जिसकी मुझे ज़रूरत है। अचानक कैम्ब्रिज और बेनीडोर्म पर कविताओं की एक श्रृंखला लिखने की इच्छा हुई। क्या "द न्यू यॉर्कर शैली" कहना असभ्य है? इसका कुछ मतलब तो है।
कल दोपहर शर्ली के साथ बेहद खुशनुमा समय बिताया। मेट्रो से बाहर गए। दिन धुंध भरा था, बर्फ से ढके आसमान में धुआँ सफ़ेद दिख रहा था, और लौटते समय धुंधली शाम के आसमान में धुआँ काला-भूरा हो गया। ऊनी कपड़ों का बंडल लेकर गई और बुनी हुई चटाई बनाने लगी: मोटे ऊन के रेशों को काटना, कपड़े से जूझना और बुनाई शुरू करना बेहद आनंददायक था। बच्चों और प्रजनन क्षमता के बारे में सहजता से बातें कीं, बेहद खुलकर और सुखद तरीके से। हमेशा से मेरा मन करता था कि मैं अपने हाथों से कुछ बनाऊं, जहाँ दूसरी औरतें सिलाई, बुनाई और कढ़ाई करती हैं, और मुझे लगता है कि यही मेरा शौक है। जॉन ऊँची कुर्सी पर बैठा था, शर्ली ने उसे खाना खिलाया, नहलाया और सुलाया, बहुत आसानी से। वह मुझसे प्यार कर रहा था, मुझे गले लगा रहा था और अपना माथा मेरे माथे से रगड़ रहा था। मुझे लगा जैसे मैं जवानी के दिनों में जी रही हूँ। कितनी अजीब बात है, अब मुझे पुरुषों में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं है, सिर्फ़ औरतें और औरतों की बातें। ऐसा लगता है जैसे टेड पुरुषों की दुनिया में मेरा प्रतिनिधि हो। मुझे समाजशास्त्र पढ़ना चाहिए, बच्चों पर स्पॉक की किताब पढ़नी चाहिए। सारे सवालों के जवाब मिल गए।

क्या मैं कविताएँ लिख सकता हूँ? एक प्रकार के संक्रामक प्रभाव से?
घर आकर मैंने खुशी-खुशी जल्दी से हैमबर्गर बनाया। कल लोवेल्स आ रहे हैं और उसके लिए सारी सफाई और तैयारी मैंने आज रात के लिए टाल दी। अगले हफ्ते बाल कटवाने ही हैं। प्रतीकात्मक अर्थ: होंठ चबाने वाली दब्बू बच्ची बनने की प्रवृत्ति से बाहर निकलो। बाथरोब, चप्पल और नाइटगाउन पहनो और नारीत्व पर काम करो... बिल्ली अब ज़्यादा काट रही है, लेकिन आज सुबह मैकेरल मछली खाने के बाद बड़े प्यार से मेरे कंधे पर चढ़ गई और मुझसे लिपट गई। कविताएँ लिखने की कोशिश करनी चाहिए। टेड को कोई भी कविता मत दिखाना। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं सुन्न पड़ गई हूँ: उसकी राय मेरे लिए बहुत मायने रखती है। उसे बैल वाली कविता नहीं दिखाई: एक छोटी सी जीत। साथ ही, खुश रहने की आदत डालनी चाहिए। इससे भी फायदा होगा। "फ्रॉग ऑटम" के लिए द नेशन से 10 डॉलर का चेक मिला। स्वागत है। इंग्लैंड में रहने से खुश हूँ: चैनल पार करने का टिकट मिलते ही यूरोप जाना: मैं सच में ऐसा चाहती हूँ। कितना अजीब है: पाँच-दस साल पहले तो मैं यह सोचकर हैरान रह जाती। और खुश भी। आर.बी. का भरपूर इस्तेमाल करना चाहिए।
शुक्रवार, 13 फरवरी, 1959। हफ़्तों बाद पहली बार यहाँ लिखने की हिम्मत हुई। ज़ुकाम हो गया है, बहुत तकलीफदेह। कल आर.बी. के साथ खूब रोई, उदासी छाई रही। उसने कहा कि जब तबीयत इतनी खराब होती है तो काम भी ठीक से नहीं कर पाती: मुझे लगता है कि मैं ठीक हो जाऊंगी, फिर लगता है कि मैं ठीक नहीं हो सकती; मुझे सज़ा मिलनी चाहिए। कैम्ब्रिज में कहीं भी, 10 दिनों के अंदर नौकरी ढूंढो। किताबों की दुकानों और डिज़ाइन रिसर्च में काम करने का सपना देखती हूँ। ये तो कमाल की बात होगी…

हम मूर्ख हैं। अलार्म बजता है, हम नहाते हैं और उठते हैं। सुबह सात से बारह बजे तक के पाँच घंटे ही हमें लिखने के लिए चाहिए। वह कहती है: तुम लिखोगे नहीं। यह सच है, ऐसा नहीं कि मैं लिख नहीं सकता, हालाँकि मैं कहता हूँ कि मैं लिख नहीं सकता।
मैं फॉकनर को पढ़ रहा हूँ। आखिरकार। सैंक्चुअरी और कहानियों और अंशों का संग्रह शुरू कर रहा हूँ। पढ़ने में पूरी तरह मग्न हो जाऊँगा। बिल्कुल त्रुटिहीन वर्णन शैली: और भरपूर वर्णन: कुत्ते, उनकी गंध, संभोग और आतंक। दृश्य। वेश्यालय के अंदरूनी हिस्से। रंग, हास्य और सबसे बढ़कर तेज़ गति वाली कहानी: भुट्टे से बलात्कार, यौन विकृति, मनुष्यों को गोली मारकर ज़िंदा जलाना, सब कुछ समाहित है। और मेरे छोटे-छोटे प्रसंग कहाँ हैं, जूतों से बहता खून?
गुरुवार, 19 फ़रवरी। उत्तरी हवा चल रही है। धूसर और बर्फ़ के टुकड़े अचानक सफेद कागज़ के टुकड़ों की तरह उड़ रहे हैं। ऐन हॉपकिंस नाम की सफेद और काले धब्बों वाली नसबंदी की हुई बिल्ली छोटे-छोटे डिब्बों में रहने की कोशिश कर रही है, आख़िरकार कामयाब हो जाती है और अपना सिर छिपा लेती है, मानो किसी बिल्ली के लिए यह भ्रूण जैसी मुद्रा हो। फिर वह अपने लाल चादर के नीचे रेंगकर बिस्तर के बीचोंबीच लेट जाती है, एक बेजान लाल पिंड की तरह। अजीब: जन्म से ही उड़ने वाली गिलहरी जैसे पंख और पैरों से निकले हुए बहुत सारे अंगूठे।
एक दुखद स्थिति। मैंने ग्रैनचेस्टर पर विशुद्ध वर्णन से भरी एक कविता लिखी। मुझे दर्शनशास्त्र को समझना ही होगा। जब तक मैं ऐसा नहीं करता, मैं ए.सी.आर. से पीछे रह जाऊँगा। हताशा का उग्र प्रकोप, कोई अवरोध मुझे अपने वास्तविक भावों को लिखने से रोक रहा है। मैंने "सुसाइड ऑफ एग रॉक" नामक एक कविता शुरू की, लेकिन

इतनी कठोर छंद रचना कर दी कि सारी शक्ति खो गई: मैं इतना मग्न हो गया कि मुझे यह भी नहीं दिख रहा था कि मैं क्या कर रहा हूँ।
भावनाओं का सुन्न पड़ जाना। मुझे उपन्यास लिखने से रोक रहा है। काम के लिए खुद को भूल जाना, बजाय इसके कि काम को ही अपने अस्तित्व का कारण और अपना स्वरूप बना लूँ।
इस पूरे सप्ताह डिनर और पार्टियाँ थीं, जिन्हें अब से छोड़ना मुझे अच्छा लग रहा है। विल्बर को पढ़ते हुए सुना: अजीब बात है, मैं बहुत ऊब गया था। मुझे उनकी कविताएँ खुद पढ़ने में ज़्यादा अच्छी लगती हैं: उनकी आवाज़ नीरस है, मानो वे श्रोताओं के साथ कविता पर ही मज़ाक कर रहे हों, माइंड केव-बैट और लैमार्क पर उनकी चतुर कविताएँ महज़ प्रतिभापूर्ण हैं। अठारहवीं सदी के तौर-तरीके। स्टेनली कुनिट्ज़, अपनी तीन-चार बेहतरीन कविताओं में कहीं ज़्यादा उत्कृष्ट हैं। स्टेनली को फोर्ड फाउंडेशन से दो साल तक अपनी मर्ज़ी से, जहाँ चाहे, लिखने के लिए 15,000 डॉलर मिले हैं। हमें गुगेनहाइम से कोई खबर नहीं मिल रही है। मैं यहाँ बेसुध बैठा हूँ, मानो एक बच्चा और एक करियर दोनों चाहता हूँ, लेकिन पता नहीं क्या, अगर लेखन नहीं तो। मुझे कौन सा आंतरिक निर्णय लेना होगा, कौन सा आंतरिक कत्ल या जेल तोड़ना होगा, अगर मैं लेखन में अपनी सच्ची गहरी आवाज़ से बोलना चाहता हूँ (जिसकी वर्तनी में मैं किसी तरह उलझ जाता हूँ) और शब्दों के इस बेजान, मूक आवरण के पीछे भावनाओं के इस अवरोध को महसूस नहीं करना चाहता। द स्पेक्टेटर द्वारा मेरी दो छोटी कविताओं को प्रकाशित करने से कुछ हद तक खुशी मिली। मुझे लगता है कि अब सफलता मिलना उत्साहजनक होगा। लेकिन सबसे ज़्यादा उत्साहजनक है वो एहसास, जैसे मैं अपने काँच के खोल से बाहर निकल रही हूँ। मुझे किस बात का डर है? बुढ़ापे में मर जाना और बिना कोई नाम कमाए मर जाना?

स्मिथ कॉलेज में अपनी स्वाभाविक प्रसिद्धि से दूर रहना मेरे लिए अच्छा है। मैं इंग्लैंड में रहने के लिए उत्सुक हूँ: उम्मीद है कि मैं लंदन के किसी साप्ताहिक अखबार में काम कर सकूँ, महिलाओं की पत्रिकाओं में लेख लिख सकूँ, शायद। यहाँ से इंग्लैंड बहुत छोटा और आसानी से समा जाने वाला लगता है… बुधवार, 25 फ़रवरी। हमारी मुलाकात की तीसरी सालगिरह। कल रात एक छोटी-सी बात पर बेवजह की लड़ाई हुई, हमारा हमेशा वाला उदास माहौल। मैं सारा दोष खुद पर लेने को तैयार हूँ। आज का दिन एक अभिशाप जैसा है। शुद्ध, निर्मल और सृजन के दिन के लिए तैयार, सभी छतों पर बर्फ़ जैसी सफ़ेद चादर, उस पर सूरज की रोशनी और आसमान एक ऊँचे, साफ़ नीले रंग के सुंदर जार जैसा।
भयानक सपने। पिछली रात का सपना भूल जाओ। उसमें गैरी हॉप्ट था, बोलने से इनकार कर रहा था और कठोर, आरोप लगाने वाले और पीले चेहरे के साथ ऐसे गुजर रहा था जैसे उसे किसी बुरी चीज की गंध आ रही हो। पिछली रात, कुछ लोग वेशभूषा में थे, चमकीले कमरबंद, निकर और सफेद ब्लाउज पहने हुए, उन्हें सजा सुनाई गई थी, लेकिन उस पर अमल नहीं किया गया था, और अचानक चालीस साल बाद वे कतार में खड़े थे, मैंने उन्हें दूर से छोटा-छोटा देखा, और एक आदमी जिसकी पीठ मेरी तरफ थी और हाथ में एक बड़ी तलवार थी, कतार में आगे बढ़ा और उनके घुटनों से टांगें काट रहा था, जिसके बाद वे लोग ताश के पत्तों की तरह गिर पड़े, उनकी टांगों के ठूंठ और निचले पैर इधर-उधर बिखरे हुए थे। मुझे लगता है कि उन्हें अपनी टांगों के ठूंठों पर अपनी कब्र खोदनी थी। यह बहुत ज्यादा है। दुनिया बहुत बड़ी है, बहुत बड़ी, बहुत बड़ी। मुझे अपने जीवन में अर्थ और उत्पादकता महसूस करने की जरूरत है।

मुझे लगता है कि पिछले हफ्ते डॉ. बी. के साथ कुछ हद तक बात बन पाई। हार्वर्ड में वुड्रो विल्सन के उस भयानक साक्षात्कार का फिर से ज़िक्र हुआ। मुझे सबसे ज़्यादा डर असफलता का है, और यही बात मुझे लिखने से रोक रही है क्योंकि तब मुझे अपनी असफलता का दोष अपने लेखन पर नहीं डालना पड़ेगा: यह एक आखिरी कोशिश है, लेकिन पूरी तरह से आखिरी नहीं—आखिरी तो तब होती है जब शब्द मिट जाते हैं और अक्षर धीरे-धीरे गायब हो जाते हैं। यह जानते हुए, मैं काम पर कैसे जाऊं? क्या मैं इस ज्ञान को अपने भीतर के डर को समझा पाऊं?
टेड का विचार अच्छा है। मैंने पाँच विषय सूचीबद्ध किए और एग रॉक से आगे नहीं बढ़ पाया। एक भयानक कविता लिखी, जिसमें पंक्तियों की लंबाई बिल्कुल अलग-अलग थी और कोई भावना नहीं थी, जबकि दृश्य भावनाओं से भरा हुआ था। फिर उसे दोबारा लिखा, इस बार बेहतर: कुछ हद तक मनचाहा परिणाम मिला। खींच लिया। साफ-सुथरे, सहज ए.सी.आर.- जैसे गीतात्मकता की ओर, दुनिया के सजीव वर्णन की ओर। अब मेरा मुख्य लक्ष्य वास्तविक चीजों से शुरुआत करना है: वास्तविक भावनाओं से, और शिशु देवताओं, समुद्र के बूढ़े पुरुषों, पतले लोगों, शूरवीरों, चंद्र-माताओं, पागल भावुक लोगों, लोरेलाई, संन्यासियों को छोड़कर, मुझमें, टेड में, दोस्तों में, माँ, भाई, पिता और परिवार में प्रवेश करना है। वास्तविक दुनिया में। वास्तविक परिस्थितियों में, जिनके पीछे महान देवता रक्त, वासना और मृत्यु का नाटक खेलते हैं।
कल लोवेल की क्लास बहुत निराशाजनक रही: मैंने कुछ गोलमोल बातें कहीं, और कुछ बी.यू. के छात्रों ने ऐसी बेकार की बातें कहीं जो मैं अपने स्मिथ विश्वविद्यालय के छात्रों को बिना चुनौती दिए बोलने भी नहीं देता। लोवेल अपने कुछ हद तक स्त्रीत्वपूर्ण और

बेअसर अंदाज़ में अच्छा था। मुझे लगा जैसे मैं पीछे चला गया हूँ। सबसे ज़रूरी बात है दूसरे छात्रों की कविताएँ सुनना और मेरी कविता पर उसकी प्रतिक्रिया। मुझे एक बाहरी व्यक्ति की ज़रूरत है: ऐसा लगता है जैसे कोई एकांतवासी जीवन रक्षक उपदेश लेकर दुनिया में आता है और पाता है कि इस बीच हर किसी ने एक नई भाषा सीख ली है और उसकी एक भी बात समझ नहीं पा रहा है।
जब मैं लेडीज़ होम जर्नल के लिए अपनी पहली कहानी लिखूंगी, तो मैं एक कदम आगे बढ़ जाऊंगी। इसके लिए मुझे कोई संभ्रांत माँ होने की ज़रूरत भी नहीं है। मैं इन्हें इसलिए नहीं लिखती क्योंकि अस्वीकृति से बचने का यही बेहतर तरीका है—फिर मुझे जोखिम में पड़ने का मौका ही नहीं मिलता…
काश, मैं गद्य में लिख पाता।
शनिवार, 28 फ़रवरी… इस सप्ताह आर.बी. जाने से पहले का बुरा सपना: मेट्रो में ट्रेन खराब हो गई, नीली चिंगारियों की आग लग गई, गलत पटरी पर चढ़ गई, टेड के साथ पुरानी कार में जा रही थी, बर्फ के गहरे ढेर में जा घुसी और कार चकनाचूर हो गई, 11 बजे के बाद किसी तरह फोन तक पहुंची, उसकी नौकरानी ने जवाब दिया, और मुझे लगा कि वह घर पर है, या तो उसे पता था कि ऐसा होगा और इसलिए वह बाहर नहीं आई, या फिर वह दिखावा कर रही थी कि वह घर पर नहीं है। उससे मिलने के बाद वापस आते समय नीले जूते खरीदे। कार्लिस्ले के अस्पताल में हुई घटना को सारी भावनाओं के साथ फिर से महसूस किया। एक बच्चे में जानलेवा भावनाओं को तर्क से नहीं संभाला जा सकता, एक वयस्क में संभाला जा सकता है।
कल मैंने टॉल्स्टॉय की शानदार रचना 'इवान इल्यिच की मृत्यु' के बाद फॉल्कनर को पढ़ा, जिसमें एक क्रूर इंसान के मरने के डर और खौफ का मार्मिक चित्रण किया गया है। क्या इवान को अंत में, एक पल

में, यह एहसास होता है कि उसका जीवन पूरी तरह से गलत था, उन सभी पहलुओं में लगातार गिरावट आई जिन्हें वह सबसे सफल मानता था, क्या यह किसी भी मायने में मुक्तिदायक है? वह शांति से मरता है, या कम से कम, डर के अचानक कम होने और प्रकाश के आगमन के साथ। लेकिन क्या इस पीड़ा का उद्देश्य यही था? मुझे नहीं लगता। आवाज जवाब देती है, पीड़ा इसलिए है क्योंकि वह है...
सोमवार, 9 मार्च। आर.बी. के साथ एक उदास सत्र के बाद, काफी राहत मिली। मौसम अच्छा था, अच्छी खबरें मिलीं। अगर मैं रोना बंद नहीं करूंगी तो वो मुझे बंधवा देगी। ट्रॉली में बैठे-बैठे ही मुझे एक कविता का विचार आया, मेरे चेहरे की बदहाली के कारण: जिसका नाम है "बर्बाद चेहरा"। एक पंक्ति भी सूझी। उसे लिख लिया और फिर एक षट्कोण की पाँच पंक्तियाँ। कल विन्थ्रोप में एक सुहावनी दोपहर बिताकर लौटने के बाद पहली आठ पंक्तियाँ लिखीं। मुझे यह कविता अच्छी लगी—इसमें "सुसाइड ऑफ एग रॉक" जैसी स्पष्टता है। रोएथके की येट्स कविताओं की एक न्यू यॉर्कर शैली में लिखी गई, लेकिन रोमांटिक, पंचपर्ण कविता भी पूरी की। थोड़ी कमजोर है, मुझे नहीं लगता कि यह पुस्तक में छपने लायक है, लेकिन मैं इसे द न्यू यॉर्कर को भेजूंगी और देखूंगी कि वे क्या सोचते हैं। विन्थ्रोप में आसमान बिल्कुल साफ था। मैं अपने पिता की कब्र पर गया, जो बहुत ही उदास करने वाला दृश्य था। गलियों से अलग तीन कब्रिस्तान, सभी पिछले पचास वर्षों में बने थे, भद्दे, कच्चे पत्थरों से बने, समाधियाँ एक-दूसरे से सटी हुई थीं, मानो मुर्दे किसी गरीबखाने में सिर से सिर मिलाकर सो रहे हों। तीसरे कब्रिस्तान में, एक समतल घास के मैदान पर, जहाँ से लकड़ी के मकानों की कतारों वाला एक पीला बंजर इलाका दिखाई देता था, मुझे वह सपाट पत्थर मिला जिस पर लिखा था, "ओटो ई. प्लाथ: 1885-1940,"

ठीक रास्ते के किनारे, जहाँ से लोग गुजरेंगे। मुझे ठगा हुआ महसूस हुआ। मेरा मन किया कि उन्हें खोदकर निकाल लूँ। यह साबित कर दूँ कि वे कभी थे और सचमुच मर चुके हैं। वे कितनी दूर जा चुके होंगे? न पेड़, न शांति, उनकी समाधि दूसरी तरफ शरीर से सटी हुई थी। थोड़ी देर में वहाँ से निकल गया। उस जगह को याद रखना अच्छा है...
लेखन के अलावा किसी और क्षेत्र में करियर बनाने की मेरी इच्छा है। लेखन को ही अपना एकमात्र लक्ष्य बनाना असंभव है, यह अक्सर नीरस हो जाता है। मैं तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन करना चाहती हूँ। पीएचडी की पढ़ाई, साप्ताहिक पत्रिकाओं के लिए रिपोर्टिंग करना या समीक्षा लिखना, ये सभी विषय मुझे अपनी ओर आकर्षित करते हैं। मुझे अपने दिमाग का इस्तेमाल दुनिया में करना है, न कि सिर्फ घर पर निजी कामों में।
तेज पेट दर्द, बेचैनी। अभी तो बस मासिक धर्म ही चल रहा है, लेकिन जी मिचलाने जैसी तकलीफ भी हो रही है। क्या मैं गर्भवती हूँ? लगता है इससे मेरा काम कुछ समय के लिए ठप्प हो जाएगा। काश मैं उपन्यास पढ़ पाती, या कम से कम लेडीज़ होम जर्नल की कहानियाँ। शायद कुछ अच्छी गर्भवती कविताएँ भी, अगर मुझे यकीन हो जाए कि मैं सच में गर्भवती हूँ।
शुक्रवार, 20 मार्च। कल का दिन बहुत ही बुरा था। सुबह छह बजे के आसपास बिल्ली की म्याऊं-म्याऊं से नींद खुली। पेट में दर्द हो रहा था। सोचा, शायद गर्भवती हो गई हूँ। पर नहीं, किस्मत ही खराब थी। 40 दिनों की उम्मीद के बाद, वही खून के दौरे और गर्भधारण में आई खलल। मैंने खुद को एक सुकून भरी शांति में डुबो रखा था और यह एक बड़ा झटका था... काश लगातार चार बार ऐसा होता। फिर सुस्ती छा जाती, और दिन भर पेट में दर्द होता रहता। डॉक्टर बी से बात करने

से कोई फायदा नहीं हो रहा। मुझे लगता है मैंने जानबूझकर खुद को इस दयनीय और लाचार स्थिति में डाल दिया है। अगले हफ्ते। अपने पिता के बारे में बात करने से क्या फायदा? शायद एक-दो दिन के लिए थोड़ी राहत मिल जाए, लेकिन खुद से बात करने से कोई समझ नहीं आती। मैं किस चीज को समझने की कोशिश कर रही हूँ? अगर मेरी भावनात्मक उथल-पुथल ही मेरी तकलीफ की जड़ है, तो मैं कैसे जानूँ कि वे क्या हैं और उनसे कैसे निपटना है? वह मुझे लिखने के लिए मजबूर नहीं कर सकती, या अगर मैं लिखती भी हूँ, तो अच्छा लिखने के लिए नहीं। वह मुझे मेरे कार्यों और उनके उद्देश्यों के बारे में और अधिक मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि दे सकती है। मैं वहाँ बुरी तरह पिछड़ जाता हूँ। मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर शायद मेरे भीतर ही हों, लेकिन मुझे उन्हें अपनी चेतना में लाने के लिए किसी उत्प्रेरक की आवश्यकता है...
मैं हर बात पर रो पड़ती हूँ। बस खुद को चिढ़ाने और शर्मिंदा करने के लिए। दो कविताएँ पूरी कीं, एक लंबी कविता, "इलेक्ट्रा ऑन अज़ेलिया पाथ" और "मेटाफ़ोर्स फॉर अ प्रेग्नेंट वुमन", व्यंग्यात्मक, नौ पंक्तियाँ, प्रत्येक में नौ शब्दांश। वे कभी परिपूर्ण नहीं होतीं, लेकिन मुझे लगता है कि उनमें कुछ खूबियाँ हैं। लोवेल की कक्षा में मेरी चार कविताओं की आलोचना हुई: अलंकारशास्त्र की आलोचना। उन्होंने मुझे ऐनी सेक्स्टन से मिलवाया, मेरे लिए सम्मान की बात है। खैर, आखिरकार। उनकी रचनाएँ बहुत अच्छी हैं, और वे और बेहतर होती जाती हैं, हालाँकि उनमें बहुत सी कमियाँ भी हैं।
इस भूरे रंग की पोनीटेल की जगह आकर्षक हेयरकट करवाने की इच्छा हो रही है। पक्का बाहर जाकर पुराने स्टाइल का पेज बॉय कट

करवाऊंगी। क्या पैसे की कमी मुझे रोक रही है? मुझे ठीक होना ही होगा...
लिखने से इनकार। मैं बस लिखता ही नहीं। सिवाय इन कुछ कविताओं के, जो पहले से कहीं ज़्यादा अच्छी और बेहतर होती जा रही हैं। मुझे अपने सामने एक ऐसी काल्पनिक दुनिया दिखाई देती है जहाँ सही मनोस्थिति बसी है। वो सहज, खुशनुमा जोश। हाय हाय। मैं निराशाओं में डूबा रहता हूँ...
आर.बी. के साथ कुछ गंभीर मुद्दों पर चर्चा हुई: अंधेरी और भयानक चीजों का सामना करना: विकृति और मृत्यु के वे सपने। अगर मैं सच में सोचता हूँ कि मैंने अपने पिता को मार डाला और उनके अंडकोष काट दिए, तो क्या विकृत और प्रताड़ित लोगों के मेरे सारे सपने उनके प्रति मेरे अपराधबोध के कारण हैं या मेरे लिए सजा के डर से उत्पन्न हुए हैं? और इनसे कैसे छुटकारा पाया जाए? इन्हें मेरे जीवन भर के लिए कैसे रोका जाए?
मेरे मन में उन कविताओं की कल्पना तो है जिन्हें मैं लिखना चाहता हूँ, लेकिन अभी तक लिख नहीं पाया हूँ। वे कब आएंगी?… गुरुवार, 23 अप्रैल। अप्रैल की तरह ही, वसंत ऋतु खुशखबरी लेकर आई है। मैं थका हुआ हूँ, क्योंकि दो सप्ताह तक गुगेनहाइम से पहले और बाद में सुस्ती के बाद मैं सुबह 7 बजे ही टेड के वर्क रूम से निकल गया था। हम पूरी तरह बदल गए हैं। बजट और यात्रा स्थल को लेकर हुई बहस और कुछ चूक के बाद, आखिरकार हमें मंज़ूरी मिल गई और हमने अधिकतम 5,000 डॉलर का भुगतान किया, जो हमें अविश्वसनीय रूप से बड़ी रकम लगती है। सितंबर और अक्टूबर में दो महीने के लिए यद्दो

l में जाने का निमंत्रण भी मिला, जिसे हमने पहले सांत्वना पुरस्कार समझा था। गुगेनहाइम दिवस: शुक्रवार, 10 अप्रैल।

कल ही मुझे द न्यू यॉर्कर से दूसरी बार स्वीकृति मिली: दो सुखद रचनाएँ: “वॉटर कलर ऑफ़ ग्रांटचेस्टर मीडोज़,” जिसे मैंने देहाती अंदाज़ में उनके लिए लिखा था, और “मैन इन ब्लैक,” मेरी किताब की एकमात्र “प्रेम” कविता, और “पुस्तक कविता” जिसे मैंने विन्थ्रोप की अपनी एक सफल यात्रा के दौरान एक महीने पहले ही लिखा था। मुझे अपने पिता की समाधि के साथ न्याय करना है। मैंने अपनी किताब से इलेक्ट्रा कविता को अस्वीकार कर दिया है। यह बहुत बनावटी और अलंकारिक है। ऐनी सेक्स्टन की किताब का एक अंश यहाँ उपयुक्त रहेगा। उनमें मेरी तरह कोई जकड़न नहीं है, उनकी भाषा में सहजता है और ईमानदारी है। मेरे पास मेरी 40 अचूक कविताएँ हैं। मुझे लगता है। और उनमें एक तरह का आनंद भी है। हालाँकि मैं और अधिक प्रभावशाली कविताएँ चाहता हूँ। स्मिथ की सभी कविताएँ निराशाजनक मृत्यु की कामनाएँ हैं। यहाँ की कविताएँ, चाहे कितनी भी नीरस हों (“कंपेनियनेबल इल्स,” “आउल”), उनमें एक जोश और जीवन का आनंद है…
मेरी कविता ["मैन इन ब्लैक"] में "गहरा काला" शब्द मेरे पिता की कब्र पर जाने से उत्पन्न एक प्रतिक्रिया हो सकती है।
आर.बी. के साथ लगातार काम किया: एक हफ्ते के अंतराल ने मुझे हिम्मत और गति दी: पिछली रात मैं पूरी तरह जागकर अपने अनुभवों और अब तक की स्थिति के बारे में सोचती रही। आत्महत्या के बारे में गहराई से सोचती रही: एक ऐसी उलझन जिसमें बहुत कुछ फंसा हुआ है... लेखन में अपनी नासमझी पर कैसे काबू पाऊं? दूसरों की रचनाएं पढ़ूं और गहराई से विचार करूं। अपनी जानी-पहचानी शैली से कभी बाहर न निकलूं।
मुझे लगता है: अमीर लोगों के लिए 'वुथरिंग हाइट्स' पर एक लेख। अपनी 'मॉनिटर' कविता में शब्द सुधारना है। 'द बेड बुक' के लिए एक

कविता लिखनी है। अस्पताल पर एक कहानी। स्टारबक और सेक्स्टन के प्रेम प्रसंग के बारे में। एक दोहरी कहानी, "अगस्त लाइटहिल और दूसरी औरत।" ... यहाँ डरावनी कहानी है। और सारे विवरण। कहानियों में जीवन के अंशों को उतारो, फिर उपन्यास अपने आप आ जाएगा। एक रास्ता। जब तक मैं याड्डो तक पहुँचूँ, तीन अच्छी प्रकाशित होने लायक कहानियाँ और 'द बेड बुक' पूरी हो चुकी होंगी!
शनिवार, 25 अप्रैल। मौसम साफ़ था, हमेशा की तरह जल्दी उठ गया, लेकिन थका हुआ था, इतना थका हुआ कि लिख भी नहीं पा रहा था, इसलिए विथेंस [यॉर्कशायर] पर निबंध को अंतिम रूप देने में लगा रहा, लेकिन शीर्षक टाइप करते समय विथेंस या विथिंस की वर्तनी न जानने के कारण रुक गया।
रविवार, 3 मई, 1959… कविता संग्रह के पन्ने दोबारा टाइप किए, जो मुझे इस सप्ताह हॉटन मिफ्लिन को जमा करना था। लेकिन ए.एस. मुझसे आगे हैं, अपने प्रेमी जी.एस. के साथ, जो उनके और उन दोनों के लिए न्यू यॉर्कर में कविताएँ लिख रहे हैं: ऐसा लगा जैसे रिट्ज़ में बिताई हमारी तीन मार्टिनी वाली दोपहरें टूट रही हों। पिंकनी स्थित जी. के एकांत और कंजूस कमरे में वह यादगार दोपहर: “तुम्हें हमें छोड़कर नहीं जाना चाहिए था”: ज़िम्मेदारी किसकी हो? मैं चली गई, फिर भी ऐसा लगा जैसे मैं एक पतली मोमबत्ती की लौ के चारों ओर मंडराने वाला भूरा पंख वाला पतंगा हूँ, खिंचा चला जा रहा हूँ। वह सब खत्म हो गया। जैसा कि [डब्ल्यू. डी.] स्नोडग्रास कहते।
मैंने कल एक किताब लिखी। शायद अगले महीने मैं इस पर एक परिशिष्ट लिखूँ और बताऊँ कि मैंने इसे बेच दिया है। हाँ, आधे साल की टालमटोल, मन में उठने वाले बुरे भाव और निष्क्रियता के बाद, कल सुबह मैंने इस पर काम शुरू किया। मेरे दिमाग में इधर-उधर कुछ

पंक्तियाँ थीं, और विल और सू दोनों ही एकदम वास्तविक लग रहे थे, और बस! मैंने बिस्तरों की एक लंबी, बहुत ही आकर्षक, अनोखी और अमूर्त सूची में से दस बिस्तर चुने, और एक बार शुरू करने के बाद मैं तब तक लिखता रहा जब तक मैंने इसे टाइप करके अटलांटिक प्रेस को भेज नहीं दिया (केवल 8 डबल-स्पेस वाले पृष्ठ!)। 'द बेड बुक', सिल्विया प्लाथ द्वारा। अजीब बात है कि इसे करने से मुझे कितनी आज़ादी मिली। यह एक चमगादड़ की तरह था, एक बुरे अंतरात्मा का चमगादड़ जो मेरे दिमाग में मंडरा रहा था। अगर मैं इसे नहीं करता तो मैं कुछ भी नहीं कर पाता। एक तैयार अच्छा विचार और एक संपादक का यह कहना कि वह इस विचार को अपने दिमाग से निकाल नहीं पा रही है। तो मैंने इसे कर दिया। मुझे लगता है कि अगर अटलांटिक इसे अस्वीकार करने की मूर्खता करता है, तो कोई और इसे तुरंत प्रकाशित कर देगा, और बेहतर होगा अगर वे मेरी कविताएँ भी छाप लें... अचानक मुझे और टेड को भी आज़ादी मिल जाती है। मैं आज सुबह मैगज़ीन रैक पर जाकर न्यूयॉर्क टाइम्स, न्यू यॉर्कर, राइटर मैग ले सकता हूँ और मुझे बोझिल या बीमार महसूस नहीं होगा। मैं अपनी जगह बनाऊँगा, एक विचित्र, बल्कि छोटी सी जगह, लेकिन इतनी जगह और नज़ारा होगा कि मैं खुश रह सकूँ...
बुधवार, 13 मई, 1959… आर.बी. के बारे में परेशान: मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं सब कुछ ढकना चाहता हूँ, जैसे कोई बिल्ली कैलिफ़ोर्निया जाने से पहले रेत से अपने छोटे-छोटे मल को ढकती है?
खैर, मुझे उन संवेदनशील मुद्दों का जिक्र करना ही होगा: आत्महत्या, कौमार्य भंग, टी की बहन, और वर्तमान लेखन; सामाजिक जीवन का अभाव, फिर भी इसकी परवाह न करना; संतानहीनता। आज के समय में। साथ ही मन के आलसी होने की चिंता। भाषाएँ सीखना।

मेरी कविता संग्रह 'बुल ऑफ बेंडीलॉ' अब काफी बेहतर ढंग से व्यवस्थित है। साथ ही, इस रफ्तार से, 'आर्ट्स इन सोसाइटी' में 'स्कल्प्टर', 'द गोरिंग' (जिसे मैं बिकने लायक नहीं समझ रहा था) और 'आफ्टरमैथ' के स्वीकार होने के बाद, मेरी सभी 45 कविताएँ छपने से पहले केवल 13 कविताएँ ही प्रकाशित करनी बाकी हैं, और इन कविताओं को बेचना ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए...
सोमवार, 18 मई… प्रेरणा से मैंने अपनी कविता संग्रह का शीर्षक बदलकर 'द डेविल ऑफ द स्टेयर्स' कर दिया है, आशा है कि यह शीर्षक पहले कभी इस्तेमाल नहीं हुआ होगा। 'द बुल ऑफ बेंडीलॉ' शीर्षक आकर्षक था, लेकिन उसमें एक अस्पष्ट भाव था, ऊर्जा का औपचारिक रूपों को तोड़कर बाहर आने का विचार। लेकिन यह शीर्षक मेरी पूरी पुस्तक को समाहित करता है और निराशा की कविताओं की व्याख्या करता है, जो आशा की तरह ही भ्रामक है। आशा है कि यह शीर्षक स्वीकार हो जाएगा।
कल रात मैंने सपना देखा कि मैं सात बेटियों की माँ हूँ, बिल्कुल गुड़ियों जैसी। मुझे उन्हें पार्टी के कपड़े पहनाने थे, सभी गुलाबी रंग के, लेकिन मुझे पीले और गुलाबी कपड़ों के बीच नीले और बैंगनी कपड़े भी मिले। बहुत उलझन हो रही है। क्या उनके पास दस्ताने हैं, क्या उनके पर्स में जेब खर्च है?…
बुधवार, 20 मई। अब मुझे बस यही सुनना है कि जी.एस. या एम.के. ने येल पुरस्कार जीत लिया है और मेरी बच्चों की किताब अस्वीकृत हो गई है। ए.एस. की किताब हॉटन मिफ्लिन में स्वीकार हो गई है और आज दोपहर वह शैम्पेन पिएंगी। साथ ही, पी.जे.एच.एच., जो नकलची है, ने मेरा एक निबंध भी स्वीकार कर लिया है। लेकिन एक ज़्यादा सफल नकलची की आलोचना कौन कर सकता है? मैकलीन में कविता पाठ का कार्यक्रम भी है। और कल रात खाने पर जी.एस. मलाई खाकर मजे से

फूला नहीं समा रहा था, वह सचमुच बहुत खुश था, क्योंकि ए.एस. एक तरह से मेरे लिए उसका जवाब है। और अब विथेंस पर लिखा मेरा निबंध पी.जे.एच.एच. से वापस आएगा, और मेरी ईर्ष्या मुझे काम करने से रोक रही है। या शायद मुझे सुस्ती और ज़्यादा काम में धकेल देगी। टी. को कुछ मत बताना। उन्होंने पानी के चूहों पर लिखे उस लेख के बारे में सामान्यीकरण किया जिसे उन्होंने पढ़ा ही नहीं था, और पीजेएचएच के नोट का विस्तार करते हुए कहा: "ओह, आपकी सारी सामग्री, समस्या यह है कि यह बहुत सामान्य है। इसलिए मैं उन्हें स्वीटी पाई पर लिखी अपनी कहानी नहीं दिखाऊँगी, इस घिनौने को घर से बाहर रखूँगी और इसे खुद ही प्रकाशित करूँगी। मेरी पहली स्वीकृत कहानी मुझे बहुत खुशी देगी: लेकिन इसके बिना भी, मैं आगे बढ़ती रहूँगी, क्योंकि मैं अभी स्वतंत्र हूँ और एक साल तक काम करने की ज़रूरत नहीं है, अभी तक बच्चे भी नहीं हैं। कल रात झगड़ा हुआ, उन्हें यह समझने की ज़हमत ही नहीं उठाई कि मेरे लिए काम करना कितना असहनीय है (क्या मैंने काम किया है? बहुत कम) और सब कुछ मेरी डेस्क पर रुका हुआ महसूस करना, और मैं जागती हुई तनावग्रस्त, हवा भयानक रूप से नम और गर्म, चादरें गीली और भारी। आखिरकार उठी और फिलिप रोथ की 'गुडबाय कोलंबस' पूरी पढ़ी, जो पहले उपन्यास को छोड़कर मुझे उत्कृष्ट, समृद्ध और हमेशा आकर्षक, मनोरंजक लगी। हँसी भी आई। रात 3 बजे बिस्तर पर गई। नींद अच्छी नहीं आई।" उसी शत्रुतापूर्ण सन्नाटे में जाग उठी। उसने कॉफ़ी बनाई। कुछ शोर मचाया। मैंने नहाया और बेहतर महसूस किया, और इस मीठी, घुटन भरी, भारी हवा में चिट्ठियों, अस्वीकृतियों का इंतज़ार कर रही हूँ, डॉक्टर बी. के पास जाने का इंतज़ार कर रही हूँ (मुझे उन्हें अपनी तत्काल ईर्ष्या के बारे में बताने में बहुत शर्म आ रही है—यह उनके प्रति मेरे पेशेवर लगाव का परिणाम

है, जिसने मुझे रोक रखा है) और फिर सुल्तान परिवार दिन भर का कार्यक्रम बिगाड़ देगा, और बूथ परिवार रात के खाने के लिए आएगा। वह कुछ राहत देगा, वह अच्छा है, हालाँकि लगभग दयनीय रूप से गंभीर और ईमानदार है।
गुस्से का क्या करें, उससे पूछो। कहने को बस एक ही बात है: हाँ, मुझे दुनिया की तारीफ़, पैसा और प्यार चाहिए, और मैं किसी से भी, खासकर किसी ऐसे व्यक्ति से जिसे मैं जानती हूँ या जिसने मेरे जैसा अनुभव किया है, मुझसे आगे निकलने पर बहुत गुस्सा होती हूँ। अच्छा, जब यह गुस्सा बार-बार उमड़ता है तो क्या करें? कल रात मुझे एहसास हुआ कि माँ का कोई महत्व नहीं है—वह मेरे लिए सब कुछ हैं, लेकिन मैंने उनकी छवि को धूमिल कर दिया है और अब वह सिर्फ़ संपादकों, प्रकाशकों, आलोचकों और दुनिया के लिए रह गई हैं, और मैं वहाँ स्वीकृति चाहती हूँ, और अपने काम को अच्छा और सराहा हुआ महसूस करना चाहती हूँ। विडंबना यह है कि यही बात मुझे मेरे काम में रोक देती है, मेरे उस नन जैसे परिश्रम को भ्रष्ट कर देती है जिसमें मैं अपने काम को ही अपना इनाम मानती हूँ। आज ही इस पर काबू पाओ।
रॉथ से सीखो। खूब अध्ययन करो। अपने भीतर झांको। वहीं शुद्धता है। या शायद, एक दिन होगी।
नहाओ, साफ-सफाई रखो, रंगों और जानवरों का आनंद लो। हो सके तो लोगों से भी मिलो। मुझे बास्किन परिवार कितना प्यारा लगता है। वे मेरे लिए मानवता और ईमानदारी की मिसाल हैं, जिनमें कोई बनावटीपन नहीं है। मुझे दुनिया की बातों को बिना किसी लाग-लपेट के लिखना ही होगा। मैं प्यार, नफरत और विपत्ति के बारे में इतना जानती हूँ कि लिख सकूँ।

वी. वूल्फ की रचना 'द इयर्स' पढ़ते हुए। बारिश के ज़रिए वह एक परिवार को एकजुट कर सकती हैं, चाहे वह लंदन में हो, गाँव में हो या ऑक्सफ़ोर्ड में। लेकिन ये परिवार बहुत बिखरे हुए हैं। पाँच-ग्यारह साल छोड़कर और एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति पर जाते हुए, अचानक एक छोटी लड़की पचास साल की हो जाती है, जिसके बाल सफ़ेद हो चुके होते हैं, और इस तरह हमें पता चलता है कि समय बीतता है, सब कुछ बदलता है। लेकिन वर्णन, अवलोकन, भावनाएँ जो पकड़ी जाती हैं और फिर बह जाती हैं।
मुझे एक सपना याद है, जो आज सुबह की डाक से बिल्कुल मेल खाता है और व्यंग्यात्मक भी। मैंने कल रात और आज जे. डी. सैलिंगर की लंबी किताब 'सीमोर: एन इंट्रोडक्शन' पढ़ी। शुरुआत में काफ्का, कीर्केगार्ड आदि के बारे में लिखे गए लंबे-चौड़े शब्दों से थोड़ी अटपटी लगी, लेकिन धीरे-धीरे उसमें खो गया। सपने में, ओह, कितना मज़ेदार था, मैंने एक न्यू यॉर्कर अखबार उठाया, लगभग तीसरी खबर खोली (पीछे वाली नहीं, यह महत्वपूर्ण था, बल्कि पूरा पहला पन्ना, दाईं ओर, अपने आप में) और उसमें लिखा था "यह धरती—वह घर, वह अस्पताल", जो न्यू यॉर्कर के बेहद प्यारे शीर्षक वाले फॉन्ट में था, मानो किसी ने बड़ी मेहनत से स्याही से हाथ से लिखा हो। दिल की धड़कन तेज़ हो गई (मेरी नींद मेरे जागते जीवन की इतनी सटीक नकल बन जाती है) और मैंने सोचा "यही मेरी किताब का शीर्षक है, या इसका बिगड़ा हुआ रूप।" और बेशक, यही है: "यह धरती हमारा अस्पताल" का बदला हुआ रूप, या तो बहुत अच्छा या फिर बेहद खराब। आगे पढ़िए: मेरी अपनी गद्य रचना: बस फर्क इतना था कि वो स्वीटी पाई की कहानी थी, पिछवाड़े की कहानी, जिसमें भावी सैलिंगर बच्चा था। डॉ. बी. मुझे बधाई दे रहे थे। माँ मुँह फेरकर बोलीं: “मुझे नहीं पता, मुझे तो इसके बारे में कुछ भी महसूस नहीं हो रहा।”

मुझे लगता है, इससे यही पता चलता है कि डॉ. बी. मेरी माँ बन चुकी हैं। मैं बेहद खूबसूरत महसूस कर रही थी, न्यूयॉर्क की चमक मेरे चेहरे पर थी। बिलकुल उस युवा ब्रिटिश सोशलाइट लड़की सुसान की तरह, जो एक डोंगीनुमा घर में कौमार्य भंग होने के बाद अपने सुंदर प्रेमी से पूछती है: क्या मैं अलग नहीं दिख रही? ओह, मैं अलग दिख रही थी। मेरे गोल-मटोल और आटे जैसे रंग के चेहरे से एक हल्की, समृद्ध आभा निकल रही थी।
आज सुबह जब मैं उठा तो मुझे आदरणीय डडली फिट्स का एक पत्र मिला, जिसे मैंने स्तब्धता से 'द बुल ऑफ बेंडीलॉ' के लिए एक विनम्र अस्वीकृति समझा। उन्होंने कहा कि मैं "बस एक फुसफुसाहट" से चूक गया, लेकिन मेरी तकनीकी अपूर्णता (!) ने उन्हें हतोत्साहित कर दिया, मेरी खुरदरी शैली, अनिर्णय, और चार-पाँच कविताओं को छोड़कर बाकी सभी में मेरा भटकना। जबकि मेरी मुख्य कमी एक मशीनी शब्दांश की घातक चोट है। सचमुच बदकिस्मती का एहसास। क्या मुझे कभी गलत कारणों के अलावा किसी और कारण से पसंद किया जाएगा? मेरी किताब जितनी पूरी हो सकती थी, उतनी पूरी हो चुकी है। और हडसन द्वारा स्वीकृति मिलने के बाद, मुझे पूरी उम्मीद है कि कुछ ही महीनों में मेरी सभी 46 कविताएँ स्वीकार हो जाएँगी। तो क्या हुआ? मेरा कोई समर्थक नहीं है। वे इसमें, उसमें, या किसी और चीज़ में कमी निकाल ही लेंगे। वैसे भी, मैं अपने कितने वरिष्ठों की राय का सम्मान करता हूँ? लोवेल इसका एक उदाहरण है। कितने कम लोग, अगर कोई हैं भी, यह समझ पाएँगे कि मैं किस चीज़ पर काम कर रहा हूँ, किस चुनौती का सामना कर रहा हूँ? कितनी विडंबना है कि अपनी सहज काव्यात्मकता पर काबू पाने के मेरे सारे प्रयास उन्हें केवल यही विश्वास दिलाते हैं कि मैं असभ्य, काव्य-विरोधी और काव्यहीन हूँ। हे भगवान…

… बिस्तर पर पढ़ना। गर्माहट और सुकून। आज सुबह 'द लोनली क्राउड' पढ़ना शुरू किया, जो वी. वूल्फ की उबाऊ रचना 'द इयर्स' का एक जवाब है, जिसे मैंने कल रात खत्म किया था। वो चंचल है, वो अपना जाल फैलाती है। 9 साल की रोज़ शाम को अकेले दुकान पर चुपके से जाती है। फिर वो मोटी, सफ़ेद बालों वाली, 59 साल की हो जाती है, टिप्पणियों, रोशनी और रंगों को झपटती हुई। यकीनन यह जीवन नहीं है, असली जीवन भी नहीं: इसमें महिलाओं की पत्रिकाओं की तरह स्थायी प्रेम, ईर्ष्या और ऊब का कोई प्रवेश द्वार भी नहीं है। यह मनोरंजन उन नीरस बूढ़ी महिलाओं की पार्टी में सबसे सतही दर्शक जैसा है जिन्होंने कभी खून नहीं बहाया। वूल्फ में यही कमी खलती है। उनके आलू और सॉसेज। उनका प्रेम, उनका निःसंतान जीवन कैसा है कि उन्हें इसकी कमी सिर्फ श्रीमती रैमसे, क्लेरिसा डैलोवे में ही खलती है? यकीनन अगर यह वहाँ सार्थक है, तो उन्हें इसे इंग्लैंड के सामान्य भौगोलिक क्षेत्र में प्रसारित होने वाले प्रकाश प्रभावों में खोते नहीं रहना चाहिए, जो सुंदर, मेहनत से किए गए हैं, लेकिन अंत में स्कूली निबंधों की तरह लगते हैं। इस बिखरे हुए अव्यवस्था से ही सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ उभरती हैं। बेशक, जीवन खंडित है, बहरे लोग बात को नहीं समझ पाते, प्रेमी निरर्थक बातों पर एक-दूसरे पर हंसते हैं, लेकिन वह इस हंसी-मजाक के पीछे छिपी गहरी भावनाओं को नहीं दर्शाती।
डॉ. बी. से किन विषयों पर चर्चा करनी है? काम, सार्थक काम करने की इच्छा। जर्मन भाषा सीखना। लिखना, एक बहुमुखी प्रतिभा की धनी महिला बनना।
रविवार, 31 मई। एक सुहाना, साफ़, ठंडा रविवार, आने वाले सप्ताह के लिए एक खाली कैलेंडर, और विशालता, रचनात्मक शक्ति और सद्गुण

का अद्भुत एहसास। सद्गुण। मुझे आश्चर्य है कि क्या इसका फल मिलेगा। मैंने इस साल छह कहानियाँ लिखी हैं, और उनमें से तीन सबसे अच्छी कहानियाँ पिछले दो हफ्तों में लिखी हैं! (क्रम: "जॉनी पैनिक एंड द बाइबल ऑफ़ ड्रीम्स", "द फिफ्टीन डॉलर ईगल", "द शैडो", "स्वीटी पाई एंड द गटर मेन", "अबव द ऑक्सबो", और "दिस अर्थ अवर हॉस्पिटल")। बहुत अच्छे शीर्षक। मेरे पास इससे भी बेहतर शीर्षकों की सूची है। जहाँ एक बीज बोया जाता है, वहाँ विचार अपने आप पनपते हैं।
मुझे लगता है कि इस महीने मैंने अपने डर पर काबू पा लिया है। मैं एक शांत, प्रसन्न और निर्मल लेखिका हूँ। हर कहानी के साथ सीखने और बेहतर होने का सुखद एहसास होता है, और साथ ही यह चिंता भी बनी रहती है कि मेरी कहानियाँ, चाहे किसी भी तरह से हों, दस या बीस कहानियों बाद जो मैं लिखूँगी, उससे कहीं कमतर हैं।
इस साल मैंने वही किया जो मैंने वादा किया था: रोज़ाना खाली पन्ने का सामना करने के डर पर काबू पाया, और अपनी गहरी भावनाओं में खुद को एक लेखक के रूप में स्वीकार किया, चाहे कुछ भी हो जाए: अस्वीकृतियाँ या कम बजट। मेरी सबसे अच्छी कहानी है "यह धरती हमारा अस्पताल।" ... हास्य से भरपूर, रंगीन किरदारों से सजी, अच्छी और लयबद्ध बातचीत से भरी। "जॉनी पैनिक" से एक अद्भुत सुधार, जो उसी जगह पर आधारित है, लेकिन पूरी तरह से एक निबंध के रूप में लिखी गई है, जिसमें केवल एक या दो अन्य किरदार हैं। मुझे एक किताब या कहानियों की किताब याद आती है: यह धरती हमारा अस्पताल। मैं इसे यही नाम देना चाहूँगी, उम्मीद है कोई मुझसे पहले यह नाम न रख दे। मैं खुशी से रो पड़ती हूँ।
कल रात मैंने यहाँ से टीवी लेखन अनुदान के लिए आवेदन भेज दिया।
अजीब बात है, इससे हमारी योजनाओं में इतनी दिक्कतें आ जाएँगी कि

मैं इसे लेना ही नहीं चाहता, फिर भी इससे मुझे सालाना 10,000 डॉलर की आमदनी होगी। मेरी जीवनी बेहद दिलचस्प है, मैं युवा हूँ और होनहार हूँ। फिर भी मुझे पाँचों में से एक अनुदान क्यों नहीं मिल रहा? पैसा, पैसा। मुझे सीबीएस भी पसंद है। वे ज़्यादातर चैनलों से ज़्यादा रचनात्मक हैं। एक और परीक्षा, माइल्स के जून महीने की तरह—लेकिन ज़्यादा जोखिम भरी: क्या मैं पास हो पाऊँगा, खुद को बचा पाऊँगा? दिलचस्प।
मैंने अपनी दो कहानियाँ, “अबव द ऑक्सबो”, जो मैंने पिछले जुलाई में किए गए एक “अभ्यास” से प्रेरित होकर लिखी थीं और जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया, और “दिस अर्थ अवर हॉस्पिटल”, द अटलांटिक को भेजी हैं। ये दोनों कहानियाँ एक-दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। अगर वे मेरी दूसरी कहानी नहीं लेते, तो वे पागल हैं। यह सर्वश्रेष्ठ अमेरिकी लघु कहानी का पुरस्कार जीत सकती है।
मज़ेदार और महत्वपूर्ण बात यह है कि द अटलांटिक में प्रकाशित ये दो कहानियाँ मुझे द न्यू यॉर्कर में प्रकाशित दो कहानियों पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर देने से मुक्त करती हैं, जिन्हें अब मुझे लगता है कि शायद अस्वीकार कर दिया जाएगा। द अटलांटिक से जवाब आने तक मेरी दो और बेहतर कहानियाँ प्रकाशित हो चुकी होंगी, और मैं धीरे-धीरे उन्हें संकलित करता रहूँगा। मुझे ऐसा लग रहा है कि मैंने अपने जीवन में पहली बार उस शांत, रचनात्मक और हास्यपूर्ण सागर में प्रवेश किया है जिसे मैंने एक बहुत ही संकरे, चट्टानों से भरे जलडमरूमध्य से केवल झलकियाँ ही देखी थीं। घर साफ-सुथरा और चमकदार है। मेरे असाइनमेंट पूरे हो चुके हैं, और मेरे पास शुरू करने के लिए अन्य असाइनमेंट की एक सूची है:

व्यवस्था और मैं: सामाजिक चिकित्सा व्यवस्था से जुड़े 3 या 4 अनुभवों पर आधारित एक हास्यपूर्ण निबंध।
कोलोराडो का छोटा सा खनन कस्बा: एक युवा लड़की की कहानी, जो गठिया बुखार से पीड़ित होने के दौरान सोप ओपेरा की चकाचौंध भरी दुनिया में डूब जाती है: उसके माता-पिता और उसकी मजबूत नर्स के साथ उसके रिश्ते (स्टीव फासेट के अपनी नर्स के वर्णन से यह बात स्पष्ट होती है, जो वास्तव में नहीं चाहती थी कि वह ठीक हो; वह 15 वर्षों तक उसकी जिंदगी थी और ऐसे विलासितापूर्ण, नहीं, नहीं, ऐसे सहजीवी संबंध में, उसे तब असहनीय लगता था जब वह अपनी इच्छा का विरोध करता था)। वह बिंदु जहां सोप ओपेरा और वास्तविक दुनिया आपस में मिल जाती हैं, और फिर अलग हो जाती हैं...
माउंट वर्नोन स्ट्रीट पर स्थित फ्रांसिस मिंटर्न हॉवर्ड के रेस्तरां में रात्रि भोज। एक पुराने, सौम्य वैभव का एहसास। लाल मखमली सोफे, दीवारों पर फीके पड़ चुके, फिर भी चमकते चांदी के रंग के चाय के कागज। चचेरे भाइयों के तेल चित्रों की लघु पेंटिंग, पृष्ठभूमि में जूलिया वार्ड होवे की पेंटिंग। हल्का और स्वादिष्ट भोजन, जिसमें वसा, लौंग और क्रस्ट से भरपूर रसीला हैम, शतावरी और चिकन शोरबे में पके हुए पतले नूडल्स थे, जिन्हें पनीर और ब्रेड क्रम्ब्स से हल्का भूरा किया गया था। मिठाई में वेनिला आइसक्रीम, ताज़ी स्ट्रॉबेरी और उंगली के आकार के जेली रोल थे।
उसका बगीचा: एक ठंडा, सफ़ेद रंग से रंगा कुआँ। स्पेनिश लोहे के गमले रखने वाले स्टैंड। चारों ओर ईंटों से बनी फूलों की क्यारी। लंबे, डच ट्यूलिप, जो अपनी चरम सीमा पार कर चुके थे। आइवी लता, डॉल्फ़िन वाला एक फव्वारा। झाड़ियों में एक मेंढक।
सोलोमन की मुहर। ब्लीडिंग हार्ट्स। और कमरे की ऊँचाई तक सफ़ेद

रंग से पुती ईंट की दीवारें, जिससे एक हल्का, स्पेनिश आँगन जैसा प्रभाव मिलता था। डचमैन्स-पाइप, या ऐसी ही कोई लता, पीछे की ईंट की दीवार पर हरे पत्तों की जाली बना रही थी। एक विशाल पेड़, पता नहीं कौन सा, वो मच्छर भगाने वाले पेड़, स्वर्ग का पेड़, इमारतों के बीच से रोशनी की ओर ऊपर की ओर बढ़ता हुआ। रम और नींबू का रस, और पानी की ठंडी, सुंदर छपछपाहट...
भारत में जैन भिक्षु; केवल तीन महीने के बरसात के मौसम में ही दिखाई देते हैं, क्योंकि अन्यथा वे हर रात आगे बढ़ने का व्रत रखते हैं। पुणे, आगरा आदि से धन और हार्वर्ड में छात्रवृत्ति के लिए विस्तृत लाक्षणिक निवेदन। भारतीय लोककथाएँ, महान कवियों के अधूरे अनुवाद...
आज मेरा मन कालीन बुनने जैसा लग रहा है। बहुत नींद आ रही है, जैसे किसी अच्छे प्रेम प्रसंग के बाद, इस हफ्ते के सारे लेखन के बाद। मेरी कविताएँ अब बिल्कुल पीछे छूट गई हैं। यह गद्य, कविताओं की गहन सीमाओं के लिए एक बहुत ही अच्छा प्रतिकार है… जीवन का एक सुखद एहसास, भागदौड़ भरा नहीं, बल्कि बेहद धीमा और स्थिर, जैसा मैंने पहले कभी अनुभव नहीं किया था। वह समुद्र, शांत, जिस पर सूरज की हल्की किरणें पड़ रही थीं। शांति के अपने विशाल भंडार में सभी चट्टानी, संकरे जलडमरूमध्यों को समाहित किए हुए।
शनिवार, 13 जून… आज सुबह करीब 3 बजे तक जागता रहा, ऐसा लग रहा था जैसे मेरा सिर ज्ञान से इतना भरा हुआ है कि फट जाएगा। कल पता चला कि जॉर्ज स्टारबक ने येल विश्वविद्यालय जीता है। उन्हें पूरा यकीन है कि इससे साबित होता है कि वे सर्वश्रेष्ठ हैं। फोन करके पूछा, “अरे, मैंने तुम्हें बताया ही नहीं था?” मैंने अपनी किताब

से बेहतर किताब पढ़ने की आदत डाल ली थी, लेकिन यह तो सरासर अन्याय लग रहा था…
डॉ. बी. के लिए: मेरे लिए सबसे ज़्यादा ज़रूरी यह नहीं है कि मैं कब बच्चे को जन्म दूँ, बल्कि यह है कि मेरे पास एक बच्चा हो, और एक से ज़्यादा। मुझे हमेशा से मृत्यु की वह परिभाषा बहुत पसंद आई है जो कहती है: अनुभव से वंचित होना, यह जेम्स का दृष्टिकोण है, लेकिन बहुत सटीक है। और एक स्त्री के लिए उस महान अनुभव से वंचित होना, जिसे पाने और पोषित करने के लिए उसका शरीर बना है, एक बड़ी और कष्टदायक मृत्यु है। आख़िरकार, एक पुरुष को पिता बनने के लिए सामान्य शारीरिक संबंध बनाने से ज़्यादा कुछ नहीं करना पड़ता। एक स्त्री के पास 9 महीने होते हैं, जिसमें वह स्वयं से भिन्न हो जाती है, इस भिन्नता से अलग हो जाती है, इसे पोषित करती है और इसके लिए दूध और शहद का स्रोत बनती है। इससे वंचित होना वास्तव में एक मृत्यु है। और अपने प्रिय के बच्चे को जन्म देकर प्रेम को पूर्ण करना किसी भी चरम सुख या बौद्धिक संबंध से कहीं अधिक गहरा अनुभव है…
… जीन स्टैफ़ोर्ड को पढ़िए, एलिज़ाबेथ हार्डविक से कहीं ज़्यादा मानवीय। हार्डविक के पात्र किसी भी तरह से बिल्कुल नापसंद करने लायक हैं। लेखक और पाठक की श्रेष्ठता का भाव उनमें साफ झलकता है—यहाँ तक कि बच्चा भी, जैसा कि अगाथा ने चतुराई से कहा, भले ही वह सिर्फ एक पैराग्राफ में ही दिखाई देता है, एक घिनौना, अपूरणीय जीव है। स्टैफ़ोर्ड रंगों, गर्माहट और हास्य से भरपूर हैं, यहाँ तक कि उनकी चुड़ैलें और बच्चे चुराने वाली लड़कियाँ भी मानवीय, हास्यपूर्ण और दुनिया का हिस्सा हैं, न कि चिपचिपी पलकों वाले छोटे-छोटे सपाट पुतले।

मानसिक अस्पताल की कहानियां: लाजरस की थीम। मृत्यु से वापसी।
थर्मामीटरों को लात मारकर गिराना। हिंसक वार्ड। लाजरस, मेरे प्यार।
मुझे असहनीय बेचैनी हो रही है। इस हफ्ते अटलांटिक प्रेस द्वारा मेरी 'बेड बुक' या तो स्वीकार की जाएगी या अस्वीकार की जाएगी। मैंने अपना संशोधित संस्करण एमिली मैकलोड को भेज दिया है। स्टारबक को येल विश्वविद्यालय से छात्रवृत्ति मिलने की निराशाजनक खबर के बाद, जिसे मैंने अब स्वीकार कर लिया है, हालांकि फिट्स के फैसले से मैं निराश हूं, और मैक्सिन [कुमिन] को भी हेनरी होल्ट से पत्र मिला (और कितनी अन्य महिलाओं को भी?), मुझे होल्ट द्वारा प्रकाशित होने के बारे में बहुत संदेह हो रहा है: एक अहंकार, एक एहसास कि मैं इसे तभी चाहूंगी जब वे मुझे लैमोंट पुरस्कार के लिए नामांकित करें। काश नॉफ मेरी किताब को स्वीकार कर लेता, तो मैं लैमोंट पुरस्कार को धिक्कार देती। नॉफ, या हारकोर्ट, ब्रेस या मैकमिलन (शायद) या वाइकिंग। काश [एम. एल.] रोसेन्थल मुझे मैकमिलन के बारे में लिखते। लेकिन मेरी किताब, चाहे कितनी भी गंभीर क्यों न हो, उसे बेचने के लिए एक पुरस्कार की आवश्यकता है।
अब: जॉर्ज, ऐनी और बच्चों की कहानी। एक असहनीय महिला (ज़ाहिर है, मैं खुद) इस अलग हुए परिवार में दखल देती है। उसे लगता है कि जॉर्ज उसे सबसे ज़्यादा प्यार करेगा, वह अपनी पागल पत्नी (मेरा मतलब है, वह सच में बीमार है) से कहती है कि यह तो ऐनी ही है, और खुद को बहुत चालाक समझती है। फिर जब ऐनी की किताब छपती है, तो उसे पता चलता है कि असल में ऐनी ही है, और वह गुस्से से आग बबूला हो जाती है। वह बच्चों के प्रति क्रूरता रोकथाम संगठन को फोन करती है... या अपने समाजशास्त्री दोस्त से फोन करवाती है, लेकिन

उसे कभी पता नहीं चलता कि फोन लग पाता है या नहीं। पार्क में एक दिन। बच्चे बोल नहीं सकते, वह कबूतरों को मूंगफली फेंकती रहती है, वगैरह। बत्तखें, गिलहरियाँ, बच्चे खाली-खाली नज़रों से देख रहे हैं और बेखबर हैं। बदबू आ रही है, एक लड़की बेंच पर पेशाब कर देती है। मुझे कल अखबार में यह पढ़कर हैरानी नहीं होगी कि वह छोटी बच्ची छत से गिरकर मर गई। ज़ाहिर है, वह कभी ऐसी कोई बात नहीं पढ़ती। उसकी सद्भावना विकृत हो जाती है, उस दया पर निर्भर हो जाती है जो जॉर्ज के प्रेमी होने पर उसके मन में पैदा होती, लेकिन जब उसे वह दया नहीं मिलती, तो वह एक गंदी दखलंदाज़ी बन जाती है। ओलंपियन। रिट्ज़ बार में बैठे बेचारे विवाहित कवि... ऐन पेरेग्रीन ने आत्महत्या करने में उतनी ही सुनियोजितता दिखाई जितनी कि घर की सफाई करने में।
मंगलवार, 16 जून। एक खोज। मैंने इसे पहले ही खोज लिया था, लेकिन मुझे इसका मतलब नहीं पता था। एक खोज, एक नाम: सैडी पेरेग्रीन। मेरी सिल्वर पाई-सर्वर कहानी की शुरुआत में मैंने उसे मिसेज़ व्हाट्सिस के रूप में चित्रित किया था। अचानक वह मेरे उपन्यास फाल्कन यार्ड की नायिका बन गई। ओह, विडंबना! ओह, यह किरदार! सबसे पहले: एस. पी., मेरे नाम के शुरुआती अक्षर। अभी-अभी यह ख्याल आया। फिर, पेरेग्रीन फाल्कन। ओह, ओह। काश किसी ने इसके बारे में सोचा ही न होता। और सैडी: सैडिस्टिक। ला. वांडरर। यह सैडी पेरेग्रीन ही काफी है कि मैं याड्डो में बैठकर बास मछली पकड़ते हुए उपन्यास लिख सकूँ…
आज हमारी शादी की तीसरी सालगिरह है। कल बुक स्टोर में हमारी सालगिरह का तोहफा खरीदते समय टेड ने हमारा अच्छा छाता खो दिया (उसने मुझे शादी में पहला तोहफा भी छाता ही दिया था, इस बार उसने कोई दूसरा छाता खोया है, लगभग तीसरी सालगिरह पर, क्योंकि हम कई

छाते खो चुके हैं)। हमारा तोहफा था विल ग्रोहमैन की पॉल क्ली की किताब। शानदार। 'द सीफ़ेयरर' पूरी तरह रंगीन है…
शनिवार, 20 जून। सब कुछ बंजर हो गया है। मैं दुनिया की राख का हिस्सा हूँ, जिससे कुछ भी नहीं उग सकता, कुछ भी फूल नहीं सकता, न ही फल लग सकते हैं। 20 वीं सदी की चिकित्सा के सुंदर शब्दों में कहूँ तो, मैं ओव्यूलेट नहीं कर सकती। या नहीं करती। इस महीने नहीं हुआ, पिछले महीने भी नहीं हुआ। दस साल से शायद मुझे बेवजह ही दर्द हो रहा है। मैंने मेहनत की है, खून बहाया है, दीवारों से सिर टकराया है, ताकि मैं यहाँ तक पहुँच सकूँ। दुनिया में मेरे लिए सही एकमात्र पुरुष के साथ, एकमात्र पुरुष जिसे मैं प्यार कर सकती हूँ। अगर संभव होता तो मैं जीवन परिवर्तन तक बच्चे पैदा करती। मैं अपने बच्चों, छोटे जानवरों, फूलों, सब्जियों, फलों से भरा घर चाहती हूँ। मैं सबसे गहरे और समृद्ध अर्थों में धरती माँ बनना चाहती हूँ। मैं एक बुद्धिजीवी, एक करियर वुमन होने से मुड़ गई हूँ: ये सब मेरे लिए राख है। और मुझे अपने भीतर क्या मिलता है? राख। राख और बस राख।
मैं संभोग के भयानक नैदानिक चक्र में फंस जाऊंगी, मासिक धर्म आने पर या संभोग करने पर जांच करवाने के लिए दौड़ूंगी। तरह-तरह के इंजेक्शन लगवाऊंगी, हार्मोन, थायरॉइड, खुद से कुछ अलग बन जाऊंगी, कृत्रिम बन जाऊंगी। मेरा शरीर एक टेस्ट ट्यूब बन जाएगा। डॉक्टर ने कहा, "जिन महिलाओं को छह महीने से गर्भधारण नहीं हुआ है, उन्हें समस्या है, प्यारी।" और मेरी गर्भाशय ग्रीवा से रुई लगी छोटी सी स्टिक निकालकर अपनी सहायक नर्स को दिखाई: "बिल्कुल काला।" अगर मेरा ओव्यूलेशन हुआ होता तो यह हरा होता। विडंबना यह है कि यही टेस्ट मधुमेह के निदान के लिए भी इस्तेमाल होता है। हरा, जीवन का रंग, अंडे का रंग और शर्करा का

रंग। नर्स ने मुझे बताया, "उन्होंने मेरे ओव्यूलेशन का सटीक दिन पता लगा लिया है। यह एक बढ़िया टेस्ट है, सस्ता और आसान।" हा। अचानक मेरे अस्तित्व की गहरी नींव हिल गई। मैं बड़े दर्द और प्रयास से उस बिंदु पर आ गई हूं जहां मेरी इच्छाएं, भावनाएं और विचार एक सामान्य महिला के विचारों के इर्द-गिर्द घूमते हैं, और मुझे क्या मिलता है? बांझपन।
अचानक सब कुछ अशुभ, विडंबनापूर्ण, घातक लगने लगता है। अगर मैं बच्चे पैदा नहीं कर सकती—और अगर मेरा अंडाणु नहीं होता तो कैसे हो सकता है?—बच्चे मुझे कैसे पैदा कर सकते हैं?—तो मैं मर जाऊंगी। अपने स्त्रीत्व के लिए मर जाऊंगी। संभोग भी खत्म हो जाएगा, एक गतिरोध। मेरा आनंद आनंद नहीं रहेगा, एक उपहास। मेरा लेखन वास्तविक जीवन, वास्तविक भावनाओं का खोखला और असफल विकल्प बन जाएगा, एक सुखद अतिरिक्त, एक बोनस की तरह खिलने और फलने-फूलने के बजाय। टेड को पितृसत्तात्मक होना चाहिए। मुझे एक माँ। उसके लिए मेरा प्यार, हमारे प्यार को, हम दोनों को, अपने शरीर के माध्यम से, अपने शरीर के द्वारों से व्यक्त करने का मेरा प्रयास, पूरी तरह से विफल हो जाएगा। यह कहना कि मैं इस बारे में असामान्य रूप से निराशावादी हूँ, यह कहने जैसा है कि किसी भी महिला को अंडाणु न होने का सामना लापरवाही से मुस्कुराते हुए करना चाहिए। या "हा हा।" हा हा।
मुझे कोई डाकिया नहीं दिख रहा। कितनी प्यारी, साफ़ सुबह है। मैं रोती रही, रोती रही। कल रात, आज। मैं टेड को एक बांझ औरत से शादीशुदा कैसे रख सकती हूँ? बिल्कुल बांझ। उसकी आखिरी कविता, उसकी किताब की शीर्षक कविता, एक बांझ औरत को उपजाऊ बनाने की रस्म है: "जीवन की जंजीरों से अलग, अतीत उसमें मर गया, भविष्य छीन लिया गया।" "इस जमी हुई को छुओ।" हे भगवान। और उसकी बच्चों

की किताब, उसी दिन जब मैं डॉक्टर के पास गई थी, कल, टी. एस. एलियट का लंबा, प्रशंसा भरा पत्र मिला। मेरे माता-पिता से मिलो! और कोई बच्चा नहीं, यहाँ तक कि उसकी शुरुआत या उम्मीद भी नहीं, जिसे मैं इसे समर्पित कर सकूँ। और मेरी बेड बुक: अभी तक स्वीकार नहीं हुई है, लेकिन होगी, चाहे वह उदास मैकलोड इसे अस्वीकार करे या नहीं, और मैं इसे मार्टी के गोद लिए जुड़वा बच्चों को समर्पित कर रही हूँ। हे भगवान। दुनिया में यही एक चीज़ है जिसका मैं सामना नहीं कर सकती। यह एक भयानक बीमारी से भी बदतर है। एस्थर को मल्टीपल स्केलेरोसिस है, लेकिन उसके बच्चे हैं...
गर्मियों के दौरान, ह्यूज़ दंपति ने अमेरिका की यात्रा की, उस समय सिल्विया गर्भवती थीं। लौटने पर वे न्यूयॉर्क के साराटोगा स्प्रिंग्स में स्थित कलाकारों की बस्ती, याड्डो गए, जहाँ सिल्विया ने अपनी कविताओं की पहली पुस्तक, द कोलोसस का लगभग एक तिहाई भाग लिखा। उन्होंने पहले ही इंग्लैंड लौटने और अपने पहले बच्चे के जन्म की प्रतीक्षा करने का निर्णय ले लिया था। याड्डो
बुधवार, 16 सितंबर… एक सुखद सपने से जागते ही टेड की सरसराहट और हलचल सुनाई दी, वह अपने मछली पकड़ने के सामान समेट रहा था। अंधेरा था, और नींद भी आ रही थी, फिर मेरी आँखों में लाल सूरज की किरणें चुभ रही थीं, घने चीड़ के पेड़ों से होकर आती हुई तिरछी किरणें। पिछले कुछ दिनों से परेशान कर रही हल्की-सी मतली गायब हो गई थी। हवा इतनी साफ थी मानो स्वर्गदूतों के लिए उपयुक्त हो। पैरों के नीचे जंग लगी चीड़ की पत्तियों पर ओस की बूँदें चमक रही थीं, पौधों की मुड़ी हुई टहनियों पर हल्की बूँदों के रूप में जमी हुई थीं। विशाल भोजन कक्ष सुंदर था: गहरे रंग की बीम वाली छत, ऊँची नक्काशीदार कुर्सियाँ और विशाल मेजें; पॉलिश की

हुई लकड़ियों पर टेराकोटा प्लास्टर की नक्काशी। छत्ते से शहद रिस रहा था, गर्म तवे पर कॉफी से भाप निकल रही थी। उबले अंडे और मक्खन। शीशे वाली खिड़कियों से हरी पहाड़ियाँ नीले रंग में घुलती हुई दिखाई दे रही थीं, और बगीचे के फव्वारे पर पाले से सफेद संगमरमर की मूर्तियाँ थीं। जब हम गैराज के ऊपर वाले घर में जाएंगे तो मुझे इस भव्यता की बहुत याद आएगी - तकियों के सुनहरे पुराने मखमल, और घिसे हुए कीमती कालीनों की चमक, घर के अंदर का फव्वारा, रंगीन कांच, ट्रास्क बच्चों के तेल चित्र, चांदनी रात में समुद्र, और जॉर्ज वाशिंगटन।
कल भयानक अवसाद था। ऐसा लग रहा था मानो मेरा जीवन निष्क्रियता के कारण एक प्रकार की सुस्ती में डूबता जा रहा हो। अभी-अभी लिखी 17 पन्नों की कहानी से घृणा हो रही है: एक भालू द्वारा मारे गए एक आदमी के बारे में एक नीरस, बनावटी रचना, जाहिर तौर पर इसलिए क्योंकि उसकी पत्नी ने ऐसा चाहा था, लेकिन उसमें निहित गहरे भावनात्मक उतार-चढ़ावों को न तो छुआ गया है और न ही विकसित किया गया है। मानो छोटे-छोटे पारदर्शी ढक्कनों ने मेरे अनुभवों की उथल-पुथल और गहराई को ढक रखा हो। जैसे सुंदर कृत्रिम मूर्तियाँ खड़ी कर दी गई हों। मैं खुद से बाहर नहीं निकल पा रहा हूँ। टैटू वाली कहानी में तो मैंने बेहतर किया था: उसमें मुझे एक बाहरी दुनिया मिली थी। कविताएँ कहीं नहीं हैं।
खिड़की के बाहर गीला फर्न
कल, टेड के स्टूडियो में आर्थर मिलर पढ़ते हुए, चूल्हे पर मेरे पैरों के तलवे झुलस रहे थे, मैंने खुद से कहा। जब मैं सोचती हूँ कि मेरा लेखन कुछ भी नहीं है, कुछ भी नहीं बन पा रहा है, तो मुझे बेबसी महसूस होती है: क्योंकि मेरे पास कोई और काम नहीं है—न पढ़ाना, न प्रकाशन। और सारा समय अपने पास रखने का अपराधबोध

मुझमें बढ़ता जा रहा है। मैं गिलहरी की तरह पैसे जमा करना चाहती हूँ। लेकिन पैसा क्या करेगा? यहाँ हम शानदार भोजन करते हैं: स्वीटब्रेड, सॉसेज, बेकन और मशरूम; हैम और नरम नारंगी शकरकंद; चिकन और हरी फलियाँ। मैं सब्जी के बगीचे में घूमी, झाड़ियों पर फलियाँ लटकी हुई थीं, पीले और नारंगी रंग के कद्दू, पत्तियों की छाया में फल-फूल रहे थे, मक्का, बेल पर बैंगनी होते अंगूर, अजमोद, रूबर्ब। और सोचने लगी कि मेरी जवानी के ठोस, आत्मविश्वास से भरे, उद्देश्यपूर्ण दिन कहाँ गायब हो गए। मैं मध्य आयु की सही, समृद्ध, फलदायी दुनिया में कैसे प्रवेश करूँगी? जब तक मैं काम नहीं करती। और उन आरोप लगाने वाले, कभी संतुष्ट न होने वाले देवताओं से छुटकारा नहीं पाती जो कांटों के ताज की तरह मुझे घेरे हुए हैं। खुद को भूल जाओ, खुद को। दुनिया का माध्यम बनो, एक ज़बान बनो, एक आवाज़ बनो। अपने अहंकार को त्याग दो...
सुबह की रोशनी में सब कुछ संभव है; यहां तक कि देवता बनना भी। शुक्रवार, 25 सितंबर। फिर से टेड को मछली पकड़ने की तैयारी करते सुनकर नींद खुली। नींद से जगाए जाने पर मूर्खतापूर्ण ढंग से बड़बड़ाया: इतना तो किसी को भी अपनी पत्नी को जान से मारने पर मजबूर कर सकता है। जब तक मैं खुद न उठूँ, वह चुपचाप बिस्तर पर क्यों पड़ा रहे? बेतुका। फिर भी मैं एक बुरे सपने से जागी। ओह, मेरे पास तो ऐसे सपने भरे पड़े हैं। इन्हें अपने तक ही रखूँ, वरना दुनिया को उदास कर दूँगी। मैंने एक तेज़ ऐंठन के साथ एक सामान्य आकार के बच्चे को जन्म दिया, बस वह पाँच महीने का नहीं था। मैंने काउंटर पर पूछा कि सब ठीक है या नहीं, कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं है, और नर्स ने कहा: "ओह, इसकी नाक में गर्भाशय का एक हिस्सा है, लेकिन दिल में कोई समस्या नहीं है।" यह कैसे हो सकता है? गर्भ में दम घुटने का प्रतीक? माँ की छवि, जिसकी आँखें नेत्र

बैंक ने निकाल ली हों। सपना नहीं, बल्कि एक दृश्य। मैं फिर से आत्म-दमन महसूस कर रही हूँ। वही पुरानी बीमारी। जब से आई हूँ, मैंने जर्मन नहीं पढ़ी है। कला की किताबें भी नहीं पढ़ी हैं। मानो इसके लिए मुझे किसी शिक्षक की अनुमति की ज़रूरत हो।
कल मैंने करीब एक घंटा याड्डो पुस्तकालय के बारे में नोट्स लिखने में बिताया, क्योंकि सभी मेहमानों के जाने के बाद इस शानदार इमारत को इस सप्ताहांत बंद कर दिया जाएगा। प्रसिद्ध बोर्ड। जॉन चीवर, रॉबर्ट पेन वॉरेन। मेरे पास उनसे कहने के लिए कुछ नहीं है। अगर मेरा आंतरिक जीवन समृद्ध होता तो शायद कोई फर्क नहीं पड़ता, लेकिन वह तो बिल्कुल खाली है। क्या डिग्री लेने से मुझे मदद मिलेगी? मुझे बहुत कुछ और जानना होगा, पढ़ाई करनी होगी, अपनी समझ को लगातार विकसित करना होगा, लेकिन मैं यह सब खुद क्यों नहीं कर सकता? मेरी इच्छाशक्ति कहाँ है? जीवन का विचार मेरे जीवन में बाधा बन रहा है। मानो अंग्रेजी में मेरी रुचि ने मुझे अपंग कर दिया हो: फिर भी यह अनगिनत प्रोफेसरों का सहारा है, और वे अपना जीवन यापन करते हैं। हमेशा नौकरी पाने की, काम करने की यह तीव्र आवश्यकता बनी रहती है, ताकि मेरे जीवन का उद्देश्य स्थिर रहे।
कल, वो बड़ी, मोटी, बाघ जैसी बिल्ली जो हमेशा गैराज के पास हमें घेर लेती है और पिछली बार जब हमने उसे सहलाया था तो टेड को काट लिया था, उसने श्रीमती मैनशन के हाथ पर इतनी बुरी तरह काट लिया कि उन्हें अस्पताल जाना पड़ा। मुझे लगता है कि वे बिल्ली को मारने वाले हैं। वो कहीं नज़र नहीं आ रही। श्रीमती ए. ने भी अपनी बिल्ली को मारने का ऐलान कर दिया, उन्होंने रात के खाने के समय अचानक कहा: “उसने मेरी ज़िंदगी तंग कर दी है। वो नौ साल जी चुकी

है, बस बहुत हो गया।” अचानक इस तरह की बात कहना उनके लिए अजीब और बेरुखी भरा था…
अभी तक एक अच्छी कविता लिखी है: एक मृत साँप पर आधारित बिम्बशैली की रचना। एक विस्तृत संस्मरण या 'कॉर्नुकोपिया' पर काम कर रही हूँ। अगली बार एक साधारण लड़की के चरित्र में एक खेत की कहानी लिखने की कोशिश करूँगी: यूडोरा वेल्टी की रचनाएँ ज़ोर से पढ़ूँगी। जीन स्टैफ़ोर्ड की तुलना में यूडोरा वेल्टी में कहीं अधिक रंग और दुनिया नज़र आती है।
ततैया रोशनदान में इकट्ठा होकर झुंड बनाती हैं, फिर गायब हो जाती हैं। मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। चीड़ के पेड़ों के बीच से छनकर आती धूप, पत्तियों पर चमकती हुई। कौवे कांव-कांव करते हैं। पक्षी चहचहाते हैं। कहानियों के लिए घटनाओं की सूची बनाएं। कविता के विषय ढूंढें। सांप वाली कविता के बाद, मेरी किताब की सारी कविताएं भूतों और अलौकिक धुंध के बारे में हैं— मुझे यकीन है कि आर. फ्रॉस्ट इसे स्वीकार नहीं करेंगे, लेकिन काश वे जल्दी से मुझे बता दें।
शनिवार, 26 सितंबर… कल रात संगीत कक्ष में श्वार्जकोफ को शुबर्ट के गीत गाते हुए सुना। मैं अत्यंत भावुक हो गया, “हू इज सिल्विया?” और “मीन रुह इस्त हिन” सुने, कुछ शब्द इधर-उधर बिखरे हुए थे: अपने अतीत का एक गहरा एहसास हुआ, जिससे मैं भाषा के अज्ञान के कारण अलग-थलग पड़ गया हूँ, और इस अज्ञान को पार करना मेरे लिए कठिन है।
यूडोरा वेल्टी, जीन स्टैफोर्ड की रचनाएँ खूब पढ़नी चाहिए, कैथरीन ऐन पोर्टर की रचनाएँ भी अवश्य पढ़नी चाहिए। “अ वॉर्न पाथ”, “लिव्वी”, “द व्हिसल” को ज़ोर से पढ़ें। इससे मुझे अपनी पसंद की रचनाओं को ज़बान पर महसूस करने का मौका मिलता है। “द

इंटीरियर कैसल” असहनीय पीड़ा का एक भयावह और डरावना चित्रण है…
मुझे ऐसी गहरी कहानियों में उतरना होगा जहाँ मेरे सारे अनुभव मेरे लिए उपयोगी हों। एक व्यक्ति के नज़रिए से कहानी सुनाओ: खुद से शुरू करो और आगे बढ़ो: तभी मेरा जीवन दिलचस्प होगा, न कि कांच के पिंजरे जैसा। काश, मैं एक कहानी के ज़रिए इस दायरे को तोड़ पाता। "जॉनी पैनिक" तो बहुत ही काल्पनिक है। काश, यह हकीकत बन पाता।
कल रात मैंने सपना देखा कि मेरे पिताजी लोहे से हिरण की मूर्ति बना रहे थे, जिसमें धातु की ढलाई में खामी थी। हिरण अचानक जीवित हो उठा और टूटी गर्दन के साथ पड़ा रहा। उसे गोली मारनी पड़ी। मैंने पिताजी को दोष दिया कि उन्होंने कलाकारी की खामी से उसे मार डाला। क्या इसका यहाँ की बीमार बिल्लियों से कोई संबंध है? के. ए. पोर्टर लिखते समय लोगों से बात नहीं कर सकतीं और न ही उनके साथ खाना खा सकती हैं...
कल हवेली के पिछले दरवाजे पर एक भयानक पादरी आया, उसका चेहरा एकदम लाल और खुरदुरा था, ऐसा लग रहा था जैसे गाजर खुरचने वाली मशीन से खुरचा गया हो। उसने काला कोट और सफेद नेकबैंड पहना हुआ था। उसने जिम शैनन के बारे में पूछा। मुझे नहीं पता था कि वह कहाँ है। वह कुछ चबा रहा था, अजीब सी आवाज़ें निकाल रहा था और कुछ सिक्के आपस में रगड़ रहा था। उसने मुझसे और उसकी पत्नी (?) से हवेली घुमाने को कहा। मुझे एकदम ठंड लग गई और मैंने कहा कि मुझे ऐसा करने का अधिकार नहीं है। तुम क्या हो, लेखक हो क्या? एक घिनौना, अज्ञानी और अजीब तरह से घिनौना आदमी...
…मैं बहुत अधीर हूँ। फिर भी सबसे ज़रूरी बात है अच्छा काम जमा करना। अगर, अगर मैं अपने भावों को व्यक्त करने वाली सार्थक गद्य

रचना कर पाती, तो मैं मुक्त हो जाती। एक शानदार जीवन जीने के लिए मुक्त। जब मैं बोल नहीं पाती, तो मैं हताश हो जाती हूँ। मुझे खुद को वाचालता के कई तरीकों में उलझाना पड़ता है… मेरा पहला काम है अपने वास्तविक अनुभव को एक पुराने घाव की तरह खोलना; फिर उसे विस्तार देना; फिर पलक झपकते ही एक पूरे रंग-बिरंगे पक्षी की रचना करना। एक-दो न्यू यॉर्कर लेखकों का अध्ययन करो। जैसे कि अब विपुल लेखिका मेविस जी।
मंगलवार, 29 सितंबर। धुंध भरा बरसाती दिन। नींद में डूबी चिड़ियों की चहचहाहट। पेशेवर कहानीकारों की गद्य की दृढ़ता का बोझ मुझ पर था: कुछ ऐसा जिसके मैं अभी तक करीब भी नहीं आया हूँ। गैराज के कमरे में देर से नाश्ता किया: किसी निजी छात्रावास, संस्था या मानसिक अस्पताल की याद दिलाता हुआ। मोम से पॉलिश किया हुआ लिनोलियम, सीधी पुआल की पीठ वाली कुर्सियाँ, ऐशट्रे और किताबों की अलमारियाँ, और विशाल नीले कांच के अंगूर। कल लिखी अपनी कहानी 'पिलर्स' के दो पन्नों को देखा और उनकी सतहीपन पर घृणा महसूस की। फिर से वही चमक। भावनाओं की गहराई को अंदर आने से रोक रही है। मैं शायद बाज़ारों और चीज़ें भेजने के स्थानों के बारे में इतना ज़्यादा सचेत हूँ कि मैं कुछ भी ईमानदार और संतोषजनक नहीं लिख पाता। मेरे बुखार भरे सपने महज़ कल्पनाएँ हैं; मैं न लिखता हूँ, न काम करता हूँ, न पढ़ता हूँ।
बेशक मैं दुनिया के आईने पर निर्भर हूँ। मुझे एक कविता पर पूरा भरोसा है, साँप वाली। इसके अलावा, कोई विषय नहीं। दुनिया एक खाली पन्ना है। मुझे चीड़ के पेड़ों के नाम तक नहीं पता, और इससे भी बुरा, मैं उन्हें सीखने की कोई कोशिश भी नहीं करता। न ही तारों के। न ही फूलों के। कल मैंने मे स्वेंसन की किताब पढ़ी। कई कविताएँ मुझे पसंद आईं: "स्नो बाय मॉर्निंग" और अंडे पर

आधारित एक बेहतरीन बिम्बवादी रचना, "एट ब्रेकफास्ट"। सुंदर और चतुर ध्वनि प्रभाव, सजीव बिम्ब: लेकिन कलाकारों और उनके आकार, बनावट और रंगों पर आधारित कविता में, यह महज़ दिखावटी कलाबाज़ी लगती है, जिसका कोई आधार नहीं। "अल्मानैक" भी मुझे पसंद आई, जो दुनिया के इतिहास के बारे में है जिसे चाँद से मापा जाता है, एक हथौड़े से जो अंगूठे के नाखून पर बना है।
मैं ऐसे लिखता हूँ मानो कोई मुझे देख रहा हो। यह घातक है। द न्यू यॉर्कर ने मेरे दो अभ्यासों को अस्वीकार कर दिया: मानो उन्हें पता था कि वे अभ्यास ही हैं। वे अभी भी क्रिसमस कविता पर "विचार" कर रहे हैं, हालाँकि मुझे यकीन है कि वे उसे स्वीकार नहीं करेंगे। असफलता का तनाव। स्क्रीन पर एक काला ततैया बैठा है, अपने पीले पड़ चुके सिर को खुजला रहा है और चमका रहा है। फिर से बारिश पूल टेबल के रंग की छतों पर बरस रही है।
अगर मैं अपने दिमाग से प्रतिस्पर्धा के भ्रम, आत्म-चेतना के अहंकार-केंद्र को हटा सकूँ और दूसरों, यानी बाहरी दुनिया का एक शुद्ध माध्यम बन सकूँ। दूसरों में मेरी रुचि अक्सर तुलना करने की होती है, न कि उनकी अनूठी भिन्नता के प्रति जिज्ञासा की। आदर्श रूप से, यहाँ मुझे दिखावे, प्रकाशन, चेक, सफलता की बाहरी दुनिया को भूल जाना चाहिए और अपने अंतर्मन के प्रति सच्चा रहना चाहिए। फिर भी मैं अपनी सरल मानसिकता, अपने आत्ममुग्धता और प्रतिस्पर्धा से बचने के लिए बनाए गए सुरक्षात्मक कवच से लड़ता रहता हूँ, ताकि मुझे अपनी कमियों का एहसास न हो।
अपने लिए लिखना, आनंद के लिए काम करना। ईश्वर का कितना बड़ा उपहार है!

अगाथा की कल्पना कीजिए: एक पागल, जोशीली अगाथा। मैं तुरंत चाहती हूँ कि उसका पति मधुमक्खी पालन करे, जबकि मुझे मधुमक्खियों के बारे में कुछ भी नहीं पता। मेरे पिता को तो सब कुछ पता था। मैंने जीवन के कितने ही पहलू देखे हैं: प्रेम, मोहभंग, पागलपन, घृणा, हत्या की प्रवृत्ति।
ईमानदारी कैसे बरती जाए? मुझे शुरुआतें, झलकियाँ तो दिखती हैं, लेकिन उन्हें समझदारी से व्यवस्थित करके पूरा कैसे किया जाए? मैं बेतुकी कहानियाँ लिखूँगी। लेकिन ईमानदारी से। मैं आदिम भावनाओं, जुनूनों की भयावहता को जानती हूँ। अंधकार की माँ के विरुद्ध दस पन्नों का तीखा व्यंग्य। ममी। परछाइयों की माँ। इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स का विश्लेषण।
बुधवार, 30 सितंबर। आज सुबह जब मैं अंधेरे, उमस भरे कमरे में उठी, चारों ओर बारिश की आवाज़ सुन रही थी, तो मुझे लगा जैसे मैं ठीक हो गई हूँ। उस कंपकंपी भरी धड़कन से ठीक हो गई हूँ जिसने पिछले दो दिनों से मुझे इतना परेशान कर रखा था कि मैं मुश्किल से सोच या पढ़ पा रही थी, क्योंकि मुझे अपना हाथ अपने दिल पर रखना पड़ता था। ऐसा लग रहा था जैसे कोई जंगली पक्षी हड्डियों के पिंजरे में फँसा हो, बस फटने ही वाला हो, और हर धड़कन से मेरा पूरा शरीर काँप रहा हो। मेरा मन कर रहा था कि मैं अपने दिल को मारूँ, उसे छेद दूँ, बस उस बेतुकी धड़कन को रोकने के लिए जो मानो मेरी छाती से बाहर निकलकर दुनिया में अपना रास्ता बनाने के लिए निकल जाना चाहती थी। मैं लेटी रही, गर्म, अपना हाथ अपनी छाती के बीच रखे, नींद से जागने और अपने शांत, स्थिर, सहज दिल की धड़कन का आनंद ले रही थी। मैं उठी, हर पल हिलने की उम्मीद कर रही थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जागने के बाद से मैं आराम में हूँ…

मैंने कल ही मम्मी के बारे में दो पन्ने लिखना शुरू किया। अगर मैं इसे ईमानदारी से कर पाऊं तो। बीस-बीस पन्नों के अध्याय किसी भयानक सपने से कम नहीं हैं। फिर मैं उन्हें इकट्ठा करके कुछ अजीबोगरीब पत्रिकाओं में प्रकाशित करने के बारे में सोचूंगा। ये बिल्कुल गैर-व्यावसायिक हैं: कोई कहानी नहीं, कोई स्थिर व्याकरण नहीं, जैसा कि पॉल एंगल अपनी सर्वश्रेष्ठ अमेरिकी लघु कहानी के लिए चुनते हैं... काश मैं इस माँ की कहानी में थोड़ा सा डर भर पाता।
शनिवार, 3 अक्टूबर… कोई कविता नहीं। ममी की कहानी संदिग्ध है। क्या यह महज़ स्त्रीत्व का दिखावा है, क्या इसमें कोई आतंक है? क्या अगर यह वास्तविक होती तो इसमें और भी कुछ होता? क्या इसमें वास्तविक बाहरी दृश्य होते? जैसा कि यह है, यह एक पागल औरत का एकालाप है। [इस कहानी की कोई प्रति नहीं बची है।] सपने: परसों रात, यूरोप जाने वाले जहाज के लिए सामान पैक करने की दो दिन की भयानक भागदौड़: टेड की याद यहाँ-वहाँ, घंटे बीतते जा रहे थे और मैं अभी भी अपने टाइपराइटर केस में अजीब स्वेटर और किताबें ठूंस रही थी। पिछली रात मैं यहूदियों के बीच रही। धार्मिक अनुष्ठान, सोने के प्याले से दूध पीना और एक नाम दोहराना: मंडली ने भी उसी समय छोटे प्यालों में दूध पिया, काश वे उसमें शहद मिला देते। तीन गर्भवती महिलाओं के साथ बैठी थी। मेरी माँ मेरी गर्भावस्था पर क्रोधित थी, मेरी भद्दीपन को दर्शाने के लिए उपहासपूर्वक एक विशाल लपेटने वाली स्कर्ट निकाल लाई। इसमें भी पी.डी.

t। मेज के नीचे अपने पैरों के बाल साफ़ करना: पिता, यहूदी, मुखिया: कृपया अपनी तलवार मेज पर न लाएँ। बहुत अजीब...
रविवार, 4 अक्टूबर। कल रात सपने में मर्लिन मोनरो एक परी जैसी बनकर मेरे सामने प्रकट हुईं। मुझे लगता है कि यह दर्शकों के साथ

बातचीत का एक ऐसा अवसर था, जैसा कि एलियट के साथ हुआ था। मैंने लगभग रोते हुए बताया कि वह और आर्थर मिलर हमारे लिए कितने मायने रखते थे, हालांकि वे हमें बिल्कुल भी नहीं जानते थे। उन्होंने मेरे बालों की बेहतरीन मैनीक्योर की। मैंने अपने बाल नहीं धोए थे और उनसे हेयरड्रेसर के बारे में पूछा, यह कहते हुए कि मैं जहाँ भी जाती हूँ, वे हमेशा मेरे बाल खराब तरीके से काट देते हैं। उन्होंने मुझे क्रिसमस की छुट्टियों में अपने घर आने का निमंत्रण दिया और एक नए, खुशहाल जीवन का वादा किया।
मैंने ममी की कहानी पूरी कर ली, जो असल में प्रतीकात्मक और भयानक कल्पनाओं का एक सरल वर्णन है। फिर आज सुबह जब मैंने अपनी सुस्ती से बाहर निकलने की कोशिश की और ढेर सारे कपड़े और बाल धोए, तो मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ। जंग के केस हिस्ट्री में मेरी कहानी की कुछ छवियों की पुष्टि मिली। एक बच्चा जो एक प्यारी, सुंदर माँ का सपना देखता है, जो चुड़ैल या जानवर जैसी दिखती है: माँ बाद में पागल हो जाती है, सूअरों की तरह गुर्राती है, कुत्तों की तरह भौंकती है, भालुओं की तरह दहाड़ती है, जैसे कि वह वेयरवोल्फ बन गई हो। "शतरंज की बिसात" शब्द का प्रयोग भी इसी तरह की स्थिति में किया गया है: एक कथित रूप से प्यार करने वाली लेकिन महत्वाकांक्षी माँ जो बच्चे को "अपने अहंकार की बिसात" पर नचाती है; मैंने "अपनी इच्छा की बिसात" का प्रयोग किया था। फिर खाने वाली माँ या दादी की छवि: पूरी तरह से मुँह, जैसे रेड राइडिंग हुड में (और मैंने भेड़िये की छवि का प्रयोग किया था)। यह सब मेरे सहज विचारों को पूरी तरह से मान्य मनोवैज्ञानिक विश्लेषण से बहुत ही सार्थक तरीके से जोड़ता है। हालाँकि, मैं पीड़ित हूँ, विश्लेषक नहीं। मेरी "कल्पना" केवल उस बात का नग्न पुनर्निर्माण है जिसे मैंने बचपन में और बाद में भी सच माना।

अब, बिकने योग्य कहानियों को भूल जाइए। किसी मनोदशा, किसी घटना को जीवंत करने के लिए लिखिए। अगर इसे रंग और भावना के साथ किया जाए, तो यह एक कहानी बन जाती है। इसलिए याद करने की कोशिश कीजिए: ... अनुभव को अपने हिसाब से ढालने के बजाय, उसे अपने आप प्रकट होने दीजिए और उन सभी सूक्ष्म, विचित्र जुड़ावों के साथ खुद को फिर से जीवंत करने दीजिए जिन्हें तार्किक मन नकार देता है।
मंगलवार, 6 अक्टूबर। कल बहुत ही उदास और परेशान था। आसमान में बादल छाए हुए थे, आसमान धुंधला था, लेकिन राहत नहीं मिल रही थी। पूरा दिन पॉली के पेड़ के बारे में एक सूक्ष्म और सलीकेदार कविता लिखने में बिताया। थोड़ा संकोच भरा, लेकिन काफी मजेदार। पाउंड की रचनाएँ जोर से पढ़ीं और मंत्रमुग्ध हो गया। याद करने से एक धार्मिक शक्ति मिलती है। हर दिन एक लंबी और एक छोटी कविता याद करने की कोशिश करूंगा। सुबह सबसे पहले उन्हें पढ़ना, दोपहर के भोजन के समय उनकी समीक्षा करना और चाय के समय उन पर चर्चा करना सबसे अच्छा है। मैं उन्हें अपना गुरु बनाना चाहता हूँ। उनकी अकाट्य, अटल, अनगिनत और सहज पंक्तियाँ। एक ऐसा कथन जो कोड़े की तरह चुभता है। हे भगवान!
हेनरी होल्ट ने कल रात बेहद अस्पष्ट पत्र लिखकर मेरी किताब को अस्वीकार कर दिया। मैं रो पड़ी, क्योंकि मैं इस किताब से छुटकारा पाना चाहती हूँ, इसे छपे हुए रूप में हमेशा के लिए मिटा देना चाहती हूँ ताकि अब मैं जो कुछ भी लिखना चाहती हूँ, वह इसमें समा न जाए। टेड ने सुझाव दिया: एक नई किताब शुरू करो। ठीक है, मैं एक साँप से शुरुआत करूँगी, और बस पुरानी किताब को बार-बार भेजती रहूँगी। साथ ही मैक्स निक्स को भी बिना शब्दों के, यहाँ तक कि

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...

…क्या स्मृति का मार्ग इतना पीड़ादायक है कि मैं उस पर चलना नहीं चाहती, उदासी से लदी, खोई हुई सुंदरताओं और सपनों से भरी हुई? पेरिस के आकाश और छतें, हरी-भरी सीन नदी, लंदन के ब्रिटिश संग्रहालय की नक्काशी। एक बार, एक बार मैंने शुरू कर दिया, तो सब ठीक हो जाएगा। एक कहानी: क्या मैं एक साल इस पर काम करने के लिए लगाऊँ? फिर, अगर सब कुछ पूरा नहीं हुआ, तो उसके बाद एक साल? एक कहानी, और मैं शुरू कर चुकी होती। अब मैं एक विषय से दूसरे विषय पर भटकती रहती हूँ: खेत? मायोस? स्पेन? पेरिस? मुझे एक चुनना होगा। केवल वही कहानियाँ जिन्हें मैं दोबारा पढ़ सकती हूँ, वे हैं "द विशिंग बॉक्स", "जॉनी पैनिक", "द ममी" और "द टैटूइस्ट"। बाकी सभी - "द ऑक्सबो", "द कॉर्नुकोपिया", "द फिफ्टी-नाइंथ बेयर", और "स्वीटी पाई एंड द हॉस्पिटल" - आँसुओं से भी फीकी हैं। शुरू करो, शुरू करो।
10 अक्टूबर, शनिवार… न्यू यॉर्कर ने विंटर्स टेल कविता को स्वीकार कर लिया। हार्पर द्वारा अस्वीकृति के बाद मुझे बहुत खुशी हुई।
अजीब तरह से खालीपन महसूस हो रहा है। मेरी बीमारी तब होती है जब शब्द अपने शिकंजे में सिमट जाते हैं और भौतिक दुनिया को व्यवस्थित, पुनर्निर्मित, क्रमबद्ध और चयनित करने से इनकार कर दिया जाता है। तब मैं इसका शिकार होता हूँ, स्वामी नहीं।
मैं एलिजाबेथ बिशप को अत्यंत प्रशंसा के साथ पढ़ रहा हूँ। उनकी उत्कृष्ट मौलिकता, जो हमेशा चौंका देती है, कभी कठोर नहीं होती, प्रवाहमयी और उनकी धर्ममाता मैरिएन मूर से भी अधिक रसदार है… मैं कब कविता की नई पंक्ति लिख पाऊँगी? घिसा-पिटा सा लगता है। काश मुझे एक अच्छी कहानी मिल जाती। मैं बहुत सपने देखती हूँ, काम बहुत कम करती हूँ। मेरी चित्रकारी तो बिल्कुल ही बिगड़ गई

है, फिर भी मुझे याद रखना चाहिए कि मैं हमेशा शुरुआत में खराब चित्र ही बनाती हूँ।
जर्मन और फ्रेंच भाषाएँ सीखने से मुझे आत्मसम्मान मिलेगा, तो मैं इस पर अमल क्यों नहीं करता?
13 अक्टूबर, मंगलवार। आज बहुत उदास हूँ। कुछ भी लिखने का मन नहीं कर रहा। डरावने देवता। मैं एक ठंडे तारे पर अकेला महसूस कर रहा हूँ, एक भयानक असहाय सुन्नता के सिवा कुछ भी महसूस नहीं कर पा रहा। मैं नीचे इस गर्म, धरती से जुड़ी दुनिया को देखता हूँ। प्रेमियों के पलंगों, बच्चों के पालनों, खाने की मेजों, इस धरती पर जीवन के सभी ठोस लेन-देन के बीच, और खुद को अलग-थलग, कांच की दीवार में घिरा हुआ महसूस करता हूँ। अपने काम की आशा और वादे के बीच फंसा हुआ हूँ—एक-दो कहानियाँ जो कुछ पकड़ती हुई लगती हैं, एक-दो कविताएँ जो शब्दों का एक छोटा सा रंगीन द्वीप बनाती हैं— और उस वादे और दूसरों की कविताओं, कहानियों और उपन्यासों की वास्तविक दुनिया के बीच की निराशाजनक खाई के बीच। मेरी कल्पना की शक्ति मुझसे बहुत दूर है। कम से कम मैंने जर्मन पढ़ना शुरू कर दिया है। दर्दनाक, मानो "मेरे दिमाग का एक हिस्सा काट दिया गया हो।" बेशक, गलती मेरी ही है। खुद को फिर से सुन्न कर रहा हूँ, और दिखावा कर रहा हूँ कि कुछ है ही नहीं। यही इस घमंड का अभिशाप है। किसी पात्र, किसी स्थिति में खुद को खो देने में मेरी असमर्थता। हमेशा मैं, मैं ही। अगर मैं कुछ लिख ही नहीं रही, तो प्रकाशित होने का क्या फायदा? काश, उपन्यास के विचार से ज़्यादा मेरे लिए कुछ लोग महत्वपूर्ण होते, तो शायद मैं उपन्यास लिखना शुरू कर देती। छोटी-छोटी बनावटी कहानियाँ जिनमें जीवन की भावना, यहाँ तक कि नाटक भी नहीं झलकता। जबकि उन्हें जीवन से कहीं ज़्यादा वास्तविक, कहीं ज़्यादा गहन होना

चाहिए। और मैं इसके अलावा किसी और चीज़ के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं तो पहले से ही मर चुकी हूँ। ज्योतिष और वनस्पति विज्ञान में रुचि दिखाने का नाटक करती हूँ, जिन्हें मैं कभी आगे नहीं बढ़ाती। घर जाकर मुझे टैरो कार्ड, नक्षत्र और जर्मन भाषा सीखनी पड़ती है। पढ़ाई में फ्रेंच भी जोड़नी पड़ती है। कुछ लोगों के लिए यह सब इतना आसान होता है। टेड मेरा सहारा है। वह इतना अनोखा, इतना खास है, भला कोई और मुझे कैसे बर्दाश्त कर सकता है! वरना, मैं पीएचडी कर लेती, न्यूयॉर्क में पढ़ाती या कोई और करियर चुन लेती। हमारी इस बेतरतीब भटकन में इस तरह से कुछ कर पाना मुश्किल है।
एक और बात जो मुझे डरा देती है, वो है मेरी भूलने की आदत: एक समय था जब मैं प्लेटो, जेम्स जॉयस आदि को अच्छी तरह जानता था। अगर ज्ञान का उपयोग न किया जाए, उसकी समीक्षा न की जाए, उसे ताज़ा न रखा जाए, तो वो सरगासो के घोल में धंस जाता है और उस पर काई जम जाती है। कोई ऐसा काम जो मुझे अलग-अलग जीवन से रूबरू कराए, मददगार साबित हो सकता है। एक पत्रकार, एक समाजशास्त्री, कुछ भी। शायद इंग्लैंड में मेरी किस्मत चमक जाए। वे एक तरह से यहाँ के मुकाबले कम "पेशेवर" हैं। शौकिया लोगों के लिए ज़्यादा खुले दिल के। कम से कम मुझे तो ऐसा ही लगता है।
मैं इस छोटी-मोटी कमाई से संतुष्ट नहीं हो पा रहा हूँ। क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर से कविताओं और चित्रों के लिए यहाँ- वहाँ से दस-दस डॉलर कमाना कितना आसान है! आज सुबह मेरी दो कविताएँ स्वीकार हुईं: याड्डो और मैग्नोलिया शोल्स पर मेरे "अभ्यास"। फिर भी, सफलता के धुंधले सपने के लिए मैं तरसता हूँ। मेरी कविता संग्रह, मेरी बच्चों की किताब का प्रकाशन। मानो बचपन में पुरस्कार जीतकर जिस प्रेम के देवता को मैंने खोजा था,

वह और भी विशाल और अतृप्त हो गया हो। मुझे इसे रोकना होगा। नारंगी मशरूम, नीले पहाड़ से प्रेम करना होगा, उन्हें ठोस रूप से महसूस करना होगा, उनसे कुछ बनाना होगा। संपादकों और लेखकों से दूर रहना होगा: उस पेशेवर दुनिया से बाहर एक जीवन बनाना होगा जिसमें मैं काम करता हूँ।
टेड से सीख लो। वह लगातार काम करता रहता है। बार-बार लिखता है, संघर्ष करता है, खुद को खो देता है। मुझे आत्मनिर्भरता के लिए मेहनत करनी होगी। उसे गर्व महसूस कराना होगा। अपने दुख और निराशा को अपने तक ही सीमित रखना होगा। आत्मसम्मान के लिए लगातार मेहनत करनी होगी: भाषा का अध्ययन करना होगा, खूब पढ़ना होगा। मेहनत करो, जल्दबाजी में लिखे गए किसी बेजान लेख से चमत्कार की उम्मीद मत रखो।

* * *

19 अक्टूबर, 1959, सोमवार। मेरी अधिकांश परेशानी मेरी पुरानी निडरता, मेरी निर्भीक निर्भीकता के कम होने से जुड़ी है। साहस और स्फूर्ति की एक आत्म-सम्मोहन अवस्था मेरे मन में उठने वाले उदास विचारों को नष्ट कर देती है। मैंने पिछले कुछ दिनों में टेड के "अभ्यास" को आजमाया: गहरी साँस लेना, चेतना की धारा पर ध्यान केंद्रित करना, और दो कविताएँ लिखीं जो मुझे पसंद आईं। एक निकोलस के लिए, और दूसरी पिता-पूजा के पुराने विषय पर। लेकिन अलग। विचित्र। मुझे इन कविताओं में एक चित्र, एक मौसम दिखाई देता है... मुख्य बात यह है कि इस विचार से छुटकारा पाना है कि मैं अब जो कुछ भी लिखता हूँ वह पुरानी किताब के लिए है। उस नीरस किताब के लिए। इसलिए मेरे पास नई किताब के लिए तीन कविताएँ हैं, जिसका अस्थायी नाम 'द कोलोसस एंड अदर पोएम्स' है।

मैविस गैलेंट से जुड़ाव। बेटी-माँ के रिश्ते पर आधारित उनका उपन्यास, जिसमें बेटी आत्महत्या कर लेती है। एक ऐसा उपन्यास, जो बेबाक और अहंकारी है, मेरे जीवन के दिनों, मेरे एक साल का समाधान हो सकता था। अगर मैं लिखते समय ही निर्णय लेने की आदत न डाल लेती, हमेशा बोलने से पहले ही अस्वीकार न कर देती। मुख्य चिंता: एक ऐसा पात्र जो मैं स्वयं नहीं हूँ—वह एक रूढ़िवादी, दुखद और आत्ममुग्ध पात्र बन जाता है।
एक खूबसूरत नीला दिन। मन को शांति देने वाला मौसम। ठंड है, और मेरा हारकोर्ट फॉर्म अस्वीकार हो गया। टेड कहता है: तुम बहुत नकारात्मक हो। गुस्सा आता है, हताश हो जाता है। मैं अपना मालिक खुद हूँ। काल्पनिक चीजों से ईर्ष्या करना मूर्खता है। मुझे अपने तरीके से ही सोचना चाहिए। ये तीन नई कविताएँ उत्साहवर्धक हैं। कल का दिन उतना अच्छा नहीं था—मेरी मम्मी की कहानी में बगीचे के गद्य चित्रण से बहुत जुड़ा हुआ था। मुझे डाक का इंतजार नहीं करना चाहिए क्योंकि इससे दिन खराब हो जाता है। दुनिया के फैसले की चिंता किए बिना काम करो। मैं फिर भी करूँगा।
एक और बात: दुनिया में अपनी "स्थिति" की चिंता करना छोड़ देना। एक और भ्रम। मैं हूँ। इतना ही काफी है। मेरे पास देखने का एक अच्छा तरीका है जिसे मैं विकसित कर सकता हूँ, बशर्ते मैं श्रोताओं के बारे में सोचना छोड़ दूं।
टेड आदर्श है, एकमात्र संभव व्यक्ति है।
दो दिन जर्मन भाषा पर काम किया, फिर कविताएँ लिखने के लिए थोड़ा आराम किया। इसे जारी रखना होगा। यह कठिन है। वैसे भी, करने लायक ज़्यादातर काम कठिन ही होते हैं।
पात्रों और दूसरों की भावनाओं में स्वयं को पूरी तरह से डुबो दें—उन्हें सतही तौर पर न देखें। छल और भावनाओं की तह तक जाएं।

सेंट-जॉन पर्स की रंगीन, दालचीनी की सुगंध से भरपूर दुनिया। निष्कासन का इनाम पाने की पुरानी इच्छा। यह स्पष्ट है। भाई से पुरानी प्रतिद्वंद्विता। सभी पुरुष मेरे भाई हैं। और प्रतिस्पर्धा दुनिया में रची-बसी है। शिशु और कविता को क्षय और सड़न से अलग करो। वे सृजित हैं, जीवित हैं, अपने आप में अच्छे हैं, और बहुत ही अनमोल हैं। बच्चे मुझे मानवीय बना सकते हैं। लेकिन मुझे उन पर किसी भी चीज़ के लिए निर्भर नहीं रहना चाहिए। बच्चों द्वारा अस्तित्व और चरित्र को बदलने की कहानी उतनी ही बेतुकी है जितनी विवाह द्वारा ऐसा करने की कहानी। मैं यहाँ हूँ, वही पुराना खट्टा आटा। पैंतीस साल का होने में आठ साल बाकी हैं; मुझे उस समय में काम करना चाहिए: कहानियाँ, न्यू यॉर्कर या अन्य। एक उपन्यास। एक बच्चों की किताब। खुशी और पुनर्जागरण के उत्साह के साथ। यह संभव है। मुझ पर निर्भर है।
22 अक्टूबर, गुरुवार। आज नाश्ते के बाद, लिखने से पहले थोड़ी देर टहलने गई। पेड़ों के रंग इतने मनमोहक थे: पीले और लाल रंग के घने जंगल। ठंडी-ठंडी हवा में गहरी साँसें। मानो मन को शुद्ध करने वाला, मानो बपतिस्मा। मुझे लगता है कि कभी-कभी दुनिया के करीब आना, उससे प्यार करना मुमकिन है। टेड के साथ बिस्तर पर गर्माहट में मुझे एक तरह का सुकून महसूस होता है। जीवन क्या है? मेरे लिए तो यह बस कुछ छोटे-छोटे विचार हैं। ये विचार मेरे लिए ज़ालिम हैं: मेरे ईर्ष्यालु, अहंकारी अहंकार के विचार: मुझे क्या करना चाहिए, मुझे क्या करना चाहिए।
अलग-अलग खंडों से बनी एक लंबी कविता के महत्वाकांक्षी बीज: [उसके] जन्मदिन पर कविता। पागलखाने में निवास करना, प्रकृति: औजारों, ग्रीनहाउस, फूलों की दुकानों, सुरंगों के अर्थ, जीवंत

और असंबद्ध। एक रोमांच। कभी खत्म नहीं होने वाला। विकासशील।
पुनर्जन्म। निराशा। बूढ़ी औरतें। इसे भुला दो।
यह पैराग्राफ प्लाथ की कविता "ब्लू मोल्स" का मूल स्रोत है। सड़क पर दो मरे हुए छछूंदर पड़े थे। एक दूसरे से लगभग दस गज की दूरी पर। मरे हुए, उनका सारा रस चबाकर निकाल लिया गया था, बेढंगे धुएँ जैसे नीले फर के ताबूत, सफेद, पंजे जैसे हाथ, इंसानी हथेलियाँ और छोटी नुकीली, पेंचनुमा नाक ऊपर उठी हुई थीं। टेड कहता है, वे मौत तक लड़ते रहे। फिर एक लोमड़ी ने उन्हें चबा डाला।
हाइड्रोलिक रैम का शेड। काला, पानी की बूंदों से चमकता हुआ। और मकड़ी के जाले, लूप और चमकदार तार, जो पूरी संरचना को छत से लटकाए हुए हैं। भौतिकी के सिद्धांतों के विपरीत, जादू जैसा। कोई मेल नहीं। मैं कौन हूँ? एक कवि को उपन्यासकार क्यों होना चाहिए? क्यों नहीं?
सपने के कुछ टुकड़े बचे हैं: मेरे पिता फिर से जीवित हो उठे। मेरी माँ का एक छोटा बेटा है: मेरी उलझन: मेरा यह बेटा तो उसकी माँ के बेटे का जुड़वा है। एक उम्रदराज चाचा अपने भतीजे के साथ। मेरा उम्रदराज भाई मेरे बच्चे के साथ। ओह, उस पुराने पलंग की उलझनें!
कल मैंने ग्रीनहाउस के चूल्हे और कुछ गमलों का बारीकी से चित्र बनाया। एक अद्भुत सुकून मिला। मुझे इसके साथ और अधिक आत्मीयता विकसित करनी चाहिए। वह ग्रीनहाउस विषयों का खजाना है। पानी देने वाले डिब्बे, लौकी, कद्दू और कद्दू। छत से उलटी लटकी हुई कटी हुई पत्तागोभी, कीड़े लगे बैंगनी बाहरी पत्ते। औजार: रेक, कुदाल, झाड़ू, फावड़ा। वस्तुओं की अद्भुत पहचान, उनका अपनापन।

जो मैं जानता हूँ और जानता रहा हूँ, उसके प्रति ईमानदार रहना। अपनी विचित्रताओं के प्रति सच्चा रहना। रिकॉर्ड करना। मैं पहले भावनाओं को, जवानी के दृश्यों को बयां कर पाता था; अब जीवन कितना जटिल हो गया है। इस पर काम करना।
23 अक्टूबर, शुक्रवार। कल: एक अभ्यास शुरू हुआ, उदासी में, एक सुंदर, नई चीज़ में बदल गया: पागलखाने जैसी कविताओं की श्रृंखला की पहली कविता। औजारों के शेड में अक्टूबर का महीना। रोएथके का प्रभाव, फिर भी मेरा। टेड की आलोचनाएँ बिल्कुल सही। कल रात [मैल्कम] काउली से कविता प्रकाशन का जिक्र किया: उनके व्यंग्यपूर्ण, दुख भरे चेहरे ने मुझे बताया: उन्होंने मेरी किताब देखी है, या उसके बारे में सुना है, और उसे अस्वीकार कर दिया है या अस्वीकार कर देंगे। ल्यूक की पेंटिंग का सपना: चांदी जैसे नीले और हरे रंगों में रंगा एक सुंदर, सुरुचिपूर्ण गाथागीत जैसा परिदृश्य, जिसमें आदम और हव्वा लंबी घास से बाहर झुककर देख रहे हैं। लहरदार और सहज पत्तियों पर एक चमकदार गुलाबी-सफेद रोशनी, हल्के नीले रंग की छाया की गोल गुफाएँ। हाइनेमैन के एक संपादक का मेरी लंदन पत्रिका की कविताओं को देखकर एक सुंदर, स्वागतपूर्ण पत्र, जिनसे पत्रिका शुरू होती है: आशा की किरण जगी। इंग्लैंड नए सुख प्रदान करता है। मैं वहाँ एक उपन्यास लिख सकता हूँ। मैं यही कहता हूँ, मैं यही कहता हूँ। इस व्यावसायिक अमेरिकी अहंकार के बिना। मेरी गति ब्रिटिश है। टेड के साथ भीगी हुई सैर। नीले रंग की बूंदें, धुंधली हरी झीलें, मंद पीली परछाइयाँ।
1 नवंबर, रविवार। नम, ताज़ी हवा, धुंधला आसमान। पिछले हफ़्तों के सारे रंग धुएँ जैसे बैंगनी और फीके भूरे रंग में बदल गए थे। कुछ रात पहले मैंने सपना देखा कि पाँच महीने का (शायद पाँच

महीने में ही पैदा हुआ?) गोरा बच्चा, डेनिस, मेरी पीठ पर बैठा है, मेरी कमर के पास, एक भारी-भरकम, मीठी खुशबू वाला बच्चा। दोहरी हैरानी: वह इतना सुंदर, स्वस्थ और इतना कम शरारती था। टेड का कहना है कि यह मेरी गहरी आत्मा का पुनर्जन्म है। शुभ संकेत। कल रात मैंने एक उलझा हुआ सपना देखा, जिसमें दो किशोर अपराधी हमारे पुराने विन्थ्रोप घर के सामने एक अंधेरे लॉन में हमारे दूध का बर्तन फेंक रहे थे। गुस्से में आकर मैं उनमें से एक पर झपटी और सचमुच उसे अपने दाँतों और हाथों से नोंचने लगी। दूसरे ने कहा कि वह घर के अंदर जा रहा है, और मुझे लगा कि वह घर को बर्बाद कर देगा और माँ को चोट पहुँचाएगा। (कल रात हैलोवीन के लिए बच्चों को बाहर जाते देखकर, किशोरों के उस गिरोह को देखकर?)
मैं अपनी कविताओं के बारे में सोचता रहता हूँ। वे भावपूर्ण और रोचक तो लगती हैं, लेकिन मुझे समझ नहीं आता कि वे कितनी गहरी हैं। तर्क और लयबद्धता की कमी मुझे परेशान करती है। फिर भी, यही मुझे आज़ादी देती है...
आज कुछ भी लिखने का मन नहीं कर रहा। एक भयानक एहसास कि मैं वास्तव में लोगों में दिलचस्पी नहीं रखता/रखती हूँ: यही कारण है कि मैं कहानियाँ नहीं लिखता/लिखती। बस कुछ मनोवैज्ञानिक कल्पनाएँ। दूसरों के जीवन के बारे में बहुत कम जानता/जानती हूँ। पॉली का भूत। बूढ़ा अधीक्षक पूर्णिमा की चाँदनी में अपने बिस्तर के पास एक बच्चे को गोद में लिए खड़ा है। बाद में उसे उसी मुद्रा में उसकी एक तस्वीर मिलती है, जिसमें वह एक मेमने को गोद में लिए हुए है।
घर पर रखी वनस्पति विज्ञान की बड़ी किताब निकालो। मुझ पर कैसी जड़ता हावी हो गई है: नियति का अहसास: स्कूल के बाहर सीखना कितना मुश्किल है।

टेड जानवरों को मारने के सपने देखता है: भालू, गधे, बिल्ली के बच्चे। मुझे या बच्चे को? उसका नाटक टाइप करना शुरू कर दिया है। कल कहा था कि यह यथार्थवादी होता तो अच्छा होता, लेकिन अब नहीं। ज़ाहिर है, मैं अपने सतही दिमाग में ब्रॉडवे हिट चाहता हूँ, एक आसान रास्ता। उसने बच्चों की किताब 'मीट माय फोल्क्स!' को संशोधित किया है और उसमें काफ़ी सुधार किया है। मुझे लगता है कि हमें यहाँ एक प्रकाशक ढूंढना चाहिए, लेकिन डरावनी चीज़ें हमारी परंपरा से बिल्कुल अलग हैं। फिर भी, असली दुनिया ही आश्चर्य पैदा करती है। 'माई बेड बुक' शायद असफल हो जाएगी क्योंकि इसमें कोई मानवीय या बाल-हित नहीं है—कोई कथानक नहीं है…
बुधवार, 4 नवंबर। फिर से लकवा। मैं अपने दिन कैसे बर्बाद कर रहा हूँ। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई भयानक अवरोध और सिहरन मुझमें बेहोशी की तरह दौड़ रही हो। मैं सोचता हूँ, क्या मैं कभी जॉनी पैनिक से छुटकारा पा पाऊँगा? मेरी सफल पत्रिका 'सेवेंटीन' के दस साल बाद, एक ठंडी आवाज़ कहती है: तुमने क्या किया, तुमने क्या किया? जब मैं उतनी ही ठंडी नज़र से देखता हूँ, तो पाता हूँ कि मैंने पढ़ा, सोचा, और किसी तरह एक साल पढ़ाने के अलावा कुछ नहीं किया: मेरा दिमाग खाली पड़ा है। मैं पढ़ने और बार-बार पढ़ने के जीवन की कल्पना नहीं कर सकता, जिसमें मेरे अलावा कोई गुरु या शिष्य न हो। मैंने एक-दो अप्रिय मनोवैज्ञानिक कहानियाँ लिखी हैं: "जॉनी पैनिक" और "द ममी", जो छपने लायक हो सकती हैं, टैटू बनाने वाले के बारे में एक हल्की-फुल्की लेकिन ज़बरदस्त रचना, और सात साल पहले मिंटन्स में रविवार के बाद से बस इतना ही। वह उत्तम, मुक्त, अभिमानी, लापरवाह आनंद कहाँ गया? जब मैं एक कहानी के बारे में भी सोचने की कोशिश करता हूँ, तो निराशा की एक ठंडी बूँद मुझ पर छा जाती है।

चमत्कारिक रूप से मैंने अपनी 'पोयम फॉर अ बर्थडे' श्रृंखला में सात कविताएँ लिखीं, और उससे पहले की दो छोटी कविताएँ, "द मैनर गार्डन" और "द कोलोसस", मुझे रंगीन और मनोरंजक लगती हैं। लेकिन मेरी किताब की पांडुलिपि मुझे मृत सी लगती है। बहुत दूर, बहुत दूर। इसके प्रकाशक मिलने की लगभग कोई संभावना नहीं है: मैंने इसे अभी सातवीं बार प्रकाशक को भेजा है, और जब तक डडली फिट्स इस साल नरमी नहीं दिखाते और मुझे येल पुरस्कार नहीं देते, जो मैं पिछले साल बस चूक गया था, तब तक मेरे पास इसे इंग्लैंड में प्रकाशित करने की कोशिश करने और पुरस्कारों को भूल जाने के अलावा कोई चारा नहीं है, जो शायद एक अच्छी बात हो सकती है। मुझे लगता है कि मुझे येल पुरस्कार के लिए कोशिश करनी चाहिए, इसलिए उम्मीद है कि इसे लैमोंट पुरस्कार के लिए प्रविष्टि के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा, जिसे जीतने की मेरी संभावना और भी कम है - इससे दोनों ही बेकार हो जाएँगे। इसकी तुलना [फिलिप] बूथ की किताब, [नेड] ओ'गोरमैन की किताब, आदि और स्टारबक की किताब से करते हुए, मुझे लगता है कि मेरी रचनाएँ भी कम नहीं हैं।
अगर मैं सिर्फ अपने बारे में ही लिखूँ तो मैं मर जाऊँगी। मेरी पुरानी चंचल ऊर्जा और दुनिया में दिलचस्पी कहाँ गई? मैं इस मठवासी जीवन के लिए नहीं बनी हूँ। मुझे हमेशा निष्क्रिय निर्भरता के निशान मिलते हैं: टेड पर, मेरे आस-पास के लोगों पर। कविताएँ लिखते हुए भी, मेरे मन में यह इच्छा रहती है कि कोई मेरे जीवन का फैसला करे, मुझे बताए कि क्या करना है, और मेरे द्वारा किए गए कामों की प्रशंसा करे। मैं जानती हूँ कि यह बेतुका है। फिर भी मैं इसके बारे में क्या करूँ?
अगर मैं अपने भीतर आनंद का संचार नहीं कर सकता—जैसे चित्रकला, प्राचीन सभ्यताओं, पक्षियों, वृक्षों, फूलों, फ्रेंच और जर्मन

भाषाओं को देखना और उनके बारे में सीखना—तो मैं क्या करूँ? किताबें लिखने की मेरी चाहत उस मूल प्रेरणा को नष्ट कर देती है जो मुझे साहसपूर्वक और बेपरवाही से उन पर काम करने के लिए प्रेरित करती। जब जॉनी पैनिक मेरे दिल पर हावी होता है, तो मैं न तो हास्यपूर्ण हो सकता हूँ, न ही मौलिक और न ही रचनात्मक।
लेखन ही मेरा स्वास्थ्य है; काश मैं कभी अपनी ठंडी आत्म-चेतना से बाहर निकल पाता और उपहारों या प्रशंसा के लिए नहीं, बल्कि लेखन का आनंद स्वयं लेखन में ले पाता। डॉ. बी. सही थे: मैं काम करने से बचता हूँ, क्योंकि अगर मैं उन्हें नहीं करता, तो मुझे असफल नहीं कहा जा सकता। कायरों वाली बात है...
लंदन लौटने का सुखद सपना: डैफोडिल के बगीचे में बिस्तर वाला एक कमरा किराए पर लेना, मिट्टी की खुशबू और चमकीले पीले फूलों के साथ जागना।
7 नवंबर, 1959, शनिवार। निराशा। गतिरोध। कल रात मुझे साल्ट लेक में तैरते हुए का एक दृश्य दिखाई दिया: एक अद्भुत, सुंदर दृश्य। मैंने सोचा: यह प्रकाश, यह अनुभूति किसी कहानी का हिस्सा नहीं है। यह अपने आप में एक वस्तु है और शब्दों में व्यक्त किए जाने योग्य है। अगर मैं ऐसा कर सकूँ, पुरानी खुशी वापस पा सकूँ, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा कि उसका क्या होता है। समस्या मेरी सफलता नहीं, बल्कि मेरी खुशी है। एक मृत वस्तु।
मेरी मम्मी की कहानी न्यू वर्ल्ड राइटिंग से अस्वीकृति पत्र के साथ वापस आई। यह एक बेहद कड़वी, अक्सर नाटकीय कहानी है, बस एक विवरण। मैंने अपने पुराने भाई-भाई के प्रति प्रतिद्वंद्विता और प्रशंसा पाने की लालसा को एक बड़े पत्थर के समान बना लिया है। दुनिया में अपनी प्रतिभा के पहले विस्फोट के दस साल बाद, जब सब कुछ मेरे स्पर्श से सहजता से बह रहा था। मैं सात साल पहले

मिंटन परिवार की रचना कर सका क्योंकि मैं उनमें खुद को भूल गया था।
दिन-रात टेड के इतने करीब रहना खतरनाक है। मेरी उससे अलग कोई जिंदगी नहीं है, मैं महज़ एक सहायक बनकर रह जाऊंगी। जर्मन सीखना, अकेले बाहर जाना, सोचना, अकेले काम करना ज़रूरी है। अलग-अलग जीवन जीना ज़रूरी है। मुझे एक ऐसा जीवन चाहिए जो मुझे अंदर से सहारा दे। यह जगह मेरे लिए किसी भयानक मठ जैसी है। मुझे हमारा कमरा नफ़रत है: उसका एकदम सफ़ेद रंग, पूरे कमरे में फैले बिस्तर। मुझे बोस्टन का छोटा, भीड़भाड़ वाला अपार्टमेंट बहुत पसंद था, भले ही जे. पैनिक मुझसे वहाँ मिलने आता था।
मुझे सबसे ज़्यादा डर इस बात से लगता है कि मैं बेकार हो जाऊँगी: अच्छी शिक्षा प्राप्त, प्रतिभाशाली, और फिर भी उदासीनता से भरी अधेड़ उम्र में गुम हो जाऊँगी। लिखने के बजाय, मैं सपनों में खोई रहती हूँ, अस्वीकृतियों से होने वाली निराशा को सहन नहीं कर पाती। बेतुका। मेरा मन करता है कि मैं निष्क्रिय हो जाऊँ और टेड को ही अपना सामाजिक साथी बनने दूँ। बस इसलिए कि हम कभी अलग नहीं होते। अब, उदाहरण के लिए: मैं उससे अलग कई काम कर सकती हूँ: जर्मन पढ़ना, लिखना, पढ़ना, अकेले जंगल में घूमना या शहर जाना। कितने जोड़े इतने साथ रह सकते हैं? लंदन पहुँचते ही मुझे अकेले ही आगे बढ़ना होगा। साल में दो साधारण कविताएँ और कुछ सनकी, आत्मकेंद्रित कहानियाँ लिखने से बेहतर है कि मैं पढ़ाऊँ। अकेले पढ़ना, अध्ययन करना, "अपनी राय बनाना" मेरे लिए सही तरीका नहीं है। मुझे दूसरों की मौजूदगी, काम की ज़रूरत है, ताकि मैं खुद को संतुष्ट कर सकूँ। मुझे कभी भी महज़ माँ और गृहिणी बनकर नहीं रहना है। एक लेखिका के रूप में इतनी अपरिष्कृत और अनुत्पादक होने के बावजूद बच्चे की ज़िम्मेदारी एक चुनौती है।

मुझे अपने जीवन के अर्थ और उद्देश्य को लेकर डर सता रहा है। मुझे वह बच्चा बिल्कुल पसंद नहीं आएगा जो मेरे उद्देश्य की जगह खुद को रख ले: इसलिए मुझे अपना उद्देश्य खुद बनाना होगा। टेड मेरी ज्योतिष और टैरो की बातों और सीखने की इच्छा से तंग आ चुका है, और फिर खुद मेहनत करने की जहमत न उठाने से भी। मैं भी इससे तंग आ चुकी हूँ। और हमारे जीवन की इस भयानक अनिश्चितता से भी। जो, मुझे लगता है, उसके नज़रिए से बिल्कुल भी अनिश्चित नहीं है, क्योंकि लेखन के प्रति उसका जुनून मुझसे कहीं ज़्यादा मज़बूत है।
मेरी कविताएँ नीरस हैं। गीले बरामदे पर एक चिड़िया मेरे जूठे टुकड़े खा जाती है। मेरा दिमाग़ उलझनों से भरा है। मैं येट्स, एलियट—उन पुरानी ताज़गी भरी खुशियों—को खोलने की हिम्मत भी नहीं करता, क्योंकि मुझे अपने पहले सुनहरे अनुभवों की याद दिलाती है। मैं खुद को खो नहीं पाता। और मैं खुद को जल्दी खोने के लिए ही बना हूँ।
स्वतंत्र, आत्मविश्वासी एम. एस. उम्र का कोई असर नहीं। नाश्ते से पहले पक्षी निहारना। उसे अपने लिए क्या मिलता है? शतरंज के खेल। समलैंगिक महिला के प्रति मेरी पुरानी प्रशंसा। संतुलन और निश्चितता के बदले सीमाओं से मुक्ति...
11 नवंबर, बुधवार। मैं यहाँ तभी लिखती हूँ जब मैं पूरी तरह से हताश और असमंजस में होती हूँ। कभी भी खुशी के समय नहीं। जैसा कि मैं आज हूँ...
ट्वीड के कपड़ों में गर्माहट महसूस हो रही थी, पेट थोड़ा फूला हुआ सा लग रहा था। बच्चे के सपने देखना सुखद है। घबराहट बहुत कम होती है। काश मुझे कोई भरोसेमंद, दृढ़, सक्षम और दयालु डॉक्टर मिल जाए, और कोई ऐसा अस्पताल मिल जाए जहाँ मुझे पता हो कि क्या

हो रहा है, तो मैं ठीक हो जाऊंगी। यह 24 घंटे से ज्यादा नहीं चलेगा। और अगर बच्चा स्वस्थ और तंदुरुस्त हो तो...
लकड़ी का ढेर: कटी हुई टहनियाँ, भीतरी लकड़ी गुलाबी रंग की (सैल्मन जैसी), छाल के बड़े-बड़े टुकड़े जो फटे हुए हैं। खुरदरी और चिकनी बनावट का मिश्रण।
मैं यहाँ से जाने के लिए बेताब हूँ। 11 हफ्ते बहुत ज़्यादा हैं। हालाँकि टेड को यह बहुत पसंद है। अगर मैं कोई उपन्यास लिख रही होती तो ठीक होता। लेकिन तब भी, मुझे आम ज़िंदगी की भागदौड़ और उससे मिलने वाली प्रेरणा, दोस्त, नाटक, शहर में घूमना-फिरना वगैरह पसंद हैं। सूखी घास और नीले लकड़ी के धुएँ का मेरी खिड़की से गुज़रना। मैं लंदन में काम करना चाहूँगी। एक उपन्यास, एक उपन्यास। मैं इसे पहले किसी ब्रिटिश प्रकाशक को भेजूँगी। मुझे लगता है कि मेरी कविताओं की पहली किताब प्रकाशित होनी चाहिए, चाहे सीमित ही क्यों न हो। इस हफ्ते रविवार को जले हुए स्पा की सैर के दौरान मैंने एक अच्छी कविता लिखी। दूसरी किताब के लिए एक कविता। मुझे कितना सुकून मिलता है इन नई कविताओं के साथ दूसरी किताब लिखने का विचार: "द मैनर गार्डन," "द कोलोसस," "द बर्न्ट-आउट स्पा," जन्मदिन की सात कविताएँ, और शायद "मेडेलियन," अगर मैं इसे अपनी मौजूदा किताब में शामिल नहीं करती। अगर लैमोंट के लिए कोई प्रकाशक मुझे स्वीकार कर लेता है, तो मुझे किताब को और मज़बूत बनाने के लिए अपनी सभी नई कविताएँ उसमें डालनी होंगी। येल विश्वविद्यालय के लिए मुझे ऐसी कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती। खैर, येल विश्वविद्यालय के खुलने में तीन महीने बाकी हैं।
पैकिंग और यात्रा की व्यावहारिक बातों को लेकर उत्साहित हूँ, लोगों से मिलने को लेकर भी। मुझे यहाँ का हमारा कमरा बिल्कुल

पसंद नहीं: सफ़ेद, सर्जरी वाला, अस्पताल जैसा। दो महीनों में तीन कहानियाँ लिखी हैं, कोई भी संतोषजनक नहीं, लगभग दस-बारह अच्छी नई कविताएँ लिखी हैं, और एक बेकार, असंभव बच्चों की किताब लिखी है। जब मैं अकेला होता हूँ तो और भी निर्जीव हो जाता हूँ। मुझे रुचियों, प्रेरणा और मांगों की विविधता चाहिए। ध्यान भटकाने वाली चीज़ें भी ठीक हैं। यहाँ दो अच्छी फ़िल्में देखने के लिए होने वाली लड़ाई बेतुकी है: उनके पास एक बड़ी स्टेशन वैगन है जिसका वे इस्तेमाल नहीं करेंगे। शहर में रहना है या गाँव में? मैं इंग्लैंड को लेकर उत्साहित हूँ। जब मैं अमेरिका में रहने के बारे में सोचता हूँ, तो मैं कल्पना ही नहीं कर पाता कि कहाँ रहूँ: मुझे उपनगर पसंद नहीं, गाँव बहुत अकेलापन भरा है, शहर बहुत महंगा है और कुत्तों की गंदगी से भरा है। मैं लंदन में, किसी शांत चौक में, बच्चों को सुंदर पार्कों में ले जाने की कल्पना कर सकता हूँ। ठीक बाहर गाँव में बस जाना, फिर भी पास ही रहना। हर दिन जीवन नए सिरे से शुरू होता है।
12 नवंबर, गुरुवार। बस एक छोटा सा संदेश। मेरा आत्मविश्वास बढ़ रहा है। अब मैं असंभव की कामना नहीं करता। मैं छोटी-छोटी चीजों में खुश हूँ, और शायद यही एक संकेत है, एक सुराग… कल रात पता चला कि लेहमन ने मेरी कहानी "यह धरती हमारा अस्पताल" स्वीकार कर ली है। मैंने शीर्षक बदलकर "ब्लॉसम स्ट्रीट की बेटियाँ" कर दिया है। यह बहुत बेहतर है। इससे मुझे संतुष्टि मिली है। कहानी कई मायनों में शौकिया है, लेकिन इसकी बनावट बहुत हल्की नहीं है। मैं अपनी पुरानी, हल्की-फुल्की चीजों को प्रचलन से बाहर कर रहा हूँ। धुंधली चाँदनी की नीली रोशनी में, हल्की गर्म और हवादार रात में गैराज से वापस आया। कल नीले तिल पर लिखी कविता पूरी कर ली, जिससे हम संतुष्ट हैं। हर दिन एक नई प्रार्थना है कि ईश्वर

का अस्तित्व है, कि वह और अधिक शक्ति और स्पष्टता के साथ दर्शन देगा। मैं लोगों के बारे में, मार्मिक परिस्थितियों के बारे में लिखना चाहता हूँ। काश मैं अपनी हाल ही में स्वीकृत दो कहानियों के हास्यपूर्ण जोश को मिंटन [कहानी] की गंभीर गद्य शैली के साथ मिला पाता, तो मैं प्रसन्न होता… काश मैं अपने उस सुन्न, ठंडे और सतहीपन को तोड़ पाता जो एक स्पष्ट वाक्य बनाने की कोशिश करते समय आ जाता है। इसमें रंग मिलाओ, इसे गाढ़ा करो। … शारीरिक घटनाओं का रिकॉर्ड रखना। टैटू की दुकान पर जाना और अस्पताल में काम करना, इनसे मुझे दो अच्छी कहानियाँ मिलीं। बोस्टन का अनुभव भी ऐसा ही होना चाहिए। काश मैं गहराई से सोच पाती। स्टारबक्स की पत्नी अगाथा के यहाँ पार्टी। बगीचे। हे भगवान, ये सब पाना कितना अच्छा है। धीरे-धीरे सफलता की राह पर चलना चाहिए। स्वीकृति की छोटी-छोटी खुराकें मदद करती हैं। शायद बच्चों को कहानियाँ सुनाने से मुझे वहाँ कुछ किताबें लिखने में मदद मिलेगी…
…कल रात… लड़कियाँ: बड़ी, उम्र का पता न चलने वाली, गहरे रंग के, पुराने ज़माने के जूड़े वाली, दुबली-पतली, सपाट छाती वाली, छोटी कद की, काले फ्लैट जूते और मैरून मखमली बेल्ट वाली एक साधारण बेज रंग की ड्रेस पहने… चश्मा लगाए, एक चमकीला, दमकता चेहरा, एक भाषण प्रशिक्षक: “ओह, मिस्टर बिंकरड, संगीत कितना मनमोहक है!” दूसरी, छोटी, कलात्मक, बेहद खूबसूरत, हल्के नीले रंग की हील वाले जूते, ढीले फैशनेबल हेयरस्टाइल, नीली आईशैडो वाली आँखें, चश्मा लगाए, स्टाइलिश ग्रे-ब्लू स्वेटर और स्कर्ट, एक चांदी का मेक्सिकन हार, सुंदर, सुरुचिपूर्ण। मोहक अंदाज़। बुनाई और गहने बनाना सिखाती हैं। दूसरे कमरे में मे [स्वेंसन]: झाइयों वाली, आत्ममुग्ध, एक सख्त मिजाज की महिला। मैंने दो

समलैंगिक महिलाओं की स्थिति की कल्पना की: एक महिला एक खुशहाल दिखने वाली शादीशुदा महिला को जीत लेती है। दो अधेड़ उम्र की महिलाओं के एक साथ रहने की कल्पना करना असंभव क्यों है, जब तक कि समलैंगिकता ही समाधान या मकसद न हो?
14 नवंबर, शनिवार। आज सुबह अच्छी सैर की। सुबह 8 बजे नाश्ते के लिए समय पर उठ गए और डाक भी जल्दी आ गई, मानो हमें इनाम दे रही हो। गर्म, हल्की हवा वाला, धुंधला मौसम। एक अजीब सी खुशी। ध्यान दें। जब भी हम कहीं जाने वाले होते हैं, यह हलचल और उत्साह आता है, मानो पुराना वातावरण हमारे भीतर की सुस्ती और जड़ता को रोके रखे, और नया, नंगा रूप एक बेहतर जीवन की ओर चमकता हुआ आगे बढ़े... हम उस नीरस, रेतीले रास्ते पर चल पड़े। हल्के बैंगनी और नीले रंग की पहाड़ियाँ दूर तक फैले धूसर आकाश में विलीन हो रही थीं। पेड़ों की सूखी टहनियों से बनी घनी झाड़ियाँ थीं। हवा में पत्तियाँ सरसरा रही थीं। एक काला पक्षी धनुष के पास उड़कर आया। जले हुए भुट्टे, पुराने मक्के के डंठल। एक आदमी के फटे हुए कोट और फीके, सफेद पड़ चुके डंगरियों से बने एक क्रॉस डंडे पर एक काला फड़फड़ाता हुआ बिजूका। खाली बाहें लहरा रहा था।
मैंने दो कुत्तों को देखा, जिनकी जीभें लटकी हुई थीं, वे छोटे- छोटे पेड़ों और फर्न के झुरमुट में खोजबीन कर रहे थे। ज़मीन का पीला-भूरा, सूखा रंग। मुझे कारतूस के खाली खोखे मिले। नरम रेत में लोमड़ी के पदचिह्न, हिरण के पैरों के निशान। झीलों की हरी- भरी, चमकदार तलहटी। याड्डो के मैदान में छछूंदरों के टीले और सुरंगें जाल की तरह फैली हुई थीं। सुरंग में घुसने के बाद मैंने अपनी उंगली से एक छेद को दोनों तरफ टटोला।

कल मैंने मशरूम पर एक अभ्यास लिखा था जो टेड को पसंद आया। और मुझे भी। लिखने के बाद मेरा बिल्कुल भी कोई निर्णय नहीं होता: चाहे वह बेकार हो या शानदार।
कई रातों तक जागने के बाद आज बहुत थका हुआ हूँ। कुछ भी लिखने की हालत नहीं है। कल रात के सपने परेशान करने वाले थे: माँ और वॉरेन सख्त, कठोर और ताक-झांक करने वाले अंदाज़ में थे। मैंने उनकी बांह काट ली (वही घटना दोहराई जब मैंने एक बदमाश को काटा था), और वह बूढ़ी, पतली और हमेशा चौकस थीं। वॉरेन ने मुझे पार्टिसन रिव्यू नाम की किसी महिला के साथ बिस्तर पर जाते हुए देख लिया। पुराने शर्म और अपराधबोध।
लेकिन इंग्लैंड में रहने को लेकर एक खुशी और उत्साह का भाव है। कुछ हद तक, इसका कारण यह भी है कि हाल ही में मेरी कविताओं और मेरी कहानी को वहाँ बहुत ही शानदार आतिथ्य सत्कार मिला है। यह जगह मेरे मन के बहुत करीब है।
15 नवंबर, रविवार। कई रातें नींद के बिना गुज़री हैं। क्या आने वाली बेचैनी इसका संकेत है? नतीजतन, थका हुआ, बेजान, उदास और सुस्त महसूस कर रहा हूँ। कल रात मैंने गलती से कॉफ़ी पी ली, यह सोचकर कि इससे फ़िल्म देखने के लिए नींद नहीं आएगी। हम फ़िल्म देखने नहीं गए, और मैं सुबह के अंधेरे तक एक अजीब सी बेचैनी में पड़ा रहा, बुरे सपने देखता रहा कि किसी अनजान अस्पताल में प्रसव के दौरान मेरी मौत हो रही है और मैं टेड को देख भी नहीं पा रहा हूँ, या मेरा बच्चा नीला पड़ गया है, या विकृत है, और वे मुझे देखने भी नहीं दे रहे हैं।
मेरी एकमात्र मुक्ति कहानियों में अन्य पात्रों में प्रवेश करना है: मैं जिन तीन कहानियों को प्रकाशित करने के लिए तैयार हूँ, वे सभी प्रथम पुरुष में लिखी गई हैं। बात यह है कि अन्य

प्रथम पुरुष पात्रों को विकसित करना। मेरी 'भिखारी' वाली कहानी एक मज़ाक है: भावुक, नीरस, बिल्कुल भी रुचिहीन। और भयावह बात यह है कि उसमें खतरा और रोमांच था। बोलचाल की भाषा मेरे ड्राइंग रूम की झिझक को तोड़ने का एक तरीका है। क्या मैंने कॉलेज के लेखन के दिनों से कुछ सीखा है? केवल कविता में। बस इतना ही। कोड़े मारने के बारे में टेड की कहानी बहुत अच्छी है। बहुत बढ़िया, बहुत कठिन। वह दुनिया की अपेक्षाओं की किसी भी बनावटी छवि से मुक्त होकर आगे बढ़ता है। कल रात, उसने मुझे सांत्वना दी, मुझे गले लगाया। उसके प्यार ने मेरी नसों को शांत किया और मुझे नींद आ गई। मैं थका हुआ उठा, जैसे किसी भयानक भावनात्मक संकट के बाद उठता हूँ। आज मैं कुछ खास नहीं कर पा रहा हूँ। समीक्षाओं की समीक्षाओं में डूबा हुआ हूँ। दूसरों को पढ़ना कितना अच्छा लगता है? दूसरों के बारे में? उनकी कहानियाँ, उनकी कविताएँ पढ़ें, समीक्षाएँ नहीं। मैं आलोचकों और प्रोफेसरों की दुनिया से बहुत दूर हूँ। मुझे जीवन में ही जड़ जमानी चाहिए। फिर भी आइरिस मर्डोक के काम में एक शानदार प्रोफेसर जैसी बुद्धि झलकती है। मैं खुद को मंत्रमुग्ध कर लेता हूँ ताकि इंतजार कर रही दुनिया को भूल जाऊँ। विचार काम की छोटी-छोटी हरी कोंपलों को मार देते हैं। मैंने प्यार, दुख, पागलपन का अनुभव किया है, और अगर मैं इन अनुभवों को सार्थक नहीं बना सकता, तो कोई भी नया अनुभव मेरी मदद नहीं करेगा।
एक बुरा दिन। एक बुरा समय। काम के लिए मन की स्थिति सबसे महत्वपूर्ण होती है। एक प्रसन्न, बेचैन और उत्सुक अवस्था जहाँ कविता, कहानी ही सर्वोपरि होती है।
दिसंबर में ह्यूज़ परिवार इंग्लैंड के लिए रवाना हो गया, जहाँ उन्होंने लंदन में बसने की योजना बनाई। अप्रैल 1960 में लंदन

में घर पर ही फ्रीडा रेबेका का जन्म हुआ। प्लाथ ने अपनी कविताओं के पहले संग्रह, द कोलोसस, के प्रकाशन के लिए हेनेमैन के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए और यह पुस्तक अक्टूबर में प्रकाशित हुई। 1961 की शुरुआत में उनका गर्भपात हो गया और उसके तुरंत बाद उनका अपेंडिक्स का ऑपरेशन हुआ—अस्पताल में रहने के दौरान लिखे गए उनके नोट्स "द इनमेट" नामक रचना के रूप में आज भी मौजूद हैं। कैदी
सोमवार, 27 फ़रवरी, 1961। अस्पताल में। अभी भी पूरी तरह स्वस्थ, मुझमें किसी की कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं प्लास्टर और पट्टियों में लिपटे हंसमुख लोगों या कांच और गुलाबी लकड़ी के परदे के पीछे कराहते हुए लोगों में से नहीं हूँ। उदास, मूंछों वाला डॉक्टर और उसके चमकीले सफेद कपड़े पहने छात्र मेरे पास से गुज़रते हैं। यह एक धार्मिक संस्थान है, यहाँ बड़े-बड़े शुद्धिकरण होते हैं। हर किसी का कोई न कोई राज़ है। मैं अपने तकिये से उन्हें देखता रहता हूँ, पहले से ही थका हुआ। चश्मा पहने मोटी लड़की अपने नए पैर को परखते हुए गुज़रती है, नाक कटी बूढ़ी औरत, जिसका पैर "ट्रैक्शन" में बंधा है, और उदास चेहरे वाली महिला, जिसकी छाती और बांह पर प्लास्टर लगा है, एक छड़ी से अपने अंदरूनी हिस्से को खुजलाती है। "मेरी त्वचा सिकुड़ गई है।" गुरुवार को उसे ऑपरेशन करके निकाल दिया जाएगा। लाल ऊनी बाथरोब पहने एक मददगार मरीज़ बच्चों की तरह मीठे होंठों वाले फूल वापस लाता है। पूरी रात वे हॉल में सांस लेते रहे, अपने पराग गिराते रहे, डैफ़ोडिल, गुलाबी और लाल ट्यूलिप, चटख बैंगनी और लाल आंखों वाले एनीमोन। पूर्व सैनिकों के लिए गमलों में लगे पौधे। कोई शिकायत या रोना-धोना नहीं करता। मेरे चांदी के पलंग पर टंगे काले इयरफ़ोन में एक छोटी सी आवाज़ मुझे सुनने के लिए

ताना मारती रहती है। वे उसे बंद नहीं करते। बेहद खुशमिजाज गुलाबी, नीले और पीले पक्षी सफेद पलंग के पर्दों पर खिले गुलाबी फूलों और हरी-भरी पत्तियों के बीच बैठे हैं। जब वे मुझे घेर लेते हैं तो ऐसा लगता है जैसे कोई मंडप हो। कल रात मैं कैमडेन टाउन की गीली, काली रविवार की सड़कों पर भटक गई, गलत दिशा में दृढ़ता से चलती रही। मैंने कार से उतर रही एक बूढ़ी औरत से पूछा कि सेंट पैनक्रास अस्पताल कहाँ है: उसने अपने बूढ़े पति से पूछा — उन्होंने कहा: “यह थोड़ा मुश्किल है। बेहतर होगा कि मैं आपको वहाँ छोड़ दूं।” मैं उस पुरानी आरामदायक कार की पिछली सीट पर बैठ गई और फूट-फूट कर रोने लगी। “मैं तो बच्चा चाहती हूँ,” मैंने कहा, “कम से कम उसके लिए कुछ तो होगा।” “यही तो हम सब कहते हैं,” उस औरत ने कहा। उस आदमी ने कार को धुंधली, काली चमकती सड़कों से होते हुए अस्पताल की ओर मोड़ दिया। बारिश में लड़खड़ाते हुए मैं चल रही थी, गीले रुमाल से लिपटे मेरे बाल माथे पर चिपके हुए थे। प्रवेश कार्यालय बंद था। मैं एक लंबे, जगमगाते गलियारे से गुज़री और भूरे रंग की वर्दी पहने एक लड़का मुझे लिफ्ट से वार्ड नंबर 1 तक ले गया। नर्स ने मुझसे सवाल पूछे और एक फॉर्म भरा। मैं और सवालों के जवाब देना चाहती थी, मुझे सवाल बहुत पसंद हैं। फॉर्म के खानों में रंग भरते हुए मुझे एक सुखद एहसास हो रहा था। मेरे बगल वाली महिला की गर्दन के नीचे पट्टी बंधी थी—छाती के एक्स-रे में पता चला कि उसकी थायरॉइड ग्रंथि उसके फेफड़े में बढ़ गई थी और उसे काटकर निकाल दिया गया था। अब, उसके बिस्तर के चारों ओर पर्दे लगे हुए थे, एक ऑक्यूपेशनल थेरेपिस्ट उसे थप्पड़ मार रही थी: थप्पड़-थप्पड़-थप्पड़। तरह-तरह के उपकरण लाए जा रहे थे—वैक्यूम क्लीनर, सीढ़ी, बिस्तर के एक सिरे को ऊपर उठाने के उपकरण, पहियों वाला एक बड़ा एल्यूमीनियम का डिब्बा जो

दीवार में लगा हुआ था—मुझे लगता है कि यह उबले हुए दोपहर के भोजन के लिए एक गर्म डिब्बा था। कल रात मैं इतनी बीमार थी कि रात का खाना नहीं खा पाई—सिर्फ़ एक कप ओवलटाइन पिया और फूलों वाले पर्दों के पीछे अपनी नाइटड्रेस पहन ली। एक युवा, आकर्षक दुबली- पतली डॉक्टर "कैस्ट" मेरे पास आईं और मुझसे लक्षणों के बारे में सवाल पूछे। उन्होंने यह कहकर हैरानी जताई कि शायद मैं दोबारा गर्भवती हूँ। ऊँची खिड़की से ठंडी हवा मेरे सिर पर पड़ रही थी। थायराइड की मरीज़ अपने पर्दे के पीछे सूखी खांसी कर रही थी। रोज़ नाम की एक सुंदर, मिलनसार युवती कल रात मुझसे बात करने आई थी, उसने मुझे "बनी" नाम की एक जीवंत, काले बालों वाली महिला से मिलवाया, जिसने पारदर्शी हल्के नीले रंग का नाइटगाउन पहना हुआ था और जो "बोस्टन में थी"। एक और बुद्धिमान महिला, जिसके पति ने अफ्रीका में टिड्डियों का अध्ययन किया था—दोनों को मलेरिया था; उनका दक्षिण डेवोन में एक चिड़ियाघर है जहाँ वे जानवरों को जोड़ों में भेजते हैं। मैंने द पेरिस रिव्यू पढ़ने की कोशिश की, लेकिन मेरा मन सुस्त हो गया। एक लाल और एक सफेद गोली धीरे-धीरे मुझे बेहोशी की हालत में ले गई। नौ बजे "लाइट बंद"। गोल आकार के वार्ड की बत्तियाँ लाल हो गईं—गोधूलि बेला में 8 लाल कटे हुए गोले—हर जगह रोशनी फैली हुई थी। शुभ रात्रि, शुभ रात्रि, मेरे साथ लेटे हुए लोगों ने कहा और कूबड़ जैसे बन गए। मैंने सोचा कि पर्दे खींचने के लिए कहूँ, लेकिन फिर आँखें बंद कर लीं और आश्चर्यजनक आनंद के साथ पाया कि मेरे अपने पर्दे थे जिन्हें मैं अपनी मर्ज़ी से बंद कर सकता था। सुबह 5 बजे हल्की नींद से मेरी नींद एक हलचल, चरमराहट, पानी के बहने और बाल्टियों की खड़खड़ाहट से टूटी। छह बजे, धुंधली, नम, धूसर रोशनी में, सफेद बत्तियाँ जल उठीं। चाय, तापमान, नाड़ी जाँच। मैंने हाथ धोए,

अपने गुप्तांगों को नीले एंटीसेप्टिक से साफ किया और एक कांच के जार में पेशाब किया। बाद में उन्होंने मेरी नाक की जाँच की यह देखने के लिए कि क्या मुझमें "घावों को संक्रमित करने वाले कोई कीटाणु हैं।" नाश्ता लगभग 7:30 बजे। पतली भूरी ब्रेड पर मक्खन (या कोई और विकल्प) इतनी कम मात्रा में लगाया गया था कि बस एक हल्की सी परत ही बता रही थी कि संतरे के मुरब्बे के लिए कौन सी तरफ सही है; चाय, एक उथले कटोरे में धुएँदार, बिना नमक का दलिया, बेकन और टमाटर (बहुत स्वादिष्ट) और फिर चाय। दोपहर के मध्य में खराब, बासी कॉफी। अखबारवाला, चॉकलेट और सिगरेट का ठेला। प्रत्येक बिस्तर के निचले हिस्से में लगे पॉलिश किए हुए एल्यूमीनियम क्लिपबोर्ड पर हरे रंग के ग्राफ बने हुए थे। मंगलवार, 28 फ़रवरी। आज वो दिन है। बाकी सभी मरीज़ों की बातचीत और नाश्ते के बीच मैं अकेली चुपचाप बैठी हूँ और मुझे कुछ नहीं मिला। फिर भी मुझे बिजली का झटका लगने से ज़्यादा अपनी अपेंडिक्स निकल जाने की चिंता नहीं है। मेरे दाहिनी ओर बैठी शांत स्वभाव वाली बूढ़ी महिला, जिन्हें "डचेस" या "मिसेज़ मैक" भी कहते हैं, आज घर जा रही हैं। उन्हें एम्बुलेंस से हैरो ले जाया जा रहा है। उनका कमज़ोर शरीर अब सफेद क्रोशिए की शॉल में कॉर्नफ्लेक्स के कटोरे पर झुका हुआ है। इतने इंतज़ार के बाद मुझे थोड़ी बेचैनी हो रही है, लेकिन यहाँ जहाँ हर कोई मिलनसार है और मुस्कुराता है, वहाँ उदास होना या खुद पर तरस खाना नामुमकिन है, जो कि बहुत अच्छी बात है। कल रात एक युवा नर्स ने बहुत खुरदुरे हाथों से मेरी दाढ़ी बनाई, जिससे मेरे बाईं ओर गर्भावस्था के दौरान उगा हुआ वो पुराना तिल दिख गया। आज, नींद की गोली लेने के बाद, मैं तब उठी जब नर्स ने मेरा तापमान और नाड़ी जाँची। मैंने 6:30 बजे चाय और मक्खन लगा टोस्ट खाया। फिर

उन्होंने मेरा पानी और दूध ले लिया। "बनी," "डेज़ी," जेन, रोज़। मेरे बाईं ओर बैठी घेंघा रोग से पीड़ित महिला (जिसकी थायरॉइड ग्रंथि उसके फेफड़े तक फैल गई थी) का कल "दर्दनाक मालिश" हुआ— उसके बिस्तर के पैर ऊपर उठाए गए और उसने "कफ ढीला करने" के लिए मालिश की, डेज़ी ने दिलचस्पी से बताया। मैं भी, नवीनतम ऑपरेशन का मरीज होने के नाते, सबकी दिलचस्पी का विषय हूँ। क्या मेरी दाढ़ी बनाई गई? क्या मुझे एनीमा दिया जाएगा? और इसी तरह के सवाल। टेड कल रात आया था। ठीक 7:30 बजे के एक मिनट बाद, फटेहाल, छोटे कद के, प्यारे से दिखने वाले लोगों की भीड़ को वार्ड में प्रवेश दिया गया—वे परिचित दिशाओं में चले गए, और अपने साथ एक काले कोट वाला सुंदर व्यक्ति लाए जो उन सभी से दुगना लंबा था। मैं उतनी ही उत्साहित और असीम रूप से खुश थी जितनी हमारे प्रेम प्रसंग के शुरुआती दिनों में थी। उसका चेहरा, जिसे मैं रोज़ देखती हूँ, दुनिया का सबसे दयालु और सुंदर चेहरा लग रहा था। वह मेरे लिए द न्यू यॉर्कर से एक हवाई चिट्ठी लाया था जिसमें एक साल के लिए मेरी सभी कविताओं को "पहली बार पढ़ने" की अनुमति देने के लिए 100 डॉलर का अनुबंध था! चिट्ठी की तारीख वही थी जिस दिन हम 5 साल पहले बोटॉल्फ पार्टी में पहली बार मिले थे। वह स्टेक सैंडविच, खुबानी के टार्ट, दूध और ताजे संतरे का रस लेकर आया—मुझे बाद में लगा कि अगर मैं कहूँ, "उसके लिए—वह दूसरी तरफ होगा," तो मैं साहस के साथ—या कम से कम उचित धैर्य के साथ—किसी भी चीज़ का सामना कर सकती हूँ।
बाद में—सुबह 10 बजे—अब मैं सचमुच ऑपरेशन के लिए तैयार थी— गुलाबी और मैरून धारीदार सर्जिकल गाउन में ढीली-ढाली लिपटी हुई, जालीदार पगड़ी और एक चिपकने वाली पट्टी से मेरी शादी की अंगूठी दिखाई नहीं दे रही थी। जब मैंने पूछा कि ऑपरेशन में

कितना समय लगा, तो फुर्तीली नर्स ने चिढ़कर जवाब दिया। बेहोशी करीब आ रही है। अब मैं काफी करीब हूँ, मैं अपनी बाहें खोलती हूँ। मैंने अपने फूलों वाले पर्दे खींचे रखने को कहा—एक मौत की सजा पाए कैदी का विशेषाधिकार—मैं नहीं चाहती कि उत्सुक, गपशप करने वाली, भले इरादे वाली औरतें डर, बेहोशी या किसी भी तरह के लक्षण ढूंढने के लिए झाँकें। जाहिर है, कुछ मिनट पहले एक महिला ट्रॉली पर बाहर गई थी—"क्या वह सो रही थी?" "वह सोई हुई लग रही थी, वह बस वहीं लेटी रही।" अब उन्होंने मुझे पहला इंजेक्शन दे दिया है— जो "मेरा मुँह सुखा देगा, मुझे नशे जैसा महसूस कराएगा और इसलिए मुझे परवाह नहीं है कि आगे क्या होता है।" एक खूबसूरत महिला एनेस्थेटिस्ट अंदर आई और उसने मुझे इसके बारे में विस्तार से बताया। मेरी दाहिनी ऊपरी बांह सूजी हुई है—मधुमक्खी के डंक जैसी, लाल और छूने पर सख्त। मुझे एक अजीब सी नींद आ रही है और इसलिए मैं इसके खत्म होने के बाद ही यहां लिखूंगी—टेड का एक पत्र मुझे मिला—मेरे प्यारे, मेरे प्रियतम।
शुक्रवार, 30 मार्च। ऑपरेशन के तीन दिन बाद मैं फिर से पहले जैसी हो गई हूँ: वही मज़बूत, गपशप करने वाली, जिज्ञासु और आकर्षक शख्सियत जो मैं इतने लंबे समय से नहीं थी। यहाँ का जीवन छोटी- छोटी बातों से बना है। छोटी-छोटी खुशियाँ और छोटी-छोटी परेशानियाँ। मंगलवार को मुझे इतनी दवा दी गई थी कि मुझे कुछ पता नहीं था और किसी बात से मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। बुधवार को दवा का असर कम हुआ और मुझे वार्ड की चहल-पहल और चहल-पहल से चिड़चिड़ाहट होने लगी। कल मैं थकी हुई और कुछ ठीक-ठाक महसूस कर रही थी। आज मैंने अपनी बेड़ियाँ तोड़ दीं—उठकर नहाने गई और पहली बार मेहनत से गोबर किया, अस्पताल की गुलाबी और लाल रंग की ढीली जैकेट उतारी जिससे मेरा पिछला हिस्सा मेरी झालरदार

गुलाबी और सफेद विक्टोरियन नाइटगाउन के नीचे खुला रह गया। अभी- अभी एक नई महिला को स्ट्रेचर पर ले जाया गया—मज़बूत हरे रंग के पोर्टर ने उसे ट्रॉली पर लादा—नशे में धुत शरीर का अजीब सा चपटा आकार—सफेद पगड़ी, हरे कंबल, आँखें ऊपर की ओर घूरती हुई, बेसुध। कहते हैं, "पिछली रात, थेल्मा मर गई।" मुझे धुंधली सी याद है कि एक जवान महिला पीले गाउन में चाय लेकर आई थी। "ऑपरेशन के बाद उसकी मौत हो गई।" बाहर धूप खिली है, गीली मिट्टी की मीठी खुशबू फैली है। खिड़कियों से हल्की-हल्की हवा अंदर आ रही है। मुझे याद है कि अपनी पहली रात को इन बहती हवाओं का आनंद लेते हुए, जब मैं दिन भर सोने के बाद भी गहरी नींद में था और खुद को अजेय महसूस कर रहा था—यह मीठी हवा सोए हुए लोगों पर बह रही थी और पर्दों को हिला रही थी।
परेशानियाँ और दुख: मेरे बिस्तर के ऊपर की खिड़की टूटी हुई थी— उसमें दरार थी। पहले, ऑपरेशन से पहले, ठंडी नम हवा मेरे सिर पर एक बुरी पट्टी की तरह लग रही थी। फिर, ऑपरेशन के अगले दिन, दो आदमी खिड़की ठीक करने आए। मेरे बिस्तर को गलियारे के बीच में ले जाया गया। मैं बेचैन और असुरक्षित महसूस कर रही थी। मुझे धक्का लगा। मेरी कमर में दर्द हुआ। व्हीलचेयर पर बैठी मोटी लड़की ने मेरी अलमारी (लॉकर) को ज़ोर से धक्का दिया जिससे मेरा बिस्तर हिल गया। मेरी कमर में दर्द हुआ। मैं अपने तकियों में और गहराई से धंस गई, वार्ड के दूर छोर पर चारों ओर से अजनबी लोगों की नज़रों से घिरी हुई। मैंने सोचा, "हर कोई मुझे धक्का दे रहा है," मैंने एक घंटे बाद नर्स से कहा। "मुझे ठंडी हवा ज़्यादा पसंद है। मुझे टॉयलेट जाना है।" नाराज़ होकर, उन्हें मुझे वापस ले जाना पड़ा। जब काम करने वाले लौटे तो उन्हें एक बजे वापस आने के लिए कहा गया। वे मुलाक़ात के समय आए और मुझे बाहर ले गए, लेकिन

टेड वहाँ था इसलिए मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ा। वैक्यूम क्लीनिंग: वे दिन भर वैक्यूम क्लीनिंग करती रहती हैं—छोटे घुंघराले बालों वाली, स्वादिष्ट, मोटी, उदास औरतें रात भर की धूल साफ करती रहती हैं—वूज़-वूज़। फिर ट्रॉलियों की खटपट और झनझनाहट—बेडपैन ट्रॉलियाँ, माउथवॉश ट्रॉलियाँ, नाश्ते की ट्रॉलियाँ, चाय की ट्रॉलियाँ, दवाइयों की ट्रॉलियाँ। वे फर्श पर धड़ाम से गिरती हैं और खड़खड़ाहट करती हैं। फिर टाइपराइटर: दो टेढ़ी छड़ियों और हरे रंग के ड्रेसिंग गाउन वाली, टेढ़ी नाक वाली चुड़ैल ने मेरे बिस्तर के सामने मेज पर एक विशाल काला, पुराने ज़माने का टाइपराइटर रख दिया। बैंक-बोंक-क्लैटर-क्लैटर, सबसे बुरा अभिशाप—एक अस्थिर टाइपिस्ट। "मैं अभी ऑफिस वापस जाने के लिए तैयार नहीं हूँ," मैंने कहा। खर्राटे: सबसे भयानक चीज़। मैं वार्ड में खर्राटे लेने वाली के बगल में हूँ। जिस रात वह आई, मैं इतनी दवाइयों के असर में थी कि उसकी आवाज़ नहीं सुन पाई, लेकिन बुधवार की सुबह एक नर्स ने हंसते हुए इस पर टिप्पणी की। उस रात मैं आधी रात तक करवटें बदलती रही और दर्द से तड़पती रही: वो ज़ोरदार गर्जना गूंजती रही और तेज़ होती चली गई। टॉर्च लिए नर्स ने कहा कि मैं इतनी जल्दी दूसरी नींद की गोली नहीं ले सकती—उसने फूलों वाला पर्दा खींचा, खर्राटे लेने वाली को जगाया और उसे करवट बदलवाई, मेरे लिए गर्म ओवलटाइन बनाई। फिर नाइट सिस्टर दूसरी बड़ी नीली गोली लेकर आई जिसने मुझे सुबह 5 से 10 बजे तक की सारी हलचल और शोर के बीच एक गर्म आनंद में सुला दिया। (अब बेड नंबर 9 में पहली महिला की पड़ोसी के लिए दो हरे प्लास्टिक के तकियों वाला स्ट्रेचर फिर से लाया गया। हरे कंबल। वह बिल्कुल दूसरी महिला जैसी दिखती है—उसकी आँखें छत को घूर रही हैं।) पिछली रात मैं बूढ़ी औरत के खर्राटे शुरू होने से

पहले सो गई थी लेकिन सुबह 3 बजे से पहले ही उसकी गर्जना सुनकर अचानक जाग गई। नींद में बाथरूम जाने के लिए उठी और कुछ बड़बड़ाई। कुछ नहीं हुआ। आखिरकार उन्होंने मुझे ओवलटाइन बनाकर दिया और दो कोडीन की गोलियां दीं, जिनसे मेरे घाव का तेज दर्द और पेट में गैस की चुभन कम हुई। मैंने शोर को रोकने के लिए तकिया अपने सिर पर रख लिया और इस तरह सुबह 7 बजे उठी। एक और परेशानी यह है कि नर्सों को बुलाने के लिए कोई घंटी नहीं है—एक कोहनी के बल उठना पड़ता है—मेरी कोहनी गुलाबी और छिल गई हैं—और कर्कश आवाज में "नर्स" चिल्लाना पड़ता है। कोई बहुत बीमार व्यक्ति यह कैसे करता होगा, यह मैं नहीं जानती।
रविवार, 5 मार्च। ऑपरेशन के बाद पाँचवाँ दिन। यहाँ लिखने में मुझे आलस आ रहा है। अब मैं ठीक महसूस कर रहा हूँ: एक अनुभवी सैनिक की तरह। अभी भी मेरे टांके लगे हैं और बात करने के लिए कुछ है। टांके खिंच रहे हैं और फड़क रहे हैं ("मेरी मरम्मत में खुजली हो रही है") लेकिन मुझे कोडीन चाहिए। नीले रंग का गाउन पहनी रोज़ और भयानक लाल आँखों वाली सफेद बालों वाली "दादी", जो अंदर आने पर आयोडीन या किसी और चीज़ से काली लग रही थीं, आज घर जा रही हैं। रोज़ अपनी स्कर्ट भूल गई इसलिए उसने गाउन पहने रखा है — एक प्रतीक, "हममें से एक" होने की इच्छा का। सजे-धजे व्यक्ति, सड़क के लिए तैयार व्यक्ति, यहाँ एक परेशानी है—"हममें से एक" नहीं, बल्कि एक तरह का ढोंगी। रोज़ फूलदानों की ट्रॉली घुमाती है और उन्हें बाँटती है—प्रत्येक कांच के फूलदान या चीनी मिट्टी के जग पर मरीज़ के बिस्तर का नंबर चिपकाया हुआ है। नर्स अभी-अभी चौकोर सफेद गत्ते के थूकदान लेकर गुज़री है। मैं इससे एक कहानी बनाऊँगी, जिसकी शुरुआत होगी, “आज रात मैं नीली रोशनी की हकदार हूँ, मैं उनमें से एक हूँ”—यह कहानी इस विचित्र,

लयबद्ध और व्यवस्थित समाज में एक अजनबी, एक बाहरी व्यक्ति के रूप में प्रवेश करने के सदमे का वर्णन करेगी, वार्ड की कंपनों के साथ तालमेल बिठाने, “दीक्षा” से गुजरने—वास्तविक केंद्रीय सामान्य फिर भी व्यक्तिगत अनुभव—और सामंजस्य में ठीक होने के बारे में बताएगी। जैसे ही कोई ठीक हो जाता है, बहुत ठीक हो जाता है, उसे बहिष्कृत कर दिया जाता है, “अलोकप्रिय” बना दिया जाता है — मेरे ठीक बाईं ओर बैंगनी गाउन पहने मिस स्टेपलटन की हालत बिगड़ गई है। उनके थायरॉइड या घेंघा का निशान ठीक हो गया है, लेकिन वह मुँह खुला और आँखें बंद करके लेटी हैं—उनका पैर सूजा हुआ है और दर्द कर रहा है, उन्हें फ्लेबाइटिस है। इसके बाद उन्हें एक स्वास्थ्य लाभ केंद्र में भेजा जाएगा। दादी के बगल में मेरे बाईं ओर तीन बिस्तर छोड़कर पीलिया से पीड़ित महिला को भी भेजा जाएगा। वह चमकीली पीली पड़ गई हैं, उनकी अनगिनत बार सर्जरी हो चुकी है और उन्हें क्लैक्टन-ऑन-द-सी भेजा जा रहा है— एक कॉन्वेंट स्वास्थ्य लाभ केंद्र में जहाँ ननें अपनी रोटी खुद पकाती हैं और स्वादिष्ट व्यंजन बनाती हैं। “नम हवा से तुम्हें अच्छा लगता है,” मैं कहती हूँ। मैं हेल्गा के ट्यूलिप के गमले और चार्ल्स के मुरझाते आइरिस और डैफ़ोडिल की ओर देखती हूँ। “ये पीले फूल तो खूब खिले हैं,” डेज़ी मिस स्टेपलटन के गुलदस्ते के बारे में कहती है। “अरे बाप रे,” दर्द से भरे चेहरे और कड़वी ज़बान के साथ मॉरी धीमी आवाज़ में कहती है। उसने मुझे बताया कि वह अपना हाथ कभी हिला नहीं पाएगी, सिर्फ़ उंगलियाँ हिला पाएगी। अब रविवार दोपहर 1:40 बज रहे हैं। मैंने अपने पीले पड़े पट्टीबंद शरीर को बुरी तरह धोया, पाउडर लगाया, अपने चिपचिपे बालों में कंघी की—शैम्पू की सख्त ज़रूरत महसूस हो रही है। बन्नी और जोन “काले अफ़्रीकी” और “सफेद अफ़्रीकान्स” के बीच

अंतर पर बात कर रही हैं। नर्सें मिलने के समय से पहले बिस्तरों को “ठीक” कर रही हैं। मुझे खुद आश्चर्य हुआ कि मुझे बाहर जाकर टेड और पूकर [फ्रीडा] के साथ धूप में पार्क की बेंच पर बैठने की अनुमति मिल गई, जैसा कि मैंने कल दोपहर भर किया था; मुझे काली और सफेद धारीदार पोशाक, सफेद एप्रन, टोपी, काले जूते और मोजे पहने सभी नर्सें बहुत पसंद हैं। उनकी जवानी ही उनकी सबसे बड़ी खूबसूरती है—जवानी, एकदम साफ-सुथरी और एक सुकून देने वाला, माथे पर शिकन लाने वाला भाव। इस दिनचर्या में, भले ही रात की नींद काफी कम हो (अगर किस्मत अच्छी हो तो लगभग 10 से 6 बजे तक— श्रीमती जॉन के खर्राटों के बीच से नींद तक पहुँचने और नर्सों की सुबह की भागदौड़ और शोर के बीच से किसी तरह नींद पूरी करने की कोशिश करने के बावजूद), मैं महीनों से ज़्यादा तरोताज़ा और आराम महसूस कर रहा हूँ। मैं अस्पताल के "बीमारों के स्तर" से ऊपर हूँ, इसलिए मुझे एक अतिरिक्त लाभ है—हालाँकि बिस्तर के पास जाकर बार-बार गपशप करने से यह लाभ थोड़ा कम हो जाता है। टांके खुलने के ख्याल से थोड़ी सी सिहरन होने के बावजूद, अब मैं बहुत तरोताज़ा और शांत महसूस कर रही हूँ—यह एक तरह से मन बहलाने वाली छुट्टी है—बच्चे के जन्म के लगभग एक साल बाद मेरी पहली छुट्टी: बहुत ताज़गी देने वाली। सुबह से ही मैं सामने वाली गली में रहने वाली जे विन से उनके ऑफिस, निजी जीवन और मानसिक टूटने के बारे में बात कर रही थी—मैं अपने इस आत्मविश्वास पर खुद को ज़्यादा बधाई नहीं दे सकती क्योंकि मैंने अपने मानसिक टूटने और गलत तरीके से किए गए शॉक ट्रीटमेंट के बारे में भी बता दिया। आज रात घर आने के बाद मैं उनके अनुभव को संक्षेप में बताऊँगी। टेड की हालत मुझसे भी ज़्यादा खराब है—बेचारा कल बहुत परेशान लग रहा था: “तुम ये सब कैसे करती हो?… मेरी कुतिया इतने सारे बर्तन

धोती है… वो बहुत गीला कर देती है” और “लगता है मैं ज़्यादातर रोटी ही खा रही हूँ!” मुझे लगा कि मेरी ज़रूरत है और मैं बहुत खुश और भाग्यशाली हूँ। मेरी ज़िंदगी—अगर मैं इसकी तुलना अपने आस-पास के वार्ड में मौजूद लोगों से करूँ—तो बहुत अच्छी है— पैसा और घर को छोड़कर सब कुछ—प्यार और सब कुछ। धूप वाला दिन। बहुत गर्मी। मेरी पीठ के पीछे लगा रेडिएटर मुझे पसीना दिला रहा है—मुझे इसे भी अपनी परेशानियों में शामिल कर लेना चाहिए था। वार्ड के दूर वाले हिस्से में स्थित तीन बड़ी खिड़कियाँ सफेद रंग की हैं और सूरज की रोशनी से जगमगा रही हैं। गहरे हरे रंग के पर्दे, धुंधली रोशनी वाले बल्ब।
शाम के 7:45, धुंधलका। धीमी आवाज़ें, नींद से भरी साँसें। मैं दवा लेने के समय तक सोने जा रहा था, लेकिन उस बुढ़िया के हाथों को धनुषाकार पुल-अप बार को उसकी अजीबोगरीब भारी लोहे की "जेल की जंजीर" से जकड़े हुए देखकर मैं रुक गया। उसके टेढ़े-मेढ़े सफेद हाथ। श्रीमती फ्राई जाहिर तौर पर किसी शुक्रवार को किसी कार से कुचल गई थीं—ताज़ा खबर यह है कि उन्होंने ज़िद की थी कि उन्हें दूसरे अस्पताल से इस अस्पताल में लाया जाए—जो उनके घर के पास है… वह कराहती हैं, चिल्लाती हैं, गालियाँ देती हैं। "तुम शैतान! तुम मुझे जान से मारना चाहते हो"… दवाइयों को लेकर, या बिस्तर पर करवट बदलने को लेकर या किसी और बात पर। "माँ, माँ… ओह, मैंने कितना कष्ट सहा है।" वह दवा लेने से इनकार करती हैं, लगातार नर्सों को बुलाती रहती हैं। आज रात (अब पौने नौ बज रहे हैं) मैं खिलखिलाती RADAac वाली लड़की के साथ बैठी थी—छोटे लाल बाल, गुलाबी चमकदार शिशु जैसी त्वचा, यहाँ तक कि सफ़ेद दाँत और दिमाग़ी ऑपरेशन के बारे में शैम्पेन पर झाग की तरह खिलखिलाती हुई, नाक में लगी नली और खोपड़ी के आकार के मोज़े में

बुरी तरह से खर्राटे लेते हुए। उसने मुझे बताया कि श्रीमती फ्राई के पैर (दोनों टूटे हुए) लगभग ठीक हो गए हैं। एक और कहानी कहती है कि वे सिर्फ़ टूटे हुए थे। जिस आदमी ने उन्हें टक्कर मारी थी और उसकी पत्नी दबे पांव फूल लेकर आए; “आप कैसी हैं?” “बहुत खराब, बहुत खराब,” उसने बड़े चाव से कहा। अक्सर, नर्सें गायब हो जाती हैं। मेरे सामने वाली पंक्ति के बाईं ओर टूटी हुई टांग में ट्रैक्शन लगी 82 साल की बूढ़ी, बिना नाक वाली महिला ने थोड़ी देर पहले बेड पैन के लिए चिल्लाया: “नर्स”—उसका मोज़े से ढका चेहरा उस मोटी, हंसमुख, सांवली इतालवी लड़की के पीछे अजीब तरह से झुका हुआ था। मुझे धीरे-धीरे महसूस होने लगा कि हर मरीज़ के लिए नर्स बुलाना अब मेरी ज़िम्मेदारी बन गई है। “नर्स!” बुढ़िया चिल्लाई। आज सुबह मैंने उसे यह कहकर खुश करने की कोशिश की कि बगल वाले वार्ड में उससे कम से कम 10 साल बड़ी एक महिला है जिसके दोनों पैर टूटे हुए हैं। “भगवान भला करे,” बुढ़िया ने कहा। यहाँ बहुत ही सौहार्द है। मुझे “मिलने-जुलने” का बढ़िया मौका मिला है। नर्सें सचमुच फरिश्ते हैं।
सोमवार, 6 मार्च, शाम 4:20 बजे। पार्क की गर्म धूप में एक घंटा अकेले पास्टर्नक की अंतिम कविताएँ पढ़ने के बाद बिस्तर पर लेटी हुई थी—उन कविताओं ने मुझे बेहद रोमांचित कर दिया—उनकी मुक्त, गीतात्मक शैली और संक्षिप्त (हालाँकि कभी-कभी थोड़ी भावुक) भाषा शैली। मुझे लगा: इनके माध्यम से एक नई शुरुआत की जा सकती है। यही संगीत की ओर वापसी का रास्ता है। मैं अपनी नई कठोर गद्य शैली से हारने पर रो पड़ी। एक भयानक रात के बाद थकी हुई—सफेद जड़ों वाले दोनों हाथों वाली महिला (श्रीमती फ्राई) ने खूब नाटक किया—पुलिस को बुलाने लगी। “पुलिस, पुलिसवाले, मुझे यहाँ से निकालो”; “ओह, मैं कितना कष्ट सह रही हूँ।” नाटकीय ढंग से कराहते

हुए। “मैं सुबह अपने डॉक्टर को बुलाकर दिखाऊँगी कि कैसे तुम अपनी मनमानी के कारण मुझे पूरी रात अकेला छोड़ देते हो। मैं तुम्हारी मम्मी को तुम्हारे बारे में बता दूँगी।” सिस्टर उसके पास गई। “तुम अपनी दवा क्यों नहीं ले रही हो?” ज़ाहिर है उसने कुछ ऐसी गोलियां खा ली थीं जिनसे उसे दिनभर शौच होता रहा और उसे लगता है कि वे उसे इस तरह मारना चाहते हैं। कुछ और गालियां सुनने के बाद मैंने देखा कि रोशन ऑफिस-क्यूबिकल में नर्स और सिस्टर खुशी-खुशी एक इंजेक्शन तैयार कर रही थीं। अक्सर उसकी आवाज़ उन्मादी सी लगती है—“ओह, मेरे आस-पास ये क्या हैं? दीवारें दीवारें दीवारें…” “ये खिड़कियां हैं,” सिस्टर ने दृढ़ता से कहा। “कुर्सी पर ये फ्रॉक क्या हैं?” “ये तकिए के कवर हैं।” लगभग 3 बजे मैं एक ज़ोरदार आवाज़ और फिर से चिल्लाने की आवाज़ से जाग गया। उसने दवा का गिलास नीचे फेंक दिया था। ज़ाहिर है यहाँ अपने पहले ही दिन उसने अपने पर्स से एक डॉक्टर को मारा था। मेरे टांके खिंच रहे हैं और कटक रहे हैं। मैं थका हुआ हूँ। •नोट: •प्रत्येक बेड के ऊपर गुलाबी रंग के "बड वास" या एंटीसेप्टिक रखे होते हैं जिनमें हमारे थर्मामीटर रखे जाते हैं।
•खिड़कियों की चौखटों पर रखे फूलों के गमले, बहादुर लेकिन मुरझाते फूलों से भरी ट्रॉलियां।
• मेज पर बुढ़िया का प्लास्टिक का मांस के रंग का हार, मानो एक अतिरिक्त सिर हो—आड़ू-गुलाबी रंग का, जिसमें हवा के लिए छेद हैं, सफेद पट्टियाँ और चांदी के स्टड लगे हैं, और पीले स्पंज और गुलाबी फूलों वाले रेशमी नाइटगाउन की अस्तर लगी है। फलों का कटोरा, सी. पी. स्नो की किताब 'न्यू मेन', और हठधर्मिता—बेटी द्वारा लाए गए डिब्बाबंद खाने को खा लेना।

•कल रात एक बार बूढ़ी महिला फ्राय चिल्लाई, “तुम हंस सकते हो। मैं हंस सकती हूं। जो अंत में हंसता है, वही सबसे अच्छा हंसता है।” मुझे अपराधबोध हुआ, क्योंकि मैंने तकिए में अपनी हंसी दबा ली थी। लेकिन नर्सें भी हंस पड़ीं।
• मोज़े पहने, नाक में नली लगी उस महिला का दिमाग़ खराब था—सांस लेने में तकलीफ़, लार टपकना, आँखें बेजान। वह ज़िला नर्स थी, मर्दाना, कुशल—अब: "वह किसी भी तरफ जा सकती है—मानसिक रूप से बीमार।"
बिस्तर 1: जोन चार महीने तक पैर से लेकर छाती तक प्लास्टर में लिपटी रहती है और गहरे हरे रंग की ऊन बुनती है। दक्षिण डेवोन में समुद्र के किनारे उसका एक घर है। वह दिखने में बेहद साहसी है। वह 'हॉर्स एंड हाउंड' पढ़ती है। उसके दो बेटे हैं, 16 और 14 साल के। उसे 6 साल की उम्र में पब्लिक स्कूल भेजा गया था। "एकमात्र चीज़ जो मुझे पसंद है।" उसके कीटविज्ञानी पति, अफ्रीका में उनका जीवन, टिड्डियों का अध्ययन।
बेड 2: कैमडेन टाउन में जन्मी और कम उम्र में ही पास के ही रहने वाले डच मूल के लड़के से शादी करने वाली, सर्वव्यापी लोकप्रिय रोज़, जो 15 वर्षों तक उसी प्रिंटिंग फैक्ट्री में काम करती रही और जिसका एक बेटा था—अब इस दुनिया में नहीं है।
बिस्तर 3: श्रीमती जॉन्स—गले में हार पहनने वाली महिला—एक शिक्षिका की तरह सीधी बैठी हैं, जैसे कोई शिक्षिका पढ़ रही हो। मैंने उनके बारे में सही अनुमान लगाया था—वे खुद को "बेहतर" समझती हैं—एक शिक्षिका जैसी गंभीरता बनाए रखती हैं, जिसे उन्होंने कल मेरे सामने तोड़ा। वे एक प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक की पत्नी, दो ग्रामीण स्कूल शिक्षकों की बेटी और खुद भी शिक्षिकाओं की पोती हैं। उनकी बेटी एक दबंग और बातूनी

शिक्षिका हैं, जिन्होंने—आश्चर्यजनक रूप से नहीं—अपने पहले बच्चे के जन्म से पहले ही अफ्रीका में अपने पति को तलाक दे दिया था और अब वे लंदन विश्वविद्यालय में शिक्षकों को पढ़ाती हैं। उन्होंने कल रात लगभग रोते हुए मुझे बताया कि जब मैं बाहर थी, तो उनकी बेटी ने मेरी किताबें देखीं और कहा कि उसके बगल में "एक बुद्धिजीवी" बैठी है। उन्होंने कहा कि बात न करने पर उन्हें "बहुत असहज" महसूस होता है, लेकिन उन्हें हमेशा दर्द रहता है, उनकी रीढ़ की हड्डी में टीबी का फोड़ा है। इसका इलाज "गलत" तरीके से किया गया—न्यूराइटिस समझकर, व्यायाम के साथ—अब हालत बहुत खराब है। ऐसा लगता है कि वे अपनी परेशानी से मुंह मोड़े बैठी हैं और उन्होंने अपने डॉक्टरों और नर्सों को कड़ा विरोध दिया है। उसकी रात में खर्राटे लेने की आदत और दिन भर सोते रहने की आदत हम सभी को निर्दयी बनाने के लिए काफी है।
आज मुझे पता चला कि श्रीमती फाफ्रेथ कौन हैं—वह रहस्यमयी महिला जिनके पूल फॉर्म हमारे घर आते रहते हैं। वह हमारी दिवंगत मकान मालकिन थीं—या थीं—और यहाँ की एक महिला उन्हें जानती थी! बाल सुखाते समय मेरी बीच वाली खिड़की में बैठी सलीके से रहने वाली उत्तरी आयरिश महिला से बात करने का मौका मिला और पता चला कि वह कभी हमारे इलाके में रहती थीं। मैंने उनसे पूछा कि क्या वह चालकोट स्क्वायर को जानती हैं, तो उन्होंने कहा, "मैं नंबर 3 की मकान मालकिन को जानती थी।" उनकी शादी एक फ्रांसीसी विग बनाने वाले से हुई थी। जाहिर है, युद्ध के बाद पुरुषों के विग की बहुत मांग थी, क्योंकि कई सैनिकों के बाल झड़ गए थे और वे किसी न किसी कारण से गंजे हो गए थे।
डेज़ी सचमुच अनोखी है। काश मैं उसकी कहानियाँ सुन पाती। "मैं बता सकती हूँ कि वह यहूदी है," उसने बेबाक श्रीमती फ्राई के बारे

में गर्व से कहा। "उसने 'पहले ही' कहा। यहूदी यही कहते हैं।" "मैं भी 'पहले ही' कहता हूँ," जे ने धीरे से कहा, लेकिन इससे डेज़ी नहीं रुकी। "हम सब छोटे जानवरों की तरह हैं," उसने कहा, "जो खाने का इंतज़ार कर रहे हैं।"
लैवेंडर रंग का स्वेटर पहने हैकनी की सफेद बालों वाली यहूदी महिला ने मुझे अपनी मेहनती शिक्षिका बेटी और अपने प्रतिभाशाली पोतों के बारे में बताया, जो बहुत होशियार हैं, जिनमें से एक ऑक्सफोर्ड में भूविज्ञान में दाखिला ले रहा है। उनकी पढ़ाई में जी-तोड़ मेहनत का आभास होता है। शुक्रवार को वह अपनी खराब फिटिंग वाली नकली टांग ठीक करवाने गई थीं—लेकिन अब वापस आई हैं क्योंकि उनका दूसरा पैर भी खराब हो गया है—वह मधुमेह रोगी हैं — मेरे पिता का क्लासिक मामला—जैसा कि हरे रंग के आर्सेनिक जैसे ड्रेसिंग गाउन पहने उस रहस्यमयी यहूदी महिला ने मुझे टहलते समय बताया था—उन्होंने आने की ज़िद की, लेकिन सीधे अस्पताल चली गईं।
1961 के वसंत और ग्रीष्मकाल में प्लाथ यूजीन एफ. सैक्सटन फाउंडेशन से मिले अनुदान की सहायता से 'द बेल जार' पर काम कर रही थीं। हाशिये में लिखे एक नोट के अनुसार, वह इस समय अपनी शुरुआती डायरियों को दोबारा पढ़ रही थीं, संभवतः स्रोत सामग्री के रूप में। 1961 के ग्रीष्मकाल के अंत तक ह्यूजेस परिवार डेवोन में बस गया था, जहाँ जनवरी 1962 में उनके दूसरे बच्चे निकोलस का जन्म हुआ।
डेवॉन के पड़ोसियों के निम्नलिखित चरित्र रेखाचित्र 1962 में लिखे गए थे; ये उनकी नियमित डायरियों से अलग थे, और इस अवधि से गद्य में बचे हुए एकमात्र अंश हैं, हालांकि वह एक दूसरे उपन्यास पर भी काम कर रही थीं।

क्रिसपेंस में श्रीमती प्लम
शुरुआत में ही पिछले दरवाजे पर एक लंबी, प्रभावशाली, सफेद बालों वाली महिला दिखीं—ऐसा लग रहा था जैसे वह परख रही हों, जांच-परख कर रही हों। उन्होंने मुझे फ्रीडा (प्लैथ की बेटी) के साथ कॉफी पर बुलाया। वह सड़क के उस पार दाहिनी ओर एक सुंदर सफेद घर में रहती हैं, जिसकी काली किनारी है और एक सरकंडे की बाड़ उनके बगीचे की रक्षा करती है, जिसे एक सेवानिवृत्त माली ने खूबसूरती से संवारा है। उनके साथ उनका बूढ़ा डैकशंड कुत्ता पिक्सी भी है… युद्ध के दौरान उनकी बेटी कैमिला (जिससे मैंने अपने उपन्यास में डिडो का नाम लिया) उनके साथ रहीं: उनके घर के पीछे एक विजय उद्यान था। श्रीमती प्लम एक प्रतिष्ठित महिला, प्रशंसनीय। मैं उन्हें और भी ज्यादा पसंद करने लगी हूँ। अगर उनके जमाने में महिलाओं को शिक्षा मिलती होती तो वह डॉक्टर बन जातीं। फिलहाल, उनकी पोती (मुझे लगता है कैमिला की बेटी) एडिनबर्ग में चिकित्सा की पढ़ाई कर रही है। वर्जीनिया (मुझे लगता है) ने इस सर्दी में अपना 21 वां जन्मदिन मनाया—कैमिला ने 40 से अधिक लोगों के लिए दोपहर का भोजन आयोजित किया। वर्जीनिया को सैकड़ों पाउंड, रिकॉर्ड, गहने आदि मिले। मुझे श्रीमती प्लम को यह बताते हुए खुशी हुई कि मैं कैम्ब्रिज गई थी। ऐसी बातें सुनकर उन्हें खुशी होती। पहले तो ऐसा लगा कि उन्हें सुनने में कुछ दिक्कत है, और मुझे उनसे मिलने से डर लग रहा था क्योंकि मुझे ऊंची आवाज में बोलने में बहुत झिझक होती है—अनैतिक उच्चारण के कारण मेरी कही हर बात बेतुकी सी लगती है।
श्रीमती पी. का आंतरिक सज्जा: मैं पतझड़ में आई थी। जालीदार लॉन और फूलों की क्यारी की ओर खुलने वाली फ्रेंच खिड़कियों वाला लंबा बैठक कक्ष फूलों से भरा हुआ था; पीले, गुलाबी, भूरे नारंगी

6 फरवरी, 1962। निकोलस को उसके पहले दिन श्रीमती पी. से मिलवाने लाया। (सुबह की मुलाकात में दाई ने कहा, "श्रीमती पी. निकोलस को देखने के लिए बेताब हैं।") ठंडी, सर्द धूप में सामने वाले आले में श्रीमती पी. के बाज़ार से लौटने का इंतज़ार किया, अंदर जाने की हिम्मत नहीं हो रही थी। श्रीमती पी. निकोलस की बहुत तारीफ़ कर रही थीं। उन्होंने मुझसे उसकी सफ़ेद टोपी उतरवाई ताकि वह उसके सिर का आकार देख सकें और उसके सिर के पिछले हिस्से के उभरे हुए हिस्से पर टिप्पणी की। निकोलस के मर्दानापन पर उन्हें खुशी हुई; उन्होंने पूछा कि क्या फ्रीडा को जलन हो रही है। जब मैंने कहा कि टेड को लग रहा है कि वह किसी और लड़की के बारे में बात करने से हिचकिचा रहा है, तो उन्होंने कहा: मुझे लगता है कि उसे फ्रीडा से जलन हो रही है। उनकी सुनने की अद्भुत, गहरी खूबी। कुछ ऐसा जो एन.टी. में बिल्कुल नहीं है। मैंने रंगों और कपड़ों पर ध्यान देने की कोशिश की। सब कुछ बहुत ही शानदार था—गहरे नीले मखमली पर्दे, गहरे नीले और सफ़ेद ओरिएंटल कपड़े, पुराने, सुरुचिपूर्ण। पॉलिश किया हुआ लकड़ी का फर्श। एक किताबों की अलमारी जिसमें, हैरानी की बात है, 'द लॉर्ड ऑफ द रिंग्स' थी, और, इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है, विंस्टन चर्चिल की युद्ध और अंग्रेज़ लोगों पर लिखी सभी किताबें थीं। बहुत सारी पुरानी बागवानी और यात्रा की किताबें भी थीं। मुझे कभी और ध्यान से देखना होगा ताकि पतली-पतली किताबों को पहचान सकूँ। श्रीमती पी. नेस्केफे के बढ़िया मग बनाती थीं। उन्होंने कहा, "उत्तर में, बच्चे के पहले आगमन पर हमारी एक परंपरा है।" वह रसोई में गईं और जल्दी-जल्दी एक कागज़ की थैली में माचिस (अच्छी माचिस के लिए), कोयला (आग जलाने के लिए), सेहत के लिए नमक, धन के लिए एक सिक्का

और पता नहीं किस लिए एक अंडा लेकर आईं। उन्होंने कहा कि वह एक दोस्त के साथ दो हफ़्ते के लिए मध्य पूर्व जा रही हैं।
21 फरवरी: आज सुबह श्रीमती पी. अचानक मेरे अध्ययन कक्ष के बाहर प्रकट हुईं: टेड और मेरे बीच काफी तीखी नोकझोंक हुई—मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा अचानक से किसी के घर में घुस आना। यह मेरी इकलौती निजी जगह है। मैं अचंभित रह गई और उन्हें अंदर आने को कहा। टेड एक कुर्सी ले आया, और हम दोनों को ही असहजता का एहसास हुआ। वह बेरूत, रोम आदि में अपने दो सप्ताह के प्रवास से पहले अलविदा कहने और बच्चे को देखने आई थीं। मैं उन्हें निकोलस से मिलवाने ले गई, लेकिन उससे पहले उन्होंने अध्ययन कक्ष को इतनी बारीकी से देखा जितना उन्होंने बताया—"यह लड़कों का खेल का कमरा था" (कौन से लड़के?)। मुझे लगा जैसे श्रीमती पी. यह देखना चाहती थीं कि हम पीछे के कमरों में कैसे रहते हैं। उन्होंने मेरे लंबे, बिना गुंथे बालों को ऐसे देखा जैसे उन्हें निहारना चाहती हों, एक-एक इंच तक चखना चाहती हों और फिर कोई राय बनाना चाहती हों। मैं बहुत परेशान और गुस्से में थी। मानो हम किसी भी क्षण देखे जा सकते हों, जांचे जा सकते हों, सिर्फ इसलिए कि हम इतने शर्मीले या विनम्र थे कि मना नहीं कर पा रहे थे, या कह नहीं पा रहे थे कि "वह काम कर रही हैं, मैं उन्हें नीचे बुला लाती हूँ।" या "कृपया यहीं प्रतीक्षा करें।" मुझे टेड पर गुस्सा आ रहा था क्योंकि वह एक घटिया इंसान था, असल में मुझे मिसेज पी पर गुस्सा नहीं आ रहा था। 12 मई: श्रीमती प्लम से तीन महीने से मुलाकात नहीं हुई थी। टेड उनसे शहर में मिला और उन्होंने सुझाव दिया कि मैं आज दोपहर, शनिवार को आ जाऊं। मैं सजे-धजे बच्चे और फ्रीडा के साथ दरवाजे पर खड़ी रही और घंटी बजाती रही। पिक्सी के भौंकने की कोई आवाज नहीं आई। मुझे गुस्सा आया और मैंने व्यर्थ ही सब कुछ साफ किया;

तभी मुझे ऊपर से कुछ खटखटाहट सुनाई दी और मैंने जोर से दरवाजा खटखटाया। श्रीमती पी. आखिरकार दरवाजे पर आईं। उन्होंने पहले मुझे बगीचा दिखाया: रंगों की छटा, छोटे-छोटे कंकड़ के रास्ते, ऊँची पत्थर की दीवारें। एक बगीचे की बेंच के ऊपर एक गुलाबी चेरी का पेड़। लाल, पीले, कद्दू रंग के फूलों की भरमार। मुझे इन आम और लोकप्रिय बगीचे के पौधों का महत्व समझ में आने लगा। एक सजावटी तालाब जिसमें एक बड़ी नारंगी कार्प मछली थी। बेगोनिया, पेओनी, ल्यूपिन, ढेर सारे ट्यूलिप, विशाल पैंसी। साफ-सुथरी, खरपतवार रहित क्यारियां। हमने चाय पी। फ्रीडा चिड़चिड़ी और नखरे वाली मूड में थी। वह एक कांच की ऐशट्रे लिए हुए शरारती और चंचल नजरों से देख रही थी। एक छोटी सी मेज लेकर बाहर भागी और उसे घास पर रख दिया। श्रीमती पी. को इटली में ठंड लग गई थी। उन्होंने पिरामिड देखे थे। उन्हें रोड्स बहुत पसंद आया था। वह सोमवार को अपनी बेटी के यहाँ दो सप्ताह के लिए जाने वाली थीं। उन्होंने निकोलस के सिर की प्रशंसा की, उन्होंने कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं कि वह एक लड़का था। फ्रीडा घड़ी की मधुर घंटी सुनकर रोने लगी। उसे निकोलस के साथ ध्यान पाने की होड़ महसूस हो रही थी। घर के अंदर, चेरी ब्लॉसम और ट्यूलिप के बड़े-बड़े गुलदस्ते रखे थे। पिक्सी कहाँ थी? श्रीमती पी. की अनुपस्थिति में उसकी मृत्यु हो गई थी। उनकी आवाज़ में दबी हुई उदासी थी। उन्होंने मुझे सलाह दी कि मैं अपने ट्यूलिप उखाड़ कर जला दूं, क्योंकि मैंने जिन लक्षणों का वर्णन किया था, उनसे लग रहा था कि उनमें आग से होने वाली बीमारी है।
श्रीमान और श्रीमती मिलफोर्ड
1 मार्च, गुरुवार। कोने पर स्थित मिलफोर्ड्स की कुटिया में मेरी पहली मुलाकात, जो मैरी स्मिथ के घर से सटी हुई थी, और सामने

जार भी था जिसे उन्होंने खुद संरक्षित किया था। मैंने उनसे बातचीत की।
बमबारी के दौरान मिलफोर्ड परिवार लंदन (विंबलडन) में रहता था। उनकी खिड़कियां टूट गई थीं। श्रीमती मिलफोर्ड ने बमबारी के दौरान सीढ़ियों के नीचे बैठकर अपनी पड़ोसी (एक पब मालिक की पत्नी) को गले लगाया। उन्होंने कहा, "अगर हम मारे जाते, तो एक-दूसरे को बाहों में भरकर मरते।" वे लंदन में इसलिए रुके रहे क्योंकि उनका बेटा बेन सेना में था। उन्हें लगा कि अगर वह घायल हो जाता है या घर लौट आता है, तो वे उसके साथ रहेंगे और घर की रक्षा करेंगे। मुझे यह पूछने की हिम्मत नहीं हुई कि बेन अब कहाँ है, क्योंकि मुझे डर था कि वह मर चुका होगा।
फिर वे ब्रॉडवुडकेली (नॉर्थ टॉटन से कुछ मील दूर) चले गए। वहाँ की मिट्टी उपजाऊ नहीं थी, यहाँ की उपजाऊ लाल मिट्टी जैसी बिल्कुल नहीं। उन्हें बगीचे में बहुत मेहनत करनी पड़ती थी, तीन चौथाई एकड़ का बगीचा उनके लिए बहुत बड़ा था, इसलिए वे इस कॉटेज में आ गए। वे अपने सामने वाले कमरे में वॉलपेपर लगाने के लिए मिस्टर डेल्व नाम के एक डेकोरेटर का इंतज़ार कर रहे थे, इसलिए उन्हें नहीं पता था कि वे चाय पर कब आ पाएँगे (इन दोनों का क्या संबंध है?)। मिस्टर डेल्व को दीवार ठीक करनी थी। उनके डाइनिंग रूम में एक भारी दर्पण था, जो या तो बैठक की दीवार से गिरने वाला था, या फिर बैठक की किसी खराब दीवार को सहारा दे रहा था। मैं ठीक से बता नहीं सकती। वे पुस्तकालय जाते हैं... किताबें लेने के लिए, लेकिन बहुत कम। पुस्तकालय कक्ष तक जाने वाली सीढ़ियाँ श्रीमती मिलफोर्ड के लिए बहुत कठिन हैं और मिस्टर मिलफोर्ड अंधे हैं और अगर वे खुद जाते तो किताबों के शीर्षक नहीं पढ़ पाते। "हम दोनों बूढ़े हो गए हैं।" वे कैथोलिक भी हैं। मैं

फ्रीडा के साथ निकली, ताजी हवा में जाने के लिए बहुत बेताब थी। बुढ़ापे और अपंगता की गंध मेरे लिए सचमुच असहनीय है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।
श्रीमती मिलफोर्ड ने मेरी केक प्लेट से सावधानीपूर्वक उतारीं, प्लेट को धोकर सुखाया और मुझे वापस दे दी। श्री मिलफोर्ड ने मुझे बताया कि बगीचे में लंबे डंठलों पर उगने वाले झाड़ीदार पौधे "हरी सब्जियां" थे।
नैन्सी एक्सवर्थी और विविध जानकारी
25 अप्रैल। नैन्सी इस पूरे सप्ताह सफाई करने नहीं गई। उसकी सास पिछले मंगलवार को फिर बीमार पड़ गई थीं। नैन्सी के पति वाल्टर पिछले सप्ताहांत डेवोन की घंटी बजाने वालों की प्रतियोगिता में गए थे। तभी उनकी माँ का निधन हो गया। मैं नैन्सी की सहेली, कुबड़ी मौली से मिली, जो हमारी गली के नीचे एक छोटे से घर में रहती है, जहाँ एक लोमड़ी का खिलौना रखा है। उसने बताया कि नैन्सी पूरी रात जागती रही और उसे एक ही दिन में बुढ़िया की चार चादरें धोनी पड़ीं, क्योंकि वह बिस्तर गीला कर रही थी और उल्टी कर रही थी। फिर, शुक्रवार को जब टेड और मैं शाम ढलते ही जिम को डैफ़ोडिल के फूलों का अपना बड़ा साप्ताहिक गुलदस्ता देने जा रहे थे, तभी मौली अपने ऊँचे, काले ऑर्थोपेडिक बूट पहने हुए बाहर आई और बोली, "श्रीमती ह्यूजेस, श्री ह्यूजेस।" नैन्सी की सास का उसी दोपहर दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया था। मुझे बहुत राहत मिली कि बीमार और लाचार सास की देखभाल करने की वजह से मैं अपनी बेहद मददगार नैंसी को नहीं खोऊँगी। मैं कितनी स्वार्थी हूँ! लेकिन वह बुढ़िया ज़ाहिर तौर पर बहुत ही कमज़ोर मरीज़ थी, डॉक्टर की बात कभी नहीं मानती थी, और मौली ने खुद बताया कि

वाल्टर ने कहा था कि अगर उसे जाना ही था, तो यह एक तरह से दया ही थी कि वह ज़्यादा देर तक ज़िंदा नहीं रही।
आज दोपहर 2:30 बजे अंतिम संस्कार है। कल सुबह मौली ने मुझसे पूछा कि क्या वह चार शिलिंग के डैफ़ोडिल खरीद सकती है। हमने मना कर दिया, हम एक बड़ा गुच्छा लाएँगे, हम उसे एक गुच्छा लाने की सोच रहे थे। तो कल रात हमने लगभग 150 डैफ़ोडिल तोड़े और मैं गुलाबी धुंध में नीचे गया और दरवाजा खटखटाया। मौली घर पर नहीं थी। लेकिन आज सुबह उसके डच दरवाजे का ऊपरी हिस्सा खुला था और वह इंतज़ार कर रही थी। "मैं आपकी कितनी ऋणी हूँ?" "अरे, कुछ नहीं," मैंने कहा। उसने बताया कि वह एक हफ्ते में वेस्टवर्ड हो! में विकलांगों के लिए आयोजित छुट्टी कार्यक्रम में जा रही है (जो ऑक्सफ़ोर्डशायर जैसी दूर जगहों से आते हैं)। वे हर साल दो हफ्तों के लिए आते हैं। रोटरी क्लब उन्हें दोपहर के भोजन के लिए बाहर ले जाता है। वे बहुत ऊँचाई पर, एक बड़े से हॉल में रहते हैं। वह अपने बिस्तर से आइल ऑफ लुंडी देख सकती है। मैंने कहा कि डैफ़ोडिल के साथ हमारा प्यार भी भेज देना। उसने कहा कि नैन्सी कल मुझसे मिलने आएगी।
नैन्सी के पति वाल्टर, जिम बेनेट के यहाँ काम करने वाले एक लंबे- चौड़े, मुस्कुराते हुए गोरे आदमी हैं। छत की मरम्मत करते समय वे गिर गए और उनकी पीठ में मोच आ गई। मार्जोरी टायरर बताती हैं कि जब वे उनके बाथटब की मरम्मत करने आए थे, तो उन्होंने तराजू पर पैर रखकर उसे तोड़ दिया था। वे घंटी बजाने वाले हैं, सात नंबर की घंटी, एक बड़ी घंटी। वे नॉर्थ टॉटॉन अग्निशमन विभाग के प्रमुख हैं (जहाँ हर बुधवार को शाम 7 बजे अभ्यास होता है), और स्थानीय स्कूल में लकड़ी का काम सिखाते हैं। मुझे उम्मीद है कि मैं अगले पतझड़ में लकड़ी का काम सीखूंगा।

श्री विलिस
4 जुलाई। दाई ने बताया कि श्री विलिस के पास एक पियानो है। उसने कहा कि वह देखने में बहुत खराब है, लेकिन उसकी आवाज़ अच्छी है। हम दोपहर की तेज़ गर्मी में इधर-उधर घूम रहे थे। पहले तो हम एक गलत घर पर पहुँच गए। एक मुस्कुराती हुई सफ़ेद बालों वाली महिला ने हमें पहाड़ी पर बने अगले घर का पता बताया। उसके दरवाजे पर एक अजीब सा बूढ़ा, ज़ॉम्बी जैसा कुत्ता था, जिसके कटे हुए बालों में से गुलाबी-भूरा मांस दिख रहा था। उसने कहा, "यह मेरा नहीं है, यह पहाड़ी पर रहने वाले एक किसान का है, यह भेड़ों की रखवाली करने वाले कुत्तों की तरह एक प्राचीन नस्ल का कुत्ता है, और यह मेरे पास जूठे दानों के लिए आता है।" हमने घंटी बजाई। कोई जवाब नहीं मिला। वह सुन रही थी और नीचे आई: "मुझे लगता है कि वह सुन नहीं पा रहा है, वह रेडियो सुन रहा है।" उसने दरवाज़ा ज़ोर से खटखटाया और अंदर गई: "कुछ युवा लोग आपसे मिलने आए हैं।" एक बहुत बूढ़ा, चिड़चिड़ा, सफ़ेद बालों वाला आदमी, लेकिन किसी तरह जीवंत, हमसे मिला। वह रेडियो के सामने बैठा था, और बैठक में सजे हुए बिस्तर पर किशमिश वाले बन्स से भरी चाय की ट्रे रखी थी। वह हमें एक अंधेरी, गंदी रसोई से होते हुए पीछे ले गया, वहाँ पड़ी बाल्टी (पेशाब की?) को हटा दिया और हमें एक पुराना, बदबूदार पियानो दिखाया, जिसकी बाहरी परत उखड़ रही थी। हमने हताशा से कीबोर्ड का कवर उठाया। यह उसकी पत्नी का था, जिसकी लगभग 74 वर्ष की आयु में चार साल पहले मृत्यु हो गई थी। इसे खोला नहीं गया था। हमने कुछ सुर बजाने की कोशिश की। हर दूसरा सुर अटक गया, गतिहीन हो गया, और चाबियों के बीच से कोई पदार्थ, शायद जमी हुई धूल या अंदरूनी हिस्से की सड़न, रिस रहा था।

फिर उन्होंने बोलना शुरू किया। मैंने पूछा, "क्या खिड़की में ये आपकी लिखी हुई चीज़ें हैं?" मैंने कुछ अजीब से पोस्टर देखे थे जिन पर बड़े-बड़े, सादे, बच्चों जैसे अक्षरों में लिखा था, "सदी का सबसे बड़ा घोटाला", "अगर उसका इरादा रुकने का न होता तो क्या वह अपना प्रैम वहीं छोड़ देता?", "जल बोर्ड" और "राष्ट्रीय सहायता बोर्ड"। एक तरह की सार्वजनिक शिकायत, समझ से परे, पहले पेंसिल से लिखी हुई, फिर उसी कार्ड पर स्याही से दोबारा लिखी हुई। एक पोस्टर उल्टा लगा हुआ था। ज़ाहिर है, ये उनकी शिकायतें थीं। उनके भाई और बहन ने उनकी सात ज़मीनें हड़प ली थीं: संपत्ति उनके भाई और उनके वारिसों (यानी मैं, है ना, उनका वारिस?) के नाम कर दी गई थी और फिर बेच दी गई। वेल्स के एक डॉक्टर ने नर्सों से उन्हें दिन में दो इंजेक्शन लगवाए और उनके बाएं हिस्से को लकवाग्रस्त कर दिया, फिर कहा कि उन्हें स्ट्रोक आया है। उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई थी—उन्हें अस्पताल में भर्ती नहीं किया गया क्योंकि वे लाइलाज थीं। उनकी मृत्यु किस कारण हुई थी—दिल टूटने से? उनके दामाद ओकहैम्पटन में एक फ्रीमेसन थे—फ्रीमेसन सत्ता में थे, वे उन्हें लूट रहे थे, धोखा दे रहे थे। राष्ट्रीय सहायता संस्था भी उन्हें लूट रही थी। उन्होंने महारानी को पत्र लिखा था। किसी ने अखबार में कहा था कि गुलाबी चमक वाले कप सैकड़ों पाउंड के हैं। उन्होंने हमें अपनी अलमारी में गुलाबी चमक वाली चार तश्तरियाँ और तीन कप दिखाए। उस आदमी ने कहा था कि वह इलाके में आएगा और उन्हें देख कर उनकी कीमत बताएगा, लेकिन ज़ाहिर है, वह कभी नहीं आया। उनकी पत्नी बिस्तर से गिर गई थीं, घर कसाईखाने जैसा हो गया था, और कोई नहीं आया। उनकी बेटी भी नहीं आई और उनका दिल तोड़ दिया। उन्हें गुरुवार रात को नर्स के लिए दरवाजा खुला छोड़ना पड़ा, क्योंकि कोई कप चुरा सकता था। उनके

पास चीनी मिट्टी के बर्तन भी थे, एक डिनर सेट और एक सुंदर चाय सेट। एक मेज थी, जिस पर पीतल के दो पॉलिश किए हुए मोमबत्ती स्टैंड और एक पीतल की घंटी थी। विंस्टन चर्चिल गिर गए थे, और देखिए उनके साथ कैसा बर्ताव हुआ था। श्री विलिस गिर गए, और उन्हें खुद उठने में एक घंटा लग गया। अन्याय का सैलाब जारी रहा, शायद छोटी-मोटी बातों या मामूली शिकायतों का एक भयानक मिश्रण। पुलिसवाला सड़क के दूसरी तरफ अकड़कर चल रहा था और उसने खिड़की पर लगी अपनी शिकायतें नहीं पढ़ीं, जो सबके सामने थीं। हम परेशान होकर धीरे-धीरे बाहर निकले और उससे कहा कि नर्स से बात करो, वो अच्छी है। उसने माना, "हाँ, सारी नर्सें अच्छी हैं, मुझे कई नर्सों से इलाज मिला है..." और हम चले गए।
मेजर और श्रीमती क्रम्प
व्हिटसन, 10 जून। चार्ली पोलार्ड की मधुमक्खी पालन सभा में क्रम्प परिवार से मुलाकात हुई और उन्होंने हमें चाय पर आमंत्रित किया। एग्सफोर्ड रोड पर स्थित उनका घर हमें "डाक टिकट जितना छोटा" लगा... एक छोटा, तंग ईंटों का बना घर, एक ही मंजिल पर, किसी हॉलिडे कैंप जैसा। सामने की ओर कांच की अंगूर की बेलों का मंडप बना था, जहाँ से डार्टमूर तक फैले हरे-भरे खेतों का नजारा दिखता था, और रसोई पीछे की ओर बनी थी। सामने और पीछे दोनों तरफ करीने से कटा हुआ लॉन था। सामने के लॉन के निचले हिस्से में, गुलाबी और सफेद रंग से रंगे मधुमक्खी के छत्ते थे, जिनके चारों ओर बड़े-बड़े नीले कॉर्नफ्लावर ("उन्हें ये बहुत पसंद हैं") और लाल और पीले रंग के झाड़ू ("तीन से छह की कटाई") लगे थे। और मधुमक्खी पालन के उपकरण और निगरानी के लिए एक नया शेड भी था, जो खुद खड़ा किया जा सकता था और जिसकी फर्श साफ बजरी की थी। बेहद खूबसूरत सब्जी का बगीचा—घनी, झाड़ीदार स्ट्रॉबेरी के पौधों की

कतारें, कुछ पर सफेद फूल, कुछ पर हरे फल लगने शुरू हो रहे हैं: मीठी मटर की बेलें, रूबर्ब, खरपतवार से भरी शतावरी की क्यारी (एकमात्र अव्यवस्थित कोना), वेलोसिटी गोभी, गोल और चमकदार हरे रंग की रोएंदार गूजगोग, अजवाइन, चौड़ी फलियाँ। बेहतरीन ढंग से साफ की गई कतारें। फिर मुर्गियों का एक झुंड, जिनके अंडे चुमले का आदमी इकट्ठा करता है, न कि ओकहैम्प्टन का आदमी (जो अंडों को धोने में बहुत ज्यादा नखरे करता था)। अनगिनत टिन के डिब्बों में पौधे लगाए गए हैं।
श्रीमती ऑलिव क्रम्प एक अद्भुत और अदम्य महिला थीं: छोटे सफेद बाल, लंबी कद-काठी, तेज नीली आंखें और गुलाबी गाल। थोड़ी लालची, हालांकि थोड़ी मोटी, वह चाय के साथ खूब सारे स्कोन, क्रीम और जैम खाती थीं। वह साल में लगभग 200 किलो जैम डिब्बे में बंद करती थीं (या बोतलों में भरती थीं)। और अपना शहद खुद निकालती थीं। देश में कंजर्वेटिव पार्टी की सचिव। दोपहर के अंत में, उन्होंने ब्रिटिश गुयाना में बिताए अपने जीवन की स्क्रैपबुक निकाली। एक आश्चर्यजनक दस्तावेज़। उनके तीन सीटों वाले विमान से हवा में देखे गए झरनों की ढेरों तस्वीरें; अमेलिया ईयरहार्ट की तरह उनका काला रेशमी फ्लाइंग सूट; उनका सुंदर पायलट; बाल-बाल बचने के किस्से। छोटे बालों में, पैंट पहने, खुद सुंदर दिखते हुए, एक डरे हुए काले आदमी को मिट्टी हटाने का आदेश देते हुए, घोड़े पर सवार, अपने इंजीनियर के साथ मिलकर बनाए गए लोकोमोटिव को चलाते हुए, नदी तक लकड़ी पहुंचाने में मदद के लिए बनाई गई 7 मील लंबी रेलवे पटरियों को सीधा करते हुए उनकी तस्वीरें। जैसे-जैसे उनकी कमाई बढ़ती गई, वैसे-वैसे उनके लकड़ी के घर और भी भव्य होते गए। शुरुआत में वे इतने गरीब थे कि मांस भी नहीं खरीद सकते थे; अंत में वह अनुदान 180,000 पाउंड में बिक गया। मुझे समझ नहीं आ रहा

था कि मेजर उसका पहला पति था या दूसरा। या फिर लकड़ी का बागान उसने और उसके पिता ने बनाया था या उसने और उसके पति ने। एक बार उसने कहा कि उसके कोई बच्चे नहीं हैं, लेकिन वह माताओं के संघ में जाती है, क्योंकि उसने बहुतों की देखभाल की है। और फिर, जब वह मुझे हॉल में बच्चों और शादियों की तस्वीरें दिखा रही थी, तो ऐसा लगा जैसे वह कह रही हो, "ये उसके बच्चे हैं," यानी मेजर के? उसके पिता... एक अद्भुत 89 वर्षीय व्यक्ति, सफेद लिनेन जैकेट पहने, जिसकी नीली आंखें फौजी जैसी थीं और जो अपनी सेहत का श्रेय जीवन भर प्रतिदिन एक क्वार्ट रम पीने को देते थे, ने बताया कि जब एक जगुआर उन्हें परेशान कर रहा था, तो उसने सभी कुत्तों को बंद कर दिया और उसे गोली मारने का फैसला किया। अंधेरे में घर की खिड़की पर एक आवाज, एक खरोंच की आवाज सुनाई दी। राइफल लेकर चुपके से नीचे गई और बाहर देखा: खिड़की से एक काली आकृति गिरती हुई देखी। उसने सोचा, यह एक कुत्ता है, जिसे जगुआर ने बाहर फेंक दिया है। मैं इसे बचा लूंगी। वह दौड़ी और उस काली वस्तु को गले लगा लिया, जो एक जगुआर निकला। वह तेजी से भागा और मुर्गीखाने में छिप गया। वह पास गई और मुर्गीखाने में गोली चलाई, फिर भाग गई। सुबह आदिवासियों ने जगुआर को वहीं मृत पाया, उसके फेफड़े में गोली लगी थी। तो वह एक मजबूत महिला है। बहुत ही दृढ़ निश्चयी। कहते हैं कि ये महिलाएं अपने पतियों के खराब स्वास्थ्य की चिंता करने और भगवान की दी हुई चीज को स्वीकार न करने के कारण मल्टीपल स्केलेरोसिस से ग्रसित हो जाती हैं! मेजर सिडनी क्रम्प अजीब तरह से सबसे अलग थे। वे हमेशा अपनी पत्नी की मधुमक्खियों पर विशेषज्ञता और दबदबे का मज़ाकिया अंदाज़ में ज़िक्र करते रहते थे: "उसने मेरी गर्दन पर उंगली रखी हुई है।" वे कर्मठ व्यक्ति थे; एक जगह स्थिर नहीं रह सकते थे।

उनके पिता एक शराबी पत्रकार और सनसनीखेज उपन्यासकार थे। उन्होंने खुद घुड़सवार सेना में अपना करियर शुरू किया और ब्रिटिश गुयाना में सी.आई.डी. के प्रमुख के पद तक पहुंचे। वकीलों के प्रति उनके मन में अपार प्रशंसा थी, व्यंग्यात्मक ढंग से: वे कैसे सत्य और विद्वानों को मूर्ख बना देते हैं। वे पूरी सर्दी लिखते रहते थे: रिपोर्टें। एक जगह खड़े होकर बात नहीं कर सकते: घुड़सवार की तरह लड़खड़ाते हुए लॉन के चारों ओर चक्कर लगाते रहते थे। उनकी नीली आंखें और कटी हुई चांदी जैसी मूंछें भी उनकी पहचान थीं। उनके ससुर, जो बूढ़े थे, मानो उन्हीं की तरह दिखते थे। उन्होंने कहा, "तीन बातें मैं तुम्हें बताता हूँ: व्यापार में कोई भावना नहीं होती। राजनीति में कोई ईमानदारी नहीं होती। और स्वार्थ ही दुनिया को चलाता है।" मैंने कहा, "ठीक है। मैं तुम्हें ये बातें बताता हूँ।" मैंने टेड को टिन में पैक की हुई छोटी वेलोसिटी पत्तागोभी का एक बॉक्स और कुछ बहुत ही अजीब बेलनाकार हरी अजवाइन के गुच्छे दिए ("सूप के लिए")। … उनकी बेटी के अनुसार, वह बूढ़ा व्यक्ति कई तरह की अद्भुत और विचित्र बातों का धनी था। ऐसा लगता था मानो वह सुनने वाले के लिए बेहद उत्सुक हो। उन्होंने अपना फोटो एल्बम निकाला जिसमें उनके द्वारा ली गई पुरस्कार विजेता तस्वीरें थीं: एक बूढ़ा फेरीवाला जिसके बाल सफेद थे और चेहरा मेतुसेला की तरह झुर्रियों वाला था; एक मोटा-सा छोटा आदिवासी बच्चा मिट्टी खा रहा था; तार की बाड़ पर बर्फ ("यह मधुमक्खी का छत्ता है," किसी ने अनुमान लगाया, जिससे वह बहुत खुश हुए), हाथ से रंगे हुए लिली के पत्ते जो चटख हरे तश्तरी जैसे दिखते थे, और ब्रिटिश गुयाना में दुनिया के सबसे ऊंचे झरने (काइतेउर?) पर चांदनी। [उसने] बताया कि वह एक कुशल निशानेबाज, विश्व चैंपियन और राजा-रानी (कौन से?)

के साथ एक शिकार पार्टी में एक मनोरंजक कलाकार थे। अंत में, वह टेड को अपने बेडरूम में ले गए, ताकि उसे रंगीन राइनस्टोन से बने गहनों के छोटे-छोटे डिब्बे और फ्रेम दिखा सकें जो उन्होंने दोस्तों को दिए थे; उसने उसे फ़ोटोग्राफ़ी के लिए अपने जलरंग दिखाए, और अपने माता-पिता का एक अंडाकार काला-सफ़ेद चित्र दिखाया, जिसमें एक सांवली, दबी-कुचली छोटी महिला और दाढ़ी वाले मुस्कुराते हुए पितृसत्तात्मक पुरुष थे (उसके माता-पिता विद्रोह में मारे गए थे; उसकी शादी 14 साल की उम्र में हो गई थी)। उसने बच्ची को हंसाने पर गर्व जताया। उसने फ्रीडा की अजमोद खाने का नाटक किया और फिर उसे वापस दे दिया, जबकि फ्रीडा ने अपना अजीब सा "शर्मीला" चेहरा बनाया और अपनी पलकों के नीचे आंखें एक तरफ कर लीं। उसने एक तिलचट्टे की कहानी सुनाने का वादा किया। जाते समय उसने मुझे "स्मृति के लिए" रोज़मेरी की एक टहनी दी। उसने कैप्टन हॉर्नब्लोवर की एक किताब निकाली, जिस पर सी. एस. फॉरेस्टर के हस्ताक्षर थे, जिनकी तस्वीर उसने बड़े झरने के ऊपर खींची थी।
13 साल की मार्गरेट, जो सुनहरे बालों वाली, शांत, गोल-मटोल चेहरे वाली और प्यारी सी दिखने वाली लड़की थी, बोर्डिंग स्कूल से अपने दादा-दादी के साथ रहने आई थी। वह अपने खिलौने, एक कुत्ता और एक गुड़िया लेकर आई और फ्रीडा का मनोरंजन करने लगी; बाद में उसने बच्ची को गले लगाया और प्यार से पुचकारा।
चाय की बड़ी प्लेट पर स्कोन्स, क्रीम, चेरी जेली, गाढ़ी डार्क फ्रॉस्टिंग वाला चॉकलेट केक और छोटे-छोटे सैंडविच परोसे गए। छोटी सी डाइनिंग रूम में, जो साइडबोर्ड और टेबलों से भरी हुई थी, चाय का माहौल थोड़ा अटपटा और हवादार था। घर के अंदरूनी हिस्से

में दो बेडरूम, एक बाथरूम और एक छोटा सा सामने का कमरा था जिसमें एक टीवी रखा हुआ था।
बूढ़े व्यक्ति ने अपनी तस्वीरें दिखाते हुए कहा: "यह वह लड़की है जिसके न्यूजीलैंड में दो बच्चे हैं, यह वह है जिसकी आवाज़ ओलिव अगले हफ्ते देखने जा रही है, यह वह लड़का है जिसकी मृत्यु हो चुकी है, यह उन सभी की माँ है..." और अपनी पत्नी की एक तस्वीर दिखाई, जिसकी 25 साल पहले मृत्यु हो गई थी, उसकी गोद में एक अखबार था जिसमें हिटलर के बारे में सुर्खियाँ छपी थीं।
दाई: विनीफ्रेड डेविस
पिछले पतझड़ में मेरे पहले चेकअप के दौरान डॉ. वेब के क्लिनिक में मेरी पहली मुलाकात हुई। एक छोटी, गोल-मटोल, लेकिन बिल्कुल भी मोटी नहीं, सक्षम, सफ़ेद बालों वाली महिला, जिसका चेहरा समझदार और नैतिक था, नीली वर्दी और गोल किनारे वाली नीली टोपी पहने हुए थी। मुझे लगा कि वह मेरा आकलन करेंगी, भले ही नरमी से, लेकिन बिना किसी दया के। नए आने वालों की आदतों और घरेलू व्यवस्था को देखने और मुझसे मिलने का उन्हें अच्छा मौका मिलता था। वह अच्छी तरह जानती थीं कि हम जैसे अनिश्चित "कलाकार" होने के कारण, जिनका कोई सिद्ध या स्पष्ट काम नहीं था, और साथ ही मेरा अमेरिकी होना (अमीर और लाड़-प्यार से पली-बढ़ी होने की रूढ़िवादी छवि), एक गंभीर अंग्रेज़ ग्रामीण महिला के मन में मेरे प्रति पूर्वाग्रह पैदा कर सकता है। मेरे पक्ष में उनका पहला फैसला क्लिनिक में पहले ही दिन आया, जब मैंने उन्हें बताया कि मैंने बच्ची, फ्रीडा को 10 महीने तक दूध पिलाया था और टेड मेरा "घरेलू नौकर" था। हमारे लिए कुछ उम्मीद जगी!
नर्स डी. किसी अजीब से संबंध के चलते, जिसका पता मुझे अभी तक नहीं चला है, श्रीमती प्लम की भतीजी हैं। वे दोनों परिवार के दो

स्तंभ हैं। उन्हें सब कुछ, या लगभग सब कुछ पता होगा। नर्स डी. हमेशा तब आती थीं जब मुझे सबसे ज़्यादा आशंका होती थी, क्योंकि मैं घर के कामों में लापरवाही बरतकर अपने स्टडी रूम में चली जाती थी। टेड कुछ भी कहता, उन्हें रोक नहीं पाता था—वे सीढ़ियों से ऊपर चढ़ जातीं, और टेड मुझे चेतावनी देने के लिए बेताब होकर आगे बढ़ता, और मैं स्टडी रूम के दरवाजे पर उनके कंधे के ऊपर से उनका मुस्कुराता हुआ सफेद चेहरा देख लेती। मैं अपने गुलाबी मुलायम बाथरोब में होती (गर्मी के लिए मातृत्व कपड़ों की कई परतों के ऊपर), और वे कहतीं "कलाकार का पहनावा", बेडरूम में जातीं, बिस्तर बिखरा हुआ पातीं, और मैं जल्दी से पीले रंग के पेशाब से भरे गुलाबी प्लास्टिक के बर्तन पर एक अखबार डाल देती, जिसे मैंने खाली करने की जहमत नहीं उठाई थी, इस सिद्धांत पर कि सारे घरेलू काम दोपहर तक इंतजार करेंगे। वे स्पष्ट रूप से यह देखकर आनंद लेती थीं कि हमारे घर की सजावट कितनी अच्छी और किस तरह की है—उन्होंने हमारे बेडरूम के भारतीय कालीन पर टिप्पणी की कि यह "बिल्कुल उनके अपने कालीन जैसा है" (यह उनकी अंतिम प्रशंसा थी)। एक सुबह वो खबर सुनकर बेहद खुश लग रही थी, कहने के लिए बेताब थी, “मेरे बेटे का स्कूल का दोस्त आपके पति का बहुत बड़ा प्रशंसक है।” एक अजीब संयोग से, नर्स डी. के इकलौते बेटे, गार्नेट (उत्तर में एक जाना-माना पारिवारिक नाम), का लंदन के मर्चेंट टेलर्स स्कूल में एक स्कूल का दोस्त था, जिसने टेड को उनकी किताब के बारे में लिखा था और उसे “नॉर्थ टॉटॉन” की डाक से एक जवाब मिला था, जिसके बाद उसने गार्नेट से पूछा कि क्या वो टेड ह्यूजेस को जानता है। इस तरह हमारा संपर्क हो गया। मुझे बहुत खुशी हुई।

नर्स डी. के पति के बारे में कोई जानकारी नहीं है। क्या वह युद्ध में मारे गए थे? गार्नेट लगभग 19 साल की है, उसका "युद्धकालीन विवाह" था। उसे अपने बेटे को अकेले ही पालना पड़ा है। [कुछ अंश हटा दिए गए हैं।] वह पेकिंगीज़ नस्ल के पिल्ले पालती है। एक पिल्ला था जिससे वह बहुत प्यार करती थी। गलती से उस पर पैर रख देने से उसकी मौत हो गई। वह पिल्ला हर जगह उसके साथ जाता था। एक दुखद कहानी। जैसे-जैसे बच्चे का जन्म नज़दीक आता गया, नर्स डी. का स्वभाव और भी मधुर, सौम्य और मिलनसार होता गया। मुझे बहुत खुशी हुई कि वह मेरी दाई बनेगी, और सौभाग्य से बच्चा उसकी छुट्टी के दिन नहीं हुआ, बल्कि उससे ठीक पहले हुआ जब वह साउथ टॉटॉन के एक होटल में अपने बीमार पिता की देखभाल के लिए "छुट्टी" पर गई थी (एक 80 वर्षीय व्यक्ति, जिसे निमोनिया के दो दौरे पड़ चुके थे, और जो अपनी पत्नी के साथ घर बनवाते समय रह रहा था)।
नर्स डी. लंकाशायर से थीं (मुझे लगता है, यॉर्कशायर से नहीं), उनका एक बड़ा और प्यारा परिवार था (लगभग 7 लोग?), और उनकी माँ के पास बहुत से सहायक थे। उन्होंने बताया कि उनका बचपन बहुत अच्छा बीता और उनके पास एक आया भी थी। अफसोस, अब मुझे उनके द्वारा बताई गई अधिकांश बातें याद नहीं हैं। उनके भाई-बहन अलग-अलग जगहों पर रहते हैं—एक भाई यहाँ के एक प्रसिद्ध लड़कों के पब्लिक स्कूल के प्रधानाध्यापक थे और अब ऑस्ट्रेलिया में एक स्कूल के प्रधानाध्यापक हैं; एक बहन, मुझे लगता है, कनाडा में रहती हैं। उनके पास लगभग 10 कुत्ते हैं, जिनमें से 3 को बारी-बारी से घर में आने की अनुमति है। वह बागवानी करती हैं। उनके पास एक-दो एकड़ ज़मीन है और वह हंस पालना चाहती हैं, फिर हंसों को बेचकर

भेड़ें खरीदना चाहती हैं, फिर भेड़ों को बेचकर एक गाय खरीदना चाहती हैं…

* * *

16 मई। हमारी दूसरी मुलाकात। क्या श्रीमती डी. टायर्स को नापसंद करती थीं और उनके जाने का इंतज़ार करती रहीं? खैर, उन्होंने हमें चाय पर बुलाया ताकि हम श्रीमती मैकमारा से मिल सकें, जो उस दिन छुट्टी पर थीं। हम मुख्य सड़क से थोड़ी दूर, सेकेंडरी मॉडर्न स्कूल के सामने वाली खड़ी पहाड़ी पर चढ़े, जहाँ श्रीमती डी. का नया घर था। वह बिल्कुल सफेद रंग का था और वहाँ से डार्टमूर के बैंगनी गुंबदों की ओर लहराते हरे-भरे मैदान दिखाई देते थे। बाहर एक चमकीली नीली कार खड़ी थी, जिसके बगल में नर्स की सादी पीली कार थी। उनका घर पूरी तरह सफेद दीवारों वाला था, रोशनी से भरा हुआ था, बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ थीं जिनसे कटी-फटी हरी घास का मैदान और फूलों का एक छोटा सा बगीचा दिखाई देता था—हीथर, ट्यूलिप, एनीमोन। बहुत सारे पेकिंगीज़ कुत्ते तार के बाड़े से चूहों की तरह भौंक रहे थे। श्रीमती मैकमारा एक खूबसूरत सफेद बालों वाली महिला थीं (आयरिश किसानों की वंशज), उन्होंने लाल लिपस्टिक लगाई हुई थी और नीले रंग की डिज़ाइन वाली ब्लाउज और चांदी के रंग का सूट पहना हुआ था। वे धन और खुशहाली से भरपूर लग रही थीं। वह मूल रूप से एक पेकिंगीज़ कुत्ता खरीदने आई थीं। क्रेडिटन के पास कैडबरी हाउस में रहती थीं। श्रीमती डी. ने बताया कि उनके पति आईटीवी में काम करते थे और सेवानिवृत्त होने तक लंदन के एक फ्लैट में रहते थे, क्योंकि श्रीमती मैकमारा लंदन वापस जाने को तैयार नहीं थीं। उन्हें वह घर बहुत पसंद आ गया था, जो 9 एकड़ में फैला था और जिसकी मरम्मत चल रही थी। उनके पास कई बिल्लियाँ थीं, जिनमें से एक नारंगी रंग की

बिल्ली बुरी तरह घायल थी, उसकी खाल फट गई थी और एक आँख बाहर निकली हुई थी। लड़ाई में घायल होने के कारण उन्हें घर जाकर उसका इलाज करना पड़ा। उनकी एक बेटी वाशिंगटन राज्य में डॉक्टर थी, जिसकी शादी भी एक डॉक्टर से हुई थी। एक कर अधिकारी के अनुसार, वह राज्य की "सबसे अधिक कमाई करने वाली महिला" थीं। बेटी की अपनी दो बेटियाँ और एक गोद लिया हुआ बच्चा था। उन्हें बच्चा होने से पहले तीन बार गर्भपात हुआ था और उन्होंने अपने बेटे को खो दिया था, जो सियामी जुड़वाँ था और दूसरा जुड़वाँ भ्रूण उसकी आंत में था। उसने यह जानने पर जोर दिया कि उसके बच्चे के जीवित रहने की संभावना केवल 8 घंटे क्यों बताई गई थी, उसने मरते हुए बच्चे को लपेटा और एक दोस्त द्वारा ऑपरेशन कराने के लिए ट्रेन से 200 मील की यात्रा की। फिर उसने उसकी देखभाल की ("वह पूरी तरह से अंधा और बहरा था, और उसके हाथ कुछ भी पकड़ नहीं सकते थे, बस सपाट पड़े थे") हालांकि वह जानती थी कि वह तीन महीने में मर जाएगा, और ऐसा ही हुआ। तब से वह असहनीय हो गई है, उसका व्यवहार खराब है, उसके पिता उसे घर में नहीं आने देते। विडंबना यह है कि वह एक बाल रोग विशेषज्ञ थी, जिसे निदान और उपचार के लिए हर जगह बुलाया जाता था। उसकी एक गोद ली हुई बहन थी, जिसे 12 साल की उम्र में गोद लिया गया था और उसे पोलियो था, और वह भी उसी उम्र की थी। दोनों बहनें एक-दूसरे के प्रति समर्पित थीं।
हम सब एक मेज पर बैठकर चाय पी रहे थे, साथ में चेरी से सजा पीला केले का केक, बहुत ही बढ़िया किशमिश वाले बन और चाय के लिए सुंदर सेट था। रसोई आधे दीवार से घिरे क्षेत्र में थी, लाल रंग के काउंटर, बड़ी-बड़ी खिड़कियाँ जिनसे मैदान दिखाई देते थे। जगहों की तस्वीरें पतले काले फ्रेम में सफेद दीवारों पर टंगी थीं। बैठक में चांदी की कढ़ाई वाला एक ओरिएंटल पर्दा, एक अफ्रीकी

वायलेट, घाटी की शुरुआती लिली का एक छोटा सा फूलदान, धूप सेंकने वाली खिड़की के पास बैठने की जगह, और सभी विदेशी चैनलों वाला एक सुंदर रेडियो था। श्रीमती डेविस ने ग्रे रंग के कपड़े पहने थे और चांदी की बालियाँ पहनी थीं। श्रीमती एम. के जाने के बाद, उन्होंने हमें तेज हवा में बगीचा दिखाया, फिर ऊपर की मंजिल, एकदम सफेद कमरे, बड़ी-बड़ी अलमारियाँ, गार्नेट का कमरा जिसमें बीयर की बोतल से बना लैंप और पब से मिली ट्रॉफियाँ, और एक जैसे कवर में रखी किताबों का सेट था। उनका अपना कमरा जिसमें एक मोटे शर्मीले लड़के और एक पेकिंगीज़ कुत्ते की फ्रेम वाली तस्वीरें, बिस्तर के पास एक गैस चूल्हा और एक टेलीफोन था। आधुनिक शौचालय। उसके तार से बने पेकी कुत्तों के पिंजरे में, बच्चे उछल-कूद कर रहे थे, प्रार्थना कर रहे थे, मोटे-मोटे भूरे रंग के थे, प्यारे अंदाज़ में लड़खड़ाते हुए चल रहे थे। झाड़ियों में अभी-अभी जन्मे काले पक्षी देखे, चमकीले मंगल ग्रह जैसे हरे रंग के, दिल की तरह धड़कते हुए। दो हफ्ते बाद श्रीमती मैकमारा के यहाँ दोपहर के भोजन का इंतज़ाम किया।
क्योंकि डायरी के इस अंतिम भाग से केवल कार्य संबंधी नोट्स ही बचे हैं, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि प्लाथ की मृत्यु वास्तव में उनके जीवन को समाप्त करने से बहुत पहले ही हो गई थी - 11 फरवरी, 1963 को, अपने तीसवें वर्ष में।
1962 की शरद ऋतु में, अपनी शादी के टूटने के ठीक बाद, प्लाथ ने अपनी महान रचना, 'एरियल की कविताएँ' लिखीं। ये कविताएँ अपार ऊर्जा के सैलाब में लिखी गईं, एक महीने में तीस कविताएँ; पहले मसौदे तो झटपट तैयार हो गए, लेकिन बाद में उन्होंने हर एक पर सावधानीपूर्वक काम किया। इन कविताओं को किसी और ने नहीं देखा था, लेकिन उन्हें पूर्ण विश्वास था कि उन्होंने एक बड़ी छलांग

लगा दी है। 16 अक्टूबर, 1962 को, अपने उस असाधारण महीने के बीच में, उन्होंने अपनी माँ को लिखा: “मैं एक प्रतिभाशाली लेखिका हूँ; मुझमें वो क्षमता है। मैं अपने जीवन की सर्वश्रेष्ठ कविताएँ लिख रही हूँ; ये मुझे प्रसिद्धि दिलाएँगी…”
* सेल्डन रोडमैन, एक लोकप्रिय कविता संकलन के संपादक
† प्लाथ की चाची और चाचा
स्टैनली सुल्तान की पत्नी, स्मिथ संकाय सदस्य
§ फिलिप कीथली, एक मित्र जो वर्ल्ड पब्लिशिंग कंपनी में संपादक थे।
एडवर्ड वीक्स, द अटलांटिक मंथली में
मैरी एलेन चेज़, जिन्होंने स्मिथ विश्वविद्यालय और फुलब्राइट छात्रवृत्ति के दौरान प्लाथ के लिए बहुत कुछ किया था, की सिल्विया के शादी करने और अकादमिक दुनिया को त्यागने के फैसले पर हुई भयावह प्रतिक्रिया ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। चेज़ ने इन कृत्यों को विश्वासघात माना।
b एक बाद का हस्तलिखित नोट
लंदन पत्रिका के संपादक
स्मिथ स्कूल की छात्रा जिसने पीटर डेविसन से शादी की
जहां प्लाथ को आत्महत्या के प्रयास के बाद अस्पताल में भर्ती कराया गया था।
बीकन हिल पर उनका एक रिकॉर्डिंग स्टूडियो था और वे हार्वर्ड में लैमोंट लाइब्रेरी के लिए कविताएँ रिकॉर्ड करते थे।
एस्थर बास्किन
एड्रिएन सेसिल रिच, कवयित्री
i एड्रिएन सेसिल रिच

वैली हेड अस्पताल में उनके साथ हुए विनाशकारी आघात उपचारों का संदर्भ, जिसका वर्णन द बेल जार में किया गया है।
ऐनी सेक्स्टन, प्लाथ के साथ लोवेल की कविता कक्षा में थीं। न्यूयॉर्क के साराटोगा स्प्रिंग्स में कलाकारों की बस्ती
m बच्चों की किताब 'द बेड बुक' प्लाथ की मृत्यु के काफी समय बाद प्रकाशित हुई थी।
ऐनी सेक्स्टन और जॉर्ज स्टारबक
ऐनी सेक्स्टन
जॉर्ज स्टारबक
मैक्सिन कुमिन
r येल सीरीज़ ऑफ़ यंगर पोएट्स के संपादक
स्टीफन फासेट की पत्नी
पीटर डेविसन
टी. एस. एलियट के साथ एक वादा की गई मुलाकात
याड्डो के कर्मचारियों में एक महिला; प्लाथ उन्हें बहुत पसंद करती थीं।
वह जिस बच्चे की उम्मीद कर रही थी, वह फ्रीडा निकली; निकोलस का जन्म दो साल बाद हुआ।
बच्चे और मेमने प्लाथ की अपनी पत्राचार प्रणाली का हिस्सा थे। गर्भावस्था के इस चरण में उन्हें मॉर्निंग सिकनेस थी।
प्लैथ की शुरुआती पुरस्कार विजेता कहानी
z येल यंगर पोएट्स श्रृंखला
हेल्गा ह्यूज़, टेड के कैम्ब्रिज स्थित मित्र डैनियल ह्यूज़ की पत्नी

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ad [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

□□□□□□□